पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

षोडश संस्कार विवेचन

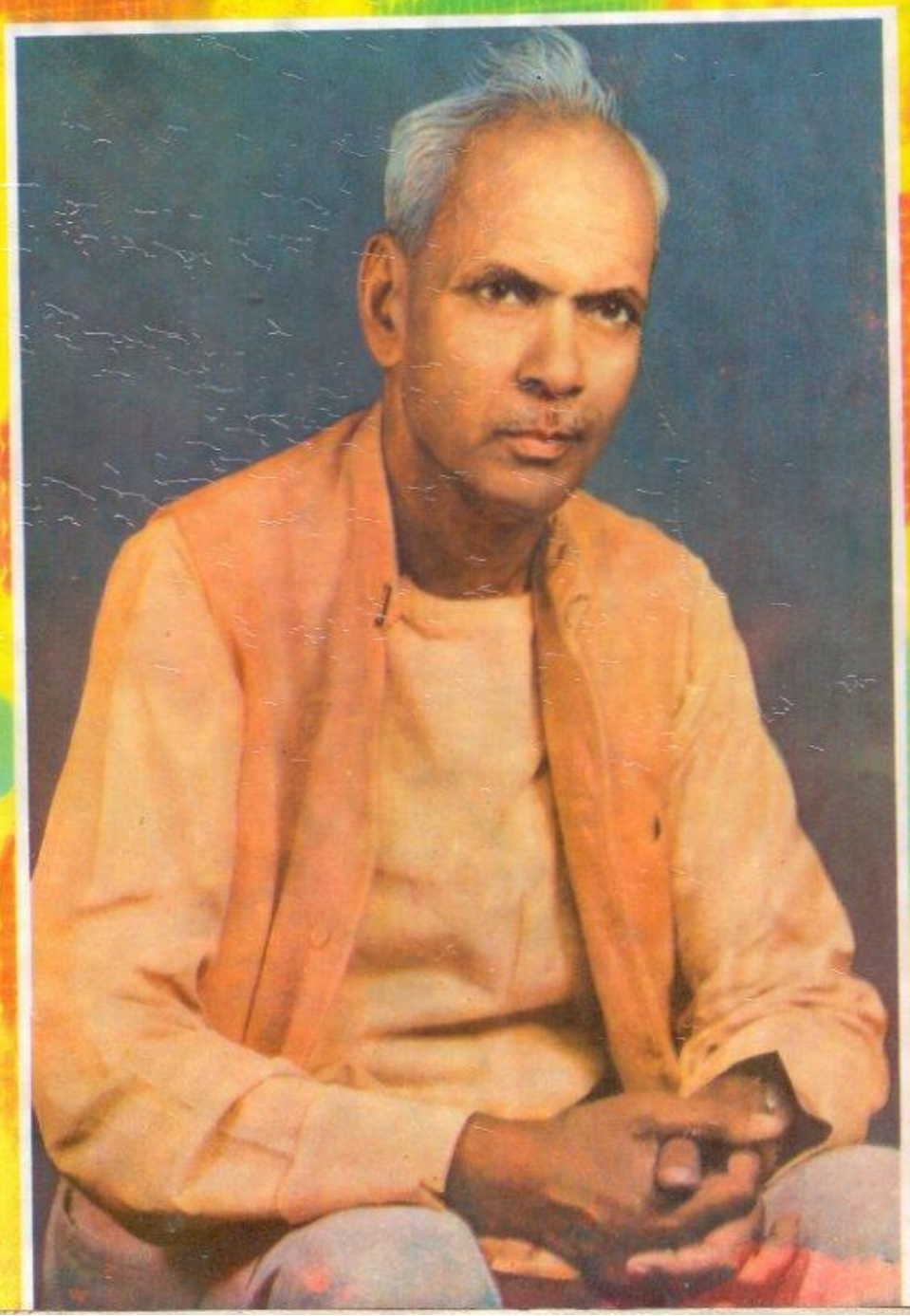

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

षोडश संस्कार-विवेचन

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❐

प्रकाशक

अखण्ड ज्योति संस्थान

मथुरा - २८१००३

❐

© सर्वाधिकार सुरक्षित

❐

द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

❐

मूल्य १२५)

❐

मुद्रक

जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः भित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ॥

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ॥

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ॥

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ॥

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय, यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि "प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गई, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।"

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुंज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अतः पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमशः उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ, स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतः स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी । उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था-पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं । यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी ।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ । गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी । धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है । १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है । १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया । कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं । संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था । तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं । हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया । परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं ।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ । तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था । तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए । स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये । एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी । ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे । इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक । इसके

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेघ महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़ चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

हमारे ऋषि वैज्ञानिक थे । उनने जीवन को जन्म से पूर्व से लेकर मरणोत्तर जीवन तक संस्कारों की विज्ञान-सम्मत प्रक्रिया के साथ इस प्रकार अविच्छिन्न रूप से जोड़ दिया कि जीवन यात्रा में निरन्तर परिशोधन—प्रगति के अलावा कुछ और अनिष्ट किसी को न होने पाए, निरन्तर आत्मसत्ता कषाय-कल्मषों से मुक्त होती चले एवं अंततः मोक्ष को प्राप्त हो। संस्कारों से भरा ऋषि जीवन हमारी संस्कृति का मेरुदण्ड रहा है । हर संस्कार यज्ञ प्रक्रिया के साथ संपन्न हो जीवन में महानता के अवतरण का एक माध्यम बनता रहा है । किसी और सभ्यता या संस्कृति में इतना गूढ़ दार्शनिक समावेश आध्यात्मिकता का नहीं देखा जाता जिससे कि गुण-सूत्र, जीन्स तक प्रभावित होते हैं । यह हमारी षोडश संस्कार परम्परा ही है जिसने मानव में महामानव के अवतरण, देवत्व के अभिवर्धन तथा श्रेष्ठ संततियों के माध्यम से धरती पर सतयुगी परिस्थितियों के अवतरण का माहौल बनाया व वह वैसा बना भी रहा ।

संस्कारों के माध्यम से परमपूज्य गुरुदेव ने धर्म के मूल मर्म को जिन्दा रख उसको पुरोहितों के चिर प्रचलित पण्डा तंत्र से छीनकर हर नर-नारी को कर्म काण्ड संपन्न कराने में कुशल एक युग-पुरोहित बना दिया । जब भी इतिहास लिखा जाएगा तब देखा जाएगा कि धर्म-संस्कृति के पहरेदार जब सो रहे थे, तब पूज्यवर, कितने सूक्ष्म स्तर की क्रांति कर रहे थे । गायत्री यज्ञों के माध्यम से दुरूह संस्कृत वाली संस्कार प्रक्रिया को अति सरल बना, उनने जन-जन तक इसे पहुँचा दिया व संस्कारवान राष्ट्र के नागरिक बना कर खड़े कर दिए, भावी पीढ़ी के लिए एक आधार दे दिया ।

हमारी संस्कृति में सोलह जीवन मात्र के विरामों की तरह सोलह संस्कारों का प्रचलन रहा है । अब कालक्रम के प्रवाह में उनमें से छः उतनी उपयोगी रही नहीं, पर कुछ ऐसी जुड़ गयीं जिन्हें युग ऋषि ने जन्म दिया । ऋषि क्रान्तदर्शी आविष्कारक होते हैं । वे विवेक को महत्त्व देते हैं, परम्पराओं को नहीं । यही पूज्यवर ने किया एवं उनने सीमन्त, जात वर्ग, कर्णवेधन आदि समय के हिसाब से अब उतनी उपयोगी नहीं रहीं—ऐसी छः संस्कार प्रक्रियाओं को हटाकर जन्मदिवस, विवाह दिवस, दीक्षा एवं शिखा स्थापना जैसी चार उन दस के साथ और जोड़ दीं, जो अभी भी उतनी उपयोगी हैं । पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, विद्यारम्भ, मुण्डन, यज्ञोपवीत, विवाह-संस्कार, वानप्रस्थ, अन्त्येष्टि, श्राद्ध-तर्पण—इन दसों को परमपूज्य गुरुदेव ने यथावत् रखा । प्रत्येक का विज्ञान—सम्मत विवेचन प्रस्तुत किया । प्रत्येक पर अलग-अलग किताबें लिखकर लोक शिक्षण जो धर्मतंत्र से होना था, उसकी तैयारी कर दी । हमारी ऋषियों की परम्परा को लुप्त नहीं होने दिया।

पुंसवन संस्कार गर्भस्थ शिशु में सुसंस्कारों की प्रतिष्ठापना करने के लिये किया जाता है । यज्ञ की साक्षी में जो ओषधि गर्भ में विकसित हो रहे शिशु के लिए माँ को दी जाती है, वह उसके तीनों शरीरों के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकती है । एक प्रयोग ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में किया गया व पाया गया है कि जिन माँओं को समय से पहले गर्भ गिर जाता था, पहले बच्चों में कोई जन्मजात मेटॉबालिक सिस्टम का या आनुवांशिकीय रोग था तो पुंसवन संस्कार संपन्न कराने के बाद जो संतति हुई, वह पूरे समय गर्भ में रहकर श्रेष्ठ संतति के रूप में उत्पन्न हुई, पूर्णतः नीरोग पैदा हुई । ऐसे अनेक केसेज का संकलन यहाँ के वैज्ञानिकों के पास है जिनने युग ऋषि के मार्गदर्शन में कार्य किया । पुंसवन संस्कार में दिया गया वाष्पीभूत ओषधि की प्राण ऊर्जा से ओतप्रोत चरु या पुरोडाश जेनेटिक सिस्टम तक को प्रभावित करता है, यह अब एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सुविज्ञात तथ्य है । बालक के जन्म से लेकर नामकरण तक-अन्नप्राशन से लेकर जब पहली बार बालक जन्म लेता है, विद्यारंभ व मुंडन तक एक ऐसी श्रृंखला हमारे ऋषि बना गए जिसमें प्रत्येक में गायत्री यज्ञ संपन्न कर विशिष्ट आहुतियाँ देकर बालक में श्रेष्ठता के-महानता के बीजों के आरोपण की व्यवस्था बनायी गयी । यही नहीं, शारीरिक-मानसिक विकास का भी पूर्ण ध्यान रखा गया । जहाँ अन्नप्राशन शरीर के समुचित विकास के लिये है वहीं विद्यारंभ व मुंडन संस्कार शिक्षा के साथ-साथ विद्या रूपी अमरत्व पैदा करने वाली विधा के रोम-रोम में समावेश तथा मुंडन द्वारा विगत जन्मों के कुसंस्कारों के निष्कासन द्वारा सही समय पर 'ब्रेन ग्रोथ' मस्तिष्कीय विकास की प्रक्रिया को बलवती बनाने के लिए कराये जाते हैं । आज तो शिक्षारम्भ होते दिखाई देते हैं, विद्यारंभ कहीं नहीं दिखाई देता । जबकि प्रचलन विद्यारम्भ का होना चाहिए । यज्ञोपवीत संस्कार आदमी को द्विजत्व प्रदान कर नया जन्म देता है एवं गायत्री महाविद्या को जीवन में समाविष्ट कर शिखा व सूत्र के माध्यम से देव प्रतिमा को शरीर पर सतत धारण करने की प्रेरणा देता है । लुप्त प्रायः होती जा रही संस्कार परिवार को पूज्यवर ने गायत्री परिवार के माध्यम से पुनर्जीवित कराया एवं घर-घर यज्ञ-यज्ञ में यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न होने लगे हैं ।

विवाह दो आत्माओं का आध्यात्मिक मिलन है । यह योगज प्रक्रिया है व यज्ञाग्नि की साक्षी में हमारे यहाँ दो आत्माओं की धातुओं की बैल्डिंग की तरह जुड़ाई कर दी जाती है । ऐसे विवाह शुचिता-पवित्रता की धुरी पर टिके होते हैं, कभी टूटते नहीं । आज तो कामज विवाह (सेक्स प्रधान-काम प्रधान रूप लावण्य प्रधान) विवाहों का प्रचलन है । आदर्श विवाह आन्दोलन द्वारा पूज्य आचार्य श्री ने एक नयी क्रांति खड़ी कर दी जिसमें मान संस्कार व वातावरण की पवित्रता को महत्व दिया गया । अपव्यय भरा प्रदर्शन न हो, अनेकानेक आत्माएँ दहेज के नाम पर दुखी न हों तो ही विवाह संस्कार एक धर्म कृत्य है, नहीं तो यह एक पैशाचिक कृत्य है—यह क्रांतिकारी बात पूज्यवर ही कह सकते थे । विवाह के पश्चात् समय आने पर वानप्रस्थ ले— नवसंन्यास ले—परिव्राजक धर्म में दीक्षित हो— सद्गृहस्थ बने रहकर पर पूर्णतः समाज सेवा को संकल्पित हो; कैसे जिया जा सकता है, यह प्रेरणाएँ उनने दीं । ढेरों वानप्रस्थी आज गायत्री परिवार में कार्यरत हैं । अन्त्येष्टि हमारे यहाँ यज्ञकर्म है । शरीर यज्ञ का अंतिम कर्म पूरे विधि-विधान से मनाया जाना चाहिए ताकि मृत शरीर के साथ की सभी विकृतियाँ जलकर नष्ट हो जायँ—श्रेष्ठ वातावरण बने व बाद में श्राद्ध-तर्पण द्वारा पितरों को श्रद्धा देने की प्रक्रिया को उनने एक जन आन्दोलन बना दिया । पितरों को हम श्रद्धा दें तो वे हमें शक्ति देंगे- यह शिक्षण पूज्यवर ने इस कर्मकाण्ड से दिया ।

अन्य चार नये जोड़े संस्कारों की महत्ता सर्व विदित है- आज स्थान-स्थान पर सभी संस्कार संपन्न हो रहे हैं, यह प्रेरणा पूज्यवर ने जन-जन को दी एवं आज युग-पुरोहित यह करा रहे हैं तो धन्यवाद ज्ञापन हमें पूज्यवर की ऋषि सत्ता का करना चाहिए । उनकी सत्ता को करोड़ों नमन ।

— ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय सूची

१. संस्कारों की पुण्य परम्परा

१. धरती पर स्वर्ग अवतरित करने की ऋषि प्रणाली १.१
२. सर्वश्रेष्ठ परम्परा १.२
३. विज्ञान सम्मत प्रक्रिया १.२
४. मानसिक चिकित्सा की प्रखर पद्धति १.२
५. व्यक्ति निर्माण का उपयुक्त माध्यम १.३
६. कर्मकाण्ड और प्रशिक्षण १.४
७. उद्‌बोधन आवश्यक १.४
८. विचार गोष्ठी आयोजन १.५
९. लोकशिक्षा का अनुपम माध्यम १.६
१०. कुछ असामयिक संस्कार १.६
११. पुंसवन की प्रेरणा १.७
१२. अन्नप्राशन क्यों ? १.७
१३. चूड़ाकर्म का मर्म १.८
१४. विद्यारम्भ का श्री गणेश १.८
१५. यज्ञोपवीत की प्रेरणा १.८
१६. विवाह के आदर्शकर्तव्य १.८
१७. वानप्रस्थ लोकमंगल का माध्यम १.८
१८. मरणोत्तर संस्कार १.९
१९. लोक शिक्षण की व्यापक पृष्ठभूमि १.९
२०. लकीर ही न पिटती रहे १.९
२१. प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की आवश्यकता १.१०
२२. प्रचलन अपने घर से १.११
२३. प्रभावोत्पादक वातावरण १.११
२४. सुसंस्कारों की महत्ता एवं उपयोगिता १.१३
२५. हिन्दू धर्म में संस्कारों का महत्व १.१७
२६. हम सुसंस्कृत बनें—संस्कारवान बनें १.१८
२७. संस्कारों का मनोविज्ञान, अपने आप में निराला है १.२३
२८. मनुज द्विज बनते हैं संस्कार से १.२८
२९. देवमानव गढ़ देने वाले ये विलक्षण संस्कार १.३३

२. संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन

१. संस्कार प्रक्रिया के पुनर्जीवन की आवश्यकता २.१
२. संस्कार परम्परा की अवज्ञा क्यों हो चली ? २.३
३. परिष्कृत संस्कार प्रक्रिया २.६
४. बहुउद्देशीय प्रयोजनों की पूर्ति २.१०
५. संस्कार प्रक्रिया के प्रमुख पक्ष २.१२
६. विवेक सम्मत परिपाटी अपनायी जाय २.१५
७. इस संदर्भ में सुसंगठित प्रयास हों २.१६
८. सुसंस्कारिता के लिए संस्कार विधान २.१७
९. व्यक्तित्व विकास हेतु संस्कार आयोजन २.१९
१०. संस्कार परम्परा का नवजीवन जरूरी २.२१
११. सुसंस्कारिता, दिव्य प्रेरणा, तीर्थयात्रा एवं मगलमयी शुभ कामना पाने का सम्मिलित सुयोग २.२३
१२. संस्कार एवं पर्वों का विधान सिखाने के शिविर २.२५
१३. संस्कारों और त्यौहारों में सामूहिकता की आवश्यकता २.२६

३. संस्कार प्रकरण

१. संस्कारों की आवश्यकता और पृष्ठभूमि ३.१
२. परिष्कृत एवं सरल प्रक्रिया ३.२
३. दो नये किन्तु उपयोगी संस्कार ३.४
४. संस्कार-क्रम व्यवस्था ३.५
५. अभिषेक—आशीर्वचन ३.७
६. सामान्य हवन प्रकरण ३.७
७. संकल्प ३.९
८. पंचामृत बनाना ३.९
९. मार्जन ३.९
१०. नमस्कार ३.११
११. षोडशोपचार पूजन ३.११
१२. पुरुषसुक्त ३.१२
१३. स्वस्तिवाचन ३.१२
१४. विशेष कर्मकाण्ड ३.१३
१५. यज्ञ की महिमा ३.१६

४. पुंसवन और सीमान्त-संस्कार

१. पुंसवन-संस्कार—विवेचन ४.१
२. विशेष परिस्थिति—विशेष भावना ४.१
३. उचित ढंग से उचित प्रयोग ४.२
४. शिशु का समग्र विकास ४.२
५. गर्भाधान संस्कार ४.२
६. पुंसवन संस्कार की आवश्यकता ४.३
७. सद्‌भाव एवं शुभ कामना संचय ४.१०
८. पुत्र और कन्या का अन्तर ४.११
९. पुंसवन—संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा ४.१२
१०. पुंसवन संस्कार-प्रयोजन एवं विधि ४.१२
११. सीमान्त संस्कार पद्धति ४.१६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

५. नामकरण-संस्कार

१ नामकरण-संस्कार—विवेचन ५.१
२. मेखला बन्धन ५.२
३. मधुप्राशन ५.२
४. मन्त्र दीक्षा ५.४
५ सूर्य दर्शन ५.५
६. पृथ्वी पूजन ५.६
७. प्रत्यावर्तन (परस्पर परिवर्तन) ५.८
८ नामकरण ५.९
९ लोकदर्शन ५.९
१०. नामकरण संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा ५.११
११ नामकरण संस्कारः प्रयोजन एवं विधि ५.१२

६. अन्नप्राशन—संस्कार

१ अन्नप्राशन संस्कार—विवेचन ६.१
२. अन्नप्राशन का प्रयोजन ६.१
३. तुलादान ६.२
४. चम्मच पूजन ६.४
५ यज्ञावशिष्ट भोजन ६.६
६. क्षीर प्राशन ६.७
७. अन्नप्राशन-संस्कार—पद्धति के उद्देश्य और शिक्षा ६.११
८ अन्नप्राशन-संस्कार : प्रयोजन एवं विधि-व्याख्या ६.११

७. चूड़ाकर्म एवं कर्णवेध—संस्कार

१ चूड़ाकर्म-संस्कार—विवेचन ७.१
२. चूड़ाकर्म का रहस्य ७.१
३. अन्य योनियों के संस्कार ७.२
४. चूड़ाकर्म आरम्भ ७.३
५ चूड़ाकर्म और उसकी प्रेरणा ७.१०
६. चूड़ाकर्म संस्कार : उद्देश्य और शिक्षा ७.१२
७. मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार-प्रयोजन एवं विधि ७.१२
८ मुण्डन कृत्य ७.१७

८. विद्यारम्भ-संस्कार

१ विद्यारम्भ-संस्कार—विवेचन ८.१
२. विद्या विहीन न रहे ८.१
३. शिक्षा से व्यक्तित्व का विकास ८.१
४. एक ही उपाय विद्याध्ययन ८.२
५ अभिभावकों के कर्तव्य ८.२
६. संस्कार का कार्यारम्भ ८.३
७. गणेश पूजन का रहस्य ८.४
८ सरस्वती पूजन का मर्म ८.५
९ उपकरणों की पवित्रता ८.६
१०. शिक्षा की तीन अधिष्ठात्री देवियाँ ८.७
११ कलम-पूजन ८.७
१२. दवात की पूजा ८.८
१३. पट्टी पूजन ८.९
१४. अक्षरारम्भ ८.१०
१५ दिशाओं को नमस्कार ८.११
१६. शिक्षा और विद्या का समन्वय ८.११
१७. विद्यारम्भ संस्कार : उद्देश्य और शिक्षा ८.१२
१८ विद्यारम्भ संस्कार : प्रयोजन एवं विधि ८.१२
१९ गणेश एवं सरस्वती पूजन ८.१२
२०. उपकरणों-माध्यमों की पवित्रता ८.१३

९. यज्ञोपवीत-संस्कार

१ यज्ञोपवीत संस्कार—विवेचन ९.१
२. उपयोगिता और आवश्यकता ९.१
३. विधि व्यवस्था ९.३
४. तीन भाव देवियों के ९.६
५ अध्ययन की प्राचीन परम्परा ९.६
६. गायत्री पूजन का उद्देश्य ९.७
७. सावित्री पूजन ९.७
८ सरस्वती पूजन ९.७
९ यज्ञोपवीत पूजन और धारण ९.८
१० पाँच देवताओं की प्रतिष्ठापना ९.९
११ गायत्री मन्त्र दीक्षा ९.१०
१२. वेदारम्भ ९.१०
१३. गुरु पूजन ९.१०
१४ भिक्षा अभिनय ९.१०
१५ यज्ञोपवीत में निहित शिक्षायें ९.११
१६. यज्ञोपवीत संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा ९.१२
१७ यज्ञोपवीत संस्कार—प्रयोजन और विधि ९.१३
१८ पंच देवावाहन ९.१६
१९ दीक्षा प्रकरण ९.१८
२० मन्त्र दीक्षा ९.१९
२१ गुरु दक्षिणा संकल्प ९.२२

१०. विवाह-संस्कार

१ विवाह-संस्कार—विवेचन १०.१
२. संस्कार-प्रयोजन १०.१
३. विवाह का स्वरूप १०.१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

४. मण्डप निर्माण और कार्यारम्भ १०.२
५. स्वागत सत्कार १०.२
६. मंगलाएटक १०.२
७. विवाह घोषणा १०.२
८. वस्त्र उपहार १०.३
९. वर की प्रतिज्ञाएँ १०.३
१०. वधू की प्रतिज्ञाएँ १०.३
११. कन्यादान १०.४
१२. गुप्तदान का दहेज १०.५
१३. पाणिग्रहण १०.६
१४. ग्रन्थि बन्धन १०.६
१५. विवाह का विशेष यज्ञ १०.७
१६. सात परिक्रमा १०.८
१७. शिलारोहण १०.८
१८. लाजा होम १०.८
१९. सप्तपदी १०.९
२०. आसन परिवर्तन १०.१०
२१ ध्रुव या सूर्य दर्शन १०.१०
२२. शपथ आश्वासन १०.१०
२३. सुमंगली १०.११
२४. विवाह के उद्देश्य और शिक्षा १०.१२
२५. विवाह संस्कार-प्रयोजन एवं विधि १०.१३
२६. विशेष व्यवस्था १०.१५
२७. विशेष कर्मकाण्ड १०.१६
२८. वरण सूत्र एवं चन्दन धारण १०.१८
२९. यज्ञोपवीत धारण १०.१८
३०. अथ मंगलाष्टक १०.१९
३१ परस्पर उपहार १०.१९
३२. हस्तपीत करणम १०.२०
३३. कन्यादान-गुप्तदान १०.२०
३४. गौदान १०.२०
३५. मर्यादाकरण १०.२१
३६. पाणिग्रहण १०.२१
३७. ग्रन्थि बन्धन १०.२१
३८. वर-वधू की प्रतिज्ञायें १०.२१
३९ वर की प्रतिज्ञायें १०.२२
४०. कन्या की प्रतिज्ञायें १०.२२
४१ यज्ञ आहुति १०.२३
४२. शिलारोहण १०.२४
४३. लाजाहोम एवं परिक्रमा (भाँवर) १०.२४
४४. सप्तपदी १०.२५
४५ आसन परिवर्तन १०.२६
४६. पादप्रक्षालनम् १०.२६
४७. ध्रुव-सूर्य ध्यान १०.२७
४८. सुमंगली-मंगल तिलक—सिंदूरदान १०.२८
४९. मंगल तिलक १०.२८
५०. अभिषेकसिंचन १०.२८

११. वानप्रस्थ-संस्कार

१ वानप्रस्थ-संस्कार—विवेचन ११.१
२. तप और उसका वरदान ११.२
३. उच्चस्तरीय सुख के लिए उच्चस्तरीय तप ११.२
४. ढलती उम्र का तकाजा ११.३
५ वानप्रस्थ की पुण्य प्रतिक्रिया ११.३
६. जीवन का उत्तरार्ध लोक-सेवा में लगे ११.४
७. कर्त्तव्यनिष्ठा ११.६
८. योग्यता वृद्धि ११.७
९. दृढ़ता और साहस ११.७
१०. कार्य पद्धति की रूपरेखा ११.८
११ धर्म और संस्कृति का प्राण ११.९
१२. सुसंस्कार का सृजन ११.९
१३. लोक शिक्षण की आवश्यकता ११.९
१४. यह पुण्य परम्परा पुनः सजीव हो ११.१०
१५ दस स्नान ११.१०
१६. भावना और प्रेरणा ११.१०
१७. अभिषेक की अभिव्यंजना ११.११
१८. अभिषेक की भावना ११.१२
१९. मेखला और कोपीन ११.१३
२०. धर्म दण्ड का धारण ११.१४
२१ शेष क्रिया-कृत्य ११.१४
२२. ब्रह्म विद्या की शिक्षा और आवश्यक तपश्चर्या ११.१५
२३. वानप्रस्थ के उद्देश्य और शिक्षा ११.१५
२४. वानप्रस्थ संस्कार—विधि ११.१६
२५ दस स्नान ११.१६
२६. विशेष कर्मकाण्ड ११.१७
२७. संकल्प ११.१७
२८. यज्ञोपवीत परिवर्तन ११.१८
२९ पंचदेवावाहन ११.१८
३०. यज्ञोपवीत धारण ११.१८
३१ मेखला-कोपीन धारण ११.१९
३२. धर्मदण्ड धारण ११.१९
३३. पीतवस्त्र धारण ११.१९
३४. ऋषि पूजन ११.१९
३५ वेद पूजन ११.१९
३६. यज्ञपुरुष पूजन ११.२०
३७. व्रतधारण ११.२०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

३८. अभिषेक ११२१
३९. विशेष आहुतियाँ ११२१
४०. प्रव्रज्या ११२१

१२. अन्त्येष्टि संस्कार

१. अन्त्येष्टि-संस्कार—विवेचन १२.१
२. मानव शरीर की सार्थकता १२.१
३. यज्ञ एक जीवन सहचर १२.१
४. यज्ञीय आदर्शों की संस्कृति १२.२
५. अन्त्येष्टि का प्रयोजन १२.२
६. सम्मानपूर्वक विदाई समारोह १२.२
७. भूमि-शुद्धि की प्रक्रिया १२.३
८. क्रिया-कृत्य का प्रारम्भ १२.४
९. मर्यादा परिधि की चार समिधाएँ १२.४
१०. रहस्य और विवेचन १२.४
११. शव-संस्कार १२.६
१२. अग्नि का सान्निध्य साहाय्य १२.७
१३. शरीर यज्ञ प्रारम्भ १२.७
१४. जीवन यज्ञ का स्वरूप १२.८
१५. आहुति मन्त्र से ईश्वरीय निर्देश १२.८
१६. गायत्री मंत्र की आहुतियाँ १२.१०
१७. कपाल क्रिया पूर्णाहुति १२.१०
१८. वसोर्धारा स्नेह सिंचन १२.११
१९. परिक्रमा और नमस्कार १२.११
२०. जीवन दर्शन की शिक्षा १२.११
२१. अन्त्येष्टि क्रिया सम्बन्धी चित्र-विचित्र मान्यताएँ १२.११
२२. अन्त्येष्टि संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा १२.१४
२३. अन्त्येष्टि संस्कार विधि १२.१६
२४. शव संस्कार १२.१७.
२५. पिण्डदान १२.१८
२६. भूमि-संस्कार १२.१८
२७. ॐ कार लेखन १२.१९
२८. मर्यादाकरण (समिधारोपण) १२.१९
२९. चितारोहण १२.२०.
३०. शरीर यज्ञ आरम्भ १२.२०
३१. विशेष आहुतियाँ (शरीर यज्ञ) १२.२०
३२. सामूहिक जप-प्रार्थना १२.२१
३३. पूर्णाहुति—कपाल क्रिया १२.२१
३४. अस्थिविसर्जनम् १२.२२

१३. मरणोत्तर संस्कार

१. मरणोत्तर-संस्कार—विवेचन १३.१
२. कष्टकारक मोह-ममता १३.१
३. बन्धन मुक्ति कैसे हो ? १३.१
४. संस्कार का स्वरूप १३.२
५. पितृ आवाहन १३.३
६. छः तर्पण १३.३
७. तर्पण क्यों और किसलिए ? १३.५
८. पञ्चबलि विधान १३.६
९. बलि प्रयोजन का निरूपण १३.७
१०. आज की रूढ़िवादिता सुधारी जाय १३.८
११. पिण्ड की प्रक्रिया १३.९
१२. शेष कृत्य की पूर्ति १३.१०
१३. जीवन दर्शन पर प्रकाश १३.१०
१४. वृषभोत्सर्ग की परम्परा १३.१०
१५. मरणोत्तर संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा १३.११
१६. मरणोत्तर संस्कार-विधि १३.१२
१७. यमदेवता पूजन १३.१३
१८. यम स्तोत्र १३.१३
१९. पितृ-आह्वान-पूजन १३.१४
२० तर्पण १३.१४
२१ पवित्रीधारण—मन्त्र १३.१४
२२. देव तर्पण १३.१५
२३. ऋषि तर्पण १३.१५
२४. दिव्य-मनुष्य तर्पण १३.१५
२५. दिव्य-पितृ—तर्पण १३.१५
२६. यम तर्पण १३.१६
२७. मनुष्य पितृ तर्पण १३.१६
२८. द्वितीय गोत्र तर्पण १३.१७
२९. इतर तर्पण १३.१७
३०. वस्त्र—निष्पीडन १३.१८
३१ भीष्म तर्पण १३.१८
३२. नमस्कार १३.१८
३३. सूर्योपस्थान १३.१९
३४. मुखमार्जन-स्वतर्पण १३.१९
३५. ब्रह्मयज्ञ १३.१९
३६. देवयज्ञ १३.१९
३७. पिण्डदान प्रकरण १३.१९
३८. पिण्ड समर्पण प्रार्थना १३.२०
३९. पिण्डदान १३.२०
४०. मातृ—पिण्डदान १३.२०
४१. पञ्चबलि १३.२२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

४२. गोबलि १३.२२
४३. कुक्कुरबलि १३.२२
४४. काकबलि १३.२२
४५. देवादिबलि १३.२२
४६. पिपीलिकादिबलि १३.२२
४७. मनुष्य-यज्ञ—श्राद्ध-संकल्प १३.२३
४८. संकल्प १३.२३
४९. श्राद्ध का रहस्य १३.२४
५०. मरणोत्तर संस्कार पद्धति १३.२६
५१ वार्षिक श्राद्ध १३.२६
५२. श्राद्धः उद्देश्य १३.२६
५३. अथ वार्षिक श्राद्ध १३.२७
५४. अथपितृतर्पण १३.३०
५५ नान्दीमुख—श्राद्ध १३.३०
५६. अथ आसन दान १३.३१
५७. भोजन दान १३.३१
५८. सक्षीरमुदकदान १३.३१
५९. आशीषोग्रहणम १३.३२
६०. विसर्जन १३.३२

१४. जन्मदिवसोत्सव-संस्कार

२. जन्मदिवसोत्सव-एक प्रेरक पर्व १४.१
२. जीवन के गौरव का उद्बोधन पर्व १४.४
३. सौभाग्य का लाभ उठाएँ १४.७
४. व्यापक कर्त्तव्यों को अपनायें १४.१०
५ धर्मभावना युक्त समारोह आवश्यक १४.१३
६. आयोजन का स्वरूप १४.१४
७. व्यवस्था के सूत्र १४.१६
८. प्रेरणाओं का सशक्त प्रवाह पैदा किया जाय १४.२३
९. आदर्श पारिवारिकता का विकास १४.२६
१०. सादगी १४.२६
११ जन्मदिवसोत्सव इस तरह मनावें १४.३१
१२. अनुपम अवसर का सदुपयोग १४.३१
१३. पात्रता सिद्ध करें १४.३२
१४. लोक-शिक्षण के लिए यह करें १४.३२
१५ उपयुक्त वातावरण में उपयुक्त प्रेरणा १४.३३
१६. समितियाँ यह कार्य हाथ में लें १४.३३
१७. तैयारी और व्यवस्था १४.३४
१८. नये कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण १४.३४
१९. प्रवचनों का अत्यधिक महत्व १४.३५
२०. इन बातों का ध्यान रखें १४.३६
२१ उत्सव अधिक खर्चीला न हो १४.३६
२२. चार विशिष्ट कर्मकाण्ड १४.३६
२३. प्रयोजन प्रकट करने वाले श्लोक १४.३८
२४. प्रशिक्षण आवश्यक १४.३८
२५ लोकप्रिय परम्परा १४.३८
२६. प्रबुद्ध लोगों से आरम्भ करें १४.३९
२७. जन्मदिन का सन्देश १४.३९
२८. जन्म—दिवस इस प्रकार मनाया करें १४.५२
२९. सरल किन्तु चमत्कारी प्रक्रिया १४.५३
३०. जन्मदिवसोत्सव, देखने में छोटा किन्तु परिणाम में महान १४.५६
३१ जन्म-दिवस को इस प्रकार सरल बनायें १४.५७
३२. जन्मदिवसोत्सव—कार्य एक उद्देश्य अनेक १४.५९
३३. प्रबुद्ध परिजनों का संगठन और जन्मदिवसोत्सव प्रक्रिया १४.६२
३४. जन्मदिवसोत्सव पर उद्बोधन सन्देश १४.६७
३५ जन्मदिवसोत्सव—उद्देश्य और शिक्षा १४.६९
३६. जन्मदिवसोत्सव—व्यवस्था एवं विधि संस्कार प्रयोजन १४.६९
३७. विशेष व्यवस्था १४.७०
३८. दीपदान १४.७०
३९. विशेष कर्मकाण्ड १४.७०
४०. पञ्चतत्व पूजन १४.७०
४१. दीपदान १४.७१
४२. व्रतधारण १४.७२
४३. विशेष आहुति १४.७२

१५. विवाह-दिवसोत्सव—संस्कार

१. विवाह-दिवसोत्सव कैसे मनावें ? १५.१
२. विवाह प्रगति में सहायक १५.१
३. नये समाज का नया निर्माण १५.२
४. विकृतियों का समाधान १५.२
५ क्षोभ को उल्लास में बदलें १५.३
६. विवाह संस्कार की महत्ता १५.४
७. मंगल पर्व की जयन्ती १५.४
८. परम्परा-प्रचलन १५.४
९. संकोच अनावश्यक १५.५
१०. संगठित प्रयास की आवश्यकता १५.५
११ पाँच विशेष कृत्य १५.६
१२. ग्रन्थि बन्धन १५.६
१३. शिलारोहण १५.७
१४. पाणिग्रहण १५.७
१५ सप्तपदी १५.८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१६. सुमंगली १५.१०
१७. व्रतधारण की आवश्यकता १५.११
१८. यह तथ्य ध्यान में रखें १५.१२
१९. विवाह दिवसोत्सव के उद्देश्य और शिक्षा १५.१३
२०. विवाह दिवसोत्सव संस्कार—विधि १५.१४
२१ संस्कार क्रम १५.१४
२२. मंगलाचरण-षट्कर्म १५.१४
२३. ग्रन्थि बन्धन १५.१४
२४. पाणिग्रहण १५.१४
२५ शिलारोहण १५.१४
२६. सप्तपदी १५.१४
२७. माला १५.१५
२८. तिलक १५.१५
२९. वैवाहिक वर्षगाँठ की उपयोगिता १५.१५

१६. युग-संस्कार—पद्धति

१. क्रम व्यवस्था १६.१
२. पुंसवन संस्कार १६.२
३. नामकरण संस्कार १६.३
४. अन्नप्राशन संस्कार १६.४
५ मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार १६.४
६. शिखा स्थापन संस्कार १६.५
७. विद्यारम्भ संस्कार १६.६
८. यज्ञोपवीत संस्कार १६.७
९. गुरु दक्षिणा संकल्प १६.८
१०. वानप्रस्थ (प्रव्रज्या) संस्कार १६.८
११ जन्मदिवसोत्सव १६.९
१२. विवाह दिवसोत्सव १६.१०
१३. आचार्य वरण १६.११
१४. आचार्य तिलक १६.११
१५ यजमानवरण १६.११
१६. यजमान तिलक १६.११
१७. सूर्य अर्घ्य १६.११
१८. आशीर्वाद १६.१२
१९. यज्ञोपवीत धारण १६.१२
२०. यज्ञोपवीत निकालना १६.१२
२१ आर्तिक्यं १६.१२
२२. मन्त्र पुष्पाञ्जलि १६.१२
२३. अभिषिंचन १६.१२
२४. चरणस्पर्श १६.१२
२५ उपहार देने का मन्त्र १६.१२

१७. सूक्त—संहिता

१ अथ पुरुषसूक्तम् १७.७
२. अथ श्री सूक्तम् १७.७
३. अथ गणपति सूक्तम् १७.८
४. अथ सरस्वती सूक्तम् १७.८
५ अथ भद्र सूक्तम् १७.८
६. अथ ब्रह्म सूक्तम् १७.९
७. अथ विष्णु सूक्तम् १७.९
८. अथ रुद्र सूक्तम् १७.१०
९. अथ दुर्गा सूक्तम् १७.१०
१०. अर्थ सूर्य सूक्तम् १७.११
११ अथ वरुण सूक्तम् १७.११
१२. अथ पवमान सूक्तम् १७.१२
१३. अथ भू सूक्तम् १७.१२
१४. अथनवग्रह सूक्तम् १७.१३
१५ अथ पितृ सूक्तम् १७.१३
१६. अथ अग्नि सूक्तम् १७.१४
१७. अथ वैश्वानर सूक्तम् १७.१४
१८. अथ अन्तरिक्ष सूक्तम् १७.१४
१९ अथ सविता सूक्तम् १७.१५
२०. अथ सोम सूक्तम् १७.१६
२१ अथ यम सूक्तम् १७.१६
२२. अथ संरक्षण सूक्तम् १७.१८
२३. अथ अश्म सूक्तम् १७.१७
२४. अथ गर्भ सूक्तम् १७.१८
२५ अथ प्रजा सूक्तम् १७.१८
२६. अथ अश्विन सूक्तम् १७.१९
२७. अथ शान्ति सूक्तम् १७.२०
२८. अथ विजय सूक्तम् १७.२०
२९ अथ मित्र सूक्तम् १७.२३
३०. अथ इन्द्र सूक्तम् १७.२३
३१ अथ आयुष्य सूक्तम् १७.२४
३२. अथ संप्रज्ञान सूक्तम् १७.२४
३३. अथ वायु सूक्तम् १७.२५
३४. अथ प्राण सूक्तम् १७.२५
३५ अथ शान्ति सूक्तम् १७.२६
३६. अथ नमः सूक्तम् १७.२६
३७. अथ ऋषिः सूक्तम् १७.२८
३८. अथ गौ सूक्तम् १७.२८
३९ अथ यज्ञ सूक्तम् १७.२८
४०. अथ अन्न सूक्तम् १७.२९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

संस्कारों की पुण्य-परम्परा

मानव जाति की सुख-शान्ति एवं प्रगति की सर्वोपरि आवश्यकता का महत्त्व हमारे तत्वदर्शी पूर्वज, ऋषि-महर्षि भली प्रकार समझते थे। अतएव इसके लिये उन्होंने प्रबल प्रयत्न भी किये, अपने बहुमूल्य जीवनों को इसी आवश्यकता की पूर्ति के साधन विनिर्मित एवं प्रचलित करने में घुला दिया। उनकी इस पुण्य प्रक्रिया को संस्कृति का सृजन कहा जाय, तो उपयुक्त ही होगा। हमारा सारा धर्म-साहित्य इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए लिखा गया है। योगाभ्यास, ईश्वर, उपासना, तपश्चर्या, इन्द्रिय-निग्रह, संयम, सदाचार, व्रत-उपवास, तीर्थयात्रा, देव-दर्शन, दान-पुण्य, कथा-प्रवचन, यज्ञ-अनुष्ठान आदि का जितना भर भी धर्म कलेवर हमें दृष्टिगोचर होता है उसके मूल में मात्र एक ही प्रयोजन सन्निहित है कि व्यक्ति अधिकाधिक निर्मल, उदार, सद्गुणी, संयमी एवं परमार्थ परायण बनता चला जाय। इसी स्थिति के लिये जिस स्तर की उच्च विचारणा अभीष्ट है, उसका क्रमिक निर्माण उपर्युक्त प्रकार की विचारणा एवं कार्य-पद्धति से सम्भव होता है। यह धर्म-प्रयोजन कर्मकाण्ड हमारी चेतना को उस स्तर पर विकसित करने का प्रयत्न करते हैं जिसे अपनाने पर जीवन अधिक पवित्र, उत्फुल्ल एवं लोकोपयोगी बन सके।

धरती पर स्वर्ग अवतरित करने की ऋषि प्रणाली

केवल शास्त्र रचना एवं धार्मिक विधि निषेधों का प्रचलन करने तक ही ऋषियों ने अपना कर्त्तव्य समाप्त नहीं समझा वरन् यह भी स्मरण रखा कि इस प्रेरणा को स्थिर एवं अग्रगामी रखने के लिए उन्हें निरन्तर कठोर श्रम भी करना होगा और अपनी शक्ति, सामर्थ्य को उसी पुण्य प्रयोजन में खपा भी देना होगा। उनकी जीवनयापन पद्धति में सर्वोपरि, सर्वाधिक स्थान इसी बात का था कि वे जन-जीवन में धर्मचेतना सजीव एवं सुविकसित रखने के लिए निरन्तर प्रवचन द्वारा प्रशिक्षित करते रहें और साथ ही ऐसे रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहें, जिनके माध्यम से धर्म को सचमुच विकास का अवसर मिलता रहे। ब्राह्मणों और सन्तों की जीवन प्रणाली यही है। वे अपने व्यक्तिगत जीवन को सुरक्षा एवं प्रखरता के लिये स्वाध्याय, उपासना, तपश्चर्या, गोपालन, कृषि आदि की व्यवस्था भी रखते थे, पर यह तो शरीर यात्रा मात्र की व्यवस्था हुई। लक्ष्य तो उनका जन जागरण रहता था। जन-जागरण का अर्थ है—व्यक्ति के अन्तःकरण में धर्म-भावना एवं आदर्शवादिता पर सुदृढ़ रहने का सुदृढ़ संकल्प और उस ओर ऊँचे से ऊँचे स्तर तक बढ़ते हुए महापुरुष नर-रत्न बनने का उत्साह एवं साहस। ब्राह्मण एवं सन्त जन समाज के अन्तःकरणों में इसी प्रकार की सद्-प्रवृत्तियों को उगाने-बढ़ाने की कृषि किया करते थे। यही कार्यक्रम उनकी जीवन साधना का सबसे उज्ज्वलपन था। जब तक ब्राह्मण का यह त्याग बलिदान भरा सत्प्रयत्न प्रकाशवान् बना रहा तब तक इस देश में सुख-शान्ति की ऐसी अमृतधारा बहती रही, ऐसी शीतल मन्द-सुगन्ध मलय समीर बहती रही, जिससे सारा विश्व अपने को धन्य मानता रहा। आज तो सब कुछ उलटा हो गया है। दुर्भाग्य ने ब्राह्मण और सन्त का लक्ष्य भी उलट दिया। वे अपनी व्यक्तिगत समृद्धि के लिये ऋद्धि-सिद्धियों का उपार्जन करने की अभिलाषा के लोभ में पड़े हैं, बेचारों को मिलना तो है क्या ?

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्वश्रेष्ठ परम्परा

मानव कल्याण की महान परम्पराओं में जितने भी आयोजन एवं अनुष्ठान हैं, उनमें सबसे बड़ी परम्परा संस्कारों एवं पर्वों की है। संस्कारों, धर्मानुष्ठानों द्वारा व्यक्ति एवं परिवार को तथा पर्व-त्यौहारों के माध्यम से समाज को प्रशिक्षित किया जाता है। इन पुण्य परम्पराओं पर जितनी ही बारीकी से हम ध्यान देते हैं उतना ही अधिक उनका महत्त्व एवं उपयोग विदित होता है। पर्व-त्यौहारों की चर्चा अन्यत्र करेंगे, यहाँ तो हम षोडश संस्कारों की उपयोगिता एवं आवश्यकता पर ही थोड़ा प्रकाश डालेंगे।

यों स्वाध्याय-सत्संग, प्रशिक्षण, चिन्तन, मनन आदि का प्रभाव मनुष्य की मनोभूमि पर पड़ता ही है और उनसे व्यक्ति के भावना स्तर को विकसित करने में सहायता मिलती ही है और इनकी उपयोगिता को स्वीकार करते हुए सर्वत्र इनका प्रचलन रखा भी जाता है पर साथ ही एक बात यह भी ध्यान में रखनी चाहिए कि अन्तःचेतना को उच्च प्रयोजन के लिए उल्लसित एवं सूक्ष्म बनाने के कुछ वैज्ञानिक उपकरण भी हैं और उनका महत्त्व स्वाध्याय, सत्संग आदि चलित उपकरणों की अपेक्षा किसी भी प्रकार कम नहीं है। इन व्यक्तित्व निर्माण के वैज्ञानिक माध्यमों को ही "संस्कार" कहा जा सकता है। संस्कार वे उपचार हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य को सुसंस्कृत बनाना सबसे अधिक सम्भव एवं सरल है। कहने की आवश्यकता नहीं कि सुसंस्कारित व्यक्ति के निजी, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में कितनी श्रेयस्कर एवं मंगलमय सिद्धि हो सकती है।

विज्ञान सम्मत प्रक्रिया

बालक के गर्भ में प्रवेश करने से लेकर जीवनयापन की विविध परिस्थितियों में से गुजरते हुए शरीर छोड़ने तक विविध अवसरों पर "संस्कारों" का आयोजन करने का हमारे धर्म शास्त्रों में विधान है। इन विधानों से व्यक्ति की अन्तःचेतना पर एक विशेष प्रभाव पड़ता है और उसका सुसंस्कारी बन सकना सरल हो जाता है। विशिष्ट प्रयोजनों के लिए उपयुक्त, विशिष्ट शक्ति सम्पन्न वेद-मन्त्रों में अपनी विशिष्ट क्षमता होती है, उनका निर्माण ऐसी वैज्ञानिक पद्धति से हुआ है कि विधिवत् सस्वर उच्चारण किये जाने पर वे आकाश तत्व में एक विशिष्ट विद्युत् प्रवाह तरंगित करते हैं। उनका प्रयोजन पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है जैसा उस मन्त्र का उद्देश्य है। मन्त्रों की शक्ति प्रसिद्ध है। फिर वेद-मन्त्रों की शक्ति का तो कहना ही क्या ? शब्द शास्त्र के सूक्ष्मदर्शी वैज्ञानिकों ने अगणित प्रयोग परीक्षणों से पूर्वकाल में यह पता चलाया था कि किन शब्दों का किन-किन शब्दों के साथ तालमेल बिठाया जाय और उनका किस प्रकार उच्चारण किया जाय तो उससे किस प्रकार का प्रवाह निःसृत होगा और उसका सुनने वालों पर अथवा जिनके निमित्त उनका उच्चारण किया जा रहा है, उन पर क्या प्रभाव होगा ? इसी निष्कर्ष के आधार पर वेद मन्त्र बने हैं और उनमें से किस का किस प्रयोजन के लिए किस प्रकार प्रयोग किया जाय, इसका निर्धारण गृह-सूत्रों एवं कर्मकाण्ड प्रयोजन के लिये विनिर्मित धर्म-ग्रन्थों में हुआ है। यज्ञ उपचार के साथ-साथ इन मन्त्रों की शक्ति और भी बढ़ जाती है। जो लोग आहुतियाँ देते हैं, उन पर इन मन्त्रों का सीधा प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार बिजली, भाप, अणु, रसायन, पदार्थ-विद्या आदि का अपना विज्ञान है, उसी प्रकार मन्त्र-शास्त्र एवं यज्ञादि कर्मकाण्डों का भी अपना विज्ञान है। यदि कोई उसका प्रयोग ठीक प्रकार से कर सके तो मनुष्य के ऊपर उसका असाधारण प्रभाव पड़ सकता है और उस प्रभाव का असाधारण लाभ उठाया जा सकता है। व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने में संस्कार पद्धति का क्रिया-कलाप इतना अधिक सफल हो सकता है कि उससे आज भी आश्चर्यचकित हुआ जा सकता है।

मानसिक चिकित्सा की प्रखर पद्धति

जिस प्रकार अभ्रक आदि सामान्य पदार्थों का आयुर्वेद शास्त्र के ज्ञाता अनेक बार अग्नि संस्कार करते हैं और उससे मकरध्वज सरीखी बहुमूल्य रसायनें बनाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य पर षोडश संस्कारों को सोलह बार प्रयोग करके भारतीय धर्मानुगामी को सुसंस्कारी बनाया जाता है। यह विज्ञान अद्भुत है। अब तक शरीरगत दुर्बलताओं एवं बीमारियों के समाधान का ही बहुत करके अन्वेषण प्रयास किया गया है। आयुर्वेद, होम्योपैथी, तिब्बी एलोपैथी, नेचरोपैथी आदि चिकित्सा पद्धतियाँ प्रायः शरीरगत कष्टों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही दूर करती हैं। अब हुआ तो पागलों के इलाज के लिये मानसिक अस्पतालों में एक लँगड़ी-लूली परिक्षणात्मक व्यवस्था चल रही है। सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है मनुष्य की मानसिक विकृतियों एवं दुर्बलताओं के समाधान की। इन्हीं के कारण मानव-जाति को सबसे अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। प्रगति के पथ को अवरुद्ध करने वाली प्रधान बाधा यह विकृतियाँ ही हैं, पर इनके निराकरण का कोई उपाय न किसी चिकित्सा पद्धति ने खोजा और न प्राप्त ही किया।

सनकी, तुनकमिजाज, बहमी, कंजूस, संशयी, अविश्वासी, ओछे, निर्दयी, स्वार्थी, रूखे, कामुक, व्यसनी, चञ्चल, अस्त-व्यस्त, उद्विग्न, आवेशग्रस्त, क्रोधी, अस्थिरमति, भावुक, अन्ध-विश्वासी, दुराग्रही, उच्छृंखल, अहम्मन्य, दुस्साहसी, अतिवादी, शेखीखोर, ईर्ष्यालु मनुष्यों की समाज में कमी नहीं। इस प्रकार के मनोविकार वस्तुतः एक प्रकार के हलके मानसिक रोग ही हैं। जिस प्रकार शरीर में अनेक ऐसे रोग भी होते हैं, जिनका कष्ट तो सहते रहना पड़ता है, पर चारपाई पर गिरने का अवसर नहीं आता। उसी प्रकार मन मस्तिष्क में भी ऐसे कितने ही रोग होते हैं, जिनका प्रभाव मनुष्य को अधपगले जैसी स्थिति में ले जाकर पटक देता है। यद्यपि वह देखने में सामान्य श्रेणी का ही प्रतीत होता है और उसमें ऐसा लक्षण नहीं दीखता, जिससे उसे पागल खाने में बन्द किया जा सके। कुसंस्कारी व्यक्ति प्रायः अधपगले जैसी स्थिति में रहते हैं। वे अपनी आदतों के कारण अपने साथी सम्बन्धियों की नाक में दम किये रहते हैं। उनसे प्रायः सभी लोग खिन्न एवं असन्तुष्ट रहते हैं, महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकने की उनकी प्रतिभा भी नष्ट हो जाती है, ऐसी दशा में वे कोई ऊँची सफलता प्राप्त कर सकेंगे इसकी तनिक भी आशा या सम्भावना नहीं रहती। जिन्दगी के दिन किसी प्रकार पूर्ण कर लें, यही उनके लिए बहुत होता है। इस प्रकार की मानसिक अस्त-व्यस्तता मनुष्य का एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। खेद है, इस व्यापक दुर्भाग्य के निराकरण के लिए भौतिकवादी जगत में कोई ठोस प्रयत्न नहीं किया गया, अथवा यों कहना चाहिए कि इस दिशा में जो छुट-पुट प्रयत्न किये गये उनमें कोई सफलता नहीं मिली।

व्यक्ति निर्माण का उपयुक्त माध्यम

इस महत्त्वपूर्ण समस्या पर ऋषियों ने अत्यधिक गम्भीरतापूर्वक विचार किया था। वह उपाय भी खोज निकाला था जिसके आधार पर मानवीय मन को एक विशिष्ट वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर निर्मल, सन्तुलित एवं सुसंस्कृत बनाया जा सके। इस प्रक्रिया का नाम है—संस्कार पद्धति। समय-समय पर षोडश संस्कारों का प्रयोग उपचार मनुष्य के ऊपर इस प्रकार किया जा सकता है कि उसके मनोविकारों का शमन हो और उन सत्प्रवृत्तियों का विकास हो जिनसे व्यक्तित्व प्रखर बनता है। जीवन में सतत काम आने वाली सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण भी इन संस्कारों के समय ही होता है। यदि किसी बालक के सभी संस्कार ठीक रीति से समुचित वातावरण में किये जायें तो उसका ऐसे सुविकसित व्यक्तित्व से सम्पन्न होना पूर्णतया सम्भव है, जिससे उसका जीवन आनन्दमय, प्रतिभा सम्पन्न, प्रगतिशील एवं सफल बन सके। संस्कार पद्धति को एक प्रकार से मनोविकारों के निराकरण की विज्ञान सम्मत चिकित्सा प्रणाली कहा जा सकता है। उसे व्यक्तित्वों को प्रतिभा सम्पन्न बनाने की सृजनात्मक प्रक्रिया कहा जाये तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी।

यज्ञ चिकित्सा पद्धति से उन रोगों का निराकरण हो सकना सम्भव है, जो शरीर चिकित्सा शास्त्र की दृष्टि से असाध्य घोषित किये जा चुके हैं। इसी प्रकार उससे मनोविकारों का शमन भी होता है। ब्राह्मण के छः कार्य बताये गये हैं। १. यज्ञ करना, २. यज्ञ कराना, ३. विद्या पढ़ना, ४. विद्या पढ़ाना, ५. दान देना, ६. दान दिलाना। इन छः को तीन जोड़े ही समझना चाहिये। यज्ञ, शिक्षण और दान इन तीन प्रयोजनों में ही ब्राह्मण को लगा रहना चाहिए। इसका तात्पर्य यह हुआ कि उसका एक तिहाई जीवन यज्ञ प्रयोजन में संलग्न रहे। स्पष्ट है कि यज्ञ प्रक्रिया किसी व्यक्ति के साथ जितनी अधिक जुड़ी रहेगी वह उतना ही अधिक मानसिक दृष्टि से निर्मल बनेगा। ब्राह्मण इसी आधार पर अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पवित्र होते थे, यज्ञानुष्ठानों से उनका अन्तःकरण अधिकाधिक पवित्र होता चला जाता था और वे इस पृथ्वी के मूर्तिमान देवता-भूसुर कहलाते थे। यज्ञानुष्ठानों को छोड़ देने के कारण आज ब्राह्मण समाज अपनी इस प्रतिभा एवं विशेषता को ही खो बैठा। यह यज्ञानुष्ठान ब्राह्मण जाति के लिए ही आवश्यक नहीं होते, वरन् उन सभी के लिए श्रेयस्कर हैं, जो अपना मानसिक स्तर उत्कृष्ट बनाना चाहते हैं, देवत्व की भूमिका में विकसित होना चाहते हैं। संस्कारों के साथ जो धर्मानुष्ठान जुड़ा हुआ है ? वह उसी प्रयोजन की पूर्ति करता है। नित्य न सही जीवन का मोड़ उपस्थित करने वाले महत्त्वपूर्ण अवसरों पर भी यदि वे यज्ञानुष्ठान-संस्कार प्रयोजन के लिए किये जायें तो उतने से भी आशाजनक परिणाम होता है। व्यक्ति निर्माण के प्रयोजन की पूर्ति में भारी सहायतायें मिला करती हैं।

कर्मकाण्ड और प्रशिक्षण

संस्कारों की प्रक्रिया को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक—उसका वैज्ञानिक स्वरूप, जो मन्त्रोच्चारण, यज्ञानुष्ठान आदि कर्मकाण्डों के रूप में प्रयुक्त होता है। दूसरा प्रशिक्षण—जो मन्त्रों की व्याख्या तथा विधि-विधानों के रहस्योद्घाटन के रूप में उपस्थित व्यक्तियों तथा जिसका संस्कार हो उसके सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। कर्मकाण्ड की वैज्ञानिक प्रक्रिया की थोड़ी चर्चा ऊपर की जा चुकी है, उसके सम्बन्ध में जितना अधिक कहा जाय उतना ही कम है। जिस प्रकार तीव्र औषधियाँ शरीर पर तत्काल प्रभाव करती हैं, उसी प्रकार इन कर्मकाण्डों का भी सुनिश्चित प्रभाव होता है। यदि ठीक विधि- विधान से उचित समय और उचित वातावरण में इन संस्कारों को कराया जा सके तो उसका प्रभाव असाधारण ही होगा। जिसका अन्नप्राशन ठीक प्रकार से हुआ हो, उसे उदर विकारों से ग्रसित नहीं रहना पड़ेगा। जिसका विद्यारम्भ विधिवत् किया गया है, उसका अध्ययन रुकेगा नहीं। जिसका यज्ञोपवीत ठीक तरीके से किया जाय वह आजीवन मानव धर्म का अनुयायी ही रहेगा। जिन वर-वधू का विवाह उचित रीति के साथ सम्पन्न किया जाय, उनके जीवन में प्रेम की गंगा अविच्छिन्न रूप से ही बहेगी और उनमें द्वेष-दुर्भाव का बीजारोपण कदापि न होगा। इसी प्रकार अन्य संस्कारों की बात है। हर संस्कार का अपना महत्त्व, प्रभाव और परिणाम होता है। आज उन वैज्ञानिक क्रिया-कलापों को लोग भूल गये हैं। या अधूरे, लँगड़े और बेगार टालने जैसे वातावरण में करते हैं। फलस्वरूप उनका प्रभाव भी नगण्य ही होता है। अब हम जब कि भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के लिये कटिबद्ध हुए हैं और प्राचीन भारत के गौरव को पुनः वापस लाने का स्वप्न साकार करने चले हैं तो हमें अपनी महान् संस्कृति के मूलाधार-संस्कारों की प्रक्रिया को भी सजीव करना होगा। अब उनको विधि-विधानों की लकीर पीटने की तरह बेगार या उपेक्षा के वातावरण में नहीं, वरन् पूर्ण उत्साह, श्रद्धा एवं तत्परता के साथ सम्पन्न करने की ओर ध्यान देना होगा। इस ओर जितना ही अधिक ध्यान दिया जायेगा उतना ही उसका सत्परिणाम भी सामने आयेगा। हमें वह उपाय करने ही होंगे जिनसे प्रत्येक भारतीय धर्मानुयायी परिवार में प्रत्येक के संस्कारों को कराया जा सके, यह उतना ही उपयोगी एवं आवश्यक माना जाय, जितना कि उसकी भोजन, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा आदि की जरूरतों को पूरा किया जाना। साथ ही विधि-विधानों को सुव्यवस्थित रीति से सम्पन्न करा सकने वाले व्यक्तियों का प्रशिक्षण करने की आवश्यकता पूरी करनी होगी।

उद्बोधन आवश्यक

संस्कारों में प्रयुक्त होने वाली कर्मकाण्ड प्रक्रिया का प्रत्येक अंग अपने आप में रहस्यपूर्ण है। उसमें बड़ा महत्त्व एवं मर्म छिपा पड़ा है। कर्मकाण्ड कराते समय इन रहस्यों को व्याख्यापूर्वक समझाया जाना चाहिए। साथ ही उन मन्त्रों अथवा प्रसंगों के माध्यम से जो प्रशिक्षण दिया जाना है वह भी ऐसे प्रभावशाली ढंग से दिया जाना चाहिए कि जिसका संस्कार हो रहा है केवल वह ही नहीं वरन् अन्य जो भी व्यक्ति उस अवसर पर उपस्थित हों, वे सभी प्रभाव ग्रहण करें। संस्कार कराने वाले को उत्तम प्रवक्ता भी होना चाहिए। जो विधानों के रहस्य और मन्त्रों के मर्म को ऐसे ढंग से समझा सके कि सुनने वाले उसे भावनापूर्वक हृदयंगम कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकें। धर्म प्रचार का, कर्त्तव्य उद्‌बोधन का, व्यक्ति निर्माण का यह प्रशिक्षण ही आगे चलकर हमें प्रमुख आधार बनाना पड़ेगा। इसलिए संस्कारकर्त्ताओं को धर्म संस्कृति का सन्देशवाहक बनकर युग-निर्माता की भूमिका प्रस्तुत करने के लिए तैयार होना होगा। प्राचीन काल में ब्राह्मण ऐसे ही मध्यार्मो से जन-साधारण तक पहुँचते थे और उनकी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं का समाधान करने वाले हल प्रस्तुत करते थे। उपयुक्त वातावरण में, उपयुक्त प्रकार के प्रशिक्षण का प्रभाव भी उपयुक्त ही होना चाहिये। होता भी था और आगे होने वाला भी है। इन दिनों इस सम्बन्ध में लज्जाजनक दुर्दशा परिलक्षित हो रही है, उसका कायाकल्प ही करना होगा। आज तो ग्राम-गुरु और पण्डा, पण्डित जिन्हें नाम मात्र की शिक्षा प्राप्त हुई है, उल्टे-सीधे इधर-उधर गन्ध, अक्षत डाल-पटक कर अशुद्ध मन्त्रोच्चारण करते हुए किसी प्रकार कर्मकाण्ड की उलटी लकीर पीट देते हैं। वे न तो उन संस्कारों का महत्त्व एवं रहस्य स्वयं समझते हैं और न यजमानों को समझा सकते हैं। गन्ध, अक्षत इधर-उधर कराने में ही उनका कृत्य पूरा हो जाता है। यह चिह्न-पूजा वह प्रयोजन पूरा नहीं कर सकती, जिसके लिए इन महान् परम्पराओं का निर्माण किया गया था।

कर्मकाण्ड की वैज्ञानिक प्रक्रिया से यजमान परिवार को प्रभावित करने के अतिरिक्त यह भी उतना ही आवश्यक है कि इन शुभ अवसरों पर उनके सामयिक कर्त्तव्यों का उद्‌बोधन भी कराया जाय। संस्कार-उत्सव के अवसर पर परिवार के, पड़ोस के तथा सम्बन्ध परिचय के नर-नारी एकत्रित होते हैं। दुःख और सुख को बाँटकर खाने की प्रथा भारतीय संस्कृति का अंग है। किसी का श्रेय साधन करने वाले संस्कार उत्सव हों और उसके स्वजन सम्बन्धी एकत्रित न हों भला यह कैसे हो सकता है ? घर के सभी लोग अपने इस हर्षोत्सव में सम्मिलित होने के लिए स्वयं ही तैयार नहीं रहते वरन् प्रीति और अनुरोधपूर्वक अन्य मित्र परिवारों को भी आमन्त्रित करके लाते हैं। उस समय स्वभावतः पाँच-पचास व्यक्ति एकत्रित हो जाते हैं यदि कहीं "कुलिया में गुड़ फोड़ने" की तरह अभी तक यह बेगार भुगती जा रही हो तो अब उसमें घर, परिवार, पड़ोस और परिचय के अधिकाधिक नर-नारी बाल, वृद्ध आमन्त्रित किये जायें, ताकि केवल जिसका संस्कार हो रहा है, वही नहीं, वरन् उस वातावरण के शक्ति प्रवाह से एवं धर्म प्रशिक्षण से सभी एकत्रित लोग लाभ उठा सकें।

विचार गोष्ठी आयोजन

प्राचीन काल में यही होता था। संस्कार के अवसर पर उपस्थित उस परिवार एवं पड़ोस के लोगों को संस्कार कराने वाले विद्वान् आचार्य उनके सामयिक कर्त्तव्यों का प्रेरणाप्रद उद्‌बोधन कराते थे। जीवन जीने की कला, धर्म, अध्यात्म एवं कर्त्तव्य का मार्ग-दर्शन करते थे। संस्कार के माध्यम से आयोजित इस जनगोष्ठी में मन्त्रों की व्याख्या करते हुए आचार्य जो प्रेरणा प्रदान करत थे, उससे सुनने वालों की भावनायें तरंगित हो उठती थीं। वे अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक, सावधान होते थे। इस प्रकार यह दो-तीन घण्टे की धर्म गोष्ठी एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण का प्रयोजन पूरा करती थी। चूँकि हर परिवार में कई-कई व्यक्ति होते हैं और हर व्यक्ति के १६-१६ संस्कार होते हैं, तो स्वभाव थोड़े-थोड़े दिनों बाद ऐसी धर्म गोष्ठियाँ भी उन घरों में होती रहेंगी। फिर पड़ौस में भी यही सब होता है, तो इसका परिणाम यही होगा कि आये दिन इन धर्म-गोष्ठियों का प्रचलन होता रहेगा। जहाँ ऐसी सुविधा उपलब्ध हो वहाँ के लोग कैसे कुमार्गगामी हो सकेंगे और कैसे पथ भ्रष्ट ?

साधारण वातावरण में किया हुआ प्रशिक्षण इतना प्रभावशाली नहीं होता जितना धर्मोत्साह, उल्लास एवं उत्साह भरे वातावरण में दी हुई शिक्षा हृदयंगम होती है। दाम्पत्य कर्त्तव्यों की बात किसी पुस्तक में पढ़ ली जाय या बता दी जाय तो वह उतनी प्रभावशाली नहीं होगी, जितनी कि विवाह समारोह के समय जब वर-वधू दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़कर पाणिग्रहण करते हैं, तब उस समय खड़े होकर उपस्थित सम्भ्रान्त गुरुजनों के, देवताओ के, जनसाधारण के सामने की हुई प्रतिज्ञायें। वे प्रतिज्ञायें यदि स्वस्थ मन से की गई हों तो आजीवन स्मरण रहेंगी और यदि कोई भूल कर रहा होगा तो एक-दूसरे को उस बात का स्मरण दिलाकर लज्जित एवं सावधान भी कर सकेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गंगा में खड़े होकर या गंगाजल को हाथ में रखकर कसम खाने का अवसर आने पर लोग झूँठ बोलते हुए काँपते हैं, पर साधारण स्थिति में बार-बार बोलते रहते हैं। धर्मानुष्ठानों का एक बड़ा मनोवैज्ञानिक लाभ या रहस्य यह भी है कि उस समय जो कहा या सुना जाएगा वह अत्यधिक प्रभावयुक्त होगा। समाजशास्त्र और मनोविज्ञान-शास्त्र दोनों ही इस तथ्य की प्रबल पुष्टि करते हैं कि उपयुक्त वातावरण एवं परिस्थितियों में दी गई शिक्षा सामान्य रीति से कहने-सुनने की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावशाली होती है। संस्कारों के निमित्त आयोजित गोष्ठियाँ इसी प्रयोजन को पूरा करती हैं। उनके माध्यम से दिये गये प्रशिक्षण का प्रभाव सुनने वालों के अन्तःकरण में गहराई तक प्रवेश करने वाला होना ही चाहिये।

लोकशिक्षा का अनुपम माध्यम

लोकशिक्षण का यह तरीका बहुत ही उत्तम है। जन-जन के पास अलग-अलग पहुँच सकना और उन्हें अलग-अलग प्रशिक्षित कर सकना धर्म प्रचारकों के लिए कठिन है। जनता को एकत्रित करने से ही जन जागरण के उपयुक्त धर्म चर्चा की व्यवस्था बन सकती है। यह कार्य संस्कारों की स्वस्थ परम्परा प्रचलित करने के अतिरिक्त और किसी प्रकार उतनी अच्छी तरह नहीं हो सकता। इन संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति निर्माण एवं परिवार निर्माण के हर पहलू का समझाया जा सकता है और उपयुक्त प्रेरणा को हर वर्ण एवं हर स्तर के लोगों के मन में गहराई तक उतारा जा सकता है। धर्म के लिये मञ्च तो होना ही चाहिए। जनता को इकट्ठा तो किया ही जाना चाहिए। बड़े सभा सम्मेलनों की अपेक्षा परिवार-परिवार में चलने वाला यह प्रशिक्षण कितना उपयोगी हो सकता है, इसका प्रयोग परीक्षण हजारों लाखों वर्ष तक इस देश में होता रहा है। विद्वान ब्राह्मणों ने इन्हीं प्रक्रियाओं के द्वारा इस देश की जनता को प्रबुद्ध बनाये रखा था और तदनुरूप यहाँ शक्ति, सामर्थ्य, विद्या, बल, वैभव, शौर्य, पराक्रम आदि किसी भी तत्व की कमी नहीं रहती थी। अब पुनः हमें उसी परिपाटी का अवलम्बन करके नव-निर्माण का, सांस्कृतिक पुनरुत्थान का प्रयोजन पूरा करना होगा।

आज इन संस्कारों का प्रचलन एक प्रकार से समाप्त ही हो गया है। हमें क्रमशः उनका विकास करना चाहिए। १६ के स्थान पर अभी १० संस्कारों का प्रचलन पर्याप्त होगा ताकि इस महँगाई के युग में लोग इस भार को वहन करने से कतराने न लगें। इन दिनों समय, धन, उत्साह, पारस्परिक सहयोग, धर्मनिष्ठा आदि सभी बातों की कमी है, इसलिए देश, काल, पात्र के अनुसार व्यवस्था बनाते, बदलते चलने की ऋषि परम्परा के अनुरूप यह उचित ही होगा कि अभी दस संस्कारों का प्रचलन किया जाये।

कुछ असामयिक संस्कार

यों प्रथम संस्कार गर्भाधान है। प्राचीनकाल में रतिक्रिया वासना के लिए नहीं, सन्तानोत्पादन के लिए ही होती थी, वह अन्य पशु-पक्षियों की तरह एक बारगी में ही पूर्ण सफल हो जाती थी, पर अब तो जब कि सब कुछ उलटा ही हो गया है और एकान्त मिलन का प्रयोजन वासना की पूर्ति मात्र रह गया है। तब गर्भाधान संस्कार के लिए स्थान ही कहाँ रहा ? फिर उसका परिणाम गर्भस्थापन के रूप में हो जाये, यह भी निश्चित नहीं। ऐसी दशा में अब उस संस्कार को असामयिक ही कहा जा सकता है। हाँ, उसका इतना स्वरूप तो बना ही रहना चाहिए कि प्रत्येक समागम से पूर्व पति-पत्नी वह संकल्प किया करें कि "हम सन्तानोत्पादन एवं उनको सुयोग्य बनाने की सामर्थ्य से सम्पन्न होने के कारण समाज को शरीर और मन से स्वस्थ नागरिक भेंट करने के लिए तत्पर होते हैं, वासना घृणित है, उससे सब कुछ क्षीण होता है, पर सन्तानोत्पादन महान् है। हम लोग रतिक्रिया वासना के घृणित प्रयोजन के लिए नहीं, विश्व मानव को अपना एक उपहार देने के लिए करेंगे। ईश्वर हमारी आकांक्षा पूर्ण करे।" यह संकल्प उन्हीं के लिये उचित है, जो सन्तान का भार उठाने में शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं पारिवारिक दृष्टि से पूर्णतया समर्थ हैं। रतिक्रिया के समय भी यही भावनायें दोनों के मनःक्षेत्र में विचरण करनी चाहिए। ऐसे संकल्प यदि बालक के गर्भ प्रवेश करते समय माता-पिता के मन में भ्रमण करते रहें तो संतान का सुसंस्कारी होना निश्चित है। आज की परिस्थितियों में गर्भाधान संस्कार इतना संक्षिप्त ही रहे तो पर्याप्त है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका विधिवत् कर्मकाण्ड अब नहीं हो सकता। गर्भिणी को गर्भ रक्षा की उचित शिक्षा एवं प्रेरणा देने के लिये पुंसवन और सीमन्त दो बार संस्कार कराने की प्रथा थी। अब इन दो में से एक ही संस्कार रखा जाये तब भी कम नहीं है। इसी प्रकार बच्चे का जन्म होने पर नाल काटने से पूर्व जो जात कर्म संस्कार होता है वह भी अब अव्यावहारिक-सा माना जायेगा। बालक जब भूमि पर आवे तब माता यह भावना करे कि "यह बालक धर्म प्रयोजन की पूर्ति के लिये जन्मे और जिये।" तो यह भावनायें भी उपयोगी रहेंगी।

नाक, कान छेदने की प्रथा अब असामयिक हो गई है। लड़कों के कान छेदना तो बहुत दिन से बन्द हो गया। लड़कियाँ भी अब इसे पसन्द नहीं करतीं। यह उचित भी है। इस प्रकार का छेदना, गोदना अब स्वास्थ्य और सौन्दर्य दोनों ही दृष्टियों से अनावश्यक एवं हानिकारक माना जाता है। यह निश्चित है कि अगले २०-३० वर्ष में भारतवर्ष में लड़कियाँ भी छेदने-गुदाने की प्रथा छोड़ देंगी। हमें इसमें कुछ भी अनुचित प्रतीत नहीं होता। अतएव कर्ण-वेध संस्कार को सोलह संस्कारों में से हटा दिया है। इसी प्रकार अब छात्र गुरुकुलों में गुरुओं के साथ रहने की परिपाटी के अनुसार नहीं वरन् अपने घरों में रहते हुए स्कूल, कॉलेजों में पढ़ते हैं, ऐसी दशा में गुरुकुल प्रवेश के समय तथा छोड़ते समय जो वेदारम्भ, यज्ञोपवीत और समावर्तन—यह तीन संस्कार प्राचीनकाल में तीन बार होते थे, अब लोग इकट्ठे ही तीनों करा देते हैं। जिस दिन छात्र गुरुकुल में प्रवेश करता है, उसी दिन एक-दो घण्टे बाद ही विद्या पूर्ण करके घर जाने की छुट्टी भी पा ले यह उपहासास्पद है। अब इतना ही पर्याप्त है कि इन तीनों के स्थान पर एक यज्ञोपवीत ही करा दिया जाये। इस तरह गर्भाधान, सीमान्त, जातकर्म, कर्णवेध, वेदारम्भ, समावर्तन यह छः संस्कार कम करके शेष दस संस्कारों का प्रचलन करने का व्यापक कार्यक्रम हाथ में लेना चाहिये। जिनके लिए सम्भव हो वे भले ही १६ करें, किन्तु सर्वसाधारण के लिए यही उचित होगा कि जो किया जाये बढ़िया और पूरा किया जाये। संख्या की दृष्टि से बहुत विस्तार करना किन्तु व्यवस्था की दृष्टि से सब कुछ अधूरा रखना ठीक नहीं।

पुंसवन की प्रेरणा

गर्भवती को उसके निजी कर्त्तव्यों का तथा सारे परिवार को नई आत्मा के आगमन के लिए स्वागत के उपयुक्त वातावरण बनाने का प्रशिक्षण पुंसवन संस्कार के माध्यम से किया जाना चाहिए। धर्मानुष्ठान का जहाँ गर्भस्थ बालक पर प्रेरणाप्रद प्रभाव पड़ेगा वहाँ परिवार के सभी सदस्य यह अनुभव करेंगे कि एक आत्मा के दिव्य अवतरण की पुण्य बेला में उन्हें अपने-अपने कर्त्तव्यों की तैयारी में क्या-क्या करना है। बालक का उचित प्रशिक्षण एवं निर्माण गर्भावस्था से ही हो जाना चाहिए। यह कैसे किया जाय ? उसको विस्तारपूर्वक समझाने का प्रयोजन पुंसवन संस्कार से पूरा होगा। व्यक्ति-निर्माण का कार्य यहीं से आरम्भ होता है।

नामकरण की उपयोगिता

नामकरण संस्कार के अवसर पर बालक के शारीरिक पालन-पोषण की नहीं मानसिक विकास की विधि-व्यवस्था भी समझाई जाती है, ताकि माता-पिता ही नहीं, परिवार के भी सदस्य इस नवीन आगन्तुक को सुसंकृत बनाने में अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ समझें ओर उनका पालन करें।

अन्नप्राशन क्यों ?

अन्नप्राशन के समय बच्चा तो छोटा होता है, पर परिवार के वयोवृद्ध सदस्यों को यह सिखाया जाता है कि बालक की स्वास्थ्य रक्षा के लिए किस प्रकार कितना और क्या भोजन कराया जाय तथा मानसिक स्वस्थता की दृष्टि से वह अन्न कितना सात्विक एवं संस्कारिक हो। अन्न से शरीर ही नहीं मन भी बनता है, इसलिए बच्चे को शरीर एवं मन की दृष्टि से समर्थ बनाने के लिए उसके आहार पर पूरा ध्यान देना होता है। उसी सतर्कता की शिक्षा अन्नप्राशन के समय दी जाती है और उपस्थित लोगों को यह बताया जाता है कि वे स्वयं भी अपना आहार किस तरह रखें, जिससे शरीर और मन से स्वस्थ रहने के अतिरिक्त राष्ट्रीय खाद्य संकट में अपना ठीक योगदान कर सकें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चूड़ाकर्म का मर्म

चूड़ाकर्म-मुण्डन का अर्थ है—मस्तिष्क को संस्कारवान् बनाने की आवश्यकता पर ध्यान देना। बालक छोटी आयु में ही बहुत कुछ सीख लेता है। कर्म, स्वभाव का तीन चौथाई निर्माण छोटी-सी आयु में हो जाता है। चूड़ाकर्म के समय बाल उतारना ही पर्याप्त नहीं वरन् यह सीखना भी आवश्यक है कि बालक पर वे संस्कार इन दिनों किस प्रकार डाले जायें, जिनके आधार पर वह भावी जीवन में महापुरुषों एवं नर-रत्नों की भूमिका प्रस्तुत कर सके।

विद्यारम्भ का श्रीगणेश

विद्यारम्भ व साक्षरता का श्रीगणेश मनुष्य जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। बच्चे को पढ़ाना आरम्भ करते हुए परिवार के सदस्यों को शिक्षा का उद्देश्य एवं स्वरूप भी निर्धारित कर लेना होता है और यह अनुभव करना होता है कि जितनी शिक्षा स्कूल में पायी जाती है, उतनी ही उसे घर पर भी मिलती रहे। भाषा, गणित, भूगोल आदि स्कूल में पढ़ाये जाते हैं, तो गुण, कर्म, स्वभाव की शिक्षा परिवार के वातावरण में मिलती है। इस उभय पक्षीय प्रशिक्षण में परिवार के लोग अपनी भूमिका किस प्रकार प्रस्तुत करें, यह शिक्षा विद्यारम्भ संस्कार के समय सारे परिवार को मिलती है।

यज्ञोपवीत की प्रेरणा

यज्ञोपवीत संस्कार— मानवता के आदर्शों को हृदयंगम करने और अपनी जीवन नीति यज्ञीय आदर्शों-लोकहित के लिए जीवन धारण करने के नीति-नियमों पर चलने की प्रेरणा एवं प्रतिज्ञा के निमित्त किया जाता है। बालक थोड़ा-सा समर्थ होते ही यह प्रतिज्ञा करता है कि वह पाशविक आकांक्षा, तृष्णाओं और वासनाओं की पूर्ति के लिये नहीं वरन् मानवता के महान् आदर्शों की पूर्ति के लिए जीवन जीयेगा। इस प्रतिज्ञा को वह एक तो धागे की प्रतिमा-सूत्र की तरह आजीवन छाती से चिपटाये रहता है ताकि उसे अपनी जीवन-नीति का सदा स्मरण बना रहे। धागे के रूप में वह उन आदर्शों को सदा ध्यान में रखता है। संस्कार के अवसर पर उपस्थित अन्य लोग भी यह प्रेरणा ग्रहण करते हैं कि उनकी जीवन-नीति क्या हो और जन्म को किस प्रकार सार्थक बनाया जाय ?

विवाह के आदर्श व कर्त्तव्य

विवाह दो आत्माओं का मिलन एवं एक नये परिवार—नये समाज का सृजन है। इतने महत्त्वपूर्ण कार्य को किन आदर्शों, सिद्धान्तों, नीतियों, भावनाओं एवं गतिविधियों के साथ सुसम्पन्न किया जा सकता है, इसकी पूरी विवेचना—व्याख्या विवाह मन्त्रों से भरी हुई है। पति-पत्नी को इस विवाह समझौते का पालन किस निष्ठा और तत्परता से करना होगा इसकी स्पष्ट रूप-रेखा, वैवाहिक क्रियाकृत्यों में समाविष्ट है। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी व्याख्या ठीक प्रकार की जा सके और इस ढंग से प्रस्तुत किया जा सके कि वर-वधू दोनों उसे दत्तचित्त हो सुनें और पूरी तरह हृदयंगम करें। देवताओं, भद्र-पुरुषों अग्नि की साक्षी में की हुई प्रतिज्ञाओं को यदि ठीक तरह समझा-समझाया जा सके तो हर विवाह एक नवीन अमृत निर्झरिणी प्रवाहित कर सकता है। इसी प्रकार उस मंगलमय धर्मानुष्ठान को विधिवत् कर्मकाण्ड के साथ सम्पन्न कराया जा सके, तो निश्चित है कि वह दोनों पक्षों के लिये परम शुभ होगा एवं मंगलमय परिणाम उत्पन्न करेगा। विधिवत् हुए विवाहों में कदाचित् ही कोई असफल होता हो, शायद ही किसी का अशुभ परिणाम निकलता हो। आज लोग विवाहोत्सव की धूमधाम में तो लगे रहते हैं, पर संस्कार की व्यवस्था एवं महत्ता को उपेक्षित ही पड़ा रहने देते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि वर-वधू ही नहीं उपस्थित सभी लोग ध्यानपूर्वक उस धर्मानुष्ठान को देखें और अपने निज दात्पत्य जीवन में जो विकृतियाँ रहती हों, उन्हें इस संस्कार के होने वाले कर्मकाण्ड एवं प्रशिक्षण के आधार पर अपनी भूल सुधारें और सद्गृहस्थ बनने की पद्धति सीखें।

वानप्रस्थ लोकमंगल का माध्यम

अगला संस्कार वानप्रस्थ है। बच्चे जब कमाऊ हो जायें, तब परिवार का उत्तरदायित्व समर्थ बच्चों पर डालें, स्वयं मार्गदर्शन करें और बचा हुआ समय आत्म-कल्याण के लिए, विश्व-मानव की सेवा के लिए लगाने के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कदम बढ़ायें। जीवन की इसी में सार्थकता और सफलता है। जो ढलती और आखिरी आयु में भी पेट पालता और तृष्णा वासना की लिप्सा में लगा रहा उसने मानव जीवन का मूल्य ही नहीं समझा, वानप्रस्थ संस्कार विवाह से भी बढ़कर आवश्यक है। व्यक्ति का निज का और समस्त समाज का कल्याण इसी राजमार्ग पर चलने से सम्भव होगा। उच्च आदर्शों के अनुरूप जीवन ढालने और वैसी ही परिस्थितियाँ सारे समाज में उत्पन्न करने के लिए अपनी प्रतिभा को लगा देने की प्रेरणा इस संस्कार में मिलती है। प्राचीनकाल में समाज के हर क्षेत्र में यह वानप्रस्थ ही निःस्वार्थ नेतृत्व करते थे। आज इस पुण्य परम्परा के नष्ट हो जाने से प्रखर नेतृत्व के लिए उपयुक्त व्यक्ति न मिलने का संकट उत्पन्न हो गया है। संसार के सामने जितनी भी समस्यायें हैं, उनसे जुझने के लिए प्रसुप्त जन मानस को जागृत करने के लिए जिन प्रबुद्ध लोकसेवियों की एक विशाल सेना आज अभीष्ट है, उसकी उपलब्धि वानप्रस्थ- निस्पृह भावना से ओत-प्रोत धर्म प्रेमी ही करेंगे। यह संस्कार हर सुयोग्य व्यक्ति कराये। इसकी हवा बहने लगे तो इस समाज का कायाकल्प होने में देर न लगे।

मरणोत्तर संस्कार

अन्तिम अन्त्येष्टि और मरणोत्तर संस्कारों का विधि-विधान है। यह दिवंगत जीवात्मा को सद्गति प्रदान करता है और परिजनों को जीवन-मरण के रहस्यों से परिचित कर उन्हें अपने शेष जीवन के सदुपयोग की शिक्षा देता है। साथ ही यह भी प्रेरणा देता है कि स्वर्गीय आत्मा के छोड़े हुए उन कर्त्तव्यों-उत्तरदायित्वों को कौन किस प्रकार पूरा करे मृतात्मा के सद्गुणों तथा सत्कर्मों की प्रशंसा करना, उसके द्वारा किये गये उपकारों के लिए श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना, अनुकरणीय बातों से प्रेरणा ग्रहण करना, यह सब क्रियाकृत्य ऐसे हैं, जो मृतात्मा का संस्कार करने के माध्यम से एक नई हलचल उत्पन्न कर सकते हैं और वे अपने जीवन को अधिक सतर्कतापूर्वक सदुपयोग करने को तत्पर हो सकते हैं।

लोक शिक्षण की व्यापक पृष्ठभूमि

प्रत्येक संस्कार का विचार क्षेत्र इतना विस्तृत एवं व्यापक है कि उस माध्यम से आज की समस्त सामयिक समस्याओं का निरूपण, विवेचन एवं समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है। व्यक्तिगत जीवन की सुसंस्कारिता, पारिवारिक जीवन की अस्त-व्यस्तता एवं सामाजिक जीवन की अव्यवस्था पर तीखे प्रहार इन संस्कार अवसरों पर किये जा सकते हैं और स्वस्थ पथ प्रदर्शन करते हुए उस धर्म समारोह में उपस्थित लोगों का पथ प्रदर्शन किया जा सकता है। जब हर व्यक्ति के दस संस्कार होंगे और हर परिवार में औसतन पाँच-छः व्यक्ति भी होंगे तो ऐसे प्रशिक्षण के अवसर उस घर में पचास बार आयेंगे। मोहल्ला-पड़ोस, गाँव वालों में सौ घर भी अपने सम्पर्क व्यवहार के हों तो पाँच हजार बार ऐसे प्रेरणाप्रद प्रशिक्षण उस क्षेत्र के हर व्यक्ति को मिलते रह सकते हैं। यदि संस्कारकर्त्ता सुयोग्य है तो वह उतने प्रयत्न प्रशिक्षण द्वारा निश्चित रूप से उस क्षेत्र में धर्म भावनायें परिप्लावित कर सकता है। जन-जागरण और लोक-निर्माण का उद्देश्य पूरा करने के लिए इससे उत्तम और कोई प्रकार हो ही नहीं सकता। ऋषियों ने मानव तत्व के गहन विश्लेषण एवं अध्ययन के पश्चात् यह प्रथा-परम्परा प्रचलित की थी। संस्कारों की पुण्य प्रणाली के आधार पर उनने इस देश के बच्चे-बच्चे को सुसंस्कृत बनाये रहने में सफलता प्राप्त की थी। यदि हमें अपना पुनरुत्थान वस्तुतः करना ही हो तो इस परम्परा को पुनर्जीवित करना हो होगा।

लकीर ही न पिटती रहे

यों लकीर पीटने की तरह अभी जहाँ-जहाँ संस्कार होते हैं, पर उनमें पूजा-पाठ की लँगड़ी-लूली, लकीर पीटने के अतिरिक्त लोक शिक्षण का नाम भी नहीं लिया जाता। फिर ये तथाकथित पण्डित पुरोहितों की मनमानी आजीविका का निमित्त बन जाने से महँगे भी इतने हो गये हैं कि हर आदमी उन्हें कराने की हिम्मत भी नहीं करता। जिन लोगों में यज्ञोपवीत संस्कार कराने की प्रथा है वे जानते हैं कि यह छोटा-सा धर्मानुष्ठान सैकड़ों हजारों रुपये का चूरन कराये बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकता। विवाहों में होने वाला खर्च तो अब एक सामाजिक उन्माद की स्थिति में पहुँच चुका है। आज के महँगाई के जमाने में इतने खर्चीले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

और उपयोगिता रहित कर्मकाण्ड चल नहीं सकते। एक तो लोगों की वैसे ही धर्मनिष्ठा घट रही है, इस पर भी इतने खर्चीले तथा रूखे अनुपयोगी हों तो फिर उनकी ओर से जनता विमुख होगी ही, आज हो भी चली है। हमें इस स्थिति को बदलना होगा और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करनी होगी, जिसमें खर्च कम से कम और उपयोगिता अधिक से अधिक बढ़े।

इस सन्दर्भ में सबसे प्रथम आवश्यकता ऐसे प्रशिक्षित संस्कारकर्त्ताओं की है, जो न केवल विधिवत् इन धर्मानुष्ठानों के कर्मकाण्डों को ही करा सकें वरन् प्रभावशाली ढंग से प्रवचन, विवेचन और प्रशिक्षण भी कर सकें। इस अभाव की पूर्ति के लिए सुशिक्षित व्यक्तियों को आगे आना चाहिए। उन्हें यह विद्या सीखनी चाहिए। सीखने का समुचित प्रबन्ध गायत्री तपोभूमि, मथुरा में है। जगह-जगह ऐसे शिविर लगाने का प्रबन्ध किया है, जिसमें स्थानीय लोगों को संस्कार कराने का विधान कार्यक्रम एवं प्रवचन सिखाया जा सके। जिनकी रुचि इस सम्बन्ध में हो उनके लिए उसी प्रकार का प्रबन्ध हो सकता है। पुरानी चाल के पण्डित-पुरोहितों को भी यह सब सीखना चाहिए अन्यथा समय आगे बढ़ जाएगा और वे पीछे रह जायेंगे। तब उन्हें अपने सम्मान और व्यवसाय दोनों से ही हाथ धोना पड़ेगा। अनुपयोगी कार्य अथवा व्यक्ति केवल परम्परा के आधार पर अधिक दिन तक यथास्थान बने नहीं रह सकते। इसलिए समय रहते उन्हें अपने को योग्य बना लेना चाहिये कि समय की माँग के अनुसार उनकी उपयोगिता बनी रहे। संस्कारों की विधि-व्यवस्था का प्रशिक्षण अधिकाधिक लोग प्राप्त करें तभी उनका व्यापक रूप में प्रचलन सम्भव हो सकता है।

प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता

संस्कार कराने का कार्य युग निर्माण शाखायें सामूहिक रूप से भी कर सकती हैं। इसके कार्यकर्त्ता आवश्यक पूजा सामग्री, मण्डप, वेदी, कलश, चौकी आदि सभी उपकरण तैयार रखें। उनकी टूट-फूट तथा खर्च का आनुमानिक शुल्क रख लिया जाये। एक स्थान पर हर चीज थोड़े किराये या मूल्य पर मिल जाने से संस्कार कराने वालों को बहुत सुविधा मिलेगी। समय और श्रम बचेगा। हर संस्कार की छोटी-छोटी पुस्तकें छपी हुई हैं। कुछ व्यक्ति उसे कई पाठ करके बोलने में सरल बनालें और जहाँ भी संस्कार हो वहाँ कई व्यक्ति एक साथ एक स्वर से मन्त्रोच्चारण करते हुए कर्मकाण्ड करायें तो उसका स्वरूप भी प्रभावशाली बन जाता है। संस्कारों की दक्षिणा शाखाओं को मिलने लगे तो उस पैसे से जन-जागरण के सार्वजनिक कार्यों में बड़ी सहायता मिल सकती है। जो लोग दक्षिणा लेते हुए शर्माते-सकुचाते हैं, वे निःशुल्क कार्यकर्त्ता संतुष्टि प्राप्त कर सकते हैं, दक्षिणा संस्था के उपयोग में आ सकती है।

जो व्यक्ति पूरा समय इस कार्य में लगावे वे अपने परिवार का गुजारा भी अच्छी तरह इस आजीविका द्वारा कर सकते हैं। संस्कारों के अवसर पर आचार्य को कुछ दक्षिणा देने का प्रचलन सर्वत्र है। इस पारिश्रमिक को लेने में संकोच नहीं करना चाहिये। जो अपना पूरा समय जन-जागरण के लिए लगाते हैं और जिनके पास निजी अतिरिक्त आय नहीं है, ऐसे प्रबुद्ध संस्कारकर्त्ताओं की संख्या यदि एक लाख भी हो तो वह इस जागरण के कार्य में भली प्रकार खप सकते हैं और उनकी आजीविका का प्रश्न सहज ही हल हो सकता है। सच्ची लगन के संस्कारकर्त्ता यदि हर जगह तैयार किये जा सकें तो उनके द्वारा नये समाज का नया निर्माण कर सकना तनिक भी कठिन न रहे।

जो लोग संस्कार करायें उनके ऊपर अनावश्यक व्यय भार नहीं पड़ना चाहिए। हवन तथा पूजन सामग्री का व्यय दो-तीन रुपया तक होना ही पर्याप्त है। घर, कुटुम्ब, पड़ौस, नाते-रिश्ते के तथा परिचय के समीपवर्ती लोगों को उस अवसर पर अवश्य एकत्रित किया जाय और यह प्रयत्न किया जाय कि इनकी संख्या अधिकाधिक हो, उत्सव की समाप्ति पर यज्ञावशिष्ट खीर या हलुआ का थोड़ा-थोड़ा प्रसाद अथवा पंचामृत वितरित किया जा सकता है। छोटे संस्कारों में दो रुपया दक्षिणा से काम चल सकता है। जहाँ अर्थाभाव हो, वहाँ सभी मदों में कटौती करके एक-दो रुपये में भी काम चलाया जा सकता है। विधान कम खर्च से भी पूरा हो सकता है और प्रवचन के लिए तो आर्थिक बाधा कुछ आड़े नहीं आती।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रचलन अपने घर से

यह प्रचलन पहले युग निर्माण योजना शाखाओं के सदस्य अपने यहाँ से करने लगें तो उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ेगा और वे भी इस आकर्षक एवं उपयोगी धर्मकृत्य को अपने यहाँ कराने की आवश्यकता अनुभव करेंगे। हर घर में संस्कारों के अवसरों पर नये-नये व्यक्ति सम्मिलित होंगे। जब वे देखेंगे कि कितने सस्ते में, कितना प्रेरणाप्रद, उपयोगी एवं आवश्यक धर्मकृत्य सम्भव हो सकता है तो वे सोचेंगे कि वैसा आयोजन अपने यहाँ भी करना चाहिये। देखा गया है कि जहाँ इस तरह से संस्कार कराये गये, वहाँ तत्काल उपस्थित लोगों में से अनेकों ने अपने-अपने यहाँ भी वैसी ही व्यवस्था कराने का अनुरोध किया। जहाँ के लोग संस्कारों के बारे में एक प्रकार से उदासीन या अपरिचित थे, वहाँ आँधी-तूफान की तरह यह आयोजन प्रचलित हुए और उस क्षेत्र के लोगों के विचार एवं कार्य बदलने में भारी प्रगति हुई।

हमारा देश धार्मिक देश है। यहाँ हर कार्य धर्म के माध्यम से जितनी अच्छी तरह हो सकता है, उतना और किसी तरह नहीं। आजादी की लड़ाई तक हमने महात्मा गाँधी की जय, भारतमाता की जय बोलकर और रामराज्य का सपना दिखाकर जीती है। जनता के सहयोग का बहुत बड़ा कारण यह आधार भी रहे हैं। लोक शिक्षण का महान् कार्य हमें धर्म मंच से ही करना होगा। कोई आधार ऐसा ढूँढ़ना होगा जिससे जनता आसानी से अधिक संख्या में एकत्रित हो, भावनात्मक उत्साह प्रदीप्त रहे और उन आयोजनों के खर्च का भार भी लोग स्वयं ही उठा लें। यह तीनों ही बातें संस्कार परम्परा प्रचलित करने से पूरी होती हैं। जन-जागरण को इससे उपयुक्त अवसर और किसी तरह इस धार्मिक दशा में मिल नहीं सकता।

पुराने समय में बहुत लम्बे-चौड़े कर्मकाण्ड इन संस्कारों के लिए प्रयुक्त होते थे। समय भी बहुत लगता था और झंझट भी बहुत थे, जिसके कारण सर्वसाधारण को बड़ी अड़चन अनुभव होती थी। प्रस्तुत योजना के अन्तर्गत इसमें थोड़ा सुधार किया गया है। शास्त्रीय उद्देश्यों की पूर्णतया रक्षा करते हुए भी उन्हें संक्षिप्त तथा सरल बना दिया है साथ ही यह भी ध्यान रखा गया है कि उनकी उपयोगिता महत्ता एवं आकर्षण में किसी प्रकार की कमी न आने पावे। संस्कार कराने वाले आचार्यों का यह कर्त्तव्य है कि सुन्दर मण्डप, यज्ञवेदी, रंग-बिरंगे चौक, रंगे हुए कलश, झण्डी, आदर्श वाक्य, चित्र आदि संस्कारों के वातावरण को अधिकाधिक सुन्दर एवं आकर्षक बनावें। आयोजन में सम्मिलित व्यक्तियों को यथास्थान बिठाकर उनके द्वारा भी मन्त्रोच्चारण, आशीर्वाद, स्वस्तिवाचन, तिलक तथा पूर्णाहुति आदि कृत्य कराने चाहिये, तथा वे लोग भी अपने को संस्कार आयोजन का एक भागीदार समझें और अन्त तक यथास्थान बैठकर पूरी बात देख-सुन सकें। जो लोग इस प्रकार भाग लेते हैं, वे संस्कार प्रणाली के समर्थक ही नहीं, प्रचारक भी बन जाते हैं, और फिर उनके द्वारा इस प्रकार परम्परा के प्रचलन में बड़ी सहायता मिलती है।

प्रभावोत्पादक वातावरण

संस्कार करते समय का दृश्य सुसज्जा एवं वातावरण यथासम्भव अधिकाधिक आकर्षक होना चाहिये। चार बाँस खड़े करके कपड़े की छाया झल्लर लगाकर वैसा मण्डप बनाया जा सकता है, जैसा कि विवाहोत्सव के समय होता है। कलश से सुसज्जित चौकी, दीपक, गायत्री माता का सजा हुआ चित्र, देवताओं तथा महामानवों के चित्र, आदर्श वाक्य, झण्डियाँ, वन्दनवार आदि से संस्कार स्थली भलीभाँति सजाई जाये। उसे रंग-बिरंगे चौक पूरकर सजा दिया जाय। यजमान और यजमान की पत्नी के लिए बढ़िया आसन अथवा चौकी हो, दोनों को पीत-वस्त्र धारण कराके बिठाया जाय, बालक का संस्कार होना हो तो माता-पिता के साथ उसे भी पीतवस्त्र ही धारण कराये जायें। फूलों के गुलदस्ते छोटे-छोटे फलों से गुथे वन्दनवार आदि की व्यवस्था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जितनी अच्छी होगी संस्कार का वातावरण उतना ही सुरुचिपूर्ण एवं प्रभावशाली रहेगा।

संस्कारों में काम आने वाली सभी वस्तुयें एक बार शाखा संगठन की ओर से खरीद कर रख ली जायें। टूट-फूट के लिए कुछ शुल्क रख लिया जाये, जिसके यहाँ संस्कार हो वह उतना शुल्क दे और ले जाने पर वापस करने का उत्तरदायित्व उठाये। हवन सामग्री समिधा, यज्ञोपवीत, कलावा, रोली, चन्दन, आरती आदि सभी सामान संस्कार कराने वाले जुटाकर रखें और उसका मूल्य यजमान से ले लें। दही, दूध, पुष्प, घी, पल्लव आदि ऐसी वस्तुयें जो समय पर अपेक्षित होती हैं और आसानी से मिल जाती हैं, यजमान के जिम्मे की जायें और संस्कार आरम्भ कराने से पूर्व देख लिया जाय कि सब चीजें आई या नहीं ताकि बीच में कोई गतिरोध उपस्थित न हो। जो संस्कार कराना हो उसकी कम से कम दस पुस्तकें भी प्रस्तुत रहनी चाहिये ताकि वहाँ उपस्थित सभी सुशिक्षित लोग एक स्वर, एक लय और एक साथ मन्त्रोच्चार कर सकें। इस प्रकार की सुन्दर व्यवस्था यदि पहले से ही बना ली जाय तो संस्कारों का कार्यक्रम बहुत ही आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक बन सकता है।

सुसंस्कृत समाज की अभिनव रचना के लिए हमें संस्कारों का प्रचलन करना ही चाहिए। इस माध्यम से जन साधारण में उसके धर्म, कर्त्तव्य, विवेक एवं सद्भाव को आशाजनक ढंग से जगाया जा सकता है। कर्मकाण्डों की ऋषि प्रणीत, अध्यात्म विज्ञान सम्मत पद्धति तथा प्रेरणाप्रद प्रवचनों के उभय पक्षीय प्रयोग समस्त भारतभूमि में फिर धर्म भावनाओं का उभार लावेंगे और हम तेजी से प्राचीन गौरव एवं वर्चस्व को प्राप्त कर सकने में समर्थ होंगे, ऐसा निश्चय ही समझना चाहिये।

संस्कारों का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक जीवन और धार्मिकता के भावों की वृद्धि करना ही है। विविध इन्द्रिय भोगों की तरफ तो मनुष्य का आकर्षण शीघ्र ही हो जाता है। मानव स्वभाव की इसी कमजोरी को देखकर मनीषियों ने संस्कारों का निर्माण और प्रचलन किया था। उन्होंने समझ लिया था कि जब तक मनुष्यों को धार्मिक कर्त्तव्य का स्मरण निरन्तर न कराया जाता रहेगा, तब तक वे अधिकांशतः चरित्रहीनता और अनैतिकता की तरफ ही झुकेंगे। इसलिए उनको बीच-बीच में ऐसे अवसर मिलने चाहिए जिससे वे सामूहिक रूप से मिलकर बैठें, धर्म चर्चा करें और धार्मिक कार्यों को प्रत्यक्ष रूप से आयोजित करके उनसे प्रेरणा लें। संस्कारों का विधान ऐसा बनाया गया है, जिसमें मनुष्यों का अपना कुछ लाभ जान पड़े तथा सामाजिक समारोह के रूप में कुछ मनोविनोद का अवसर भी प्राप्त हो। जब किसी बच्चे का कोई संस्कार होता है और उसमें प्रायः सभी सम्बन्धी और अड़ौसी-पड़ौसी भाग लेते हैं, तो उन सबको मिलन-जुलने का अवसर तो प्राप्त होता ही है, साथ ही यदि कार्यक्रम का संचालन बुद्धिमत्तापूर्वक किया जाय तो उससे प्रत्येक व्यक्ति हितकारी शिक्षायें और प्रेरणायें भी ग्रहण कर सकता है।

यदि हम प्राचीन "गृह्य सूत्रों" में दिये गये इन संस्कारों के विधि-विधानों का बारीकी के साथ अध्ययन करें तो उनका उद्देश्य यही जान पड़ता है कि लोग उनसे अपने गृहस्थ जीवन, पारिवारिक जीवन और सामाजिक जीवन को कल्याणकारी ढंग से जीने की कला सीख सकें। खेद की बात यही है कि मध्यकाल में अज्ञान अन्धकार का युग आ जाने का कारण लोग उन संस्कारों की महान शिक्षाओं को तो भूल गये और मनोरंजन, खाना-पीना, दावत आदि को ही उनका सार समझ लिया। इसमें उनका खर्च तो बहुत बढ़ गया पर वास्तविक लाभ शून्य रह गया। कितने ही लोगों ने संस्कारों को असुविधाजनक समझकर बिल्कुल छोड़ दिया। इसलिए यदि पाठक उपर्युक्त विवेचन से संस्कारों के सच्चे स्वरूप को समझकर उनको प्रभावशाली ढंग से मनाने का प्रचलन करेंगे तो उससे देश और समाज के उत्थान में बहुमूल्य सहायता मिलना सुनिश्चित है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुसंस्कारों की महत्ता एवं उपयोगिता

संसार में सभी सुन्दर दीखना चाहते हैं, कोई भी यह नहीं चाहता कि वह असुन्दर तथा कुरूप दिखाई दे। अपनी सुन्दरता को बढ़ाने, बनाये रखने, अथवा पैदा करने के लिए लोग खर्च और प्रयत्न भी किया करते हैं। आजकल सौन्दर्य-प्रसाधनों पर लोग प्रति वर्ष लाखों करोड़ों रूपया खर्च करते हैं, प्रसाधन सामग्री की बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ दिन-रात काम करती हैं। लोग तरह-तरह के वेशविन्यास तथा फैशनों को सुन्दर तथा आकर्षक दीखने के लिए अपनाते हैं। किन्तु खेद का विषय है कि वे प्रसाधन के बावजूद भी असुन्दर और कुरूप ही दीखते हैं। सुन्दरता बढ़ने के बजाय घटती जा रही है। सौ, दो-सौ, चार-सौ में एक आध आदमी, औरत भी वास्तविक रूप से सुन्दर नहीं दिखलाई देते।

सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रचार ही इस बात का प्रमाण है कि संसार की प्राकृतिक, स्वाभाविक अथवा वास्तविक सुन्दरता का ह्रास होता जा रहा है। यदि इस अप्रिय प्रसंग में गहराई से पैठा जाये और उसके कारणों की खोज की जाये तो पता चलेगा कि लोग सुन्दरता का वास्तविक अर्थ भूलते जा रहे हैं। उन्हें यह स्मरण नहीं रह गया है कि सुन्दरता का निवास मनुष्य के अन्दर है, इन बाजार में बिकने वाले श्रृंगार साधनों में नहीं। श्रृंगार और सज्जा भी सुन्दरता नहीं है, यह एक सलीका है, जो सभ्यता के साथ मनुष्य की सुरुचि का परिचय देता है। किन्तु इस सलीके में से भी सुघरता एवम् स्वाभाविकता इस सीमा तक दूर कर दी गई है कि वह भी एक भोंड़ा प्रदर्शन भर रह गया है।

सुन्दरता का निवास यदि प्रसाधनों, श्रृंगारों, अथवा बाह्याडम्बरों में होता तो हर वह मनुष्य सुन्दर दीखना चाहिये, जो इनका प्रयोग करता है और हर वह स्त्री-पुरुष कुरूप दीखने चाहिये जिसे यह साधन या तो उपलब्ध नहीं है अथवा वह इनका उपयोग नहीं करते। परन्तु ऐसा नहीं है। गाँवों के प्रसन्न एवं स्वच्छ वातावरण में पलने वाली सुन्दरियाँ प्रसाधन से पुती नागरिकाओं से अनेक गुना सुन्दर होती हैं। कृत्रिमता से हटकर जितना ही स्वाभाविकता की ओर जाइये आपको अधिकाधिक सुन्दरता देखने को मिलती जायेगी। मनुष्यों से हटकर पशु-पक्षियों में आ जाइये। उनके पास न तो कोई प्रसाधन होता है और न श्रृंगार सामग्री और न वे किसी प्रकार की साज-सज्जा ही करते हैं, तब भी कितने सुन्दर, आकर्षक तथा भोले लगते हैं। इसका अर्थ यही है कि सुन्दरता का रहस्य प्रसाधन अथवा श्रृंगार नहीं कुछ और ही है।

अनेक लोगों का कथन है कि सुन्दरता ईश्वर प्रदत्त विशेषता है, जिसे मिल जाती है वह सुन्दर दीखता ही है। ऐसे लोग गोरी चमड़ी और अच्छे नाक नक्शे को सुन्दरता मान लेते हैं, जबकि रंग तथा नाक नक्शे से भी सुन्दरता का सम्बन्ध नहीं है। यदि ऐसा होता तो हर काले व्यक्ति को कुरूप दीखना चाहिये। जबकि एक-से-एक बढ़कर काले लोग सुन्दर देखने में आते हैं। और तो और भगवान राम और कृष्ण काले थे, किन्तु इसके बावजूद भी वे इतने सुन्दर थे कि उनकी सुन्दरता का गुण-गान आज तक गाया जा रहा है। सुन्दरता का निवास यदि गौर वर्णता में ही होता तो यह महापुरुष सुन्दर न होते और इनके गुणों तथा कार्यों का भले ही बखान किया जाता किन्तु सुन्दरता का नहीं।

अनेक बार देखा और अनुभव किया जा सकता है कि अनेक लोग गोरे-चिट्टे तथा अच्छे नाक नक्शे वाले होते हैं। फिर भी मन उनकी ओर आकर्षित नहीं होता। बहुत बार तो रंग तथा नाक नक्शे वाले अनेक लोगों को देखकर अनाकर्षण ही नहीं विकर्षण, अरुचि तथा घृणा तक होने लगती है। इसका यही अर्थ है कि सुन्दरता का निवास वर्ण अथवा बनावट में नहीं, बल्कि किसी और बात में है।

सभी के जीवन में कोई न कोई ऐसा सन्त, महात्मा साधारण व्यक्ति आया होगा, जो रंग, रोगन, बनाव श्रृंगार तथा नाक नक्शे से सर्वथा रहित रहता होगा, पर उनमें इतना आकर्षण रहा होगा कि पास से हटने की इच्छा न होती होगी। अष्टावक्र ऋषि आठ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जगह से कुबड़े थे और इतने कुरूप थे कि उनका नाम ही आठ जगह से टेढ़ा पड़ गया। चाणक्य की कुरूपता प्रसिद्ध है। कार्लमार्क्स, टालस्टाय, अब्राहमलिंकन तथा महात्मा गांधी, प्रभृति व्यक्ति संसार के कुरूप व्यक्तियों में माने जाते हैं। यूनान के सुकरात तो कुरूप ही नहीं काले और मोटे थे, पर इनका व्यक्तित्व इतना आकर्षक और स्वयं में यह इतने सुन्दर थे कि इनकी एक झलक देखकर ही लोग मुग्ध हो जाते थे। जो इनके समीप गया सदासर्वदा के लिए इनका हो गया। हजारों लाखों इनकी मोहकता से मुग्ध होकर दूर से झाँकी लेने के लिए आया करते थे। यदि सुन्दरता का मानदण्ड रंग और नाक नक्शा ही होता तो इस माने में इन व्यक्तियों को कुरूप एवं निराकर्षक होना चाहिए था। इससे पता चलता है कि सुन्दरता न तो कोई ईश्वर प्रदत्त प्रसाद है और न इसका निवास रंग अथवा नाक नक्शे में होता है। इसका कुछ और ही रहस्य है, जिसे लोग समझने तथा अपनाने का प्रयत्न न करके भ्रान्तियों में बहे चले जा रहे हैं।

सुन्दरता का रहस्य वास्तव में मनुष्य कसुसंस्कारी व्यक्तित्व पर निर्भर है। स्वस्थ शरीर निर्विकार मन और मधुर स्वभाव का समन्वय सुन्दरता बनकर मुख पर चमका करता है। मनुष्य का रंग काला ही क्यों न हो, उसका नाक नक्शा भले ही आकर्षक न हो, यदि वह निरोग है, उसका मन स्फूर्तिपूर्ण है, वह काम को लाघवता के साथ कर सकता है, फूल की तरह प्रसन्न तथा खिला हुआ रहता है तो उसके मुख पर एक ऐसी छवि बनी रहती है जो सुन्दरता के रूप में अनायास ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। मनुष्य को ही क्यों साधारण पशु-पक्षियों को देख लिया जाये, जब वे खुशी के साथ खेलकूद कर, फुदक और चहककर अपने हृदय का हर्ष प्रकट करते हैं तो दर्शकों का मन दो क्षण को ठहरा ही लेते हैं। इसके विपरीत जब यही पशु-पक्षी लड़ते-झगड़ते अथवा आलस से ऊँघते झीकते बैठे रहते हैं तो किसी का भी ध्यान इनकी ओर नहीं जाता। एक खिला और डाल पर झुमता हुआ फूल जितना मन-भावन लगता है, उतना मुरझाया अथवा माला में डाला हुआ फूल सुन्दर नहीं दिखाई देता। रंग, रस तथा सुगन्ध रहने पर भी मलिन होता हुआ फूल अपनी सुन्दरता खो देता है। सुन्दरता का निवास उत्तम स्वास्थ्य, निर्विकार जीवन और प्रसन्न मन से ही रहता है। इसे प्रसाधनों में मानना अथवा साज-सज्जा से पा लेने का प्रयत्न करना एक भ्रम तथा भूल ही है।

बाहर मुख पर, आन्तरिक अवस्था का प्रभाव आकर्षण अथवा विकर्षण बनकर दिखाई देता है। बहुत बार दुराचारी, दुष्ट तथा अत्याचारी व्यक्ति भी नाक-नक्शे तथा रंग रूप से अच्छे लगने वाले होते हैं। किन्तु उनका व्यक्तित्व किसी में आकर्षण अथवा प्रियता उत्पन्न नहीं कर पाता। प्रत्युत जो भी उसे देखता है, उसको घृणा मिश्रित विकर्षण की ही प्रतिक्रिया होती है। सुन्दरता के सामान्य मानदण्ड पर योग्य उतरने पर भी दर्शकों में उसके प्रति प्रतिकूल प्रतिक्रिया क्यों होती है ? इसका कारण यही है कि उसका हृदय एवं कलुषित होता है। उसके हृदय के क्रूर व दुष्ट भाव उसके मुख मण्डल की सारी सुन्दरता को दबाकर मलिन कर देते हैं। एक व्यक्ति सुन्दरता के बाह्य मानदण्ड पर तो नहीं उतरता किन्तु उसका हृदय, सरल, सौम्य, निश्छल तथा निर्विकार है तो कोई कारण नहीं कि उसकी अन्तर्दशा का प्रकाश उसके मुख मण्डल पर न उभरे और वह सुन्दरता के रूप में लोगों में प्रियता अथवा आकर्षण उत्पन्न न करे। सहज सुन्दरता पाने और आकर्षक दिखाई देने के लिए आन्तरिक सुदशा की अपेक्षा है। इसके अभाव में कोई कितना ही क्रीम पाउडर क्यों न मले, कितना ही शृंङ्गार एवं साज-सज्जा क्यों न करे, सुन्दर एवं सौम्य नहीं दिखाई दे सकता। सुन्दरता का रहस्य बाहरी चमड़ी में नहीं, आन्तरिक सुदशा में निहित है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानसिक भावों एवम् विचारों की तरह गुण-अवगुण भी सुन्दरता के कारण होते हैं। जो मनुष्य परोपकार, परमार्थ तथा परसेवा में लगे रहते हैं, किसी की भी सहायता सहयोग करने में मुख नहीं मोड़ते, सान्त्वना, साहस प्रोत्साहन तथा आश्वासन देना जिनका स्वभाव होता है वे बाहर से कितने ही कुरूप तथा भोंड़े क्यों न हों पर वास्तविक सुन्दरता, वह सुन्दरता जो दूसरों को मुग्ध कर लेती है, उनके बाह्य व्यक्तित्व में भी चमत्कार उत्पन्न कर ही देगी।

यदि हम सुन्दर बनना और सुन्दरता को स्थिर रखना चाहते हैं तो हमें प्रसाधन, प्रदर्शन, आडम्बर अथवा श्रृंङ्गार सामग्री के स्थान पर आन्तरिक दशा को सुधारने एवं शुभ बनाने का प्रयत्न करना होगा। यदि हमारा स्वभाव क्रोधी है, हम ईर्ष्या, द्वेष से जलते-भुनते रहते हैं, लोभ, स्वार्थ अथवा पर-धन प्राप्ति की विषैली भावना को पालते रहते हैं तो दुनिया भर के प्रसाधनों का प्रयोग करते रहने पर भी हमारा व्यक्तित्व मोहक अथवा मन-भावन नहीं बन सकता।

गोरे-चिट्टे तथा नाक-नक्शे से ठीक होने पर भी हम दूसरों के लिए विकर्षण के कारण ही बनेंगे। एक स्त्री जो देखने में सुन्दर भी है, उसका नाक-नक्शा भी बुरा नहीं है, श्रृंङ्गार तथा साज भी करती है, सलीके से रहना भी जानती है किन्तु उसमें कलह करने, डाह से जलने बात-बात पर उलझ पड़ने और बड़बड़ाते रहने की आदत है तो उसके सारे सौन्दर्य चिह्नों पर पानी फिर जायेगा। जो भी उसके सम्पर्क में आयेगा अप्रसन्न ही होगा। गरीब, कुरूप तथा श्रृंङ्गार रहित स्त्रियाँ भी अनेक बार अपने मधुर स्वभाव, सौम्य व्यवहार, मृदुता एवं स्नेहिता के कारण परिवार तथा गुरुजनों की प्यारी बन जाती हैं। उन्हें देखकर एक अहेतुक प्रसन्नता का अनुभव होता है। न्यूनाधिक सुन्दरता वाली बहुओं में अनेक बार अधिक सुन्दर बहू की अपेक्षा कम सुन्दर बहू परिवार तथा सास-श्वसुर पर मोहिनी कर देती है। इसका कारण उन दोनों की मानसिक दशा तथा उनका गुण अवगुणपूर्ण स्वभाव ही होता है। सुन्दर गुणों के कारण असुन्दर पत्नियाँ पतियों की प्यारी रहती हैं, जबकि दुर्गुणों के कारण सुन्दर से सुन्दर नारियाँ अपने पति का स्नेह पाने से वंचित रह जाती हैं।

असुन्दरता अथवा अरूपता एक दोष है और सुन्दरता अथवा मन-भावनता एक गुण अथवा विशेषता है। यह भावनता नितान्त भ्रम है। मनुष्य को अधिक से अधिक सुन्दर बनने का प्रयत्न करना चाहिये, किन्तु वास्तविक सुन्दरता क्या होती है इस ज्ञान के साथ। केवल साज-सज्जा अथवा लीपपोत से सुन्दरता प्राप्त करने का प्रयत्न करना भूल है और इस भूल से हर एक को बचते रहना चाहिए। सुन्दर बनता है तो गुणवान, सद्भावी, स्वस्थ तथा स्वच्छ बनना होगा। शरीर को लीपने-पोतने के बजाय उसे स्वच्छ बनाना होगा। बाह्य प्रसाधन अथवा नाक-नक्शे पर निर्भर न रहकर हृदय का संस्कार करना होगा।

स्वास्थ्य प्राप्त करने का एकमात्र उपाय समय, श्रम तथा नियमित जीवनयापन ही है। मानसिक सुधार, प्रसन्नता, प्रेम, अक्रोध आदि का प्रश्रय लेने से होता है। अधिक से अधिक यहाँ तक कि विपत्ति में भी प्रसन्न रहिये, कटु परिस्थिति में भी क्रोध न करिये, दूसरों के लिए सद्भावना, सेवा तथा सहायता के भाव रखिये, यथासम्भव परमार्थ एवं परोपकार करिये—आपका मानसिक संस्कार हुए बिना न रहेगा। इस प्रकार जो भी व्यक्ति प्रयत्नपूर्वक शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य का विकास कर लेगा वह निश्चित रूप से सुन्दर तथा आकर्षक बन जायेगा इसमें किसी प्रकार के सन्देह की गुंजायश नहीं है।

मानसिक स्थिति का सुन्दरता से क्या सम्बन्ध है, इसको बतलाते हुए एक विद्वान् ने लिखा है—अच्छे और बुरे विचारों की धारा मानसिक केन्द्र से चारों ओर फैलकर रक्त प्रवाह के साथ त्वचा-तल तक विद्युत्-धारा की तरह आती और अपना प्रभाव छोड़ जाती है। यदि यह विचारधारा निरन्तर मानी आती रहती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है तो उसका प्रभाव स्थायी बनकर सुन्दरता असुन्दरता के रूप में प्रतिबिम्बित होने लगता है। अस्तु आवश्यक है कि वास्तविक तथा स्थायी सुन्दरता पाने के लिए स्वस्थ तथा संस्कारवान् बना जाये। अपने मन तथा मस्तिष्क को बुरे विचारों, दूषित भावनाओं से मुक्त रखकर उनके स्थान पर दैवी भावों का समावेश किया जाये।

सुसंस्कारिता न केवल व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देती है, वरन् मनुष्य को नर से नारायण बनने में—महानता अर्जित करने में भी सहायक होती है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में संस्कारों पर सर्वाधिक जोर दिया गया है। अनगढ़ व्यक्तित्व को सुगढ़ बनाने-ढालने के लिए आदिकालीन ऋषियों ने संस्कारों की व्यवस्था बनायी। षोड़श संस्कारों के सृजन में ऋषियों का मूल प्रयोजन था मानवी चेतना पर सूक्ष्म विधि से उन आदर्शों की प्रतिष्ठापना करना जिनके द्वारा व्यक्तित्व परिष्कृत एवं श्रेष्ठ बनता है। यह परम्परा पूर्णतया वैज्ञानिक थी। व्यक्ति और समाज को श्रेष्ठ एवं शालीन बनाने में संस्कारों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता था। ऋषियों की इस परम्परा में मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण का सशक्त आधार मौजूद है।

सभ्य एवं सुसंस्कृत संस्कृति की आवश्यकता सर्वत्र अनुभव की जा रही है। वे ऐसे आधार ढूँढ़े जा रहे हैं, जो व्यक्ति को शालीन एवं समर्थ बनाते हों। शिष्टाचार सिखाने के लिये एटीकेट्स विद्यालय खोले जा रहे हैं। मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण की बाध्य व्यवस्था भी बनायी जा रही है। यह सभी प्रयास इस बात के प्रमाण हैं कि संस्कारों की आवश्यकता इन दिनों भी पूर्वकाल की तरह ही अनुभव की जा रही है।

इटली के मेंडले नामक विद्वान ने संस्कार शास्त्र पर आधारित एक शास्त्र की नींव डाली, जिसे यूजेनिक्स कहा गया। हिन्दी में इसे सुसन्तान शास्त्र, अभिजनन शास्त्र कहते हैं। मेंडले के कार्यों से प्रेरणा लेकर इस सदी के आरम्भ में इंग्लैण्ड के विद्वान 'सर फ्रानिक्स गाल्टन' ने अपनी सम्पत्ति का एक बड़ा भाग लन्दन विश्वविद्यालय को इस क्षेत्र में शोध के लिए दिया। इस विश्वविद्यालय में 'यूजेनिक्स' के शोध कार्य में अनेकों विद्वान लगे हुए हैं। यूरोप के अन्य देशों में भी यह शास्त्र लोकप्रिय हो रहा है। यूजेनिक्स में वंश परम्परा, विवाह आदि के सम्बन्ध में विस्तृत शोध चल रही है। इसमें भारतीय संस्कृति में विवाह सम्बन्धी मर्यादाओं एवं निषेधाओं से सम्बन्धित सभी तथ्यों का समावेश है। उस क्षेत्र में शोध कर रहे विद्वानों का कहना है कि "सन्तति को सुसंस्कारी एवं शालीन बनाने में प्रत्यक्ष उपदेशों, प्रशिक्षणों का कम, धार्मिक संस्कारों का अधिक योगदान होता है।"

मनोविज्ञान का यह सिद्धान्त है कि मनुष्य किसी भी बात को सामान्य उपदेशों, प्रशिक्षणों अथवा परामर्शों द्वारा दिये गये निर्देशों की तुलना में अनुकूल वातावरण में शीघ्रता से सीखता है।

नाटक, सिनेमा में देखे गये दृश्यों का भला-बुरा प्रभाव दर्शक के ऊपर स्थायी रूप से पड़ता है। मन की प्रकृति निम्नगामी होने के कारण स्वभावतः मनुष्य अच्छी प्रेरणाओं को ग्रहण नहीं कर पाता। कुप्रभाव से निम्नगामी प्रवृत्तियाँ अपनाता है। बच्चे अधिक सम्वेदनशील होते हैं। उत्तेजक, अश्लील दृश्यों का प्रभाव तो उनके मानस पटल पर स्थायी रूप से पड़ जाता है। फलस्वरूप वे भी वैसा ही आचरण करने लगते हैं।

वातावरण का बच्चों पर पड़ने वाले मनोवैज्ञानिक प्रभाव ने मनावैज्ञानिकों का ध्यान धार्मिक संस्कारों की ओर आकर्षित किया है। 'यूजेनिक्स' के शोध में लगे वैज्ञानिकों ने विश्व भर में प्रचलित सभी धर्म सम्प्रदायों में किये जाने वाले संस्कारों पर गहन शोध करना आरम्भ किया है। हिन्दू धर्म के संस्कारों की शोध में लगे एक वैज्ञानिक का कहना है कि इन संस्कारों की पृष्ठभूमि मनोवैज्ञानिक सूझबूझ पर बनी है, जिसमें व्यक्तित्व के समग्र विकास की पूरी-पूरी सम्भावना है। संस्कार मात्र कर्मकाण्ड नहीं, आत्म-निर्माण के सशक्त माध्यम हैं। इनका नये सिरे से अध्ययन एवं व्यापक स्तर पर प्रचलन किया जा सके तो व्यक्ति एवं समाज के नव-निर्माण की आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हिन्दू धर्म में संस्कारों का महत्त्व

संस्कृति और संस्कार दोनों अनन्यार्थ शब्द हैं। प्राचीनों ने संस्कृति शब्द का बहुत उपयोग नहीं किया, परन्तु संस्कार शब्द का पुष्कल और एक से अधिक अर्थ में उपयोग करके उसे महा अर्थवाहक बनाया है।

संस्कार शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए जड़ वस्तु के संस्कार का उदाहरण दिया है, किन्तु हम तो यहाँ मनुष्य के संस्कार का विचार कर रहे हैं। वैसे स्नानादि द्वारा शरीर की शुद्धि के लिए शरीर-संस्कार शब्द का प्रयोग होता है, लेकिन यहाँ तो संस्कार शब्द से हमारा हेतु मनुष्य के मन, बुद्धि, भावना, अहंकार आदि को चमकाने, विकसित करने से है।

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते।

अर्थात्—मनुष्य जन्म से द्विज नहीं होता, द्विज तो वह संस्कार द्वारा बनता है। इस वचन में स्मृत्युक्त उपनयनादि संस्कार—यानी उनके हेतु से होने वाले शास्त्रोक्त कर्म ही विवक्षित हैं। ऐसा न मान कर हम यह मानें कि उपनयन के बाद प्राप्त ब्रह्मचर्य और विद्यार्जन भी विवक्षित हैं। सारांश यह कि मनुष्यादि के एतद्विषयक समग्र निरूपण को विशाल दृष्टि से ध्यान में लेकर सोचा जाय तो ऊपर के वचन का तात्पर्य यह निकलता है कि स्वभावतः मनुष्य पशु अथवा पामर है और संस्कार द्वारा वह सच्ची मानवता वाला अर्थात् संस्कारी मनुष्य बनता है। संस्कार शब्द की इतनी चर्चा से यह स्पष्ट हुआ ही होगा कि संस्कार शब्द का जो चमक या 'पालिश' सूचक अर्थ है वह बाहरी सफाई और शुद्धि का नहीं, बल्कि मानव-हृदय की उस चमक या शोभा का द्योतक है, जिससे मनुष्य की रहन-सहन, भावना, बुद्धि सभी कुछ समाज में दीप्त हो उठें। दूसरे शब्दों में, इसे यों कह सकते हैं, कि जिस शिक्षा से मनुष्य में समाज-हितलक्षी और आध्यात्मिक गुणों का विकास और वृद्धि होती है, उसी को संस्कार कहते हैं। जैसा कि शङ्कराचार्य ने कहा है, मात्र दोषापनयन या मात्र गुणधान से नहीं, बल्कि संस्कार के लिए दोषापनयन और गुणाधान दोनों की आवश्यकता है।

संस्कार शब्द का अर्थ अंग्रेजी के 'कल्चर' शब्द के अर्थ से मिलता-जुलता है। लेकिन हम शङ्कर द्वारा किये गये अर्थ को पकड़ कर ही आगे बढ़ें तो मानव चित्त के संस्कार द्वारा दूर करने योग्य दोषों का अर्थ होगा, मनुष्य-जीवन के मूल से चिपटी हुई पशु-सहज स्वाभाविक, वासनायें, जिनमें राग, द्वेष, मोह और भय मुख्य हैं तथा अनेक पीढ़ियों की अविद्या, मय और राग-द्वेष प्रेरित प्रवृत्तियों के कारण रक्त में भिदी हुई पामर जनों में साधारणतः पाई जाने वाली आदतें भी हैं। सरलता के लिए हम मान लें कि इन द्विविध दोषों का अपनयन ही दोषानयन है और गीता में दैवी सम्पद् के रूप में जिनकी गणना की गयी है उन और उनके सदृश गुणों का चित्त में आधीन, गुणाधान है। इस प्रकार के दोषानयन और गुणाधान का नाम ही संस्कार है, आदर्श संस्कार की इस व्याख्या से सन्तोष मान कर हम आगे बढ़ें।

इस प्रकार के संस्कार शुभ संस्कार हैं। साधारणतः संस्कार शब्द का प्रयोग शुभ संस्कारों के लिए ही किया जाता है और वही ठीक भी है, क्योंकि जिन्हें अशुभ संस्कार या कुसंस्कार कहा जा सकता है, उनमें चित्त को चमकाने या उज्ज्वल बनाने की क्षमता ही नहीं होती। जिसे योगशास्त्र में क्लेश कहा गया है, और अन्य शास्त्रों में जिसे दोष माना गया है उस अविद्या, भय, राग, द्वेष से उत्पन्न वृत्ति और स्वभाव का ही योगशास्त्रीय नाम अशुभ संस्कार है।

अब मानव-चित्त के विकास की भिन्न-भिन्न भूमिका के अनुसार व्यक्ति में शुभाशुभ संस्कारों का मिश्रण और शुभ संस्कारों में भी उच्च-नीच भूमिका का होना स्वाभाविक है। जहाँ एक समाज में उच्च भूमिका के शुभ-संस्कारों वाले कुछ लोग होते हैं, वहाँ दूसरे अशुभ संस्कारों से युक्त लोग भी उसमें पाये जाते हैं। किन्तु किसी भी राष्ट्र के श्रेष्ठ विचारकों और दृष्टाओं का प्रयत्न सदा यही रहता है कि उच्चतम संस्कार ही आदर्श रूप में प्रतिष्ठित हों।

ऊपर संस्कार का जो विचार किया है, उससे व्यक्ति के संस्कारों का ही अर्थ निकलता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। प्राचीनों के गर्भाधानादि संस्कार-विचार में यही अर्थ निहित है और यह तो मानी हुई बात है कि शास्त्रोक्त विधि से नहीं, किन्तु संस्कार युक्त शिक्षा द्वारा किसी भी व्यक्ति के जीवन में तेज और चमक पैदा होती है। लेकिन अधिकतर लोगों के जीवन में यह चमक बाहरी ही रहती है। साथ ही, यह भी पाया गया है कि तीव्र संवेग-युक्त विशिष्ट व्यक्तियों के चित्त के समूचे प्रदेश में यह चमक या तेज गहराई तक उतर आता है और उनके चित्त की समस्त भूमिकाओं को प्रदीप्त कर देता है। इस तरह ऊपर हमने जो अर्थ किया है, उस अर्थ के अनुरूप शुभ संस्कार वाले श्रेष्ठ मनुष्यों के प्रत्यक्ष सदाचार युक्त उदाहरण से, उनके द्वारा दी गई शिक्षा-दीक्षा से और क्वचित् किसी उत्तराधिकार के बल से, उनकी सन्तान में ये संस्कार न्यूनाधिक अंश में प्रकट होते हैं और चित्त की ऐसी संस्कारशील स्थिति जब किसी समाज में कई-कई पीढ़ियों तक बराबर बनी रहती है और निरन्तर विकसित होती रहती है तो आगे चलकर वह उस समाज का स्वभाव बन जाती है और उस दशा में हम उसे उस समाज का संस्कार कहते हैं। इसमें संस्कार शब्द के दोनों अर्थ निहित हैं।

वैसे मनुष्य-जीवन में दो प्रकार से परिवर्तन होते हैं। एक परिस्थिति के दबाव के कारण, और दूसरे, मनुष्यों के अपने पुरुषार्थ के कारण। जीवन को टिकाये रखने के लिए परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन प्राणी-मात्र के जीवन में होते रहते हैं। मनुष्य भी एक प्राणी है, अतः उसके जीवन में भी परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तनों का होना स्वाभाविक है। किन्तु परिस्थिति के ऐसे दबाव से होने वाले परिवर्तन संस्कार नहीं कहलाते। जब मनुष्य समझ-सोच कर प्रयत्न पूर्वक अपने मन, बुद्धि आदि का विकास करता है, तो उसका वह विकास ही संस्कार कहा जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति प्रयत्न करे, तो वह अपनी पामरता को टालकर संस्कारिता प्राप्त कर सकता है और इसके विपरीत प्रमादवश अपने उच्च संस्कारों को छोड़कर वह पामरता के गर्त में गिर सकता है। महाभारत में यथार्थ ही कहा है—

प्रमादं वै मृत्युमहं ब्रवीमि अप्रमादममृतत्वं ब्रवीमि।

अर्थात्—प्रमाद के कारण उत्पन्न पामरता ही मृत्यु है और अप्रमाद से प्राप्त होने वाली संस्कारिता ही अमरता है।

भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में उनके इतिहास के विभिन्न कालों में जो संस्कृतियाँ प्रकट हुईं, वे उन-उन राष्ट्रों की भौतिक परिस्थितियों और ऐतिहासिक लक्षों द्वारा उत्पन्न की गयी स्वभाव जन्य विशेषता के परिणामस्वरूप, अपनी-अपनी खास विशेषताओं वाली रही हों तो वह स्वाभाविक ही है। ये सांस्कृतिक विशेषताएँ उन-उन राष्ट्रों के व्यावर्तक लक्षणों जैसी मानी गईं और उन्हें अभिमान की वस्तु समझा गया, किन्तु संसार के अलग-अलग देशों और युगों में जो पैगम्बर और सन्त-महात्मा हो गये, उन्होंने तो सत्य, अहिंसा, अनासक्ति, साहिष्णुता, सब भूतों के प्रति भ्रातृभाव या आत्मभाव, आध्यात्मिकता, अभय, ज्ञान, विज्ञान आदि दैवी सम्पद् रूप संस्कारों पर ही अधिक जोर दिया है और विभिन्न संस्कृतियों के अन्तस्तल में विद्यमान इन उच्च संस्कारों को ही ग्रहण करके इस युग के महापुरुष भी अखिल मानव-जाति की एक और अभिन्न संस्कृति की रचना के लिए सतत यत्नशील रहें, इसी में संसार के भावी सुख और शान्ति की आशा निहित है।

हम सुसंस्कृत बनें—संस्कारवान बनें

आज-कल 'संस्कृति' का प्रयोग किया जाता है। संस्कृति किसे कहते हैं, इस सन्दर्भ में अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। संस्कृत साहित्य में संस्कृति का प्रयोग नहीं मिलता। अस्तु यह शब्द प्राचीन नहीं कहा जा सकता।

अँग्रेजी 'कल्चर' एवं उर्दू के 'इल्मतमुद्दुन' शब्द के समानार्थक शब्द के रूप में संस्कृति शब्द का व्यवहार होने लगा है।

संस्कृति के भाव को व्यक्त करने वाला भारतीय ग्रन्थों में कौन-सा शब्द प्रयुक्त है ? एतदर्थ अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये हैं। कुछ विद्वानों के मतानुकूल 'संस्कृति' शब्द उतना व्यापक है जितना कि प्राचीनकाल में धर्म था।

संस्कृति शब्द पर यदि हम गम्भीर रूप से विचार करते हैं तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि संस्कृत साहित्याकाश में संस्कार और संस्कृत ही ऐसे शब्द हैं, जो 'संस्कृति' शब्द के निकटवर्ती हो सकते हैं।

संस्कारों का भारतीय जीवन में बड़ा महत्त्व है। संस्कृति शब्द से सबसे सामीप्य सम्बन्ध संस्कार का ही माना जाना समयोचित है। संस्कृत और हिन्दी के कोष ग्रन्थों में संस्कार शब्दों के अनेक अर्थ दिये गये हैं जो इस प्रकार हैं—शुद्धि, परिष्कार, सुधार, मन, रुचि, आचार-विचार को परिष्कृत तथा उन्नत करने के कार्य, मनोवृत्ति या स्वभाव का शोधन, पूर्व जन्म, की वासना या पूर्व जन्म की कुल-मर्यादा, शिक्षा सभ्यता आदि का मन पर पड़ने वाला प्रभाव। वैसे संस्कृत शब्द का अर्थ भी संस्कार शब्द से मिलता-जुलता है। कोष-ग्रन्थों में इसका अर्थ शुद्ध किया हुआ, परिमार्जित, परिष्कृत, सुधारा हुआ, ठीक किया हुआ, सँवारा हुआ आदि किया गया है। इन अर्थों के विवेचनोपरान्त ऐसा लगता है कि मानव में जो दोष हैं, उनका शोधन करने के लिए और उन्हें सुसंस्कृत करने के लिए ही संस्कारों का प्रावधान किया गया है। अतएव सुसंस्कार मानव-जीवन के उत्कर्ष हेतु नितान्त अपेक्षित हैं।

संस्कारों का प्रारम्भ-अभ्यास से होता है। अनवरत् अभ्यासोपरान्त हम किसी कार्य को करने के आदी होते हैं। तदन्तर उसे अभ्यास से आदत कहा जाता है। आदत के पश्चात् जब वह प्रवृत्ति हमारे जीवन के साथ ओत-प्रोत हो जाती है, तब उसे संस्कार की संज्ञा से अलंकृत किया जाता है। संस्कार के बाद जब वह कार्य सहज प्रवृत्ति में परिणत हो जाता है तब उसे स्वभाव कहते हैं।

संस्कार डालना पड़ता है क्योंकि दोषों का परिशोधन प्रयासपूर्वक ही होता है, जबकि स्वभाव व्यक्ति की सहज क्रिया है जिससे परित्राण कठिन होता है। आदत से छूटना सम्भव भी है पर स्वभाव से पराङ्मुख होना दुष्कर है।

आदत अच्छी एवं बुरी दोनों प्रकार की होती है। कालान्तर में संस्कार को भी अच्छा एवं बुरा मानते हुए कुसंस्कार और सुसंस्कार शब्द प्रचलित हो गये। संस्कार शब्द की मूल प्रकृति पर विवेचनोपरान्त उसके साथ 'कु' अथवा 'सु' लगाना व्यर्थ प्रमाणित होता है क्योंकि उसका अर्थ ही शुद्धि एवं दोषों का परिष्कार है। अस्तु कु-संस्कार कहने की अपेक्षा बुरा अभ्यास कहना न्यायोचित है और संस्कार शब्द का प्रयोग सदा, सर्वदा अच्छाई के लिए ही होना चाहिये।

जीवन के साथ संस्कारों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। पूर्व संस्कार या पूर्व जन्म के संस्कार भी होते हैं और मरणोपरान्त भी संस्कारों की परम्परा जन्म-जन्मान्तरों तक चलेगी। एक व्यक्ति का संस्कार केवल उसी के जीवन से ही सम्बन्धित नहीं है वरन् उसके कुटुम्ब एवं कुल पर भी संस्कारों का अमिट प्रभाव पड़ता है, जिसे हम कुल परम्परा या कुल-संस्कार कहते हैं। अस्तु संस्कारों की परम्परा एवं प्रभाव अद्वितीय हैं।

संस्कारों का कार्य एवं उद्देश्य गुणों का अधिकतम बिकास करना है। दोषों का परिष्कार या परिहार करने की क्षमता सर्वाधिक मानव-जीवन में ही है क्योंकि मनुष्यों में गुण, दोषपरक बुद्धि होती है, जबकि पशु-पक्षी एवं अन्य प्राणियों में इस प्रशक्ति का अभाव होता है ; अस्तु वे नहीं कर सकते। हम विचारों से बनते बिगड़ते हैं, अतएव विचारों को शुद्धि या चित्त-शुद्धि की नितान्त अपेक्षा है। इसी कारण सारे धार्मिक अनुष्ठान चित्त-शुद्धि हेतु ही सम्पादित होते हैं। संस्कारों का सर्वाधिक महत्त्व चित्त-शुद्धि में है। मन की मलीनता ही सबसे अधिक दुखदायी है। काया की मलीनता तो साबुन, पानी से धोयी भी जा सकती है पर मन तो न जाने कहाँ-कहाँ भटकता रहता है और प्रति पल अशुभ चिन्तन के द्वारा वह प्रदूषित होता रहता है। इन्द्रियों का प्रेरक भी वही है, इसलिए उसी की शुद्धि का निरन्तर ध्यान एवं प्रयत्न करना चाहिए। चित्त की शुद्धि एवं शुभ संस्कारों का आरोपण विचार परिष्कार से ही सम्भव है।

विचार मानव चरित्र के प्रकाशक हैं, पर तब जबकि वे आचरण से घुल-मिल गये हों। मनुष्य का चरित्र विचार और आचार दोनों से मिलकर बनता है। संसार में बहुत-से ऐसे लोग पाए जा सकते हैं, जिनके विचार बड़े ही उदात्त, महान् व आदर्शपूर्ण होते हैं। लेकिन उनकी क्रियायें-तदनुरूप नहीं होतीं। विचार पवित्र हों और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्म अपावन तो यह सच्चरित्रता नहीं हुई। इस प्रकार बहुत-से लोग ऊपर से बड़े ही सत्यवादी, आदर्शवादी और धर्म कर्म वाले दीखते हैं, किन्तु उनके भीतर कलुषपूर्ण विचार धारा बहती रहती है। इन्हें भी सच्चे चरित्र वाला नहीं माना जा सकता है। सच्चा चरित्रवान वही माना जाएगा और वास्तव में वही होता भी है, जो विचार और आचार दोनों को समान रूप से उच्च और पुनीत रखकर चलता हो।

प्रसिद्ध लोकोक्ति है—"धन चला गया, कुछ नहीं गया। स्वास्थ्य चला गया, कुछ चला गया। चरित्र चला गया, तो समझो सब कुछ गया।" लोक विख्यात यह कथन शत-प्रतिशत सही है। गया हुआ धन वापस आ जाता है। रोज न जाने कितने लोग धनी से निर्धन और निर्धन से धनवान होते रहते हैं। इसी प्रकार रोगों-व्याधियों और चिन्ताओं के प्रभाव से लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता और तदनुरूप उपायों से बनता रहता है। किन्तु गया हुआ चरित्र दुबारा वापिस नहीं मिलता। ऐसी बात नहीं कि गिरे हुए चरित्र के लोग अपना परिष्कार नहीं कर सकते। दुष्चरित्र व्यक्ति भी सदाचार, सद्विचार और सत्संग द्वारा चरित्रवान बन सकता है। इसके बावजूद वह अपने उस असंदिग्ध विश्वास को नहीं पा पाता, चरित्रहीनता के कारण जिसे वह खो चुका होता है।

मनीषी राल्फ लिंटन के ग्रन्थ "द स्टडी ऑफ मैन" के पृष्ठों में झाकें तो पता चलता है कि समाज जिसके ऊपर विश्वास नहीं करता, लोग जिसे सन्देह और शंका की दृष्टि से देखते हों, वह व्यक्ति बहुमूल्य होने पर भी निर्मूल्य ही है। यथार्थ चरित्रवान वही है, जो अपने समाज, अपनी आत्मा और अपने परमात्मा की दृष्टि में समान रूप से असंदिग्ध और सन्देह रहित हो। इस प्रकार की मान्य और निःशंक चरित्रमत्ता ही वह आध्यात्मिक स्थिति है, जिसके आधार पर सम्मान, सुख सफलता और आत्म शान्ति का लाभ होता है।

जीवन की बहुमूल्य विशिष्टता, सम्पदा, चरित्र, निर्माण का आधार संस्कार है। मनोविज्ञानी फ्रांसिस मेरिल के ग्रन्थ "द सीक्रेट सेल्फ" के अनुसार जिस प्रकार के संस्कारों का संचय हम करते रहते हैं, उसी के अनुरूप हमारा चरित्र बनता-ढलता चला जाता है। संस्कार मनुष्य के उन विचारों के ही प्रौढ़ रूप हैं, जो लम्बे समय तक रहने से मस्तिष्क में अपना स्थायी स्थान बना लेते हैं। यदि सद्विचारों को अपनाकर उनका ही चिन्तन और मनन किया जाता रहे—तो संस्कार भी शुभ और सुन्दर बनेंगे। इसके विपरीत यदि असद् विचारों को ग्रहण कर मस्तिष्क में बसाया और मनन किया जाएगा—तो संस्कारों के रूप में कूड़ा-करकट ही इकट्ठा होता रहेगा।

संस्कारों की प्रबलता और महत्ता इसी बात से सिद्ध है कि जहाँ सामान्य विचार क्रियान्वित करने के लिए मनुष्य को स्वयं प्रयत्न करना पड़ता है, वहीं संस्कार उसको यन्त्रवत् संचालित कर देता है। शरीर यन्त्र, जिसके द्वारा सारी क्रियाएँ सम्पादित होती रहती हैं, सामान्य विचारों के अधीन नहीं होता, जबकि इस पर संस्कारों का परिपूर्ण आधिपत्य रहता है। न चाहते हुए भी शरीर यन्त्र संस्कारों की प्रेरणा से हठात् सक्रिय हो उठता है और तदनुसार आचरण कर बैठता है। इन संस्कारों को यदि मानव जीवन का भाग्यविधाता—आचरण का प्रेरक कह दिया जाय तो असंगत न होगा।

विचारों का निवास चेतन मस्तिष्क और संस्कारों का निवास अवचेतन मस्तिष्क में रहता है। चेतन मस्तिष्क प्रत्यक्ष और अवचेतन मस्तिष्क अप्रत्यक्ष अथवा गुप्त होता है। यही कारण है कभी-कभी विचारों के विपरीत क्रियाएँ हो जाया करती हैं। मनुष्य देखता है कि उसके विचार अच्छे और सदाशयी हैं, तब भी उसकी क्रियाएँ इन विचारों के विपरीत हो जाया करती हैं। इस रहस्य को न समझ पाने के कारण कभी-कभी वह बड़ा व्यग्र होने लगता है। विचारों के विपरीत कार्य हो जाने का रहस्य यही होता है कि मनुष्य की क्रिया प्रवृत्ति पर संस्कारों का प्रभाव रहता है और गुप्त मन में छिपे रहने से उनका पता नहीं चल पाता। संस्कार विचारों को व्यर्थ कर अपने अनुसार मनुष्य की क्रियाएँ प्रेरित कर दिया करते हैं। जिस तरह पानी के ऊपर दिखने वाले कमल के फूल की जड़ पानी की तलहटी में जमा कीचड़ में छुपी होने के कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं दिखती, कुछ उसी प्रकार परिणाम रूप क्रिया की जड़ अवचेतन मन में छुपी होने के कारण नहीं समझ में आती।

मानव मन के मर्मज्ञ लिण्डजे का शोध अध्ययन "थॉट एण्ड पर्सनल्टि" स्पष्ट करता है कि "कोई-कोई विचार ही तात्कालिक क्रिया के रूप में परिणत हो पाता है। अन्यथा मनुष्य के वे ही विचार क्रिया क रूप में परिणत होते हैं, जो प्रौढ़ होकर संस्कार बन जाते हैं। वे विचार जो जन्म के साथ ही क्रियान्वित हो जाते हैं, प्रायः संस्कारों की जाति के ही होते हैं। संस्कारों से भिन्न, तात्कालिक विचार कदाचित ही क्रिया में बदल जाते हैं, बशर्ते कि वे संस्कार के रूप में परिपक्व न हो गये हों। संतुलित तथा प्रौढ़ मस्तिष्क वाले व्यक्ति अपने अवचेतन मन को पहले से ही उपयुक्त बनाए रहते हैं, जो अपने तात्कालिक विचारों को क्रिया रूप में बदल देते हैं। इसका कारण यही है कि उनके संस्कारों और प्रौढ़ विचारों में भिन्नता नहीं होती।

संस्कारों के अनुरूप मनुष्य का चरित्र बनता है और विचारों के अनुरूप संस्कार। मार्टिनडेले के विचारकोष "थॉट्सः इटस-प्रोजेक्शन" के अनुसार विचारों की एक विशेषता यह होती है कि यदि उनके साथ भावनात्मक अनुभूति का समन्वय कर दिया जाय तो वे न केवल तीव्र और प्रभावशाली हो जाते हैं, बल्कि जल्दी ही पककर संस्कारों का रूप धारण कर लेते हैं। किन्हीं विषयों के चिन्तन के साथ यदि मनुष्य की भावनात्मक अनुभूति जुड़ जाती है तो वह विषय उसका प्रिय बन जाता है। यही प्रियता उस विषय को मानव-मन पर हर समय प्रतिबिम्बित बनाये रहती है। फलतः उसी विषयों में चिन्तन-मनन की प्रक्रिया भी अबाधगति से चलती रहती है और वह विषय अवचेतन में जा जाकर संस्कारों का रूप लेता रहता है। इसी नियम के अनुसार प्रायः दखा जाता है कि अनेक लोग, जो कि प्रियता के कारण भोग-वासनाओं को निरन्तर चिन्तन से संस्कारों में सम्मिलित कर लेते हैं, बहुत कुछ पूजा-पाठ, सत्संग और धार्मिक साहित्य का अध्ययन करते रहने पर भी उनसे मुक्त नहीं हो पाते। वे चाहते हैं कि संसार के नश्वर भोग और अकल्याण कर वासनाओं से विरक्ति हो जाये, लेकिन उनकी यह चाहत अधूरी बनी रहती है।

दर असल विचार जब तक संस्कार नहीं बन जाते, मानव वृत्तियों में परिवर्तन नहीं ला सकते। संस्कार रूप भोग-वासनाओं से छूट सकना तभी सम्भव होता है, जब अखण्ड प्रयत्न द्वारा पूर्व संस्कारों को धूमिल बनाया जाए और वांछनीय विचारों को भावनात्मक अनुभूति के साथ, चिन्तन मनन और विश्वास के साथ संस्कार रूप में प्रौढ़ किया जाय। पुराने संस्कार बदलने के लिए नए संस्कारों की रचना परमावश्यक है।

यही परिवर्तित संस्कार—परिवर्तित चरित्र को जन्म देते हैं, संस्कारों के बदलाव के लिए—यदि धैर्यपूर्वक अटूट-प्रयत्न किया जा सके तो चरित्र में परिवर्तन दुःसाध्य नहीं। क्रूरकर्मा अंगुलिमाल का परम कारुणिक भिक्षु में बदल जाने, कामुकता की दुःसह आग में जलते रहने वाले विल्वमंगल के जीवन में ब्रह्मचर्य की—भक्ति भावना की शीतलता प्रवेश करने जैसा चमत्कार—हमारे अपने जीवन में हो सकना सहज सम्भव है।

चरित्र ही वह धुरी है जिस पर मनुष्य का जीवन सुख-शान्ति और मान सम्मान की अनुकूल दिशा अथवा दुःख दारिद्रय अशान्ति-असन्तोष की प्रतिकूल दिशा में गतिमान होता है। जिसमें अपने चरित्र का निर्माण आदर्श रूप में कर लिया उसने मानों लौकिक सफलताओं के साथ पारलौकिक सुख-शान्ति की सम्भावनाएँ स्थिर कर लीं।

तब क्यों न उज्ज्वल चरित्र के लिए उज्जवल संस्कारों को कंजूस के धन की तरह बटोरना शुरू कर दें, लेकिन उज्ज्वल संस्कार तो तभी पनप सकेंगे जब उज्ज्वल विचारों को हम ग्रहण करने लगेंगे। अकल्याण कारक-दूषित विचारों को एक क्षण के लिए पास न फटकने दें। वेद भगवान का आदेश "आ नो भ्रदः क्रतवो यन्तु विश्वतः" (ऋग्वेद १—८६) सब ओर से कल्याणकारी विचार हमारे पास आएँ—हमारा जीवन मन्त्र बन जाएँ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारतीय मनीषियों ने हजारों वर्षों के अनुभव के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला था कि मनुष्य जीवन केवल खाने-पीने और मौज उड़ाने के लिए नहीं है, चौबीसों घण्टों भौतिक जीवन को सुखी बनाने की दौड़-धूप में लगे रहना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है वरन् इससे भी श्रेष्ठ उद्देश्य जीवन का निर्माण है, जिससे वास्तव में मनुष्य मनुष्य बनता है। यही कारण है कि भारतीय ऋषियों ने भौतिक उन्नति को गौण और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति को जीवन का मुख्य उद्देश्य निर्धारित किया था। वह भली प्रकार जानते थे कि **"जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते"** जन्म से सभी शूद्र होते हैं। संस्कारों के द्वारा उसे द्विज बनाया जाता है। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। उन्होंने ऐसे-ऐसे उपाय खोज निकाले, जिससे मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बन जाता है। इन उपायों का नाम उन्होंने संस्कार रखा। डा० राजबली पाण्डेय ने लिखा है कि संस्कृत साहित्य में संस्कार का प्रयोग शिक्षा, संस्कृति प्रशिक्षण, सौजन्य, पूर्णता, व्याकरण सम्बन्धी शुद्धि संस्करण, परिष्करण, शोभा आभूषण, प्रभाव, स्वरूप, स्वभाव, क्रिया, काम, स्मरण शक्ति पर पड़ने वाला प्रभाव, शुद्धि क्रिया, धार्मिक विधि-विधान, अभिषेक, विचार भावना, धारणा, कार्य का परिणाम क्रिया की विशेषता आदि अर्थों में हुआ है।" महर्षि गौतम ने इस बात का समर्थन किया है कि संस्कारों से नैतिक विकास होता है। उन्होंने दया, क्षमा, अनसूया, शौच, शम, उचित व्यवहार, निरीहता तथा निर्लोभता-आत्मा के आठ गुणों का जन्म संस्कारों द्वारा होते लिखा है।

हीरे और जवाहरात जिस स्थिति में बाजार में देखे जाते हैं, उस हालत में वह खानों से नहीं निकलते, उनको खराद पर चढ़ाया जाता है, तब वह निखरते हैं। विधिवत् संस्कार द्वारा ही उसकी शोभा बढ़ती है। पारे को विधिपूर्वक जारण-मारण करके संस्कार द्वारा ही संजीवन रसायन बनाया जाता है। बाग में सुन्दर वृक्ष सुशोभित करने के लिए माली को उसकी बड़ी देखभाल करनी पड़ती है। खाद, पानी, गुड़ाई, निराई, काट-छाँट, कल्म आदि अनेक प्रक्रियाओं के द्वारा ही वह पौधे को मन चाहे रूप में बनाता है। जहाँ इस प्रकार के संस्कार करने वाला माली नहीं होता वहाँ पौधे कुरूप, अस्त, व्यस्त और विकृत परिस्थिति में पड़े रहते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों ने नर पशु को द्विज—आदर्शवाद के दृष्टिकोण को अपनाने वाला महामानव बनाने की विधि का आविष्कार किया था, जिसे 'संस्कार विज्ञान' का नाम दिया गया था। जिस समय लोगों को अपने धार्मिक कृत्यों, कर्मकाण्डों आदि पर आस्था थी और विधिवत् संस्कार आदि कराये जाते थे, उस समय यहाँ घर-घर में महापुरुष जन्म लेते थे क्योंकि षोडश संस्कारों द्वारा मनुष्य धीरे-धीरे महानता के पथ पर आगे बढ़ता रहता है।

आज सब ओर भौतिकवाद की ध्वनि सुनाई दे रही है। पाश्चात्य दृष्टिकोण को अपना कर हमने अपने धार्मिक विश्वासों को खो दिया है। हिन्दू धर्म रीतिरिवाज, व्रत, त्यौहार, कर्मकाण्ड, संस्कार, साधना, हवन आदि पर हमारी आस्था कम ही रही है। हम उसका उपहास करते हैं। यही कारण है कि आध्यात्मिक दृष्टि से उतने विकसित नहीं हो पाते और दीन-हीन बनकर दुःख पाते रहते हैं। यह निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म की प्रत्येक प्रक्रिया में अवश्य कुछ रहस्य छिपा रहता है। वह अन्ध विश्वास पर आधारित नहीं है। वह बुद्धि और तर्क की कसौटी पर खरे उतरती हैं। हम उन्हें बाह्य दृष्टि से देखते हैं, उनकी गहराई तक पहुँचने का प्रयत्न नहीं करते, इसलिए नासमझी के कारण उनकी उपेक्षा करते हैं अब समय आ गया है कि हम उनको समझें और पुनः उनको जीवन विकास के लिए प्रयोग में लावें।

संस्कारों के महत्त्व के बारे में संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि उनके विधि-विधान एवं कर्मकाण्ड में आहुतियों, शक्तिशाली मन्त्रों के प्रयोगों, अनेकों रहस्यपूर्ण क्रिया-प्रक्रियाओं के द्वारा विविध अवसरों पर किसी व्यक्ति पर ऐसा सूक्ष्म प्रभाव छोड़ा जाता है कि उसकी मनोभूमि, बुराइयों, क्षुद्रताओं से ऊपर उठकर अच्छाइयों एवं महानताओं को ग्रहण कर सकें। समय-समय पर होने वाले इन षोडश संस्कारों का कर्मकाण्ड तो रहस्यपूर्ण अध्यात्म, विज्ञान के चमत्कारी सत्परिणामों से परिपूर्ण है ही साथ ही उस अवसर पर जो शिक्षाएँ दी जाती हैं। वे भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। उत्सव मनाते हुए मनोभूमि को विशेष उल्लसित करके उस समय जो शिक्षाएँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दी जाती हैं वे ठीक समय पर बोये जाने वाले बीज की तरह फलवती होती हैं।

संस्कारों का मनोविज्ञान, अपने आप में निराला है

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि पाश्चात्य मनोविज्ञान ने हमें पशु प्रवृत्तियों का गुलाम बनाकर स्वच्छन्द जीवन जीने, अनैतिक आचरण करने के लिए खुली छूट दे दी किन्तु इस पर अंकुश लगाने व जीवन को सही ढंग से जीने का शिक्षण किस विधा ने दिया यदि यह मुझ से पूछा जाय तो मेरा इशारा भारत की ओर होगा, जिसके प्राच्य मनोविज्ञानियों ने मानव मात्र के लिए कर्म-प्रारब्ध संस्कार, मन-बुद्धि-चित्त अहंकार रूपी अंतःकरण चतुष्टय की व्याख्या कर विश्वमानवता की सबसे बड़ी सेवा की। भारतीय संस्कृति का यह सबसे प्रबलतम पक्ष है व यह समग्र आर्ष वाङ्मय में वेदों से लेकर उपनिषदों व दर्शनों से लेकर गीता तक मुखरित हुआ है। संस्कार शब्द की अवधारणा ही मूलरूप से भारतीय संस्कृति की है, जो आत्मा की नश्वरता व जीवन के सातत्य-अखण्ड रूप पर विश्वास करती है। आस्तिकता का यह मूलप्राण है।

योगवाशिष्ठ सौ टके की एक बात कहता है—

अतस्त्वं मन एवेदं नरं विद्धि न देहकम्।
जडो देहो मनश्चात्र न जडं नाजडं विदुः।।

(३।११०।१३)

भाव यह है कि "मन ही मनुष्य देह मनुष्य नहीं है। देह तो यह जड़ है। परन्तु मन न जड़ है, न चेतन। यह उभयात्मक है। जड़ चेतन के बीच दुभाषिये का काम करता है। चेतन से चेतना लेकर जड़ को चेतनामय बनाता है।" वस्तुतः यह सारी सृष्टि ही मन द्वारा रची गयी है। समष्टि मन परमात्मा का मन है ऐसी भारतीय संस्कृति की मान्यता है।

भारतीय मनोविज्ञान की कुछ मूलभूत अवधारणाएँ यदि हमारी समझ में आ जाएँ तो मानव जीवन के अनेकानेक पक्ष आज की सारी समस्याओं के कारण, निदान व समाधान तथा भारतीय संस्कृति के विभिन्न उपादानों का उनमें योगदान हमारी समझ में आ जाएँगा। भारतीय मनोविज्ञान अन्तःकरण चतुष्टय की सत्ता को मानता है व उसके चार भाग बताता है—मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार। मन व बुद्धि चेतन के अंग है तथा चित्त व अहंकार अचेतन की सृष्टि माने जाते हैं। मनुष्य की विराट जीवन यात्रा का खेल जिन संस्कारों के आधार पर चलता है, जो उसका व्यक्तित्व बनाते हैं, उसके भाग्य विधाता हैं, वे इसी अंतःकरण चतुष्टय के अचेतन भाग में विराजमान रहते हैं। ऋषियों की मान्यता है कि कर्म-संस्कार जन्म-जन्मान्तरों की चौरासी लाख योनियों की एक लम्बी यात्रा में परिभ्रमण करते हैं। इन्हीं को साथ लेकर मनुष्य जन्म लेता है व उनका अनगढ़ व सुगढ़ होना, उसके भावी कर्मों की गति का निर्धारण, सब कुछ प्रारब्ध व पुरुषार्थ के समीकरण पर टिका होता है। संस्कारों के चित्त पर पड़ने वाले प्रभावों व उनकी यात्रा का विवरण समझ लेने पर एक बहुत बड़ी गुत्थी सुलझ जाती है कि समान वातावरण व परिस्थितियों के होते हुए भी अपनी कुसंस्कारिता से जूझकर उबर कर आने में क्यों किसी को अधिक संघर्ष करना पड़ता है व क्यों किसी के लिए यह मार्ग निष्कंटक होता चला जाता है बिना अधिक कुछ कर्म-सम्पादन किए। संस्कृति का यह गुह्य पक्ष बडा ही अद्भुत व रहस्यों से भरा है।

श्री अरविन्द ने मनुष्य को दो तिहाई पशु प्रवृत्तियों को लेकर आया जीवधारी माना है व "मानवचक्र" पुस्तक में उसकी विस्तृत व्याख्या करते हुए लिखा है कि यह उसका सौभाग्य है कि वह कर्मयोनि में आया है ताकि कर्म करके वह अपनी विगत पशु प्रवृत्तियों को मिटा सके व नये संस्कारों का संग्रह कर अपने लिए या तो श्रेष्ठ स्थिति चुन ले अथवा जीवन-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाए, वस्तुतः हर मानव बेहोशी में जीता है। हम सब अचेतन में ही जीते हैं। जन्म के समय छोटे बच्चे के रूप में हमारे "नेचुरल इंस्टींक्स" जीवित रहते हैं तब स्वचालित प्रक्रियाएँ उसी क्रम से चलती हैं। क्रमिक गति से धीरे-धीरे मन का विकास होने लगता है व अचेतन में विद्यमान संस्कार हावी होकर वैसे कर्म कराने लगते हैं। हमारी नब्बे प्रतिशत गतिविधियाँ यहीं से संचालित होती हैं। पूर्वार्त्य मनोविज्ञान का सारा जोर इसी पर है कि व्यक्ति के अचेतन का परिष्कार कर दिया जाय ताकि वह नरपशु से नरमानव व देवमानव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बन सके। सारी साधना पद्धतियाँ, षोडश संस्कार विधान व तीर्थ, आरण्यक आदि उपादान इसी अचेतन की परिष्कृति के निमित्त ही हैं। व्यक्तित्व की परिष्कृति ही प्रकारान्तर से संस्कृति है व इस प्रकार भारतीय संस्कृति अपने शब्दार्थ के अनुरूप ही मानवी मन पर अपना सारा प्रभाव दिखाती व उसी क्षेत्र में परिवर्तन कर सही मानव, सही समाज व सही युग की रचना करने की बात कहती है।

ऋषियों की यह मान्यता है कि इस जन्म में जीव प्रधान रूप में जो कार्य करता है उसके सारे संस्कार उसके चित्त में अंकित हो जाते हैं। इन संस्कारों के चित्त पर अंकित होने की प्रक्रिया की तुलना ग्रामोफोन, रिकार्ड, फोटोग्राफ की नेगेटिव प्लेट या ऑडियो कैसेट की टेप पर किये गए अंकन से की जा सकती है। इन्हीं अंकित संस्कारों को धारण कर जीव अग्रिम जन्म में उन्हीं के अनुरूप, शरीर जन्म लेकर आता है और उन संस्कारों के अनुरूप ही उसकी आसक्ति या कर्मों में सहज प्रवृत्ति होती है। मीमांसा दर्शनकार लिखता है, **"कर्मबीजं संस्कारः"** अर्थात् संस्कार ही कर्म का बीज है तथा "तन्निमित्ता सृष्टिः" वही सृष्टि का आदि कारण है। इस प्रकार जीव सर्वथा संस्कारों का दास है, ऐसी मान्यता वैदिक ऋषि की है।

"कर्म संस्कार" या "कर्मवासना" शब्द का प्रयोग कर प्राच्य मनोविज्ञान कहता है कि न केवल मानसिक संकल्प, विचार आदि से अपितु देह, इन्द्रिय, मन बुद्धि, अहंकार आदि की सभी हलचलों से—चेष्टाओं—व्यापारों से संस्कारों की उत्पत्ति होती है। कर्म करते समय हमारा जितना मनोयोग होता है चित्त पर रेखांकन (मार्किंग) भी उतना ही स्पष्ट होता है। हमारे समीप चाहे जो होता रहे किन्तु यदि हमारा ध्यान उधर नहीं गया है तो हमारे चित्त पर उसका कोई संस्कार नहीं पड़ता।

चित्त पर पड़े संस्कारो के भी दो रूप होते हैं—एक स्मृति रूप, दूसरा कर्म रूप। स्मृति रूप संस्कार अध्ययन, ज्ञानार्जन, दृश्यांकन आदि से जन्म लेते हैं व चूँकि स्मृति की मेमोरी की एक सीमा होती है, ये बहुधा नष्ट होते रहते हैं। बनते हैं, बिगड़ते हैं व पुनः जन्म लेते रहते हैं, कर्म रूप संस्कार वे हैं, जिनमें हमारा कर्ता वाला अहंकार जुड़ा होता है। ये हमारे अन्तःकरण के एक अंग बनकर जन्म जन्मान्तरों तक हमारे साथ चलते हैं। अहंभाव से ग्रहीत संस्कार विस्मृति के गर्भ में जाकर भी कभी मिटते नहीं है। ये अन्तर्मन में, मन की गहरी परतों में संचित बने रहते हैं। इन्हीं को पाश्चात्य मनःविदों ने डिस्पोजिशन्स या एनग्रम्स कहा है। प्रख्यात मनोवैज्ञानिक कार्ल जुंग "साइकॉलाजीकल टाइप्स" में लिखते हैं "Sanskar is simply the result of habitual repetition of common thought or behaviour pattern until it becomes deeply rooted in psyche" अर्थात् "अभ्यासपूर्वक सतत् दुहराये जाने वाले विचार व व्यवहार ही संस्कार बनकर मन की गहराइयों में जड़ जमा लेते हैं।" इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्राच्य मनोविज्ञान को काफी सीमा तक समझने का प्रयास जुंग ने किया था व समय-समय पर वह उनके चिन्तन में अभिव्यक्त भी हुआ।

स्रष्टा द्वारा खेला जाने वाला संस्कारों का यह खेल निराला है। आत्मा अनादि काल से संसार-चक्र में भ्रमण कर रही है। अनन्त जन्मों में विचरण कर चुकी है। हर बार चित्त पर संस्कार आरोपित हो जाते हैं। जब भी संस्कार क्रिया के रूप में व्यक्त होते हैं, हम उसमें पुनः अहंभाव स्थापित कर लेते हैं तो फल यह होता है कि पूर्व के समान ही नवीन अंकेन पुनः हो जाता है। बस यही सिलसिला चलता रहता है। यदि कर्ता के अहंकार से रहित होकर कर्म किये जायें तो एक बार क्रिया की अभिव्यक्ति के बाद वे पुनः जन्म नहीं लेते। इस प्रकार चित्त को एक गोदाम माना जा सकता है, जिसमें अच्छे-बुरे सभी प्रकार के संस्कारों का संग्रह है। स्मृति पटल पर नवीनतम कर्त्ताभाव से किए गए अंकन बार-बार बनते रहते हैं। यदि श्रष्ठकर्म होंगे, श्रेष्ठ का साथ होगा तो संस्कार भी श्रेष्ठ संग्रहित होते चले जाएँगे। यह अवसर केवल मनुष्य को मिला है कि वह अपना चित्त रूपी जखीरा परिशोधित करना चाहे तो इस मानव जीवन का कर्म योनि का लाभ ले लें।

मात्र मनुष्य ही है जो *कर्मयोनि* में जन्म लेता है शेष सारी योनियाँ—स्थावर वृक्ष से लेकर कीटक-जीवजन्तु तथा देवताओं से लेकर यक्ष किन्नर तक सभी *भोगयोनि* में जन्म लेते हैं। यह धरा कर्मभूमि है। मनुष्य जन्म जन्मान्तरों से चले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आ रहे सुषुप्त संस्कारों का कोष लेकर आता है। इन्हें संचित कर्म कहा जाता है। जो नवीन कर्म वह सम्पादित करता है, उन्हें *क्रियमाण* कहते हैं। वे संचित में सम्मिलित होते चले जाते हैं। *प्रारब्ध* मनुष्य के लिए संचित से इस जन्म के लिये पृथक् हुआ भाग है। वर्त्तमान जन्म व उसका भोग मनुष्य का उसके प्रारब्ध के अनुसार ही मिला है, ऐसी देवसंस्कृति की मान्यता है। गीता अध्याय ८ में योगीराज श्री कृष्ण कहते हैं कि मनुष्य जिन-जिन भावों का स्मरण करते हुए शरीर छोड़ता है, उन्हीं यानियों को प्राप्त होता है, वही उसके प्रारब्ध बन जाते हैं (श्लोक ६)।

कर्मयोनि व भोगयोनि का अर्थ इसीलिए समझना जरूरी है। मनुष्य को यह जन्म इसलिए मिला है कि वह श्रेष्ठ कार्यों द्वारा प्रारब्ध काटकर अपने लिए नया मार्ग चुन ले। भोग में लिप्त होकर पुनः जन्म-मरण के चक्र में न बँधे। देवताओं तक को स्थायी कर्म संग्रह हेतु-संस्कार संचय हेतु पृथ्वी पर आकर कर्म करना पड़ता है क्योंकि उनकी योनि भोग योनि है। उनके पुण्य क्रमशः क्षय होते रहते हैं। वे पुण्यों का भोगकर उन्हें क्षीण कर रहे हैं तथा पशु-पक्षी वृक्ष आदि पापों का भोगकर उन्हें क्षीण कर प्रगति कर रहे हैं। मनुष्य ठीक ऐसी स्थिति में है कि जो भी वह करेगा, उसे वह तुरन्त बैंक अकाउण्ट में कमाए धन की भाँति जमा मिलेगा। अर्नाल्ड टायनबी लिखते हैं कि "हमारे कर्म हमारे लिए एक नैतिक स्तर का बैंक अकाउण्ट बनाते हैं, जिसमें क्रेडिट व डेबिट का सन्तुलन चलता रहता है। हर कर्म के साथ ताजी एण्ट्री होती रहती है व दोनों खाते हर बार रिन्यू होते रहते हैं।" वे लिखते हैं कि "बड़ी निराली व्यवस्था भारतीय ऋषियों की यह है, जिसमें व्यक्ति गणितीय सिद्धान्तानुसार शुभ कर्म करते हुए अपने लिए देवत्व का शुभ मार्ग चुन सकता है।"

सृष्टि में विचार से क्रिया—क्रिया का प्रतिफल क्रिया की स्मृति-आदर्त-संस्कारों का चित्त पर आरोपण यह खेल निरन्तर चल रहा है व कुशल शक्तियाँ व्यवस्थापिका की भूमिका निभाती हुई यह सारी प्रक्रिया सुनिश्चित कर रही हैं कि हर व्यक्ति अपने लिए कर्म करता हुआ लोक संग्रह करे। अवसर हर पुरुषार्थी का मिलता है। प्रकृति की शक्तियाँ प्रारब्ध के वशीभूत हो अवसर लाती हैं तथा सुकर्मों द्वारा गुरु की शक्ति से एवं ध्यान साधना द्वारा प्रारब्ध को बदला जा सकता है। एक स्वचालित सुनियोजित कर्म "कर्म पुरुषार्थ" पर टिका सतत् चल रहा है।

यह सारा तत्वदर्शन यहाँ मनोविज्ञान का क. ख. ग. समझाने के लिए नहीं, न ही विद्वता झाड़ने के लिए अपितु सृष्टि की सुव्यवस्था के तन्त्र को समझाने के लिए प्रस्तुत किया गया है। संस्कार जो व्यष्टिगत है पूरी समष्टि को प्रभावित करते हैं। साथ ही यह भी सत्य है कि समाज के संस्कार व्यक्ति के मन को भी प्रभावित करते हैं। आज मूल समस्या क्या है ? यही न कि समाज कुसंस्कारी हो गया है, व्यक्ति अपनी आस्थाएँ नैतिक मूल्य खो बैठा है तो यहाँ यह भी समझना होगा कि यह सारी प्रक्रिया अचेतन मन की समष्टिगत प्रतिक्रिया से जन्मी है व इसका उपचार भी उसी सूक्ष्म स्तर पर उसी धरातल पर ही सम्भव है। आज जो मानसिक संत्रास, कुण्ठाएँ, मनो-शारीरिक रोगों का बाहुल्य धरती पर है वह भी कुसंस्कारों की ही प्रतिक्रिया है। धरती का इतिहास बदलना है, समाज का सारा ढाँचा बदलना है, पूरे युग को बदलना है तो हमें समष्टिगत संस्कारों के परिशोधन हेतु सारे समाज में देवमानव बनाने वाले तन्त्र को पैदा करना होगा।

वस्तुतः व्यक्ति के मन का इतिहास ही धरती का इतिहास है। चंगेज खाँ, नेपोलियन, मुसोलिनी, हिटलर आदि के अचेतन मनों ने उनके अनुरूप दुनिया का इतिहास बना दिया। मानव की दुर्दशा का कारण ही अचेतन के संस्कारों की प्रतिक्रिया है। यदि धरती के भाग्य विधाता एक नहीं, अनेकों सुसंस्कारी देवमानव अगले दिनों बन जाएँ तो वे भविष्य को आमूलचूल बदल सकते हैं। स्वस्थ चिंतन करने वाले व्यक्तियों को पैदा करने का तन्त्र हमें देवसंस्कृति दिग्दर्शन करते हुए प्रदान करती है। देवसंस्कृति ही हमें योगसाधना के माध्यम से चित्त की वृत्तियों का निरोध कर संचित कुसंस्कारों को मिटाना व अनगढ़ को सुगढ़ बनाना सिखाती है। यही नहीं अपने प्रसुप्त सुसंस्कारों को जगाना भी अध्यात्म तत्व दर्शन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के विभिन्न निर्धारणों के माध्यम से सम्भव है, जिनका उल्लेख भारतीय संस्कृति करती है।

संस्कारों का मानवी चेतना से गहरा सम्बन्ध है। इसके माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक परिष्कार की प्रक्रियाएँ सम्पन्न की जाती हैं और उस पर लदे हुए जन्म-जन्मान्तरों के कुसंस्कारों से पीछा छुड़ाया जाता है, महर्षि चरक के अनुसार, **"संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते।"**

अर्थात् वस्तु में नये गुणों को आधान करने का नाम संस्कार है। इसका दूसरा पर्याय 'करण' भी है। चरकसंहिता में उल्लेख है—

"करणं हि नाम स्वाभाविकानाम् द्रव्याणामभिसंस्कारः।"

अर्थात् स्वाभाविक द्रव्यों का अभिसंस्कार करना करण है। जैसे-धान या चावल को सुसंस्कारित करके सुपाच्य खील या परमल बनाना तथा दूध से दही और घी का निर्माण करना। संस्कारित होने पर वस्तु के गुणों में आमूल-चूल परिवर्तन हो जाता है। यह संस्कार ही है, जो वस्तु के अन्दर नए गुण पैदा करते हैं। मामूली से धातु अयस्क को जब विविध प्रक्रियाओं द्वारा संस्कारित किया जाता है, तो वही पदार्थ बहुमूल्य धातु या रसायन बन जाती है। मनुष्य के अन्दर भी दिव्य गुणों का समावेश हो सके एवं संचित कषाय-कल्मषों का, कुसंस्कारों का निष्कासन हो सके, इसके लिए संस्कार आवश्यक हैं। यह संस्कार जितनी छोटी आयु में या जितनी जल्दी किये जा सकें उतने ही सफल होते हैं। शास्त्र का कथन है—

"यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथाभवेत्।"

अर्थात् जिस प्रकार नये पात्र में किया संस्कार फिर नहीं बदलता, उसी प्रकार आयु बनने के समय—काय संरचना के समय में किया गया संस्कार स्थायी रहता है।

संस्कार-प्रक्रिया का एक ही अर्थ है—सद्गुणों का आधान करना और दोष-दुर्गुणों को निकालना। जिस प्रकार स्वर्णाभूषणों को अग्नि संस्कारित कर उसे निर्मल बना देती है, उसी प्रकार यज्ञाग्नि के सान्निध्य में 'सम्पन्न' संस्कार मनुष्य के दोषों को जलाकर उसे परिशोधित एवं निर्मल बना देते हैं। इसीलिए प्रत्येक संस्कार के साथ यज्ञाग्नि या अग्निहोत्र का विधान रखा गया है।

प्राचीन 'गृह्य सूत्रों' में संस्कारों के विधि-विधानों का सुविस्तृत वर्णन है। संस्कारों का मुख्य उद्देश्य ही आध्यात्मिक जीवन और धार्मिकता के भावों की वृद्धि करना है। विविध इन्द्रिय भोगों की तरफ तो मनुष्य का आकर्षण शीघ्र हो जाता है, पर धार्मिक नियमों और कर्त्तव्यों के पालन की तरफ बड़ी कठिनता से ध्यान जाता है। मानव स्वभाव की इसी कमजोरी को देखकर मनीषियों ने संस्कारों का निर्माण और प्रचलन किया था। उन्होंने यह जान लिया था कि जब तक मनुष्यों को धार्मिक कर्त्तव्यों का स्मरण निरन्तर न कराया जाता रहेगा, तब तक वे अधिकांश में विविध मनोविकृतियों, चरित्रहीनता और अनैतिकता की तरफ ही झुकेंगे। इसलिए उनको बीच-बीच में ऐसे अवसर मिलने चाहिए, जिससे वे सामूहिक रूप से मिलकर बैठें, धर्म-चर्चा करें और धार्मिक कार्यों को प्रत्यक्ष रूप में आयोजित करके उनसे प्रेरणा लें। संस्कारों का विधान ही ऐसा हितकारी एवं प्रेरणाप्रद बनाया गया है, जिसमें मनुष्यों का अपना कुछ लाभ जान पड़े तथा सामाजिक समारोह के रूप में कुछ मनोविनोद का अवसर भी मिले। उससे प्रेरणा ग्रहण करके मनोविकृतियों से छुटकारा पाया जा सके।

संस्कार पद्धति को एक प्रकार से मनोविकारों के निराकरण की विज्ञान सम्मत आध्यात्मिक चिकित्सा प्रणाली भी कहा जा सकता है। यह विज्ञान अद्भुत रूप से आध्यात्मिक लाभों और सामाजिक सत्परिणामों एवं मनोवैज्ञानिक तथ्यों से भरा-पूरा है। अब तक शरीरगत दुर्बलताओं एवं बीमारियों के समाधान का ही बहुत करके अन्वेषण प्रयास किया गया है। आयुर्वेद, होम्योपैथी, एलोपैथी, नेचरेपैथी आदि चिकित्सा पद्धतियाँ प्रायः शरीरगत कष्टों को ही दूर करती हैं। मानसिक अस्पतालों में पागलों के लिए इन दिनों एक लँगड़ी-लूली परीक्षणात्मक व्यवस्था ही चल रही है। आज सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता मनुष्य की मानसिक विकृतियों एवं दुर्बलताओं के समाधान की है। इन्हीं के कारण मानव जाति का सबसे अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। प्रगति के पथ को अवरुद्ध करने वाली प्रधान बाधा यह विकृतियाँ ही हैं, पर इनके निराकरण का कोई उपाय न किसी चिकित्सा पद्धति ने ढूँढ़ा और न प्राप्त ही किया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है—जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव जीवन को सार्थक बनाने हेतु संस्कारों द्वारा सतत् शोधन तथा आत्मसत्ता के अभिवर्धन की अभिनव व्यवस्था। मानव कल्याण की महान् परम्पराओं में जितने भी आयोजन एवं अनुष्ठान हैं, उनमें सबसे बड़ी परम्परा संस्कारों की है। यह वे आध्यात्मिक उपचार हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य को सुसंस्कृत बनाना अधिक सम्भव और सरल है। संस्कृति के अन्तर्गत जीवन क्रम में इन्हें इस प्रकार समाविष्ट कर दिया गया है कि यथासम्भव वांछित श्रेष्ठ संस्कार व्यक्ति को स्वयमेव मिलते रहें और वह अनगढ़ नर-पशु से ऊँचा उठकर नर-मानव और नर-नारायण स्तर तक पहुँच सकें।

जिस प्रकार आयुर्वेदिक रसायनें बनाने की अवधि में उन पर कितने ही संस्कार डाले जाते हैं, कई बार कई प्रकार के रसों में उन्हें खरल किया जाता है और कई बार उन्हें गजपुट आदि विधियों द्वारा अग्नि में जलाया, तपाया और संस्कारित किया जाता है, तब कहीं वह कम महत्त्व की धातु मकरध्वज सरीखी बहुमूल्य एवं चमत्कारिक शक्ति सम्पन्न रसायन बन पाती है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य को भी समय-समय पर विभिन्न आध्यात्मिक उपचारों द्वारा सुसंस्कृत बनाने की महत्त्वपूर्ण पद्धति भारतीय तत्ववेत्ता ऋषियों ने विकसित की थी। वे इस तथ्य से भली-भाँति परिचित थे कि बार-बार तपाये जाने-सुसंस्कारित किये जाने से मनुष्य के संचित कुसंस्कार नष्ट होते और उनके स्थान पर उत्कृष्टता की पक्षधर देवी विशेषताओं के अंकुर उगते, पल्लवित, पुष्पित होते हैं, जिससे मनुष्य देवत्व की ओर अग्रसर होता है। यों तो किसी व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने के लिए शिक्षा, सत्संग, वातावरण, परिस्थिति, सूझ-बूझ आदि अनेक बातों की आवश्यकता होती है। सामान्यतः ऐसे ही माध्यमों से लोगों की मनोभूमि विकसित होती है। इसके अतिरिक्त तत्ववेत्ताओं ने मनुष्य की अन्तःभूमि को श्रेष्ठता की दिशा में विकसित करने के लिए कुछ ऐसे सूक्ष्म उपचारों का भी आविष्कार किया है, जिनका प्रभाव शरीर तथा मन पर ही नहीं सूक्ष्म अन्तःकरण पर भी पड़ता है और उसके प्रभाव से मनुष्य को गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से समुन्नत स्तर की ओर बढ़ने में सहायता मिलती है।

संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति 'कृ' धातु में 'सम्' उपसर्ग और 'घञ्' प्रत्यय लगाकर की गई है। इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, सौजन्य, व्याकरण की शुद्धि, संस्करण, शोभा, आभूषण आदि अनेक अर्थों में हुआ है। अंग्रेजी में इसके लिये 'सेरेमॅनि' अर्थात् धर्मानुष्ठान एवं 'एक्रामेण्ट' आदि शब्दों का प्रयोग होता है, परन्तु ये शब्द भारतीय संस्कृति 'संस्कार' शब्द के उस व्यापक अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पाते, जिसका प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक परिष्कार के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों के लिए किया जाता है।

प्राचीन ऋषियों ने संस्कारों का निर्माण मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व के परिष्कार के लिए किया था। यह विश्वास किया जाता था कि संस्कारों के अनुष्ठान से व्यक्ति में दैवी गुणों का आविर्भाव हो जाता है। यही संस्कारों का सांस्कृतिक प्रयोजन भी है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को अनुशासित किया जाना, उसकी आध्यात्मिक उन्नति के लिये आवश्यक है, संस्कारों से इसी की पूर्ति होती है। भारतीय संस्कृति के आदि प्रवक्ता भगवान मनु का कथन है कि संस्कार शरीर को शुद्ध करके उसे आत्मा के निवास के उपयुक्त बनाते हैं। महर्षि शबर का मत है कि संस्कार के द्वारा मनुष्य किसी उद्देश्य विशेष के उपयुक्त बनता है। मानव जीवन का सर्वोच्च पुरुषार्थ मोक्ष माना गया है। यह एक तथ्य है कि जन्म से प्रत्येक व्यक्ति शूद्र होता है, संस्कारों द्वारा परिमार्जित होकर ही वह द्विज बनता है। इस तरह संस्कारों का मुख्य प्रयोजन आध्यात्मिक तो है ही, साथ ही नैतिक विकास का उद्देश्य भी इसमें सन्निहित है। संत विनोबा ने अपनी कृति "गीता प्रवचन" में कहा है—"यदि जीवन में संस्कारों का पवित्र प्रवाह सतत् बहता रहे तो ही अन्त में मनुष्य महामरण का आनन्द उठा सकता है।"

इस तरह मानव जीवन को पवित्र एवं उत्कृष्ट बनाने वाले आध्यात्मिक उपचार का नाम ही 'संस्कार' है। महर्षि पाणिनि के कथनानुसार संस्कार शब्द के तीन अर्थ हैं— (१) **'उत्कर्ष**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधनं संस्कारः अर्थात् उत्कर्ष करने वाला साधन, (२) समवास अर्थात् संघात और (३) आभूषण। प्रत्येक मनुष्य जन्म के साथ कुछ गुण-अवगुण लेकर पैदा होता है। उस पर पूर्व जन्मों के विविध संस्कार छाये रहते हैं। आयु वृद्धि के साथ उस पर नये-नये संस्कार भी पड़ते रहते हैं। अतः पुराने संस्कारों को प्रभावित करके उनमें परिवर्तन, परिवर्धन अथवा उनका उन्मूलन करना-प्रतिकूल संस्कारों को विनष्ट कर अनुकूल संस्कारों का निर्माण करने का विधान ही 'संस्कार-पद्धति' कहलाता है।

भारतीय धर्म के अनुसार संस्कार १६ प्रकार के होते हैं, जिन्हें "षोडश संस्कार" कहते हैं। माता के गर्भ में आने के दिन से लेकर मृत्यु तक की अवधि में समय-समय पर प्रत्येक दैव संस्कृति के आराधक को १६ बार संस्कारित करके उसे एक प्रकार की आध्यात्मिक रसायन बनाया जाता है। इसमें व्यक्ति को देव-मानव स्तर तक जा पहुँचने की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभावी प्रेरणा दी जाती है। यह संस्कार पद्धति सूक्ष्म अध्यात्म विज्ञान की अतीव प्रेरणास्पद प्रक्रिया पर अवलम्बित है। वेद मन्त्रों के सस्वर उच्चारण से उत्पन्न होने वाली ध्वनि तरंगें यज्ञीय ऊष्मा के साथ सम्बद्ध होकर एक अलौकिक वातावरण प्रस्तुत करती हैं। जो भी व्यक्ति इस वातावरण में होते हैं या जिनके लिए भी उस पुण्य प्रक्रिया का प्रयोग होता है, वे उससे प्रभावित होते हैं, यह ऐसे प्रचण्ड प्रवाह उत्पन्न करता है जिससे व्यक्तियों के गुण, कर्म, स्वभाव में अन्य अनेकों दिव्य विशेषताएँ प्रस्फुटित होती हैं। संस्कारों की प्रक्रिया एक ऐसी आध्यात्मिक उपचार पद्धति है, जिसका परिणाम व्यर्थ नहीं जाने पाता। व्यक्तियों के विकास में इन उपचारों से आश्चर्यजनक सहायता मिलती देखी जाती है।

संस्कारों में जो विधि-विधान हैं, उनका मनोवैज्ञानिक प्रभाव मनुष्य को सन्मार्गगामी होने के उपयुक्त बनाता है। संस्कार के मन्त्रों में अनेक ऐसी दिशायें भरी पड़ी हैं, जो उन परिस्थितियों के लिए प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए सीमान्त संस्कार के समय उच्चारण किये जाने वाले मन्त्रों में गर्भवती के रहन-सहन, आहार-विहार सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रशिक्षण मौजूद हैं। इसी प्रकार विवाह में दाम्पत्य-जीवन की, अन्न-प्राशन में भोजन-छाजन की, वानप्रस्थ में सेवा-परायण जीवन जीने की आवश्यक शिक्षाएँ भरी पड़ी हैं। परिवार को संस्कारवान् बनाने की, कौटुम्बिक जीवन को सुविकसित बनाने की यह एक मनोविज्ञान सम्मत एवं धर्मानुमोदित प्रक्रिया है। हर्षोत्सव के वातावरण में देवताओं की साक्षी, अग्निदेव का सान्निध्य, धर्म-भावनाओं से ओत-प्रोत मनोभूमि, स्वजन सम्बन्धियों की उपस्थिति, पुरोहित द्वारा कराया हुआ धर्म-कृत्य यह सब मिलजुलकर संस्कार से सम्बन्धित व्यक्तियों को एक विशेष प्रकार की मानसिक अवस्था में पहुँचा देते हैं। दिव्य वातावरण में उस समय जो प्रतिज्ञायें की जाती हैं, जो प्रक्रियायें कराई जाती हैं, वे अपना गहरा प्रभाव सूक्ष्म मन पर छोड़ती हैं, जिनकी अमिट छाप चिरस्थायी बनी रहती है। ऋषियों ने अपनी आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक शोधों के आधार पर संस्कार प्रक्रिया का निर्माण किया है। वह जितनी प्रभावशाली पूर्वकाल में थीं, उतनी ही आज भी हैं, यदि उन्हें ठीक ढंग से उचित व्यवस्था के साथ, उपयुक्त वातावरण में सम्पन्न किया जा सके।

मनुज द्विज बनते हैं संस्कार से

मनुष्य जब जन्म लेता है, तो जन्म जन्मान्तरों के अनेक कषाय-कल्मष अपने साथ लाता है। उनका परिमार्जन परिष्कार आवश्यक होता है। यदि उन्हें यों ही छोड़ दिया जाये तो वे आगे चलकर चित्र-विचित्र कल्पनाएँ अपरिष्कृत चिन्तन, तन्त्र, विलक्षण मनोवृत्तियों का एक मिला-जुला मानवी स्वरूप निर्धारित करते हैं। ऐसी स्थिति में चिन्तन और क्रिया में, योग्यता, बुद्धि, रुचि और लक्ष्य में एकरूपता न होने के कारण उसके जीवन की कोई एक निश्चित दिशा निर्धारित नहीं हो पाती।

डाक्टर जानते हैं कि रक्त में जब विजातीय द्रव्य, जीवाणु विषाणु प्रवेश करते हैं, तो वे रोगों को जन्म देते हैं। ओझा तान्त्रिकों की मान्यता है कि शरीर में जब किसी बाहरी सत्ता का हस्तक्षेप होता है, तो व्यक्ति उन्मादग्रस्त बनकर औंधे-सीधे कार्य करने लगता है। विपरीत विचारधारा के व्यक्ति से घर में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कलह उत्पन्न होता, वैमनस्य बढ़ता और उससे पूरा परिवार प्रभावित होकर अवगति की राह पर आ जाता है।

संचित कषाय-कल्मष मनुष्य की ऐसी ही गति बनाते हैं। इन्हीं से उबारने और आत्मिक प्रगति के पथ की ओर अग्रसर करने के लिए ऋषियों ने "संस्कार पद्धति" की व्यवस्था की थी। इसे देव संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता मानी जानी चाहिए क्योंकि इसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवनपर्यन्त व्यक्तित्व को सफल-सार्थक बनाने हेतु सतत् शोधन एवं आत्मसत्ता के अभिवर्धन का प्रावधान है। यह उस विद्या रूपी विभूति की विधा है, जो गुरुकुल शिक्षण प्रणाली का अंग रही है। संस्कृति के अन्तर्गत जीवन क्रम में इन्हें इस प्रकार समाविष्ट कर दिया गया कि यथासमय वांछित श्रेष्ठ संस्कार व्यक्ति को स्वयमेव मिलते रहें।

पशु यह नहीं जानते कि उनकी मर्यादाएँ क्या हैं ? कैसे रहना, खाना, पीना और जीवन-यापन करना है ? उनका यह सारा क्रिया-व्यापार प्रकृति प्रेरणा से चलता है किन्तु मनुष्य को इस बात की भली भाँति जानकारी होती है कि वह अपना आत्म विकास कैसे करे ? कैसी योजनाएँ बनाए और कार्यक्रम अपनाए कि अन्ततः वह उस मार्ग पर चलते-चलते परमलक्ष्य को प्राप्त करे। इस दिशा में अड़चन एक ही आती है वह है—कुसंस्कार। वही मार्ग में बाधक बनकर उद्देश्य की ओर बढ़ते व्यक्ति को च्युत करते हैं। इनके रहते उससे वैसा कुछ करते नहीं बन पड़ता, जो उसे सुसंस्कृत-सुविकसित बना सके। यह बात नहीं, कि सुसंस्कारिता के बीज किसी किसी में ही होते हैं। यह न्यूनाधिक होते तो सभी में हैं, पर कुसंस्कारिता के झाड़-झंखाड़ से इस प्रकार दबे रहते हैं कि उन्हें पनपने का मौका ही नहीं मिल पाता। यह उभयपक्षीय प्रयोजन संस्कार पद्धति पूरा करती है।

भारतीय संस्कृति की आदि काल से यह विशेषता रही है कि उसमें उद्देश्यपूर्ण आदर्शयुक्त, पारमार्थिक, जीवन को ही प्रमुखता दी गई है। इस देश में उस व्यक्ति को ही सच्चा मनुष्य माना जाता रहा है, जो संस्कारवान आदर्श जीवन जीता रहा है। अज्ञान, अशक्ति, अभाव, कषाय-कल्मष से संघर्ष करने का व्रत लेने वाले ही "द्विज" कहे जाते हैं। जो द्विज नहीं हैं, अर्थात् जिनमें संघर्ष क्षमता क्षीण हो चुकी है, वे आजीवन शूद्र बने रहते हैं। ऐसे स्वार्थी, लोभी, विषयी, विकारी मनुष्य का अर्ध-सामाजिक वहिष्कार किया जाता रहा है। वस्तुतः जन्म से सभी शूद्र ही होते हैं, पर बाद में सूक्ष्म आध्यात्मिक उपचारों द्वारा संस्कारित होकर, अपनी चिन्तन-चेतना को परिष्कृत कर वे द्विजत्व की प्राप्ति करते हैं।

परमात्मा ने किसी भी प्राणी को पूर्ण नहीं बनाया। अपूर्णता की कमी को अनुभव करते हुए वह पूर्ण बनने का प्रयत्न करता है। यही उसके जीवन का उद्देश्य होता है, अन्य प्राणियों की अपेक्षा जहाँ मनुष्य में अधिक गुण हैं, वहाँ उसमें कमियाँ भी हैं। पशु उससे बढ़े-चढ़े हैं। पशु का बालक जन्म लेते ही उछलने, कूदने लगता है। उसे खड़े होना, चलना, दूध पीना, माता को पहचानना आदि बातें सिखाई नहीं जातीं वरन् वह स्वयं सीख जाते हैं। मनुष्य के बालक के साथ यह बात नहीं है। बिना सहायता के वह आगे नहीं बढ़ सकता। उसे प्रत्येक कार्य की शिक्षा दी जाती है। यदि उसे सांसारिक कार्यों की शिक्षा न दी जावे तो वह पशु से भी अधिक विकसित न होगा। उसे सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

इस सन्दर्भ में मूर्धन्य मनीषियों का कहना है कि गर्भावस्था में आने से लेकर मृत्यु-पर्यन्त मनुष्य को अनेकानेक वातावरण में परिवेष्ठित ही रहना पड़ता है। गर्भकाल में वह अपनी अनुवांशिकता से आवेष्टित होता है और उस समय जन्मदात्री माँ के शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य एवं भाव संवेदनाओं का उस पर प्रगाढ़ असर पड़ता है, किन्तु इस दुनिया में पदार्पण करते ही उसे जो प्रथम वातावरण मिलता है, वह उसका पारिवारिक परिवेश होता है। यह एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसा वातावरण है, जहाँ शिशु के व्यक्तित्व की गलाई-ढलाई होती है एवं इसकी नींव रखी जाती है, जिस पर कालान्तर में सुदृढ़ व्यक्तित्व का महल खड़ा किया जाता है। वैज्ञानिक अनुसन्धानों से भी अब यह स्पष्ट हो गया है कि बच्चों को आनुवंशिकी से अधिक वातावरण, पारिवारिक परिवेश एवं परिस्थितियाँ प्रभावित करती हैं। शिशुओं के समग्र मानसिक विकास के लिए पारिवारिक शान्ति, सौहार्द्र और स्नेह-दुलार के साथ-साथ संस्कारोन्मुख प्रशिक्षण की व्यवस्था का होना भी नितान्त आवश्यक है।

नृतत्ववेत्ताओं, समाजशास्त्रियों एवं चिकित्सा-विज्ञानियों ने इस सन्दर्भ में गंभीरतापूर्वक अध्ययन अनुसन्धान किया है। उनके अनुसार मनुष्य का विकास ज्ञानवृद्धि-प्रशिक्षण, अभ्यास एवं संस्कार के अभाव में स्वाभाविक ढंग से नहीं हो पाती। इसके लिए जहाँ एक ओर माता-पिता या अभिभावक और शिक्षक आवश्यक हैं, वहीं दूसरी ओर तदनुरूप उपयुक्त वातावरण का होना भी जरुरी है।

बेविलोन के सुप्रसिद्ध राजा असुर वानापाल, फ्रेडरिक द्वितीय, जेम्स चतुर्थ और अकबर के समय में कुछ बच्चों पर इस तरह के प्रयोग किये गये थे जिनमें उन्हें मानव समाज से इस तरह अलग रखा गया था कि उनका सम्पर्क किसी भी व्यक्ति से न हो सके। न तो वे किसी की बातें सुन सकें और न उनके क्रिया-कलापों को देख सकें। केवल कुछ महिलायें ही उनके पालन-पोषण और रक्षण के लिए नियत की गयीं थीं जो बिना बोले कुछ संकेतों द्वारा ही उनका पालन-पोषण करती रहीं। निश्चित अवधि के पश्चात् वे भी उनसे दूर हट जातीं और वहीं से उनका निरीक्षण करती रहती थीं। उन सभी प्रयोग-परीक्षणों से एक ही निष्कर्ष निकला था कि प्रशिक्षण एवं ज्ञानवृद्धि के अभाव में सभी बच्चे अविकसित, गूंगे, बहरे एवं व्यक्तित्व की दृष्टि से सर्वथा गये गुजरे थे।

बगीचे में सुन्दर वृक्ष सुशोभित करने के लिए माली को उसकी बड़ी देख-भाल करनी पड़ती है। खाद, पानी, गुड़ाई, निराई, काट-छांट, कलम आदि अनेक प्रक्रियाओं के द्वारा ही वह पौधे को मनचाहे रूप में बना सकने में समर्थ होता है। जहाँ इस प्रकार के संस्कार करने वाला माली नहीं होता, वहाँ पौधे कुरूप, अस्त-व्यस्त और विकृत परिस्थिति में पड़े रहते हैं। यह बात मनुष्य के बालकों पर और भी अधिक लागू होती है। पशुओं के बालक तो जन्म से ही खड़े होना, चलना, दूध पीना, माता को पहचानना, बोलना आदि बातें सीखे होते हैं पर मनुष्य के बालक को दूसरों की सहायता से बहुत समय में यह सब बातें धीरे-धीरे सीखनी होती हैं। यदि इस प्रकार का शिक्षण उसे प्राप्त न हो तो वह सर्वथा अविकसित ही रह जाता है।

एक बार एक मादा भेड़िया मनुष्य बालक को उठा ले गई। उसने उसे खाया नहीं वरन् अपना दूध पिलाकर पाल लिया। इस प्रकार पला हुआ आठ वर्ष का बालक जब शिकारियों द्वारा पकड़ा गया तो वह भेड़ियों जैसे ही चलता, बोलता, खाता एवं सोचता था। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने मानसिक विकास में तब तक सफल और समर्थ नहीं होता, जब तक कि उसे किसी दूसरे की बौद्धिक सहायता न मिले। यह सहायता ही वह आधार है, जिसके द्वारा कोई मनुष्य भला-बुरा, छुद्र एवं महान बनता है।

"अण्डरस्टेण्डिंग ह्यूमन बिहेवियर" नामक पुस्तक में 'वाइल्ड चाइल्ड' शीर्षक के अन्तर्गत इस प्रकार के अनेक मानव शिशुओं का विस्तृत विवरण दिया गया है, जिनको असहाय अवस्था में पाकर विपरीत स्वभाव कहे जाने वाले वन्य हिंस्र पशुओं यथा—भेड़िये, शेर, चीते, बन्दरों और भालुओं ने अपने बच्चों की तरह ममता एवं वात्सल्य भरे आत्मीयता से पाला-पोसा। प्रख्यात जीवविज्ञानी डॉ. हिलवर्ट सिग्लर ने इस सम्बन्ध में किये गये अपने व्यापक अध्ययन एवं सर्वेक्षणों के आधार पर बताया है कि हिंस्र पशुओं के साथ पले-बढ़े ये सभी मानव-शिशु अपने वन्य पालकों के साथ हिल-मिलकर रहते, उछलते-कूदते और शिकार करते पाये गये थे। रहन-सहन, खान-पान एवं व्यवहार में भी वे पूरी तरह जंगली वातावरण के अनुरूप ढल गये थे।

अंग्रेजी के सुविख्यात साहित्यकार रडयार्ड किपलिंग ने "टारजन ऑफ दि एप्स" नामक अपने शोध ग्रन्थ में 'टारजन' नामक वन-मानव की कथा को बड़े ही रोचकपूर्ण शब्दों में वर्णित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया है। टारजन एक ख्याति प्राप्त कॉमिक स्ट्रीप ही नहीं अब वाइल्ड फैन्टेसी का एक विलक्षण नायक भी है। इसकी कथा इस प्रकार है कि एक ग्यारह वर्षीय अंग्रेज बालक एक जहाज से बिछुड़कर अफ्रीका के घने जंगलों में जा फँसा, जहाँ उसे बन्दरों ने पकड़कर पाल-पोस लिया। अन्य पशुओं का भी उसे भावनात्मक सहयोग मिला और लगातार पन्द्रह वर्ष तक उनके बीच रहकर वह वन्य परिवार के हिंस्र तथा अहिंस्र प्राणियों का परिचित ही नहीं स्नेह भाजन भी बन गया था।

सर्वप्रथम वन्य पशुओं द्वारा पाले-पोसे गये मानव शिशुओं का प्रामाणिक विवरण चौदहवीं शताब्दी में तैयार किया गया था। सन् १३४१ में जर्मनी के हैसे नामक बालक का नाम रिकार्ड में सर्वप्रथम अंकित किया गया था। लगभग बारह वर्षीय यह बालक जर्मनी के सघन जंगलों से खूँखार जानवरों के झुण्ड से जाल में फँसाकर पकड़ा गया था। इसके बाद समय-समय पर मध्य और पूर्वी योरोप के देशों में ऐसे अनेक बालकों को जंगली जानवरों के मध्य रहते हुए खोज निकाला गया। वे सभी गूंगे थे या अपने पालनकर्ताओं की तरह गुर्राने और कच्चा मांस खाने वाले थे तथा उन्हीं की तरह हाथ-पैरों से छलांग मारकर चलते थे।

भारत में ब्रिटिश शासन काल में मेजर जनरल स्लीमैन नामक एक अंग्रेज अधिकारी ने इस सन्दर्भ में गहरी रुचि ली। सन् १९०० में उसने यह अनुमान लगाया था कि समूचे विश्व में प्रतिवर्ष प्रायः ६ हजार बच्चे जंगली हिंसक पशुओं की गिरफ्त में आ जाते हैं, जिनमें से अधिकतर को वे अपने बच्चों की तरह पाल-पोसकर अपने परिवार का अभिन्न सदस्य बना लेते हैं। उनके निर्देशन में पश्चिम बंगाल के मिदनापुर के जंगलों से अमला और कमला नामक दो लड़कियाँ खोज निकाली गयीं थी, जिनमें अमला की आयु १८ माह और कमला की १२ वर्ष थी। अनकों प्रयत्न करने के बावजूद भी उन्हें पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं किया जा सका था। दोनों की मृत्यु क्रमशः ६ वर्ष और १७ वर्ष की आयु में हो गयी थी।

सन् १९७३ में इटली के प्राणि-व्यवहार विशेषज्ञों के एक खोजी दल न आबूजी नामक पहाड़ियों के मध्य जंगली भेड़ियों के समूह से 'रोमो' नामक एक बच्चे को पकड़ा था। यह जंगल अपनी अत्यधिक सघनता एवं हिंस्र प्राणियों की बहुलता के लिए विख्यात है। रोमो भी पशुओं की तरह हाथ-पैरों की सहायता से छलांग लगाता और भेड़ियों की तरह गुर्राता था। इसी वर्ष श्रीलंका के घने जंगलों से 'टीसा' नामक एक बालक भी बन्दरों की टोलियों के साथ उछल-कूद करते हुए पाया गया था। बन्दरों के साथ छीना-झपटी करते समय वह भी अन्य साथियों की तरह घुड़की भरता और गुर्राता हुआ पेड़ की शाखायें हिलाने लगता। मनोवैज्ञानिकों के सतत् परिश्रम और प्रयासों से उसे कुछ ही महीनों में सामान्य व्यवहार क्रम में प्रशिक्षित कर लिया गया।

मानवीय व्यवहार विशेषज्ञों व अनुसंधानकर्ताओं ने वन्य पशुओं द्वारा पोषित मानव शिशुओं को दो प्रकार की श्रेणी में रखा है। पहली श्रेणी में वे बच्चे आते हैं, जो किसी आकस्मिक दुर्घटना अथवा संयोगवश अपने माता-पिता या परिजनों से बिछुड़कर भूल-भटककर सघन जंगलों में फँसे, जहाँ उनकी असहाय एवं दयनीय अवस्था से द्रवीभूत खूँखार समझे जाने वाले जानवरों ने अपनी सन्तानों की तरह आत्मीयतापूर्वक पाल-पोस लिया था। दूसरी श्रेणी में उन बच्चों को रखा गया है, जिन्हें शेर, चीते, बाघ, भालू और भेड़िये जैसे मानवीय रक्त और मांस से अपनी क्षुधा-पिपासा शान्त करने वाले प्राणियों ने उठा लिया था, किन्तु अपनी खुद की सन्तान न होने के कारण अथवा क्रूर और निर्मम मनुष्यों द्वारा अपने शिशुओं की हत्या कर दिये जाने पर सहज वात्सल्य भावना उमड़ पड़ने से उनको स्व-शिशुवत पाल लिया था।

गहन अध्ययनों एवं सर्वेक्षणों के आधार पर यह तथ्य भी उभरकर आया है कि पर्याप्त प्रशिक्षण तथा स्नेह-दुलार के अभाव में बच्चे मानसिक रूप से अविकसित रह जाते हैं और कितने ही मानसिक विकृति अथवा अन्य पारिवारिक कलह, कुंठा-कुत्साओं के कारण घर छोड़कर जंगलों की ओर भाग जाते हैं। आज का तथाकथित सभ्य मानव भले ही स्वार्थी,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

निष्ठुर, क्रूर और मानवीय संवेदनाओं से रहित हो गया हो, किन्तु अध्ययनों से पता चलता है कि खूनी एवं हिंस्र समझे जाने वाले वन्य प्राणियों की भाव संवेदनायें—प्रेम, ममता, समता और सद्भाव-सहयोग का स्रोत अभी सूखा नहीं है। वे मासूम असहाय बेसहारा बच्चों की व्यथा-वेदना पर टूक-टूक हो जाते हैं और अपनी विनाशकारी हिंसक प्रवृत्ति छोड़कर अपने निजी शिशुओं की तरह उन पर भी वात्सल्यभाव भरी ममता का सागर उड़ेल देते हैं। बच्चे भी उन्हीं परिवारों का अभिन्न अंग बनकर रहने और तदनुरूप अनुकरण आचरण तथा व्यवहार करने लगते हैं।

वन्य जीवों, जंगली हिंस्र पशुओं के साथ घुल-मिल कर जीवन-यापन करने वाले प्रकृति के कठोर आघातों से सन्तुलन बिठा लेने में समर्थ मानव शिशुओं के ये विवरण विचारशीलों, मनोवेत्ताओं एवं वैज्ञानिकों को सोचने के लिए विवश करते हैं कि यदि बच्चों को भावी पीढ़ी के सुसंस्कृत वातावरण प्रदान नहीं किया गया, संस्कार नहीं दिये गये, प्रशिक्षण एवं ज्ञान वृद्धि की समुचित व्यवस्था जुटायी नहीं जा सकी, तो अगले दिनों व्यक्तित्व की दृष्टि से मनुष्य को पशुमानव का जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। विश्व-विख्यात वैज्ञानिक मनीषी जॉन ग्रेन ने 'यूनीसेफ' के माध्यम से ठीक ही कहा है—"यदि आप एक बच्चे को उचित वातावरण पारिवारिक परिवेश, भोजन, माता-पिता का प्यार, समुचित स्वतन्त्रता, संस्कार एवं शिक्षा से वंचित रखते हैं तो आप एक ऐसे वयस्क का निर्माण करेंगे जो व्यक्तित्व की दृष्टि से अविकसित रहेगा और विकास की दशा में प्रगति को तेज करने की अपेक्षा उसे पीछे की ओर धकेलेगा।

आज शिक्षा, भौतिक प्रगति, मानवी सूझ-बूझ सभी उत्कर्ष पर हैं, किन्तु फिर भी इनसे समृद्ध व्यक्ति को सुसंस्कृत नहीं कहा जा सकता, यह व्यक्ति को सभ्य तो बना सकती हैं, पर संस्कृत कहलाने का श्रेय-सम्मान इनसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है। संस्कारवान तो वह तभी कहला सकता है, जब अपने अन्तःकरण की मलीनता को धोकर गुण, कर्म, स्वभाव को समुन्नत स्तर का बना सके। भारतीय संस्कृति में संस्कार पद्धति के आध्यात्मिक उपचार इसी की व्यवस्था करते हैं।

इस प्रकार मानव जीवन को प्रखर-पवित्र बनाने की उपचार-प्रक्रिया को ही संस्कार कहा गया है। मेदिनी कोश में इसका एक अर्थ "प्रभाव" भी बताया गया है—**"यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्"** अर्थात् जो संस्कार या प्रभाव नूतन पात्र पर पड़ जाता है, वह फिर बदलता नहीं। अतः संस्कार की श्रेणी में उन्हीं सद्गुणों को रखा जाता रहा है, जो चिरस्थायी प्रभाव डालते हों।

प्रतिकूल संस्कारों को विनष्ट कर अनुकूल उत्कृष्ट संस्कारों को स्थापित करने के लिए देव संस्कृति में प्रभावोत्पादक कर्मकाण्डों की व्यवस्था है, पर इनकी संख्या कितनी हो ? इस सम्बन्ध में कोई निश्चित निर्धारण नहीं है। *"दशकर्म पद्धति"* के अनुसार संस्कार दस हैं। ऋषि अंगिरा ने पच्चीस संस्कार गिनाये हैं, जबकि गौतम सूत्र में इनकी संख्या चालीस बताई गई है—**"चत्वारिंशत्संस्कारैः संस्कृतः"** अर्थात् व्यक्ति को चालीस संस्कारों से सुसंस्कृत होना चाहिये। कहीं-कहीं इनकी संख्या अड़तालीस भी बताई गई है।

इतने संस्कारों को करने-कराने का न तो आज के लोगों के पास समय रह गया है और न यह सभी आज के समयानुकूल हैं। अतः समय, सुविधा, परिस्थिति और अनुकूलता को देखते हुए षोडश-संस्कारों को ही प्रधानता दी गई है। भगवान वेद व्यास ने भी इनकी संख्या सोलह बताई है। इनमें भी दस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। ये हैं—पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारंभ, उपनयन, विवाह, वानप्रस्थ, अन्त्येष्टि और श्राद्ध। इन सभी में महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं का समावेश है। पुंसवन में माता तथा परिवार को गर्भावस्था में एवं जन्म के उपरान्त शिशु को सुविकसित बनाने की आवश्यक जानकारी दी जाती है। नामकरण में किसी ऐसे महापुरुष, देवशक्ति के नाम के चयन पर बल दिया जाता है, जो उसके सद्गुणों को गरिमा का भान कराये ताकि बालक धीरे-धीरे स्वयं को उसी के अनुरूप ढालता चले। बालक के आहार-विहार सम्बन्धी जानकारी अन्नप्रशन्न के अन्तर्गत दी जाती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुण्डन में मानसिक विकास की शिक्षा निहित है। विद्यारम्भ संस्कार सभ्य-सुशिक्षित बनने की प्रेरणा देता है। उपनयन के अन्तर्गत जीवन को महान बनाने वाले विभिन्न सद्गुणों का महत्त्व समझना, जीवन में उनका समावेश करना और आजीवन निबाहना मुख्य है। एक-एक मिलकर ग्यारह बनने, परिवार-समाज के अधिकाधिक काम आने तथा जीवन को यज्ञीय बनाने का संदेश विवाह के माध्यम से दिया जाता है। ढलती आयु का सुनियोजन साधना सेवा के क्षेत्र में हो—यह वानप्रस्थ संस्कार का उद्देश्य है। अन्त्येष्टि द्वारा जीवन की नश्वरता और उसके श्रेष्ठतम सदुपयोग की शिक्षा लोगों को हृदयंगम करायी जाती है। श्राद्ध के अन्तर्गत मृतक द्वारा छोड़ी सम्पदा का परमार्थ प्रयोजनों में सदुपयोग कर मृतात्मा को सद्गति प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण निर्देश है।

संस्कार एक प्रकार से मनोवैज्ञानिक उपचार हैं, जो मनुष्य को सत्परायण बनने की दिशा देते हैं। कर्मकाण्ड से अधिक इनमें भावना का महत्त्व होता है। हर वर्ण-जाति के व्यक्ति को हर संस्कार के लिये खुली छूट मिली है। कहीं किसी प्रकार का बन्धन नहीं है। वस्तुतः संस्कारों से ही व्यक्ति ब्राह्मणत्व की प्राप्ति करता है। महर्षि गौतम ने कहा है—**"ब्राह्मणः ब्रह्मणः सायुज्यमाप्नोति"** अर्थात् ऐसा संस्कारी व्यक्ति ब्रह्मसायुज्य (साक्षात्कार) का श्रेय प्राप्त कर लेता है।

देवमानव गढ़ देने वाले ये विलक्षण संस्कार

संस्कारों से रहित जातिच्युत द्विजों के लिए एक शब्द उपालम्भ के साथ आर्षवाङ्मय में प्रयुक्त हुआ है। यह है "व्रात्य" व्रात्य का अर्थ होता है, ऐसे व्यक्ति जिनने संस्कार विहीन होकर मानवी गरिमा के अनुरूप जीने का अधिकार खो दिया व स्वयं को नीचा गिरा लिया। मनुस्मृति कहती है—**"व्रात्यस्तु जायते द्विजप्रात्पापात्मा भूर्जकण्टकः।"** ब्राह्मणों से ही उत्पन्न प्रतिलोम यह पापात्मा म्लेच्छ जाति है, ऐसा मनु का मत है। वस्तुतः देव संस्कृति अनादिकाल से दो ही प्रकार के मानवों का वर्णन करती आयी है—एक संस्कार सम्पन्न-ब्रह्मनिष्ठ जीवन जीने वाले *ब्राह्मण* जिनके कारण आर्यावर्त "ब्रह्मवर्त" कहलाया व जिनने सतयुगी समाज की स्थापना की। दूसरे, वे जो संस्कारों से च्युत हो जाने के कारण म्लेच्छ अथवा व्रात्य कहलाये। इन्हें तिरस्कृत कर समुदाय में बहिष्कृत कर दिया जाता था। जो भी व्यक्ति शापित होकर भारतवर्ष से निर्वासित हुए, उनको सबसे बड़ा दण्ड यह दिया गया कि उनके साथ कुल पुरोहित ब्राह्मण नहीं भेजा गया। परिणाम यह हुआ कि उनके संस्कार क्रमशः लुप्त होने लगे। जीवन रूपी विराट यात्रा के हर मोड़ पर जिनकी आवश्यकता थी, उनके सम्पन्न न होने के कारण आचार-विचार सब बदलता चला गया व क्रमशः ये सभी आचारविहीन म्लेच्छ कहलाये। बार-बार बृहत्तर भारत पर आक्रमण इन्हीं व्रात्यों द्वारा होते रहे हैं, यह इतिहासविदों व संस्कृति के वेत्ताओं का मत है। जहाँ-जहाँ न्यूनाधिक भी आचार-व्यवहार जिन्दा रहा, वहाँ के लोगों ने भारत से सम्बन्ध बनाये रखे। महाभारत काल तक उनके सम्बन्ध उनकी कन्याओं का भारत में विवाहादि का क्रम बना रहा। बाद में यह टूट गया। इस प्रकार कुल पाँच हजार वर्ष पूर्व तक विश्व के समस्त मानव भारतीय संस्कृति देव—संस्कृति के ही अनुयायी कहलाकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते थे। यह सारा गौरव संस्कारों की महिमा के कारण ही था।

संस्कार शब्द ने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान भारतीय आचार-विचार में पाया है। अनैतिक आचरण कुसंस्कारों की तथा श्रेष्ठ अनुकरणीय आचरण सुसंस्कारों की प्रतिक्रिया हमारे यहाँ मानी जाती है। आखिर ये संस्कार हैं क्या ? आद्यशंकर कहते हैं—**संस्कारो हि नाम संस्कार्यस्य गुणाधानेन वा स्याद्योषाप नयनेन वा"** (१ / १ / ४—ब्रह्मसूत्र भाष्य) अर्थात् "जिसका संस्कार किया जाता है, उसमें गुणों का आरोपण अथवा उसके दोषों को दूर करने के लिए जो कर्म किया जाता है उसे संस्कार कहते है।" गौतम धर्म सूत्र में कहा गया है कि "संस्कार उसे कहते हैं जिससे दोष हटते हैं और गुणों का उत्कर्ष होता है।" संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति 'कृ' धातु में सम् उपसर्ग और 'घञ्'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रत्यय लगाकर की गयी है। इस शब्द का उपभोग शिक्षा, संस्कृति, सौजन्य अभिव्यक्ति, व्याकरण शुद्धि, संस्करण शोभा आदि अनेक अर्थों में हुआ है। अंग्रेजी में इसके लिए "सेक्रामेण्ट" शब्द का प्रयोग करते हैं फिर भी यह सभी शब्द भारतीय संस्कृति के संस्कार शब्द के उस व्यापक अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पाते, जिसके माध्यम से व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक बौद्धिक व आध्यात्मिक परिष्कार के निमित्त धार्मिक अनुष्ठान कृत्य सम्पन्न किया जाता है।

जिस प्रकार विभिन्न प्रकार की मिट्टी को विधानानुसार संस्कारों द्वारा शोध कर उससे लोहा, ताँबा, सोना आदि बहुमूल्य धातुएँ प्राप्त कर लेते हैं, जिस प्रकार आयुर्वेदिक रसायन बनाने वाले औषधियों को कई प्रकार के रसों में मिश्रित कर उन्हें गजपुट, अग्निपुट विधियों द्वारा कई-कई बार तपाकर संस्कारित कर उनसे मकरध्वज जैसी चमत्कारी व अन्यान्य औषधियों का निर्माण करते हैं, ठीक इसी प्रकार मनुष्य के लिए भी समय-समय पर विभिन्न आध्यात्मिक उपचारों का विधान कर उन्हें सुसंस्कृत बनाने की, अनगढ़ से सुगढ़ बनाने की महत्त्वपूर्ण पद्धति भारतीय तत्ववेत्ता ऋषियों ने विकसित की थी। इसी को षोडष संस्कार नाम दिया गया है। ऋषिगण इस तथ्य से परिचित थे कि बार-बार तपाये जाने-सुसंस्कारिता किये जाने से मनुष्य के संचित कुसंस्कार नष्ट होते हैं तथा इन सूक्ष्म उपचारों द्वारा जीवन की मार्मिक—संधियों-महत्त्वपूर्ण अवसरों पर विशिष्टताओं का, देवत्व का अभिवर्धन किया जाना संभव है।

वस्तुतः भारतीय संस्कृति का मूलभूत एक उद्देश्य है वह है "श्रेष्ठ संस्कारवान मानव का निर्माण"। ऋषि यह मानते हैं कि जन्म-जन्मान्तरों की वासनाओं का लेप जीवात्मा पर रहता है। मनुष्य योनि में ही वस्तुतः आत्मतत्व पकड़ में आता है। वैदिक धर्म व्यवस्था यह करती है कि मनुष्य के गर्भ में आते ही आत्मा पर छाये मलिनता के कषाय कल्मषों को हटा दिया जाय व उस पर नये संस्कार आरोपित कर दिये जायें, ऋषिगणों ने मानवजीवन को आत्मा की विराट यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय माना व गहन समीक्षा कर गर्भ में आने से लेकर चिता में समर्पण तक तथा उसके बाद भी मरणोत्तर विराम तक आने वाले महत्त्वपूर्ण मोड़ों पर जीवात्मा को सँभालने-सँवारने की व्यवस्था की है। मानवेतर योनियों से घूमकर आई हेय स्तर की आत्मा भी इन संस्कारों की भट्ठी में जिनका विधान ऋषिगणों ने किया है, तपकर प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व के रूप में ढल जाती है। प्राचीन "गृह्यसूत्रों" में संस्कारों के विधि-विधानों का विस्तार से वर्णन कर उन्हें सामूहिक चेतना के जागरण, मन की उल्लास-प्रफुल्लता से जुड़ी वृत्तियों के उभार तथा मनोविकारों के निराकरण हेतु ऋषि प्रणीत आध्यात्मिक चिकित्सा के रूप में सम्बोधित किया गया है।

आर्य संस्कृति के अनुसार वेद, स्मृति, तन्त्र में सब मिलाकर ४८ संस्कार पाये जाते हैं किन्तु इनमें भी १६ प्रमुख हैं। वेद का कर्म मीमांसा दर्शन षोडष संस्कारों की ही चर्चा करता है। यदि इन्हें विधिपूर्वक सम्पन्न किया जाय तो प्रथम आठ संस्कार प्रवृत्ति मार्ग में एवं शेष आठ मुक्ति मार्ग पर मनुष्य को पहुँचा देते हैं, ऐसी ऋषियों की मान्यता है। इस संस्कार परम्परा की इतनी महत्त्वपूर्ण फल श्रुतियों के बावजूद इनकी अवज्ञा क्यों होती चली गयी व आज के आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता प्रधान समाज में इन्हें उपेक्षा की दृष्टि से क्यों देखा जाता है, यह एक विचारणीय प्रश्न है ? हमने षोडश संस्कारों को युगानुकूल बनाकर इन्हें धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण का एक अनिवार्य अंग बनाते हुए न केवल प्रगतिशील बनाया है अपितु विज्ञान सम्मत प्रतिपादनों द्वारा इन्हें व्यापक स्तर पर सम्पन्न किये जाने की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया को भी जन्म दिया है। एक तरह से खर्चीले कर्मकाण्डों व अनावश्यक भाग-दोड़ से भरे इन कृत्यों को सत्ता व जनसुलभ बनाकर इनको पुनर्जीवन दिया है।

देखा गया है कि इस बदले वैज्ञानिक युग में व्यक्ति के पास आध्यात्मिक प्रयोजनों के लिए समय उतना नहीं है, जितना पहले था। दूसरे जिस तरह अशुद्ध मन्त्रोच्चारण कर, उनका अर्थ व उनसे ली जाने वाली शिक्षा न समझाकर जिस प्रकार इनके नाम पर लकीर पीटी जाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। उससे भी जन उपेक्षा बढ़ी है। प्रत्येक कर्मकाण्ड के साथ खर्चीले साधन होने व उनके विकल्प न सोचने के कारण भी जनरुचि इनसे हटी है। प्रीतिभोज के नाम पर हर संस्कार के साथ जुड़ा एक अनिवार्य उपक्रम ही इतना खर्चीला हो जाता है कि वह परस्पर प्रीति के स्थान पर यजमान के मन में धर्मतन्त्र के प्रति आक्रोश और पैदा होती है। वस्तुतः सभी संस्कारों के साथ जुड़े कर्मकाण्डों में युगानुकूल संशोधन भी जरूरी था, उनके साथ जुड़ी शिक्षाओं को सुगम भाषा में समझाए जाने की आवश्यकता भी थी तथा भाव संवेदनापरक माहौल उभारने के लिए उस स्तर के पुरोहितों के उत्पादन का तन्त्र भी अनिवार्य था। पुरोहितों-कर्मकाण्ड सम्पन्न कराने वालों के शिक्षण हेतु भी परम पूज्य गुरुदेव ने कर्म के आधार पर बने ब्राह्मणों तथा मध्यकाल से उपेक्षिता नारी वर्ग को आगे कर एक क्रान्तिकारी कार्य किया व पण्डों-पुरोहितों-परम्परा से चले आ रहे खर्चीले भ्रष्ट तन्त्र को परे रख, एक समानान्तर सेना संस्कार सम्पन्न कराने वालों की खड़ी कर दी। एक उपयोग विधा, जो व्यक्तित्व के मर्मस्थल का स्पर्श करती थी, को इस प्रकार जनसुलभ बना देना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी था।

पारंपारिक ढंग से ४८ संस्कारों में जिन षोडश संस्कारों को शास्त्र मान्यता देते आए हैं, वे इस प्रकार हैं—(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन से प्रथम तीन जन्म से पूर्व के संस्कार हैं। (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्नप्राशन (८) चूड़ाकरण (९) कर्णवेध—ये छह संस्कार जन्म के बाद बाल्यावस्था के हैं। इनके पश्चात् बालक के शिक्षा ग्रहण करने योग्य होने पर (१०) विद्यारम्भ (११) उपनयन (यज्ञोपवीत) (१२) वेदारम्भ (१३) केशान्त तथा (१४) समावर्तन संस्कार ब्रह्मचर्यव्रत के समापन व विद्यार्थी जीवन के अन्त के सूचक के रूप में माना जाता था। (१५) विवाह संस्कार गृहस्थ जीवन के शुभारम्भ पर तथा (१६) अन्त्येष्टि जीवन के समापन पर अन्तिम संस्कार के रूप में सम्पन्न होता था। इन षोडश संस्कारों में वानप्रस्थ और संन्यास को ऋषियों ने न गिनकर इनकी गणना वर्णाश्रम व्यवस्था में की थी।

युगानुकूल बनाते हुए अब इनकी संख्या घटाकर दस कर दी गयी है, जो आज की दृष्टि से अत्यन्त अनिवार्य व व्यावहारिक हैं। दो संस्कार नये जोड़े गये हैं, जो आज के प्रचलन के अनुरूप हैं। वे हैं जन्म दिवसोत्सव तथा विवाह दिवसोत्सव संस्कार मनाना। यह देव संस्कृति की विशेषता है कि स्मृतियों से लेकर अन्यान्य निर्धारणों में समय-समय पर परिवर्तन किये जाते रहे हैं। ऋषिगण पूर्वाग्रहों से परे विवेक को सर्वोपरि मानते चले आये हैं। परिणाम यही है कि कुछ कट्टर धार्मिक कर्मकाण्डियों को छोड़कर शेष सहिष्णु व्यक्तियों ने अपने को समय के अनुरूप ढाल लिया है। सामयिकता, उपयोगिता, सार्वजनिक और सत्परिणामों की सम्भावनाओं को सुनिश्चित करने वाली परपाटी ही इक्कीसवीं सदी के मुहाने पर खड़ी युवाशक्ति-प्रबुद्धों तथा नारी-शक्ति को स्वीकार्य होगी, यह मानते हुए युग निर्माण योजना-प्रज्ञा अभियान ने बारह संस्कारों की जन-जन तक लोकप्रिय बनाया व इन्हें सम्पन्न किये जाने की विराट स्तर पर व्यवस्था भी की है। ये इस प्रकार हैं।

(१) पुंसवन संस्कार (२) नामकरण संस्कार (३) अन्नप्राशन संस्कार (४) मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार (५) विद्यारंभ संस्कार (६) यज्ञोपवीत संस्कार (७) विवाह संस्कार (८) वानप्रस्थ संस्कार (९) अन्त्येष्टि संस्कार (१०) मरणोत्तर- श्राद्ध संस्कार (११) जन्म-दिवस संस्कार (१२) विवाह-दिवस संस्कार।

पाठक गण इस सूची में देखेंगे कि वानप्रस्थ तथा श्राद्ध संस्कार का इनमें समावेश है जिनका उल्लेख पारम्परिक षोडष संस्कारों में नहीं है। साथ ही जन्म-दिवस व विवाह-दिवस जैसे आधुनिकतम संस्कार भी हैं, जो वैसे धूम-धड़ाके से पाश्चात्य विधि से 'बर्थ डे' 'एनीवर्सरी' नाम से मनाये जाते हैं। किन्तु यदि धार्मिक कर्मकाण्डों से जुड़े शिक्षण के साथ इन्हें मनाया जाय तो ये न केवल मूल उद्देश्य पूरा करते हैं, जीवन में श्रेष्ठ प्रेरणाओं का समावेश भी करते हैं। इस दृष्टि से ये अत्यन्त उपयोगी हैं। संक्षिप्त विवेचन हम सभी का यहाँ प्रस्तुत करेंगे किन्तु मूलतः उपर्युक्त बारह संस्कारों तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दो बाद में जुड़े नये संस्कार *शिखास्थापन* (जो चूड़ाकर्म का उपसंहार पक्ष है किन्तु कभी भी कराया जा सकता है) तथा *गुरु दीक्षा संस्कार* (जो उपनयन के साथ जुड़े द्विजत्व पद के बाद गुरुवरण के लिए किया जाता है) की व्याख्या विस्तार से अगले पृष्ठों पर देखी जा सकती है।

गर्भाधान, पुंसवन तथा सीमन्त संस्कार बालक के जन्म के पूर्व के संस्कार हैं। गर्भाधान संस्कार गृहस्थाश्रम की एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने जा रहे नव दम्पत्तियों के लिए एक परिवार संस्था का दायित्व सम्भालने के पूर्व की चेतावनी व शिक्षण के रूप में किया जाता था। गर्भाधान को आज का व्यक्ति मात्र वासनापूर्ति का साधन मानता है। ऋषियों ने कब कल्पना की होगी कि कभी "स्पर्म बैंक" बनकर खड़े हो जाएँगे व उनके द्वारा प्रणीत "गर्भाधान" संस्कार का ऐसा मखौल उड़ेगा। इस संस्कार में यह बताया जाता था कि आने वाली जीवात्मा परमात्मा का स्वरूप और प्रतिनिधि है। उसे आमन्त्रित करने के पहले अपनी योग्यता, साधन और परिस्थितियों का नवदम्पत्ति आकलन कर लें। आर्य पुरुष अपनी स्त्री के समीप सुसन्तति उत्पत्ति रूपी एक निश्चित उद्देश्य को लेकर पूर्व नियम रात्रि में निश्चित रूप से ऐसी धार्मिक पवित्रता लेकर जाते थे, जो भावी संतान को निर्मल बनाती थी। आज की परिस्थितियों में लोगों की उथली दृष्टि देखते हुए फिलहाल इसे छोड़ दिया गया है।

पुसंवन संस्कार गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास के लिए गर्भिणी का सम्पन्न किया जाता है। यह तब सम्पन्न किया जाता था, जब बालक के भौतिक शरीर का निर्माण प्रारम्भ हो जाता था। प्रायः तीसरे माह से गर्भ में आकार और संस्कार दोनों अपना संस्कार दोनों अपना स्वरूप बनाने लगते हैं। शौनक ऋषि के अनुसार यह कृत्य प्रत्येक गर्भधारण के पश्चात् करना चाहिए क्योंकि औषधि सेवन व यज्ञकर्म से गर्भ पवित्र व शुद्ध हो जाता है। याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार पुसंवन संस्कार पहले गर्भ में ही मात्र करना चाहिए, प्रत्येक गर्भ में नहीं, क्योंकि ये कृत्य क्षेत्र संस्कार हैं। पुंसवन संस्कार में गर्भिणी स्त्री के दाहिने नासिका छिद्र में वटवृक्ष के छाल का रस गर्भपात के निरोध तथा श्रेष्ठ सन्तति के जन्म के निश्चय के उद्देश्य से छोड़ा जाता था। यह सारी प्रक्रिया ऋषियों के आयुर्वेदिक अनुभव पर आधारित थी। आज थ्रेटण्ड एबॉर्शन से लेकर गर्भस्थ बच्चे पर हानिकारक औषधियों के प्रभाव तक कितनी ही प्रक्रियाएँ वातावरण में विद्यमान हैं। इनकी सुरक्षा इस कर्म से होती थी।

युग निर्माण योजना ने सभी संस्कारों को यज्ञकर्म से जोड़कर विशिष्ट मन्त्रोच्चारण का क्रम उनमें जोड़कर इन संस्कारों में नये प्राण फूँके हैं। वटवृक्ष, गिलोय, पीपल इन तीन वृक्षों के क्रमशः जटा, बेल व कोपल का थोड़ा-थोड़ा अंश पानी के साथ पीसकर एक बर्तन में उसका घोल तैयार कर उसे सुघाने के पीछे एक ही तथ्य है कि इन औषधियों के गुण गर्भस्थ बच्चे के विकास को प्रभावित करें। वटवृक्ष विशालता दृढ़ता का प्रतीक है। गिलोय अन्तः के कुविचारों—हानिकारक रोगाणुओं के नाश का तथा पीपल परमार्थ परायणता का। इसके पश्चात् गर्भपूजन का विधान है, जिसमें संस्कारक्रम में उपस्थित सभी परिवारी जन अपनी श्रद्धा अपने आशीर्वाद पुष्प के माध्यम से "सुपर्णोऽसि" आदि मन्त्रों द्वारा गर्भस्थ शिशु तक पहुँचाते हैं। गर्भवती महिला, पति तथा परिजनों द्वारा गर्भस्थ जीव व दैवी सत्ता जिसने उसे जन्म दिया को मन्त्रों द्वारा आश्वस्तना दी जाती है कि उसके विकास का समुचित प्रयास सभी के द्वारा किया जाएगा। तत्पश्चात् यज्ञकर्म सम्पन्न होता है। गर्भिणी नियमित आहुतियों के अतिरिक्त पाँच आहुतियाँ खीर की विशेष मन्त्रों के साथ यज्ञकुण्ड में देती है। यज्ञ में संस्कारित यह खीर यज्ञकर्म समापन के पश्चात् गर्भिणी द्वारा सेवन कर ली जाती है। पूरा कर्मकाण्ड शिक्षणपरक ही नहीं, वैज्ञानिकता के हर चरण पर समावेश से भरापूरा है। आज श्रेष्ठ संततियों की आवश्यकता है तो ऐसे संस्कारों का प्रचलन बड़ा जरूरी है।

सीमन्तोन्नयन संस्कार गर्भ का तीसरा संस्कार था, जिसमें प्रतीकों द्वारा माता को श्रेष्ठ चिन्तन अपने संस्कारों में शिशु के हित की कामना करते रहने की प्रेरणा दी जाती थी। छठे तथा आठवें माह में किये जानें वाला यह संस्कार कालक्रम के अनुसार अब उतना उपयोगी तथा व्यवहारिक भी नहीं रहा। जातकर्म संस्कार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्म के तुरन्त बाद सम्पन्न होता था। नाभिबन्धन से पूर्व वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ यह सम्पन्न होता था। अब प्रायः सभी प्रसव अस्पतालों या प्रसूतिगृहों में सम्पन्न होते हैं, अतः इसकी उपयोगिता भी नहीं रही।

नामकरण संस्कार—पश्चिम से बिल्कुल भिन्न एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें गुण प्रधान नाम द्वारा या महामानवों पर रखे नाम द्वारा यह प्रेरणा दी जाती है कि बच्चे जीवनभर उसी की तरह बनने का स्मरण रखें। शिशु कन्या है या पुत्र उसका भेद न करते हुए इस संस्कर द्वारा शिशु की मौलिक कल्याणकारी प्रवृत्तियों को जगाने की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है। सामान्यतया यह जन्म के दसवें दिन यज्ञकर्म के साथ सम्पन्न होता था। यज्ञ के साथ जन्म सूतिका का निवारण-शुद्धिकरण भी हो जाता है। मूल भावना इसकी यह है कि जन्म-जन्मान्तरों के संचित कुसंस्कार अब मानवतन में हुए इस जन्म के साथ दूर हों। सभी उपस्थित व्यक्ति कलश जल के अभिषेक द्वारा शिशु पर अनुदानों की श्रेष्ठ संस्कारों की वर्षा करते हैं। कौंधनी अथवा मेखला कमर में इस आशा से बाँधी जाती है कि नवजात शिशु कर्त्तव्य निष्ठा की दृष्टि से सदैव सजग रहे। अभिभावक जब भी बच्चे के कमर की मेखला को बाँधे, उन्हें ध्यान रहे कि बच्चा उनके संरक्षण में है। उसे दोष-दुर्गुणों से मुक्त कराना उनका दायित्व है। शहद चटाकर मधुरभाषण का—शालीनता का शिक्षण संस्कार समाहित किया जाता है। वैदिक आर्य सूर्योपासक रहे हैं। इस नाते इस संस्कार में मधुप्राशन के उपरान्त सूर्य का दर्शन करा, उसकी प्रखरता—तेजस्विता धारण करने की तथा भूमि को नमन कर राष्ट्र के प्रति देव संस्कृति के प्रति समर्पण का शिक्षण दिया जाता है। इसके पश्चात् एक सज्जित थाली में लिखा नाम सबको दिखाकर आचार्य मन्त्रोच्चारण के साथ उनकी घोषणा करते हैं व शिशु का नाम लेकर सबसे उसके चिरंजीवी, धर्मशील व प्रगतिशील होने के नारे लगवाते हैं, मूलतः यह समग्र संस्कार बालक के लिए तो है ही, उपस्थित परिजनों में देव संस्कृति की श्रेष्ठतम प्रेरणाएँ सन्निहित करने के लिए अधिक है।

बाल्यकाल के अन्य संस्कारों में *निष्क्रमण* व *कर्णवेध* की अब कोई प्रासंगिकता नहीं रही। निष्क्रमण का समावेश नामकरण में कर दिया गया है। कर्णवेध सम्भावित रोगों से बचाव हेतु किया जाता था। कालान्तर में यह बालिकाओं के आभूषण धारण हेतु सीमित होकर रह गया अतः इसका भी प्रचलन अब समाप्त प्रायः है, क्योंकि नर-नारी जब समान हैं तो फिर दोनों ही करायें। वस्तुतः आधुनिक एक्युपंक्चर पद्धति के अनुरूप यह एक सशक्त विधान था। *अन्नप्राशन संस्कार* में जो शिशु जन्म के छठे मास में (गो. गृ. सू. २/७/१५) किया जाता है, में प्रथम अन्न-आहार ग्रहण कराने के साथ भावना यह की जाती है कि हमेशा बालक सुसंस्कारी अन्न ग्रहण करे **"आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः"** की प्रेरणा इस माध्यम से हृदयगम करायी जाती है। सुपाच्य खीर, मधुरता का प्रतीक मधु, स्नेह का प्रतीक घी, विकारनाशक पवित्र तुलसी तथा पवित्रता का प्रतीक गंगा जल का सम्मिश्रण (प्रत्येक विशिष्ट मन्त्रोच्चार के साथ) यज्ञ भगवान के प्रसाद के रूप में बच्चे को खिलाया जाता है। हमेशा बालक बालिका सात्विक आहार ही ग्रहण करे व इस प्रकार चिन्तन सदा उसका सतोगुणी बना रहे, यही प्रेरणा सभी अभिव्यक्त करते हैं। चूड़ाकर्म संस्कार की शिखा स्थापन संस्कार के साथ व्याख्या अगले लेख में की गयी है। यहाँ बाल्यकाल समापन पर विद्यारम्भ की विवेचना कर इस पूर्वार्ध का समापन करेंगे।

विद्यारम्भ संस्कार बड़ी महत्त्वपूर्ण फलश्रुतियों से भरा हुआ है। आयु के पाँचवें वर्ष में यह तब सम्पन्न कराया जाता है, जब बालक का मस्तिष्क शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो जाता है। शिक्षा मात्र शिक्षा न रहकर विद्या बने, गणेश व सरस्वती के पूजन के माध्यम से वह सुसंस्कार देने वाली विद्या तथा ज्ञानवर्धन करने वाली कला उल्लास की देवी सरस्वती को नमन कर उनसे प्रेरणा ग्रहण करे, यह मूल भावना होती है। तत्पश्चात् शिक्षा के उपकरणों-दावात्-कलम, पट्टी या कॉपी-कलम का पूजन कर इन्हें वेदमन्त्रों से अभिमन्त्रित किया जाता है। बालक जो भी लिखे वह सुलेख हो तथा श्रेष्ठतम हो, इस भावना से यह पूजन होता है। विद्या देने वाले गुरु का तत्पश्चात् विद्यार्थी प्रणाम व अभिवादन करता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो भी बालक पढ़े वह सार्थक बने, वह एक श्रेष्ठ मानव बने, इस भावना से गुरु (अध्यापक) छात्र को अपने हाथ से कलम पकड़कर पंचाक्षरी गायत्री मन्त्र (ॐ भूर्भुवः स्वः) पट्टी या कॉपी पर लिखवाते हैं। उन पर अक्षत छुड़वाकर बालक को तिलक लगाकर आशीर्वाद देते हैं। जब तक यह क्रम विद्यारम्भ का रहा, तब श्रेष्ठ विद्यार्थी, आरुणि-श्वेतकेतु—सत्यकाम जैसे शिष्य जन्म लेते रहे। आज की शिक्षा तो उदरपूर्णा बाली, व्यक्ति को कुसंस्कारी भ्रष्ट बनाने वाली एक उद्योग-आजीविका प्रधान बन गई है। विद्यारम्भ के साथ यदि बच्चा अगले सोपान में प्रवेश करता है तो निश्चित ही सुसंस्कारों को धारण करता हुआ श्रेष्ठ लोकसेवी नागरिक बनता है।

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार के साथ शिखा की तथा *यज्ञोपवीत* (उपनयन) के साथ सूत्र की स्थापना को भारतीय संस्कृति का हिन्दुत्व का आधार माना जाता है। जहाँ शिखा संस्कृति की गौरवपताका की प्रतीक है, वहाँ सूत्र विशिष्ट संकल्पों व व्रतों का प्रतीक हैं। दोनों ही संस्कार बड़े महत्त्वपूर्ण व शिक्षा-प्रेरणा से भरे हुए हैं।

चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार जन्म के पश्चात् प्रथम वर्ष के अन्त अथवा तृतीय वर्ष की समाप्ति के पूर्व सम्पन्न होता है। पुरातनकाल से ही ऋषियों की यह मान्यता है कि मनुष्य न जाने कितनी योनियों में भटकता हुआ पाशविक संस्कार-विचार-मनोभाव धारण करता हुआ मानव योनि को प्राप्त होता है। इन अनुपयुक्त अवांछनीय संस्कारों के निष्कासन बालक को सही मानसिक विकास हेतु अनिवार्य है। नरपशु-नरकीटक से नर-मानव, देवमानव में परावर्तन हेतु यह प्रतीक संस्कार सम्पन्न किया जाता है। मुण्डन सदैव किसी तीर्थ स्थान या देवस्थल पर किया जाता है। ताकि सिर से उतारे गये बालों के साथ निकले कुसंस्कारों का तीर्थ चेतना द्वारा शमन हो सके तथा सुसंस्कारों की स्थापना हो सके। आश्वलायन गृह्यसूत्र के अनुसार चूड़ाकरण से दीर्घ आयु प्राप्त होती है। बालक सुन्दर तथा कल्याणकारी कार्यों की ओर प्रवृत्त होने वाला बनता है **(तेन त ऽ आयुषे वपामि सुश्लोक्याय स्वस्तये**—आ. गृ. सू. १/१७/१२)। आयुर्वेद के आचार्य चरक के अनुसार केश, श्मश्रु (दाढ़ी,-मूँछ) तथा नखों के काटने तथा प्रसाधान से पौष्टिकता, बल, आयुष्य, शुचिता व सौन्दर्य की प्राप्ति होती है, अतः यह संस्कार अवश्य कराना चाहिए व आगे समय, समय पर केशकर्तन कराते रहना चाहिए।

शिखा की स्थापना इस संस्कार का महत्त्वपूर्ण अंग है, मुण्डन व शिखास्थापन संस्कार अलग-अलग न होकर एक साथ भी होते हैं। शिखा गायत्री की धर्मध्वजा की प्रतीक है अर्थात् बालक आजीवन प्रज्ञा-विवेक के अधीन रहकर कार्य करे। प्राचीनकाल में जब लोग कोई प्रतिज्ञा करते थे तो शिखा को स्पर्श करके करते थे। चाणक्य के सम्बन्ध में तो विख्यात है कि उन्होंने जब तक नंदवंश का नाश न हो जाये—विराट भारत का उनका स्वप्न साकार न हो जाय शिखा में गाँठ न लगाने की प्रतिज्ञा की थी। शिखा पवित्र, शुभ, बुद्धिमत्तापूर्वक आरम्भ किये गए प्रयासों की प्रकारान्तर से एक प्रेरणा प्रतीक है जो आदि काल से रहती चली आयी है। शिखा वाला स्थान मस्तिष्क का हृदय कहा गया है। ब्रह्मरन्ध्र यहीं पर होता है तथा वैज्ञानिक दृष्टि से द्विदलीय आज्ञा चक्र भी यहीं होता है। पीनियल ग्रन्थि, जो बालक को किशोरावस्था तक ले जाती है तथा हारमोन्स द्वारा हर आयु में व्यक्ति के चिन्तन का क्रम निर्धारित करती है यहीं होती है। ऐसे मर्म स्थान को सुरक्षित रखने के लिए बालों के गुच्छे के रूप में शिखा रखी जाती है। परोक्ष चेतना से ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए साधक इसी स्थान से विचार संप्रेषण करते हैं। इस तरेह शिखास्थापन हर दृष्टि से एक विज्ञान सम्मत व शारीरिक-मानसिक के लिए अनिवार्य क्रम है। शिखा स्थान पर बालों का गुच्छा व्यक्ति की कामुक भावनाओं पर नियन्त्रण करने में मदद करता है तथा मनोबल बढ़ाता है। चूड़ाकर्म तो बाल्यकाल में भी होता है किन्तु शिखास्थापन जिसमें आसपास के बाल छँटवाकर स्पष्ट शिखा हो, यह उपक्रम आयु के किसी भी सोपान पर कभी भी सम्पन्न कराया जा सकता है।

मुण्डन विधान में बालक के बालों को गौ दुग्ध-दही में भिगोकर ब्रह्मा, विष्णु व महेश के प्रतीक के रूप में तीन गुच्छों में कुश तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कलावे से पहले बाँधते हैं। दूध-दही से केश परिमार्जन की प्रेरणा यह है कि शुभ देवशक्तियाँ सदैव मस्तिष्कीय तन्त्र का स्पर्श करें। सिर के पिछले हिस्से के दायीं ओर ब्रह्मग्रन्थि, पिछले हिस्से के बायीं ओर विष्णु ग्रन्थि तथा सामने की ओर के केशों को रुद्रग्रन्थि बन्धन में बाँधते हैं। तीनों ही देवशक्तियों की विशेषताएँ निर्माणात्मक पोषक-संचालनात्मक तथा आसुरी-अकल्याणकारी शक्तियों को मिटाने की प्रक्रिया इस बन्धन से सम्पन्न हो रही है, यह भावना की जाती है। छुरा जिससे बालों को हटाया जाना है, कुसंस्कारों को मिटाने वाला एक उपकरण है अतः इसमें सुसंस्कारों की प्रतिष्ठापना हेतु उसका भी पूजन होता है इसके पश्चात् एक-एक ग्रन्थि को मन्त्रोच्चारण के साथ काट देते हैं। गायत्री मन्त्रों से आहुति के पश्चात् पाँच विशेष आहुतियाँ मिष्ठान्न के साथ दी जाती हैं। यज्ञशाला से बाहर मुण्डन कर बालों को गोबर में रख कर जमीन में गाड़ दिया जाता है। अवांछनीयताएँ इसी प्रकार अपने पास से हटा दी जायें, यह भावना इसमें होती है। शिखा के पूजन के साथ यज्ञाचार्य मुण्डन किये मस्तिष्क पर स्वस्तिक या ॐ शब्द चन्दन अथ्वा रोली से लिखते हैं। यह समग्र संस्कार पाशविकता के कुसंस्कारों से छुटकारा दिलाने तथा श्रेष्ठता की स्थापना के निमित्त सम्पन्न किया जाता है।

यज्ञोपवीत अथवा उपनयन संस्कार से आशय है आचार्य द्वारा ब्रह्मचारी को अपने संरक्षण में लेना। सूत्र की हृदय क्षेत्र पर स्थापना के साथ ही बालक को विशिष्ट संकल्पों-व्रतों से, ९ लड़ों में गायत्री मन्त्र की प्रेरणा से बाँध दिया जाता है। यज्ञोपवीत व शिखा धारण करने का कितना महत्त्व प्राचीनकाल में था, उसका परिचय इस सूत्र से मिलता है—

"विशिखो व्युपवीतश्च यत् करोति न तत् कृतम्"

(देवल वी. मि. सू. / १)

अर्थात्—"यज्ञोपवीत व शिखा के बिना धार्मिक संस्कारों का अनुष्ठान न करने के समान है।" यज्ञोपवीत धारण के साथ ही मनुष्य का दूसरा जन्म हुआ माना जाता है। जन्म से मनुष्य पशु ही है। माँ के गर्भ से लेकर अब तक जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार ही उस पर हावी रहे हैं। अब उसे संस्कार द्वारा द्विजत्व (दूसरा जन्म) दिया जाय ब्रह्मण बनाया जाय, यही भावना ऋषियों की इस संस्कार के मूल में थी। **(जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते)**

यज्ञोपवीत व्रत बन्धन है। इस प्रक्रिया के एक-एक कर्मकाण्ड में महत्त्वपूर्ण प्रेरणायें छिपी पड़ी हैं। सामान्यतः ८ से १० वर्ष की आयु में यह सम्पन्न कर दिया जाता है। यज्ञोपवीत में ९ धागे होते हैं, जो नौ गुणों के प्रतीक हैं। विवेक, पवित्रता, बलिष्ठता, शान्ति, साहस, स्थिरता-धैर्य कर्त्तव्यनिष्ठा, समृद्धि व सामूहिकता के ९ गुणां को गायत्री की मूर्तिमान प्रतिमा के रूप में कन्धे पर हर समय धारण किया जाता है। यज्ञ पिता को कन्धे पर व गायत्री माता को हृदय पर एक साथ इस प्रतीक सूत्र के माध्यम से धारण किया जाता है। इस संस्कार के आरम्भ में ब्रह्मचर्य पालन के प्रतीक के रूप में मेखला-कोपीन धारण करायी जाती है। कुदृष्टि से बचने तथा संयम का पालन करने के व्रत के रूप में बालक इन्हें धारण करता है। मेखला से अर्थ है कटिबद्ध होकर जीवन के अगले सोपान पर चल पड़ना। इसके पश्चात् ब्रह्मचारी बालक को आचार्य दण्ड प्रदान करते हैं। दण्ड इस भावार्थ के साथ कि अनीति के सामने कभी सिर न झुकायेंगे, आदर्शवादी सदैव संगठित बने रहेंगे। देवप्रतिमा के रूप में यज्ञोपवीत को हाथ में लेकर पूजन तथा उसमें देवत्व के समावेश की भावना की जाती है। तत्पश्चात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यज्ञ एवं सूर्य इन पाँच देवशक्तियों की साक्षी में क्रमशः आत्मबल, समृद्धि, सुव्यवस्था, परमार्थ एवं पराक्रम इन गुणों को अपने अन्दर समाहित करने की भावना के साथ यज्ञोपवीत में इन शक्तियों का आव्हान किया जाता हे। इसके पश्चात् मन्त्रोच्चारण के साथ सूत्र को कंधे पर धारण किया जाता है। पाँच यज्ञोपवीत धारी मिलकर उसे यह पहनाते हैं व आश्वासन देते हैं कि श्रेष्ठ कार्यों में हम तुम्हारे साथ हमेशा रहेंगे। सविता देवता व त्रिपदा की शक्तिधारी गायत्री के पूजन के साथ यह क्रम सम्पन्न होता है।

भारतीय संस्कृति लिंग, जाति, वर्ण किसी भी प्रकार के भेद के बिना सबको यज्ञोपवीत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिये जाने की बात कहती है। स्त्रियाँ भी यज्ञोपवीत पहनती थीं तथा शुद्र कहे जाने वाले श्रमिक वर्ग का भी उपनयन होता था। मध्यकाल के अन्धकार युग में कई प्रदूषण संस्कृति मात्रा में जुड़े। उनमें यह भी था कि मात्र पुरुषों का यज्ञोपवीत हो व शूद्रों-स्त्रियों का न हो। गायत्री परिवार ने मानव मात्र के लिए यज्ञोपवीत का प्रावधान कर जाति-भेद के नाम पर कलंक मिटाया व सबको ब्राह्मणत्व के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया, जो कि नवयुग की आधारशिला रखने की दृष्टि से जरूरी था।

विवाह संस्कार दो आत्माओं की पवित्र बन्धन प्रक्रिया है। अथर्ववेद कहता है—**"समाने योकत्रे सह वो युनज्मि"** प्रेम की अदृश्य डोरी में बँधे एक जुए में जुते दो बैलों से वर-वधू की उक्ति दी गयी है। इसमें दो प्राणी अपना पृथक् अस्तित्व समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई बनकर एक परिवार संस्था की नींव डालते हैं। वासना का दाम्पत्य जीवन में तुच्छ व गौण स्थान है, प्रधानता तो दो आत्माओं के मिलने से उत्पन्न उस महती शक्ति का निर्माण करना है, जो दोनों आत्माओं के लौकिक व पारलौकिक जीवन के विकास में सहायक सिद्ध हो सके।

आज के विवाह "कामज" विवाह हैं—वासना प्रधान हैं। सुन्दरता, असुन्दरता, वेशविन्यास, धन समृद्धि यही कसौटी चयन की रह गयी है, कहीं भी संस्कारों का प्राधान्य नहीं है। विवाह के साथ जुड़ी तड़क-भड़क अपव्यय का प्रदर्शन दहेज-बारात आदि की विकृतियों ने समाज में आज एक ऐसा संकट पैदा कर दिया है, जिससे सद् गृहस्थ निर्माण का तन्त्र ही समाप्त हो गया। जो पवित्र बन्धन यज्ञाग्नि की साक्षी में सबके समक्ष प्रतिज्ञा की घोषणा के साथ सम्पन्न होता था, उसका विकृत रूप ही चारों ओर दिखाई देता है। मूल प्राण कहीं चला गया, कलेवर नाना रूपों में, थोड़े रूपों में सामने विद्यमान है। वासना के बन्धन से जुड़े, धन के सौदे से जुड़े नर-नारी से कैसे आशा की जाय कि सुसंतति पैदा होगी। विवाह संस्कार सारे समाज के एक सुव्यवस्थित तन्त्र का मेरुदण्ड है। परम पूज्य गुरुदेव ने इसमें समायी विकृतियों का निवारण कर आदर्श विवाहों का प्रचलन कर परिवार निर्माण के क्षेत्र में जो प्रक्रिया आरम्भ की उसकी कोई सानी शताब्दी में नहीं है।

विवाह यज्ञाग्नि की साक्षी में दो आत्माओं की एक प्रकार से वेल्डिंग प्रक्रिया है। वर सत्कार से लेकर नैवेद्य, मधुपर्क एवं विवाह की घोषणा, मंगलाचरण से लेकर कन्यादान, वर द्वारा मर्यादा स्वीकार किया जाना, पाणिग्रहण-ग्रन्थिबन्धन तथा वर-वधू की प्रतिज्ञायें विशेषाहुति के साथ यज्ञ के बाद शिलारोहण, लाजाहोम एवं अग्नि की परिक्रमा (भाँवरें), सप्तपदी आश्वत्सना तथा अन्त में सिंदूरदान से लेकर अभिषेक सिंचन यह सभी कर्मकाण्ड महत्त्वपूर्ण प्रेरणा व शिक्षण से भरे पड़े हैं। ये सभी उपक्रम दाम्पत्य जीवन को घनिष्ट आत्मीयता के सूत्र में बाँधने वाले, उपार्जन आदि भौतिक आवश्यकताओं का कर्त्तव्य बोध कराने वाले तथा उठने वाली समस्याओं के निराकरण का प्रशिक्षण देने वाले हैं। जब यह उपक्रम चलता था, तब दाम्पत्य जीवन में वस्तुतः प्यार व आत्मीयता का भाव-संवेदना से भरा जीवन जिया जाता था। आज की तरह विग्रह-कलह, तलाक जैसी स्थितियाँ नहीं आती थीं। ऐसे दम्पत्तियों के बच्चे भी प्रतिभासम्पन्न होते थे। आज विवाह संस्था का विकृत रूप सामने है, इसी कारण आस्था संकट की विपत्ति आ खड़ी हुई है। विवाहों को आध्यात्मिक धार्मिक परिवेश देने हेतु ही विचारक्रान्ति अभियान शांतिकुंज द्वारा आदर्श विवाहों की एक लम्बी श्रृंखला चलाई जा रही है व सद्गृहस्थों के निर्माण का तन्त्र सशक्त बनाया जा रहा है।

विवाह के समान ही महत्त्वपूर्ण *विवाह दिवस संस्कार* है। वेडिंग एनीवर्सरी के नाम पर एक उपहार व कार्ड देने की प्रथा तक यह सीमित होकर रह गया है, जबकि प्रतिवर्ष एक छोटे उत्सव-समारोह द्वारा उस कर्त्तव्य बोध को जगाने की प्रक्रिया सम्पन्न की जानी चाहिए, जिसकी प्रतिज्ञा विवाह के समय ली गई थी। यह लाइसेंस के नवीनीकरण की प्रक्रिया के समान है। यदि यह भावनात्मक वातावरण में, आध्यात्मिक संस्कार के रूप में उपस्थित इष्ट मित्रों के साथ मनाया जाय तो अनेकों को वैसा जीवन जीने की प्रेरणा मिल सकती है। विवाह दिवस विवाह संस्कार के संक्षिप्त संस्करण के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप में ही मनाया जाता है। षट्कर्म के पश्चात् संकल्प घोषणा, देवपूजन आदि के बाद ग्रन्थि बन्धन-पाणिग्रहण वर-वधू की प्रतिज्ञायें सप्तपदी तथा आश्वत्सना यह उपक्रम व्याख्या के साथ सम्पन्न होता है। दीपयज्ञ के पश्चात् पति-पत्नी एक-एक दीपक हाथ में लेकर संज्ञान सूक्त उच्चारण के साथ दोनों ज्योति मिलाकर एक कर भाव यह करते हैं कि इसी तरह हमारा व्यक्तित्व एक रहेगा।

शरीर का अवसान होने पर भी देवसंस्कृति यज्ञीय आदर्शों के अनुरूप जीवन की समाप्ति यज्ञ के साथ करने की प्रेरणा देती है। मरण होने *अन्त्येष्टि संस्कार* षोडस संस्कार में अन्तिम संस्कार माना गया है। स्वजनों के शोक को यज्ञायोजन की व्यवस्था में मोड़कर संस्कार सम्बन्धी प्रेरणाओं द्वारा जीवन दर्शन समझाना भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है। अन्यान्य धर्मों में तो शरीर को जमीन में गाड़ दिया जाता है किन्तु इस देह को जिसमें से आत्मा कहीं और जा चुकी है, सम्मान के साथ अग्नि को समर्पित कर पंचभूतों में मिला देने की वैज्ञानिक दृष्टि से इंसीनरेशन की यह प्रक्रिया मात्र देवसंस्कृति की ही विशेषता है। मात्र लकीर पीटने तक न सीमित कर इस संस्कार को यदि विधिपूर्वक किया जाय तो इससे मृतात्मा को तो सद्गति मिलती ही है, भावनात्मक वातावरण ऐसा बनता है, जिससे अन्यों को श्रेष्ठ जीवन के आदर्शों को जीवन में उतारने की प्रेरणा भी मिलती है।

शव को नहला धुलाकर शैय्या तैयार करके, संकल्प, पिण्डदान करके उसे शैय्या पर रखकर श्मशान यात्रा पुष्प वर्षा से आरम्भ की जाती है। जीवन अनन्त है। एक पड़ाव के रूप में यह जीवधारी इस योनि में आया था, इस भाव के साथ जीवात्मा को सद्गति देने तथा कायागत पंचतत्वों को पंच महाभूतों में मिलाने के लिए यज्ञीय कर्मकाण्ड अन्त्येष्टि यज्ञ के रूप में सम्पन्न किया जाता है। पाँच पिण्ड यथा समय निर्धारित स्थान पर रखे जाते हैं। शरीरगत संकीर्ण मोह से उबारने के लिए मृतक के हिस्से के साधनों का यह अर्पण है। भूमि संस्कार के पश्चात् समिधायें शव के चारों ओर रखी जाती हैं। पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, इस क्रम से चारों ओर से चार मर्यादाओं में बाँधा जाता है। तत्पश्चात् चिता सजाकर अन्तिम पाँचवा पिण्ड देकर शरीर यज्ञ आरम्भ हो जाता है। गायत्री यज्ञ की तरह ही पूरा कर्मकाण्ड होता है। हवन सामग्री की सात आहुतियाँ गायत्री मन्त्र के साथ फिर १६ आहुतियाँ शरीर के, व्यक्तित्व के प्रत्येक अंश को यज्ञमय बनाने की घोषणा के साथ पूर्ण की जाती हैं। शरीर के पाँचों तत्त्व श्रेष्ठतम गति को प्राप्त हों, इस भाव से सत्रहवीं आहुति देते हैं। सामूहिक जप द्वारा सभी मृतात्मा की शान्ति की प्रार्थना करते हैं। कपाल क्रिया के साथ पूर्णाहुति की जाती है। कपाल क्रिया संकुचित विचारों की सीमा से विराट समष्टि में जा मिलने का प्रतीक है, अस्थियाँ चिता शान्त होने पर तीसरे दिन उठाई जाती हैं तथा पवित्र सरोवर या सरिता में उन्हें मन्त्रोच्चारण के साथ प्रवाहित कर दिया जाता है। वस्तुतः इस समग्र संस्कार द्वारा उसमें भाग लेने वाले तथा स्वजन-परिजन सभी मानव जीने की क्षण भंगुरता का अनुभव कर स्वयं को सुपथगामी बनाने की प्रेरणा लेकर जाते हैं।

भारतीय संस्कृति यह मानती है कि जीवन मृत्यु के साथ ही समाप्त नहीं हो जाता। जब एक जन्म पूरा करके जीव अगले विकासक्रम की ओर उन्मुख होता है, तो कामना की जाती है कि इस जीवात्मा का अगला जीवन पिछले जीवन की अपेक्षा अधिक संस्कारवान बने। *मरणोत्तर संस्कार श्राद्ध-कर्म* इसलिए सम्पन्न कराये जाते हैं। ऋषि गण यह सत्य भली भाँति जानते थे कि मोह और आसक्ति में पड़ा मन जिस तरह अपनी प्रिय वस्तु के चारों ओर चक्कर काटता है, इसी तरह मृतात्माएँ भी प्रायः उसी परिवेश में भटकती रहती हैं। दिवंगत आत्मा को सद्गति मिले, इस दृष्टि से श्रद्धापूर्वक वैराग्यपूर्ण वातावरण बनाकर श्राद्धसंस्कार सम्पन्न किया जाता है। अन्त्येष्टि से तेरहवें दिन श्राद्धकर्म किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह संस्कार पितृपक्ष में अथवा देहावसान दिवस पर किये जाने वाले श्राद्ध के रूप में भी कराया जाता है। शान्तिकुंज में श्राद्ध-तर्पण को निःशुल्क भावनापूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराने की विशेष व्यवस्था है। साथ ही पुरोहितों के शिक्षण का भी तन्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है ताकि वे शक्तिपीठों प्रज्ञा संस्थानों विभिन्न तीर्थों में अपने बलबूते यह संस्कार सम्पन्न करा सकें। मृत्युभोज-खर्चीली रस्म-पगड़ी आदि की परम्परा को इस मिशन ने आमूलचूल मिटाकर मात्र भावनापूर्ण शिक्षण प्रधान संस्कार कृत्य द्वारा ही यह कर्म सम्पन्न किये जाने का प्रचलन पूरे विश्वभर में चलाया है।

इस संस्कार में यम एवं पितृ आव्हान कर उसका पूजन कर तर्पण किया जाता है। तर्पण तृप्ति के लिए किया जाता है। पितरों का सूक्ष्म शरीर शुभ कर्मों से उत्पन्न सुगन्ध का रसास्वादन करके ही तृप्ति अनुभव करता है। श्रद्धा भरे वातावरण के सान्निध्य में पितर अशान्ति से मुक्ति पाकर तृप्ति पाते हैं। जल में जौ, तिल, चावल, दूध, फल जैसी माँगलिक वस्तुएँ डाल देते हैं। कुशाओं के सहारे जौ की छोटी-सी अंजलि मन्त्रोच्चार पूर्वक डालने मात्र से पितरों की तृप्ति हो जाती है। पूरे कर्मकाण्ड में पितरों—दिवंगत आत्माओं के उपकारों का स्मरण कर उनके सद्गुणों के प्रतिश्रद्धा व्यक्त की जाती है। श्रद्धा जितनी प्रबल होगी पितरों के अनुदान भी हमें उतना ही मिलेंगे। देवऋषि, देवमानव, देव-पितृ, यम, मनुष्य तथा अन्त में भीष्मतर्पण भीष्म जैसे परमार्थ परायण के प्रति श्रद्धा के भाव से किया जाता है। इसके पश्चात् पंचयज्ञ सम्पन्न करते हैं। ये हैं पितृयज्ञ (पिण्डदान द्वारा), भूतयज्ञ (पंचबलि द्वारा), मनुष्य यज्ञ। (दान आदि का संकल्प), देवयज्ञ (सत्प्रवृत्ति संवर्धन हेतु देव दक्षिणा) तथा ब्रह्मयज्ञ (गायत्री विनियोग)। इस क्रम से करके पिण्ड विसर्जन, पितृ विसर्जन व देव विसर्जन के साथ प्रक्रिया का समापन होता है।

एक अन्तिम महत्त्वपूर्ण संस्कार आत्मबोध के लिए वर्ष में एक बार मनाया जाने वाला जन्म-दिन संस्कार है। मोमबत्तियाँ जलाकर उन्हें बुझाकर केक काटना व एक महँगे प्रीतिभोज में अपनी सम्पन्नता का प्रदर्शन करना आज यह पाश्चात्य स्वरूप उसका रह गया है। किन्तु यदि देवसंस्कृति के विधान के अनुरूप यह मनाया जा सके तो मानव जीवन की गरिमा का बोध कराने वाला इससे श्रेष्ठ पर्व व दिवस और कोई नहीं है। संस्कार परम्पराओं में जोड़ा गया यह विशिष्ट संस्कार इस भावना से मनाया जाता है कि हर आत्मा में महानता को प्राप्त होने की अनन्त सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। यदि इस दिन आत्मचेतना को झकझोरा जा सके तो व्यक्ति महानता के पथ पर आरूढ़ हो सकता है। पंचतत्त्व पूजन के पश्चात् जितने वर्ष की आयु है, उतने अथवा पाँच दीपक प्रज्ज्वलित कर दीपक की तरह तिलतिल कर आदर्शों के लिए जलने की प्रेरणा ग्रहण की जाती है। दीपदान के इस उपक्रम के बाद व्यक्ति व्रत लेता है। विगत एक वर्ष का लेखा-जोखा कर अग्नि की साक्षी में वह शपथ लेता है कि अमुक दुष्प्रवृत्तियों का त्याग करूँगा, अमुक सत्प्रवृत्ति धारण करूँगा। इसके लिए देवसत्ताओं की साक्षी दी जाती है। तत्पश्चात् महामृत्युंजय मन्त्र की ५ आहुति के पश्चात् सभी पुष्पवर्षा द्वारा अपना आशीष उस व्यक्ति को देते हैं। वस्तुतः भारतीय संस्कृति का एक-एक पक्ष इतना सशक्त, गरिमापूर्ण व भाव प्रेरणाभरी शिक्षा लिए है कि इसका अनुपालन करने वाला स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करने लगता है।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन

संस्कार प्रक्रिया के पुनर्जीवन की आवश्यकता

प्राणि जगत में मनुष्य का अपना विशेष स्थान है। ऊँचा भी, असाधारण भी, वरिष्ठ भी। इसी प्रकार उसके कर्त्तव्यों और दायित्वों के साथ भी उत्कृष्टता जुड़ी हुई है; जिसे सभ्यता, सुसंस्कारिता, शालीनता आदि नामों से जाना जाता है। व्यक्तिगत नीतिनिष्ठा और सामूहिक क्षेत्र में समाज निष्ठा इसी को कहते हैं। स्वतन्त्र-स्वच्छन्द दीखते हुए भी मनुष्य वस्तुतः अनेक अनुशासनों में बँधा हुआ है। इसके लिए उच्चस्तरीय मर्यादाओं के परिपालन का अनुबन्ध है, साथ ही उन कुटेवों का निषेध भी है, जो उसकी गौरव-गरिमा को हेय स्तर का बनाते हैं।

शारीरिक समर्थता, मानसिक बुद्धिमत्ता और आर्थिक सम्पन्नता का अपना महत्त्व है। उनके आधार पर सुविधा साधन खरीदे जा सकते हैं। पर इतने से ही काम नहीं चलता। असभ्य, अशिष्ट, दुर्गुणी, दुर्व्यसनी, अनाचारी होने पर मनुष्य अपने लिए और दूसरों के लिए विपत्तियों का कारण ही बनता है, बदनाम भी होता है, सहयोग सम्मान से वंचित रहता है और स्तर की दृष्टि से गया गुजरा समझा जाता है। वानरों एवं मनुष्यों की आकृति मिलती-जुलती होने पर भी, प्रकृति में हीनता रहने के कारण वानरों की भर्त्सना ही होती है। नर पशु वे कहलाते हैं, जिन्हें कर्त्तव्यों का ज्ञान नहीं, जिन्हें अनुशासन रास नहीं आता। इसमें भी एक निकृष्ट दर्जा नर पिशाचों का है, जो भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट कार्यों में ही रस लेते और वैसा ही कुछ घिनौना करते कराते रहते हैं।

इस धरती पर मनुष्य शरीर वाले करोड़ों-अरबों हैं। असंख्यों गुजर चुके और असंख्यों अगले दिनों जन्मने की प्रतीक्षा में हैं। यदि उनमें मानवोचित उत्कृष्टता का समावेश न हो सका, तो इतना ही समझना चाहिए कि धरती के लिए भार और संसार के लिए संकट बनने के अतिरिक्त वे और कुछ कर या बन न सके। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि अपेक्षाकृत अधिक साधन-सम्पन्न होते हुए भी मनुष्य को अनगढ़ असभ्य रहना और निकृष्टता का कलंक लादकर जीना पड़े।

जन्म से अन्य प्राणियों की तरह मनुष्य भी असभ्य ही होता है। आरम्भ में असमर्थ रहने तक ही अभिभावकों का सहारा मिलना जीव जगत का प्रचलन है। समर्थ होने पर वह शरीर यात्रा चलाने भर की प्रकृति प्रदत्त कुशलता प्राप्त कर लेते हैं। पेट भरने और प्रजनन की परम्परा चलती रहने भर की कुशलता जीवों को प्राप्त होती है। अनगढ़ मनुष्य भी इतना ही कुछ कर पाता है। मानसिक दृष्टि से तनिक अधिक विकसित होने के कारण शरीरचर्या ही लोभ-मोह और अहंकार का रूप धारण कर लेती है। क्षुद्रता की यही परिधि है। मनुष्य में से अधिकांश इन्हीं सब बन्धनों में जकड़े हुए चित्र-विचित्र क्रियाएँ करते रहते हैं। ऐसी दशा में किन्हीं से ऐसा कुछ करते कदाचित ही बन पड़ता है, जिसे मानवी गरिमा के उपयुक्त कहा जा सके। कारण उसका एक ही है कि व्यक्तित्व का स्तर उत्कृष्ट बनाने के लिए जिन प्रयत्नों की आवश्यकता है, उनकी उपेक्षा होती रहती है।

शिष्टाचार अथवा सभ्य आचरण का अभ्यास कराना अभिभावकों और अध्यापकों का प्रधान कर्त्तव्य माना जाता है। पर वे भी कतिपय जानकारियों के अतिरिक्त अल्प वयस्कों के प्रति कुछ अधिक कर नहीं पाते। वातावरण भी ऐसा उपलब्ध नहीं हो पाता, जिसके प्रभाव से मनोवांछित उत्कृष्टता का अनुसरण एवं अभ्यास करते बन पड़े। आमतौर से जो सामने रहता है, जो प्रभावोत्पादक होता है, उसी का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुसरण स्वाभाविक रूप से बन पड़ता है। कला-कौशल भी विशेषज्ञों की सहायता से उपलब्ध हो जाता है। अधिक सुविधा संचय की इच्छा भी कई प्रकार की योजना बनाने एवं उन्हें पूर्ण करने के लिए पराक्रम करने का प्रोत्साहन देती है। सामान्य जनों की जीवनचर्या इसी परिधि में सटी रहती है और इसी चक्र में परिभ्रमण करते हुए अन्तिम साँसें पूरी होने की नियति आ पहुँचती है।

वस्तुतः मनुष्य असामान्य है। उसकी शरीर संरचना और मानसिक विलक्षणता ऐसी है, जिसके रहते उसे कुछ ऐसा करना चाहिए, जिससे इन उपलब्धियों की सार्थकता सिद्ध हो सके। मनुष्य भगवान का ज्येष्ठ पुत्र युवराज है, उसे स्वयं पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए पैदा किया गया है। यह दायित्व सौंपा गया है कि विश्व उद्यान को अधिक सुन्दर-समुन्नत, उत्तम-उत्कृष्ट बनाने के लिए प्रयास करे। इसी में स्रष्टा की इस अनुपम कलाकृति की सार्थकता है। शरीर निर्वाह भर की बात जहाँ तक है, वहाँ तक हर जीवधारी उतना तो किसी प्रकार कर ही लेता है। मनुष्य भी यदि उतना ही कर सके, तो समझना चाहिए कि स्थिति नरपशु जैसी दीन-दयनीय ही बनी रही। यह अलभ्य अवसर यदि ऐसा ही गुजर जाय, तो उसे दुर्भाग्य के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकेगा ?

मानवी गरिमा सुसंस्कारिता के साथ जुड़ी हुई है। इसे दूरदर्शिता, विवेकशीलता के आधार पर उपलब्ध किया जाता है। यह चेतना स्वउपार्जित भी हो सकती है और दूसरे के द्वारा अनुदान के रूप में प्रदान की हुई भी। जो भी हो, मनुष्य जीवन की सार्थकता और सराहना सुसंस्कारिता की बढ़ी-चढ़ी उपलब्धि के सहारे ही हस्तगत होती है।

आँखों से शरीर, परिवार और वस्तु जगत ही दीखता है। मस्तिष्क पर भी वे ही छाए रहते हैं। उसी क्षेत्र की सुविधा ही प्रायः हर किसी को अभीष्ट होती है। इस मानसिकता में मात्र निर्वाह ही बन पड़ता है। अन्यों की तुलना में अधिक बड़प्पन पाने की अहंता भी नशे की खुमारी जैसी छायी रहती है। इन प्रयोजनों में योजनाएँ बनती, चेष्टाएँ होती हैं, परिस्थितियाँ उभरती और घटनाएँ घटित होती रहती हैं। संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि संकीर्ण स्वार्थपरता के निर्वाह भर में, सुरदुर्लभ जीवन वरदान का पश्चाताप भरा समापन हो जाता है। वह नहीं बन पड़ता, जिसकी आवश्यकता थी। चेतना को संतोष और गौरव प्रदान कर सकने वाली नीतियाँ अपनायी जा सकती थीं। इसी शरीर से देव मानव बना जा सकता था। अपने लिए, विश्वविकास के सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन के लिए बहुत कुछ कर सकना मनुष्य के लिए सम्भव था। पर किया क्या जाय ? संकीर्ण स्वार्थपरता से आगे बढ़कर और कुछ सोचते-करते बन ही नहीं पड़ता। फिर मानवी गरिमा के अनुरूप वरिष्ठता कैसे उपलब्ध हो ?

मनुष्य भटका हुआ देवता है। उसका भटकाव यदि किसी प्रकार निरस्त हो सके, तो समझना चाहिए कि वह उस राजमार्ग पर चल सकता है, जिस पर अग्रसर होने वाला अपने लिए सन्तोष और दूसरों के लिए अभ्युदय की संरचना कर सकता है। ऐसे ही दृष्टिकोण, क्रिया कलाप एवं वातावरण का समन्वय स्वर्ग कहलाता है। स्वर्ग आसमान पर नहीं, अपने ही इर्द-गिर्द है। सन्मार्गगामी, उसे अपने ही प्रयत्नों से विनिर्मित कर सकता है। "मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।" आमतौर से वह अपने लिए सुनसान श्मशान और नरक दो ही संरचनाएँ करता रहता है। पर यदि दिशा मिले और सही राह पर सही रीति-नीति अपनाते हुए चल सकना सम्भव हो सके, तो वह भी बन पड़ सकता है, जिसमें अपने को पार करना और असंख्यों को अपनी नाव पर बिठाकर पार उतारना सम्भव हो सके।

भाषा, व्यवहार, आहार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, आचार गुण, कर्म आदि; स्वभावतः यह बातें बच्चे बड़ों से सीखते हैं। ठीक इसी प्रकार चिन्तन, चरित्र, रुचि, रुझान पर आधारित व्यक्तित्व भी किन्हीं वरिष्ठों के तत्वावधान में उपलब्ध करना पड़ता है। इसी हस्तान्तरण की प्रक्रिया को संस्कार विधान कहते हैं। देखने में यह प्रचलन सामान्य रीति-रिवाज जैसा प्रतीत होता है। पर यदि उसे सही रीति से गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न किया जा सके, तो उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभाव, परिणाम बहुत ही उपयोगी, महत्त्वपूर्ण एवं श्रेयस्कर हो सकते हैं। प्राचीन काल में इस सामान्य दीखने वाली प्रक्रिया ने, जनमानस को समुन्नत बनाने में महती भूमिका निभायी थी, व्यक्तियों को उच्चस्तरीय बनाया था और उनके द्वारा जो गतिविधियाँ अपनायी गयी थी; उनके कारण समूचा वातावरण सतयुगी प्रेरणाओं से भर गया था। सतयुग जैसी मंगलमयी परिस्थितियाँ इसी आधार पर बनी थीं। व्यक्तियों का समुदाय ही तो समाज है और परिस्थितियाँ मनः स्थिति के आधार पर ही विनिर्मित होती हैं। व्यक्तित्व भी अन्तः करण की गरिमा के अनुरूप उभरता है। स्वास्थ्य, कौशल और साधन तो बहिरंग कलेवर मात्र हैं।

मलीनता भी अहिर्निश उभरती और बरसती रहती है। इसलिए बार-बार सफाई की आवश्यकता पड़ती है। शरीर नहलाने, कपड़ों को धोने, मलमूत्र त्यागने, घर बुहारने, बर्तन माजने आदि की आवश्यकता इसीलिए पड़ती है कि जहाँ-तहाँ से आ धमकने वाली मलीनता को जमा न होने दिया जाय। उसे बार-बार स्वच्छ रखे रहा जाय। मानवी स्वभाव की स्थिति प्रायः ऐसी ही है। उस पर कषाय-कल्मषों के मैल जमते रहते हैं। यदि उनकी सफाई का नियमित उपक्रम बनाये न रखा जाय, तो फिर गंदगी का भार क्रमशः बढ़ता ही जाएगा। स्थिति बदतर होती जायेगी। इसलिए आप्तजनों ने मानसिक, आत्मिक स्वच्छता के लिए संध्या-वंदन जैसी आत्मशोधन प्रक्रिया को नित्यकर्म में सम्मिलित किया है। उसे दिनचर्या का अभिन्न अंग माना है। शर्त एक ही है कि उन विधाओं को लकीर पीटने भर के लिए न निपटाया जाय। उनके साथ भावनाओं का गहरा पुट लगा रहे और जो कुछ सोचा समझा गया है, उसे व्यवहार में उतारने के लिए भी तत्पर रहा जाय। इस आधार पर मलीनता से बचने और आन्तरिक सौन्दर्य निखारने का अवसर मिलता है। संध्या-वंदन को इसीलिए दैनिक संस्कार माना और सुसंस्कारिता संवर्धन के लिए अनिवार्य कहा गया है।

इसके अतिरिक्त नैमित्तिक संस्कार हैं, जिन्हें जीवन के हर मोड़ के साथ जोड़ा गया है। षोडश संस्कारों की परम्परा इसी दृष्टि से बनायी और चलायी गई थी। अब उसकी उपेक्षा होने लगी है, फिर भी उसे जब भी अपनाया जायगा, वह अपना चमत्कारी प्रभाव प्रदर्शित करने लगेगी। व्यक्तित्व निखारने के लिए, प्रतिभा उभारने के लिए और गरिमा का स्तर ऊँचा करने के लिए संस्कार पद्धति की उपयोगिता अभी भी यथावत् बनी हुई है। यह दूसरी बात है कि उसे उपेक्षा में डाल दिया जाय, प्रयोग में न लाया जाय, तो उसे अपना प्रभाव दिखाने का अवसर ही न मिलेगा।

संस्कार विधा की गरिमा और उपयोगिता समझने का हमें नये सिरे से प्रयत्न करना होगा। पूर्वजों की उस बहुमूल्य धरोहर को कार्य रूप में परिणत करते हुए वह लाभ उठाना होगा, जिसकी कि आज की परिस्थितियों में अत्यधिक आवश्यकता है।

संस्कार परम्परा की अवज्ञा क्यों हो चली ?

पुरातन प्रचलन में षोडश संस्कारों का उल्लेख है। उन दिनों की परिस्थितियों के अनुरूप सोलह बार हर व्यक्ति को सुसंस्कारित करना सम्भव था। भौतिक जीवन उतना व्यस्त नहीं था। अध्यात्म प्रसंगों में गहरी रुचि थी। बचे समय का, धर्म प्रयोजनों में खर्च करना सुहाता भी था। इसलिए जीवन के हर मोड़ पर एक संस्कार आयोजन करते भी बन पड़ता था। इसके अतिरिक्त एक और भी सुविधा थी कि निस्पृह पुरोहित इसके लिए जन-जन को प्रोत्साहित भी करते रहते थे। वे सर्वत्र उपलब्ध भी रहते थे। वे कर्मकाण्डों को खर्चीला और अनावश्यक भाग-दौड़ के झंझटों से भरा भी नहीं बनने देते थे। अतएव उस कृत्य के लिए जन-जन का सहयोग भी मिलता था। एक की देखा-देखी दूसरे का उत्साह बढ़ता था और संस्कार परम्परा का क्रियान्वयन घर-घर में दीख भी पड़ता था।

अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं— आवश्यकताओं और महत्त्वाकांक्षाओं की अभिवृद्धि ने जीवनयापन भारी बना दिया है। खर्चीला लोकाचार और मँहगाई की भरमार ने भी व्यस्तता को बढ़ाया है। इसलिए समयाभाव रहना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वाभाविक है। कटौती धार्मिक प्रयोजनों से ही होती है। उस सन्दर्भ में कुछ पढ़ते, सुनते, सोचते और करते भी नहीं बन पड़ता। प्रचलन भी वैसा नहीं है, जो उस दिशा में प्रोत्साहित करे। लोगों पर शारीरिक-मानसिक थकान छायी रहती है, जिससे स्फूर्ति भी नहीं रहती। खाली बैठने, सुस्ताने को मन करता है, इसलिए समय का बहुत बड़ा भाग ऐसे ही अस्त-व्यस्तता में गुजर जाता है।

फुरसत का समय प्रायः हल्के मनोरंजन में बीतता है। ताश, शतरंज से लेकर रेडियो, टेलीविजन के ऐसे प्रचलन चल पड़े हैं कि बचा हुआ समय धार्मिक-आध्यात्मिक प्रयोजनों की अपेक्षा उन्हीं में लगाने को जी करता है। प्रचलन भी वैसा ही बढ़ रहा है। ऐसी दशा में संस्कार प्रयोजन जैसे धर्म-कृत्यों की ओर से अरुचि होना स्वाभाविक है।

संस्कार मात्र कर्मकाण्ड के क्रिया-कृत्य करने मात्र में समाप्त नहीं होते। आयोजन समारोह में तो मार्गदर्शन, दिशा-निर्देशन मात्र होता है। उन संकेतों को क्रियारूप में उतारने के लिए परिस्थितियों के अनुरूप बहुत कुछ सोचने की और करने की आवश्यकता पड़ती है। वह प्रक्रिया भी समय माँगती है, उसे न लगाया जाय, तो कर्मकाण्डों की प्रक्रिया चिह्न-पूजा मात्र बनकर रह जाती है। लकीर पीटने भर से कोई बड़ा प्रयोजन सिद्ध नहीं होता—यह तथ्य भी सर्वविदित है। यही कारण है कि संस्कार प्रयोजनों के प्रति उत्साह घट रहा है और प्रचलन भी समाप्त होता चला जा रहा है।

इस सन्दर्भ में एक और बड़ी कठिनाई है—पुरोहित वर्ग की कमजोरी। कर्मकाण्ड जटिल उपचारों से भर गये हैं। उनके लिए खर्चीले साधन जुटाने पड़ते हैं और कई प्रकार की वस्तुएँ एकत्रित करने के लिए दौड़-धूप करनी पड़ती है। दान-दक्षिणा अनिवार्य है। वह भी उतने से काम नहीं चलता जितनी कि यजमान की अभिरुचि, श्रद्धा या स्थिति कर देती है। ऐसी दशा में संस्कार जैसे कर्मकाण्डों को आर्थिक दबाव और समय नियोजन के साथ जोड़कर देखने पर उसका स्वरूप ऐसा बन जाता है, जिसके कारण संस्कार कराने का उत्साह भी ठण्डा पड़ जाता है।

एक और भी कुप्रचलन हमारे धर्म-कृत्यों के साथ जुड़ गया है, वह प्रीति भोज की अनिवार्यता की तरह जुड़ जाना। जिन्हें उस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया है, उन्हें समग्र प्रीति भोज अथवा ऐसे जलपान में सम्मिलित होना पड़ता है, जो लगभग खर्चीले भोजन जितना ही महँगा जा बैठता है। बात मेहमानों तक ही सीमित नहीं है, घर परिवार के लोग तथा पड़ोसी-सम्बन्धी भी सम्मिलित करने पड़ते हैं। यह एक बड़ी खर्चीली परिपाटी हर उत्सव के साथ जुड़ गई है। इसलिए उन्हें करने का साहस सहज ही कर सकना हर एक की स्थिति से बाहर हो जाता है।

संस्कारों का महत्त्व क्या है ? उनके माध्यम से किसे क्या शिक्षा दी जाती है ? उन्हें क्या जिम्मेदारी निबाहने के लिए अनुबन्धित किया जाता है ? संस्कार में सम्मिलित जनों में से किसे, किस प्रकार कुछ करना चाहिए ? इन सब का तर्क और तथ्य-पूर्ण प्रशिक्षण इस अवसर पर होना चाहिए। देव आवाहन वाले कर्मकाण्ड को सम्पन्न करते हुए भाव-श्रद्धा जगायी जानी चाहिए और उपस्थित जनों को ऐसी भाव संवेदना से अनुप्राणित किया जाना चाहिए, जिससे वे न केवल संस्कार प्रक्रिया को सार्थक बनाने में योगदान करें, वरन् अपने आपको भी भविष्य में अधिक श्रेष्ठ समुन्नत बनाने के लिए प्रयत्नरत बने रहें। संस्कार समारोह का वातावरण ऐसा भावनापूर्ण होना चाहिए, जिसके सम्पर्क में आकर श्रेष्ठता उभरे और निकृष्टता के उन्मूलन की स्थिति बने। ऐसे आयोजन के आधार पर उन लोगों को भी यह रीति-नीति अपनाने का अवसर मिलता है, जो इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हैं। कुछ लोगों से आरम्भ हुए इस लोकशिक्षण को अधिक व्यापक होने का अवसर मिल सकता है। सत्प्रयोजन हमारे विचार विनिमय, परामर्श-प्रेरणा, आदान-प्रदान के मुख्य विषय रहें, यह प्रेरणा संस्कार प्रक्रिया घर-घर चलते रहने पर व्यापक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती है। सर्वतोमुखी प्रगति का यह अच्छा माध्यम है।

इन दिनों संस्कार, देवपूजन के अटपटे माध्यम बनकर रह गये हैं। देवता, जिनके आवाहन-परितोष के लिए बहुविध सरंजाम जुटाया जाता है, उनके सम्बन्ध में कुछ सुनिश्चित धारणा पूजा-अर्जन कराने वालों के मन में बैठ नहीं पाती। जिसकी सत्ता और महत्ता के सम्बन्ध में पूरा विश्वास न हो, उसकी पूजा भी विडम्बना, लकीर पीटना मात्र बनकर रह जाती है। अच्छा होता कुछ पूजा अर्चना कराने से पूर्व पुरोहित सर्वसाधारण को यह बताते कि जिस सत्ता को मनुहार, उपहार दिये जा रहे है, वह आखिर है क्या ? और इस प्रतिमा पूजा से उनकी प्रसन्नता का क्या सम्बन्ध हैं ? यदि उस स्तर का समाधान हो गया होता, तो लोग इस सन्दर्भ में श्रद्धा, विश्वास परिपुष्ट करते और ऐसे कदम उठाते, जिनकी कुछ बुद्धि-सम्मत उपयोगिता समझी जाती।

शरीर को, संसार को विविध आकार-प्रकार देने वाले पाँच तत्व हैं। अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश को प्रधान पंच देव माना गया है। इनका सम्मान उनके सदुपयोग से बन पड़ता है। देव-पूजा का प्रतीक कृत्य कुछ भी क्यों न हो, पर उसका व्यावहारिक स्वरूप यही होना चाहिए कि इस पदार्थ सम्पदा का कब, कहाँ, किस स्थिति में क्या सदुपयोग किया जाय ? दुरुपयोग से कैसे बचा जाय ? चेतना क्षेत्र में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार (आत्म सत्ता) यह प्रधान हैं। इसी प्रकार ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ भी दैनिक प्रयोजन में काम आने वाली बोध प्रदायिनी हैं। अनुशासन, संयम, श्रम, उत्साह, साहस एवम् अन्यान्य सद्गुण भी देवता हैं। उनका अनुग्रह प्राप्त करने के लिए, उनकी उपलब्धियों का विवेकपूर्ण उपयोग करना पड़ता है। ईश्वर, जीव और प्रकृति की व्याख्या उत्पादन, अभिवर्धन और परिवर्तन रूप में की जा सकती है। बुद्धिमत्ता, सरस्वती, बलिष्ठता-दुर्गा, सम्पन्नता-लक्ष्मी है। इसी प्रकार अन्यान्य देवी-देवताओं की व्याख्या करने से बात बन जाती है। यह प्रतिपादन सार्वभौम हो जाता है। मनुष्य मात्र को ऐसा शिक्षण दे सकना सम्भव है कि वह किस प्रकार अपने साधनों का श्रेष्ठतम उपयोग कर दिखाये और उसका सत्परिणाम हाथों-हाथ पाये।

पूजन में पंचोपचारों का प्रयोग होता है। जल, गन्धाक्षत, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य आदि को अर्चना में प्रयुक्त किया जाता है। इन सभी वस्तुओं का सत्प्रयोजनों के साथ ठीक प्रकार तालमेल बैठ जाता है। जल-श्रद्धा का, शान्ति-शीतलता का प्रतीक है। चन्दन जैसा सुगन्धित, हितकारी व्यक्तित्व ही भगवान को प्रिय है। अक्षत-अटूट निष्ठा का और पुष्प प्रफुल्लता, सौन्दर्य का प्रतीक है। धूप-दीप अपनी श्रेष्ठ क्षमताओं को प्रज्ज्वलित करके वातावरण को सुरभित और प्रकाशित करने का द्योतक है। नैवेद्य अपने साधन आजीविका का एक अंश ईश्वरार्थ-सत्कार्यों के लिए अर्पित करने का, कुधान्य न खाने-संस्कार युक्त अन्न ही ग्रहण करने का प्रतीक है। नमस्कार अर्थात् नम्रता, विनयशीलता। इसी प्रकार पूजा उपचारों-संस्कार कर्मकाण्डों के क्रिया-कृत्यों के साथ जुड़ी भावनाओं को उभारा जाता रहे, तो उपस्थित जनों में अपेक्षाकृत अधिक उत्कृष्टता अपनाने के लिए प्रेरणा-प्रोत्साहन प्राप्त होता रह सकता है।

मध्यकालीन देव-पूजन विवादास्पद भी है और ऐसा जटिल भी कि उससे उपहार देने और मनुहार करने के अतिरिक्त और कुछ कर्त्तव्य बन ही नहीं पड़ता। यदि पुरातन परम्परा अपनायी गई होती, तो देवपूजन पर आधारित कर्मकाण्डों की सुविस्तृत, साधन-साध्य प्रक्रिया को उलझन भरी न बनने दिया गया होता। अनुभवी विवेकशील पुरोहित इस आधार पर लोक-शिक्षण के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते और उस सद्ज्ञान का महत्त्व समझते हुए अनेक जिज्ञासु उस क्रिया-कलाप में सम्मिलित होते। पर आज तो स्थिति उल्टी है। देखा गया है कि आज अधिक तार्किक मनुष्य को जब मात्र चिह्न पूजा की उपयोगिता नहीं दीख पड़ती, तो फिर उसकी उपेक्षा-अवज्ञा की मनः स्थिति बनने लगती है। अस्तु संस्कार प्रयोजन को तथ्यपूर्ण बनाने के लिए, उनकी उपयोगिता समझने-समझाने का अवसर उसके साथ जोड़े ही रखना होगा।

खर्चीली सामग्री के उपयोग से कर्त्ता पर आर्थिक दबाव बढ़ता है। इसलिए पूजा प्रयोजनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को यदि व्यापक बनाना है, तो उसे इतना सरल और सुलभ बनाना होगा, कि हर स्थिति का व्यक्ति बिना असमंजस में पड़े उसे अपना सके। गरीब-अमीर सभी में उसे करने के लिए साहस उभर सके। पौरोहित्य का कर्म अब विज्ञजनों द्वारा मिल-जुल कर सम्पन्न किया जाना चाहिए। इससे किसी का एकाधिकार न रहेगा। निहित स्वार्थों को उल्लू सीधा करने का अवसर न मिलेगा। दान-दक्षिणा अनिवार्य न होगी। किसी पुनीत कार्य के अवसर पर यदि श्रद्धापूर्वक कुछ देना है, तो उसे सत्-प्रयोजनों की अभिवृद्धि के लिए समर्पित किया जाय। समय आ गया है कि यदि देव संस्कृति को हर पक्ष में श्रद्धा भरे समुदाय के बीच प्रचलित-प्रकाशित किया जाना सम्भव हो, तो विचारशील वर्ग उस क्रिया को पूरे उत्साह के साथ सीखें और प्रस्तुत आयोजनों को सामूहिक रूप से सम्पन्न करने की विधा अपनायें। कर्मकाण्ड इस प्रकार न हों कि संस्कृतज्ञ खुद ही उनकी महत्ता पढ़ते रहें और उपस्थित जनों के लिए वह सब कुछ मात्र कौतूहल बना रहे। वे उसका तात्पर्य और प्रयोजन कुछ भी सीख-समझ न सकें।

इसके अतिरिक्त एक और बात है, आयोजन में एकत्रित होने वालों के स्वागत-सत्कार की। इन दिनों वह चाय-पार्टी जैसा तो बन ही जाता है। साधन-सम्पन्न उस अवसर पर प्रीतिभोज भी करते हैं और कई बार तो वह बहुत बड़ा तथा इतना खर्चीला भी हो जाता है कि उसे उत्साह में अपना लेने पर पीछे पछताना पड़ता है। सोचना पड़ता है कि इस आवश्यक खर्च को बचाया जा सकता था और उसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति में लगाया जा सकता था। स्मरण रखने योग्य है कि खर्चीले रीति-रिवाज बिना कष्ट उठाये और कष्ट दिये, जन स्तर पर सम्पन्न नहीं किये जा सकते।

संस्कार प्रयोजनों में अपने स्नेह सम्पर्क के अधिकाधिक लोगों को आमन्त्रित तो उस सीमा तक किया जाय, जिसमें घर की परिधि में आगन्तुकों को सुविधापूर्वक बिठाया जा सके। यदि संख्या अधिक बढ़ने की सम्भावना हो, तो किसी सार्वजनिक बड़े स्थान में भी उन्हें किया जा सकता है। देवालयों में इसी प्रयोजन के लिए स्थान बनाया और सुरक्षित रखा जाता था। ऐसे अन्य स्थान भी ढूँढ़े जा सकते हैं अथवा समीपवर्ती किसी जगह में शामयाना आदि तानकर जगह बना लेनी चाहिए। सजावट पत्तियों से भी की जा सकती है और स्थान को अपनी सूझबूझ के अनुसार अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

स्वागत-सत्कार में अभिवादन, उचित स्थान पर बिठाना भी पर्याप्त है। पर यदि कुछ उपचार की आवश्यकता प्रतीत हो तो ठण्डा जल, सौंफ, धनियाँ जैसी सस्ती चीजों से किसी को भी सत्कार का मान और संतोष हो जाना चाहिए। अन्य अवसरों की बात दूसरी है, पर संस्कार जैसे अतिमहत्त्वपूर्ण और अतिप्रेरणाप्रद अवसर पर तो वही दिया जाना चाहिए, जो सर्वसुलभ हो सकता हो, जिससे अनुपयुक्त परम्परा चल पड़ने की आशंका न हो।

उपर्युक्त बातों का ध्यान न रखे जाने का परिणाम ही यह हुआ कि संस्कार परम्परा उपेक्षित होते-होते समाप्तप्राय हो गयी। उसका जो कुछ ध्वंसावशेष बचा है, वह ऐसा है जिसके करने-कराने, देखने-दिखाने वालों में से किसी को संतोष नहीं होता। यही कारण है, कि एक ऐसी उपयोगी विधा हाथ से निकल चुकी या निकलती जा रही है, जो समाज के लिए व्यापक और अतीव श्रेयस्कर रही है, भविष्य में भी रह सकती है।

परिष्कृत संस्कार प्रक्रिया

सत्य शाश्वत है। धर्म धारणा भी अविछिन्न है। इतने पर भी उन्हें बदलती हुई परिस्थितियों के साथ जोड़ना पड़ता है। मनःस्थिति को देखते हुए उनकी तदनुरूप व्याख्या करनी पड़ती है और प्रचलन तथा वातावरण को देखते हुए रीति-नीति में आवश्यक परिवर्तन करना पड़ता है।

वेद ब्रह्म-ज्ञान है। किसी समय जब देव भाषाओं में ही कथनोपकथन का उपक्रम चलता था, उन दिनों श्रुति-संहिताओं का कथन ही मान-मर्यादाओं के निमित्त बनाया गया संविधान था। वह विधा चिरकाल तक चलती रही। समय के परिवर्तन चक्र ने उसकी सरलता माँगी और ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, सूत्रों में उन परम्पराओं की सामयिक विवेचना आवश्यक समझी गई और वह नवीन संरचना लोकप्रिय भी हुई।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आगे चलकर व्यक्ति और समाज की विचारणा एवं गतिविधियों का और भी विस्तार हुआ। तदनुरूप स्मृतियों की संरचना हुई। आरम्भ में मनुस्मृति ही प्रधान थी। बाद में एक के बाद दूसरी, तीसरी, दसवीं, बीसवीं स्मृतियाँ बनीं। एक के बाद दूसरी में आवश्यक सुधार की, विस्तार की आवश्यकता समझी गयी और वह संरचना अपने अन्तिम काल में याज्ञवल्क्य स्मृति तक आ पहुँची। आज का हिन्दू कानून उसी आधार पर अवलम्बित और प्रचलित है।

मौसम बदलने के साथ-साथ बहुत-सी बातें बदलनी पड़ती हैं। कपड़ों, सोने के स्थान, दिनचर्या आदि में हेर-फेर करना पड़ता है। टूटी इमारतें और फटे कपड़ों की मरम्मतें होती रहती हैं। इस प्रकार प्रथा-प्रचलनों में भी समयानुसार हेर-फेर होते रहते हैं। कभी मात्र संस्कृत भाषा का प्रचलन था। पीछे पाली-प्राकृत आदि भी उसी के अपभ्रंशों के रूप में चल पड़ीं। कहा तो यह भी जाता है कि संस्कृत का परिमार्जन बाद में हुआ। जो भी हो, भाषाओं का परिवर्तन होना सर्वविदित है। अब उसी की अनेक शाखा-प्रशाखाएँ प्रान्तीय बोलियों के रूप में व्यवहृत होती हैं। वस्त्र परिधानों में क्षेत्रीय प्रचलनों के अनुरूप अन्तर पाये जाते हैं। पर्व-त्यौहार भी कुछ को छोड़कर प्रायः अन्यान्य प्रकार के ही हैं। रीति-रिवाजों में भी अपने ही देशवासी अनेकानेक विधि-विधानों से अभ्यस्त हैं। सम्प्रदायों के बीच भिन्नता तो पायी ही जाती है। इष्ट देवों और धार्मिक मान्यताओं के सम्बन्ध में भी काफी हेर-फेर है। यह सब देखकर पारस्परिक मतभेदों और विरोधों का अनुमान लगाया जाता है। पर वास्तविकता यह है कि देश, काल, पात्र के अनुरूप होते चले आ रहे अन्तरों को ही इन भिन्नताओं के पीछे झाँकते देखा जाता है। यह स्वाभाविक है और आवश्यक भी। फिर भी इन सबके पीछे सुविधा और उत्कृष्टता का समन्वय किसी रूप में झाँकते पाया जाता है। इसलिए उन्हें एक ही लक्ष्य तक पहुँचने वाली अनेक पगडण्डियाँ भी माना जाता है। मनःस्थिति और परिस्थिति बदलने के साथ-साथ होते रहने वाले परिवर्तनों के रूप में भी इन्हें देखा-समझा जा सकता है। इतने पर भी सनातन प्रगतिक्रम का, परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने वाली विधाएँ ही यह समझी जा सकती हैं।

यहाँ प्रसंग संस्कार पद्धति का है। उस सम्बन्ध में अनेकों प्रयोग होते रहे हैं। सूत्र ग्रन्थ इसी प्रयोजन के लिए विनिर्मित हुए हैं। कर्मकाण्ड के विधि-विधान इसीलिए बने हैं। पर उनमें अन्तर तो दिख ही जाता है। रीतिनीति के हिसाब से देश अनेक भागों और परम्पराओं में बिखरा देखा जाता है। अनेक संस्कार तो बिना पुरोहितों, यज्ञों के भी मात्र पुरातन रिवाजों के अनुरूप निपट जाते हैं। देवताओं की पूजा अर्चना भी अपनी-अपनी वंश परम्परा के अनुसार होती रहती है। फिर भी इन भिन्नताओं पर न ध्यान दिया जाता है और न विरोध किया जाता है। एक पेड़ की अनेक टहनियाँ और पत्तियों की तरह उन्हें सहन ही नहीं कर लिया जाता, वरन् समभाव, समन्वय और सहिष्णुतापूर्वक उनका निर्वाह होता रहता है। अपने देश में देशवासियों के मानस की बनावट ऐसी है, जिससे थोड़ी भिन्नताएँ भी सहन कर ली जाती हैं। देव-मान्यताओं, रीति-रिवाजों, आहार-विहार की तरह सांस्कृतिक भिन्नताओं को भी सहन किया जा सकता है।

सुधरी हुई सामयिक पद्धति को एकाकी सर्वत्र प्रचलित किया जा सके यह कठिन है। पूर्वाग्रहों से ग्रसित मानस हर जगह पाया जाता है। दूसरे की प्रतिकूलता सहन कर लेना एक बात है और जो उपयुक्त है उसी को सर्वत्र बिना हील-हुज्जत के अपनाया जा सके यह कठिन है। अपने समुदाय का मानस पूर्वाग्रहों से इतना अधिक ग्रस्त है कि बात वहाँ तक बढ़ जाती है, जिसमें न अपना छोड़ना और न दूसरों के अपनाने की हठवादिता जड़ जमा लेती है। परम्परा का स्थान उपयोगिता ले नहीं पाती। यदि ऐसा न होता तो सुधारवादी प्रयासों को अब तक कब की सफलता मिल गयी होती और कम से कम हिन्दुस्तान में—हिन्दू समुदाय में तो एक तरह की मान्यतायें, एक प्रकार की प्रथायें चल पड़ने से एकता का अधिक सुदृढ़ आधार कब का बन गया होता ?

निराशा की स्थिति में भी हमें आशा ज्योति जलाये रहना ही चाहिए। जो उचित एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यक है, उसे प्रस्तुत करना ही चाहिए। सुधार परिष्कार की प्रक्रिया को अग्रगामी बनाने में हार तो नहीं ही माननी चाहिए।

कहना न होगा कि व्यक्ति और समाज में सुसंस्कारिता अधिकाधिक समावेश करने के लिए अन्याय प्रयत्नों के साथ संस्कार परिपाटी को भी इस प्रकार पुनर्जीवित करना चाहिए, कि उसमें सामयिकता, उपयोगिता और सत्परिणाम की सम्भावना का समुचित समावेश हो। जिन कारणों से इस परम्परा की उपेक्षा होते-होते चिह्न पूजा भर रह जाने की स्थिति आ गयी है, उसे बदला-सुधारा जाना चाहिए। इस निमित्त कुछ आधारों का अपनाया जाना आवश्यक है।

इनमें प्रथम यह हो सकता है कि संख्या घटायी जाय। सोलह संस्कार अब बन नहीं पड़ेंगे। अपने देश में औसतन पाँच छह व्यक्तियों का परिवार होता है। सभी के १६ उपचार आयोजन होते रहे, तो उनकी संख्या १६ × ६ = ६६ हो जाती है। उनका क्रम आये दिन चलता रहेगा, जो निभाते बन नहीं पड़ेगा। इसमें अत्यधिक समय लगेगा। पुरोहित की भी कमी पड़ेगी। फिर उनमें सम्मिलित होने के लिए किसी में उत्साह नहीं रहेगा। जब अपने घर पर ही आये दिन संस्कार होते हैं, तो दूसरों के घर देखने जाने की इच्छा या फुरसत कहीं नहीं दीख पड़ेगी।

इसके अतिरिक्त कुछ संस्कार ऐसे हैं, जो आज की परिस्थितियों में बन पड़ने पर भी अटपटे दीखते हैं। प्रथम संस्कार है—गर्भाधान। यह अनुबन्ध प्राचीन काल की परिस्थिति में सम्भव रहा होगा, पर अब उसका बन पड़ना प्रायः असम्भव ही माना जाएगा। इसी प्रकार 'जातकर्म' प्रसव बेला में ही होते हैं। उस समय प्रसूता अस्पताल में या दाई के संरक्षण में होती है। अशुद्धि का माहौल और कष्ट कराह की स्थिति बनी रहती है। ऐसी स्थिति में उसे भी अब असामयिक माना जा सकता है।

नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन ऐसे हैं जिनमें बालक तो नासमझ होता है। जो दिशा निर्देश दिया जाता है, वह अभिभावकों तथा परिजनों को ही दिया जाना है। ऐसी दशा में उनका समन्वय ही हो सकता है। पुंसवन, नारी के गर्भकाल के आरम्भिक महीनों में होता है। उसका प्रचलन अब नहीं रहा, पर प्रयत्नपूर्वक उसे फिर से चलाया जाना चाहिए; ताकि गर्भवती स्वयं किन अनुबन्धों का पालन उन दिनों करती है, वह जान सके और परिवार के लोग भी उसे उसी प्रकार की परिस्थितियाँ उपलब्ध कराने में योगदान दे सकें। शिशु पालन की बात भी उसमें सम्मिलित हो सकती है, पर यदि बहुत अड़चन हो तो नामकरण के समय उस प्रकार का संस्कार आयोजन किया जाय, जिनमें बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास सम्बन्धी सभी आवश्यक बातें न केवल अभिभावकों, वरन् समूचे परिवार को समझा दी जायें।

इस प्रकार परिवार प्रशिक्षण की दृष्टि से पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन मुण्डन जैसे संस्कार होते हैं। इन पाँच में से पुंसवन और नामकरण दो से भी काम चल सकता है। अबोध शिशुओं के सम्बन्ध में इतना कुछ करते बन पड़े तो भी बहुत है।

आवश्यक और बड़े संस्कारों में प्रमुख हैं—१. यज्ञोपवीत, २. विवाह, ३. वानप्रस्थ। इन तीनों को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाय और परिवारों में पृथक्-पृथक् रूप से अथवा सामूहिक रूप से करने का एक स्थान नियत करके आयोजनों को अधिक आकर्षक एवं प्रेरणाप्रद बनाया जाय।

यज्ञोपवीत का तात्पर्य है दूसरा जन्म या द्विजत्व। पशु जन्म तो मात्र पेट प्रजनन, दर्प प्रदर्शन जैसी पशु प्रवृत्तियों के लिए होती है। उसमें जनसंख्या की वृद्धि हुई भर मानी जाती है। मानवता की गरिमा के साथ दो तथ्य जुड़ते हैं—एक सभ्यता, दूसरी संस्कृति। उन्हें लोक व्यवहार और दृष्टिकोण में समाहित उत्कृष्टता भी कह सकते हैं। चिन्तन चरित्र और व्यवहार में शालीनता का आदर्शवादी समावेश के साथ ही मानवी गरिमा जन्मती है। इस सम्बन्ध में बालक समेत उपस्थित समुदाय को यह बताया जा सकता है कि इस स्थिति में त्रुटियाँ कहाँ रहती हैं और क्यों रहती हैं। उनके निराकरण के लिए किस प्रकार किन्हें क्या करना चाहिए? देव साक्षी, अग्नि सान्निध्य, श्रद्धाशक्ति वातावरण, वरिष्ठजनों की उपस्थिति में मन्त्र संकल्प के साथ इस प्रक्रिया को सम्पन्न किया जाय, तो वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिज्ञाएँ उस समारोह में सम्मिलित सभी लोगों के लिए कर्त्तव्य बन जाती हैं। उनका परिपालन ठीक तरह होता रहे, इसके लिए सभी का सहयोग मिले, ऐसा मार्गदर्शन इस अवसर पर दिया जाना चाहिए।

आवश्यक संस्कारों में यज्ञोपवीत के उपरान्त दूसरा आता है विवाह। यह दो आत्माओं का एकीकरण है। इसे नर नारी के साथ रहने की कानूनी छूट भर न माना जाय। सम्बन्ध बनाने में रूप लावण्य को नहीं गुण, कर्म, स्वभाव को ही महत्त्व दिया जाना चाहिए। सम्मिलित जीवन किस प्रकार जिया जा सकता है ? एक-दूसरे के जीवन क्रम में अधिक सहायक कैसे बना जा सकता है ? परिवार संस्था की नाव को मिलजुल कर कैस खेया जा सकता है ? इस मिलन को लोकोपयोगी कैसे बनाया जा सकता है ? आदि अनेक तथ्य विवाह के अवसर पर न केवल पति पत्नी को, वरन् उपस्थित सभी समुदाय को उद्‌बोधन द्वारा समझाये जाने चाहिए। वे सूत्र उभारे जाने चाहिए कि दाम्पत्य जीवन को, परिवार परिसर को श्रेष्ठतम बनाने के लिए क्या कुछ करना चाहिए, परिवार संस्था को किस प्रकार श्रेष्ठ समुन्नत एवं नर रत्नों की खदान बनाकर रहना चाहिए।

बड़े संस्कारों में तीसरा है—वानप्रस्थ। वर्णाश्रम व्यवस्था में आधा जीवन निजी और आधा जीवन परमार्थ प्रयोजनों के लिए नियोजित करना चाहिए। इसका सुनिश्चित प्रावधान हो, जिसके आधार पर अगणित सुयोग्य, अनुभवी, चरित्रवान् और निस्पृह कार्यकर्त्ता समाज को उपलब्ध होते थे। इसी का परिणाम था कि जन-जन में उत्कृष्टता की पक्षधर चेतना बनी रहती थी। अब इसी परिपाटी को पुनर्जीवित करना है; ताकि अनेक दिशाओं को प्रकाश दे सकने वाली प्रतिभाओं की कहीं भी कमी अनुभव न की जा सके।

प्राचीन काल में जंगलों में रहने और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना इस परम्परा से जुड़ा हुआ था। अब उसमें इतना सुधार किया गया है कि घर परिवार के बीच रहकर यथा सम्भव अधिकाधिक समयदान जन कल्याण के लिए दिया जाय। बच्चे पैदा करना बन्द कर देना ही छोटा ब्रह्मचर्य मान लिया गया है। साधु ब्राह्मण, परिव्राजक, वानप्रस्थ, सन्यासी जैसे वर्गों का एक सम्मिश्रण तैयार कर दिया गया है जिसे "व्रतधारी" नाम दिया गया है। प्रज्ञा परिवार के वानप्रस्थ व्रतधारी कहलाते हैं और उनका वही संस्कार कराया जाता है। प्रज्ञा परिवार के अन्तर्गत अगले बारह वर्ष में एक लाख व्रतधारी कार्यक्षेत्र में उतारने की अपनी योजना है। इसलिए यह संस्कार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है।

उपर्युक्त सभी संस्कारों को बिना किसी खर्च के शान्ति कुञ्ज में विद्वान् पण्डितों द्वारा कराने की व्यवस्था है। कर्मकाण्ड शैली में इतना सुधार परिवर्तन कर दिया गया है, कि देव पूजन-क्रिया पद्धति के प्रयोजनों को जनसाधारण को समझा सकना सम्भव हो सके और तद्नुरूप प्रशिक्षण को श्रद्धासिक्त वातावरण में अधिकाधिक प्रभावी बनाया जा सके।

शान्ति कुञ्ज की वन निर्धारित पद्धति में पुरातन उद्देश्यों को यथावत् रखते हुए समयानुसार ऐसा सुधार परिवर्तन कर दिया गया है, जो सर्वसाधारण के लिए सुलभ और प्रेरणाप्रद सिद्ध हो सके।

इसके प्रथम वर्ग में तीन संस्कार हैं— १. पुंसवन, २. नामकरण, ३. मुण्डन। द्वितीय में हैं— १. यज्ञोपवीत, २. विवाह और ३. वानप्रस्थ। तीसरे वर्ग को मरणोत्तर जीवन में व्यवहार किया जाने वाला बताया गया— १. अन्त्येष्टि संस्कार, २. श्राद्ध तर्पण, शुद्धि, ऋण मुक्ति। कर्णवेधन जैसे संस्कार इसलिए हटा दिए गये हैं कि "नर और नारी एक समान" का उद्‌घोष प्रखर करने वालों को या तो पुरुषों के भी नाक कान छेदने पड़ेंगे या महिलाओं के भी बन्द कराने पड़ेंगे। जेवर का अपव्यय और बचकानेपन का प्रतीक मानकर उन्हें बन्द करने का आन्दोलन चलाया जा रहा है, तब कर्णवेध को मान्य संस्कारों में स्थान कैसे दिया जा सकता था ?

जन्मदिन और विवाह दिन मनाने की पद्धति ऐसी है, जिसे अभिनव संस्कारों में सम्मिलित किया जाना है। जन्मदिन मनाने का प्रयोजन यह है कि मनुष्य जीवन की गरिमा का अनुभव करने और शेष समय को तद्नुरूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ढालने के लिए जन-जन को आन्दोलित किया जाय। अन्य संस्कार तो जीवन में एक ही बार होते हैं, पर जन्मदिन हर वर्ष मनाया जाता है। इसलिए यह आयोजन हर व्यक्ति को हर साल अधिक सुसंस्कृत बनते चलने की प्रेरणा देता है। इसी के समकक्ष दूसरा संस्कार है—विवाह-दिवसोत्सव। इसे भी हर वर्ष मनाये जाने पर, एक प्रकार से बार-बार विवाह प्रयोजनों का स्मरण और संकल्प दुहराने का हर किसी को अवसर मिलता है।

आठ पुराने और दो नये, इस प्रकार दस संस्कारों को प्रेरणाप्रद पद्धति से मनाये जाने का विधान इस आन्दोलन में प्रस्तुत करते हुए उन्हें अधिकाधिक उत्साह के साथ व्यापक रूप से मनाये जाने का प्रयोग किया जा रहा है। आशा की जानी चाहिए कि इसके आधार पर सुसंस्कारिता सम्वर्धन को असाधारण सहायता मिलेगी।

दीपपूजन-परक और प्रतिज्ञा अनुबन्धों में देव भाषा में उच्चारण से यह प्रक्रिया भाव श्रद्धा और समग्र संवेदना से भर जाने से अपना समुचित प्रभाव उत्पन्न करती देखी गयी है।

उपर्युक्त संस्कार विधाओं का प्रत्यक्ष प्रशिक्षण देने का प्रबन्ध शान्ति कुञ्ज में है; ताकि सामूहिक पौरोहित्य कर सकने वालों की इस सन्दर्भ में कहीं भी कोई कमी न रहे।

बहुउद्देशीय प्रयोजनों की पूर्ति

जमी हुई श्रद्धा को कुछ अनर्गल बातें कहकर आसानी से डगमगाया और अश्रद्धा में बदला जा सकता है; किन्तु अश्रद्धा के स्थान पर नये सिरे से श्रद्धा को जमाना कठिन है। घूमता पहिया जरा सा धक्का लगा देने पर दौड़ने लग सकता है, पर जमे को उखाड़ना और रुके को बढ़ाना कठिन है। दुष्प्रवृत्तियों में अपना आकर्षण होता है और वे गुरुत्वाकर्षण की तरह किसी को भी नीचे गिरा सकती हैं, पर ऊपर उछालने के लिए असाधारण श्रम करना और जोर लगाना पड़ता है। सत्प्रवृत्तियों का नया शुभारम्भ करना और उन्हें प्रचलन स्तर तक पहुँचाना असाधारण उत्साह, साहस एवं प्रयास के आधार पर ही सम्भव हो सकता है। संस्कार प्रक्रिया का प्रचलन अब यदा-कदा ही देखने को मिलता है, अन्यथा विवाह और शवदाह ही आमतौर से होते देखे गये हैं। शेष की उपयोगिता समझी नहीं जा रही है, फिर उनका खर्चीला होना और उद्देश्य समझने-समझाने का प्रयत्न न चलना भी ऐसे कारण हैं, जिनने उस महत्त्वपूर्ण प्रयोजन को लुप्त प्रायः ही करके रख दिया है। कुछेक कुलीन तथा सम्पन्न परिवारों में ही किसी प्रकार चिह्न पूजा होती देखी जाती है। इस स्थिति में उस पुरातन प्रचलन को पुनर्जीवित करना लगभग ऊसर में उद्यान लगाने की तरह कठिन है। इतने पर भी जन-साधारण पर छाये कुसंस्कारों के कुहासे को किसी प्रकार हटाना ही होगा। यदि शालीनता और सुसंस्कारिता से जन समुदाय को अभ्यस्त न बनाया जा सका, तो इसके परिणाम अब की अपेक्षा भविष्य में और अधिक भयावह होंगे। दुर्मति की परिणति दुर्गति के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकती।

प्रचलनों की प्रवाह तो अन्धविश्वासों को भी जीवित रखता है। खर्चीली शादियाँ भी धड़ाधड़ होती हैं। सस्ता स्वर्ग लूटने और तनिक-सी पूजा पत्री में मनोकामनाएँ पूर्ण करा लेने के फेर में अगणित लोग पड़े रहते हैं। परन्तु व्यक्तित्वों को परिष्कृत करने का न तो लाभ ही आम आदमी को मालूम है और न उस हेतु जो किया जाना चाहिए उसके सम्बन्ध में कहीं अनुकरणीय उदाहरण दिख पड़ते हैं। ऐसी विषम बेला में, सुसंस्कारिता अभिवर्धन का लक्ष्य पूरा करने वाली विधा को नये सिरे से सार्वजनीन प्रचलन में समुचित स्थान दिलाना एक कठिन कार्य होने पर भी, उत्थान-पतन के साथ जुड़ी हुई समस्या को किसी प्रकार हल करना ही होगा।

इस शुभारम्भ को विचारशील लोग अपने निज के घर परिवार से आरम्भ करें। इसके उपरान्त उन्हें सहमत-तत्पर करने का प्रयत्न करें, जो अपने घनिष्ठ सम्बन्धी मित्र, पड़ौसी की प्रभाव परिधि में आते हैं। इस प्रकार एक-एक कदम आगे बढ़ाते हुए लम्बी दूरी का लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है। प्रचार आन्दोलन के सहारे भी नये क्रम को जानकारी में लाया जा सकता है और प्रयोग के लाभों से अवगत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कराते हुए, उसे अपनाने के लिए अनेकों को सहमत किया जा सकता है। संस्कार परिपाटी को लोक व्यवहार में उतारने के लिए ऐसे ही उत्साह उभराने वाले प्रयत्न करने होंगे। सत्प्रवृत्तियाँ इसी प्रकार लोकप्रिय बन पाती हैं। किसी प्रकार प्रचलन को गतिशील किया जा सके तो उनका अनुकरण भी चल पड़ता है। अनेकों कुप्रचलनों ने आज अपनी जड़ें गहराई तक जमा रखी हैं, यह क्रमशः ही बन पड़ा है। सत्प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने में भी यदि ऐसे ही योजनाबद्ध, तत्परता के साथ प्रयास किये जा सके, तो कोई कारण नहीं कि वे भी धीमी या तीव्रगति में क्रियान्वित न होने लगें।

विलुप्त हुई पुण्य परम्पराओं को पुनर्जीवित करना भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि अवाञ्छनीय प्रचलनों के उन्मूलन हेतु सक्रिय होना। खर्चीली शादियाँ, तम्बाकू-नशे के पदार्थों द्वारा सत्कार, मृतक भोज, जातिगत ऊँच-नीच, नारी उत्पीड़न, नशेबाजी जैसी कुरीतियों के विरुद्ध वातावरण बनाकर, उसे हटाकर ही छोड़ना अपने वर्तमान कार्यक्रम में सम्मिलित है।

इसी प्रकार सत्प्रवृत्ति के प्रचलन में और भी अधिक तत्परता से प्रयत्नशील हुआ जाय। व्यक्तित्व के लिए संस्कार प्रक्रिया को सही और प्रभावी रूप में मनाने का प्रयत्न किया जाय, तो वह फलित हुए बिना न रहेगी। ठीक इसी प्रकार सामाजिक सभ्यता सम्वर्धन के लिए पर्व त्यौहारों को सामूहिक रूप से मनाये जाने का प्रचलन फिर से अभ्यास में उतारने की आवश्यकता है।

कार्य प्रारम्भ भले ही अपने घर से किया जाय, पर लोगों को उनकी उपयोगिता, महत्ता, फलश्रुति से अवगत कराने के लिए प्रचार प्रक्रिया की आवश्यकता तो है ही। अच्छा हो इन प्रयोजनों को, आरम्भ में एकाकी क्रियाकलापों से आरम्भ न करके सामूहिक रूप से किया जाय। इससे बड़ी संख्या में उपस्थित जन सामूहिक प्रेरणा प्राप्त करते हैं और अधिक लोगों को एक ही दिशा अपनाते देखकर सर्व साधारण के मन में भी उसका अनुकरण करने की प्रवृत्ति पनपती है। व्यापक प्रचलन प्रायः बड़े क्षेत्र में प्रचलित हो पाते हैं। यह संस्कार मात्र कर्मकाण्डों तक सीमित नहीं है। इनसे प्राचीन परम्पराओं के गौरवान्वित पक्ष को समझाने के अवसर मिलते हैं और उस महान् परम्परा का उत्तराधिकारी होने का गर्व गौरव भी अपने में उभरता है। पुण्य परम्पराओं को मूर्छना छोड़कर जागृति की स्थिति तक पहुँचने का अवसर भी मिलता है। सामाजिक मार्गदर्शन इन आयोजनों के साथ जुड़ जाने पर सोना-सुगन्ध जैसा सुयोग बनता है।

कार्य विस्तार के लिए संस्कारों और पर्वों को समयानुसार मनाने की प्रक्रिया के लिए, उत्साही कार्यकर्त्ताओं की मण्डलियाँ जागृत और प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। इसके लिए जन-सम्पर्क में लोक नेतृत्व में अभिरुचि रखने वालों को कार्य क्षेत्र में उतारने और क्रिया कलापों के उतार चढ़ावों से अवगत कराने की आवश्यकता है। इस प्रकार की गलाई-ढलाई का कार्य शान्ति कुञ्ज में चल पड़ा है। वहाँ आये दिन ऐसे उपक्रम होते भी रहते हैं, जिन्हें देखकर वह सब भी सीखा जा सकता है, जो मात्र पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर उपलब्ध नहीं हो पाता।

अच्छा तो यह है कि सभी वर्ग के लोग मिल जुलकर, अपने-अपने क्षेत्र में बसने वाले लोगों को संस्कार एवं पर्व प्रक्रिया से लाभान्वित करें। यदि दूसरा यह तरीका पसन्द आये कि अपने-अपने वर्गों के लोगों में उसी वर्ग के लोग काम करें, तो यह इतना आदर्शपूर्ण न होते हुए भी सुविधाजनक अवश्य रहेगा।

उपर्युक्त दोनों प्रकार के आयोजनों के साथ सहगान कीर्तन जुड़ा रखा जाय और उसके लिए संगीत मण्डली का गठन पहले ही कर रखा जाय, तो यह और भी अधिक उत्साहवर्द्धक एवं लोकप्रिय होगा। इस प्रकार की शिक्षण व्यवस्था शान्ति कुञ्ज में रखी गयी है, जिसमें एक महीने का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सहज ही अभ्यस्त और प्रवीण हो जाते हैं।

प्रायः संस्कार प्रातःकाल होते हैं, पर यदि वह समय सुविधाजनक न पड़ता हो, तो गोधूलि बेला इसके लिए नियत की जा सकती है। प्रातःकाल की तरह संध्याकाल भी शुभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्मों के लिए समान रूप से श्रेयस्कर माना गया है।

जहाँ सम्भावना हो वहाँ रात्रि में स्लाइड प्रोजेक्टर से चित्र-प्रदर्शन भी करते हुए, एक अच्छी रात्रि सभा सम्पन्न की जाय। यों रंगीन चल-चित्रों और टी. वी. सिनेमा के इस जमाने में स्लाइड प्रोजेक्टर का प्रदर्शन उतना आकर्षक नहीं होता, फिर भी इसके साथ धार्मिकता और उपयोगी शिक्षा जुड़ जाने से, अपने ढंग का आकर्षण पैदा हो जाता है, जो उपयोगी भी है। उसमें लोक मंगल और लोकरंजन के दोनों पक्ष जुड़ते हैं।

संस्कार-पर्वों को मनाने की प्रक्रिया यदि योजनाबद्ध रूप से चल पड़े, तो उससे विचार क्रान्ति का, सांस्कृतिक पुनरुत्थान का, जन-जागरण का और सज्जनता के संगठन का बहुद्देशीय क्रियाकलाप सम्पन्न होते हैं। उसके साथ ही उज्जवल भविष्य की सम्भावनाएँ भी जुड़ती हैं।

वर्तमान परिजनों में से अधिकांश अपने परिवार के संस्कार कराने, समय-समय पर शान्ति कुञ्ज आया करते हैं। पर यह समय, किराये भाड़े आदि की कठिनाई से दूरवर्ती लोगों के लिए सर्वसुलभ नहीं। होना यही चाहिए कि संस्कार और पर्व आयोजनों को स्थानीय आयोजन के रूप में ही सम्पन्न किया जाय। इनसे वह उद्देश्य भी पूरा होता है, जो साप्ताहिक सत्संगों के माध्यम और प्रज्ञामण्डलों द्वारा सम्पन्न किया जा रहा है। संगठन, सुसंस्कारिता, सम्वर्धन और नव निर्माण की बहुद्देशीय आवश्यकता इनके द्वारा पूरी होती है। संस्कारों के, पारिवारिक पर्वों के, सामूहिक आयोजनों के माध्यम से वह प्रयोजन और भी अच्छी तरह पूरे हो सकते हैं। देव संस्कृति का पुनरुत्थान इसी आधार पर सम्भव है।

पर्व-संस्कारों का समग्र प्रशिक्षण करके उस प्रक्रिया को अग्रगामी बनाने की प्रक्रिया सुनियोजित रीति के शान्तिकुञ्ज में चलाई जा रही है। तीव्र गति से उद्देश्य की पूर्ति हो इसके लिए ऐसे लाखों व्रतधारी चाहिए, जो अपने निजी काम करने के साथ-साथ यह सब भी करते रहें। प्रशिक्षण की सांगोपांग सुविधा शान्तिकुञ्ज में है। जिनकी रुचि इस प्रयोजन में हो, वे अपना पूरा परिचय सुव्यवस्थित रूप में लिखकर प्रशिक्षण में सम्मिलित होने के लिए स्वीकृति पत्र प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

संस्कार प्रक्रिया के प्रमुख पक्ष

संस्कार प्रक्रिया को सम्पन्न करने के कई पक्ष हैं, जैसे देव-आवाहन, देव पूजन, देव अनुकम्पा का अनुभव, आयोजन में सन्निहित तथ्यों, तर्कों उद्देश्यों का प्रशिक्षण परक स्मरण उद्बोधन, स्थान की पवित्रता तथा शक्ति सम्पन्नता का सुयोग-पर्यवेक्षण, यजमान द्वारा शपथ ग्रहण, शपथ दिलाने के लिए किसी उच्चस्तरीय व्यक्तित्व का संरक्षण, उच्च विचारशील परिजनों का एकत्रीकरण, जो साक्षी रूप में उस महत्त्वपूर्ण अवसर पर न केवल उपस्थित रहें, वरन् उसे सफल बनाने में शक्ति भर योगदान भी देते रहें। कर्मकाण्ड के लिए ऐसे वातावरण का सृजन, जो सहज श्रद्धा का उद्बोधन करके, भावनात्मक सशक्तता को जीवन्त बना सके। इतना सारा सरंजाम जुट जाने पर समझना चाहिए कि संस्कार आयोजनों की समग्रता बन पड़ी और उसकी सफलता सुनिश्चित हो गयी। अधूरेपन का परिणाम भी अधूरा ही रहता है।

मकान बनाने के लिए कोई एक वस्तु पर्याप्त नहीं होती। उसके लिए कई तरह की साधन-सामग्री जुटानी पड़ती है। ईंट, चूना, लकड़ी, लोहा, पानी, श्रमिक, कारीगर आदि सभी सही स्तर के रहें, तो समझना चाहिए कि मकान सुन्दर बनेगा, सुदृढ़ रहेगा और सुविधाजनक स्थिति बनाए रहेगा। इनमें से कुछ का अच्छा और कुछ का खराब होना ऐसी स्थिति उत्पन्न करेगा, जिसमें भवन निर्माण का उद्देश्य सही ढंग से सिद्ध न हो सकेगा। संस्कार प्रक्रिया भी इसी प्रकार कई पक्षों के साथ जुड़ी हुई है। अभीष्ट सत्परिणाम चाहने वालों को आवश्यक सभी साधन जुटाने का प्रयत्न करना चाहिए; ताकि समग्रता के लिए साधनों का लाभ भली प्रकार अर्जित किया जा सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों इस प्रयोजन के लिए मात्र परम्परा का आधा-अधूरा निर्वाह भर होता है। चिह्न पूजा अथवा लकीर पीटने से केवल इतना लाभ मिलता है, कि प्रचलन के स्वरूप का स्मरण बना रहता है और यह आशा रहती है, कि कभी कोई विचारशील तथ्यों की खोज-बीन करेंगे, तो उसे सही रूप में करने की जिज्ञासा एवं व्यवस्था भी बनायेंगे। न कुछ करने से तो कुछ करते रहना भी बुरा नहीं है। पर ज्यादा अच्छा यही है कि समग्र उद्देश्य पूरा करने के लिए, कार्य को सभी दृष्टियों से सुसम्पन्न करने का प्रबन्ध किया जाय। संस्कार प्रयोजन भी ऐसा ही है, जिसकी पूर्ति के लिए यह ध्यान में रखा जाय कि उसके सभी पक्षों का संयोग ठीक प्रकार हो रहा है या नहीं ? ओषधियों के निर्माण में कई-कई पदार्थों को मिलाकर कूटना, छानना, भिगोना पड़ता है। यह क्रियाएँ यदि अधूरी रहें, तो यह आशा नहीं की जा सकेगी कि विनिर्मित की गई ओषधि अपने अभीष्ट प्रभाव का परिचय दे सकेगी।

इन दिनों इस संदर्भ में चल रही परिपाटी में, प्रायः देवपूजन करके काम निपटा दिया जाता है। करने या कराने वालों में यह भी जिज्ञासा नहीं उपजती, कि यह देवता क्या है और क्यों इनकी पूजा की जानी आवश्यक है ? उस अभ्यर्थना का प्रस्तुत उपचार से क्या सम्बन्ध और तारतम्य है ? इस अधूरेपन से भी किसी प्रकार निपट तो लिया जाता है, पर यह तो पूरी तरह भुला ही दिया जाता है कि उपचार के जो अन्य पक्ष छूट गए, उस कारण रह रहे अधूरेपन को पूरा करने की बात सोचनी और व्यवस्था जुटायी जानी चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि यदि संस्कार करने, कराने और धारण करने का महत्त्व समझा गया है, तो उसे पूरा कराने का भी प्रयत्न किया जाय।

देवताओं के यों प्रतीक भी बनाए जाते हैं। उनकी प्रतिमाएँ भी विनिर्मित या कल्पित की जाती हैं। फिर भी उस प्रतीक प्रक्रिया का रहस्य समझे बिना काम चलने वाला नहीं है। समझा जाना चाहिए ईश्वर रूपी चेतना समुद्र की विभिन्न दिशा धाराओं में बहने वाली लहरें ही देव शक्तियाँ हैं। वे भी ईश्वर की ही तरह निराकार हैं पर चूँकि मनुष्य की मानसिक संरचना ऐसी नहीं है, जिससे निराकार संज्ञा की कल्पना ठीक तरह बन पड़े, अस्तु साकार के माध्यम से निराकार की अवधारणा का आश्रय लेना पड़ा है। पंचतत्व, पंच प्राण, पंच तन्मात्राएँ, पाँच सत्प्रवृत्तियाँ, पाँच आदर्शवादिताएँ आदि को मिलाकर देव परिकर बनता है। यह विस्मृत रहने पर अपरिचित बन जाता है; किन्तु यदि उसका भावनापूर्वक स्मरण, अवगाहन, पूजा उपचार किया जाय, तो उस आधार पर पूजनकर्त्ता यह अनुभव करने लगता है कि उसने प्रस्तुत प्रयोजन में सहायता-अनुकम्पा बरसाने के लिए, उच्चस्तरीय सत्ता को अपने निकट उपस्थित कर लिया।

आतिथ्य, स्वागत सन्मान के लिए कुछ न्यूनतम शर्तें तो निभानी ही पड़ती हैं। किसी उच्चस्तरीय व्यक्ति के घर पधारने पर आतिथ्य करने वाले को अपनी सभी साज सरंजाम तो साफ-सुथरे रखने ही पड़ते हैं। अपने स्वभाव व्यवहार में भी, कम से कम उस समय तो शालीनता का परिचय देना ही पड़ता है। देव आवाहन और पूजन के आधार पर कर्ता को अपनी मानसिक और भावनात्मक स्थिति अपेक्षाकृत अधिक सही रखनी पड़ती है। इस आधार पर ही देव अनुकम्पा के विशेष रूप में बरसने की आशा की जा सकती है। फूहड़पन बना रहने पर तो, पधारने से लेकर अनुकूलता दिखाने तक में वे आनाकानी कर सकते हैं। देव साक्षी में धर्म कृत्य किये जाने के पीछे यही उद्देश्य है, कि कर्ता एवं उपस्थित समुदाय को अपना आपा स्वच्छता, सभ्यता, शिष्टता एवं जागरूकता की श्रद्धासिक्त भाव संवेदना से ओत-प्रोत रखना चाहिए।

मन्त्रोच्चार में यों कुछ न कुछ सदुद्देश्यों के प्रति श्रद्धा उभारने वाले सदुपदेश भी सन्निहित रहते हैं। उनकी व्याख्या विवेचना से मन्त्रोच्चार के उपदेशों को, न केवल यजमान, वरन् संस्कार प्रक्रिया में सम्मिलित अन्य लोग अपने लिए भी उपयुक्त समझ सकते हैं और उन आदर्शवादी निर्देशों से अपने जीवन क्रम में, उत्कृष्टता का समावेश करने की इच्छा जगाकर, ऊँचा उठने, आगे बढ़ने के लाभ से लाभान्वित हो सकते हैं। जो साथ-साथ मन्त्रोच्चार न कर सकें वे इतना अनुभव तो कर ही सकते हैं, कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वे इस मन्त्र साधना के साथ जुड़े हुए एक घटक हैं और आवाहन पूजन में समान रूप से भागीदार हैं।

मन्त्र संरचना का अपना शब्द प्रभाव भी है। उनके कारण जो ध्वनि तरंगें उत्पन्न होती हैं, वे अपने आप में विशेष प्रभाव रखती हैं। शब्दार्थ तो उनकी स्थूल विशेषता है। वह सूक्ष्म प्रभाव है, जिसके कारण दिव्य शब्दावली के रूप में बोले हुए मन्त्र, समीपवर्ती वातावरण को प्रभावित करते हैं और उपस्थित लोग देव अनुकम्पा बरसने के रूप में उसका लाभ अनुभव करते हैं।

विभिन्न देवताओं की पूजा के लिए पिछले दिनों कर्मकाण्डी अलग-अलग प्रतीक प्रतिमाएँ स्थापित करते थे। सर्वतोभद्र चक्र आदि रंगीन धान्यों की ढेरियाँ पूजा चौकी पर देव तत्वों की उपस्थिति का परिचय देती थी। पर अब वह कार्य एक ही जल कलश की स्थापना में पूरा हुआ मान लिया जाता है। एक कलश में सभी की उपस्थिति अनुभव करके, देव अस्तित्व की पृथकता एवम् संकीर्णता जैसी मान्यता को भी निरस्त करते बन पड़ता है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, देवपूजन किए जाने से अपनी भाव श्रद्धा ऊर्ध्वगामी बनती है और संकल्प का रूप धारण करने लगती है। संकल्प सिद्धि का सिद्धान्त अध्यात्म क्षेत्र में सर्वमान्य है। इसके अनुसार ऊर्ध्वगामी भाव श्रद्धा के प्रभाव से भावना के अनुरूप, वह सब खिंचा चला आता है, जो भाव संवेदनाओं तक श्रद्धा संकल्प के रूप में पहुँचाया गया है। इसी प्रकार देवपूजन के साथ जुड़े हुए मन्त्रोच्चार की फलश्रुति भी हृदयंगम की जा सकती है।

देव-पूजन की प्रक्रिया आरम्भ करने से पूर्व, निर्धारित स्थान की शुद्धता, स्वच्छता एवं सुसज्जा आवश्यक होती है। पर्व त्यौहारों पर घरों को साफ-सुथरा बनाया और सजाया जाता है। विवाह शादी के अवसर पर भी इस प्रक्रिया में कमी नहीं रखी जाती। संस्कार प्रक्रिया में भी न्यूनतम इतना तो होता ही है; रंगोली बनाने, चौक पूरने जैसी शोभा-सज्जा तो विनिर्मित की ही जाती है। होना तो इससे अधिक चाहिए। मण्डप बनाने तक की बात हर संस्कार में बन सके तो उत्तम है। वस्त्रों से, झण्डियों से, पत्तियों से अथवा दूसरी सजावट की चीजों से मण्डप बनाने आदि के जो भी सरंजाम जहाँ जुट सकें, वहाँ उस प्रकार की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे सभी उपस्थित जनों को व्यवस्था का आकर्षण देखते हुए, उस प्रक्रिया का महत्त्व समझने की भी प्रेरणा मिलती है।

देखा गया है कि पुरोहित ही धर्म कृत्य को निपटा देते हैं, यजमान तो मात्र देखते रहते हैं अथवा कहे मुताविक कुछ चिह्न पूरा करते रहते हैं जबकि होना यह चाहिए कि संस्कार के माध्यम से जिन उत्तरदायित्वों के प्रति यजमान को जागरूक किया गया है, उसकी वह प्रतिज्ञा करें। यह प्रतिज्ञा अवधारणा ही संस्कार प्रयोजन का मेरुदण्ड है। कहने सुनने से आंशिक रूप से ही उद्देश्य की पूर्ति में सहायता मिलती है। वजन तब पड़ता है जब व्रत संकल्प को, न केवल अन्तराल में धारण ही किया जाय, वरन् उसकी घोषणा भी की जाय। वस्तुतः वह जन घोषणा है जिसका परिपालन निष्ठापूर्वक किया जाना चाहिए। सरकारी दस्तावेजों में कम से कम दो साथियों के दस्तखत कराये जाने पर कानूनी औपचारिकता पूरी होती है। संस्कार प्रयोजन में देवसत्ता अपनी आस्था, परिवार समुदाय एवं संभ्रान्त जन, सभी को साक्षी मानते हुए, घोषणा को शपथ धारण की तरह पूर्ण करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

मिनिस्टरों को पद की गोपनीयता की शपथ-राष्ट्रपति, गवर्नर, हाईकोर्ट के प्रधान न्यायाधीश आदि दिलाते हैं। संस्कार प्रयोजनों का प्रधान उत्तरदायित्व निभाने की घोषणा को भी किसी वरिष्ठ पुरोहित द्वारा सम्पन्न कराया जाना चाहिए। उसका व्यक्तित्व ऐसा तो होना ही चाहिए, जो अपनी विशिष्टता से शपथ लेने वाले तथा उपस्थित जनों को प्रभावित कर सके। शपथ के साथ जुड़े हुए दायित्वों को निवाहने के लिए उसकी रूप रेखा, व्याख्या विवेचना के साथ समझा सके। इसका उद्देश्य यजमान के साथ-साथ उपस्थित जनों में से प्रत्येक को प्रस्तुत आदर्शों को क्रियान्वित करने के लिए प्रेरित करना भी है। अस्तु पुरोहित का स्थान बहुज्ञ, बहुश्रुत एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व को ही मिलना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवेक सम्मत परिपाटी अपनायी जाय

इन दिनों कुछ ऐसी परिपाटी चल रही है कि अमुक परिवार का अमुक व्यक्ति ही कुल पुरोहित होगा, यह उचित नहीं। यह अधिकारवाद निरर्थक है। डॉक्टर का लड़का उस विद्या से अनभिज्ञ होने पर भी चिकित्सा पैत्रिक व्यवसाय बताकर, उन मरीजों का दावेदार बने, जो अन्य डॉक्टरों से चिकित्सा कराते थे, तो यह आग्रह अनुचित ही होगा। कलक्टर और जज के परिवार वाले जल की भूमिका निबाहें, यह आवधारणा गलत है। पौरोहित्य वंश परम्परा के साथ बाधित नहीं है, वरन् आवश्यकता एवं योग्यता के अनुरूप समय-समय पर निर्धारित होता रहता है। संस्कार-प्रक्रिया के पुनर्जीवन की बेला में यह भी ध्यान रखने योग्य है, कि उपयुक्त व्यक्ति को ही इस महत्त्वपूर्ण आसन पर बैठने दिया जाय।

उचित तो यह है कि संस्कार पर्वों के लिए निर्धारित मन्त्रोचार सभी शिक्षितों द्वारा मिलजुल कर किया जाय। सामूहिकता की शक्ति, एकाकी प्रयोजन की तुलना में कहीं अधिक होती है, इसे सभी जानते हैं। कीर्तन सहगान आदि में अधिकाधिक लोगों को सहभागी बनाया जाता है तभी शोभा एवं प्रेरणा उभरती है।

यही बात मन्त्रोच्चार के सम्बन्ध में भी है। अधिक लोगों के मिल-जुलकर इन क्रियाओं को सम्पन्न करने का एक बड़ा लाभ यह भी है, कि वह प्रक्रिया अधिकों के अभ्यास में आ जायेगी और अधिक अभ्यस्त लोग अपने परिचय क्षेत्र में इस परम्परा को अधिक प्रचलित, अधिक विस्तृत कर सकने में समर्थ हो सकेंगे। समय की यह एक बड़ी आवश्यकता एवं माँग है, कि जन-जन को, हर परिवार को, नये सिरे से सुसंस्कृत बनाने वाला आन्दोलन चलाया जाय।

संस्कारों के लिए सामान्य कर्मकाण्ड तो लगभग समान ही रहेंगे, पर शपथ की विवेचना स्थानीय परिस्थितियों एवं संबद्ध जनों की मनः स्थिति के अनुरूप होनी चाहिए। सभी को एक लाठी से नहीं हाँका जाना चाहिए। सभी धान बीस पसेरी के भाव से नहीं बेचा जाना चाहिए। तोता रटंत की तरह पुरातन विवेचनाओं को ही दुहरा भर देना सरल तो है, उसमें अध्ययन, चिन्तन, मनन की आवश्यकता नहीं पड़ती, पर समुदायों की मनः स्थिति में अन्तर रहने के कारण उपयुक्त यही रहता है, कि पुरातन प्रेरणाओं को व्यक्तियों की मान्यताओं के साथ तालमेल बिठाते हुए निरूपित किया जाय। इस प्रशिक्षण को ही कर्मकाण्ड का मेरुदण्ड माना जाना चाहिए। इसके बिना मात्र पूजा पाठ की चिह्न पूजा, बेगार भुगतने की तरह, भार को निपटाना मात्र बनकर रह जायेगी। पुरोहितों को इतना सक्षम होना चाहिए, कि वे यजमानों तथा उपस्थित जनों के मानस को ठीक प्रकार समझ सकें और संस्कार की दिशा धारा के साथ सामंज्य बिठाते हुए चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहारों के सामयिक पक्षों को ठीक तरह उजागर कर सकें। एक घर में एक संस्कार जिस प्रकार सम्पन्न हुआ है, पड़ौस के दूसरे घर में वही संस्कार सम्पन्न होने पर प्रवक्ता, प्रशिक्षण के पक्षों में कुछ नवीनता-भिन्नता रख सके, तभी वह लोगों को सभी जगह पहुँचने और नया प्रतिपादन सुनने के लिए उत्साहित कर सकेगा। अन्यथा एक ही बात हर जगह सुनने को मिले, तो फिर नीरसता उत्पन्न होगी और लोग जगह-जगह पहुँचने में उपेक्षा बरतने लगेंगे।

पुरातन कथा दृष्टान्तों को आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत करते रहने की शैली अपनायी जाने लगे, तो नवीनता बनी रहेगी और एक ही तथ्य को अनेक प्रसंगों में अनेक प्रकार से प्रस्तुत कर सकने का माहौल बना रहेगा। तर्क और तथ्य एक ही रहने पर भी, उन्हें प्रमाणिक उदाहरणों की भिन्नता के साथ संजोते रहने पर नवीनता प्रतिभासित होने लगती है। कथा पुराणों की संरचना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गई है। चारों वेदों में कुल मिलाकर मात्र २४ हजार मन्त्र हैं। पर पुराणों की संख्या अट्ठारह और उप पुराणों की संख्या भी प्रायः इतनी ही है। महाभारत, स्कन्द पुराण आदि कई कथा ग्रन्थ इतने बड़े हैं, जो चारों वेदों के कलेवर से अधिक ठहरते हैं। इस संरचना के पीछे एक ही कार्य कारण संन्निहित है, कि कथानक कहने सुनने में जो सरसता आती है, उससे सुनने के लिए सर्वसाधारण का मन उत्सुक रहता है। इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शैली के आधार पर लोक शिक्षण की प्रक्रिया पुरातन काल में भली प्रकार चलती थी। अब उसे पर्व संस्कारों में क्रिया कृत्य के साथ जोड़कर, अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में अधिक सहायक बनाया जा सकता है। इस सन्दर्भ में प्रज्ञा पुराण के चार खण्डों की संरचना हो चुकी है। युग निर्माण योजना मथुरा द्वारा उसका प्रकाशन भी हो चुका है। उसमें समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही पुरातन ग्रन्थों से कथाओं का संकलन किया गया है। समय और परिस्थतियों के अनुरूप कथानक, प्रजा पुराण में से चुनकर, अपने कथन को प्रभावशाली और रोचक बनाया जा सकता है।

हितोपदेश, पंच-तन्त्र आदि ग्रन्थों की संरचना इसी प्रयोजन के लिए हुई है कि शिक्षण के प्रति अरुचि और उपेक्षा रखने वाले बालक भी इस कथा स्मृति को आतुरतापूर्वक सुनें और लोक व्यवहार के उतार-चढ़ावों से परिचित हो सकें। यह शैली आज भी उतनी ही उपयुक्त है। बड़े और छोटे नर नारी सभी उसे पसन्द करते हैं। सुसंस्कारिता के प्रशिक्षण में इस शैली को अपनाया जाय, तो उससे लोक मंगल के साथ-साथ लोक-रंजन का प्रयोजन भी सधता रह सकता है।

आवश्यक नहीं कि हर धर्मोपदेश में पौराणिक कथाओं का ही समावेश किया जाय, उसके साथ ऐतिहासिक उदाहरण और सामान्य मनोरंजन की कथाओं का भी उद्देश्यपूर्ण समावेश किया जा सकता है। संस्कार पर्वों के अवसर पर उपस्थित अल्प शिक्षितों को प्रभावित करने के लिए यही शैली उपयुक्त बैठती है।

संस्कार प्रक्रिया को प्राणवान बनाना आवश्यक है। केवल कर्मकाण्ड की पूर्ति कर देने से उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। इसके लिए सभी पक्षों को जागरूकता बरतनी होगी। संस्कार पाने वालों, संस्कार प्रक्रिया सम्पन्न कराने वालों तथा उनसे सम्बद्ध परिकर में उसके लिए भावभरी उमंग पैदा करनी होती है। उसका महत्त्व और अनुशासन गले उतारा जाना आवश्यक होता है। यह सब तभी सम्भव है, जब प्रबुद्ध एवं भावनाशील लोकसेवी स्तर के प्रचारक संयोजक बड़ी संख्या में विकसित हों। उसके लिए उपयुक्त साहित्य मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं शक्ति प्रवाह उपलब्ध कराने की व्यवस्था शान्ति कुञ्ज के माध्यम से युग चेतना ने की है। अगले दिनों इस कल्याणप्रद प्रक्रिया को और भी अधिक प्रखर और प्रभावी बनाया जाना है। प्रतिभावानों को इस दिशा में संकल्पित होकर जुट पड़ने की आवश्यकता है।

इस संदर्भ में सुसंगठित प्रयास हों

भारत की देव संस्कृति जन-जन को हृदयंगम कराने के लिए, संस्कारों और पर्वों का प्रचलन एक बहुत ही प्रभावशाली प्रयोग है। पर उसकी उपेक्षा अवहेलना कई कारणों से चल पड़ी। उन्हें खर्चीला भी बना दिया गया और आयोजन में मात्र घिसी-पिटी तोता रटन्त के कारण नीरसता भी भर गई। अब उस महान परम्परा के पुनर्जीवन की आवश्यकता समी जानी चाहिए और उसे उन त्रुटियों से मुक्त करना चाहिए, जिनके कारण उसे एक प्रकार से विस्मृत-बहिष्कृत किया जाने लगा है।

उसे सस्ता बनाने का तरीका यह है, कि वस्तुओं का जाल जंजाल भरा एकत्रीकरण घटाया जाय। इसमें बहुत समय लगता है और अनावश्यक भाग-दौड़ होती है। दूसरे दबाव भरी अनिवार्य दान दक्षिणा का भार भी नहीं बढ़ना चाहिए, ताकि गरीब, अमीर सभी के लिए वह सुगम सुलभ रह सके।

देखा गया है कि किसी भी निमित्त बुलाए गये व्यक्तियों का खर्चीला स्वागत-सत्कार करना पड़ता है। इस प्रचलन को हटा दिया जाय। मात्र सौंफ, सुपाड़ी जैसी कम कीमत की वस्तुओं से सत्कार कर दिया जाय। प्रेम की दृष्टि से ठण्डा पानी पर्याप्त माना जाय। सम्पन्न लोग तो मनचाहा खर्च कर सकते हैं, पर उतना न कर पाने पर गरीब तो सकुचेगा ही और न करके खर्च बचाने के निर्णय पर पहुँचेगा। अस्तु सर्व सुलभ बनाने की दृष्टि से संस्कारों में से आतिथ्य खर्च पूरी तरह काट देने की नयी परम्परा अपनानी चाहिए। उसे सुविस्तृत एवं सर्वजनीन तभी बनाया जा सकेगा।

पंडित यजमान का दबाव भरा पक्ष भी, अब मिल जुलकर इस क्रिया को सम्पन्न करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के आधार पर परिवर्तित किया जाय। संस्कार पद्धति उतनी कठिन नहीं है कि महीने पन्द्रह दिन के प्रयत्न से अभ्यास में न उतर सके। कुछ शिक्षित और उत्साही व्यक्ति इस अभ्यास को कर लें और मिल-जुल कर अपने सम्पर्क क्षेत्र में प्रयत्नपूर्वक इन आयोजनों के लिए उत्साह भरने लगें, सहयोग देने लगें तो बात बन जायेगी। एक की देखा-देखी अनेकों को उस क्रिया के कराने की उमंग उठने लगेगी। जन्म दिन, विवाह दिन, यह दो नए संस्कार तो ऐसे हैं, जिन्हें मनाने के लिए हर किसी के मन में उत्साह भरा जा सकता है।

शान्ति कुञ्ज हरिद्वार में एक-एक महीने के सत्र निरन्तर चलते रहते हैं। उनमें सुगम संगीत, प्रवचन, के अभ्यास एवं पर्व संस्कारों को करा सकने की कुशलता का समावेश है। जिन्हें उत्सुकता और फुरसत हो, वे एक महीने के लिए हरिद्वार आकर उपर्युक्त शिक्षा निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

अच्छा हो स्थान-स्थान पर ऐसी संस्कार मण्डलियाँ गठित हों, जो इस प्रयोजन से सम्बन्धित सभी वस्तुएँ संग्रहीत रखें। सज्जा मण्डप बना लें तथा साप्ताहिक कक्षाएँ ऐसी चलायें, जिनमें उस सन्दर्भ में इच्छुक व्यक्तियों को विस्तारपूर्वक पृष्ठभूमि विधि व्यवस्था, तथा परिणति का ज्ञान एवम् अभ्यास कराते रहें। सुसंस्कारिता संवर्धन, आज की महती आवश्यकता है। उसके ऊपर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण अवलम्बित है। इस प्रयोजन को श्रद्धा भरे वातावरण में इस प्रकार सम्पन्न किया जा सकता है, कि तथ्यों को हृदयंगम कराने एवम् प्रतिज्ञाओं के परिपालन का वातावरण बन सके।

भारतीय संस्कृति के देवदूत स्वामी विवेकानन्द ने सन् १८९६ में मद्रास के म्यु. हाल में "भारत का भविष्य" पर भाषण देते हुए घोषणा की थी कि आगे भारत को पुनः श्रेष्ठतम बनना है। इसके लिए संगठित प्रयासों की एवं आध्यात्मिक शक्ति संग्रह की आवश्यकता पड़ेगी। जन-जन को संस्कृति का समुचित बोध कराना होगा। लौकिक शिक्षा के साथ संस्कारों की शिक्षा भी देनी होगी। इसके लिए देवालयों को पुस्तकालयों और शिक्षणालयों का रूप भी देना होगा। उनका मत था कि देवालयों से जुड़ा एक ऐसा तन्त्र हो, जो धार्मिक संस्कारवान् शिक्षक, प्रचारक तैयार करें। इस प्रक्रिया का देश भर में विस्तार हो। धन साधन इसके लिए दौड़ते चले आयेंगे। इसके लिए उत्साह, उल्लास से भरे-नवयुवक आगे आयें। आने वाले उज्जवल भविष्य की अगवानी की तैयारी की जाय।

इस पूर्व कथन का इन्हीं दिनों चरितार्थ होना निश्चित् है। अच्छा हो इसका श्रेय परिजन आगे बढ़कर शिरोधार्य करें। ऋषियों द्वारा विकसित संस्कार प्रणाली को नये सन्दर्भ में प्रयुक्त करने के लिए सन्नद्ध हों। इसी आधार पर ऐसे संस्कारयुक्त महामानव निर्मित होंगे, जो धरती पर स्वर्ग की कल्पना को साकार रूप देने में समर्थ हों।

सुसंस्कारिता के लिए संस्कार विधान

प्रगति का प्रकाश ज्यों-ज्यों प्रखर होता जा रहा है, त्यों-त्यों लोग शिक्षा का महत्त्व समझने लगे हैं। गाँव-गाँव स्कूल-कॉलेज खुले रहे हैं। कन्याओं को भी पढ़ाया जा रहा है। प्रयत्न यह भी किया जा रहा है कि प्रौढ़ों में से भी कोई अनपढ़ न रहने पाये। जब शिक्षा का महत्त्व नहीं समझा जाता था, तब गाँव पीछे एक दो पंडित, पुरोहित, जमींदार, साहूकार ही पढ़े होते थे। शेष लोग इस झंझट में पड़ने से यह कहकर मना कर देते थे कि हमारे पास खेती बाड़ी है, कोई नौकरी थोड़े ही करना है, जो पढ़ने-लिखने में बेकार समय खराब किया जाय।

अपने समय का वह भी प्रचलन रहा होगा, पर अब स्थिति बदल गई है। लोग समझने लगे हैं कि बिना पढ़े की स्थिति हर दृष्टि से गई गुजरी होती है। वह न उपयुक्त ज्ञान सम्पादित करके सभ्य जनों की पंक्ति में बैठ सकता है और न उसका उपार्जन ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़-चढ़ कर हो सकता है। श्रेय सम्मान तो मिले ही कैसे ? समय में सुधार होने के उपरान्त विद्यार्थी, अभिभावक, सरकार सभी को यह चिन्ता पड़ी है कि शिक्षा संवर्धन को महत्त्व दिया जाय अन्यथा लोग अनपढ़ गई-गुजरी स्थिति में ही पड़े रहेंगे। सामाजिक, राष्ट्रीय प्रगति के सपने भी धरे रह जायेंगे। तथ्य को ध्यान में रखते हुए सर्व साधारण को शिक्षित बनाने का काम पूरे उत्साह के साथ हाथ में लिया गया है।

इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक उपलब्धि है—"सुसंस्कारिता"। गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो इसका वजन शिक्षा से कम नहीं, वरन् अधिक ही बैठता है। उच्चस्तरीय चिन्तन में संस्कृति की सराहना में बहुत कुछ कहा जाता है। धर्म, अध्यात्म, दर्शन आदि का उसे आधार माना जाता है। भारतीय देव संस्कृति पर हम सभी गर्व करते हैं और कहते हैं कि जब सुसंस्कारिता का वातावरण था, तब सतयुग विराजता था। मनुष्य का व्यक्तित्व देवोपम था। शालीनता और सज्जनता का प्रचलन रहने पर इसी धरती पर स्वर्ग विराजता था। "संस्कृति" शब्द पर अधिक गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, साथ ही यह भी सोचना है कि उसे शिक्षा की तुलना में कम नहीं वरन् अधिक महत्त्व क्यों दिया जाता है ? अब उसके सम्बन्ध में उपेक्षा करते जाने के कारण जन साधारण का स्तर क्यों गिर गया है और उसके कारण क्यों अगणित समस्याओं, संकटों और विभीषिकाओं का सामना करना पड़ रहा है ?

संस्कृति का अर्थ है—"सुसंस्कारिता"। सज्जनता-शालीनता, मानवी गरिमा के अनुरूप मर्यादाओं का परिपालन, वर्जनाओं से बचे रहने का अनुशासन, इन्हीं विशेषताओं के कारण मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है। उसके चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता का समावेश रहता है। गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से वह उस ऊँचाई पर बना रहता है, जिसकी कि सृष्टि के मुकुटमणि समझे जाने वाले स्रष्टा के युवराज। मनुष्य से आशा-अपेक्षा की जाती है।

शिक्षा के आधार पर मनुष्य सुयोग्य बनता है, उसकी जानकारियों की परिधि बड़ी हो जाती है। इस आधार पर उसका लौकिक क्रिया-कलाप ऐसा बन पड़ता है जिसके सहारे साधन सुविधाओं का अधिक उपार्जन हो सके। विचार करने का क्षेत्र अधिक व्यापक हो सके। देखते भी हैं कि अशिक्षितों की तुलना में शिक्षित अधिक सुयोग्य माने जाते हैं और वे प्रगति का लाभ भी अधिक उठाते हैं। इतने पर भी यह ध्यान रखने की बात है कि यदि सुसंस्कारिता की कमी रही तो शिक्षित होना मात्र चतुरताजन्य लाभ उठा सकने की स्थिति ही बना सकेगा। सुसंस्कारिता ही है जिसके गुण, कर्म, स्वभाव के साथ जुड़े हुए अनुबन्ध किसी को सज्जन, प्रामाणिक, प्रतिष्ठित एवं प्रखर-प्रतिभासम्पन्न बनाते हैं। इसी आधार पर व्यक्ति अपना स्तर ऊँचा उठाने और अपने क्रिया-कलाप से सर्वसाधारण का हित साधन करने में समर्थ होता है। ऐसे ही लोग अनुकरणीय, अभिनन्दनीय माने जाते हैं, महामानवों में गिने जाते और समाज में नर रत्न कहे जाते हैं। शिक्षा की सच्ची सार्थकता उसके साथ सुसंस्कारिता जुड़ने पर ही बन पड़ती है, अन्यथा कुसंस्कारी लोग शिक्षित होने पर भी अनगढ़ माने जाते हैं। वे अनाचार अपनाते, असभ्यों जैसी रीति-नीति अपनाते और बिना पढ़े की तुलना में अपनी चतुरता के आधार पर अधिक अनर्थ करते हैं।

शिक्षा संवर्धन के लिए भरपूर प्रयत्न किया जाना चाहिए, किन्तु यह भुला नहीं दिया जाना चाहिए कि सद्गुणों पर आधारित सुसंस्कारिता का अपना मूल्य है। इसके बिना नर वानर बने रहने की ही स्थिति बनी रहती है चाहे शिक्षा किसी भी कक्षा तक क्यों न प्राप्त कर ली जाय ? इसके विपरीत यदि मनुष्य सत्प्रवृत्तियों को अपनाये हुए है तो अन्य अभावों के रहते हुए ही वह ऋषिकल्प जीवन जी सकता है और देव मानव बन सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संस्कृति की उपलब्धि के लिए कुछ आधार सर्वविदित हैं। सत्साहित्य का स्वाध्याय-सत्संग-श्रेष्ठ समुदाय के साथ सम्पर्क-उच्चस्तरीय वातावरण के सहारे व्यक्तित्व निखरते हैं। इसके अतिरिक्त कला, साहित्य, संगीत, अभिनय, तीर्थाटन, परिभ्रमण के सहारे भी मनुष्य किसी विशेष ढाँचे में ढलते हैं। प्रचलनों का प्रवाह भी प्रभावित करता है। मनुष्य समाज को बनाता है। यह उक्ति—उच्चस्तरीय लोगों पर लागू होती है, पर साधारण लोगों के सम्बन्ध में तो यही देखा जाता है कि समाज के, सामाजिक वातावरण के द्वारा व्यक्तियों को ढाला जाता है, इसलिए मूर्धन्य जन इस प्रयास में भी निरत रहते हैं कि समर्थ सज्जन ढालने वाले वातावरण बनें। इस निर्मित प्राचीन काल में बालकों के लिए गुरुकुल, तरुणों के लिए तीर्थ, प्रौढ़ों के लिए आरण्यक निमित्त किये जाते है। देवालयों, धर्म संस्थानों को उसी प्रयोजन के लिए कार्य करना पड़ता था। साधु ब्राह्मण, वानप्रस्थ परिव्राजक समाज को सुसंस्कारी बनाने के लिए ही निरन्तर कार्यरत रहते थे। शिक्षा संवर्धन तो उस प्रयास का आरम्भिक चरण था।

सुसंस्कारिता में प्रतिपादन एवं अभिवर्धन के लिए एक अतिरिक्त धार्मिक प्रयोजन भी प्रचलन में समाविष्ट था। प्रयोग—परीक्षणों ने उसकी उपयोगिता सिद्ध की। सम्पूर्ण मानव जीवन के आवश्यक कृत्यों में उसे सम्मान भरा स्थान मिला।

यह विधा है—संस्कार प्रक्रिया। धर्मशास्त्रों में समय-समय पर मनुष्य के सोलह संस्कार आयोजन किये जाने का विधान है। आयु वृद्धि के साथ-साथ जीवन में अनेक मोड़ आते हैं। उत्तरदायित्वों में हेर-फेर होता है। उसका सांगोपांग शिक्षण करने के लिए समय-समय पर पारिवारिक समारोहों के रूप में संस्कार आयोजन सम्पन्न किये जाते थे। उन दिनों फुरसत और सुविधा का समय था, इसलिए हर व्यक्ति के सोलह संस्कार मनाये जाने के रूप में परिवार संस्था के समग्र शिक्षण का प्रयास निर्बाध रूप में चलता रहता था; पर अब वैसी बात नहीं रही। व्यस्तता, महँगाई और धर्म प्रयोजनों के लिए उपेक्षा बढ़ जाने के कारण उनमें कटौती भी करनी पड़ गयी और विधान को अपेक्षाकृत अधिक सरल भी बनाया गया। समय के प्रवाह के अनुरूप शान्तिकुँज ने संस्कार-प्रक्रिया का समयानुसार निर्धारण एवं प्रचलन किया है।

इन दिनों आवश्यक संस्कार इतने चलते रहे तो भी सुसंस्कारिता संवर्धन का प्रवाह अपनी प्राचीन परम्परा बनाये रहेगा और उनसे मिलने वाले लाभों से लाभान्वित होता रहेगा। सामयिक संस्कार जिनकी गिनती वैसे तो सोलह है, पर उनमें से सात एवं दो सामयिक जन्म दिवसोत्सव तथा विवाह दिवसोत्सव मनाये जाते रहें तो वह महत्त्वपूर्ण प्रयोजन सध सकता है, जिसके निमित्त इनका प्रावधान भारतीय संस्कृति में रखा गया था।

व्यक्तित्व विकास हेतु संस्कार आयोजन

प्रत्यक्ष शिक्षण के दृश्य प्रयोजनों के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति के पुरोधाओं ने ऐसे उपाय भी खोज निकाले थे, जिनके आधार पर अन्तराल की गहराई तक प्रवेश करने और कारण शरीर को प्रभावित करके आस्थाक्षेत्र को परिपक्व किया जा सकता था। उस प्रभाव से विचारणा में उत्कृष्टता का आरोपण होता था तदुपरान्त क्रिया पद्धति में आदर्शवादिता का प्रवाह चल पड़ता था। यह प्रयास 'संस्कार' नाम से जाने जाते हैं। जीवन में सोलह मोड़ आते हैं। इस दृष्टि से संस्कार आयोजनों की संख्या भी सोलह रखी गयी थी। हर मोड़ पर, एक संस्कार।

आज की रीति-नीति में न तो उतने मोड़ रहे हैं और न महँगाई, व्यस्तता, अश्रद्धा आदि के कारण सर्वसाधारण की स्थिति ऐसी रह गई है कि उन सबको यथाविधि उत्साहपूर्वक सम्पन्न करायें। इसलिए अब घटा बढ़ाकर उतने कर लिए गये हैं, जो अधिक महत्त्वपूर्ण और अधिक समीचीन हैं।

व्यक्ति मानवी गरिमा के अनुरूप श्रेष्ठता के साथ जुड़ा रहे, इसी निमित्त संस्कार परम्परा का प्रचलन था। किसी समय इनकी संख्या सोलह थी। हर किसी को जीवन में सोलह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बार इस प्रकार के आयोजन करने पड़ते थे जिनमें सम्बद्ध व्यक्ति को उसके परिजनों, सम्बन्धियों की उपस्थिति में ऐसा बहुत कुछ बताया समझाया जाता था, जो उत्कृष्ट आदर्शवादिता को अपनाये रहने के लिए, उल्लास भरी चेतना उभारने के लिए आवश्यक था।

माता के गर्भ में जीव के स्थिर होने पर पुंसवन नामक संस्कार कराया जाता था, जिसका उद्देश्य था गर्भिणी को उसके शारीरिक मानसिक दायित्वों को समझाना उनका पालन करने पर वह अपना स्वास्थ्य और गर्भस्थ शिशु का उज्जवल भविष्य बनाने में समुचित भूमिका निभा सकती थी। यह सभी सम्बन्धी जनों की उपस्थिति में होता था, ताकि ये सब भी उस मार्यादा के पालन करने में गर्भिणी को समुचित सहयोग संरक्षण प्रदान करते रहें।

इसी प्रकार शिशु के अबोध रहने तक कई संस्कार सम्पन्न हो जाते थे। इनमें से नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारम्भ आदि का प्रचलन अभी भी है। अबोध शिशु तो समारोहों के समय उपलब्ध कराये गये मार्गदर्शन को समझ नहीं पाता था पर परिवार के सभी सदस्य और सम्बन्धीगण उस मार्गदर्शन को भलीभाँति समझ लेते थे और अभिभावक तथा सम्बन्धीजन मिलजुल कर ऐसी रीति-नीति अपनाते थे, जिससे बालक की समग्र प्रगति में इन सभी का समुचित योगदान जुड़ता रहे।

यज्ञोपवीत के समय तक बालक इतनी समझदारी प्राप्त कर लेता था कि अपने विकास की दिशा धाराओं के सम्बन्ध में कुछ करने की स्थिति में पहुँच सके। उपनयन को दूसरा जन्म भी कहते हैं द्विजत्व भी। जन्मजात रूप से सभी अनगढ़ होते हैं। सुसंस्कारिता तो निजी पारिवारिक प्रयत्न से अर्जित करनी पड़ती है। उसमें सामाजिक वातावरण भी सहभागी होता है। उपनयन के अवसर पर इसी का ऊहापोह होता है। शिक्षा का उद्देश्य समझाया जाता है और मानवोचित मर्यादाओं का पालन तथा वर्जनाओं का उल्लंघन न करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध किया जाता है। यही व्रतबंध है। दूसरा जन्म भी।

यह सब सामूहिक रूप से इसलिए किया जाता था कि अन्य लोग भी इसमें सहयोगी बनें और अपने-अपने कार्य क्षेत्र में भी इन परम्पराओं के निर्वाह में प्रयत्नशील रहें।

इसके उपरान्त विवाह संस्कार आता है। इन दिनों उसे क्रीड़ा, विनोद एवं गृह-व्यवस्था पर आधारित माना जाता है। रूप, लावण्य, दहेज आदि को आधार मानकर जोड़ों का चुनाव होता है। हाथ पीले करने और घर बसाने जैसे क्षुद्र-क्षुद्र प्रयोजनों तक ही उसे मान्यता मिल रही है, पर वास्तविकता इससे कहीं अधिक आगे है। दो परिवारों का एक जुट होने, दो व्यक्तियों के परस्पर समर्पित होने और मिल जुल कर ऐसे उद्देश्य पूरे करने की वह विधा है, जिसका प्रभाव परिणाम दूरवर्ती हो। समूचे समाज को उनके संयुक्त प्रयास से अनुकरणीय प्रेरणा मिले। परिवार निर्माण की ऐसी उच्चस्तरीय व्यवस्था बने जिससे सर्वतोमुखी प्रगति का द्वार खुले। वधू अपनी ससुराल को और वर अपनी ससुराल को अधिक प्रगतिशील बनाने के लिए प्रभावशाली भूमिका सम्पन्न करें। समय के अनुरूप प्रजनन पर अकुंश लगाने की प्रतिज्ञा भी अब इसी संस्कार में सम्मिलित कर दी गयी है। गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित अनेक कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों की शिक्षा भी इसी अवसर पर दी जाती है और उनके परिपालन का वातावरण बनाने के लिए अभीष्ट सहयोग देने को उपस्थित जनों से भी प्रतिज्ञा करायी जाती है। इस माध्यम से प्रशिक्षित हुए सभी उपस्थितजन अपने परिवार में भी वैसा ही निर्धारण करने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त करते हैं।

वानप्रस्थ भी गृहस्थ प्रवेश की तरह ही महत्त्वपूर्ण आश्रम माना गया है। आधा जीवन निजी विकास और परिवार निर्वाह के लिए लगाया जाय। शेष आधे को लोक निर्माण के लिए उत्सर्ग करने की योजना ध्यान में रहे। यह भारत की देव संस्कृति की अनादि परम्परा है। इसी आधार पर समाज की बड़ी संख्या में सुयोग्य लोकसेवी मिलते थे और उनके निरन्तर लगन भरे प्रयत्नों से व्यक्ति की, समाज की, सर्वजनीन प्रगति का पथ प्रशस्त होता था। शासकीय कर्मचारियों के बिना ही अनेकों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सृजनात्मक प्रयोजन पूरे होते रहते थे। उस प्रचलन के बन्द हो जाने से समाज को असाधारण क्षति उठानी पड़ रही है। शान्ति कुञ्ज के प्रयत्नों से उस महान परम्परा का अब पुनर्जीवन सम्भव हुआ है।

इन वानप्रस्थों के लिए वैराग्य लेने या घर छोड़ देने जैसा प्रतिबन्ध नहीं है। परिवार की देखभाल रखने, वहीं से अपना निर्वाह लेने और आधा समय सामाजिक प्रयोजन के लिए देते रहने से यह परम्परा निभ जाती है। नये बच्चे उत्पन्न न करना ही ब्रह्मचर्य पालन की आधुनिक परम्परा मानी जा सकती है। इस प्रकार वानप्रस्थ व्रतधारी कार्यकर्ताओं की एक नई बिरादरी का उदय होने से लोकहित के नवसृजन के अनेक प्रयोजनों के प्रगतिशील होने की सम्भावना बन पड़ना सुनिश्चित है।

जन्म दिन और विवाह दिन मनाने के दो वार्षिक संस्कारों को अब संस्कार प्रयोजनों में नया समावेश किया गया है। जन्म दिन पर मनुष्य जीवन की महत्ता का बोध और उसके श्रेष्ठतम सदुपयोग का नये सिरे से चिन्तन किया जाता है और शेष जीवन को अधिक उत्कृष्ट बनाने के लिए नया संकल्प लिया जाता है। विवाह दिन पर पति-पत्नी दोनों एक प्रकार से विवाह कर्त्तव्यों को पुनः दुहराते हैं और पिछले दिनों यदि कुछ व्यतिरेक होता रहा हो तो उसे आगे न होने देने का प्रायश्चितपूर्वक प्रण करते हैं। इस प्रकार वैवाहिक पारिवारिक जीवन को नये सिरे से प्रगतिशील बनाने का इस संस्कार के माध्यम से नया शुभारम्भ होता है।

अंत्येष्टि संस्कार तो सब लोग अपने-अपने ढंग से कर लेते हैं। प्रथा के अनुसार शुद्धि संस्कार भी होते रहते हैं। परिवार वालों का कर्त्तव्य बनता है कि पूर्वजों के प्रति-देव मानवों के प्रति वार्षिक श्रद्धाञ्जलि अर्पण करें। कर्मकाण्ड तो तर्पण जैसी सरल प्रक्रिया से पूरा हो जाता है। पर श्राद्ध तब बन पड़ता है, जब उनकी आत्मा को शान्ति देने के लिए वृक्षारोपण, प्रौढ़शिक्षा प्रसार जैसे उपयोगी कार्यों को स्मृति के रूप में हर वर्ष किया जाता रहे। यही पूर्वजों का सच्चा श्राद्ध तर्पण हो सकता है।

प्राचीनकाल में तीर्थों के दिव्य वातावरण में ऋषिकल्प महाप्राणों के सान्निध्य में इन संस्कारों को कराने के लिए लोग जाया करते थे। पर अब वैसी परिस्थितियाँ बहुत ढूँढ़ने पर भी कहीं नहीं दीख पड़तीं। कहीं भी चिह्न पूजा करने की अपेक्षा यही अच्छा है कि संभ्रान्त समुदाय की उपस्थिति में उन संस्कारों को मिल जुलकर सामूहिक रूप से कर लिया जाय। श्रेष्ठजनों के समुदाय को भी पुरोहित की मान्यता दी जा सकती है।

संस्कार परम्परा का नवजीवन जरूरी

मनुष्य के सांस्कृतिक उत्कर्ष के लिए उसका भावनाजगत विकसित परिष्कृत होना आवश्यक है। प्राप्त जानकारी का उपयोग कोई व्यक्ति श्रेष्ठ प्रयोजन के लिए किया करता है अथवा निकृष्ट कार्यों—चालाकी, धूर्तता आदि के लिए, यह उसके भावना जगत पर ही निर्भर है। उस भावना जगत के परिमार्जन परिष्कार के लिए धार्मिक वातावरण एवं संस्कार परम्परा का नवजीवन जरूरी है।

इन संस्कारों के शिक्षण के औपचारिक स्कूल नहीं बन सकते। अपितु इन्हें तो धार्मिक समारोह के रूप में ही प्रतिष्ठित करने में उचित लाभ सम्भावित हैं।

संस्कार परम्परा की गतिशीलता के लिए सर्व प्रथम तो घरों में धार्मिकता का वातावरण विनिर्मित किया जाना चाहिए। नयी संकीर्णताओं के कारण धार्मिक चित्रों पर घर में लगाना दकियानूसीपन मान लिया जाता है और सिनेचित्रों के उत्तेजक दृश्य, नट-नटनियों की अश्लील मुद्राओं वाले चित्र घर में टांगना आधुनिकता समझा जाता है। अमूर्त चित्रकलाओं की पेण्टिंग्स टांगने का भी प्रचलन बढ़ा है। किन्तु बच्चों के मन-मस्तिष्क में स्वस्थ प्रभाव उत्पन्न करने में तो धार्मिक प्रतीकों, पुराकथाओं तथा देवी-देवताओं से सम्बन्धित सुन्दर चित्र ही समर्थ होते हैं। श्रेष्ठ महापुरुषों, आध्यात्मिक सन्तों के चित्र जो वातावरण उत्पन्न करते हैं, उसका प्रभाव अनुभव की ही वस्तु है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रत्येक घर में उपासना का निश्चित स्थल निर्धारित रहना चाहिए। वहाँ उपासना घर का हर सदस्य करे भले ही थोड़े समय के लिए कर पावे या मात्र प्रणाम कर ५ बार गायत्री मन्त्र ही जपे।

स्वस्थ परम्पराओं का प्रत्येक घर में आग्रह बढ़े। जैसे स्नान के बाद ही भोजन करना, नियमित हवन, गोग्रास, बलिवैश्वदेव, संध्या आरती तथा धर्म घट की स्थापना आदि। श्रद्धा का विकास इन परम्पराओं के ही माध्यम से हो सकता है। बिना किसी विशेष व्यय के सजगता एवं नियमितता के साथ इन परम्पराओं का पालन भाव जगत को उत्कृष्ट संवेदनाओं से सम्पन्न बनाने में अनोखी भूमिका निभाता है। सामाजिक नैतिकता की इन दिनों सर्वत्र आवश्यकता महसूस की जा रही है। उसका उद्‌भव धार्मिक वातावरण के प्रभाव दबाव द्वारा ही सम्भव है। इसीलिए प्रत्येक घर में वैसा वातावरण बनाया जाना आवश्यक है और हर परिवार को संस्कार परम्पराएँ अपनाकर सामूहिक भाव प्रशिक्षण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना ही चाहिए। मनीषियों ने संस्कारों का निर्धारण निरूपण इसी उद्देश्य से किया है।

षोडश संस्कारों में दस प्रधान हैं। उनमें से पाँच ऐसे हैं, जिन्हें बिना पण्डित, पुरोहितों की सहायता के महिलायें बहुत ही अच्छी तरह घरेलू उत्सवों के रूप में खुद ही सम्पन्न कर सकती हैं।

(१) गर्भावस्था में तीसरे महीने होने वाले पुंसवन संस्कार को मनाते हुए परिवार के लोगों को यह समझाया जा सकता है कि नवजात शिशु को सुसंस्कारी बनाने के लिए गर्भिणी की शारीरिक मानसिक स्थिति किस प्रकार सन्तोषजनक रखी जा सकती है और उसके लिए घर के वातावरण में, पारस्परिक व्यवहार में क्या हेर-फेर होना चाहिए।

(२) नामकरण संस्कार में बच्चे का नाम रखने के साथ-साथ उसके जीवन का उद्देश्य निर्धारित करने और उसके अनुरूप घर कसे एक संस्कृति पाठशाला के रूप में बदलने के लिए उस परिवार में किस प्रकार के परिवर्तन अभीष्ट हैं यह सुझाया जा सकता है।

(३) अन्न-प्राशन संस्कार यों होता तो बच्चे का है और उसमें प्रधानतया बच्चे के आहार-विहार के सम्बन्ध में बरती जाने योग्य सतर्कताओं की जानकारी दी जाती है, पर वस्तुतः सारे घर के आहार बिहार की चर्चा की गुंजाइश उसमें रहती है। हम प्रायः अखाद्य खाने और अपेय पीते हैं। उससे पूरे परिवार का स्वास्थ्य नष्ट होता है। इस प्रसंग में अनीति उपार्जन से पेट भरने के क्या दुष्परिणाम होते हैं, इस तथ्य को भी प्रतिपादित करने का अवसर प्राप्त होता है।

(४) मुण्डन संस्कार में बच्चे का मानसिक विकास करने की प्रेरणा मुख्य है ? जन्म जात पशु संस्कारों के प्रतीयक आरम्भिक बाल काटकर उसके स्थान पर संस्कृति की प्रतीक शिखा स्थापित की जाती है। मस्तिष्क पर आदर्शवादी मान्यताओं का अधिकार सिद्ध करने वाली यह धर्म-ध्वजा फहराई जाती है। मुण्डन के समय यह समझाया जा सकता है कि बच्चे का ही नहीं सारे परिवार का मानसिक विकास आवश्यक है ओर उस महान उपलब्धि के लिए किस प्रकार का चिंतन और कर्त्तव्य होना चाहिए।

(५) विद्यारम्भ संस्कार में विद्या की आवश्यकता, उपयोगिता एवं सही दिशा के सम्बन्ध में घर के हर सदस्य को जानकारी मिलती है और यह बताया जाता है कि ज्ञान-सम्पदा के अभिवर्धन में परिवार के हर सदस्य का पूरा उत्साह और अनवरत प्रयत्न बना रहना चाहिए। निरोगता और समृद्धि की तरह ही विद्या-सम्पदा पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए और इसके लिए क्या कैसा किया जाना चाहिए, किन नियमों का पालन करना चाहिए, यह जानकारी इस संस्कार का अंग है। यों पाँचों संस्कार छोटे बालकों के मनाये जाते हैं। पर वस्तुतः बच्चे तो निमित्त हैं। वे तो बेचारे कुछ समझते तक नहीं। आयोजन के वास्तविक शिक्षण पूरे परिवार का तथा उपस्थित सम्बन्धी पड़ौसियों का होता है।

इन पाँच संस्कारों के साथ ही जन्म दिन मनाने की परम्परा अपनाई जानी चाहिए। यह तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुगम तथ्य है कि संस्कार संवर्धन में समर्थ जन्म दिन समारोहों का स्वरूप 'बर्थडे' के नकलची आयोजनों से भिन्न तथा धार्मिकता से युक्त होना चाहिए। व्यक्ति निर्माण की दृष्टि से जन्म दिन मनाने का बहुत महत्त्व है। मनुष्य का जन्म कितना बहुमूल्य है, किस उद्देश्य के लिए मिला है और उस पुण्य-प्रयोजन की पूर्ति के लिए चिन्तन एवं कर्त्तव्य की दिशा क्या होनी चाहिए, इस तथ्य को अनेकों उदाहरण देकर बताया सिखाया जा सकता है और जिसका जन्म दिन है, उसे प्रेरणा दी जा सकती है कि वह अपना सुर दुर्लभ जीवन सार्थक करने के लिए अपनी वर्तमान गतिविधियों में क्या हेर-फेर कर सकता है। यह व्यक्ति निर्माण की शिक्षा है जिससे सभी उपस्थित लोग भी अपने-अपने लिए प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं।

आयोजनों को प्रभावशाली बनाने के फेर में उन्हें खर्चीला भड़कीला बना डालने पर उनकी प्रभावोत्पादकता नष्ट हो जाती है। अतः संस्कार एवं जन्म दिन समारोहों में भावात्मक उभार पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए। उसके लिए सादे, गम्भीरतापूर्ण, भावोल्लास भरे आयोजन ही उचित हैं, जिनमें औपचारिकता के स्थान पर भावात्मक सामीप्य को महत्त्व दिया जाय। ये सभी संस्कार आयोजन ऐसे हैं, जिन्हें महिलाएँ ही मिल जुल कर मना सकती हैं। हवन, कर्मकाण्ड आदि के मन्त्र एवं विधान सभी सरल हैं, जिन्हें शिक्षित महिलाएँ कुछ ही दिनों के प्रयत्न से बहुत अच्छी तरह सीख सकती हैं। ये आयोजन कम खर्च में बड़े ही आकर्षण ढंग से मनाये जा सकते हैं।

संस्कार समारोहों तथा धार्मिक वातावरण द्वारा मानवीय अवचेतन पर अंकुश रखने वाले 'सुपर ईगो' की, उदात्त नैतिक चेतना की प्रतिष्ठा सरलता से की जा सकती है। अतः इन्हें प्रत्येक परिवार में अनिवार्य स्थान दिया जाना आवश्यक है। इनके नव जीवन द्वारा न केवल व्यक्ति चित्त अपितु समूह चित्त का भी परिष्कार परिशोधन सम्भव है। इस दिशा में बढ़-चढ़कर प्रयत्न करना चाहिए।

सुसंस्कारिता, दिव्य प्रेरणा, तीर्थयात्रा एवं मंगलमयी शुभ कामना पाने का सम्मिलित सुयोग

आयुर्वेदीय रस भस्मों द्वारा रसायनें बनाते समय उन पर कई-कई बार अग्नि संस्कार किए जाते हैं। कई-कई रस भावनाएँ देकर घुटाई की जाती है। इसी प्रकार व्यक्तित्व में उच्च स्तरीय सत्प्रवृत्तियों का समावेश करने के लिए षोडश संस्कारों की परम्परा है। गर्भावस्था में प्रवेश करने के समय से लेकर मरणपर्यन्त सोलह बार हर व्यक्ति को धर्मानुष्ठानों की विशेष प्रक्रिया द्वारा प्रभावित किया जाता है। यही संस्कार आयोजनों की प्रक्रिया है। बच्चों को चेचक, पोलियो, तपेदिक आदि के टीके लगाने पर इसलिए जोर दिया जाता है कि इन रोगों के आक्रमण रोकने के लिए समय रहते सुरक्षा व्यवस्था बना ली जाय। षोडश संस्कारों को भी इसी स्तर के प्रयत्न प्रयोग माना जा सकता है। आध्यात्मिक स्तर की चिकित्सा प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए ही विभिन्न प्रकार के धर्मानुष्ठानों का सृजन हुआ है। षोडश संस्कारों की परम्परा को भी ऐसी ही सारगर्भित विधि व्यवस्था माना जाना चाहिए। कभी यह पद्धति सही रूप में कार्यान्वित होती थी, तब उसके प्रतिफल भी प्रत्यक्ष रहते थे। हर घर में नर-रत्ना का उद्भव जिन कारणों से होता था, उनमें एक महत्त्वपूर्ण पक्ष संस्कार विधानों का भी था।

षोडश संस्कारों का प्रचलन अब क्रमशः समाप्त होता जा रहा है। पुरोहितों ने उसे इतना खर्चीला और आडम्बरी बना दिया है कि उसके लिए धन ही नहीं; श्रम-समय जुटाने और जहाँ-तहाँ साधन जुटाने के लिए भाग-दौड़ की परेशानी उठाने की हिम्मत ही नहीं पड़ती। अश्रद्धा के वातावरण ने इस अस्त-व्यस्त खर्चीली एवं कष्ट-साध्य प्रक्रिया को और भी अधिक निरुत्साहित किया है। लाभ न समझा सकने वाले पुरोहितों का आधिपत्य इस सम्बन्ध में बरती जाने वाली अश्रद्धा का प्रमुख कारण है।

इतने पर भी इन बहुमूल्य निर्धारणों को नष्ट-भ्रष्ट होने से रोकने तथा निहित स्वार्थों की बपौती न बनने देने की दिशा में प्रयत्न करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की आवश्यकता अनुभव ही की जाती रहेगी। निराशा ग्रस्त होकर उस ऋषि परम्परा को छोड़ बैठने से तो अपना ही नहीं भावी पीढ़ियों का भी अहित है। जब अन्य क्षेत्रों की अवाँछनीयताएँ हटाने के प्रयत्न चल रहे हैं तो धर्म मंच से लोक-शिक्षण की भूमिका पूरी तरह निभा सकने में समर्थ षोडश संस्कार किये जाने की महान धर्म परम्परा को ही क्यों उपेक्षित पड़ा रहने दिया जाय ? उसे क्यों अस्त-व्यस्त नष्ट-भ्रष्ट होने दिया जाय ?

यों प्रज्ञा संस्थानों के माध्यम से जन्मदिन विवाह दिन समेत अन्य सभी संस्कारों को कराने की प्रक्रिया को गतिशील बनाने के लिए आवश्यक शिक्षा एवं प्रेरणा दी जाती रही है तो भी जितना चाहिए उतना उत्साह अभी उभरा नहीं है। उस ओर ध्यान दिया जाना और प्रयत्न किया जाना चाहिए। इन प्रयोगों का अध्यात्म विज्ञान सम्मत महत्त्व है। उनके माध्यम से मनुष्य में सुसंस्कारिता का रहस्यमय आरोपण हो सकता है और उस बीजारोपण का प्रतिफल कभी विशालकाय वट-वृक्ष की तरह शोभा; सुषमा; छाया और फल-फूलों से लदा हुआ दृष्टिगोचर हो सकता है। इसके अतिरिक्त इन आयोजनों का लोकशिक्षण की दृष्टि से परिवारों में बहुमुखी सत्प्रवृत्तियों का आरोपण अभिवर्धन की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। सांस्कृतिक चेतना से रहित होते जाने वाले परिवारों में इस माध्यम से धर्म धारणा अपनाने के लिए भावना उभारने वाला वातावरण बन सकता है।

इस दिशा में एक नया कदम यह उठाया गया है कि प्रज्ञा परिजनों के परिवारों को सुसंस्कारी बनाने की दृष्टि से षोडश संस्कारों के करने-कराने की विशेष व्यवस्था बनाई गई है। मुण्डन आदि संस्कार अभी भी तीर्थ स्थानों में कुल देवी कुल देवता के सान्निध्य में कराने का प्रचलन है। विवाह के उपरान्त वर-वधू ऐसे स्थानों का दर्शन करने जाते हैं। श्राद्ध अस्थि विसर्जन आदि के निमित्त भी लोग ऐसे ही पुनीत स्थानों में पहुँचते हैं। उन विभेद बिखरावों को समेटकर यह अधिक उपयुक्त होगा कि एक देवता और एक तीर्थ की मान्यता उभरे और इस प्रयोजन की पूर्ति के लिये प्रज्ञा परिवार आगे आयें।

प्रज्ञा परिजनों का एक केन्द्रीय तीर्थ, एक इष्ट, एक गुरु द्वारा होना चाहिए। ऐसा हुआ तो वे एक भावना केन्द्र से बँधकर परस्पर स्नेह श्रृंखला में आबद्ध रह सकेंगे। अन्यथा जिस प्रकार मत-मतान्तरों में छिन्न-भिन्न होकर हिन्दू समाज टुकड़े-टुकड़े हो गया, उसी प्रकार गायत्री-परिवार भी नाममात्र के लिए एक मार्ग अपनाने वाला कहलाता रहेगा। उसके बीच कोई ऐसा ध्रुव केन्द्र न रह जायेगा, जो उन्हें भाव श्रृंखला की किसी सशक्त श्रृंखला में जकड़े रह सके। इस आवश्यकता की पूर्ति समय रहते करनी चाहिए और कुछ पारिवारिक प्रसंगों में कभी न कभी शान्तिकुञ्ज पहुँचने की आवश्यकता अनुभव की जानी चाहिए। इसके लिए बालकों को षोडश संस्कार की दिवंगत पितरों के श्राद्ध तर्पण की आवश्यकता वहाँ आकर करने की परम्परा चल पड़नी चाहिए।

तीर्थ यात्रा के लिए अब शान्तिदायक प्रकृति सान्निध्य तीर्थ एक ही बचा है उत्तराखण्ड। शेष सभी तीर्थ शहरी घिचपिच और व्यवसायिक दृष्टि के साथ जुड़ी हुई दुष्प्रवृत्तियों से सरावेर बन गये है। वहाँ खुली साँस लेने तक की जगह नहीं बची है। कभी यह देश ऋषियों का, देवताओं का निवास-स्थल रहा होगा। कभी यहाँ देव-संस्कृति का गुरुकुल आरण्यक परम्परा का प्रचलन रहा होगा। इसकी टूटी-फूटी झाँकी करने के लिए हिमालय की ओर नहीं देखना पड़ता है। हरिद्वार उसका प्रवेश-द्वार है। गंगा, यमुना, सरयू, मंदाकिनी, जान्हवी, अलखनन्दा, राम गंगा आदि प्रमुख पवित्र नदियों का उद्गम तलाश करना हो तो हिमालय की ओर ही दृष्टि उठानी पड़ती है। सप्त ऋषियों की अन्यान्य योगी तपस्वियों की आश्रय-स्थली का गुफा संस्कृति का दर्शन न हीं होता है। सिद्ध पुरुषों का अस्तित्व यदि इस धरती पर कहीं हो सकता है तो हिमालय ही होना चाहिए। यह हिमालय शिवालिक पर्वत श्रृंखला के साथ हरिद्वार से ही आरम्भ होता है। तीर्थ यात्रा का आनन्द यदि सचमुच ही लेना हो तो हिमालय की दिशा में चलने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुसलमानों का एक धर्म केन्द्र है काबा। ईसाई येरुशलम को याद करते हैं। संसार भर के बौद्ध बोधगया की यात्रा करते हैं। गायत्री परिजनों का प्रजातीर्थ शान्ति कुञ्ज रहना चाहिए। वहाँ बच्चों के नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत संस्कारों के लिए पहुँचना चाहिए। विवाह से पूर्व का आशीर्वाद अथवा उसके बाद का माथा टेकने के लिए वहाँ पहुँचने का निश्चय करना चाहिए। जन्मदिन, विवाह दिन मनाने के लिए यह स्थान मंगलमय, सौभाग्य संवर्धक, उज्जवल भविष्य में सहायक सिद्ध होने वाला समझा जाना चाहिए। आदर्श विवाहों का प्रचलन हमें करना ही होगा। खर्चीली शादियाँ कम से कम गायत्री परिवार से तो विदा होनी ही चाहिए। इसके लिए गायत्री तीर्थ पहुँचकर पड़ोसी सम्बन्धियों की भीड़ और उनकी चित्र-विचित्र सलाहों फरमाइशों से बचा जा सकता है। इसके अतिरिक्त वसन्त पर्व, गायत्री जयन्ती, शरद पूर्णिमा ऐसे कुछ विशेष पर्व नियत किये जा सकते हैं, जिनमें विवाह योग्य लड़के लड़कियाँ तथा उनके अभिभावक एकत्रित होकर अपने-अपने स्तर के चुनाव कर सकें।

भारतीय समाज की विभिन्न प्रकार की धार्मिक आवश्यकताएँ हैं, जिनकी पूर्ति शास्त्रीय ढंग एवं देव संस्कृति स्तर से करने के लिए शान्तिकुञ्ज पहुँचा जा सकता है। दिव्य स्थानों को तीर्थ कहा गया है। दिव्य आशीर्वाद का मंगलमय प्रभाव होने की मान्यता है। यह सभी प्रयोजन शान्तिकुँज पहुँचने पर पूरे होते हैं। संस्कार कराने की बिना खर्च वाली पूर्ण शास्त्रोक्त पद्धति साथ ही उस अवसर पर मिलने वाले किसी सशक्त आशीर्वाद की अपेक्षा सभी लोग करते हैं। उसके लिए भटकाव को निरस्त करके किसी न किसी केन्द्र का आश्रय लेना होगा। इस आधार पर संगठित रहने, प्रेरणाएँ पाने और उज्जवल भविष्य का निर्धारण करने का सुयोग एक साथ मिलता है।

प्रसन्नता की बात है कि इस प्रयोजन के लिए परिवार समेत शान्तिकुञ्ज पहुँचने, वहाँ ठहरने, तीर्थ यात्रा सम्पन्न करने जैसी सुविधाएँ नये सिरे से बनाई गई हैं। स्वीकृति प्राप्त करके ही आने का जो प्रचलन आरम्भ से ही चला आ रहा है वह तो आगे भी रहेगा। उसमें ढील डालने से ही पूरी अव्यवस्था, अराजकता अन्धेरगर्दी फैल जायेगी।

संस्कार एवं पर्वों का विधान सिखाने के शिविर

सुसंस्कृत जीवन ही मनुष्य जन्म की सार्थकता है। कुसंस्कारी व्यक्ति तो धरती के लिए भार और अपने आप के लिए अभिशाप ही है। यह संसार तथाकथित स्वर्ग से भी अधिक मनोरम हो उठे, यदि यहाँ लोगों के विचार और कार्य सुसंस्कृत ढाँचे में ढल जायें। यह एक ही आवश्यकता ऐसी है, जिस पर व्यक्ति और समाज की सर्वाङ्गीण सुख-शान्ति निर्भर है।

तत्वदर्शी ऋषियों ने धर्म एवं अध्यात्म का विशालकाय कलेवर एक ही उद्देश्य लेकर खड़ा किया है कि मानव प्राणी के ऊपर जन्म-जन्मान्तरों से चढ़े हुए कुसंस्कार दूर हों और उनके स्थान पर सुसंस्कृत आदर्शों, सिद्धान्तों, मान्यताओं, भावनाओं एवं प्रवृत्तियों का विकास हो सके। पूजा, उपासना, जप, तप, कथा, वार्ता, सत्संग, स्वाध्याय, विधि-निषेध एवं कर्म-काण्डों का विस्तृत विधि-विधान केवल इसी प्रयोजन के लिए है कि इस अवलम्बन को अपनाकर व्यक्ति निरन्तर सुविकसित एवं सुसंस्कृत बनता चला जाय। कषाय-कल्मषों का परिशोधन ही हो। स्वर्ग, मुक्ति एवं ईश्वर-साक्षात्कार का यह एक मात्र साधन हो सकता है। हमारा सारा धार्मिक कलेवर इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए है।

सर्वसाधारण के मानसिक, चारित्रिक एवं भावनात्मक विकास के लिए एक सर्वांग सुन्दर विधान 'संस्कारों' का है। हिन्दू-धर्म की यह अनुपम विधि-व्यवस्था उसे लाखों-करोड़ों वर्षों तक विश्व का मुकुट-मणि बनाए रखने में समर्थ रही है। हमारे पूर्वज इस तथ्य को भली-भाँति जानते थे कि जहाँ व्यक्ति के आन्तरिक विकास के लिए शिक्षण, चिन्तन, साधन एवं वातावरण की श्रेष्ठता अपेक्षित है, वहाँ यह भी आवश्यक है कि एक भावनात्मक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं प्रेरणात्मक धर्म परम्परा का प्रचलन हो। विशेष वातावरण में विशेष उद्देश्य के लिए, विशेष विधि-विधानों का प्रभाव भी विशेष ही पड़ता है। वेद-मन्त्रों की अद्भुत शक्ति, यज्ञ आदि वैज्ञानिक शक्ति सम्पुटों का सान्निध्य एवं धर्मानुष्ठानों का समारोह सम्बन्धित लोगों पर ऐसा अदृश्य प्रभाव छोड़ता है कि व्यक्तियों के अन्तःकरण का विकास स्वल्प प्रयत्न से भी ऊर्ध्वगामी होता चला जाता है। यह संस्कारों की विधि-व्यवस्था वैज्ञानिक, भावनात्मक एवं प्रशिक्षण की दृष्टि से इतनी प्रभावशाली है कि उसका सत्य परिणाम लाखों वर्षों तक प्राप्त करते रहने के अनुभव को ध्यान में रखा जाय तो किसी प्रकार के अविश्वास या सन्देह की गुंजायश ही नहीं रह जाती।

व्यक्ति और परिवार को सुसंस्कृत बनाने के लिए पुंसवन, नामकरण, अन्न-प्राशन, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, वानप्रस्थ आदि का अत्यधिक महत्त्व है। इसी प्रकार समाज को सामूहिक रूप से सुसंस्कृत बनाने के लिए श्रावणी, पितृअमावस्या, विजया-दशमी, दिवाली, वसन्त पंचमी, शिवरात्रि, होली आदि पर्वों की विधि-व्यवस्था ऐसी प्रेरणाप्रद है कि यदि ठीक रीति से मनाया जाय तो नैतिक गुणों का समाज में आशाजनक बाहुल्य बना रहे। व्यक्ति और समाज का सुसंस्कारित होना इतनी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है कि अन्य समस्त अभावों के रहते हुए भी केवल इसी एक आधार पर, इस धरती पर स्वर्ग का अवतरण दृष्टिगोचर होता रह सकता है।

खेद है कि आज षोडश संस्कार पंडित-पुरोहितों की थोड़ी-बहुत आजीविका के साधन और जन-साधारण की प्रथा-परम्परा की पूर्ति के मात्र साधन बने हुए हैं, उनमें से प्राण-प्रेरणा और प्रशिक्षण का तत्व ही एक प्रकार से चला गया। इसी प्रकार पर्व-त्यौहार भी पकवान-मिष्ठान्न खाने और मकान-कपड़े आदि सजाने की लकीर मात्र पीटने से पूरे हो जाते हैं, कोई ऐसा सामूहिक कार्यक्रम नहीं रहता, जिससे समाज में नई चेतना, स्फूर्ति एवं निष्ठा का प्राणवान संचार हो। अपनी इन संस्कार एवं पर्वों की महान् परम्पराओं को खोकर आज हम मणिहीन सर्प की तरह निस्तेज एवं अवसादग्रस्त हो रहे हैं।

नव-निर्माण की इस पुण्य-बेला में हमें जहाँ अन्य अनेक रचनात्मक कार्यक्रम अपनाने हैं, वहाँ संस्कार एवं पर्वों को मनाने की प्रेरणाप्रद पद्धति को भी पुनर्जीवित करना है। इस दिशा में उपेक्षा बरतने से काम न चलेगा। जन-जागरण के लिए यह दोनों ही अवलम्बन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए 'अखण्ड-ज्योति परिवार' प्रज्ञा परिवार के सदस्यों को बार-बार बहुत जोर देकर यह कहा जा रहा है कि वे अपने घर-परिवार में, शाखा-समाज में संस्कार एवं पर्वों को प्रेरणाप्रद ढंग से मनाने की प्रथा को पूरे उत्साह एवं मनोयोग के साथ आरम्भ करें।

संस्कार एवं पर्व मनाने की पद्धति अब अपेक्षाकृत और भी अधिक सरल बनादी गई है। इसके लिए सस्ते छोटे-छोटे ट्रैक्ट प्रत्येक पर्व-संस्कार को मनाने के लिए अलग से छाप दिये गये हैं। शान्तिकुञ्ज में होने वाले शिविरों में यह विधि-विधान हर बार सिखाया जाता है। सारे समाज में इन महान् परम्पराओं को पुनः प्रचलित करने के लिए इतना ही पर्याप्त न होगा, वरन् इससे भी अधिक बड़ा काम उठाना होगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए अब ऐसा सोचा गया है कि जगह-जगह संस्कार एवं पर्वों को मनाने की विधि-व्यवस्था का प्रशिक्षण देने के लिए जगह-जगह शिविर किये जायें, जिनमें शाखाओं के उत्साही कार्यकर्त्ता एवं उस क्षेत्र के पण्डित-पुरोहित का कार्य करने वाले इन विधानों को भली प्रकार सीख सकें। विधानों के साथ-साथ भाषण एवं व्याख्या करते हुए जन-जीवन में नव-चेतना उत्पन्न करने के प्रयोजन को भी पूरा कर सकें।

संस्कारों और त्यौहारों में सामूहिकता की आवश्यकता

भारतीय संस्कृति का उद्देश्य व्यक्ति को और उसके द्वारा समाज को धर्म परायण एवं कर्त्तव्यनिष्ठ बनाना है। ये ही दो बातें किसी भी मनुष्य को सुसंस्कृत कहलाने का अधिकार देती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। इसलिए हमारी प्राचीन संस्कृति के सभी आदर्श और विधि-विधान ऐसे रखे गये हैं कि उनके द्वारा मनुष्य की भौतिक उन्नति होने के साथ-साथ मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी उसका उत्थान हो।

हिन्दू-समाज में प्रचलित जात कर्म, यज्ञोपवीत, विवाह आदि से लेकर अन्त्येष्टि क्रिया तक जो सोलह संस्कार प्रचलित हैं, उनका मुख्य उद्देश्य यही है कि उनके द्वारा संस्कार किये जाने वाले व्यक्ति पर और दर्शकों पर भी कल्याणकारी प्रभाव पड़े। इन संस्कारों में प्रयोग किये जाने वाले वैदिक मन्त्रों में एक विशेष प्रकार की सूक्ष्मशक्ति पाई जाती है और शिक्षाएँ भी उच्च कोटि की दी गई हैं। उनसे लोगों पर बहुत उत्तम मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ सकता है बशर्ते कि संस्कारों को उनका आशय समझकर उपयुक्त ढंग से किया जाय। जिस समय हमारे समाज में उनका वास्तविक रूप में प्रचार था और ज्ञानी ऋषि मुनियों द्वारा वे शास्त्रीय विधान से प्रयुक्त किये जाते थे, उसी काल में ऐसे व्यक्ति उत्पन्न हुए हैं, जिनका नाम व यश सहस्रों वर्ष बीत जाने पर अभी तक स्थिर है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि मनुष्य के चरित्र-निर्माण और मनोभूमि को सुसंस्कृत बनाने के लिए ये संस्कार भारतीय संस्कृति की महान देन हैं।

इन संस्कारों के महत्त्व और लाभों को देखते हुए हमारा कर्त्तव्य है कि उनमें समयानुकूल थोड़ा-बहुत परिवर्तन करके उनका अपने घरों में प्रचार करें। यदि समस्त संस्कारों का करना कठिन जान पड़े तो भी जन्मोत्सव तथा यज्ञोपवीत संस्कार तो अच्छे रूप में मनाना ही चाहिए। इनमें सबसे पहली बात इनको सामूहिक रूप देने की है। यज्ञोपवीत संस्कार को तो यदि बड़े-बड़े यज्ञों के अवसर पर सामूहिक रूप से किया जाय तो समाज का बड़ा उपकार हो सकता है। वर्तमान समय में इस संस्कार को बड़ा खर्चीला बना दिया गया है, जिससे अधिकांश व्यक्तियों ने उसका करना ही बन्द कर दिया है और बहुत से विवाह के समय ही उसकी रस्म भी नाम मात्र को पूरी कर देते हैं। इसलिए आजकल इस संस्कार को यदि बड़े-बड़े यज्ञों के अवसर पर सामूहिक रूप से किया जाय तो सब तरह लाभ ही है। इन यज्ञों में सब प्रकार की व्यवस्था, योग्य आचार्य, उत्सव की तैयारियाँ पहले से ही होती हैं। उस समय यज्ञोपवीत पूर्णतः शास्त्रानुकूल रीति से हो सकता है और इतने बड़े जन समुदाय के समक्ष प्रतिष्ठित व्यक्तियों के हाथ से ग्रहण करने के कारण उसका महत्त्व भी हृदय पर अंकित हो जाता है। यज्ञोपवीत की यह व्यवस्था लाभदायक ही नहीं वरन् वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए हम तो इसे अनिवार्य ही मानते हैं। यदि इसे नहीं अपनाया जाएगा तो धन तथा श्रद्धा दोनों के अभाव से कुछ समय में इसका चिह्न भी शेष न रहेगा।

इसी प्रकार जन्म दिन का जन्मोत्सव संस्कार भी कम से कम खर्च में सामूहिक हवन करके या केवल सत्संग करके ही अवश्य करना चाहिए। इसमें मुख्य बात तो वे शिक्षाएँ हैं, जो इस अवसर पर विद्वान और अनुभवी जनों से प्राप्त होती हैं। इन सब अवसरों पर सामूहिकता का ध्यान अवश्य रखना चाहिए, क्योंकि कलियुग में इसी का सर्वाधिक महत्त्व है। सामूहिक कार्यक्रमों से पारस्परिक प्रेमभाव, आत्मीयता एवं संगठन शक्ति की वृद्धि होती है और अनेकों कठिन समस्याएँ स्वयमेव हल हो जाती हैं।

जिस प्रकार व्यक्तिगत जीवन के उत्थान और निर्माण के लिए संस्कारों की रचना की गई है, उसी प्रकार समस्त समाज को संगठित और सुसंस्कृत बनाने के लिए हमारे पूर्वजों ने विभिन्न त्यौहारों की स्थापना की थी। इनमें से प्रत्येक त्यौहार के भीतर एक विशेष आदर्श निहित है जिससे व्यक्ति को समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व की शिक्षा मिलती है। यह एक प्रत्यक्ष बात है कि केवल लिखने-पढ़ने या उपदेश देने से मनुष्य पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है, पर बड़े-बड़े प्रदर्शनों और उत्सवों द्वारा उसे ये उपयोगी शिक्षाएँ सहज ही में दी जा सकती हैं। फिर हमारे देश में तो अभी पढ़े-लिखे व्यक्तियों की संख्या ही नाम मात्र को है। खास कर ग्रामीण जनता तो अब भी अधिकांश में निरक्षर ही है। इसलिए प्राचीन काल के महापुरुषों और सभी देवियों के चरित्रों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्मरण कराने वाले त्यौहारों का आदर्श रूप में मनाना समाज के लिए सब प्रकार से हितकारी है।

पर इसके लिए सबसे पहली बात यह है कि समय के प्रभाव से त्यौहारों के मनाने में जो हानिकारक रूढ़ियाँ घुस गई हैं और उनका जो विकृत रूप हो गया है उसका सुधार अवश्य करना चाहिए। उदाहरण के लिए होली हमारे यहाँ का सबसे बड़ा सामूहिक त्यौहार है, और समाज के संगठन का उससे बढ़कर दूसरा अवसर मिल नहीं सकता। पर धीरे-धीरे लोगों ने उसको ऐसा बिगाड़ दिया है और इतनी अधिक गन्दगी उसमें भर दी है, कि ज्यादातर भले आदमी तो उसमें भाग लेना तो दूर उस दिन घर से बाहर निकलना भी पसन्द नहीं करते। वह एक प्रकार से हुल्लड़बाजों और आवारा ढंग के लोगों का उत्सव बन गया है। इसी प्रकार दीवाली में भी जुआ खेलने की ऐसी परिपाटी चला दी है कि उससे हजारों व्यक्तियों का सर्वनाश हो जाता है। जो त्यौहार इतने अधिक नहीं बिगड़े हैं, वे भी केवल चिह्न-पूजा के रूप में रह गये हैं और उनका उद्देश्य पकवान, मिष्ठान बनाकर खा लेना और कोई छोटा-मोटा कर्मकाण्ड कर लेना ही रह गया है। यह स्थिति वास्तव में बड़ी निराशाजनक है। जिस देश या जाति के प्रेरणा-दायक सामाजिक उत्सव और त्यौहार शिथिल और विकृत हो जाते हैं, वहाँ का समाज भी दुर्बल हो जाता है।

यदि हम भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान करना और उपने समाज को सुदृढ़, सुसंगठित और सभ्य लोगों के सम्मुख खड़े होने लायक बनाना चाहते हैं, तो हमको अपने यहाँ व्रत, त्यौहारों और उत्सवों की प्राचीन परिपाटी को पुनर्जीवित करना होगा और उनमें समयानुकूल नवीन हितकारी बातों का समावेश भी करना होगा। इस कार्य में हमारे गायत्री-परिवार की शाखाएँ बहुत कुछ भाग ले सकती है। इसमें सबसे पहली आवश्यकता तो यह है कि ये संस्कार और त्यौहार समस्त देश में एक ही विधि-विधान से मनाये जाने चाहिए। इसका एक मात्र उपाय यही है कि प्रत्येक संस्कार एवं त्यौहार के शास्त्रीय रूप को समझकर उसके आधार पर ही उसमें वर्तमान परिस्थिति के अनुकूल हितकारी तत्वों का समावेश करके उसका कार्यक्रम निश्चित करना चाहिए। इसके लिए प्रत्येक स्थान की शाखाएँ अपने सदस्यों तथा अन्य जनता को भी, जो भाग लेने को राजी हो, एक सार्वजनिक स्थान पर अथवा अपने "गायत्री शक्ति पीठों" में एकत्रित करके इन्हें सामूहिक रूप से मनाने की व्यवस्था करें। संस्कार आयोजनों के धार्मिक और आकर्षक तत्वों की रक्षा करते हुए उसके पीछे जो आदर्श और इतिहास हो, उसे प्रवचन, उपदेश, भजन, कीर्तन, नाटक आदि द्वारा जनता के अन्तःकरण में उतारने का प्रयत्न किया जाय। जहाँ अभी "गायत्री शक्ति पीठें" न हों वहाँ किसी अन्य अच्छे सार्वजनिक मन्दिर में या किसी सदस्य के घर पर ही कार्यक्रम रखा जा सकता है।

इस प्रकार हमारा हर एक संस्कार और त्यौहार व्रतोत्सव, पर्व आदि एक सार्वजनिक सामूहिक सम्मेलन का रूप धारण करके समाज के लिए हितकारी सिद्ध हो सकता है। उसका मुख्य उद्देश्य जनता में नैतिकता और सचरित्रता के भावों का उत्पन्न करना ही होना चाहिए। इससे हमारे सांस्कृतिक पुनरुत्थान में भी काफी सहायता मिल सकती है।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

संस्कार प्रकरण

संस्कारों की आवश्यकता और पृष्ठभूमि

आयुर्वेदिक रसायनें बनाने की अवधि में उन पर कितने ही संस्कार डाले जाते हैं। कई बार कई प्रकार के रसों में उन्हें खरल किया जाता है और कई बार उन्हें गजपुट द्वारा अग्नि में जलाया, तपाया जाता है, तब कहीं वह रसायन ठीक तरह तैयार होती है और साधारण-सी राँग, जस्ता, ताँबा, लोहा, अभ्रक जैसी कम महत्त्व की धातु चमत्कारिक शक्ति सम्पन्न बन जाती है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य को भी समय-समय पर विभिन्न आध्यात्मिक उपचारों द्वारा सुसंस्कृत बनाने की महत्त्वपूर्ण पद्धति भारतीय तत्ववेत्ताओं ने विकसित की थी, उसका परिपूर्ण लाभ इस देशवासियों ने हजारों लाखों वर्षों से उठाया है। यों किसी व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने के लिए शिक्षा, सत्संग, वातावरण, परिस्थिति, सूझ-बूझ आदि अनेक बातों की आवश्यकता होती है। सामान्यतः ऐसे ही माध्यमों से लोगों की मनोभूमि विकसित होती है। इसके अतिरिक्त भारतीय तत्ववेत्ताओं ने मनुष्य की अन्तः भूमि को श्रेष्ठता की दशा में विकसित करने के लिए कुछ ऐसे सूक्ष्म उपचारों का भी आविष्कार किया है, जिनका प्रभाव शरीर तथा मन पर ही नहीं सूक्ष्म अन्तः करण पर भी पड़ता है और उसके प्रभाव से मनुष्य को गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से समुन्नत स्तर की ओर उठने में सहायता मिलती है।

इस आध्यात्मिक उपचार का नाम संस्कार है। भारतीय धर्म के अनुसार संस्कार १६ प्रकार के हैं, जिन्हें 'षोडश संस्कार' कहते हैं। माता के गर्भ में आने के दिन से लेकर मृत्यु तक की अवधि में समय-समय पर प्रत्येक भारतीय धर्मावलम्बी को १६ बार संस्कारित करके एक प्रकार का आध्यात्मिक रसायन बनाया जाता था। प्राचीन काल में प्रत्येक भारतीय इसी प्रकार का एक जीता जागता रसायन होता था। मनुष्य शरीर में रहते हुए भी उसकी आत्मा देवताओं के स्तर की बनती थी। यहाँ के निवासी 'भूसुर' अर्थात् पृथ्वी के देवता माने जाते थे। उनके निवास की यह पुण्य भूमि भारत माता 'स्वर्गादपि गरीयसी' समझी जाती थी, संस्कारवान् व्यक्तियों को तथा उनके निवास स्थान को ऐसा गौरव मिलना उचित भी था।

हमारी प्राचीन महत्ता एवं गौरव-गरिमा को गगनचुम्बी बनाने में जिन अनेक सत्यवृत्तियों को श्रेय मिला था, उसमें एक बहुत बड़ा कारण यहाँ की संस्कार पद्धति को भी माना जा सकता है। यह पद्धति सूक्ष्म अध्यात्म विज्ञान की अतीव प्रेरणाप्रद प्रक्रिया पर अवलम्बित है। वेद मन्त्रों के सस्वर उच्चारण से उत्पन्न होने वाली ध्वनि तरंगें, यज्ञीय उष्मा के साथ सम्बद्ध होकर अलौकिक वातावरण प्रस्तुत करती हैं। जो भी व्यक्ति इस वातावरण में एक होते हैं या जिनके लिए भी उस पुण्य प्रक्रिया का प्रयोग होता है वे उससे प्रभावित होते हैं। यह प्रभाव ऐसे परिणाम उत्पन्न करता है, जिससे व्यक्तियों के गुण, कर्म, स्वभाव आदि की अनेक विशेषताएँ प्रस्फुटित होती हैं। संस्कारों की प्रक्रिया एक ऐसी आध्यात्मिक उपचार पद्धति है, जिसका परिणाम व्यर्थ नहीं जाने पाता। व्यक्तित्व के विकास में इन उपचारों से आश्चर्यजनक सहायता मिलती देखी जाती है।

संस्कारों में जो विधि विधान हैं, उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव मनुष्य को सन्मार्गगामी होने के उपयुक्त बनाता है। संस्कार के मन्त्रों में अनेक ऐसी दिशाएँ भरी पड़ी हैं, जो उन परिस्थितियों के लिए प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी हैं। पुसंवन संस्कार के समय उच्चारण किए जाने वाले मन्त्रों में गर्भवती रहन-सहन, आहार-विहार सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रशिक्षण मौजूद हैं। इस प्रकार विवाह में दाम्पत्य जीवन की, अन्नप्राशन में भोजन-छाजन की, वानप्रस्थ में सेवापरायण जीवन की आवश्यक शिक्षाएँ भरी पड़ी हैं। उन्हें यदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई प्रभावशाली वक्ता, ठीक ढंग से समझाकर संस्कार के समय उपस्थित लोगों को बता सकें, तो जिनका संस्कार से सम्बन्ध है, उन्हीं को नहीं वरन् दूसरे सुनने वाले लोगों को भी सन्देश से आवश्यक कर्त्तव्यों का ज्ञान हो सकता है और वे भी जीवन को उचित दिशा में ढालने के लिए तत्पर हो सकते हैं।

परिवार को संस्कारवान् बनाने की, कौटुम्बिक जीवन को सुविकसित बनाने की एक मनोविज्ञान एवं धर्मानुमोदित प्रक्रिया को संस्कार पद्धति कहा जाता है। हर्षोत्सव के वातावरण में देवताओं की साक्षी, अग्निदेव का सान्निध्य, धर्म भावनाओं से ओत-प्रोत मनोभूमि, स्वजन सम्बन्धियों की उपस्थिति, पुरोहित द्वारा कराया हुआ धर्म कृत्य, यह सब मिल-जुलकर संस्कार से सम्बन्धित व्यक्तियों को एक विशेष प्रकार की मानसिक अवस्था में पहुँचा देते हैं और उस समय जो प्रतिज्ञायें की जाती हैं—जो प्रक्रियाएँ कराई जाती हैं, वे अपना गहरा प्रभाव सूक्ष्म मन पर छोड़ती हैं और वह बहुधा इतना गहरा एवं परिपक्व होता है कि उसकी छाप अमिट नहीं तो चिरस्थाई अवश्य बनी रहती है।

एक शिक्षा सामान्य ढंग से रास्ता चलने, उथले 'मूड' में कह दी जाय तो उसका प्रभाव दूसरा होगा और उसी बात को धर्म सम्मिश्रित गम्भीर वातावरण में कहा जाय तो उसका प्रभाव अन्य प्रकार का होता है। मजाक में किसी की झूँठी कसम खाई जा सकती है पर गंगाजी में खड़े होकर या गंगाजली हाथ में रखकर गम्भीरतापूर्वक कसम खाना कुछ दूसरा ही अर्थ रखता है। व्यभिचारी लोग अपनी प्रेमिका को लम्बे-चौड़े आश्वासन देते रहते हैं उनकी कोई कीमत नहीं होती, पर विवाह संस्कार के अवसर पर सात भाँवर फिरते हुए जो वचन दिए जाते हैं, उनका वर-वधू दोनों पर ऐसा अमिट प्रभाव पड़ता है कि वे आजीवन परस्पर एक-दूसरे से बंधा हुआ ही अनुभव करते हैं। यों ध्यान से देखा जाय तो उस भाँवर फिरने का कोई विशेष मूल्य दिखाई नहीं पड़ता। भाँवर फिरना, गांठ जोड़ना, सात कदम साथ-साथ चलना इन सब बातों में साधारण से खेलकूद में होने वाले श्रम से अधिक क्या कोई विशेषता दिखाई पड़ती है ? इनमें तो और भी कम श्रम लगता है। किन्तु जिस भावना के साथ जिस वातावरण में विवाह विधान की छोटी-छोटी विधियाँ पूरी की जाती हैं, उनकी ऐसी मनोवैज्ञानिक छाप पड़ती है कि उससे जीवनभर इन्कार नहीं किया जा सकता।

यही मनोविज्ञान सम्मत धर्म विधान अन्य सब संस्कारों के अवसर पर काम करता है। उनके द्वारा अन्तर्मन पर ऐसी छाप डाली जाती है, जो किसी व्यक्ति को सुसंस्कृत, सुविकसित, सौजन्ययुक्त एवं कर्त्तव्यपरायण बनाने में समर्थ हो सके। ऋषियों ने अपनी आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक शोधों के आधार पर इस पुण्य प्रक्रिया का निर्माण किया है। वह जितनी प्रभावशाली पूर्वकाल में थी, उतनी ही आज भी है, यदि उसे ठीक ढंग से, उचित व्यवस्था के साथ, उपयुक्त वातावरण में सम्पन्न किया जाय तो।

परिष्कृत एवं सरल प्रक्रिया

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन संस्कार पद्धतियों को आधार मानकर यह संशोधित एवं परिष्कृत प्रक्रिया प्रस्तुत की गई है। इसमें निम्न बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है, (१) संस्कार कराने में बहुत अधिक समय न लगे। (२) प्रत्येक संस्कार में आवश्यक शिक्षाओं का समुचित समावेश हो। (३) विधान ऐसा सरल हो जिसमें करने वाले को विशेष कठिनाई न हो।

आमतौर से संस्कार पद्धति में विधान तो दिए गये हैं पर उनकी आवश्यकता, उपयोगिता एवं पृष्ठभूमि नहीं बताई गई है। इस पुस्तक में यह प्रयत्न किया गया है कि प्रतीक क्रिया के साथ-साथ यह भी बता दिया जाय कि ऐसा क्यों कराया जा रहा है।

कोई व्यक्ति संस्कारों की संगति पदार्थ-विज्ञान से जोड़ते रहते हैं। वे कहा करते हैं, कान छेदने से बवासीर नहीं होता। मुण्डन कराने से सिर दर्द नहीं उठता। इस प्रकार के प्रतिपादन अक्सर काल्पनिक होते हैं। कोई डॉक्टर या वैज्ञानिक इसका खण्डन कर दें, तो पुरोहित को अपना कथन वापिस लेना पड़ेगा। हमें झंझट में नहीं पड़ना चाहिए। कोई स्थूल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लाभ होते हों, पदार्थ विज्ञान से किसी संस्कार की कोई उपयोगिता सिद्ध होती हो तो कोई हर्ज नहीं पर उसी पर अवलम्बित होना उचित नहीं। प्रत्येक धार्मिक कर्मकाण्ड का मुख्य आधार मनोविज्ञान एवं अध्यात्म है। यह भी तो एक विज्ञान है, स्थूल विज्ञान से उसकी उपयोगिता एवं क्षमता किसी भी प्रकार कम नहीं वरन् अधिक ही है। पुण्य-पाप, सदाचार-दुराचार में अन्तर करना पदार्थ विज्ञान से नहीं, धर्म विज्ञान से ही सम्भव हो सकता है। बहिन और पत्नी का अन्तर धर्म सिखाता है—विज्ञान नहीं। इसलिए जहाँ मानवीय अन्तःकरण को विकसित करने का प्रश्न उपस्थित होता है, वहाँ विज्ञान की कुछ उपयोगिता नहीं, वहाँ तो आस्था, विश्वास, उदारता, सद्भावना जैसी मनोवृत्तियाँ सहायक होती हैं। संस्कारों का वैज्ञानिक दृष्टि से क्या महत्त्व है ? इस पर विवाद करना व्यर्थ है। उनके आध्यात्मिक एवं मानवीय लाभ इतने अधिक हैं कि उनकी तुलना में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में मिल सकने वाले सभी लाभ तुच्छ सिद्ध होते हैं। संस्कार पद्धति निश्चित रूप से एक विज्ञान सम्मत एवं प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाने वाली प्रक्रिया है, पर उसका प्रतिपादन प्रयोगशालाओं के भौतिकविज्ञानियों द्वारा नहीं वरन् आध्यात्मिक लाभों, सामाजिक सत्परिणामों एवं मनोवैज्ञानिक तथ्यों के द्वारा ही समझा और प्रतिपादित किया जाना चाहिए।

सोलह संस्कारों में से अब सभी की उपयोगिता नहीं रही। जो उपयोगी हैं, उन्हें भी यदि ठीक प्रकार मनाया जाने लगे तो बहुत कुछ प्रयोजन सिद्ध हो सकता है। प्राचीन काल में लोगों के आहार-विहार परिष्कृत थे। विवाह होने से पूर्व युवक अखण्ड ब्रह्मचर्य धारण किये रहते थे, और पूर्ण युवा होने पर ही विवाह करते थे ऐसी स्थिति में वे भी अन्य प्रकृत के अनुरूप चलने वाले पशु-पक्षियों की तरह जब चाहते थे तब गर्भ धारण में सफलता प्राप्त कर लेते थे। आज वैसे स्वास्थ्य नहीं रहे, इसलिए सब कुछ अनिश्चित है। गर्भाधान संस्कार किया भी जाय और गर्भ स्थापित भी न हो तो उलटा और उपहास होगा। इन बातों पर विचार करते हुए वह संस्कार अब अव्यावहारिक बन गया है।

इसी प्रकार जात कर्म संस्कार भी अब अटपटा बन गया है। बालक का जन्म होते समय, जबकि प्रसूति का सारा अशुद्ध आच्छादन बिखरा पड़ा है—हवन करने या संस्कार करने का उचित काल नहीं है। अच्छे-अच्छे कर्मकाण्डी और धर्म परायण लोग भी उसे कर नहीं पाते। फिर सर्वसाधारण के सामने उपस्थित असुविधाओं को देखते हुए तो वह असम्भव जैसा ही बन गया है। गर्भिणी के लिए पुंसवन और सीमन्त दो संस्कार हैं। आज जब कि एक भी नहीं बन पड़ता तो दो-दो की व्यवस्था कौन करे ?

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए संस्कारों की संख्या इस पुस्तक में सोलह से घटाकर १० कर दी गई है। इन पर भी यदि जोर दिया जा सके तो उसका परिणाम भी कम नहीं होगा। फिर जिन्हें सुविधा हो वे १६ करें। उसके लिए पुरानी पद्धतियाँ मौजूद हैं। इस पुस्तक में उन्हीं संस्कारों को लिया गया है, जो आज भी उपयोगी हैं और जिन्हें करने के लिए प्रयत्न किया ही जाना चाहिए। प्रयत्न यह किया गया है कि इस प्रकार जिन संस्कारों को छोड़ना पड़ा है उनकी महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाएँ एवं शिक्षाएँ उन संस्कारों में जोड़ दी जायें जिन्हें उन्हीं दिनों मनाया जाता है। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त इन तीनों की प्रमुख प्रक्रिया गर्भवती के लिए नियत एक ही संस्कार में जोड़ दी गई है। जातकर्म और नामकरण का विधान सम्मिलित बना दिया गया है। विद्यारम्भ, उपनयन एवं समावर्तन का विधान एक ही यज्ञोपवीत संस्कार में है। कोई महत्त्वपूर्ण बात छूटने न पावे इसका यथा सम्भव पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है।

बच्चों का नाक, कान छेदन-पुरानी परम्पराओं के अनुसार भले ही आभूषण धारण करने या शोभा श्रृंगार का माध्यम माना जाता रहा हो, पर आज विवेकशील क्षेत्रों में उसकी उपयोगिता स्वीकार नहीं की जाती। इतना ही नहीं स्वास्थ्य एवं सफाई की दृष्टि से उसे हानिकारक ही माना जाता है। अब शोभा श्रृंगार की कसौटी नाक, कान छेदना या शरीर पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लीला गुदाना नहीं रह गये हैं। इस विचार परिवर्तन के पीछे तथ्य भी है और बल भी। इसलिए कर्णवेध संस्कार को भी हटा दिया गया है। हमारे सामने परम्परा ही नहीं उपयोगिता की कसौटी भी प्रस्तुत है। उन्हीं परम्पराओं को प्रचलित रखने के हम पक्षपाती हैं, जो अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकें।

दो नये किन्तु उपयोगी संस्कार

दो संस्कार इस पद्धति में नए बढ़ाए गये हैं– (१) जन्मोत्सव, (२) विवाहोत्सव। इन्हें हर व्यक्ति हर साल मना सकता है।

(१) मनुष्य के लिए इस संस्कार में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उसका अपना व्यक्तित्व निर्माण ही है। अपना नाम, अपना रूप, अपना यश, अपना धन सबको प्यारा लगता है। अपना जन्मदिन भी किसी व्यक्ति के लिए उसके अवतरण की सुखद स्मृति का सबसे आनन्ददायक दिन हो सकता है। उसे हर्षोत्सव के रूप में मनाते हुए भला किसको प्रसन्नता न होगी ? बच्चों का जन्मदिन मनाने की प्रथा हमारे देश में सर्वत्र प्रचलित है। विदेशों में बड़े आदमियों का जन्मदिन भी उनके जीवन के व्यक्तिगत विशेष त्यौहार के रूप में मनाये जाने की प्रथा है। इष्ट-मित्र, स्वजन सम्बन्धी एकत्रित होकर उस दिन अपनी शुभ कामनाएँ व्यक्त करते और आमोद-प्रमोद मनाते हैं। हमारे यहाँ इसे जीवन समस्या पर विचार करने, शेष जीवन को अधिक परिष्कृत बनाने, मानव जीवन के उपलब्ध सौभाग्य पर सन्तोष अनुभव करने और स्वजन सम्बन्धियों को, इष्ट-मित्रों को इन अभिव्यक्तियों में सम्मिलित करने के रूप में मनाया जाता है।

(२) इसी प्रकार विवाहोत्सव भी महत्त्वपूर्ण है। विवाह से ही हर व्यक्ति अपने नये परिवार एवं समाज का निर्माण करता है। आत्म-भाव को द्विगुणित करने की अद्भुत आध्यात्मिक क्रान्ति विवाह द्वारा ही मूर्तिमान होती है। वह दिन हर गृहस्थ के लिए बड़ा प्रेरणाप्रद है। अनेक सामाजिक उत्तरदायित्व गृहस्थ के साथ ही कन्धे पर आते हैं। उन्हें गाड़ी के दो पहियों की तरह स्त्री-पुरुष मिल-जुलकर अग्रसर करते हैं। ऐसा शुभ दिन एक हर्षोल्लास के रूप में मनाया ही जाना चाहिए। उस दिन को अतीत की स्मृति को ताजा करने वाले एक जीवन्त संस्मरण के रूप में मनाया जाना चाहिए और उन प्रतिज्ञाओं को हर वर्ष दुहराना चाहिए, जो विवाह के दिन दोनों ने गृहस्थ की सार्थकता के लिए की थीं। ऐसा करने से वैवाहिक जीवन में जिम्मेदारियों को निबाहने के लिए नई प्रेरणा एवं स्फूर्ति मिलती है।

यह दो उत्सव हर व्यक्ति के जीवन में एक नया संदेश एवं उल्लास लेकर आते हैं। इन्हें मनाने की व्यवस्था में थोड़ा धन और समय लगे तो चिन्ता नहीं करनी चाहिए। इसके बदले में जो मिलने वाला है, वह अधिक महत्त्वपूर्ण एवं अधिक मूल्यवान है। जिनके घर में और कोई हर्षोत्सव मनाने का अवसर नहीं है उन्हें भी वर्ष में दो बार आनन्द-विभोर होने एवं अपने इष्टमित्रों के साथ प्रमुदित होने का अवसर मिल सकता है। संगठन की दृष्टि से सामाजिकता, सामूहिकता एवं स्नेह सौहार्द्र बढ़ाने की दृष्टि से भी यह आयोजन उत्तम है। इष्ट-मित्रों से बार-बार मिलना-जुलना होता रहे तो उससे आत्मीयता बढ़ती है और यह बढ़ती हुई मैत्री कुछ न कुछ सत्परिणाम ही उत्पन्न करती है।

युग निर्माण योजना में विवेकशील सज्जनों का संगठन सबसे पहला काम है। इन दिनों हर्षोत्सवों के माध्यम से यह उद्देश्य अधिक आसानी और तेजी से पूरा होता रह सकता है। बार-बार निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति के सम्बन्ध में चर्चा करना निरर्थक नहीं कहा जा सकता। उसका परिणाम नव-निर्माण आन्दोलन को सफल बनाने की दृष्टि से उत्साहवर्द्धक ही हो सकता है।

संस्कारों की पद्धति परिवार प्रशिक्षण की सर्वोत्तम पद्धति है आमतौर से घर के लोगों का असर घर वालों पर नहीं पड़ता। 'अति परिचय से अवज्ञा' वाली उक्ति के विरुद्ध कुछ सिखाना समझाना सम्भव नहीं होता। दूसरी बात यह भी है कि कोई बात बार-बार कही जाती रहे और उसे एक ही व्यक्ति कहे तो वह कानों के अभ्यास में आ जाती है और फिर उसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। संस्कारों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रथा प्रचलित करके हम इस कमी को दूर कर सकते हैं। सुयोग्य पुरोहित या वक्ता बाहर के आदमी होते हैं, उनके तर्कपूर्ण प्रवचन प्रभावित करते हैं। फिर उस धर्मानुष्ठान के अवसर पर वातावरण एवं 'मूड' भी ऐसा लगता है कि कोई शिक्षाप्रद बात गम्भीरता से सुनी समझी जा सके। परिवार में कई लोग होते हैं। किसी न किसी का कोई न कोई संस्कार आता ही रहता है। फिर जन्मोत्सव का भी तो क्रम चलाया जाता है। इस प्रकार साल में दो बार तो घर में संस्कार आयोजन की बात बन ही सकती है और इस बहाने परिवार के प्रशिक्षण का ठोस क्रम व्यवस्थित रूप से चलता रह सकता है। इन आयोजनों में लोगों से बहुत कुछ कहने समझने का अवसर मिल सकता है और वह प्रेरणा यदि तर्क और तथ्यपूर्ण हो तो उसका प्रभाव एवं परिणाम होना ही चाहिए। व्यक्तियों के स्वभाव में, पारिवारिक वातावरण में एवं लोक व्यवहार में हमें अनेक सत्प्रवृत्तियों का समावेश करना है। रचनात्मक सत्कर्म में लोक-मानस को संलग्न करना है, उसके लिए प्रथम कार्य प्रेरणा देना ही तो है। कोई बात पहले विचार में आती है तभी तो उसके कार्यरूप में परिणत होने का अवसर आता है। बीज बोने के बाद ही तो पौधा उगने की आशा बँधती है। विचार बीज है तो कर्म पौधा। सत्प्रवृत्ति के रूप में सत्कर्म के बीज बोने के लिए संस्कार आयोजन सामर्थ्य रखते हैं।

संस्कार—क्रम व्यवस्था

संस्कारों की व्यवस्था सामूहिक यज्ञों, साप्ताहिक यज्ञायोजनों, प्रज्ञासंस्थानों तथा घरों पर भी की जा सकती है। प्रयास यह किया जाना चाहिए कि संस्कार कराने वालों को व्यवस्था में परेशान न होना पड़े। उपकरणों से लेकर विशेष सामग्री आदि की व्यवस्था शाखा परिजन अपनी ओर से करें। प्रज्ञा संस्थान या शाखा केन्द्र पर भी सभी संस्कारों से सम्बन्धित वस्तुएँ सहज क्रम में आसानी से संचित रह सकती हैं। संस्कार कराने वालों को एक-एक वस्तु के लिए बहुत समय और श्रम लगाना पड़ता है। यदि घरों पर संस्कार कराये जावें तो भी उनके जिम्मे वही व्यवस्थाएँ दीं जायें जो वे सुगमता से कर सकें। प्रज्ञा संस्थानों एवं बड़े यज्ञायोजनों में तो पूरी व्यवस्था रखी ही जाती है।

कार्यक्रम प्रारम्भ करने से पूर्व सारी व्यवस्था जमा ली जाय। यदि किसी वस्तु की कमी हो तो उसके लिए हो—हल्ला मचाकर वातावरण में तनाव पैदा न किया जाय। शान्त मस्तिष्क में विचार करके यदि समय पर सहज क्रम में व्यवस्था हो सकती है तो उसके लिए प्रामाणिक व्यक्ति को जिम्मेदारी सौंपकर कार्य प्रारम्भ कराया जा सकता है। यदि व्यवस्था होती न दिखे तो संस्कार कराने वालों के मन में अभाव का कुसंस्कार न जमने दिया जाय। चुपचाप विवेकपूर्ण उसका विकल्प मन में बना लिया जाय। किसी वस्तु के अभाव से कर्मकाण्ड में जो कमी आती है, उसकी पूर्ति सशक्त भावना तथा उल्लास भरे क्रम से हो जाती है। परन्तु अभाव के संस्कार या तनाव से भावना कुण्ठित होती है और उससे होने वाली कमी-कमी ही रह जाती है। संचालकों को भावना और उल्लास का वातावरण कायम रखने की कला में प्रवीणता प्राप्त करनी चाहिए।

सारी व्यवस्था जमाकर संस्कार कराने से सम्बद्ध प्रमुख पात्रों को बुलाकर नीचे लिखे क्रम से कर्मकाण्ड चलाया जाय। यह क्रम घरों या स्वतन्त्र रूप से देव स्थलों पर संस्कार कराने की दृष्टि से बनाया गया है। सामूहिक यज्ञायोजनों में आवश्यकतानुसार थोड़ा-बहुत हेर-फेर कर लिया जा सकता है।

(१) संस्कार कराने वालों पर भद्रं कर्णेभिः ..... मन्त्र के साथ अक्षत वर्षा करते हुए उन्हें आसन पर बिठाया जाय। यह इसी पुस्तक में यज्ञारम्भ के स्थल पर है।

(२) यज्ञ एवं पूजन के लिए जिन्हें बिठाला गया है, उन सबको षट्कर्म कराया जाय।

(३) षट्कर्म के बाद संक्षेप में संस्कार का उद्देश्य और महत्त्व समझाते हुए उन्हें संकल्प कराया जाय। यज्ञ संकल्प के अनुसार ..... नामाहं के आगे यह संकल्प जोड़ें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल पाने के लिए आत्मा कल्याण, लोक मंगल, वातावरण परिष्कार एवं उज्जवल भविष्य के लिए संस्कार का महत्त्व और उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुए, देव आवाहन एवं यज्ञादि सहित संस्कार कर्म, श्रद्धा, निष्ठापूर्वक सम्पन्न करने का संकल्प हम करते हैं।

(४) संस्कार कर्म करने वालों का यज्ञोपवीत बदलवायें। यदि वह पहले से न पहने हों तो संस्कार कर्म के लिए अस्थाई रूप से ही पहना दें। उन्हें समझा दें कि यज्ञोपवीत-व्रत बन्ध कहा जाता है। संस्कारों के लिए व्रतशील जीवन जीना चाहिए। उसके पुण्य प्रतीक रूप में यज्ञोपवीत धारण कर लें। यदि वे स्थाई उत्साह दिखायें तो उन्हें समझा दें कि यह यज्ञोपवीत तब तक काम देगा, जब तक स्थाई संस्कार नहीं करा लेते। यज्ञोपवीत परिवर्तन के लिए मन्त्र यदि न हो तो यज्ञोपवीत संस्कार से देख लें।

बायें हाथ में यज्ञोपवीत देकर गायत्री मन्त्र के साथ उस पर जल के छींटे लगवायें। फिर निर्धारित क्रम के साथ पाँच देव शक्तियों का आवाहन कराकर, धारण मन्त्र के साथ यज्ञोपवीत धारण करा दें।

(५) इसके बाद रक्षा सूत्र-कलावा बाँधें और तिलक करें। यह कार्य आचार्य स्वयं करें या अपने किसी सहयोगी-प्रतिनिधि से करवायें। मन्त्रादि यज्ञ प्रकरण में हैं।

(६) इतना करके संक्षिप्त हवन विधि के क्रम से रक्षा विधान तक का कर्मकाण्ड पूरा करें।

(७) रक्षा विधान के बाद कर्मकाण्ड विशेष के विशिष्ट कर्मकाण्ड प्रेरक व्याख्याओं सहित संकल्प करायें। यह सब सम्बन्धित संस्कारों में दिये गये हैं। केवल विशेष आहुति एवं आशीर्वाद बाद के लिए रोक लेने चाहिए।

(८) इन कृत्यों के बाद अग्नि स्थापना से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ कराने का क्रम संक्षिप्त हवन विधि से चलाया जाय।

(९) अब विशेष आहुतियाँ, संस्कार की मर्यादानुसार क्षीर मिष्ठान्नादि से कराएँ।

(१०) विशेष आहुति के बाद स्विष्टकृत आहुति से लेकर विसर्जन के पूर्व तक के क्रम समय एवं परिस्थिति के अनुसार करा लिए जावें।

(११) अन्त में आशीर्वाद का क्रम भाव भरे वातावरण में किया जाय। तब विसर्जन करा दिया जाय। आशीर्वाद के लिए मंगल मन्त्र इसी पुस्तक के अन्त में दिए हैं। उनमें से आवश्यकतानुसार प्रयोग कर लेना चाहिए।

अग्नि स्थापना करके गायत्री मन्त्र की इच्छानुसार आहुतियाँ कराई जावें। ५ आहुतियाँ विशेष मन्त्रों से करायें। स्विष्टकृत आहुति से लेकर विसर्जन तक के क्रम पूरे करें। विसर्जन से पूर्व आशीर्वाद आदि का क्रम पूरा करके, विसर्जन करा दिया जाय।

समय की सीमा ध्यान में रखते हुए कर्मकाण्ड तथा व्याख्याओं का संक्षेप या विस्तार कर लेना चाहिए। सन्तुलन ऐसा बनाना चाहिए कि विशेष कर्मकाण्ड तथा उससे सम्बन्धित प्रेरणाओं को उभारने के लिए पर्याप्त समय मिल जाय। जहाँ समय की कमी हो, वहाँ यज्ञ एवं कर्मकाण्ड की टिप्पणियाँ न्यूनतम करते हुए विशेष कर्मकाण्ड के लिए समय बचा लेना चाहिए।

संस्कार आयोजन के अन्तर्गत दुहरी प्रक्रिया चलती है। एक तो जिसका संस्कार है, उसके अन्तःकरण में दिव्य वातावरण में वांछित श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण किया जाता है। साथ ही उन बीजों को विकसित और फलित करने के मुख्य सूत्रों पर सबका ध्यान खींचने तथा आस्था जमाने का क्रम भी चलता है। बीजारोपण शिशुओं से लेकर वयस्कों तक में समान रूप से होता है, परन्तु उसे फलित करने के सूत्रों को विकसित मस्तिष्क ही समझ और ग्रहण कर पाते हैं। इन दोनों ही प्रक्रियाओं को जीवन्त बनाये रखकर ही संस्कारों को प्रभावशाली बनाया जाता है। कर्मकाण्ड संचालकों को व्याख्यायें, टिप्पणियाँ तथा समग्र प्रवाह इन दोनों बातों को ध्यान में रखकर ही बनाना चाहिए। इसके विपरीत शिक्षण-प्रेरणा तथा क्रिया और भावना दोनों को ही संतुलित ढंग से उभारा जाना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभिषेक-आशीर्वचन

नीचे अभिषेक और आशीर्वचन के मन्त्र दिये जा रहे हैं। कर्मकाण्ड में जहाँ, कहीं इन क्रियाओं की आवश्यकता पड़े वहाँ इनमें से कुछ मन्त्रों का उपयोग सुविधानुसार किया जा सकता है।

अभिषेक-मन्त्राः

गणाधिपो भानुशशी धरासुतो
बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ।
राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।। १।।

उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनो
धर्मो यमो वायु हरी चतुर्भुजः।
गन्धर्वः यक्षोरगसिद्धचारणा,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।। २।।

मनुर्मरीचिर्भृगुदक्षनारदाः
पाराशरो व्यास वशिष्ठभार्गवाः।
वाल्मीकि कुम्भोद्भव गर्ग गौतमाः
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।। ३।।

नलो दधीचिः सगरः पुरूरवा
शाकुन्तलेयो भरतो धनंजयः।
रामत्रयं वेणुवलीयुधिष्ठराः
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।। ४।।

रम्भा शची सत्यवती च देवकी
गौरी च लक्ष्मीरदितिश्चरुविमणी।
कूर्मो गजेन्द्रः सचराचराधरा
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।। ५।।

गंगा च शिप्रा यमुना सरस्वती
गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा।
सा चन्द्रभागा वरुणा त्वसीनदी
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।। ६।।

तुंग प्रभासः कुरुक्षेत्र पुष्करं
गया विमुक्तो बदरी वटेश्वरः।
केदार पम्पासरसीं च नैमिषं
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।। ७।।

शंखश्च दूर्वासितपत्र चामरं
मणिः प्रदीपो वररत्नकाञ्चनम्।
सम्पूर्ण कुम्भः सुहुतो हुताशनः
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।। ८।।

प्रयाण काले यदि वा सुमंगले
प्रभातकाले च यदाऽभिषेचने।
धर्माय कामाय जयाय भाषितं
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।। ९।।

आशीर्वचनानि

मन्त्रार्थाः सफला सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रुभ्यो भयनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।। १।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।
धान्यंधनं पशुं बहुपुण्यभंशतसंवत्सरं दीर्घमायुः।। २।।

आयुर्दोणसुते श्रियो दशरथे शत्रुक्षयो राघवे,
ऐश्वर्यं नहुषे गतिश्च पवने मानं च दुर्योधने।
शौर्यं शांतनवे बलं हलधरे सत्यं च कुन्तीसुते,
विज्ञानं विदुरे भवन्तु भवतः कीर्तिश्च नारायणे।। ३।।

लक्ष्मीररुन्धतीचैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्थाङ्गिराः।। ४।।

स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्चषण्मुखः।
विवस्वान्भगवान्स्वस्ति करोतु तव सर्वशः।। ५।।

ब्रह्माणी चैव गायत्री सावित्री श्रीरुमासती।
अरुन्धत्यनुसूया च त सन्तु फलप्रदाः।। ६।।

ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च सूर्यादिसकलाग्रहाः।
सौभाग्यं ते प्रयच्छन्तु वेदमन्त्राश्च कल्पकाः।। ७।।

विशेष ज्ञातव्य

प्रत्येक संस्कार में गायत्री हवन विधि का पूरा कर्मकाण्ड है। जिस कर्मकाण्ड का जो विशेष विधान है वह तीन स्थानों में विभक्त है। (१) रक्षा विधान के बाद विशेष पूजन उपचार। (२) गायत्री मन्त्रों की आहुतियों के बाद स्विष्टकृत होम से पहले खीर की विशेष आहुतियाँ। (३) विसर्जन से पूर्व फलदान, आशीर्वाद। संकल्प में जिस संस्कार को करना हो उसी का नामोच्चारण किया जायेगा।

सामान्य हवन प्रकरण

सभी संस्कारों के विशिष्ट कर्मकाण्ड सामान्य पूजन आदि क्रम में रक्षा विधान के तथा अग्नि स्थापन के बीच में किये जाते हैं। यज्ञीय प्रकरण विस्तृत व्याख्या सहित **"यज्ञ का ज्ञान विज्ञान"** नामक खण्ड में दिया जा चुका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है फिर भी सुविधा की दृष्टि से संक्षेप में यहाँ भी दिया जा रहा है।

।। मंगलाचरणम् ।।

संस्कार से सम्बन्धित व्यक्तियों पर निम्न मंत्र के साथ अक्षत छोड़े जावें।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः।।

[केवल नामकरण संस्कार के अवसर पर 'पवित्री करण' से पहले 'अभिषेक' के निमित्त निम्न मन्त्र भी बोला जाता है। इसके लिए माता और बच्चा स्नानादि से शुद्ध हो, स्वच्छ वस्त्र पहिन कर वेदी के सम्मुख बैठें। आचार्य यह मन्त्र पढ़ते हुए उन पर पुष्प द्वारा जल छिड़कें]

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

पवित्रीकरणम्

इस मन्त्र से हाथ में जल लेकर मस्तक तथा शिर पर छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु पुण्डरीकाक्षाय पुनातु।

आचमनम्

निम्नलिखित मन्त्रों से तीन बार आचमन करें—

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।। १।।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।। २।।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।। ३।।

शिखाबन्धनम्

निम्न मन्त्र पढ़कर शिखा में गाँठ लगावें।

ॐ चिदूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

प्राणायाम मन्त्रः

निम्न मन्त्र पढ़कर कम से कम एक बार प्राणायाम करें।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः।

न्यासः

बायें हाथ की हथेली में थोड़ा-सा जल लेकर दाहिने हाथ की अँगुलियों से, निम्न मन्त्रों द्वारा शरीर के अलग-अलग अंगों को स्पर्श कीजिए।

ॐ वाङ्मे आस्येऽस्तु। (मुख को।)
ॐ नसोर्मेप्राणोऽस्तु। (नासिका के दोनों छिद्रों को।)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों को।)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों को।)
ॐ बाहोर्मे बलमस्तु। (दोनों बाहों को।)
ॐ ऊर्वोर्मेऽओजोस्तु। (दोनों जंघाओं को।)
ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।

(इससे सब शरीर पर जल छिड़कें।)

पृथ्वीपूजनम्

निम्न मन्त्र पढ़कर पृथ्वी पर जल, अक्षत, पुष्प छोड़ें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम्।

चन्दन धारणम्

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

यज्ञोपवीतधारणम्

निम्न मन्त्र बोलकर नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

पुराना यज्ञोपवीत उतारना

निम्न मन्त्र पाठ करते हुए पुराना यज्ञोपवीत गले में से ही होकर निकालना चाहिए।

ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।।

आचार्यवरणम्

यजमान निम्न मन्त्र बोलते हुए आचार्य के दायें हाथ में कलावा (मंगल सूत्र) बाँधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षायाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आचार्यतिलकम्

निम्न मन्त्र बोलते हुए यजमान आचार्य के तिलक करें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

यजमानवरणम्

निम्न मन्त्र पाठ के साथ आचार्य यजमान के दायें हाथ में मंगल सूत्र बाँधे।

ॐ यदाबन्ध्नदाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्य मानाः। तन्मऽआबध्नामि शत शारदायायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्।

यजमानतिलकम्

आचार्य निम्न मन्त्र बोलते हुए यजमान के तिलक करें।

ॐ स्वति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

संकल्पः

दायें हाथ में अक्षत, पुष्प, जल आदि लेकर बायाँ हाथ नीचे लगाकर जो शुभ कर्म करना हो उसके लिए निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए। संकल्पकर्ता को रिक्त स्थानों में प्रस्तुत मास, पक्ष, बार, तिथि का ठीक उच्चारण करते हुए स्वनाम तथा गोत्र को बोलना चाहिए। अन्त की लाइन में जो संस्कार करना हो उसी संस्कार का नाम लेना चाहिए, जो उस समय किया जा रहा हो।

ॐ तत्सद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणे द्वितीये परार्धे, श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे भूलोके जम्बूद्वीपान्तर्गते भरतखण्डे आर्यवर्तैक देशान्तरर्गते ..... मासें ..... पक्षें ..... तिथौं ..... वासरें ..... गोत्रोत्पन्नः ..... नामाऽहं स्वात्मनः सुख सौभाग्य समृद्ध्यर्थं सकल परिजनानां च कल्याणार्थं (पुंसवन) (नामकरण) संस्कारमहं करिष्ये।

पंचामृत बनाना

क्रमशः एक-एक मंत्र बोलते हुए एक वस्तु पात्र में डालते जायें।

पंचामृत में दूध मिलाने का मन्त्र

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

दही

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ँषि तारिषत्।।

घृत

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिशो उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

शहद

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्य्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

तुलसी पत्र

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामह शतं धामानि सप्त च।।

पंचामृत पान

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्या नाम मृतस्य नाभिः। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्टः।

मार्जन

देव कार्य में आने वाली सभी वस्तुओं को पुष्प से जल के छीटें लगाना चाहिए।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। ॐ महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथा च नः।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीप-पूजनम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्य्यो ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।

कुशपवित्रधारणम्

देव कर्म करने वाले का हाथ, मन पवित्र होना चाहिए। कुशायें पवित्रता का प्रतीक मानी गई हैं। पवित्र प्रयोजनों में प्रयुक्त होती हैं। उनकी बनी अँगूठी को पवित्री कहते हैं, कुशाओं को सिर यज्ञोपवीत, कटि प्रदेश में भी धारण किया जाता है ताकि इन क्षेत्रों को भी पवित्र बनाये रखने का स्मरण रहे। तर्पण में कुश-कूँची भी इसीलिए प्रयुक्त होती है कि अपनाई गयी पवित्रता के साथ पूजा-उपचार ऊर्ध्वगामी बने और देवलोक तक पहुँचे। निम्न मन्त्र बोलते हुए पवित्री धारण करें—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

कलश पूजनम्

दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर कलश की प्रतिष्ठा, पूजा करें—

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मान ऽ आयुः प्रमोषीः॥

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि। गंधाक्षतपुष्पाणि धूपं दीपं नैवेद्यं समर्पयामि। ततो नमस्कारं करोमि॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूल तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृतः॥ १॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदोः सामवेदोह्यथर्वणः॥ २॥
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रितः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्ति-पुष्टिकरी सदा॥ ३॥
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः॥ ४॥
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः॥ ५॥
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥ ६॥

गुरु पूजनम्

अक्षत, पुष्प हाथ में लेकर गुरु पूजन करें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥ १॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥ २॥

सर्वदेव नमस्कार

आयातु वरदे दवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मात ब्रह्मयोनेनमोऽस्तु ते॥ ३॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ४॥
सर्वमङ्गलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ ५॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ६॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनो हरिः॥ ७॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणौम्यादौ शान्तिकार्यार्थसिद्धये॥ ८॥
मङ्गलं भगवान् विष्णु मङ्गलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः॥ ९॥
त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा सत्यलोक-पितामहः।
आगच्छ मंडले चास्मिन्मम सर्वार्थसिद्धये॥ १०॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्य,
वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥ ११॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वंदे देवमुमापतिं सुरगुरुं वंदे जगत्कारणम्।
वंदे पन्नगभूषणं मृगधरं वंदे पशूनाम्पतिम्।।
वंदे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्,
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरम्।। १२।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। १३।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।। १४।।
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।।
हस्ते स्फाटिकमालिकाम् विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।। १५।।
आर्द्रां पुयःकारणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। १६।।
कालिकां तु कलातीतां कल्याणहृदयां शिवाम्।
कल्याणजननीं नित्यं कल्याणीं पूजयाम्यहम्।। १७।।
विष्णुपादाब्जसम्भूते गंगे त्रिपथगामिनि।
धर्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि।। १८।।
पुष्करादीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम।। १९।।
ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुःशशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवंतु।।
गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजयाजया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।। २०।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुल देवता।
गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।। २१।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्याश्च सप्तैताःदिव्यमातरः।। २२।।
नागपृष्ठसमारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पातालनायकं देवं वास्तुदेवं नमाम्यहम्।। २३।।
क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वारिष्टनिवारकान्।
अस्य यागस्यसिद्ध्यर्थं पूजयाराधितान् मया।। २४।।

नमस्कार

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।
ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यान्नमः।
ॐ उमामहेश्वराभ्यान्नमः।
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यान्नमः।
ॐ शचीपुरन्दराभ्यान्नमः।
ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।
ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।
ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः।
ॐ एताकर्मप्रधान श्री गायत्रीदेव्यै नमः।
ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

षोडशोपचारपूजनम्

यदि समय कम हो तो निम्न वाक्यों से पूजन करें, अन्य पुरुष सूक्तों के मन्त्रों के बाद क्रमशः यह वाक्य बोलते हुए पूजन कराया जाय।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।
आवाहयामि स्थापयामि।। १।।
आसनं समर्पयामि।। २।।
पाद्यं समर्पयामि।। ३।।
अर्घ्यं समर्पयामि।। ४।।
आचमनम् समर्पयामि।। ५।।
स्नानम् समर्पयामि।। ६।।
वस्त्रम् समर्पयामि।। ७।।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।। ८।।
गन्धम् विलेपयामि।। ९।।
पुष्पाणि समर्पयामि।। १०।।
धूपम् दर्शयामि।। ११।।
दीपम् समर्पयामि।। १२।।
नैवेद्यं समर्पयामि।। १३।।
अक्षतान् समर्पयामि।। १४।।
ताम्बूलपुंगीफलानि समर्पयामि।। १५।।
दक्षिणां समर्पयामि।। १६।।
सर्वाभावे अक्षतान् समर्पयामि।। १७।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ततो नमस्कारं करोमि।

नमः सर्व हितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मयाकृतः।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि शिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणे नमः।।

नीचे पुरुष सूक्त से षोडशोपचार पूजन की विधि दी जा रही है।

पुरुषसूक्तम्

१—आवाहनम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिꣳ सर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।

२—आसनम्

ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

३—पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवि।।

४—अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽ उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेअभि।।

५—आचमनम्

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।

६—स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।

७—वस्त्रम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

८—यज्ञोपवीतम्

ॐ तस्मादश्वा ऽ अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।

९—गन्धम्

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऽ ऋषयश्च ये।।

१०—पुष्पाणि

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।।

११—धूपम्

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत।।

१२—दीपम्

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

१३—नैवेद्यम्

ॐ नाभ्याआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्पयन्।।

१४—ताम्बूलपुङ्गीफलानि

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
बसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

१५—प्रदक्षिणा

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाअबध्नन् पुरुषं पशुम्।।

१६—पुष्पांजलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

—ऋजु० ३१/१-६

स्वस्तिवाचनम्

हाथ में जल, पुष्प अक्षत लेकर स्वस्ति-वाचन बोला जाय। यह शुभ कार्यों की सफलता, शान्ति, सार्थकता एवं मंगलमय कार्यों के समय कल्याणकारक मन्त्र है।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसोमम। आहमजानिगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। १।।

ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।। २।।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। ३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। ४।।

अग्निर्देवता वातो दवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।। ५।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। ६।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।। ७।।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।।

रक्षा विधानम्

आत्म-रक्षा और यज्ञ कार्य की रक्षा के लिए जल, सरसों या चावल को निम्न मन्त्रों से दशों दिशाओं में फेकें।

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुड ध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।। १।।
पश्चिमे चैव गोविंदो वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपती रक्षेदैशान्यां हि महेश्वरः।। २।।
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
अनुक्तमपि यत् स्थानं रक्षत्वीशो ममादिधृक्।। ३।।
अपसर्पन्तु ये भूता ते भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।। ४।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे।। ५।।

विशेष कर्मकाण्ड

रक्षा विधान के बाद जो विशेष कर्मकाण्ड किए जाने हैं वह कराये जायें। उसके बाद अग्नि स्थापना से लेकर विसर्जन तक के कर्मकाण्ड पूरे किये जायें। जिन संस्कारों में विशेष हवन भी कराना है, वह गायत्री मन्त्र की आहुतियों के बाद स्विष्टकृत होम के पहले होगा। आशीर्वाद अन्त में, विसर्जन के पूर्व दिया जायेगा।

जिन संस्कारों में विशेष हवन नहीं करना है, उनमें स्थान एवं समय की सुविधा देखकर यदि हवन सम्भव न दिखे तो दीप यज्ञ कर लेना चाहिए। उस स्थिति में २४ घी के, दीपक तैयार रखे जावें। सब लोग सामूहिक रूप से गायत्री मन्त्र का सस्वर उच्चारण करें तथा स्वाहा के साथ एक-एक दीपक जलाया जाता रहे। यह कार्य जिसका संस्कार है उससे—अथवा किन्हीं सम्मानित व्यक्ति या व्यक्तियों से कराया जा सकता है। दीप यज्ञ के बाद क्षमा प्रार्थना से लेकर आगे का क्रम पूरा किया जाय।

अग्नि स्थापनम्

तत्पश्चात् किसी पात्र या चमचों में अग्नि रखकर या कपूर जलाकर नीचे लिखे हुए मन्त्र का उच्चारण करते हुए श्रद्धा और भक्ति के साथ हवनकुण्ड में अग्नि स्थापन करें—

ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्ना-दमन्नाद्यायादधे। अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवांऽआसादयादिह। ॐ अग्नये नमः। ॐ अग्निं आवाहयामि स्थापयामि। इहागच्छ इह तिष्ठ। इत्यावाह्य पंचोपचारैः पूजयेत्।

।। गायत्री स्तवन।।

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं, रत्नप्रभम् तीव्रमनादि रूपम्।
दारिद्रय दुःखक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। १

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम्, विप्रैः स्तुतं मानवमुक्ति कोविदम्।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्गं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। २

यन्मण्डलं ज्ञानघनंत्वगम्यं, त्रैलोक्य पूज्यं त्रिगुणात्मरूपं।
समस्त तेजोमय दिव्यं रूपं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। ३

यन्मण्डलं गूढमति प्रबोधम्, धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम्।
यत् सर्वपापक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। ४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षम्, यदृग् यजुःसामसु सम्प्रगीतम्।
प्रकाशितं ये न च भूर्भुवः स्वः, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। ५
यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारण सिद्धसंघाः।
यद्योगिनो योगजुषां च संघाः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। ६
यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितम्, ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्काल कालादिमनादिरूपम्, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। ७
यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यम्, यदक्षरं पापहरं जनानाम्।
यत्काल कल्पक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। ८
यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धम्, उत्पत्तिरक्षा-प्रलय-प्रगल्भम्।
यस्मिन् जगत् संहरतेऽखिलं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। ९
यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः, आत्मा परं धाम विशुद्धतत्त्वम्।
सूक्ष्मातिगैर्योगपथानुगम्यम्, पुनातु मां तत्सुवितुर्वरेण्यम्।। १०
यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारणसिद्धसंघाः।
यन्मण्डलं वेदविदाः स्मरन्ति, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। ११
यन्मण्डलं वेदविदोपगीतम्, यद्योगिनां योगपथानुगम्यम्।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। १२

अग्निप्रदीपनम्

तत्पश्चात् अग्नि पर छोटे-छोटे काष्ठ और कपूर धरकर निम्न मन्त्र पढ़कर व्यजन (पंखा) से अग्नि को प्रदीप्त करे—

ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

समिधाधानम्

निम्न चार मन्त्रों से आठ-आठ अंगुल की पलाशादि की चार समिधाएँ प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण के बाद क्रम से घी में डुबोकर अग्नि में डालें—

(१) ॐ अयंत इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्येन समेधय, स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।।

(२) ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयता तिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन, स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

(३) ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।।

(४) ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदं न मम।।

जलप्रसेचनम्

तत्पश्चात् अञ्जलि (आचमन) से जल लेकर कुण्ड (वेदी) के पूर्व दिशा आदि में चारों ओर छिड़कों। इसके मन्त्र ये हैं—

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व।। इति पूर्वे
ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व।। इति पश्चिमे
ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व।। इति उत्तरे
ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।

इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड (वेदी) के चारों ओर जल छिड़कें।

आज्याहुतिहोमः

बड़े हवनों में सभी आवाहित एवं प्रतिष्ठापित देवताओं के लिए आहुतियाँ दी जाती हैं। छोटे हवनों में सात आहुतियाँ केवल घृत की देते हैं और स्रुवा से बचा हुआ घृत इदन्नमम उच्चारण के साथ प्रणीता में हर आहुति के बाद टपकाते जाते हैं। यही टपकाया हुआ घृत अन्त में अवघ्राण के काम आता है।

[१] ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।
[२] ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम।
[३] ॐ अग्नेय स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।
[४] ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

[५] ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

[६] ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।

[७] ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।

इसके पश्चात् गायत्री मन्त्र से जितनी आहुतियाँ देनी हों, सो देनी चाहिए। मन्त्र—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा।।
इदं गायत्र्यै इदं न मम।

विशेष हवन

[गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूर्ण कर लेने के पश्चात् खीर से ५ विशेष आहुतियाँ दी जाती हैं, जिनके मन्त्र प्रत्येक संस्कार की विधि में पृथक्-पृथक् दिये गये हैं।]

स्विष्टकृत्होमः

प्रत्येक कर्म ठीक-ठीक रीति से ही करना चाहिए तभी फलदायक होता है। पर मनुष्य से त्रुटि या अशुद्धि हो जाना स्वाभाविक है अतः यह आहुति उस त्रुटि या अशुद्धि की पूर्ति के प्रायश्चित रूप से है। निर्धारित संख्या में गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ देने के पश्चात् मिष्ठान्न, खीर, हलुआ आदि पदार्थों से आहुति देनी चाहिए—

ॐ यदस्य कर्मणो त्यरीरिचं ययद्वान्यूनमिहाकरं। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नेय स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान् त्समर्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्नमम।।

पूर्णाहुतिः

स्रुचि में सुपाड़ी या नारियल घृत समेत रखकर पूर्णाहुति दें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहाऽ इषमूर्ज ँ शतक्रतो, स्वाहा।
ॐ सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।

वसोर्धारा

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।

आरती

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों को उच्चारण करते हुए आरती उतारें—

यं ब्रह्मा वेदान्तविदो वदन्ति,
परं प्रधानं पुरुषंतथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा,
तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।
यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः।।

घृतअवघ्राणम्

प्रणीता में इदन्नमम के साथ टपकाये हुए घृत को हथेलियों पर लगाकर अग्नि पर सेकें और उसे सूँघें तथा मुख, नेत्र, कर्ण आदि पर लगाएँ। मन्त्र—

ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि
ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि।
ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि।
ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनन्तन्म S आपृण।
ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु।
ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु
ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधतां पुष्कर स्रजौ।

भस्मधारणम्

स्रुवा से यज्ञ भस्म लेकर अनामिका अँगुली से निम्न मन्त्रों द्वारा ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहु मूल तथा हृदय पर लगाएँ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहुमूले।
ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषमिति हृदि।

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।। १।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तु मे।। २।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।। ३।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। ४।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।५।।

साष्टाङ्ग नमस्कारः

तत्पश्चात् यज्ञ भगवान् के प्रति घुटनों के बल झुककर साष्टाङ्ग प्रणाम करें तथा निम्न मन्त्र बोलें—

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः।।
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।
वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

शुभ कामना

तत्पश्चात् समस्त प्राणियों क कल्याणार्थ यज्ञ भगवान् से हाथ जोड़कर शुभ कामना करे—

ॐ स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।।
गोब्राह्मणेभ्योः शुभमस्तुनित्यं लोकाःसमस्ताः-सुखिनोभवन्तु।। १।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात्।।२।।
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ।।३।।
श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।४।।

अभिषिंचनम्

अभिषेक के समय सपरिवार यजमान के ऊपर आचार्य निम्न मन्त्र से (रुद्र कलश) के जल से पंचपल्लव अथवा पुष्प द्वारा अभिषेक (जल सिंचन) करे—छिड़के—

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः। सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु।।

प्रदक्षिणा

यज्ञ के अन्त में सब लोग खड़े होकर दायें हाथ से बायें हाथ की ओर यज्ञ की चार परिक्रमा निम्नांकित मन्त्र के साय करें यज्ञ महिमा का गान करें।

प्रदक्षिणा मन्त्रः

ॐ यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञात कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यति प्रदक्षिण-पदे-पदे।।

यज्ञ की महिमा

यज्ञ रूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे, शोक सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के, संताप सब हरते रहें।।
कामना मिट जायँ मन से पाप अत्याचार की।
भावनाएँ शुद्ध होवें यज्ञ से नर-नारि की।।
लाभकारी हों हवन, हर जीव-धारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
इदं न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक, वंदना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा, आपकी सब पर रहे।।

श्रद्धाञ्जलिः

स्थापित वेदी पर सब लोग अपनी श्रद्धा का पुष्प नत मस्तक होकर निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ावें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त दवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः।

विसर्जनम्

ॐ गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थाने कुण्डमध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे।।१।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।२।।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्ट काम समृर्याथं पुनरागमनाय च।।३।।

सूर्यादानम्

ॐ सूर्यदेव सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या ग्रहणार्घ्यं दिवाकर।।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पुंसवन और सीमान्त-संस्कार

पुंसवन-संस्कार—विवेचन

परामर्श और प्रशिक्षण यों सदा ही श्रेयस्कर होते हैं, पर यदि उन्हें उपयुक्त समय पर, उपयुक्त वातावरण में, उपयुक्त ढंग से किया जाय, तो उसका कुछ दूसरा ही प्रभाव होता है। यों एक-दूसरे का तिलक, माला से विदाई के समय सम्मान करते हैं, पर युद्ध में जा रहे सैनिक को जब समारोह पूर्वक लोगों द्वारा भावनापूर्ण विदाई दी जाती है, तिलक, माला से सम्मानित किया जाता है, तो वह उसे सदा ध्यान में रखता है और जीवन-मरण का अवसर आने पर भी अपने कर्त्तव्य पर यह सोचकर जमा रहता है कि भागने पर तो जिन लोगों ने वीरता दिखाने का उपदेश दिया था, उन्हें क्या मुँह दिखाऊँगा। यों लोग झूँठी कसम खाते रहते हैं, पर गंगाजी में खड़े होकर या गंगाजली हाथ में लेकर कसम खाने का अवसर आने पर धर्म भीरु लोग झूठी कसम प्रायः नहीं खाते। मरते समय जो आदेश बुजुर्ग लोग अपने घर वालों को देते हैं या दूसरों से अनुरोध करते हैं, उस बात को प्रायः याद रखा जाता है और बहुधा लोग उसे पूरा करने का प्रयत्न करते हैं।

चुनौती स्वीकार करने में पिछले दिनों लोग पान का बीड़ा उठाकर खाते थे और यह घोषित करते थे कि जिस काम को दूसरे पूरा नहीं कर पा रहे हैं उसे मैं पूरा करूँगा। यह पान का बीड़ा प्रतिज्ञा को पत्थर की लकीर बना देता था और उसे हर कीमत पर लोग पूरा ही करते थे। साधारण प्रकार से की गई प्रतिज्ञाओं और घोषणाओं को लोग भुला देते हैं पर जल हाथ में लेकर देव सान्निध्य में संकल्प पढ़कर जो घोषणा की जाती है, उसे आमतौर से लोग निबाहते ही हैं। युद्ध में लड़ने आमतौर से सैनिक जाया ही करते हैं और अपने ढंग से लड़ते भी हैं, पर प्राचीन काल में जब केसरिया बाना पहनकर जुझारू प्रथा पूरी करने के लिए सैनिक निकलते थे, तब उनकी मार बड़ी विकट हो जाती थी। यों हाथ में हाथ डालकर कई प्रेमी-प्रेमिकाएँ घूमते रहते हैं, पर विवाह के समय मन्त्रपूर्वक किया गया पाणिग्रहण संस्कार दोनों को जोड़ देने वाला गजब का विश्वास पैदा करता है। वरमाला एक छोटी-सी दो आने मूल्य की साधारण फूल माला ही तो है, उसे वर-वधू एक-दूसरे को पहना देते हैं तो उनका आत्म समर्पण मान लिया जाता है, यों मोटे तौर से कितनों को माला पहनाने और पहनने का क्रम चलता रहता है।

विशेष परिस्थिति-विशेष भावना

उपर्युक्त कुछ उदाहरणों में यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि कुछ विशेष अवसरों पर विशेष ढंग से किया गया प्रशिक्षण एवं संकल्प ऐसा प्रभावशाली होता है कि वह लोगों के मनों में गहराई तक प्रवेश कर जाता है और उसे निबाहने में कभी-कभी ही कोई अड़चन आती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए ऋषियों ने जीवन के महत्त्वपूर्ण मोड़ एवं अवसरों पर ऐसे भावपूर्ण वातावरण में की गई शिक्षा प्रक्रिया का प्रचलन किया है, जिसे यदि ठीक ढंग से किया जाय तो उसका प्रभाव पड़ना ही चाहिए। संस्कारों का प्रचलन इन्हीं मनोवैज्ञानिक तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है। जिसका संस्कार किया जाता है, वह या उसके अभिभावक अपने परिचित समाज के सामने एक सम्माननीय स्थिति में बैठाये जाते हैं। विवाह में जिस प्रकार दूल्हा की वेष-भूषा, सवारी तथा स्थिति एक विशेष ढंग की होती है, सभी की आँखें उसे सामयिक 'हीरो' की निगाह से देखती हैं, इसी प्रकार जिसका संस्कार किया जा रहा है, उसके प्रति एक विशेष आकर्षण एवं आदरपूर्ण स्थिति लोगों की आँखों में होती है। वह स्वयं भी इस स्थिति में गर्व, गौरव एवं उत्साह अनुभव करते हैं। यह अनुभूति मनुष्य को अपनी दृष्टि में महत्त्वपूर्ण एवं सम्मानास्पद बनाती है। भावात्मक स्थिति का दूरगामी परिणाम होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। आत्महीनता की ग्रन्थियों से ग्रसित अपने आप को नगण्य, तुच्छ, उपेक्षणीय समझने वाले व्यक्तियों को अपने स्वरूप, महत्त्व, स्तर एवं सम्मान का बोध होता है। आत्म विकास, आत्म निर्माण, आत्मोत्कर्ष के लिए इस प्रकार की अनुभूति अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती है। ऐसे प्रेरणात्मक अवसर लोगों को जीवन में समय-समय, बार-बार मिलते रहें, इसके लिए संस्कार का प्रचलन कितना उत्तम है, उसका ठीक मूल्यांकन उत्कृष्ट कोटि के वैज्ञानिक ही कर सकते हैं। प्राचीनकाल में इस देश में जन साधारण को जो धरती के देवता कहलाने का श्रेय प्राप्त था, उसमें इस प्रकार धार्मिक, आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

उचित ढंग से उचित प्रयोग

फूहड़ ढंग से प्रयोग की गई उत्तम वस्तु भी निरर्थक एवं हानिकारक बन जाती है। संस्कारों को मनाये जाने का वर्तमान स्वरूप बिल्कुल फूहड़पन से ही भरा पड़ा है। न उसमें शिक्षा न संस्कार, न प्रेरणा, न भावना, न आकर्षण। सब कुछ केवल एक बेगार भुगतने की खर्चीली चिह्न पूजा की तरह ही भुगता दिया जाता है। ढेरों समय, श्रम और धन खर्च करने पर भी कोई यह नहीं समझ पाता कि इस अगड़-बगड़ से क्या लाभ हुआ ? अधिक से अधिक इतना मान लिया जाता है कि किन्हीं देवताओं की पूजा-अर्चा मात्र हो गई। पण्डित लोग अपनी आजीविका चलाने के लिए संस्कारों की पूजा पद्धति को जारी रखने पर तो जोर देते हैं पर उनकी उपयोगिता सिद्ध नहीं कर पाते, फलस्वरूप यह परम्परायें समाप्त होती चली जा रही हैं। विवाह अब एक मात्र वैदिक संस्कारों में से बचा है। शेष ९५ तो उपेक्षा एवं अश्रद्धा के गर्त में गिरकर विलीन जैसे ही हो गये हैं। हजारों में से कोई एक इनकी आवश्यकता अनुभव करके व्यवस्था बनाता है। इस चिन्ताजनक स्थिति को अब समाप्त किया जाय और संस्कारों का प्रचलन पुनः सुचारु रूप से आरम्भ किया जाय, यही उत्तम है। यदि समाज को सुसंस्कृत बनाना है, तो संस्कारों का माध्यम अपनाना ही पड़ेगा। सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए इस महान प्रक्रिया को पुनः सजीव करना आवश्यक है।

पुंसवन संस्कार गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास के लिए गर्भिणी का किया जाता है। कहना न होगा कि बालक को संस्कारवान् बनाने के लिए सबसे प्रथम उसके जन्मदाता माता-पिता को सुसंस्कृत होना चाहिए। उन्हें अपने आपको बालकों के प्रजनन तक ही दक्ष नहीं रहने देना चाहिए वरन् सन्तान को सुयोग्य बनाने योग्य ज्ञान तथा अनुभव भी इससे पूर्व ही कर लेना चाहिए। जिस प्रकार मोटर चलाने से पूर्व ही पुर्जों की आवश्यक जानकारी प्राप्त कर ली जाती है, उसी प्रकार गृहस्थ जीवन आरम्भ करने से पूर्व इस सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी इकट्ठी कर लेनी चाहिए। अच्छा होता अन्य विषयों की तरह शिक्षा व्यवस्था में दाम्पत्य जीवन एवं शिशु-निर्माण के सम्बन्ध में शास्त्रीय प्रशिक्षण दिये जाने की व्यवस्था रही होती।

शिशु का समग्र विकास

माता-पिता के शरीर से बालक का शरीर, मन से मन और स्वभाव से स्वभाव बनता है। इसलिए जिस तरह अच्छी फसल उगाने के लिए भूमि और बीज दोनों की समर्थता आवश्यक मानी जाती है, उसी तरह माता-पिता के शरीर, मन और स्वभाव को परिष्कृत बनाने का प्रयत्न किया जाय। जो इन तीनों दृष्टियों से सुयोग्य नहीं उन्हें अपने समान अयोग्य सन्तान उत्पन्न करके समाज की उलझनें नहीं बढ़ानी चाहिए। खेद की बात यही है कि विषय-विकारों से ग्रसित लोग यह अनुभव नहीं करते कि नये प्राणी को सुयोग्य एवं सुविकसित बनाने की शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक क्षमता यदि उनमें नहीं है तो वे क्यों सन्तानोत्पादन जैसे महान उत्तरदायित्व को उठाने के लिए कदम बढ़ाते हैं, फिर भी एक के बाद दूसरे बच्चे उपजाते ही चले जाते हैं, यह एक सामाजिक अपराध है। हीन परिस्थितियों के व्यक्ति यदि अपनी ही प्रतिमूर्ति जैसी ही दीन-हीन प्रजा और भी उत्पन्न करेंगे तो अपने स्वयं के लिए ही नहीं सारे समाज के लिए संकट उत्पन्न करेंगे।

गर्भाधान संस्कार

षोडश संस्कारों से सबसे प्रथम संस्कार गर्भाधान का है। जिसका अर्थ यह है कि यह दम्पत्ति-युग्म अपनी प्रजनन प्रवृत्ति से समाज को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूचित करता है। विचारशील लोग यदि उसकी स्थिति इसके लिए अनुपयुक्त समझें तो उन्हें इसके लिए मना भी कर सकते हैं। प्रजनन वैयक्तिक मनोरंजन नहीं वरन् सामाजिक उत्तरदायित्व है। इसलिए समाज में विचारशील लोगों को निमन्त्रित कर उनकी सहमति लेनी पड़ती है। यही गर्भाधान संस्कार है। अखण्ड ब्रह्मचारी एवं शरीर-मन से निरोग, पति-पत्नी का अन्य जीव-जन्तुओं की भाँति एक बार के समागम में ही गर्भ स्थापित हो जाना सम्भव है। पूर्व काल में यही सब होता था। आज लोगों के शरीर खोखले हो गये और काम-क्रीड़ा को भी वैयक्तिक मनोरंजन मान लिया, तो फिर गर्भाधान का महत्त्व भी चला गया। इतने पर भी उसकी मूल भावना को भुलाया न जाय तब भी यह कहा जा सकता है कि वह परम्परा किसी रूप में जीवित है।

पति-पत्नी शरीर, मन और अर्थ की दृष्टि से सन्तानोत्पादन का भार उठा सकने में पूर्ण समर्थ हों तभी उस भार को उठाने के लिए तत्पर हों। इसे वैयक्तिक मनोरंजन नहीं एक सामाजिक कार्य समझें और जैसा बालक बनाना हो उसके अनुरूप अपने गुण, कर्म, स्वभाव स्वास्थ्य, विचार, संस्कार सभी कुछ सुव्यवस्थित कर लें। उत्कृष्ट स्तर के माता-पिता ही उत्कृष्ट बालक उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए सन्तान को जिस स्तर का बनाना हो, अपने को उसी स्तर का बनाने का प्रयत्न पति-पत्नी आरम्भ कर दें तो समझना चाहिए कि वे गर्भाधान संस्कार की मूल भावना से परिचित हैं, भले ही उस संस्कार को न करते हों। इसके विपरीत यदि किसी ने संस्कार तो कराया पर तथ्यों को भुला दिया तो यह एक चिह्न पूजा मात्र ही मानी जायेगी। पति-पत्नी एकान्त मिलन के समय वासनात्मक मनोभाव न रखें वरन् मन ही मन आदर्शवादी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते रहें तो उसकी मानसिक छाप बच्चे की मनोभूमि पर अंकित होगी। लुक-छिपकर पाप-कर्म समझते हुए भयभीत और आशंका ग्रसित अनैतिक समागम-व्यभिचार के फलस्वरूप जन्मे बालक अनेक दोष-दुर्गुण साथ लाते हैं। इसी प्रकार उस समय यदि दोनों की मनोभूमि आदर्शवादी मान्यताओं से भरी हुई हो तो मदालसा, अर्जुन आदि की तरह मनचाहे प्रकार के स्तर वाले बालक उत्पन्न किये जा सकते हैं। गर्भाधान संस्कार का प्रयोजन यही है। वस्तुतः वह प्रजनन विज्ञान का आध्यात्मिक एवं सामाजिक स्थिति का मार्ग-दर्शन कराने वाला प्रशिक्षण ही है।

आज संस्कारों का जब कि एक प्रकार से लोप ही हो गया है, गर्भाधान का प्रचलन कठिन दिखाई पड़ता है। इसलिए उसे आज व्यावहारिक न देखकर उस पर विशेष जोर नहीं दिया गया है। आवश्यकता अनुभव हुई तो उसकी विधि एवं व्याख्या भी प्रस्तुत कर दी जायेगी।

पुंसवन संस्कार की आवश्यकता

गर्भ स्थापना के उपरान्त आठ मास में दो बार पुंसवन और सीमन्त दो संस्कार, बालक पर सुसंस्कारों की छाप डालने और माता-पिता एवं कुटुम्बियों को उत्तरदायित्व बताने के लिए किये जाने का विधान है। पर आज तो कहीं एक भी नहीं होता। इसलिए व्यावहारिक यह समझा गया है कि उनमें से एक का ही प्रचलन आरम्भ हो जाय तो भी काम चल सकता है। अतएव पुंसवन का आरम्भ करने की चेष्टा की गई है।

दो महीने पूरे होने तक गर्भ स्थापना का निश्चय नहीं होता। दो मासिक धर्मों का समय चूक जाय तभी स्थापना का निश्चय करना चाहिए। अन्यथा शारीरिक कारणों से भी मासिक धर्म दो-दो महीने तक रुक जाता है। तीसरे महीने निश्चय हो जाने के उपरान्त संस्कार की तैयारी की जा सकती है। यह आरम्भिक महीनों में हो सके तो अधिक उत्तम हैं ताकि जो शिक्षायें दी जाने वाली हैं, उनका उपयोग अधिक दिनों हो सके। फिर भी यदि तीसरे-चौथे महीने नहीं हो सका है तो जब भी सम्भव हो, करा लेना चाहिए।

सभी संस्कारों में सुन्दर सुसज्जित मण्डप बनाने, चौक पूरने, यज्ञ वेदी बनाने, कलश स्थापना, घृत, दीप, अग्नि आवश्यक उपकरण एक समान ही एकत्रित किये जाते हैं। इन्हें हर बार हर जगह एकत्रित करना कठिन पड़ता है, इसलिए संस्कार समितियों या पुरोहितों को सारे उपकरण स्वयं ही एकत्रित करने चाहिए और टूट-फूट का खर्च लेकर सभी के यहाँ उन्हें सरलतापूर्वक उपलब्ध होने की सुविधा कर देनी चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्सव में पड़ोस तथा रिश्ते के अधिकाधिक नर-नारियों को एकत्रित करना चाहिए, ताकि अपने यहाँ न सही, दूसरे के यहाँ देखकर भी वे आवश्यक कर्त्तव्य और उत्तर-दायित्वों को समझ सकें और जब अवसर आवे तब वे भी इन शिक्षाओं के अनुरूप गति-विधि बना सकें। संस्कारों के प्रति अधिक व्यापक क्षेत्रों में आकर्षण बढ़े उस दृष्टि से अधिक उपस्थिति का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए घरों में स्वयं बुलावा देने जाने का अच्छा प्रभाव पड़ता है। आगन्तुकों के बैठने की ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि वे ठीक तरह सब कुछ देख-सुन सकें।

संक्षिप्त गायत्री हवन पद्धति के विधि-विधान ही प्रायः सब संस्कारों में काम आते हैं। दो-तीन जगह संस्कारों से सम्बन्धित क्रियाएँ काम में आती हैं। इसलिए जिन्हें गायत्री हवन कराना आता है, उनके लिए संस्कारों का विधान भी कुछ कठिन नहीं रहता। प्रयत्न यह होना चाहिए कि जितने भी सुशिक्षित नर-नारी ऐसे हैं, जो संस्कृत श्लोक ठीक तरह बोल सकते हैं, उन सभी के हाथ में पुंसवन संस्कार की पुस्तिकायें देनी चाहिए ताकि वे भी उच्चारण एवं विधान की जानकारी के अभ्यस्त बन जायें और समय आने पर वे भी इस प्रयोग को सम्पन्न करा सकें।

प्रत्येक संस्कार या यज्ञ कार्य में पत्नी को दाहिनी ओर और पति को बाईं ओर बिठाया जाता है। स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहनकर पीले दुपट्टे कन्धे पर धारण किए हुए अच्छे आसनों पर पति-पत्नी को **'भद्रं कर्णेभिः'** मन्त्र की सामूहिक ध्वनि करते हुए बिठाया जाय। पवित्रीकरण, आचमन, शिखा बन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन, यज्ञोपवीत धारण, आचार्य वरण, यजमान वरण, संकल्प, पंचामृत बनाना और पिलाना, प्रयोजनीय वस्तुओं का मार्जन, दीप पूजन, कलश पूजन, देव पूजन, नमस्कार, षोडशोपचार, चन्दन धारण, स्वस्तिवाचन, रक्षा विधान इतने कृत्य सभी संस्कारों में एक समान होते हैं। पुंसवन संस्कार में भी वही सामान्य क्रम चलेगा।

पुंसवन संस्कार के विशेष विधान तीन हैं— (१) ओषधि अवघ्राण (२) आश्वास्तना (३) चरु-प्रदान। इसके अतिरिक्त खीर की विशेष आहुतियाँ, मंगलफल प्रदान और आशीर्वाद ये तीनों ही कृत्य यथासमय सभी संस्कारों में होते हैं, इसमें भी होंगे। विशेष कृत्य ये तीन ही हैं। इन्हें कराने तथा व्याख्या करने की व्यवस्था इस प्रकार करनी चाहिए कि संस्कार का विशेष प्रयोजन ठीक प्रकार समझा जा सके।

ओषधि अवघ्राण

वट् वृक्ष की जटाओं का अति कोमल भाग जिसे जटा, कोंपल भी कहते हैं, उसे तथा गिलोय का एक टुकड़ा लेकर दोनों को पानी में बारीक पीस लेना चाहिए, दोनों ओषधियों की मात्रा तीन-तीन माशे और पानी डेढ़ तोला हो तो पर्याप्त है। पानी के साथ दोनों वस्तुएँ बारीक पीसकर उन्हें कपड़े में छानकर एक कटोरे में रख लिया जाय। यह वधू को सुँघाने के लिए है। उसमें से थोड़ा भाग उसे पिलाया भी जा सकता है। सुँघाने या पिलाने का मन्त्र "अद्भ्य सम्भृतः . . . . . है।

वट वृक्ष विशालता, शक्ति तथा स्थिरता का प्रतीक है। गिलोय विकार विनाशक एवं बलबर्द्धक तत्वों से युक्त है। हर ओषधि वनस्पति में जहाँ स्थूल गुण होते हैं, वहाँ उसमें सूक्ष्म प्रेरणाएँ एवं भावनायें भी रहती हैं। स्थूल प्रयोग के रूप में बरगद के पत्ते, लकड़ी, फल छाया आदि का जो लाभ है उतनी ही उसकी उपयोगिता है। इसी प्रकार गिलोय को बलवर्द्धक तथा रोग निवारक माना जाता है। दुर्बलता एवं ज्वर जैसे शरीर कष्टों को दूर करने में ओषधि जैसा जो लाभ उसका है, वही उसकी उपयोगिता है। पर इतना ही मूल्य उसका नहीं है। जैसे मनुष्य शरीर के भीतर एक सूक्ष्म, अदृश्य आत्मा रहता है, उसी प्रकार इन दोनों ओषधियों की भी आत्मा है, जिसे भावना एवं प्रेरणा कहना चाहिए। संस्कारों में इसी की व्याख्या विवेचना की जानी अभीष्ट है।

यों स्थूल दृष्टि से भी ये दोनों ओषधियाँ गर्भिणी के लिए व गर्भस्थ शिशु के लिए शारीरिक आरोग्य बढ़ाने वाली हैं। गर्भावस्था में अपच, उल्टी, आलस्य, सिर-दर्द, नींद कम आना,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कमर में दर्द आदि की शिकायत रहती है। इनको दूर करने में ये परम सौम्य ओषधियाँ बड़ी उपयोगी मानी गई हैं। इनका थोड़ा-सा अंश अभिमंत्रित करके इसलिए पिला दिया जाता है कि माता तथा उसके उदरस्थ शिशु के शरीर में कोई हानिकारक रोग कीटाणु हों तो वह नष्ट हो जायें, बल बढ़े तथा पोषण में सहायता मिले। इन्हें सुँघाया इसलिए जाता है कि उनके अन्दर जो प्रेरणा एवं भावना सन्निहित है, उसका प्रभाव गर्भिणी के तथा उसके अन्तराल में बैठे हुए बालक के मस्तिष्क तक पहुँचे। नाक के द्वार से ही कोई वस्तु मस्तिष्क में पहुँचती है। सुँघाने का प्रयोजन यही है कि बरगद एवं गिलोय की आत्मा में समाये हुए संस्कार इन दोनों मस्तिष्कों पर अपना प्रभाव पहुँचा सकने में सफल हों। शक्तिशाली वेद मन्त्रों के उच्चारण से यह कार्य और भी सरल एवं सम्भव हो जाता है।

वट वृक्ष धीरे-धीरे बढ़ता है और दीर्घ-जीवी होता है। उतावले मनुष्य सब कुछ बहुत जल्दी चाहते हैं, कार्य की व्यवस्था एवं परिपक्वता के लिए जिस दृढ़ता, निष्ठा एवं धैर्य की आवश्यकता होती है, वह उनमें नहीं होती, अतएव वे तत्काल आवेश में आकर बहुत कुछ कर डालने की बात सोचते हैं, किन्तु कुछ ही समय पश्चात् वह जोश पानी के बबूले की तरह ठण्डा हो जाता है और आरम्भ किये हुए कार्य को अधूरा छोड़ बैठते हैं। यह दोष गृहस्थ जीवन में बुरा है। शिशु निर्माण में धैर्य की बड़ी आवश्यकता है। वट अंकुर इस गुण की शिक्षा देते हैं।

वट वृक्ष अपनी जड़ें जमीन में गहराई तक ले जाता है और अपने को हर दृष्टि से मजबूत परिपुष्ट बनाता है। आँधी-तूफान आते हैं, पर उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाते। सब वृक्षों से उसकी आयु भी अधिक होती है। संयमी, सदाचारी रहकर हमें अपने शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य की जड़ें गहराई तक ले जानी चाहिए और हर दृष्टि से अपनी समर्थता, बलिष्ठता एवं परिपुष्टता बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। आँधी-तूफान आते रहते हैं, उनका प्रभाव अपने ऊपर न पड़ने पावे, ऐसी सुदृढ़ मनोभूमि तथा शारीरिक स्थिति बनाये रखनी चाहिए।

वट-वृक्ष अपने विकास, विस्तार के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। जटायें भी जड़ के रूप में बदल जाती हैं। वृद्धावस्था को भी युवावस्था में परिणत करने का प्रयास करना चाहिए।

वट-वृक्ष अपने विस्तार का लाभ दूसरे अनेकों को देता है। कितने ही पक्षी उस पर घोंसले बनाकर रहते हैं, उसके फलों से अपना आहार प्राप्त करते हैं। कितने ही पशु उसकी छाया में विश्राम लेते हैं, अपनी क्षुधा मिटाते हैं। उसकी घनी छाया में कितने ही पथिक सुस्ताते हैं, कथा-प्रवचन, सत्संग तथा देवस्थापन उसके नीचे होते रहते हैं। इन्हीं पारमार्थिक विशेषताओं के कारण उसे देव वृक्ष माना जाता है। उसके दूध, जटा, जड़, छाल, फलों के आधार पर कितने ही रोग दूर होते हैं। हमारे जीवन भी ऐसे ही उदार, परोपकारी होने चाहिए।

गिलोय की बेल भूमि पर ही नहीं फैलती, वरन् किसी सुदृढ़ वृक्ष का सहारा लेकर ऊपर की ओर उठती जाती है। दुर्बल काया होने पर भी निम्न स्थिति में समतल जमीन में नहीं पड़ी रहती है। हमें जीवनोत्कर्ष की भावनायें सदा सजीव रखनी चाहिए। आदर्शवादी सिद्धान्तों का, सुदृढ़ वृक्षों का सहारा लेकर ऊपर उठना चाहिए। अपनी परिस्थितियाँ दुर्बल हों, शरीर, मन एवं अर्थ साधन स्वल्प हों, तो भी सुयोग्य व्यक्तियों का सान्निध्य पकड़ कर प्रगति का पथ प्रशस्त करना चाहिए।

गिलोय में गजब की रोग निरोधक शक्ति होती है। बुखार जैसे दुष्ट रोगों के कीटाणुओं को अपने प्रभाव से मार गिराती है। अपने भीतर छिपे हुए कुविचारों एवं कुसंस्कारों से लड़ने और परास्त करने के लिए हमें भी अपने भीतर आवश्यक मनोबल एकत्रित करना चाहिए। संसार में जो कुबुद्धि, दुष्टता एवं अन्ध-परम्पराएँ फैली हुई हैं, उन सामाजिक बीमारियों को शान्त करने के लिए भी हमें वैसा समर्थ होना चाहिए, जैसा कि रोग निवारण के लिए गिलोय समर्थ होती है।

गिलोय में केवल मारक-संहारक गुण ही नहीं अपितु वह सौम्य, स्निग्ध एवं बलवर्द्धक भी है। उसका रस चिकना होता है। हमारा अन्तःकरण स्नेह-सिक्त, सौम्य एवं मधुर होना चाहिए। हमारा व्यक्तित्व सबको पुष्टता, स्फूर्ति एवं सशक्तता देने वाला होना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वट और गिलोय के कुछ थोड़े से सूक्ष्म संस्कार यहाँ दिये गये हैं। ऐसी और भी अनेक विशेषताएँ उनमें हो सकती हैं, उन्हें ढूँढ़ना चाहिए और उन विशेषताओं को गर्भवती अपनी मनोभूमि में धारण करे तथा वैसे ही संस्कार गर्भस्थ बालक में रोपे, ऐसी चेष्टा करनी चाहिए। ओषधि अवघ्राण का यही प्रयोजन है।

आश्वास्तना

बालक यद्यपि पत्नी के गर्भ में है, पर वह अकेले ही उसे सुविकसित एवं सुसंस्कारी नहीं बना सकती। उसके लिए पति का योगदान विशेष रूप से अपेक्षित है। माता अपने शरीर के रक्त-माँस से बालक का शरीर बनाती है, नौ मास तक भार वहन करती है, भारी पीड़ा सहती हुई प्रजनन करती है, अपना रक्त सफेद दूध के रूप में निकाल-निकाल कर बच्चे का पोषण करती है, उसके मल-मूत्र, स्नान, वस्त्र तथा दिनचर्या की हर घड़ी साज-सँभाल रखती है। इतना भार तथा त्याग कुछ कम नहीं। माता इतना करके भी अपने हिस्से की जिम्मेदारी पूरी कर लेती है। अब शिशु को सुसंस्कारी बनाने योग्य उपयुक्त परिस्थितियाँ उत्पन्न करना पिता का काम रह जाता है। उसे पूरा करने के लिए उतना ही त्याग करना, उतना ही कष्ट सहना और उतना ही ध्यान रखना पिता का भी कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य को पूरी तरह पालन करने के लिए पति को पत्नी के कन्धे पर हाथ रखकर आश्वासन देना पड़ता है कि वह इस प्रकार के कर्त्तव्यों को पूरा करने में तनिक भी प्रमाद या उपेक्षा न बरतेगा।

पुंसवन संस्कार की शिक्षाओं में नौ श्लोक दिये गये हैं। उनकी व्याख्या इस अवसर पर की जानी चाहिए। दोनों को बताना चाहिए कि उन दोनों ने एक महान् सामाजिक उत्तरदायित्व अपने कन्धे पर ओढ़ा है। यदि वे राष्ट्र-माता को सद्गुणों से सुसज्जित भावी सन्तान के रूप में एक सुरभित हार पहना सकें, तब तो उनका श्रम सार्थक है, अन्यथा रोगी, क्रोधी, आलसी, अपराधी प्रकृति का बालक जन्मा तो उससे अनेकों को जो कष्ट मिलेंगे उनका पाप उनके जन्म देने वाले माता-पिता को भी लगेगा। प्रजनन को मिट्टी से खेलने जैसा एक मखौल मनोरंजन नहीं मानना चाहिए कि बच्चा जन्मा और ढोलक बजाने, बताशे बाँटने की तैयारी हो गई। यह इतनी बड़ी जिम्मेदारी है कि माता-पिता को अपने ऊपर अत्यधिक नियन्त्रण करके बच्चे के स्वस्थ विकास के लिए समुचित परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी पड़ती हैं।

घर में अवतरित होने वाली आत्मा न जाने कितने उत्कृष्ट स्तर की हो, न जाने किस महान आत्मा का अस्तित्व गर्भ में आया हो, यह सोचकर उसके स्वागत, सम्मान का समुचित प्रबन्ध किया जाना चाहिए। घर में यह महान मेहमान आ रहा है, उसके लिए वैसी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए, जैसी कि किसी अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं संभ्रान्त अतिथि के आगमन पर घर में की जाती हैं।

माता का आहार और व्यवहार बच्चे के शरीर और मन पर सीधा प्रभाव डालता है, यदि वह मिर्च-मसालों से भरे, अति उष्ण-उत्तेजक मसाले, अभक्ष्य पदार्थ खाती है, तो उसके बालक का शरीर उसी तरह की उत्तेजनाओं से भर जाता है। ऐसा उत्तेजक उष्ण आहार ही अक्सर बच्चों को क्रोधी, चिड़चिड़ा, झगड़ालू, जिद्दी स्वभाव का तथा शारीरिक दृष्टि से खून खराबी, फोड़े-फुन्सी, अपच, बवासीर जैसे रोगों से ग्रसित बनाता है। अतएव गर्भिणी का आहार विशेष रूप से सात्त्विक, हलका, जल्दी पचने वाला, मिर्च-मसालों से रहित होना चाहिए। भूख से कम ही आहार किया जाय।

इन दिनों ब्रह्मचर्य का पालन तो नितान्त आवश्यक है अन्यथा माता और बालक दोनों को ही बड़ी हानि होती है।

गर्भवती की मनोभूमि इन दिनों ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, भय, चिन्ता, निराशा, क्षोभ जैसे मनोभावों से बची रहनी चाहिए। पति को तथा परिवार के सभी सदस्यों को गर्भवती के साथ ऐसा उदार, सौम्य और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए, ताकि उसे किसी मानसिक विक्षोभ में पड़ने का अवसर ही न आये। कोई अवसर हो भी तो इस तरह का धैर्य, साहस तथा आश्वासन देते रहें कि उसे किसी प्रकार उत्तेजित होने की आवश्यकता नहीं, जो कठिनाई सामने आयेगी वे उसे सँभाल लेंगे। कोई भूल-चूक होने पर भी उससे कठोर व्यवहार न करके प्रेमपूर्वक समझा-बुझाकर ही सुधार दें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों शारीरिक श्रम कम बन पड़ता है, आलस्य रहता है तथा तबियत भी गिरी-गिरी रहती है। ऐसी दशा में जितना श्रम वह सुविधापूर्वक कर सके, उतना ही करने देना चाहिए। जो उससे न बन पड़े, उतने श्रम के लिए दबाया न जाय। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि वे आलस्य में ही पड़ी रहें। बड़े घरों की स्त्रियाँ अक्सर श्रम से जी चुराती हैं अतएव उन्हें न तो ठीक से भोजन ही पचता है और न बालक को हिलने-डुलने का अवसर मिलता है। ऐसी दशा में बच्चे का शरीर भी भिचा-भिचा अविकसित रह जाता है और गर्भवती को जनन के समय कष्ट भी बहुत होता है। जो स्त्रियाँ चक्की चलाने जैसा श्रम करती हैं, उनके बालक का भी व्यायाम होता रहता है। इन सब बातों का ध्यान रखते हुए श्रम का सन्तुलन रखा जाय। न आलसी बना जाय और न इतनी मेहनत की जाय जो शरीर और मन को तोड़कर रख दे।

गर्भवती की शारीरिक और मानसिक स्थिति को सुव्यस्थित रखने के लिए जहाँ परिवार के लोगों की जिम्मेदारी है, वहाँ गर्भवती को स्वयं भी इन बातों के लिए सचेष्ट एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि वह स्वयं व्यवस्था बिगाड़ेगी तो घरवालों के द्वारा किए गये प्रयत्न भी निष्फल चले जाएँगे। सात्विक आहार घर में बने, पर उसे खाया न जाय, तमोगुणी, अभक्ष्य चीजों को ही लुक-छिप कर या प्रयत्न करके खाते रहा जाय, तो घर वाले आखिर उसे कहाँ तक रोक सकेंगे ? इसी प्रकार यदि स्वभाव असहिष्णु एवं आवेशग्रस्त हो, तो परिवार में कहीं से, किसी के द्वारा कोई कारण ऐसा निकल ही आयेगा, जिससे आवेश आ जाय एवं असंतुलित मनोभूमि बन जाय। कोई न कोई घटना तो समाज में भी होती रहती है, जो चिन्ता उत्पन्न करे। कठिनाइयों, आपत्तियों एवं असफलताओं के अवसर अपने तथा अपने सम्बन्धी, पड़ौसियों के ऊपर आते रहते हैं। अतिशय भावुकता होने पर भी मन असंतुलित हो सकता है। इसलिए हर विचारशील गर्भवती को इतना साहस तो रखना चाहिए कि विपन्न परिस्थितियों में भी धैर्य रखा जा सके और उनके प्रभाव से मन को अतिशय क्षुब्ध होने से रोका जा सके। अपने साथ किसी ने दुर्व्यवहार किया हो या कटु वचन बोला हो, तब भी इन दिनों गर्भस्थ बालक के हित की दृष्टि से उसे हँसकर, उपेक्षा करके, सहिष्णुतापूर्वक भुला देना चाहिए और बात को गई-गुजरी कर देना चाहिए। दूसरों के दोष ढूँढ़ने और निन्दा करने की अपेक्षा गुण ढूँढ़ने और प्रशंसा करने का ही अपना स्वभाव बनाना चाहिए। निन्दा करते रहने से दूसरों की कम और अपनी अधिक हानि होती है। इसी प्रकार प्रशंसा करने की आदत से और किसी का लाभ भले ही न होता हो, अपना अवश्य होता है। अपनें मानसिक सन्तुलन को किसी प्रकार अस्त-व्यस्त नहीं होने देना चाहिए।

धैर्य, साहस, आशा और उत्साह के भाव मन में रखने चाहिए। उज्जवल भविष्य की आशा और कल्पना करनी चाहिए। हर समय हँसते-मुस्कराते रहना चाहिए। जो स्त्रियाँ प्रसन्न चित्त रहती हैं, उनके बालक विशेष रूप से सुन्दर होते हैं। जो रूठी, असन्तुष्ट, खिन्न, अप्रसन्न और उद्विग्न बनी रहती हैं उनके बालक कुरूप, असन्तुष्ट, दुर्गुणी, मन्द बुद्धि एवं उच्छृङ्खल ही जन्मते हैं। अतएव मन को अपने उच्च विचारों द्वारा प्रसन्न एवं समुन्नत ही रखना चाहिए। घर के सभी लोगों का, विशेषतया पति का यह कर्त्तव्य है कि गर्भवती की मानसिक प्रसन्नता बढ़ाने वाले साधन एवं अवसर उपस्थित करते रहें। मनोरंजन के हल्के साधन यथासम्भव उनके लिए जुटाते ही रहने चाहिए। इन दिनों जैसे विचार माता के मन में उठते हैं, वैसी ही मनोभूमि बच्चे की बनती है। इसलिए मस्तिष्क में उच्च विचारों का प्रवाह बहता रहे, इसके लिए उत्तम विचारों से भरी पुस्तकों एवं जीवन-चरित्रों के पढ़ने-सुनने का प्रबन्ध विशेष रूप से करना चाहिए। जो स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी हैं वे कम से कम दो घण्टे का समय प्रेरणाप्रद जीवन निर्माण का साहित्य पढ़ने के लिए किसी भी प्रकार अवश्य ही निकाल लिया करें। पति का, परिवार के लोगों का कर्त्तव्य है कि किसी पुस्तकालय से अथवा खरीदकर जैसे भी सम्भव हो ऐसा साहित्य जुटायें। अशिक्षित स्त्रियों को उनके घर वाले कम से कम एक घण्टा ऐसी पुस्तकें पढ़कर सुनाया करें। कोई कथा, पुराण आदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुनाने से यह प्रयोजन सिद्ध न होगा, जीवन की समस्यायें सुलझाने वाली विचारधारा जो दे सकें, वही साहित्य इस योग्य है कि उससे बालक कुछ प्रेरणा तथा प्रकाश ले सकं।

अर्जुन ने अपनी गर्भवती पत्नी सुभद्रा को चक्रव्यूह-वेधन की शिक्षा दी थी। गर्भस्थ बालक अभिमन्यु ने वह सब शिक्षा प्राप्त की और फिर महाभारत में उसी शिक्षा के आधार पर लड़ाई लड़ी। गर्भस्थ बालक बहुत ही संवेदनशील होता है, सारी जिन्दगी में जितना स्वभाव संस्कार बनता है, उसका अधिकांश भाग पाँच वर्ष से कम की आयु में पूरा हो जाता है। गर्भावस्था तो प्रशिक्षण के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए हर गर्भवती को सुसंस्कृत विचारधारा मिलते रहने के लिए मानसिक भोजन का भी वैसा ही प्रबन्ध करना चाहिए जैसा कि उसके शरीर के लिए सात्विक भोजन का प्रबन्ध किया जाता है। स्वाध्याय ही आज का सर्वश्रेष्ठ सत्संग है। गर्भस्थ बालक की मनोभूमि सुसंस्कृत बने इसके लिए इस प्रकार की सुविधा जुटाई जानी चाहिए।

जहाँ निवास या शयन हो वहाँ आदर्श चरित्र महापुरुषों के चित्र एवं प्रेरणाप्रद शिक्षायें देने वाले आदर्श वाक्य टँगे रहने चाहिए। इन पर बार-बार दृष्टि जायेगी तो तत्सम्बन्धित विचार मन में उठेंगे। यह भी एक प्रकार का शिक्षण ही है। इनका भी बालक की मनोभूमि पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

आस्तिकता का वातावरण इन दिनों बना ही रहना चाहिए। आस्तिकता का प्रभाव आत्म-बल बढ़ाने के लिए अनुपम उपाय है। उपासना से अन्तःकरण शुद्ध होता है और उसमें दिव्य प्रकाश बढ़ता है। इसलिए गर्भवती को नित्य नियमित रूप से ईश्वर उपासना अवश्य करनी चाहिए। भारतीय धर्म में गायत्री ईश्वर की सर्वोपरि उपासना मानी गई है। यह महाशक्ति सद्बुद्धि की देवी है। गायत्री जप से सद्बुद्धि का उदय होता है, भावनायें शुद्ध होती हैं और आन्तरिक प्रगति का पथ प्रशस्त होता है। इसलिए जिन्हें पूरा गायत्री मन्त्र याद हो सके वे पूरा जप किया करें। अशिक्षित **"ॐ भूर्भुवः स्वः"** इतने से भी काम चला सकती हैं। स्नान करके एक माला नियमित जप करना चाहिए। इसके अतिरिक्त जब भी अवसर हो गायत्री महामन्त्र का मानसिक जप करते रहना चाहिए। जिन्हें भगवान का कोई अन्य नाम प्रिय हो, वे उससे भी काम चला सकती हैं। घर में भगवान की स्थापना, पूजा-वेदी, प्रायः-सायं आरती, भोग-प्रसाद का वातावरण हर आस्तिक के घर में रहना चाहिए। ऐसे वातावरण का प्रभाव नवीन आत्मा के मंगलमय अवतरण में विशेष रूप से श्रेयस्कर होता है। आस्तिकता का प्रभाव उत्कृष्टता के रूप में ही देखा जाता है।

उपर्युक्त आशय की शिक्षाएँ पुंसवन संस्कार के साथ जुड़े नौ श्लोकों में दी गई हैं। इनका जहाँ जैसा वातावरण या परिस्थिति हो, उसका समन्वय करते हुए विवेचन किया जाना चाहिए। पति के द्वारा पत्नी के कन्धे पर हाथ रखकर जो आश्वासन दिया जाता है, उसको एक गोल बात ही नहीं रहने देना चाहिए, वरन् वह सब कुछ बताया जाना चाहिए जो उसे करना है।

पति परिवार का प्रतिनिधि है, चूँकि पत्नी, पति के माध्यम से ससुराल में आई है। गर्भ स्थापना का उत्तरदायी भी वही है, इसलिए प्रधान आश्वासन तो उसे ही देना चाहिए। घर के लोगों के असहमत होने पर भी उपर्युक्त कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। पर इतने से ही बात पूरी नहीं हो जाती। परिवार के अन्य लोगों का भी गर्भवती पर प्रभाव रहता है और वे भी उसकी शारीरिक मानसिक क्रम व्यवस्था बनाने-बिगाड़ने में बहुत हद तक सहायक होते हैं। इसलिए इस 'आश्वासन क्रिया' में परिवार के अन्य लोगों को भी सम्मिलित किया जाना उचित है। परिवार के अन्य लोगों के हाथ में एक-एक फूल दिया जाय और आश्वास्तना मन्त्र के साथ वे सब उस पुष्प को गर्भवती को वैसा ही आश्वासन देने की भावना के साथ प्रदान करें। गर्भवती उन पुष्पों को कृतज्ञतापूर्वक शिरोधार्य करे और अपना साहस एवं सन्तोष बढ़ाने के लिए उन आश्वासन-पुष्पों को सुरक्षित रखे। इस प्रक्रिया के साथ-साथ पति ही नहीं, घर के सभी लोगों को यह उत्तरदायित्व अनुभव करना चाहिए कि होनहार आत्मा की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट स्थिति बढ़ाने के लिए उन सभी को अपना-अपना योगदान करना है।

चरु प्रदान

गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूर्ण हो जाने पर (९) स्विष्टकृत से पूर्व खीर की पाँच-पाँच आहुतियाँ पति-पत्नी को देनी होती हैं। गाय का दूध, चावल, मेवा, जरा-सी शक्कर डालकर खीर बनानी चाहिए और उसे एक बड़े कटोरे में रख चम्मचों के साथ पति-पत्नी के सामने रख देना चाहिए। **"ॐ धाता दधातु"** मन्त्र पाँच बार उच्चारण करके पाँच-पाँच आहुतियाँ पति-पत्नी दोनों को देनी चाहिए। आहुतियाँ के बाद बची हुई खीर गर्भिणी को खाने के लिए दी जाती है। इसे चरु-प्रदान क्रिया कहते हैं। आहुतियों पूरी होने के बाद पूर्णाहुति, वसोर्धारा, आरती, घृत-अवघ्राण, भस्म धारण, क्षमा प्रार्थना, नमस्कार, शुभ कामना, अभिसिंचन, प्रदक्षिणा तथा उपस्थित लोगों द्वारा श्रद्धाञ्जलि देने के कृत्य किए जाने चाहिए। इसके पश्चात् यज्ञ से बची हुई उस खीर को यज्ञ के प्रसाद स्वरूप गर्भिणी को प्रदान किया जाना चाहिए। यह 'चरु-प्रदान' है। आहुतियों से लेकर श्रद्धाञ्जलि तक कई क्रियाएँ करनी पड़ती हैं, तब 'चरु-प्रदान' का नम्बर आता है। इस बीच के समय उस बची हुई खीर को ढककर एक ओर रख देना चाहिए ताकि उसके फैलने, गन्दी होने या मक्खी आदि पड़ने का भय न रहे।

यज्ञ से बची हुई खीर यज्ञीय संस्कारों से युक्त होती है। यह देवताओं का प्रसाद भी होती है। दशरथजी ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था, तब यज्ञ से बची हुई खीर तीन रानियों को खिलाई गई थी। उससे उन्हें होनहार सन्तानें प्राप्त हुईं। यह यज्ञ-चरु गर्भस्थ शिशु को संस्कारवान् बनाने के लिए एक अद्भुत ओषधि की तरह अपना प्रभाव प्रदान करती है।

इस चरु-पात्र को सम्मानपूर्वक गर्भिणी को **'ॐ पयः पृथिव्यां .....'** इस मन्त्र के साथ दिया जाता है। इसे वह ले जाती है और उस दिन के आहार में सबसे प्रथम यह चरु को ही ग्रहण करती है। कोई और चीज इसके बाद खानी चाहिए। यह यज्ञ-उच्छिष्ट माता और बालक दोनों के ही अन्तःकरण पर प्रभाव एवं संस्कार छोड़ता है, जिससे उनकी मनोभूमि में भविष्य को प्रकाशवान् बनाने वाले सद्गुण उदय होने लगते हैं। इस चरु को जितनी अधिक श्रद्धापूर्वक सेवन किया जायेगा, उतना ही उसका अधिक प्रभाव पड़ेगा। ओषधियों में अपना निज का जितना गुण होता है, उससे अनेक गुना सेवन करने वाले की श्रद्धा द्वारा विनिर्मित हो जाता है। जिस चिकित्सक पर विश्वास हो, उसकी साधारण दवा भी जादू जैसा काम करती है, किन्तु जिन पर अविश्वास हो उसकी कीमती ओषधियाँ भी कुछ काम नहीं करतीं। वेद मन्त्रों से अभिमन्त्रित, यज्ञ भगवान का उच्छिष्ट यह चरु-प्रसाद यदि गर्भवती ने परिपूर्ण श्रद्धा के साथ सेवन किया होगा तो उसे अपनी श्रद्धा का भी मनोवैज्ञानिक लाभ होगा, चरु का अपना फल तो है ही।

दूध और चावल दो पृथक् स्थानों पर पैदा होते हैं, पृथक् गुण, कर्म और स्वभाव के भी हैं, पर वे दोनों जब अपनी-अपनी पृथकता समाप्त करके एक-दूसरे में समर्पित हो जाते हैं, तब उनका सम्मिलित स्वरूप खीर बनता है। इसे देव भोजन की गरिमा मिलती है। यज्ञ कार्यों में इसे उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार पति-पत्नी भले ही दूर-दूर स्थानों में जन्मे हों, भिन्न-भिन्न प्रकृति के हों, फिर भी यदि वे परस्पर पूरी तरह घुल-मिल जाते हैं, एक-दूसरे के लिए अनन्य आत्मीयता रखते हैं, सहिष्णुतापूर्वक एक-दूसरे की कमी को निबाहते हैं और उसके पूरक बनने का प्रयत्न करते हैं तो उनका सम्मिश्रित स्वरूप दम्पत्ति जीवन देवप्रिय खीर बन जाता है।

दूध और चावल दोनों के पूर्णतया आत्मसात हो जाने पर एक तीसरी चीज खीर बनती है। उसे जीवन-यज्ञ, समाज यज्ञ की पूर्णता के लिए प्रयोग किया जाता है। पति-पत्नी में जितना अधिक प्रेम, विश्वास एवं सहयोग होगा, उसी अनुपात से उनका सम्मिश्रित निर्माण-सन्तानोत्पादन सफल रहेगा। ऐसे दम्पत्ति ही सद्गुणी और सुसंस्कृत बालक उत्पन्न कर पाते हैं। देखा गया है कि जिन स्त्री-पुरुषों में परस्पर मनोमालिन्य, असन्तोष एवं असहयोग रहता है, कोई किसी की उपेक्षा अथवा अनादर करता रहता है, तो उसका बुरा प्रभाव बालक के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वभाव एवं शरीर पर भी आता है। ऐसे बालक मन्द बुद्धि, कुरूप एवं अनेक दोष-दुर्गुणों से, रोगों से ग्रसित पाए जाते हैं। सुसन्तति की आशा वहीं की जा सकती है, जहाँ पति-पत्नी में अनन्य प्रेम हो। जिस प्रकार दोनों के रज-वीर्य के सम्मिश्रण से बालक का शरीर बनता है, उसी प्रकार दोनों के बीच परस्पर सम्बन्धों के मिश्रण से उसका स्वभाव एवं मानसिक स्तर बनता है। इस तथ्य को 'चरु-प्रदान' की क्रिया के माध्यम से हृदयंगम करना चाहिए। यदि अब तक पारस्परिक सम्बन्धों में तनिक भी खिंचाव रहा है तो इन दिनों उस भूल को तुरन्त सुधार लेना चाहिए। अपनी ओर से जो भूल हो रही हो, उसे ढूँढ़ने तथा सुधारने का प्रयत्न किया जाय और साथी की त्रुटियों को हँसते हुए निबाहने एवं प्रेमपूर्वक सुधारने के लिए सचेष्ट रहा जाय तो कटुता एवं उपेक्षा आसानी से स्नेह-सहयोग में परिणत हो सकती है।

सद्भाव एवं शुभकामना संचय

गर्भवती को अपने पति का नहीं वरन् पूरे परिवार का ही स्नेह-सद्भाव अपने लिए अर्जित करना चाहिए। इन दिनों उसे क्रोध तो तनिक भी नहीं करना चाहिए। रूठना, कुढ़ना, भोजन छोड़ बैठना जैसी बुरी आदतें तत्काल छोड़ देनी चाहिए। घर का कोई व्यक्ति कटु या अनुचित व्यवहार करे तो भी अपनी शालीनता तथा उदारता से उसे उपेक्षा में बहलाकर अपना मानसिक सन्तुलन सही बनाये रखना चाहिए। उत्तेजना का वातावरण शान्त हो जाने पर पीछे उचित अवसर पर अपनी भूल हो तो उसकी क्षमा याचना और यदि गलतफहमी हो तो उसका स्पष्टीकरण नम्रता और मधुरता के साथ कर देना चाहिए। इससे कटुता दूर हो जाती है। लड़ाई तो तब बढ़ती है, जब आवेश ग्रस्त होकर कटु व्यवहार करने वाले को वैसा ही तुर्की-व-तुर्की जबाव दिया जाता है। आग को आग से नहीं, पानी से शान्त किया जाता है। आवेश का आवेश के साथ उत्तर देने पर बात बढ़ जाती है किन्तु यदि एक पक्ष शालीनता एवं सज्जनता अपनाये रहे तो आवेशग्रस्त को जल्दी ही शान्त कर सकता है। गर्भवती को अपना स्वभाव ऐसा ही शालीनता एवं सज्जनतापूर्ण बनाना चाहिए ताकि घर में भी शान्ति रहे, उसकी प्रशंसा भी हो और बालक पर वैसी ही छाप पड़े।

मधुर व्यवहार, शिष्टाचार, सेवा भाव, मुस्कान, समादर के साथ घर के लोगों से व्यवहार किया जाय तो वे कई तरह की त्रुटियाँ रहने पर भी सद्भाव रखते हैं। सारे परिवार का सद्भाव प्राप्त करने के लिए गर्भवती को पूरा-पूरा प्रयत्न करना चाहिए। श्रद्धा के बदले आशीर्वाद मिलता है। इसलिए परिवार के सभी सदस्यों के प्रति समुचित श्रद्धा, सहानुभूति एवं समादर वृद्धि रखी जाय तो वे सभी अपने प्रशंसक रहेंगे और वाणी या मन से आशीर्वाद देते रहेंगे। यह शुभकामना गर्भवती एवं गर्भस्थ बालक के भावनात्मक विकास में सब प्रकार सहायक होती है।

अपने से बड़ों के नित्य चरण स्पर्श करने का नियम इसी पुंसवन के दिन से गर्भवती को बना लेना चाहिए। सास, ससुर, जिठानी, ननद, भुआजी, दादी आदि सभी बड़ों के प्रातःकाल उठकर चरण स्पर्श करने का नियम बना लेना चाहिए और उसे स्मरणपूर्वक नित्य ही प्रयोग में लाना चाहिए। इस प्रकार के श्रद्धा व्यवहार से बालक भी श्रद्धालु प्रकृति का होता है और बड़ों के आशीर्वाद तथा छोटों के सद्भाव का लाभ निरन्तर मिलते रहने से बालक भावनात्मक स्तर का सुविकसित बनता है। गर्भवती को प्रसन्नता एवं सन्तोष का लाभ मिलता रहता है, सो अलग। गर्भवती का यह नियम यदि पहले से ही नहीं चल रहा है तो पुंसवन संस्कार के दिन से तो उसे आरम्भ कर ही देना चाहिए।

संस्कार के अन्त में सब लोग मिलकर पुष्प बिखेरते हुए आशीर्वाद देते हैं, तब उन्हें भी यह समझना चाहिए कि वे आज ही नहीं निरन्तर अपनी सद्भावना, शुभकामना उसके ऊपर अजस्र रूप में बरसाते रहें। गर्भिणी की ओर से कोई भूल हो तो उसको ध्यान में न लाते हुए सभी अपना कर्त्तव्य पालन करें। गर्भस्थ बालक को सच्चा मानसिक आहार इन महीनों में अधिकाधिक सद्भाव आशीर्वाद देकर ही पहुँचाया जा सकता है। इसमें घर का कोई सदस्य अपनी ओर से किसी प्रकार की कमी न रहने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दे। जन्मने के बाद तो शिशु को सभी प्यार करते हैं, आवश्यकता इस बात की है कि जन्म से पूर्व भी माता की मारफत उस तक अधिकाधिक स्नेह पहुँचाया जाय। यदि वह भावनात्मक आहार उसे समुचित मात्रा में मिलता रहा तो निस्सन्देह उसमें साहस, धैर्य, पराक्रम, संयम, व्यवस्था, सज्जनता, बलिष्ठता, प्रतिभा जैसी कितनी ही विशेषताएँ आरम्भ से ही उपजने और बढ़ने लगेंगी। शुभ संस्कारों के बीजारोपण का उपयुक्त समय पुंसवन संस्कार के दिन से ही आरम्भ हो जाता है, इसलिए इस पवित्र पारिवारिक उत्तरदायित्व को घर का हर सदस्य निबाहने के लिए पूरी तरह तत्पर होना चाहिए। पुंसवन की यह प्रेरणा सभी को शिरोधार्य करनी चाहिए।

पुत्र और कन्या का अन्तर

एक बात और भी स्मरण रखने की है कि पुत्र और कन्या में किसी प्रकार का अन्तर न समझा जाय। पुत्र होने पर प्रसन्नता और पुत्री होने पर अप्रसन्नता अनुभव करना, मानवता का खुला तिरस्कार है। मनुष्य जाति दो हिस्सों में बँटी हुई है, नर और नारी उसके दो महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। दोनों की उपयोगिता, महत्ता एवं आवश्यकता समान रूप से है। सृष्टि-शकट का क्रम इन दोनों पहियों पर समान रूप से चल रहा है। दोनों का सम्मान समान रूप से होना चाहिए, दोनों का महत्त्व समान रूप से समझा जाना चाहिए।

कन्या और पुत्र के बीच भेदभाव करने, पुत्र को लाभदायक और कन्या को हानिकारक मानने की प्रथा हमारी सामाजिक विश्रृंखलता के कारण है। कन्या के विवाह में अनावश्यक खर्च एवं घर की चहारदीवारी में बन्द रहने के कारण उसका परावलम्बन, यह दो ही सामाजिक दुष्टतायें ऐसी हैं, जिनने कन्या का मूल्य गिरा दिया है, वस्तुतः उसका मूल्य पुत्र से अनेक गुना अधिक है। कन्यायें मृदुल एवं सौम्य प्रकृति की होने से घर में मधुर वातावरण रखती हैं और दूसरे के अन्धेरे घर में उजाला करने का पुण्य देती हैं। धन से उनका समय-समय पर सम्मान करते रहने से अपने भीतर त्याग, उदारता और परमार्थ का पोषण होता है, उनके विवाह से निवृत्त होने पर जीवन का अन्तिम भाग वानप्रस्थ, लोक सेवा आदि धर्म कर्त्तव्यों की पूर्ति में लग सकना सुगम होता है। इन दृष्टियों से कन्या का जन्म आत्म-विकास की दृष्टि से और भी अधिक उपयोगी होता है। जिन सामाजिक कुरीतियों ने कन्या का महत्त्व गिराया है, हमें उन्हीं को नष्ट करना चाहिए, न कि उन प्रचलित मूढ़ताओं का दण्ड बेचारी कन्याओं को तिरस्कार के रूप में दिया जाय। नारी की गरिमा सदा से नर की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ मानी जाती रही है। उस मूल्यांकन को उलटा कर देना हमारी भारी भूल है। कन्या जन्म के प्रति अरुचि एवं उदासीनता का भाव मन में उत्पन्न होने देना मानवता के उत्कृष्ट पहलू का तिरस्कार करना है। यह तथ्य पुंसवन संस्कार के समय घर के सभी लोगों को समझा दिया जाय।

कन्या जन्मे या पुत्र इसमें कोई अन्तर न माना जाय। न इसकी आशा आकांक्षा की जाय कि पुत्र जन्मेगा या पुत्री ? ईश्वर की इच्छा से जो भी वरदान मिले उसे पूरी प्रसन्नता के साथ शिरोधार्य करना चाहिए और उसकी स्वस्थता, शिक्षा, प्रतिभा एवं सुयोग्यता बढ़ाने की तैयारी आज से ही आरम्भ करनी चाहिए। माली अपने मालिक के बाग-बगीचे में अमरूद और लीची में कोई भेद-भाव नहीं करता, दोनों को समान चाव और समान ध्यान से सँभालता, सींचता है। हमें भी परिवार में आये सदस्यों को इसी दृष्टि से देखना चाहिए। नर-नारी की दृष्टि से किसी का मूल्य, महत्त्व न तो घटाना चाहिए और न बढ़ाना। दोनों के लिए समान खुशी मनाई जाय, दोनों के परिपालन में समान उत्साह रखा जाय। यह दृष्टिकोण पुंसवन के दिन से ही अपना लिया जाना चाहिए और पुत्र की आशा, आकांक्षा वाली नैतिक दुर्बलता को इसी अवसर पर त्याग दिया जाना चाहिए।

विसर्जन, सूर्यार्घ्य दान, सामूहिक आशीर्वाद, मंगल फल उपहार, सत्संकल्प पाठ आदि शेष क्रियाएँ पूरी करते हुए पुंसवन संस्कार समाप्त किया जाय। आगन्तुकों से अनुरोध किया जाय कि उनने जो सुना है उसे अपने ऊपर भी लागू करें, स्वयं भी उससे शिक्षा ग्रहण करें। साथ ही यह भी ध्यान रखें कि उनके घर में जब ऐसी आवश्यकता हो, तब वे भी संस्कार कराएँ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुंसवन-संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा

संस्कार के समय उपस्थित व्यक्ति को, गर्भवती, उसके पति तथा घर के सब लोगों को सम्बोधन करके पुंसवन संस्कार के उद्देश्यों तथा उसमें सन्निहित शिक्षाओं को विस्तारपूर्वक समझाना चाहिए। यह प्रशिक्षण ही संस्कार का प्राण है। इसे समझाने का ढंग इतना अच्छा होना चाहिए कि उपस्थित लोगों पर उसका अभीष्ट प्रभाव पड़े और वे उसे हृदयंगम कर सकें।

हृदये पितरौ ज्ञात्वा पूर्णं दायित्वमुत्तमम्।
जन्मनः सन्ततेः कुर्यात् व्यवस्था स्वागताय च ।।१।।

पिता-माता सन्तति के जन्म के महान् उत्तरदायित्व को हृदय में भली भाँति समझकर सन्तति के स्वागत के लिए व्यवस्था करें।

भाव्यात्मने हितार्थाय गर्भिण्या सहभाषणम्।
शिष्टं सद्भावसंयुक्तं व्यवहारञ्च समाचरेत् ।। २।।

भावी आत्मा के हित के लिए गर्भिणी के साथ मधुर वार्ता एवं सद्भावपूर्ण शिष्ट व्यवहार करें।

तदाहारो विहारश्च भवेत् शुद्धोऽतिसात्विकः।
शोकसन्तापरहितः ईर्ष्याद्वेषविवर्जितः।। ३।।

उसका आहार-विहार, शुद्ध, सात्विक विधि से उल्लासयुक्त हो तथा ईर्ष्या-द्वेष से रहित हो।

काम क्रोध भयादींश्च हृदये नैव चिन्तयेत्।
सर्वदा शुभसंकल्पान् कुर्यात् सन्ततिधारिणी।। ४।।

काम, क्रोध, भय आदि का हृदय में चिन्तन न करे तथा गर्भिणी सदैव शुभ संकल्पों एवं विचारों को किया करे।

महतां नररत्नानां बलैश्वर्यप्रपूरितम्।
श्रृणुयात् कीर्त्तयेन्नित्यं चरितं हर्षवर्द्धनम्।। ५।।

महान् पुरुष-रत्नों के बल और ऐश्वर्य से युक्त, हर्ष की बढ़ाने वाले चरित्र को उसके लिए श्रवण और कीर्तन करना चाहिए।

चिन्तनंसम्प्राप्य तेषां पठनं मननं तथा।
हर्षोत्साहयुक्तानां तु दृश्यानामवलोकनम्।। ६।।
अप्यनुकरणं तेषां गर्भिण्या परमं हितम्।
यथास्वाध्याय सत्सङ्गावुक्तौ वेदविदां वरैः।। ७।।

इसी प्रकार इन्हीं महापुरुषों के चरित्र का अध्ययन एवं मनन करे। हर्ष उत्साह से युक्त दृश्यों का अवलोकन, उनके सच्चरित्रों का अनुकरण गर्भिणी के लिए अवश्य हितकर है, जैसा कि स्वाध्याय और सत्संग उसके लिए कल्याणप्रद एवं हितकर वेदविदों ने बताये है।

शान्ति सद्भाव संयुक्ता भक्तिभावान्विता च सा।
स्वेष्टदेवार्चनां कुर्यात् यदीच्छति सुसन्ततिम्।। ८।।

शान्ति सद्भाव से युक्त वह श्रद्धा के साथ अपने इष्टदेव की पूजा करे, यदि वह श्रेष्ठ सन्तान को जन्म देना चाहती है।

पुंसवन संस्कार-प्रयोजन एवं विधि

यह संस्कार गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास के लिए गर्भिणी का किया जाता है। कहना न होगा कि बालक को सुसंस्कारी बनाने के लिए सबसे प्रथम उसके जन्मदाता माता-पिता को सुसंस्कृत होना चाहिए। उन्हें अपने आपको बालकों के प्रजनन तक दक्ष नहीं रहने देना चाहिए, वरन् सन्तान को सुयोग्य बनाने योग्य ज्ञान तथा अनुभव भी इससे पूर्व ही एकत्रित कर लेना चाहिए। जिस प्रकार मोटर चलाने से पूर्व उसके कल-पुर्जों की आवश्यक जानकारी प्राप्त कर ली जाती है, उसी प्रकार गृहस्थ जीवन आरम्भ करने से पूर्व इस सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी इकट्ठा कर लेनी चाहिए। अच्छा होता अन्य विषयों की तरह शिक्षा व्यवस्था में दाम्पत्य जीवन एवं शिशु निर्माण के सम्बन्ध में शास्त्रीय प्रशिक्षण दिये जाने की व्यवस्था रही होती। इस महत्त्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति संस्कारों के शिक्षणात्मक पक्ष से भली प्रकार पूरी हो जाती है।

संस्कार प्रयोजन—पुंसवन संस्कार गर्भ सुनिश्चित हो जाने पर तीन माह पूरे हो जाने तक कर देना चाहिए। विलम्ब से भी किया तो दोष नहीं, किन्तु समय पर कर देने का लाभ विशेष होता है। तीसरे माह से गर्भ में आकार और संस्कार दोनों अपना स्वरूप पकड़ने लगते हैं, अस्तु उनके लिए आध्यात्मिक उपचार समय पर ही कर दिया जाना चाहिए। इस संस्कार के नीचे लिखे प्रयोजनों को ध्यान में रखा जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ गर्भ का महत्त्व समझें, वह विकासवान शिशु, माता-पिता कुल परिवार तथा समाज के लिए विडम्बना न बने, सौभाग्य और गौरव का कारण बने।

❑ गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, बौद्धिक तथा भावनात्मक विकास के लिए क्या किया जाना चाहिए, इन बातों को समझा-समझाया जाय।

❑ गर्भिणी के लिए अनुकूल वातावरण खान-पान, आचार-विचार आदि का निर्धारण किया जाय।

❑ गर्भ के माध्यम से अवतरित होने वाले जीव के पहले वाले कुसंस्कारों के निवारण तथा सुसंस्कारों के विकास के लिए, नये सुसंस्कारों की स्थापना के लिए अपने संकल्प, पुरुषार्थ एवं देव अनुग्रह के संयोग का प्रयास किया जाय।

विशेष व्यवस्था—(क) ओषधि अवघ्राण के लिय वट वृक्ष की जटाओं का मुलायम सिरों का छोटा टुकड़ा, गिलोय, पीपल की कोपल-मुलायम पत्ते लाकर रखे जाएँ। सबका थोड़ा-थोड़ा अंश पानी के साथ सिल पर पीसकर एक कटोरी में उसका घोल तैयार रखा जाए।

(ख) साबूदाने या चावल की खीर तैयार रखी जाए। जहाँ तक सम्भव हो सके इसके लिए गाय का दूध प्रयोग करें। खीर गाढ़ी हो।

तैयार हो जाने पर निर्धारित क्रम से मंगलाचरण, षट्कर्म, संकल्प, यज्ञोपवीत परिवर्तन, कलावा-तिलक एवं रक्षाविधान तक का यज्ञीय क्रम पूरा करके नीचे लिखे क्रम से पुंसवन संस्कार के विशेष कर्मकाण्ड कराएँ।

ओषधि अवघ्राण

वट वृक्ष, विशालता और दृढ़ता का प्रतीक है। धीरे-धीरे बढ़ना धैर्य का सूचक है। इसकी जटायें भी जड़ और तने बन जाती हैं। यह विकास विस्तार के साथ पुष्टि की व्यवस्था है, वृद्धावस्था को युवावस्था में बदलने का प्रयास है।

❑ गिलोय-बेल में ऊपर चढ़ने की प्रवृत्ति है। हानिकारक कीटाणुओं की नाशक है, शरीर में रोगाणुओं, अन्तःकरण के कुविचार-दुर्भावों, परिवार और समाज में व्याप्त दुष्टता-मूढ़ता आदि के निवारण की प्रेरणा देती है। शरीर को पुष्ट कर-प्राण ऊर्जा की अभिवृद्धि कर सत्प्रवृत्तियों के पोषण की सामर्थ्य पैदा करना।

❑ पीपल-देव योनि का वृक्ष माना जाता है। देवत्व के परमार्थ के संस्कार इसमें सन्निहित हैं। उनका वरण धारण और विकास किया जाय।

सूँघने और पान करने का तात्पर्य श्रेष्ठ संस्कारों का वरण करने, उन्हें आत्मसात् करने की व्यवस्था बनाना। ऐसे आहार तथा दिनचर्या का निर्धारण किया जाये। श्रेष्ठ पुरुषों के प्रसंगों के अध्ययन, श्रवण, चिन्तन द्वारा गर्भिणी अपने में, अपने गर्भ में श्रेष्ठ संस्कार पहुँचाये। परिजन सहयोग करें।

क्रिया और भावना—ओषधि की कटोरी गर्भिणी के हाथ में दी जाय। वह दोनों हाथों से उसे पकड़े। मन्त्र बोला जाये, गर्भिणी नासिका के पास ओषधि को ले जाकर धीरे-धीरे गहरी श्वांस के साथ उसकी गन्ध धारण करे।

भावना की जाय कि ओषधियों के श्रेष्ठ गुण और श्रेष्ठ संस्कार खींचे जा रहे हैं। वेद मन्त्रों तथा दिव्य वातावरण द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति में सहयोग मिल रहा है।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे।

तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥

—यजु. ३१/१७

गर्भ पूजन

शिक्षण एवं प्रेरणा—गर्भ कौतुक नहीं, एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। उसे समझा जाय और उसको उठाने की तैयारी मानसिक तथा व्यावहारिक क्षेत्र में की जाय।

❑ गर्भ के माध्यम से जो जीव प्रकट होना चाहता है, उसे ईश्वर का प्रतिनिधि मानकर उसके लिए समुचित व्यवस्था बनाना, उसके स्वागत की तैयारी करना।

❑ गर्भ पूज्य है। कोई पूज्य व्यक्ति सामने हो तो अपने स्वभाव तथा परस्पर के द्वेष-बैर को भुलाकर भी शालीनता का वातावरण बनाया जाता है। गर्भ के लिए भी ऐसा ही किया जाये।

गर्भ का पूजन केवल एक सामयिकता औपचारिकता न रह जाये। संस्कारित करने के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए पूजा-उपासना का सतत प्रयोग चले। घर में आस्तिकता का वातावरण रहे। गर्भिणी स्वयं भी नियमित उपासना करे। उसे आहार और विश्राम जितना ही महत्त्वपूर्ण मानकर चला जाय। अधिक न बने तो गायत्री चालीसा पाठ एवं पंचाक्षरी मन्त्र **'ॐ भूर्भुवः स्वः'** का जप ही कर लिया करे।

क्रिया और भावना—गर्भ पूजन के लिए गर्भिणी के घर परिवार के सभी वयस्क परिजनों के हाथों में अक्षत पुष्प आदि दिये जावें। मन्त्र बोला जाय। मन्त्र समाप्ति पर एक तश्तरी में एकत्रित करके गर्भिणी को दिया जाय। वह उसे पेट से स्पर्श करके रख दे।

भावना की जाय, गर्भस्थ शिशु को सद्भाव और देव अनुग्रह का लाभ देने के लिए पूजन किया जा रहा है। गर्भिणी उसे स्वीकार करके गर्भ को वह लाभ पहुँचाने में सहयोग करती है।

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहदथन्तरे पक्षौ। स्तोमऽआत्मा छन्दा ᳪसि स्यादिनि यजू ᳪषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वःपत।। —यजु. १२/४

आश्वास्तना

शिक्षण एवं प्रेरणा—गर्भ के माध्यम से प्रकट होने वाले जीव की अपेक्षा होती है कि उसे विकास सद्गति के लिए सही वातावरण मिलेगा। जिस सत्ता ने गर्भ प्रदान किया है वह भी उस उत्तरदायित्व को पूरा किया जाते देखना चाहती है। दोनों को आश्वस्त किया जाना चाहिए कि उन्हें निराश नहीं होना पड़ेगा।

❑ पहला आश्वासन गर्भिणी देती है। वह अपने कर्त्तव्य का ध्यान रखे। आहार-विहार, चिन्तन सही रखे। दूसरों के व्यवहार और वातावरण की शिकायत करने में समय और शक्ति न गँवाकर, धैर्यपूर्वक गर्भ को श्रेष्ठ संस्कार देने का प्रयास करे। प्रसन्न रहे, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि मनोविकारों से बचाती रहे। धैर्यपूर्वक उज्ज्वल भविष्य की कामना की तैयारी करे।

❑ दूसरा आश्वासन उसके पति और परिजनों की ओर से होता है। गर्भिणी माता अपने शरीर तथा रक्त-माँस से बालक का शरीर बनाती है, अपना रक्त सफेद दूध के रूप में निकाल-निकाल कर बच्चे का पोषण करती है, उसके मल-मूत्र, स्नान, वस्त्र तथा दिनचर्या की हर घड़ी साज सम्भाल रखती है। इतना भार तथा त्याग कुछ कम नहीं। माता इतना करके भी अपने हिस्से की जिम्मेदारी का बहुत-बहुत बड़ा भाग पूरा कर लेती है। अब शिशु को सुसंस्कारी बनने के उपयुक्त परिस्थितियाँ उत्पन्न करना, पिता का काम रह जाता है। उसे पूरा करने के लिए उतना ही त्याग करना, उतना ही कष्ट सहना और उतना ही ध्यान रखना पिता का और परिजनों का भी कर्त्तव्य है।

❑ सब मिलकर प्रयास करें कि गर्भ पर अभाव और कुसंस्कारों की छाया न पड़ने पाये। गर्भिणी गलत आकांक्षाएँ पास न आने दें। परिजन उसकी उचित आकांक्षाएँ जानें और पूरी करें। क्या खाना चाहती है ? यही पूछना पर्याप्त नहीं, कैसा व्यवहार चाहती है यह भी पूछा जाय, समझा जाय और पूरा किया जाय।

क्रिया और भावना—गर्भिणी अपना दाहिना हाथ पेट पर रखे। पति सहित परिवार के सभी परिजन अपना दाहिना हाथ गर्भिणी की तरफ उठा रखें। मन्त्र पाठ तक वही स्थिति रहे।

भावना की जाय की गर्भिणी गर्भस्थ जीव तथा देवी सत्ता को आश्वस्त कर रही है। सभी परिजन उसके इस प्रयास में भरपूर सहयोग देने की शपथ ले रहे हैं। उस शुभ संकल्प में दैवी शक्तियाँ सहयोग दे रही हैं। इस श्रेष्ठ संकल्प की पूर्ति की क्षमता दे रही है।

ॐ यत्ते सुसीमे हृदये हितमन्तः प्रजापतौ।
मन्येऽहं मां तद्विद्वांसमाह पौत्रमघन्नियाम्।।

—आश्व. गृ. सू. १/१३/७

आश्वास्तना के बाद अग्नि स्थापना से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूरी करने का क्रम चलायें। उसके बाद विशेष आहुतियाँ करें।

विशेष क्षीर आहुतियाँ

शिक्षण एवं प्रेरणा—यज्ञीय जीवन भारतीय संस्कृति की विशेष उपलब्धि है। जीवन का हरण एक आहुति है। कृत्य विशेष को यज्ञमय बनाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिए विशेष क्रम बनाने होते हैं। विशेष आहुति उसी बोध को जीवन्त बनाती है।

यज्ञ में पोषक, सात्विक पदार्थ खीर की आहुति डाली जाती है। इसी प्रकार अन्तःकरण में दूध की तरह श्वेत, कलुष रहित भावों का संचार करें। दूध में घी समाया रहता है, अपने चिन्तन एवं आचरण में स्नेह समाया रहे। गर्भिणी स्वयं भी तथा परिवार के परिजन मिलकर गर्भस्थ शिशु के लिए ऐसा ही परमार्थपरक वातावरण बनायें।

क्रिया और भावना—गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ हो जाने पर खीर की पाँच आहुतियाँ विशेष मन्त्र से की जावें।

भावना कीजिए कि दिव्य मन्त्र शक्ति के संयोग से गर्भस्थ शिशु और सभी परिजनों के लिए अभीष्ट मंगलमय वातावरण बन रहा है।

ॐ धातादधातु दाशुषे प्राचीं जीवातुमक्षिताम्। वयं देवस्य धीमहि सुमतिं वाजिनीवतः स्वाहा। इदं धात्रे इदं न मम।।

शुद्ध दूध और चावल की खीर बनाकर उसमें मेवे घृत आदि भी डाले जायें। पति-पत्नी इस खीर से उक्त मन्त्र बोलते हुए पाँच विशेष आहुतियों का हवन करें। यह खीर इतनी हो कि आहुतियों के पश्चात् चरु प्रदान के लिए भी शेष रह जाय।

चरु प्रदान

शिक्षण एवं प्रेरणा—यज्ञ से बची खीर गर्भिणी को सेवन के लिए दी जाती है। यज्ञ से संस्कारित अन्न ही मन में देवत्व की वृत्तियाँ पैदा करता है। स्वार्थ वृत्ति से स्वाद को लक्ष्य करके तैयार किया गया भोजन अकल्याणकारी होता है।

❑ आहार प्रभु का प्रसाद बनाकर लिया जाय। बिना भोग लगाये न खाना, संयम की वृत्ति को पैदा करता है, पुष्ट करता है।

❑ नित्य का आहार भी यज्ञीय संस्कार युक्त हो इसके लिए घर में बलिवैश्व परम्परा डाली जानी चाहिए। गर्भिणी विशेष रूप से नित्य बलिवैश्व करके, यज्ञ का प्रसाद बनाकर ही भोजन ले।

❑ भोजन में सात्विक पदार्थ हों। उत्तेजक, पेट और वृत्तियों को खराब करने वाले पदार्थ न हों। उन्हीं में रस लिया जाय।

क्रिया और भावना—विशेष आहुतियों के बाद शेष बची खीर प्रसाद रूप में एक कटोरी में गर्भिणी को दी जाय। वह उसे लेकर मस्तक से लगाकर रख ले। सारा कृत्य पूरा होने पर पहले उसी का सेवन करे।

भावना करें कि यह यज्ञ का प्रसाद दिव्य शक्ति सम्पन्न है। इसके प्रभाव से राम-भरत जैसे नर पैदा होते हैं। ऐसे संयोग की कामना की जा रही है।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

—यजु. १८/३६

आशीर्वचन

सारा कृत्य पूरा हो जाने पर विसर्जन के पूर्व आशीर्वाद दिया जाय। आचार्य गर्भिणी को शुद्ध मन्त्र बोलते हुए फल-फूल आदि दे। वह साड़ी के आँचल में ले। अन्य बुजुर्ग भी ऐसा कर सकते हैं। सभी लोग पुष्प वृष्टि करें। गर्भिणी एवं उसका पति बड़ों के चरण स्पर्श करे, सबको नमस्कार करे। विसर्जन और जयघोष करके आयोजन समाप्त किया जाय।

संक्षेप में पुंसवन संस्कार के कर्मकाण्ड सम्बन्धी मंत्र इस प्रकार हैं—

ओषधि-अवघ्राण

वट वृक्ष के कोंपल तथा गिलोय को बारीक पीसकर उनका रस निकाले और उस रस को निम्न मन्त्र बोलते हुए वधू को सुँघावे।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।।

आश्वात्सना

पति निम्न मन्त्र बोलता हुआ पत्नी के मस्तक पर अपना दाहिना हाथ रखे।

ॐ यत्ते सुसीमे हृदये हितवन्तः प्रजापतौ। मन्येहं मां तद्विद्वांसमाह पौत्रमघन्नियाम्।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चरु प्रदान

[चरु प्रदान, का यह विधान हवन के अन्त में 'विसर्जन' की क्रिया के पहले किया जाना चाहिए।]

यज्ञावशिष्ट खीर को एक पात्र में रख उसे ढंककर रोली, कलावा, पुष्प आदि से सुसज्जित करके निम्न मन्त्र बोलते हुए गर्भिणी स्त्री को दे। गर्भिणी स्त्री जब भोजन करने बैठे तब प्रसाद रूप में उस खीर को पहले खाये।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

विशेष आहुतियाँ

पति-पत्नी निम्न मन्त्र बोलते हुए खीर की पाँच विशेष आहुतियों का हवन करें।

ॐ धाता दधातु दशुषे प्राची जीवातुमक्षिताम्। वयं देवस्य धीमहि सुमतिं वाजिनीवतः स्वाहा।। इदं धात्रे इदं न मम्।

इसके पश्चात् स्विष्टकृत होम से लेकर सूर्य अर्घ्यदान तक की विधि पूरी करके कार्यवाही सम्पूर्ण की जाय।

सीमन्त संस्कार पद्धतिः

पितरौ सुसन्ततेर्जन्मनो महदुत्तरदायित्वं सुविज्ञाय हृदि निदध्यात्।। १।।

जन्म देने के महान् उत्तरदायित्व को माता-पिता भली भाँति समझ कर उसे हृदय में धारण करें।। १।।

कुटुम्बिनो भाव्यात्मनः स्वागतार्थं गर्भिण्या सह सद्भावनापूर्णसहानुभूतिं, प्रेमपूर्णव्यवहारं, वार्ताञ्च कुर्युः।। २।।

सारे परिवार को भावी आत्मा के स्वागत में गर्भिणी के साथ सद्भावनापूर्ण, सहानुभूति और प्रेम-पूरित व्यवहार, वार्ता एवं व्यवस्था की आयोजन करनी चाहिए।। २।।

गर्भिण्याः—आहारविहारौ शुद्धसात्विकोल्लासपूर्णौ भवेताम्।। ३।।

गर्भिणी का आहार-विहार शुद्ध, सात्विक और उल्लास भरा हो।। ३।।

सा कामक्रोधेर्ष्याद्वेषचिन्तादुःखाशुभविचारेभ्यो मुक्तीभूय सुसंकल्पविचारयोर्निमग्ना भवेत्।। ४।।

उसे काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, चिन्ता, दुःख, अशुभ विचारादि से मुक्त होकर पुण्य संकल्पों एवं विचारों में संलग्न रहना चाहिए।। ४।।

स्वाध्यायं सच्चिन्तनम् सत्संगसदुपदेशं, सत्पुरुषाणाम् चरित्राध्ययनमनुशीलनञ्च एवं सुदृश्यकार्याणाम् अवलोकनानुसरणम् पवित्रोत्साहानन्दपूर्णवार्तानाम् च श्रवणम् गर्भिण्यै हितमावश्कमपि अस्ति।। ५।।

स्वाध्याय, सद्चिन्तन, सत्संग, सदुपदेश सत्पुरुषों के चरित्रों का अध्ययन मनन अनुशीलन करना, ऐसे ही दृश्यों का कार्यों का अवलोकन एवं अनुसरण करना तथा पवित्र उत्साह और आनन्द से भर देने वाली कथाओं का करना गर्भिणी के लिए हितकारी और आवश्यक है।। ५।।

गर्भिणी श्रद्धया विश्वसेत् यत् स्वस्व-भावसंकल्पविचारकार्यानुरूपा सन्ततिर्भविष्यति।। ६।।

गर्भिणी को यह श्रद्धा और विश्वास रखना चाहिउ कि मेरे ही भावों-विचारों, संकल्पों एवं कार्यों के अनुरूप ही हमारी सन्तान होंगी और बनेंगी।। ६।।

सा सुसन्ततिजननाय शान्तसरलभावपूर्ण-श्रद्धाभिः सह स्वेष्टदेवस्य-उपासनां कुर्यात्।। ७।।

उसे श्रेष्ठ सन्तान को जन्म देने के लिए शान्त, सरल, भावमयी श्रद्धा के साथ अपने इष्टदेव की उपासनारत रहना चाहिए।। ७।।

सीमन्त-संस्कार प्रयोगः

सीमन्त नाम का संस्कार गर्भ के सातवें महीना में होता है।

आदौ पट्टोपरिदेवान् संस्थाप्य वेदीं विरच्य तत्पश्चाद् गोधूमचूर्णेन स्वस्तिकं विरय तस्योपरि द्वेआसने धृत्वा पुनः सपत्नीकयजमानं-स्थापयित्वा भद्रं भद्रं कर्णेभिरिति मंत्रेण आचार्य स्वहस्तेऽक्षतान्नीत्वा आसनोपरि विकिरेत्।।

पहिले पट्टा पर गणेशादि पाँच देवता स्थापन करके और हाथ भर के वेदी बनाकर तत्पश्चात् गैहूँ के आटे से चौक लगाकर उसके ऊपर दो आसन बिछाकर फिर पत्नी समेत यजमान को बैठावे और भद्रं कर्णेभि इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन्त्र को पढ़ता हुआ आचार्य अपने हाथ में चावल लेकर आसनों पर डाले।

ततो मार्जनादिषट्कर्माणि विधाय स्वस्तिवाचनं तथा देवप्रार्थनां कृत्वा संकल्पं कुर्यात्।।

इसके बाद मार्जन आदिक छै कर्मों को करके फिर स्वस्ति वाचन तथा देव-प्रार्थना कर संकल्प करे।

'हस्ते जलाक्षतपुष्पदक्षिणांआदाय संकल्पं कुर्यात्'।

हाथ में जल, चावल, फूल, दक्षिणा लेकर संकल्प करें।

अद्येत्यादि० मम अस्याभार्याया गर्भाऽवयवेभ्यस्तेजोवृद्ध्यर्थं क्षेत्रगर्भसंस्कारार्थं प्रति-गर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणपुरस्सरं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सीमन्तोन्नयनाख्यं कर्म करिष्ये।। तदंगत्वेन निर्विघ्नार्थं गणपत्यादिपूजनं प्रायश्चित्तादिसर्वौ-षधीप्राशनं हवनं गर्भिणीशिक्षां तथा वरणं च करिष्ये।।

इस प्रकार संकल्प करके फिर वरण करें।

हस्ते जलाक्षतरक्तसूत्रपूगीफलदक्षिणां नीत्वा संकल्पयेत्।।

हाथ में जल, चावल, कलावा, सुपारी, द्रव्य लेकर वरण संकल्प करे।

अद्येत्यादि-अमुक कर्मणि एक तंत्रेणाऽऽचार्यादिवरणं करिष्ये।।

फिर संकल्प करके आचार्य के हाथ पर जल छोड़े और व्रतेन दीक्षेति मन्त्र से कलावा बाँधे और गन्धद्वारेति मन्त्र से तिलक करे।

पश्चाद् गणेशकलशपंचोकारगौर्यादिषो-डशमातृकासप्तवसोर्धारासमन्वितनवग्रहदिपूजनं विधाय पुनः पंचगव्यं कुर्यात्।।

पीछे गणेश कलश ब्रह्मदि पंचा कार गौर्यादिषोडशमातृका तथा वसोर्धारा सहित नवग्रहों का पूजन कर पंचगव्य को करे।

पंचगव्ये-गोमूत्रगोमयक्षीरं दधिघृतं इमानि वस्तूनि सन्ति, सर्वाणि वस्तूनि एकस्मिन्पात्रे एकीकृत्य यज्ञकाष्ठेनाऽऽलोड्य तथा कुशेन पूजा सामग्री सामार्ज्य गर्भाधानादिप्रायश्चित्तसंकल्पं कुर्यात्।।

पंचगव्य में—गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी ये पाँच वस्तुएँ होती हैं। एक पात्र में इन सब वस्तुओं करे इकट्ठी कर यज्ञ की लकड़ी से मट्ठा की तरह चलावे और फिर कुशा से पूजा की सामग्री पर छींटा लगावें फिर गर्भाधानादि प्रायश्चित संकल्प को करे।

हस्ते जलाक्षतपुष्पाण्यादाय संकल्पयेत्।।

फिर हाथ में जल, चावल, फूल लेकर इस आगे लिखे संकल्प को करे।

अद्येत्यादि-मम कायिकवाचिकमानसिक-सांसर्गिकगर्भाधानदोषनिवृत्त्यर्थं इदं दानं वा रजतमयीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।।

ऐसा कहकर पात्र में हाथ के जल को छोड़ दे।

पंचगव्यप्राशनं

फिर पंचगव्य को इस आगे के मन्त्र को बोलकर पीवे।

ॐ दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापक्षयाय च। पीयते पंचगव्यं हि पुनर्जन्म न विद्यते।।

ततो पंचगव्येन आपोहिष्ठेत्यादि मंत्रेण मार्जनं कुर्यात्।

इसके बाद पंचगव्य से आपोहिष्ठेत्यादि मन्त्र से मस्तक पर ही कुशा से छींटा लगावे।

तत्पश्चात् पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्नि संस्थाप्य पुनः कुशकण्डिकां कृत्वाऽग्नौ समिधोहोमयेत् पश्चात्जापत्यादिद्वादशाहुतीर्हुत्वा स्विष्टकृत् पूर्णाहुतिं च कुर्यात् ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दत्वा संस्रवं प्राशयेत्, प्रणीताविमोकः, पश्चाद् भस्मं धारयेत्।।

फिर पीछे वेदी के पाँच संस्कार कर अग्नि स्थापन कर फिर कुशण्डी कर अग्नि में समिधा होमे पीछे प्रजापत्यादि बारह आहुति होम कर स्विष्टकृद् कर पूर्णाहुति को करे और ब्रह्मा के लिए पूर्ण पात्र देकर प्रणीता में हवन से बचे टपकते हुए घी को सूँघे प्रणीता ओंधा करके पीछे भस्म लगावे।

ततः सर्वौषधीक्वाथप्राशनम्।।

तिसके पीछे सोंठ, मिर्च, पीपर, गिलोय, सौंफ इन पाँच वन ओषधियों को एकत्र कर क्वाथ बनाकर इन नीचे लिखे दो मन्त्रों को बोलता हुआ यजमान अपनी पत्नी को पिलावे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मंत्रः —ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। १।।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथव्यै रसाच्च विश्व कर्मणः समवर्त्ततााग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।। २।।

ततः श्रीफलोपरि स्वस्तिकं कृत्वा पुनर्गर्भिण्यङ्कोऽनेन मंत्रेण धरेत्।।

तदुपरान्त नारियल पर सतिया रोरी से लगाकर फिर गर्भिणी स्त्री की गोद में नारियल को इस आगे वाले मन्त्र से धरे।

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणील। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नोमुञ्चत्वꣳहसः।।

अथ गर्भिणी नियमधर्माः।।

इसके बाद गर्भिणी के नियम धर्म बताएँ।

पुनः स्वयं वा ब्राह्मणद्वारा गर्भसूक्तस्य पाठं कारयेत्।।

फिर स्वयं या ब्राह्मण के द्वारा गर्भसूक्त का पाठ करे या करावे। (सूक्त संहिता में 'गर्भ-सूक्त' प्रकरण देखें)।

पश्चाद् यज्ञादवशिष्टचरुं भक्षणार्थं दद्यात्।।

पीछे यज्ञ से बचा हुआ चरु खाने के लिए स्त्री को दे।

पुनश्च भार्या 'पयः पृथिव्यामिति मंत्रेण चरुं' भक्षयेत्।।

और फिर स्त्री 'पयःपृथिव्यामिति' इस मन्त्र से चरु को खावे।

पश्चाद् यजमानस्य रक्षाबन्धनं 'यदाबध्नमिति मंत्रेण तथा आदित्यादिमंत्रेण तिलकं कुर्यात्।।

पीछे यजमान के यदाबध्नन् इससे रक्षा सूत्र बाँधे और आदित्या इस मन्त्र से तिलक करें।

पश्चात् सर्वे जना मिलित्वा हस्तेऽक्षतान्नीत्वा यजमानस्य हस्ते आशीर्वादात्मकं दद्यात्।। श्रीर्वर्च्चस्वेति मंत्रेण।।

पीछे सब मनुष्य मिलकर हाथ में चावल लेकर श्रीर्वर्च्चस्वेति मन्त्र से यजमान को आशीर्वाद दें और चावल उसके ऊपर छोड़ें। पश्चात् विसर्जन करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नामकरण-संस्कार

नामकरण-संस्कार-विवेचन

नामकरण संस्कार जन्म के दशवें दिन किया जाता है। सूतक निवृत्ति या गृह शुद्धि के लिए जहाँ प्रजनन हुआ हो तथा जहाँ सूतिका रही हो उस स्थान, कमरे को लीप-पोत कर स्वच्छ करना चाहिए। जो वस्त्र पहनने, बिछाने, ओढ़ने के हों, उन सबको शुद्ध करना चाहिए।

प्राचीन समय में शिशु-जन्म के ठीक समय पर भी यज्ञादि कार्य होते थे। अब वह प्रक्रिया कठिन हो गई है। इसलिए जातकर्म और नामकरण दोनों को इकट्ठा ही करना होता है।

पुंसवन संस्कार के समय जिस प्रकार मण्डप, वेदी, कलश आदि का प्रबन्ध किया गया था और और गायत्री हवन के सामान्य विधान के अनुसार सारी व्यवस्था बनाई गई थी, उपकरण इकट्ठे किये गये थे, उसी प्रकार इस संस्कार में भी करना होता है।

उपस्थित लोगों को यथास्थान बिठाकर आसनों पर पति-पत्नी बैठें। पत्नी गोदी के बच्चे को लेकर दाहिनी और पति बांई ओर बैठे। बैठते समय अक्षत वर्षा करते हुए मंगल मंत्र **'ॐ भद्रं कर्णेभिः'** बोला जाए।

अभिषेक

अन्य कृत्य करने से पूर्व इस संस्कार में सबसे पहले अभिषेक होता है। बालक और उसकी माता यद्यपि स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहनकर आए हैं, तब भी उनका आना सूतिका गृह से ही हुआ है, इसलिए उनकी अभिमन्त्रित जल से शुद्धि की जाती है।

बालक तो अनेक योनियों में भ्रमण करता हुआ, मानव शरीर में आया है, इसलिए उसके मन पर पाशविक संस्कारों की छाया रहनी स्वाभाविक है। इसको हटाया जाना आवश्यक है। यदि पशु-प्रवृत्ति ही बनी रही तो मनुष्य शरीर की विशेषता ही क्या रही ? जिसके अन्तःकरण में मानवीय आदर्शों के प्रति निष्ठा, भावना है उसी को सच्चे अर्थों में मनुष्य कहा जा सकता है। इन्द्रिय-परायणता, स्वार्थपरता, निरुद्देश्यता, भविष्य की न सोचना, असंयम जैसे—दोषों को पशु-प्रवृत्ति कहते हैं। इनका जिनमें बाहुल्य है, वे नर-पशु हैं। अपना नवजात शिशु नर-पशु नहीं रहना चाहिए। उसके चिर संचित कुसंस्कारों को दूर किया ही जाना चाहिए। इस परिशोधन के लिए संस्कार मण्डप में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम बालक का अभिषेक किया जाता है।

दश दिन के सूतक की निवृत्ति के लिए दश अभिसिंचन कलश बनाये जायें। दश लोटों में जल भरकर उनमें थोड़ा-थोड़ा गंगाजल डालें। उनकी गरदनों पर कलावा बाँधें। रोली-चन्दन से स्वस्तिक काढ़ दें। पानी में आम्र पल्लव रखें, जो लोटे के मुँह से बाहर निकलते हुए दीखते रहें। एक पुष्प-गुच्छ जल छिड़कने के लिए रखें। इन दशों कलशों को एक सुसज्जित चौकी पर रखा जाय। इनका पूजन **'कलशस्य मुखे विष्णुः .....'** मन्त्रों से करें। भावना की जाय कि इस जल में तीर्थों तथा देव-शक्तियों का निवास हो गया। यह जल भरे लोटे मात्र न रहकर देव सत्ता के प्रतीक कलश हो गये। दश व्यक्ति बायें हाथों पर कलश लेकर पीछे की ओर पंक्तिबद्ध खड़े हों। बच्चे का शरीर बाहर रखा जाय, जिस पर छींटे पड़ते रह सकें। कुशाओं से अथवा पुष्प-गुच्छ से धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा जल तीनों के ऊपर छिड़का जाय। इसका मन्त्र 'ॐ हिरण्य गर्भ' है। अभिषेक के बाद लोटे यथास्थान पर रख दिये जायें।

अभिषेक के समय माता-पिता की तथा उपस्थित सभी लोगों की भावना यह रहे कि बालक बड़ा आदमी नहीं, महापुरुष बने। जैसे हाथी, भैंसा, गेंडा, जिराफ, शुतुरमुर्ग, अजगर, मगर, ह्वेल मछली आदि बड़े डील-डौल वाले होने पर भी तुच्छ जीवों में ही गिने जाते हैं, उसी प्रकार किसी के पास धन-दौलत, रूप,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सौन्दर्य, शरीर, बल, शिक्षा, सत्ता, चतुरता, प्रतिभा, कला-कौशल आदि विशेषताएँ कितनी ही बड़ी-चढ़ी क्यों न हों यदि वह गुण-कर्म-स्वभाव की दृष्टि से निकृष्ट स्तर का है, तो उसे बड़ा आदमी भले ही कहा जाय, पर वह रहेगा नर-पशु ही। महापुरुष वे हैं, जो भले ही निर्धन हों, सामान्य, सादगी का जीवन जीते हों, पर जिनके विचार, आदर्श एवं मनोभाव ऊँचे हैं, चरित्र शुद्ध है और लोक-सेवा के लिए जिनका योगदान है, वह महापुरुष कहे जायेंगे। अभिषेक की भावना यही है कि नवजात-बालक बड़ा आदमी नहीं महापुरुष बने। माता-पिता को भी बालक का लालन-पालन इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए।

अभिषेक के उपरान्त पवित्रीकरण, आचमन, शिखा-बन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन, षट् शुद्धि कर्म, स्त्री-पुरुष दोनों करें। पुरुष को नया यज्ञोपवीत दिया जाय। उभयपक्षीय वरण, तिलक के उपरान्त संकल्प किया जाय। मन्त्रपूर्वक पंचामृत बनाकर दोनों को पिलाया जाय। हाथ धोवें। संस्कार कार्य में प्रयुक्त होने वाली सभी वस्तुओं का कुशा या पुष्प से मार्जन किया जाय। इसके उपरान्त दीप-पूजन, कलश-पूजन, देव-पूजन, नमस्कार, षोडशोपचार-पूजन, चन्दन-धारण, स्वस्तिवाचन एवं रक्षा विधान की विधियाँ पूर्ण की जाती हैं। इनके मन्त्र अभिनव संस्कार पद्धति में दिये गये हैं। जितना समय हो उसके हिसाब से संक्षिप्त या विस्तृत विवेचना भी उन क्रियाओं की करते जाना चाहिए ताकि उपस्थित लोगों को यह विदित होता रहे कि कौन क्रिया किस उद्देश्य से कराई जा रही है।

मेखला बन्धन

कमर में जो सूत का कई लड़ों का बँटा हुआ रंगीन धागा बाँधा जाता है, उसे मेखला कहते हैं। कहीं-कहीं इसे कौंधनी, करधनी आदि भी कहा जाता है। यह कटिबद्ध रहने का प्रतीक है। फौजी जवान, पुलिस के सिपाही कमर में पेटी बाँधकर अपनी ड्यूटी पूरी करते हैं। शरीर सुविधा की दृष्टि से भी उसकी अनुपयोगिता हो सकती है, पर भावना की दृष्टि से कमर में बँधी हुई पेटी चुस्ती, मुस्तैदी, निरालस्यता, स्फूर्ति, तैयारी एवं कर्त्तव्य पालन के लिए तत्परता का प्रतिनिधित्व करती है। यह गुण मनुष्य के प्रारम्भिक गुण हैं। यदि इसमें कमी रही, तो उसे गई-गुजरी, दीन-हीन स्थिति में पड़े हुए अविकसित जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। आलसी, प्रमादी, हरामखोर, दीर्घसूत्री, असावधान, लापरवाह व्यक्ति अपनी प्रतिभा एवं क्षमता को यों ही बर्बाद करते रहते हैं, ढीला-पोला स्वभाव आदमी हो कहीं का नहीं रहने देता। उसके सब काम अधूरे, लँगड़े, फूहड़ और अस्त-व्यस्त रहते हैं, फलस्वरूप कोई आशाजनक सत्परिणाम भी नहीं मिल पाता। दूसरे परिश्रमी लोग जिन कामों में, जितने समय में, जितनी साधना से जितनी सफलता प्राप्त कर लेते हैं आलसी, प्रमादी, लापरवाह लोग उसका एक अंश भी प्राप्त नहीं कर पाते। जागरूकता का जल मिले बिना सारे प्रयत्न सूखे मुरझाये ही बने रहते हैं।

इस दोष का बीजांकुर बच्चे में न जमने पाये, इसकी सावधानी रखने के लिए जागरूकता एवं तत्परता का प्रतिनिधित्व करने वाली मेखला नामकरण संस्कार के अवसर पर कमर में बाँध दी जाती है। अभिभावक जब-जब उस मेखला को देखें, तब-तब यह स्मरण कर लिया करें कि बच्चे को आलस्य-प्रमाद के दोष-दुर्गुणों से बचाये रखने के लिए उन्हें प्राण-प्रण से प्रयत्न करना है। जैसे-जैसे बच्चा समझदार होता चले, वैसे-वैसे उसके स्वभाव में मुस्तैदी, श्रमशीलता एवं काम में मनोयोगपूर्वक जुटने का गुण बढ़ाते चलना चाहिए। इस सम्बन्ध में जो हानि-लाभ हो सकते हैं, उन्हें भी समय-समय पर बताते, सिखाते, समझाते रहना चाहिए।

मेखला बन्धन का मन्त्र **ॐ इमं दुरुक्त.....** है।

मधुप्राशन

इसके बाद बालक को शहद चटाया जाता है। सोने या चाँदी की चम्मच से चटाने की विधि है पर यदि वैसी व्यवस्था न हो तो पिता अथवा आचार्य उँगली से भी चटा सकता है। सम्मान देने की दृष्टि से यह कार्य उपस्थित लोगों में से किसी संभ्रान्त व्यक्ति से भी कराया जा सकता है। शहद की मात्रा स्वल्प ही रखनी चाहिए। मधु-प्राशन का मन्त्र **'ॐ प्रते ददामि.....** है।'

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शहद चटाने में मधुर भाषण की शिक्षा का समावेश है। सज्जनता की पहचान किसी व्यक्ति की वाणी से होती है। शालीनता की परख मधुर, नम्र, प्रिय, शिष्टता से भरी हुई बोलचाल देखकर ही की जा सकती है। इसी गुण के आधार पर दूसरों का स्नेह, सद्भाव एवं सहयोग प्राप्त होता है। वशीकरण मन्त्र-मधुर भाषण होता है। कोयल की प्रशंसा और कौए की निन्दा, उनका रंग-रूप एक-सा होने पर भी वाणी सम्बन्धी अन्तर के कारण ही होती है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, उसका जीवन-क्रम ८० प्रतिशत दूसरों के सहयोग सहकार पर चलता है। इन्हें जिस मूल्य पर खरीदा जाता है, उसमें मधुर भाषण का प्रथम स्थान है। पक्ष एवं आधार उतना सही न होने पर भी मधुर भाषण के साथ लोग उदार व्यवहार करते हैं। इसके विपरीत किसी का पक्ष औचित्य एवं न्यायानुमोदित ही क्यों न हो पर यदि वह कर्कश, अशिष्ट एवं उच्छृंखल ढंग से बोलता, बात करता है तो लोग उससे उदासीन, रुष्ट हो जाते हैं, कई बार तो विरोधी तक हो जाते हैं। कर्कश ढंग से बोलना दूसरों का अप्रत्यक्ष अपमान है, इससे ढीठता, उद्दण्डता, अहमन्यता एवं दुष्टता की गन्ध आती है। ऐसा कर्ण-कटु वचन किसी को नहीं सुहाता। भले ही बात सही या उचित कही जा रही हो, पर यदि उसमें कटुता, कर्कशता भरी हुई है तो कोई उसे सुनना नहीं चाहेगा। सुनेगा भी तो उसे चोट लगेगी और जो कुछ सही या उचित कहा गया है, उसका भी विरोध होने लगेगा। कटु-भाषियों को पग-पग पर बैर-विरोध का सामना करना पड़ता है। अपने भी विराने हो जाते हैं। उनका सच्चा मित्र तो शायद ही कोई रहता हो।

मीठा बोलना, चापलूसी, खुशामद, ठकुर सुहाती, हाँ में हाँ मिलाने के लिए, किसी को उल्लू बनाने के लिए उसकी प्रशंसा करने, सब्जबाग दिखाने, चुगली करने, अपने को शुभचिन्तक सिद्ध करने आदि प्रपंचों के साथ भी हो सकता है। अक्सर लोग दूसरों को ठगने के लिए— "बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा। खाहि महा अहि हृदय कठोरा।।" की उक्ति चरितार्थ करते रहते हैं। ठग और धोखेबाज आमतौर से कलात्मक ढंग का मधुर भाषण जानते हैं। इस सम्मोहन शस्त्र से वे अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहते हैं। ऐसे धूर्तापूर्ण मधुर भाषण की प्रेरणा नामकरण संस्कार में नहीं है। यह तो इस तरह बोलने की शिक्षा है, जिसमें अनन्य आत्मीयता, हितचिन्तन, उदारता, सचाई, शिष्टाचार का समुचित समावेश हो। बात वही कही जाय जो उचित हो, कहने का ढंग ऐसा हो, जिसमें किसी के सम्मान को धक्का न लगता हो। मतभेद के प्रश्नों पर भी इस ढंग से बातचीत की जा सकती है कि विचार-विनिमय शान्तिपूर्वक हो जाय, गलती समझने की ओर उसे सुधारने की गुञ्जायश रहे। पर यदि अपने पक्ष को सम्मान का पक्ष बना लिया जाय, अपनी बात को अक्खड़पन से और इस प्रकार कहा जाय कि भिन्न मत वाले को मूर्ख, भ्रान्त, दुष्ट सिद्ध किया जा रहा हो, तो निश्चय ही इससे द्वेष-दुर्भाव बढ़ता है, निन्दा, चुगली, व्यंग्य, उपहास, असम्मान, कर्कशता, रुखाई भरा बातचीत का ढंग असज्जनोचित है, वैसा तरीका अपनाना किसी सम्भ्रान्त व्यक्ति को शोभा नहीं देता। शहद चटाने की प्रक्रिया इन्हीं सब बातों की महत्ता का निर्देश करती है।

शहद-सा मीठा भाषण ही नहीं, व्यवहार भी होना चाहिए। प्रेम, आत्मीयता, ईमानदारी, सच्चाई, उदारता, सहानुभूति, शिष्टता से भरा व्यवहार जिसके साथ भी किया जाता है, वह बिराना होने पर भी अपना हो जाता है। ऐसा व्यवहार करने वाले के प्रति दूसरों की श्रद्धा, सद्भावना बढ़ती है और बदले में समय-समय पर वैसा ही उदार व्यवहार करते हैं। कुएँ की आवाज की तरह अपना मधुर व्यवहार दूसरों से भी हमारे लिए वैसा ही मधुर व्यवहार उपस्थित कर देता है। इस प्रकार परस्पर स्नेह व सहयोग के फलस्वरूप प्रसन्नता, सन्तोष एवं प्रगति का ही पथ प्रशस्त होता है। इसलिए जन्मते ही बच्चे को यह कहा जाता है कि वह अपने व्यक्तित्व में मधुरता का पुट अधिकाधिक मात्रा में रखे। बालक उस समय समझता नहीं है, पर उसके अभिभावकों का कर्त्तव्य यह हो जाता है कि वे स्वयं अपने आपको इसी प्रकार ढाल लें, मधुर भाषण एवं व्यवहार का वैसा ही अभ्यास कर लें, जिसे देखकर बालक अनायास ही उसी ढाँचे में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ढलने लगे। माता-पिता की जो भाषा होती है उसी को बालक बोलने लगता है। उसी प्रकार घर के लोगों के वचन या व्यवहार में जैसी मधुरता, कटुता होती है, उसका अनुकरण बालक करने लगते हैं। शहद चटाने का तात्पर्य यह भी है कि उस परिवार में मधुरता का व्यवहार, भाषण तुरन्त ही अभ्यास में आने लगे ऐसा प्रयत्न किया जाना चाहिए।

मन्त्र दीक्षा

मेखला बन्धन से तत्परता की और शहद चटाने से मधुर व्यवहार की शिक्षा देने के उपरान्त नामकरण संस्कार में तीसरा विधान मन्त्र-दीक्षा का है। बालक के कान के पास मुँह ले जाकर आचार्य या उपस्थित लोगों में से कोई संभ्रान्त सज्जन मन्त्र-दीक्षा देते हैं। यज्ञोपवीत के समय होने वाली गुरु-दीक्षा तो गुरु और शिष्य दोनों की सहमति, स्वीकृति से एक-दूसरे को परस्पर पहचान कर दी या ली जाती है। यह मन्त्र-दीक्षा अबोध बालक को दी जा रही है। उसका तात्पर्य यह है कि उसे जीवन विकास के एक महत्त्वपूर्ण अवलम्बन का बोध कराया जा रहा है। सही बात तो यह है कि यह प्रबोधन घर वालों के लिए है कि उन्हें शिशु-पालन के साथ-साथ किन-किन तथ्यों को ध्यान में रखना है। बच्चा तो थोड़ा बड़ा होने पर ही यह समझ सकता है कि उसे जन्मते ही गुरुजनों ने क्या सिखाया-समझाया था और उससे किस प्रकार का विकास करने की आशा की थी। अपने संस्कार का जब यह स्मरण करेगा, या दूसरों का होते देखेगा, तब उसे यह याद उठेगी कि जिन प्रधान मानवीय कर्त्तव्यों को उसे पूरा करना था, जिन गुणों को अपने में धारण करना, बढ़ाना था, उनकी पूर्ति हुई या नहीं ? यदि कुछ कमी रही है तो संस्कार पर विचार करने वाले या देखने वाले को अपने जीवन में इस सन्दर्भ की कमी को पूरा करने की प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

मन्त्र-दीक्षा के मन्त्र **"ॐ मेधा ते देवा . . ."** में यही भावना व्यक्त की गई है कि "सविता देवता तेरी बुद्धि में तेजस्विता, सरस्वती अध्ययन अभिरुचि, अश्विनीकुमार शारीरिक, मानसिक स्वस्थता बनाए रखने की प्रेरणा करें।" यह आशीर्वाद मन्त्र जैसा लगता है पर उसमें यह भी प्रेरणा है कि विचार-शक्ति के विकास का समुचित ध्यान रखा जाय। विचारों को ऊर्ध्वगामी बनायें, अधोगामी न होने दें। बाह्य प्रगति का मुख्य आधार आन्तरिक प्रगति पर निर्भर रहता है। जो भीतर से समर्थ, पुष्ट एवं सन्तुलित है, उसी का बाह्य-जीवन भी सुख-शान्ति से भरा होगा। भीतर से खोखले मनुष्य बाहरी जीवन में अस्त-व्यस्त, दिगभ्रान्त एवं असफल ही बने रहते हैं। वे कुछ अधिक बनाने या बिगाड़ने में समर्थ नहीं होते हैं। जो तेजस्विता मनोभूमि में से फूटती है उसी आधार, अवलम्बन को लेकर मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर हो पाता है।

लोग अपने बच्चों को खिलाने-पिलाने, पहनाने, उढ़ाने, पढ़ाने, लिखाने, ब्याह-शादी, धन-दौलत जुटाने की व्यवस्था तो करते हैं पर यह भूल जाते हैं कि उनकी मनोभूमि का स्वस्थ विकास इन सब साधनों की अपेक्षा भी अधिक मूल्यवान है। विचार-शक्ति का, विवेकशीलता का, भावनास्तर का यदि ठीक ढंग से विकास हो तो वह उपलब्धि इतनी बड़ी मानी जायेगी कि सारे अभाव उसकी तुलना में कुछ भी मूल्य न रखेंगे। ऋषि-मुनि भौतिक दृष्टि से अभावग्रस्त जीवन जीते थे, पर भावनात्मक विभूतियों का बाहुल्य रहने से वे इतने सामर्थ्यवान् रहते थे कि राव-राजा भी उनका अनुग्रह प्राप्त करने के लिए लालायित रहते थे। इसके विपरीत भावना की दृष्टि से गिरे हुए लोग भी बहुत हैं, जिन्होंने अनीतिपूर्वक सुख-साधन तो बहुत जुटा लिए हैं, पर ओछे एवं घृणित व्यक्तित्व के कारण कोई उन्हें टके सेर नहीं पूछता। न उनका कोई मान है न प्रभाव, न कोई उन पर विश्वास करता है न प्रेम। लोग उनसे अपना कुछ स्वार्थ साधने के लिए चाटुकारिता का प्रपञ्च तो रखते हैं किन्तु समय पर उनका एक भी सच्चा मित्र नहीं रहता।

जिनकी विवेकशीलता सुविकसित है, जो भावनात्मक दृष्टि से सुसंस्कृत हैं, जिनका दृष्टिकोण विशाल है, उनके लिए दशों दिशाएँ मंगलमय हैं। वे जिस ओर भी कदम बढ़ाते हैं उधर ही प्रगति होती चली जाती है। जिन्होंने भी इस संसार में कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, उन्होंने पहले अपनी मनोभूमि को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुविकसित बनाया है। गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार ही मनुष्य का वास्तविक विकास है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए बच्चे को केवल स्कूली शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए, वरन् इसकी व्यवस्था भी बनानी चाहिए कि प्रश्नोत्तर के रूप में, कथा-कहानियों के रूप में, समाचार एवं घटनाओं की चर्चा के रूप में, खेल और दृश्य दिखाने के रूप में ऐसा प्रशिक्षण दिया करें जिससे उसमें सद्गुणों को बढ़ाने वाले बीजांकुर उपजें। घर वालों का उच्च चरित्र तो इस दृष्टि से आदर्श होना ही चाहिए। शिक्षा का भार ऐसे अध्यापकों को सौंपा जाय, जो उसे अक्षर ज्ञान ही नहीं, भावनात्मक विकास की दिशा में भी विकसित कर सकें। थोड़ा बड़ा होने पर जीवन निर्माण, साहित्य स्वाध्याय में अभिरुचि उत्पन्न करना भी अभिभावकों का ही काम है। बालक को जन्म दिया है तो उसके स्वस्थ विकास के लिए क्या जरूरी है, इसकी जानकारी के लिए बालक के कान के समीप मन्त्र-दीक्षा का मन्त्र बोला जाता है। बड़े होने पर तो ऐसा वातावरण बनाना अभिभावकों एवं परिवार के लोगों का ही काम है।

सूर्य दर्शन

माता बालक को लेकर उठती है और उसे धूप में ले जाकर सूर्य के दर्शन कराती है। सूर्य का अभिवादन करती है। इस अवसर पर **'ॐ तच्चक्षुर्देवहितं .....'** मन्त्र बोला जाय।

सूर्य निरन्तरता, गतिशीलता, तेज प्रकाश एवं उष्णता का प्रतीक है। उसकी किरणें इस संसार में जीवन संचार करती हैं। बालक में भी इन गुणों का विकास होना चाहिए। सूर्य निरन्तर चलता रहता है, उसे विश्राम का अवकाश नहीं, वह अपने कर्त्तव्यों से एक क्षण के लिए विमुख नहीं होता। न बहुत जल्दबाजी, उतावली करता है और न थककर शिथिलता, उदासीनता, उपेक्षा बरतता है। जो कर्त्तव्य निर्धारित कर लिया, उस पर पूर्ण दृढ़ता एवं समस्वरता के साथ चलता रहता है। मनुष्य की क्रिया-पद्धति भी यही होनी चाहिए। जो पथ चुन लिया, जो कार्यक्रम अपना लिया, उसमें न तो ढील-शिथिलता बरतनी चाहिए और न अधीर होकर उतावली, जल्दी करनी चाहिए। धैर्य, स्थिरता और साहसपूर्वक दृढ़ निश्चय के साथ जो लोग निरन्तर चलते रहते हैं, वे कितना ही कठिन मार्ग क्यों न हो, लक्ष्य तक पहुँच ही जाते हैं। सूर्य दर्शन के साथ-साथ बालक को यह प्रेरणा, शिक्षा दी जाती है कि उसे भावी जीवन में आलसी, ढीला-पोला या अनियमित नहीं बनना है। नियमितता, लगन, परिश्रम के द्वारा ही वह कुछ कर सकेगा, कुछ बन सकेगा, इसलिए सूर्य को वह देखे और उसकी रीति-नीति का अनुसरण करे।

सूर्य प्रकाशवान एवं तेजस्वी होता है। उसका दर्शन करने वाला तेजस्वी एवं प्रकाशवान बनने का प्रयत्न करे। अपना चरित्र एवं व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए, जिससे दूसरे लोग प्रकाश ग्रहण करें। अपने भीतर भरे हुए अज्ञान, भ्रम एवं कुसंस्कार रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए ज्ञान, विवेक, साहस एवं संकल्प को बढ़ाना चाहिए। समीपवर्ती वातावरण में व संसार में जो अनाचार, अविचार का अन्धकार छाया हुआ है, उसे हटाने के लिए ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि सर्वत्र सद्ज्ञान और सदाचार का प्रकाश फैले। दीपक की तरह जलकर हमें दूसरों को प्रकाश देना चाहिए। सूर्य न बना जा सके तो दीपक का अनुकरण तो करना ही चाहिए। अन्धकार को पतन और प्रकाश को उत्थान का प्रतीक माना गया है। हमें ज्ञानवान और प्रकाशवान बनना चाहिए। जीवन इस प्रकार जीना चाहिए कि उसका यश, प्रकाश दशों दिशाओं में विस्तृत एवं चिरस्थाई हो।

सूर्य में गर्मी होती है, हमारी नस-नाड़ियों में गरम रक्त बहता रहे, हमारे हौसले पस्त न हों। क्रियाशीलता से गर्मी उत्पन्न होती है, सक्रियता में जीवन भर कमी न होने पावे। जटायु शरीर से वृद्ध हो गया था, पर रावण का सामना करने में अपने कर्त्तव्य पालन से पीछे नहीं हटा। परिस्थितियाँ भले ही प्रतिकूल हों पर हमें आदर्शों की रक्षा के लिए गरम ही रहना चाहिए। हिम्मत किसी भी स्थिति में गिरने न देनी चाहिए। सूर्य स्वयं गरम रहता है, दूसरों को भी गरम रखता है। हम स्वयं सक्रिय रहें, दूसरों को गतिशील बनाएँ। सूर्य-दर्शन से गर्मी ग्रहण करने की दिशा लेनी चाहिए।

सूर्य की किरणें प्राण-संचारक हैं। संसार की सजीवता इसी के कारण है। सूर्य ठण्डा हो जाय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

तो एक भी प्राणी जीवित न रहे। वनस्पति, जीव-जन्तु, मनुष्य, कीट-पतंग सभी कोई सूर्य से प्राप्त होने वाली प्राण-शक्ति के कारण ही सजीव हैं। सूर्य दर्शन करते हुए हम प्राणवान रहने, सजीव बनने की आकांक्षा जाग्रत करें। इस साकार में जीवित-मृतकों की कमी नहीं। जिनकी आशाएँ, भावनाएँ, आस्थाएँ मर गईं, जिन्हें भविष्य में प्रकाश नहीं, अन्धकार दीखता है, जिनने हिम्मत छोड़ दी और प्रयत्नों को ढीला कर दिया, वे जीवित-मृतक ही कहे जायेंगे। हम मरने पर भी जीवित रहने की योजना बनावें, दूसरों में जीवन संचार करें।

सूर्य अकेला ही नहीं चलता, वरन् सौर परिवार के सारे ग्रहों और उपग्रहों को साथ लेकर चलता है, सबको अपनी आकर्षण शक्ति से बाँधे रहता है, सबको गति देता है। हमें अपने विशाल परिवार को भी इसी प्रकार बाँधकर चलना चाहिए। अपनी शक्ति, सामर्थ्य से अपने परिवार के अनेक लोगों की सहायता करनी चाहिए। अकेलेपन की बात न सोचकर सबके कल्याण और उत्थान की बात सोचनी चाहिए। सूर्य दर्शन की प्रक्रिया के पीछे ऐसी-ऐसी अनेक शिक्षाएँ समाविष्ट है, उन्हें बालक के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है, पर हृदयंगम सभी को करना चाहिए।

पृथ्वी पूजन

बालक को सूतक के दिनों में जमीन पर नहीं बिठाते। नामकरण के बाद उसे भूमि पर बिठाते हैं, इससे पूर्व धरती का पूजन किया जाता है। प्रथम बार उस सम्पूजित भूमि पर बालक को बिठाते हैं। भूमि को लीपकर चौक पूरते हैं और उसका अक्षत, पुष्प, गन्ध, धूप, दूर्वा आदि से पूजन करते हैं। पूजन का मन्त्र **'ॐ मही द्यौ ' ' ' ' ' '** है। इसके उपरान्त बालक को उस भूमि पर बिठाते हैं। इस भूमिःस्पर्श का मन्त्र **'ॐ स्योना पृथिवी ' ' '** है।

भूमि को केवल मिट्टी ही न मानकर उसे देवभूमि, मातृभूमि, जन्मभूमि, धरती-माता, भारत-माता मानकर सदैव उसके प्रति अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय देना चाहिए। विश्व-माता, प्राणि-माता, भारत-माता धरती का वही सम्मान होना चाहिए जो शरीर को जन्म देने वाली माता का होता है। अपनी सगी माता की तरह मातृभूमि की सेवा के लिए मनुष्य के मन में भावनाएँ होनी चाहिए। देश-भक्ति, ईश्वर-भक्ति का ही एक प्रकार है। मातृभूमि की रक्षा और सेवा के लिए जिससे जितना त्याग एवं प्रयत्न बन सके करना चाहिए। अगणित देश-भक्तों ने मातृभूमि की वेदी पर अपने शीश और प्राण चढ़ाए हैं। जो देश के काम आ सकें वह धन्य हैं।

देश भक्ति से मतलब समाज-सेवा का ही है, देशवासी, साथी और सहयोगियों की सुख-सुविधा के लिए हमें कुछ कार्य करना चाहिए। अपना पेट पालने, अपनी ही उन्नति और सुविधा चाहने की प्रवृत्ति ओछे लोगों में पाई जाती है। श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी आन्तरिक महानता के अनुरूप अपनेपन का दायरा भी बड़ा बनाते हैं। घर तक ही उनकी ममता सीमित नहीं रहती, वरन् वह व्यापक बनती है। सुदूरवर्ती व्यक्ति भी अपने ही बन्धु-बान्धव प्रतीत होते हैं और **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** की निष्ठा जम जाती है। ऐसे देश भक्त व्यक्ति समाज सेवा एवं लोकमंगल के कार्यों को अपने निजी लाभ एवं स्वार्थ से भी बढ़कर मानते हैं। इन्हीं की यशगाथा इस संसकार को सुरभित करती रहती है। भूमि-स्पर्श करते हुए बालक को मातृभूमि की सेवा एवं देशभक्ति की भावनाएँ जाग्रत करने की शिक्षा दी जाती है।

धरती माता की क्षमाशीलता प्रसिद्ध है। वह सबका भार अपने ऊपर उठाती है, अपनी छाती में अन्न, फल, रस, खनिज आदि विविध-विधि पदार्थ उपजाकर प्राणियों का पालन करती है। लोग मल-मूत्र आदि से उसे गन्दा करते हैं तो भी रुष्ट नहीं होती और उदारतापूर्वक वह सब सहन करती है। अपना अधिकांश भाग जल की शीतलता से भरे रहती है। विशाल सम्पदा की स्वामिनी होने पर भी इतराती नहीं, पुरुषार्थियों को उदारतापूर्वक अपनी सम्पत्ति का उपहार प्रदान करती है। अपनी सारी सन्तानों को गोदी में लेकर अपनी निश्चित रीति-नीति के अनुसार गतिशील रहती है। भीतरी अग्नि को भीतर ही छिपी रहने देती है और बाहर से ठण्डी ही रहती है।

धरती माता के गर्भ में सभी कुछ भरा पड़ा है, पत्थर, धातुएँ, तेल, कोयला, रत्न आदि जो कुछ बहुमूल्य है, सब पृथ्वी के गर्भ से

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निकलता है। वह बिना मूल्य अपनी यह सम्पदा देती रहती है। यह नहीं कहती कि अपनी चीजों का मैं स्वयं ही उपयोग करूँगी, किसी को दूँगी नहीं, और अगर दूँगी भी तो मूल्य लेकर दूँगी। इस उदार अनुदान के पीछे भी उसने एक शर्त रखी है कि वह लाभ केवल सुपात्रों को ही मिले। जो पुरुषार्थी, पराक्रमी हैं, जो खोज और ढूँढ़ सकते हैं, उन्हें ही वे अनुदान मिलते हैं। निकम्मों, आलसियों को घर बैठे देने नहीं जाती, क्योंकि कुपात्रों को कोई वस्तु बिना मूल्य मिले तो उससे उनके दोष-दुर्गुण और भी अधिक बढ़ते हैं। जो किसान जितना अधिक परिश्रम कर सकता है, धरती माता उसे उतनी ही अच्छी उपज प्रदान करती है। सरकार भी मेहनती छात्रों को ही छात्रवृत्ति देती है। धरती माता का उदार अनुदान और सत्पात्र का संरक्षण, यह दोनों ही नीतियाँ धरती पर निवास करने वालों को ही हृदयंगम करनी चाहिए।

बहुत बड़ा भार-उत्तरदायित्व अपनी छाती पर धारण किए रहने पर भी धरती विचलित नहीं होती। कितने मनुष्यों, जीव-जन्तुओं, पर्वत-समुद्र का बोझ उसके ऊपर लदा है, पर लाखों-करोड़ों वर्षों से वह उसे धैर्य और शान्तिपूर्वक उठाए हुए है, आँधी-तूफान, सर्दी-गर्मी भूचाल और उल्कापात की चित्रविचित्र घटनाएँ घटित होती रहती हैं, पर वह उसकी कुछ भी परवाह नहीं करती। मनुष्य के ऊपर अनेक उत्तरदायित्व लदे होते हैं, प्रिय-अप्रिय, सुदिन-दुर्दिन भी आते-जाते रहते हैं। इनका बड़ा-चढ़ा स्वरूप देखकर भी धैर्यवान विचलित नहीं होते और शान्तिपूर्वक अपना कर्त्तव्य पालन करते रहते हैं। उनका सन्तुलन कोई बड़ी विभीषिका भी नहीं बिगाड़ सकती। भूमि स्पर्श करते-कराते हुए इन भावनाओं को प्रोत्साहित किया जाय।

इस संसार में बालकों की संख्या अधिक और प्रबुद्धों तथा प्रौढ़ों की संख्या कम है। नासमझ-अज्ञानी, अस्त-व्यस्त और अन्धकार में भटकने वाले व्यक्ति वस्तुतः एक प्रकार के बालक हैं। उनके विचार और कार्य आमतौर से उद्धत होते हैं। अपनी प्रवृत्ति के लोगों से तो उनकी पटरी बैठ जाती है, पर आदर्शवादी लोगों के साथ उनका टकराव बना रहता है। अविवेकी लोग, चाहे वे घर-कुटुम्ब के हों चाहे आस-पड़ोस के, उत्कृष्ट आदर्श अपनाने वालों से कुढ़ते-चिढ़ते और टकराते रहते हैं। प्रयत्न उनका यह होता है कि वे भी उन्हीं की तरह कीचड़ के दल-दल में फँसे रहें। प्रहलाद, गाँधी, बुद्ध, ईसा, दयानन्द, शंकराचार्य, चैतन्य, सुकरात आदि प्रत्येक सुधारक को मूर्खों ने ऐसे ही कष्ट दिये थे। सज्जन इनके ओछे स्तर पर नहीं उतरते, उनके मुँह नहीं लगते। उनसे झगड़ने में अपनी शक्ति गँवाने की अपेक्षा निर्धारित लक्ष्य की ओर चलने में लगे रहते हैं। अविवेकियों को बालक समझकर उन्हें क्षमा करते हैं। धरती-माता जैसे लोगों के मलमूत्र एवं पदाघात को भी सहन करती है, वैसे ही वे सहिष्णुता के द्वारा अपने मानसिक सन्तुलन को बिगड़ने नहीं देते। साथ ही उन नासमझों को सुधारने के लिए जो सम्भव होता है, प्रयत्न करते रहते हैं। भूमि-स्पर्श करते हुए, भूलोक निवासी मनुष्य को अपनी माता की यह मौन शिक्षा भी अपनानी चाहिए।

धरती के गर्भ में सोना, चाँदी, रत्न, खनिज आदि सारी सम्पदा भरी हुई है। समुद्र से तो सम्पदा का भण्डार लोगों ने कितना ही निकाल लिया है, पर उससे लाखों गुना वैभव उसके पास अभी भी सुरक्षित है। इतनी अमीर होते हुए भी धरती कभी घमण्ड नहीं करती, इतराती नहीं, सादगी से ही रहती है। महान् व्यक्ति यही रीति-नीति अपनाते हैं उनका ज्ञान, धन, बल, पद कितना ही बड़ा क्यों न हो, सदा नम्रता और सज्जनता से झुके हुए ही रहते हैं।

पृथ्वी के गर्भ में अग्नि की मात्रा कम नहीं। थोड़ा खोदने पर वह अंगार जैसी गरम निकलती है, उस गर्मी में कोई भी चीज पिघल सकती है। मनुष्य के भीतर इतनी शक्ति, सामर्थ्य और तेज, स्थिरता होनी चाहिए कि उसे जो छेड़े, वह जल-भुनकर नष्ट हो जाय। शक्ति से शून्य किसी को भी नहीं होना चाहिए। पर यह शक्ति उद्धत प्रदर्शन के लिए, गुण्डागर्दी के लिए नहीं है। समयानुसार उसका सदुपयोग भी किया जाय। धरती का बाहरी पर्त शीतल है, उसके तल पर तीन-चौथाई जल भरा पड़ा है। जल शान्ति का, शीतलता का प्रतीक है। साधारण व्यवहार में हर एक के साथ इसी प्रकार का शीतल व्यवहार किया जाना ही उचित एवं अभीष्ट है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मल-मूत्र, हड्डी, माँस आदि कोई गन्दी वस्तुएँ भी धरती में गाड़ दी जायें तो वह कुछ दिन में अपना दूषित स्वरूप समाप्त कर मिट्टी के रूप में अपना सजातीय बना लेती हैं। सच तो यह है कि वे अशुद्ध पदार्थ धरती के सम्पर्क में आते ही साधारण मिट्टी से भी उपयोगी खाद बन जाते हैं। हमारे संम्पर्क में जो भटकते हुए व्यक्ति आयें, वे अपनी स्थिति को बदल कर आशातीत परिवर्तन अनुभव करें, तभी अपनी श्रेष्ठता की सार्थकता है। अपने सम्पर्क में आने वालों को इस तरह का लाभ देने के लिए हमें निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

धरती देखने में स्थिर है, पर वह अपनी धुरी पर, सूर्य के चारों ओर, सौर-परिवार के साथ अभिजित नक्षत्र की परिक्रमा करने की बहुमुखी गतिशीलता अपनाये रहती है। हम साधारण लोगों की आँखों में एक ढर्रे का जीवन जीने वाले भले ही दीखें पर आत्म-निर्माण, समाज निर्माण जैसी महत्त्वपूर्ण दिशाओं में हमारी प्रयत्नशीलता निर्बाध गति से निरन्तर चलती रहनी चाहिए। इसी प्रकार धरती माता से और भी अनेक प्रकार की शिक्षाएँ एवं प्रेरणाएँ ग्रहण की जा सकती हैं। बालक को भूमि-स्पर्श करते हुए उपस्थित लोग इसी प्रकार की प्रेरणा ग्रहण करें और इस बालक को तथा अपने विस्तृत परिवार को इन्हीं भावनाओं से भावान्वित करने का प्रयत्न करें।

प्रत्यावर्तन (परस्पर परिवर्तन)

माता अपने बालक को पति की गोद में सौंपती है और पिता उसे लेकर परिवार के अन्य लोगों को दे देता है। वे सब क्रमशः एक-दूसरे को देते हुए अन्त में माता के पास लौटा देते हैं। इस प्रक्रिया का मन्त्र **"ॐ अथ सुमंगल ....."** है।

माता अपने रक्त, माँस से उदरस्थ बालक के शरीर का निर्माण करती है, अपना श्वेत रक्त दूध पिलाकर उसका पालन करती है, इसलिए इस उत्पादन में उसका श्रेय अधिक है। छोटे बालक माता के समीप ही अधिक रहते हैं, इसलिए उनके क्रियाकलापों एवं भावनाओं से प्रेरणा भी अधिक लेते हैं, यह बात भी ठीक है, पर साथ ही यह भी निश्चित है कि अकेली माता उसका सर्वांगीण विकास कर सकने में समर्थ नहीं हो सकती। आहार-विहार, चिकित्सा, खेल, शिक्षा, संस्कार आदि का बहुत कुछ उत्तरदायित्व परिवार के अन्य लोगों पर भी समान रूप से है। औरों की ओर से उपेक्षा रहे, या प्रतिकूल प्रभाव डाला जाय, तो भी उसके सुविकसित सुसंस्कृत होने की आशा नहीं की जा सकती। इसलिए परस्पर परिवर्तन की क्रिया द्वारा घर के सभी लोग बालक को अपनी गोदी में लेते हैं और वह उत्तरदायित्व अनुभव करते हैं कि इस बालक के स्वस्थ विकास में वे सभी शक्ति भर योगदान करेंगे। बेशक माता के बाद अधिक उत्तरदायित्व पिता पर आता है, पर घर के अन्य सदस्य भी उससे मुक्त नहीं रह सकते। साझे की खेती की तरह बालकों के निर्माण में घर के सब लोगों का समान योगदान रहना चाहिए।

देखा गया है कि बालक की पाचन-शक्ति एवं आवश्यकता का ध्यान न रखते हुए घर के लोग उसे अपने-अपने साथ बिठाकर भोजन कराते रहते हैं। लाड़चाव में मिठाइयाँ, पकवान या दूसरी गरिष्ठ चीजें देते रहते हैं। किया तो गया था यह सब लाड़चाव में पर वह अविवेकपूर्ण होने के कारण बालक के लिए प्राणघातक बन जाता है। भारत में ६० प्रतिशत बालक अधिक मात्रा के और अनुपयुक्त भोजन कराए जाने के कारण मरते हैं। जिगर बढ़ने की बीमारी का एक मात्र कारण यही है। घर के हर सदस्य को ध्यान रखना चाहिए कि डॉक्टर के परामर्श के अनुसार नियत मात्रा में, नियत समय पर, नियत प्रकार का आहार ही उसे दें। लाड़चाव का वैसा मिथ्या प्रदर्शन न करें, जिससे बालक को अपने स्वास्थ्य एवं प्राण से हाथ धोना पड़े।

बड़ों को गाली देने, भाई-बहिनों को मारने या वैसे ही उच्छृंखल व्यवहार सिखाने में घर के लोग प्रसन्नता अनुभव करते हैं। आरम्भ में तो उन्हें खुशी होती है, पर पीछे वही आदतें परिपक्व होने पर उसे दुर्गुणी बना देती हैं। पैसे देने की आदत बहुत ही बुरी है। बाजार से वे निकम्मी चीज खरीद लाते हैं, अपना स्वास्थ्य बिगाड़ते हैं और चटोरे हो जाते हैं। अधिक पैसों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिए जिद्द करते हैं, न मिलने पर चोरी करते हैं। पैसा देने की अपेक्षा जो वस्तुएँ आवश्यक हों, वे देनी चाहिए। बच्चों को उपयुक्त, अनुपयुक्त का ज्ञान नहीं होता, इसलिए वे निकम्मी चीज खरीद लाते हैं और अपना स्वास्थ्य बिगाड़ते हैं। घर के सभी लोगों को इसका ध्यान रखना चाहिए। गाली देने, बीड़ी पीने जैसी गन्दी आदतें घर में किसी को भी नहीं रखनी चाहिए। गोदी में तमाम दिन लिए फिरने से बच्चों की जाँघें तथा मल-मूत्र के संस्थान दुर्बल हो जाते हैं। इसलिए गोदी में कम से कम समय ही उन्हें लेना चाहिए। झूला, पालना, बनाकर यह गोदी का प्रयोजन पूरा किया जा सकता है। बच्चों को डराना, पीटना, झूँठ बोलना सिखाना, बहकाना आदि मनोभूमि को विकृत करने वाला व्यवहार नहीं करना चाहिए। शिशु-निर्माण एक विशुद्ध विज्ञान है, उसकी अनेक पुस्तकें हैं। घर के सभी लोगों को उस सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और यह ध्यान हर एक को रखना चाहिए कि बालक का स्वास्थ्य विकास एवं सही निर्माण हो। इस सम्बन्ध में हर सदस्य को अपना कर्त्तव्य सोचना, निर्धारित करना और निबाहना चाहिए। परस्पर परिवर्तन का विधान इसी भावना के साथ किया जाना चाहिए।

नामकरण—काँसे की थाली या किसी सुन्दर तख्ती पर बालक का नाम केशर मिले चन्दन से अथवा रोली से लिखते हैं, उसे पुष्प आदि से सुसज्जित करते हैं। उसे उपस्थित लोगों को दिखाकर रखे हुए नाम की घोषणा करते हैं। उपस्थित लोगों के हाथ में चावल, पुष्प देकर आशीर्वाद का मन्त्र **"ॐ श्रीवर्चस्व ....."** बोलते हैं और उन्हें इस नाम की पट्टिका पर चढ़ा देते हैं।

नाम रखने में फलित ज्योतिष के अनुसार यह प्रथा है कि बच्चा जिस समय पैदा हुआ है, उस समय जिस नक्षत्र का जो चरण चल रहा हो, उससे सम्बन्धित अक्षर को नाम का प्रथम अक्षर बना दिया जाय। जैसे आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में कोई बालक जन्मा है तो उससे सम्बन्धित अक्षर 'कु' हुआ। इसे प्रथम अक्षर बनाकर कोई नाम रखा जाये। जैसे—कुरूप, कुबुद्धि, कुत्ता, कुकर्मी, कुतर्की आदि-आदि। इस प्रकार कितने ही अक्षर ऐसे आते हैं, जिन पर अच्छे नाम रखे ही नहीं जा सकते। इसलिए लोग राशि नाम अलग और मुँह बोला नाम अलग रखते हैं। वस्तुतः राशि नाम की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। जब जन्म कुण्डली मौजूद ही है, तो उससे आवश्यक ग्रह गणित देख लिया जाय। नाम यदि राशि का भी हो, तो भी उससे कुछ प्रयोजन ज्योतिष के हिसाब से नहीं सधता। अतएव उस झंझट में न पड़कर नाम ऐसा रखना चाहिए, जो बालक को प्रोत्साहित करने वाला एवं गौरव अनुभव कराने वाला हो।

लोक दर्शन

कोई वयोवृद्ध व्यक्ति बच्चे को गोदी में लेकर घर से बाहर ले जाते हैं और उसे बाहर का खुला संसार, खुला वातावरण दिखाते हैं। इसके साथ ही आशीर्वादात्मक **'ॐ त्वं जीव शरदः शतं वर्धमान .....'**। वाक्य सब मिलकर उच्चारण करते हैं।

बालक घर में ही कूपमण्डूक न बना रहे, वरन् वह जगती के विस्तृत प्रांगण में भी अपने को गतिशील बनाए, प्रकृति की गोद में रहे, विशाल वातावरण में बढ़े, इसके लिए बाहर खुले वातावरण में उसे घुमाया जाता है।

लोक दर्शन अर्थात् संसार को देखना-जानना लौकिक और पारलौकिक दोनों ही प्रगतियों की दृष्टि से आवश्यक है। जीना संसार में ही पड़ता है इसलिए उसके भले-बुरे स्वरूप को जानना होता है, जो बुराइयाँ हैं उनसे बचने और जो अच्छाइयाँ हैं उनसे लाभ उठाने की सावधानी बरतनी पड़ती है। सावधान मनुष्य के लिए यह संसार कल्प-वृक्ष की तरह उपयोगी और असावधानों के लिए भवसागर है। इसलिए उसके सम्बन्ध में अधिक जानना, समझना नितान्त आवश्यक है; भूगोल, इतिहास आदि इसीलिए पढ़ा, सीखा जाता है। लोकाचार जिसने सीख लिया उसने बहुत कुछ सीख लिया, जिसे दूसरे से ठीक तरह व्यवहार करना और वस्तुओं का ठीक तरह प्रयोग करना आ गया, समझना चाहिए जीवन कौशल उसे आ गया।

यह संसार विराट् ब्रह्म है। इसे प्रत्यक्ष परमेश्वर समझना चाहिए। भगवान् राम ने कौशल्या और काकभुसुण्डि को और भगवान्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कृष्ण ने यशोदा तथा अर्जुन को विराट् रूप दिखाते हुए विश्व ब्रह्माण्ड का ही साक्षात्कार कराया था। जो इस जगत् को ईश्वर की विशाल प्रतिमा के रूप में देखने लगा, समझना चाहिए कि उसने ईश्वर का दर्शन कर लिया। ईश्वर सर्वव्यापी होने के कारण चमड़े की आँखों से नहीं देखा जा सकता, उसके दर्शन दिव्य नेत्रों से, विवेक से ही होते हैं। ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी समझकर, जो दुष्कर्मों के प्रतिफल, दण्ड और सत्कर्मों के प्रतिफल पुरस्कार को आस्थापूर्वक समझ गया, समझो स्वर्ग-नरक उसकी मुट्ठी में आ गये। वह अपनी क्रिया पद्धति को कुमार्गगामिता से हटाकर सन्मार्ग पर मोड़ सकता है और अपने लिए नरक का अस्तित्व समाप्त कर स्वर्ग का वातावरण उत्पन्न कर सकता है। लोक दर्शन का तात्पर्य इस प्रकार ईश्वर दर्शन का अनुभव करना भी है।

हम अपने को, अपने घर को ही न देखते रहें, वरन् बाहर फैले हुए समाज को भी देखें और उसकी सुख-शान्ति, प्रगति एवं समृद्धि का भी वैसा ही ध्यान रखें, जैसा अपना रखते हैं, लोक दर्शन प्रक्रिया के पीछे ऐसी-ऐसी अनेक महानता, व्यापकता, विशालता, उदारता की ओर ले जाने वाली श्रेष्ठ भावनाएँ छिपी पड़ी हैं।

नामकरण संस्कार का प्रयोजन बालक को समाज से और समाज को इस अवतरित आगन्तुक से परिचित कराना है। किस नाम से उसे समाज जाने ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए इसी अवसर पर एक निर्णय लिया जाता है। जो नाम बालक का रखा गया है, उसके पीछे भावना की ऐसी स्फुरणा सन्निहित रहनी चाहिए, जिससे समाज द्वारा उसे श्रेष्ठता से सम्बद्ध माना जाय। नाम केवल शब्दों का समूह ही नहीं है, उन शब्दों के पीछे भावना भी संलग्न है। शब्दों का जो अर्थ होता है, उससे स्मृति का एक ताना-बाना जुड़ा रहता है। जैसे किसी को गधा, कुत्ता, सुअर, दुष्ट, कसाई आदि कहा जाय तो इन शब्दों के अर्थ से जिन गन्दे जानवरों या कुकर्मियों का सम्बन्ध जुड़ा है उनकी स्मृति सामने आ खड़ी होगी। फलस्वरूप जिनके लिए इन शब्दों का प्रयोग किया गया है, उसके लिए निकृष्टता एवं घृणा का भाव मन में उदय होगा। इन दुर्भावनाओं को कोई अपने ऊपर आरोपित होने देना पसन्द नहीं करता, फलस्वरूप उसे बुरा लगता है, क्रोध आता है और ऐसे अपशब्द कहने वाले से लड़ने-मरने को तैयार हो जाता है।

अच्छे या बुरे शब्द जो अपने लिए एक बार भी कहे जाते हैं, वे मन पर अच्छा या बुरा असर डालते हैं। जिसने कहा है, जिसने सुना है या जिसके प्रति कहा गया है, उन सभी पर उन शब्दों का प्रभाव पड़ता है। इसलिए हर व्यक्ति अपने लिए अच्छे विशेषण प्रयुक्त किया जाना पसन्द करता है क्योंकि इन्हीं शब्द विशेषणों के आधार पर उसका समाज के साथ परिचय होता है, उसका स्वरूप प्रकट होता है और सम्मान-असम्मान की पृष्ठभूमि तैयार होती है। बार-बार जो शब्द अपने लिए कहे जाते हैं, उनसे धीरे-धीरे अपनी अन्तःचेतना भी प्रभावित होती है और जैसा जिसके लिए कहा जाता है, वह वैसा ही बनने-ढलने लगता है। किसी को बुद्धू, उल्लू, अहमक, सनकी आदि विशेषणों के साथ हर बार पुकारा जाय तो धीरे-धीरे उस व्यक्ति की अन्तःचेतना अपने बारे में इन विशेषणों को सही मानने लगती है और धीरे-धीरे वह वैसा ही बनता जाता है। जो लोग इन विशेषणों का प्रयोग करते हैं, वे भी उसे वैसा ही मानते हैं और सुनने वाले भी उसके सम्बन्ध में ऐसी ही धारणा बना लते हैं। बुरे या अच्छे विशेषण निरर्थक नहीं जाते, वे अपना प्रभाव किसी न किसी रूप में छोड़ते ही हैं। यदि ऐसा न हो तो बुरे विशेषणों से जुड़े हुए अपशब्द सुनकर किसी को अप्रसन्नता और अच्छे विशेषण सुनकर प्रसन्नता न होती।

नामकरण में इसी तथ्य का ध्यान रखा जाता है। बच्चों के नाम ऐसे रखने चाहिए जिनसे उनका गौरव, साहस, स्वरूप एवं स्तर ऊँचा उठता हो। लाड़-प्यार में भी औंधे-सीधे नाम नहीं रखने चाहिए अन्यथा बच्चों की कोमल मनोभूमि पर उसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। आत्मा का सम्मान होना ही चाहिए, भले हो वह अभी छोटे बालक के शरीर में ही क्यों न प्रकट हो रही हो। यह सम्मान उसका अच्छा नाम रखने से ही प्रकट होता है। अभिभावकों तथा कर्मकाण्ड कराने वाले पुरोहितों का कर्त्तव्य है कि बालकों के नाम उनका गौरव एवं स्तर ऊँचा उठाने वाले ही रखें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामान्य क्रम

इसके उपरान्त गायत्री यज्ञ का सामान्य क्रम चल पड़ता है। अग्नि स्थापना, गायत्री स्तवन, अग्नि प्रदीपन, समिधाधान, जलप्रसेचन, आज्याहुति, गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ दी जाती हैं। इसके बाद नामकरण संस्कार के लिए विशेष रूप से नियत खीर की पाँच-पाँच आहुतियाँ **'ॐ धाता दधातु . . . . . '** मन्त्र से पति-पत्नी . . . . . देते हैं। तदुपरान्त स्विष्टकृत, पूर्णाहुति, वसोधारा, आरती, घृत अवघ्राण, भस्मधारण, क्षमा प्रार्थना, नमस्कार, शुभकामना, अभिसिंचन, प्रदक्षिणा की जाती है। सब लोग हाथ में चावल लेकर **'ॐ श्रीर्वर्चस्व . . . . . '** मन्त्र से पति-पत्नी तथा बालक को आशीर्वाद देते हैं। माता की गोद में आशीर्वाद स्वरूप नारियल या कोई फल रखते हैं। यह आशीर्वाद और मंगलफल की क्रिया हर ऐसे संस्कार में होती है, जिसमें पति-पत्नी साथ हों।

सामूहिक आशीर्वाद का मन्त्र यह है—

ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुण्यलाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः।

मंगल फल का मन्त्र यह है—

ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजा ँसि। यो अस्कभायदुत्तर ँ सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्ण वेत्वा।

—यजु० ५.१८

इसके बाद विसर्जन, सूर्य अर्घ्यदान करते हुए कार्य को समाप्त करते हैं।

नामकरण संस्कार की भूमिका में ७ श्लोक शिक्षात्मक है। उनमें पुत्र-कन्या को समान समझने, दोनों के विकास एवं प्रशिक्षण की समान व्यवस्था करने, आहार-विहार एवं मनोरंजन का समुचित प्रबन्ध करने, सुसंस्कारी बनाने एवं ईश्वर के लिए पुष्पवृक्षों को कर्तव्यनिष्ठ माली की दृष्टि से सींचने, बढ़ाने की प्रेरणा है। नवीन बालक के प्रति माता-पिता और घर के सब लोग अपने-अपने कर्त्तव्यों को समझें और निबाहें, यही नामकरण संस्कार की प्रेरणा है।

नामकरण संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा

कन्या सुपुत्रयोस्तुल्यं वात्सल्यं च भवेत्सदा।
तुल्यानन्दं विजानीयाद् द्वयोर्मनसि प्राप्तयोः।। १।।

सदैव कन्या और पुत्र दोनों पर समान वात्सल्य हो दोनों की प्राप्ति से हृदय में समान प्रसन्नता का अनुभव करे।। १।।

सुखशान्तेर्व्यवस्था च सुविधायार्द्वयोरपि।
समुत्कर्षविकासाभ्यां ध्यानं यत्नं समं भवेत्।। २ ।।

दोनों की सुख-शान्ति एवं सुविधा की व्यवस्था समान हो तथा दोनों के उत्कर्ष और विकास का समान ध्यान और प्रयत्न होना चाहिए।। २।।

नामधेयं तयोश्चापि महापुरुषकर्म्मणाम्।
विशदानां प्रेरकञ्च भवेत्स्वगुणबोधकम्।। ३।।

उनके नाम (बालक-बालिका के) गुण बोधक तथा महापुरुषों के विशद् कर्मों की अनुप्रेरणा देने वाले हों।। ३।।

स्वेच्छाचारविहाराणां सात्विकानां च शैशवे।
व्यवस्था तुष्टिपुष्टीनां जनन्या मनसो भवेत्।। ४।।

शैशव काल में, माता के सात्विक, स्वच्छ आहार-विहार एवं तुष्टि-पुष्टि तथा उल्लास की उचित व्यवस्था हो।। ४।।

सन्ततिं क्रमशः प्रेम्णा सुसंस्काराय प्रेरयेत्।
वर्जयेद्दुर्गुणेभ्यश्च त्यक्त्वा हानिप्रदं सुखम्।। ५।।

क्रमशः सन्तति को प्रेमपूर्वक सुसंस्कार के लिए प्रेरणा करे। हानिप्रद सुख का त्याग कर दुर्गुणों से रोके।। ५।।

सर्वाङ्गीण विकासाय प्रदद्यात्सुविधां सदा।
चानुकूलां विनोदाय क्रीडाज्ञानस्य प्राप्तये।। ६।।

सदैव सर्वांगीण विकास, विनोद, क्रीड़ा और ज्ञान की प्राप्ति के लिए अनुकूल सुविधा प्रदान करें।। ६।।

पूर्णशक्ति विकासाय मनोमस्तिष्क कर्मणाम्।
सुस्थितिसाधनादीनि प्रदेयान्याभिभावकैः।। ७।।

मन, मस्तिष्क और कर्मों के पूर्ण विकास के लिए संरक्षकों को उत्तम स्थिति साधन आदि प्रदान करने चाहिए।। ७।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मालाकारो यथा वृक्षान्प्रभुदत्तान्सुसिञ्चति।
वात्सल्येन तथा सुष्ठु पालयेत्कृत्यनिष्ठया।। ८।।

जिस प्रकार माली प्रभुप्रदत्त वृक्षों को भली प्रकार सींचता है (खाद पानी आदि देकर) उसी प्रकार माता-पिता वात्सल्य तथा अपेक्षापूर्वक कर्त्तव्य की निष्ठा से अपनी सन्तान का भली प्रकार पालन करें।। ८।।

नामकरण-संस्कार : प्रयोजन एवं विधि

संस्कार प्रयोजन—नामकरण शिशु जन्म के बाद पहला संस्कार कहा जा सकता है। यों तो जन्म के तुरन्त बाद ही जातकर्म संस्कार का विधान है, किन्तु वर्तमान परिस्थतियों में वह व्यवहार्य नहीं दीखता। अपनी पद्धति में उसके तत्व को भी नामकरण के साथ समाहित कर लिया गया है।

❑ इन संस्कारों के माध्यम से शिशु रूप में अवतरित जीवात्मा को कल्याणकारी यज्ञीय वातावरण का लाभ पहुँचाने का सत्प्रयास किया जाता है। जीव के पूर्व संचित संस्कारों में जो हीन हों, उनसे मुक्त कराना, जो श्रेष्ठ हों उनका उभार-अभीष्ट होता है।

❑ नामकरण संस्कार करते-कराते समय शिशु के अन्दर मौलिक कल्याणकारी प्रवृत्तियों, आकांक्षाओं के स्थान, जागरण के सूत्रों पर विचार करते हुए उनके अनुरूप वातावरण बनाना चाहिए। शिशु कन्या है या पुत्र, इसके भेदभाव को स्थान नहीं देना चाहिए। भारतीय संस्कृति में कहीं भी इस प्रकार भेद नहीं है। शीलवती कन्या को दस पुत्रों के बराबर कहा गया है **"दस पुत्र समा कन्या यस्या शीलवती सुता।"** इसके विपरीत पुत्र भी कुल धर्म को नष्ट करने वाला हो सकता है। "जिमि कपूत के ऊपजे कुल सद्धर्म नसाहिं।" इसलिए पुत्र या कन्या जो भी हो, उसके भीतर के अवांछनीय संस्कारों का निवारण करके श्रेष्ठतम की दिशा में प्रवाह पैदा करने की दृष्टि से नामकरण संस्कार कराया जाना चाहिए।

❑ यह संस्कार कराते समय शिशु के अभिभावकों और उपस्थित व्यक्तियों के मन में शिशु को जन्म देने के अतिरिक्त उन्हें श्रेष्ठ व्यक्तित्व सम्पन्न बनाने के महत्त्व का बोध होता है। भाव भरे वातावरण में प्राप्त सूत्रों को क्रियान्वित करने का उत्साह जागता है।

❑ आमतौर से यह संस्कार जन्म के दसवें दिन किया जाता है। उस दिन जन्म सूतिका का निवारण शुद्धिकरण भी किया जाता है। यदि प्रसूति कार्य घर में ही हुआ तो उस कक्ष को यथा परिस्थिति लीप-पोतकर धोकर स्वच्छ करना चाहिए। शिशु तथा माता को भी स्नान कराके नये स्वच्छ वस्त्र पहनाये जाते हैं। उसी के साथ यज्ञ एवं संस्कार का क्रम वातावरण में दिव्यता लाकर अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति करता है। यदि दसवें दिन किसी कारण नामकरण संस्कार न किया जा सके तो अन्य किसी दिन बाद में भी उसे सम्पन्न करा लेना चाहिए। घर पर प्रज्ञा संस्थानों अथवा यज्ञ स्थलों पर भी यह संस्कार कराया जाना उचित है।

विशेष व्यवस्था—यज्ञ पूजन की सामान्य व्यवस्था के साथ ही नामकरण संस्कार के लिए विशेष रूप से इन व्यवस्थाओं पर ध्यान देना चाहिए।

१. यदि दसवें दिन नामकरण घर में ही कराया जा रहा है तो वहाँ समय पर स्वच्छता का कार्य पूरा कर लिया जाय तथा शिशु एवं माता को समय पर संस्कार के लिए तैयार कराया जाय।

२. अभिषेक के लिए कलश-पल्लव (कलश के कण्ठ में कलावा बाँधने, रोली से ॐ 卐 आदि शुभ चिह्न बने हों)।

३. शिशु की कमर में बाँधने के लिए मेखला सूती या रेशमी धागे की बनी होती है। न हो तो कलावा के सूत्र की बना लेनी चाहिए।

४. मधु प्राशन के लिए शहद तथा चाटने के लिए चाँदी की चम्मच। वह न हो तो चाँदी की सलाई या अँगूठी आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

५. संस्कार के समय जहाँ माता शिशु को लेकर बैठे, वहीं वेदी के पास थोड़ा-सा स्थान स्वच्छ करके उस पर 卐 चिह्न बना दिया जाय। इसी स्थान पर बालक को भूमि स्पर्श कराया जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

६. नाम घोषणा के लिए चाँदी या काँसे की थाली, सुन्दर तख्ती आदि हो। उस पर निर्धारित नाम पहले से सुन्दर ढंग से लिखा रहे। चन्दन रोली से लिखकर, उस पर चावल तथा फूल की पंखुड़ियाँ चिपकाकर साबूदाने हलके पकाकर, उनमें रंग मिलाकर, उन्हें अक्षरों के आकार में चिपकाकर स्लेट या तख्ती पर रंग-बिरंगी खड़िया के रंगों से नाम लिखे जा सकते हैं। थाली, ट्रे या तख्ती को फूलों से सजाकर उस पर एक स्वच्छ वस्त्र ढककर रखा जाय। नाम घोषणा के समय उसका अनावरण किया जाता है।

७. विशेष आहुति के लिए खीर, मिष्ठान्न या मेवा जिसे हवन-सामग्री में मिलाकर आहुतियाँ दी जा सकें।

८. शिशु को माँ को गोद में रहने दिया जाय। पति उसके बायीं ओर बैठे। यदि शिशु सो रहा हो या शान्त रहता है तो माँ की गोद में प्रारम्भ से ही रहने दिया जाय। अन्यथा कोई अन्य उसे सम्भाले, केवल विशेष कर्मकाण्ड के समय उसे वहाँ लाया जाय।

निर्धारित क्रम से मंगलाचरण, षट्कर्म, संकल्प, यज्ञोपवीत परिवर्तन, कलावा, तिलक एवं संक्षिप्त हवन विधि के अनुसार रक्षा विधान तक का क्रम पूरा करके विशेष कर्मकाण्ड प्रारम्भ किया जाय।

अभिषेक

शिक्षण एवं प्रेरणा—बालक तो अनेक योनियों में भ्रमण करता हुआ मानव शरीर में आया है, इसलिए उसके मन पर पाशविक संस्कारों की छाया रहनी स्वाभाविक है। इसको हटाया जाना आवश्यक है। यदि पशु प्रवृत्ति बनी रही तो मनुष्य शरीर की विशेषता ही क्या रही। जिनके अन्तःकरण में मानवीय आदर्शों के प्रति निष्ठा भावना है, उसी को सच्चे अर्थों में मनुष्य कहा जा सकता है। इन्द्रिय-परायणता, स्वार्थ-परता, निरुद्देश्यता, भविष्य को न सोचना, असंयम जैसे दोषों को पशुवृत्ति कहते हैं। इनका जिनमें बाहुल्य है, वे नरपशु हैं। अपना नवजात शिशु नर-पशु नहीं रहना चाहिए, उसके चिर संचित कुसंस्कारों को दूर किया ही जाना चाहिए। इस परिशोधन के लिए संस्कार मण्डप में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम बालक का अभिषेक किया जाता है।

क्रिया और भावना—सिंचन के लिए तैयार कलश में मुख्य कलश का थोड़ा-सा जल या गंगाजल मिलायें। मन्त्र के साथ बालक का संस्कार कराने वालों तथा उपकरणों पर उसका सिंचन किया जाय।

भावना करें कि जो जीवात्मा शिशु रूप में ईश्वर प्रदत्त सुअवसर का लाभ लेने अवतरित हुई है, उसका अभिनन्दन किया जा रहा है। ईश्वरीय योजना के अनुरूप अपने उत्तरदायित्वों के निर्वाह की क्षमता उसमें पैदा करने के लिए श्रेष्ठ संस्कारों तथा सत् शक्तियों के स्रोत से उस पर अनुदानों की वृष्टि हो रही है। उपस्थिति सभी जन अपनी भावनात्मक संगति से उस प्रक्रिया को अधिक प्राणवान बना रहे हैं।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्माऽअरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजन यथा च नः। —यजु. ११५०-५२

मेखला बन्धन

शिक्षण और प्रेरणा—संस्कार के लिए तैयार मेखला शिशु की कमर में बाँधी जाती है। कहीं-कहीं कौंधनी, करधनी, छूटा आदि भी कहा जाता है।

यह कटिबद्ध रहने का प्रतीक है। फौजी जवान, पुलिस के सिपाही कमर में पेटी बाँधकर अपनी ड्यूटी पूरी करते हैं। शरीर सुविधा की दृष्टि से उसकी अनुपयोगिता भी हो सकती है पर भावना की दृष्टि में कमर में बँधी हुई पेटी चुस्ती, मुस्तैदी, निरालस्यता, स्फूर्ति, तैयारी एवं कर्त्तव्य-पालन के लिए तत्परता का प्रतिनिधित्व करती है। यह गुण मनुष्य का प्रारम्भिक गुण है। यदि इसमें कमी रहे तो उसे गुजरी, दीन-हीन स्थिति में पड़े हुए अविकसित जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। आलसी, प्रमादी, हरामखोर, दीर्घसूत्री, असावधान, लापरवाह व्यक्ति अपनी प्रतिभा एवं क्षमता को यों ही बर्बाद करते रहते हैं। ढीला-पोला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

स्वभाव आदमी को कहीं का नहीं रहने देता, उसके सब काम अधूरे, लंगड़े और अस्त-व्यस्त रहते हैं, फलस्वरूप कोई आशाजनक सत्परिणाम भी नहीं मिल पाता।

इस दोष का बीजांकुर बच्चे में जमने न पावे, इसकी सावधानी रखने के लिए जागरूकता एवं तत्परता का प्रतिनिधित्व करने वाली मेखला नामकरण संस्कार के अवसर पर कमर में बाँध दी जाती है। अभिभावक जब-जब इस मेखला को देखें, तब-तब यह स्मरण कर लिया करें कि बच्चे को आलस्य प्रमाद के दोष-दुर्गुण से बचाये रखने के लिए उन्हें प्राण-पण से प्रयत्न करना है। जैसे-जैसे बच्चा समझदार होता चले, वैसे-वैसे उसके स्वभाव में मुस्तैदी, श्रमशीलता एवं काम में मनोयोगपूर्वक जुटने का गुण बढ़ाते चलना चाहिए। इस सम्बन्ध में जो हानि-लाभ हो सकते हैं, उन्हें भी समय-समय पर बताते, सिखाते, समझाते रहना चाहिए।

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चार के साथ शिशु के पिता उसकी कमर में मेखला बाँधें। भावना करें कि इस संस्कारित सूत्र के साथ बालक में तत्परता, जागरूकता, संयमशीलता जैसी सत्प्रवृत्तियों की स्थापना की जा रही है। इनका पोषण और विकास सबके सहयोग से किया जाता रहेगा।

ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्ण पवित्रं पुनतीमऽआगात्। प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसादेवीसुभगा मेखलेयम्। —पा. गृ. स२. २.८

मधु प्राशन

शिक्षण और प्रेरणा—इसमें बालक को चाँदी के उपकरण के शहद चटाया जाता है।

शहद चटाने में मधुर भाषण की शिक्षा का समावेश है। सज्जनता की पहचान किसी व्यक्ति की वाणी से ही होती है। शालीनता की परख मधुर, नम्र, प्रिय, शिष्टता से भरी हुई बोल-चाल देखकर ही की जा सकती है। इसी गुण के आधार पर दूसरों पर स्नेह, सद्भाव एवं सहयोग प्राप्त होता है। वशीकरण मन्त्र मधुर भाषण ही होता है। कोयल की प्रशंसा और कोए की निन्दा उनका रंग-रूप एक-सा होने पर भी वाणी सम्बन्धी अन्तर के कारण ही होती है।

❑ चाँदी-रजत सफेद, शुभ होती है। उसे पवित्रता-निर्विकारिता का प्रतीक माना जाता है। वाणी में मधुरता, पवित्रता, निर्विकारिता के आधार पर ही, स्वार्थी धूर्तों-खुशामद खोरों जैसी न हो-इसलिए चाँदी का प्रतीक प्रयुक्त होता है।

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चार के साथ थोड़ा सा शहद निर्धारित उपकरण से बालक को चटाया जाय। घर के किसी बुजुर्ग या उपस्थित समुदाय में से किन्हीं चरित्र निष्ठ संभ्रान्त व्यक्ति द्वारा भी यह कार्य कराया जा सकता है। भावना की जाय कि सभी उपस्थित परिजनों के भाव संयोग से बालक की जिह्वा में शुभ, प्रिय, हितकारी, कल्याणप्रद वाणी के संस्कार स्थापित किये जा रहे हैं।

ॐ प्रते ददामि मधुनो घृतस्य वेदं सवित्रा प्रसूतं मधोनाम्। आयुष्मान् गुप्तो देवताभिः शतं जीव शरदो लोके अस्मिन्। —आश्वा. गृ. १/१५/१

सूर्य नमस्कार

शिक्षण एवं प्रेरणा—सूर्य निरन्तर गतिशीलता, तेज, प्रकाश एवं उष्णता का प्रतीक है। उसकी किरणें इस संसार में जीवन-संचार करती हैं। बालक में भी इन गुणों का विकास होना चाहिए। सूर्य निरन्तर चलता रहता है, उसे विश्राम का अवकाश नहीं, अपने कर्त्तव्य से एक क्षण के लिए भी विमुख नहीं होता। न बहुत जल्दबाजी, उतावली करता है और न थक कर शिथिलता, उदासीनता, उपेक्षा बरतता है। जो कर्त्तव्य निर्धारित कर लिया उस पर पूर्ण दृढ़ता एवं समस्वरता के साथ चलता रहता है। मनुष्य की क्रिया पद्धति भी यही होनी चाहिए। जो पक्ष चुन लिया, जो कार्यक्रम अपना लिया उसमें न तो ढील-शिथिलता बरतनी चाहिए और न अधीर होकर उतावली जल्दी करनी चाहिए। धैर्य, स्थिरता और साहसपूर्वक दृढ़ निश्चय के साथ निरन्तर आगे चलते रहना है। सूर्य दर्शन के साथ बालक को यह प्रेरणा शिक्षा दी जाती है कि उसे भावी जीवन में आलसी, ढीला, पोला या अनियमित नहीं बनना है। नियमितता, लगन,

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिश्रम के द्वारा ही वह कुछ कर सकेगा, इसलिए सूर्य को वह देखे और उसकी रीति-नीति का अनुसरण करे। इसके लिए अभिभावक को चाहिए कि शिशु के मस्तिष्क और कर्म के पूर्ण विकास के लिए उत्तम प्रेरणाएँ एवं साधन प्रदान करते रहें।

क्रिया और भावना—यदि सूर्य देखने की स्थिति हो तो माता शिशु को लेकर धूप में ले जाकर उसे सूर्य दर्शन कराये। सूर्यदेव को नमस्कार करे। किसी कारण संस्कार के समय सूर्य दृश्यमान न हो तो उनका ध्यान करके नमस्कार करे।

भावना की जाय कि माँ अपने स्नेह के प्रभाव से बालक में तेजस्विता के प्रति आकर्षण पैदा कर रही है, बालक में तेजस्वी जीवन के प्रति सहज अनुराग पैदा हो रहा है। इसे सब मिलकर स्थिर रखेंगे, बढ़ाते रहेंगे।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम
शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम
शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

—यजु. ३६/२४

भूमि पूजन-स्पर्श

शिक्षण और प्रेरणा—बालक को सूतक के दिनों में जमीन पर नहीं बिठाते। नामकरण के बाद उसे भूमि पर बिठाते हैं, इससे पूर्व धरती का पूजन किया जाता है। प्रथम बार उस सम्पूजित भूमि पर बालक को बिठाते हैं। भूमि को लीपकर चौक पूरते हैं और उसका अक्षत्, पुष्प, गन्ध, धूप, दूर्वा आदि से पूजन करते हैं।

❑ भूमि को केवल मिट्टी ही न मानकर उसे देवभूमि, जन्मभूमि धरती माता, भारत-माता मानकर सदैव उसके प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति का परिचय देना चाहिए। विश्व-माता, प्राणि-माता, भारत माता-धरती का वही सम्मान होना चाहिए जो शरीर को देने वाली माता का होता है। अपनी सगी माता की तरह मातृभूमि की सेवा के लिए भी मनुष्य के मन में भावनाएँ रहनी चाहिए। मातृभूमि, विश्व वसुधा की रक्षा और सेवा के लिए जिससे जितना त्याग एवं प्रयत्न बन सके करना चाहिए।

❑ देश भक्ति से मतलब समाज का ही है, देशवासी, साथी और सहयोगियों की सुविधा के लिए कुछ कार्य करना चाहिए। अपना पेट पालने, अपनी ही उन्नति और सुविधा चाहने की प्रवृत्ति ओछे लोगों में पाई जाती है। श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी आन्तरिक महानता के अनुरूप घर तक ही अपनी ममता सीमित नहीं रखते वरन् उसे व्यापक बनाते हैं। सुदूरवर्ती व्यक्ति भी अपने ही बन्धुबान्धव प्रतीत होते हैं और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की निष्ठा जम जाती है। ऐसे देशभक्त व्यक्ति समाज सेवा एवं लोकमंगल के कार्यों को अपने निजी लाभ एवं स्वार्थ से भी बढ़कर मानते हैं, इन्हीं की यशोगाथा इस संसार को सुरक्षित करती रहती है। भूमि स्पर्श करते हुए बालक को मातृभूमि की सेवा देशभक्ति, विश्वभक्ति की भावनाएँ जागृत करने की शिक्षा दी जाती है।

❑ धरती माता की क्षमाशीलता प्रसिद्ध है। वह सबका भार अपने ऊपर उठाती है, अपनी छाती में अन्न, फल, रस, खनिज आदि विविधः विविवध पदार्थ उपजाकर प्राणियों का पालन करती है। लोग मल-मूत्र आदि से उसे गन्दा करते हैं तो भी रुष्ट नहीं होती और उदारतापूर्वक वह सब सहन करती है। अपना अधिकांश भाग जल की शीतलला से भरे रहती है। विशाल सम्पदा की स्वामिनी होने पर इतराती नहीं, पुरुषार्थियों को उदारतापूर्वक अपनी सम्पत्ति का उपहार प्रदान करती है। अपनी सारी सन्तान को गोदी में लेकर अपनी निश्चित रीति-नीति के अनुसार गतिशील रहती है। भीतरी अग्नि को भीतर ही छिपी रहने देती है और बाहर से ठण्डी ही रहती है।

❑ भूमि में से पौधे आहार खींचते और बढ़ते हैं। परन्तु माली उनकी बाढ़ को सही दिशा देने के लिए उनकी साज-सम्भाल के साथ-साथ काट-छाँट भी करता है। मातृभूमि के अनुदानों से बालक के विकास में भी माली जैसी सावधानी अभिभावकों को बरतनी चाहिए।

पूजन क्रिया और भावना—शिशु के माता-पिता हाथ में रोली, अक्षत, पुष्प, दूर्वा आदि लेकर मन्त्र के साथ-स्पर्श के लिए तैयार भूमि का पूजन करें। भावना की जाय कि धरती माता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से इस क्षेत्र में बालक के हित के लिए श्रेष्ठ संस्कारों को घनीभूत करने और प्रार्थना की जा रही है। अपने आवाहन पूजन से उस पुण्य प्रक्रिया की गति दी जा रही है। मन्त्र पूरा होने पर पूजन-सामग्री भूमि पर चढ़ाई जाय।

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः।।

ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ध्यायामि। —यजु. ८/३२

स्पर्श क्रिया और भावना—माता बालक को मन्त्रोच्चार के साथ उस पूजित भूमि पर लिटा दे। माता सहित सभी लोग हाथ जोड़कर भावना करें कि जैसे माँ अपनी गोद में बालक को अपने स्नेह-पुलकन के साथ जाने अनजाने में श्रेष्ठ प्रवृत्ति और गहरा सन्तोष देती रहती है-वैसे ही माता वसुन्धरा इस बालक को अपना लाल मानकर गोद में लेकर धन्य बना रही है।

ॐ स्योना पृथिविः नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः। अप नः शोशुचद्घम्।।

—यजु ३५/२१

नाम घोषणा

शिक्षण एवं प्रेरणा—यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि मनुष्य को जिस तरह के नाम से पुकारा जाता है, उससे उसी प्रकार की एक छोटी-सी अनुभूति होती रहती है, यदि किसी को कूड़ेमल, घूरेमल, नकछिद्दा, नत्थी, घसीटा आदि नामों से पुकारा जाएगा तो उसमें हीनता के भाव ही जगेंगे। नाम को सार्थक बनाने की कई हल्की, अभिलाषायें मन में जगती रहती हैं। पुकारने वाले भी किसी के नाम के अनुरूप उसके व्यक्तित्व की हल्की या भारी कल्पना करते हैं। इसलिए नाम का अपना महत्त्व है। उसे सुन्दर ही चुना और रखा जाय।

बालक का नाम रखते समय निम्न बातों का ध्यान रखें—

(१) गुणवाचक नाम रखे जायें। जैसे—सुन्दरलाल, सत्यप्रकाश, धर्मवीर, मृत्युञ्जय, विजयकुमार, तेजसिंह, शूरवीर, विद्याभूषण, ज्ञान प्रकाश, विद्याराम आदि। इसी तरह बालिकाओं के नाम—दया, क्षमा, प्रभा, करुणा, प्रेमवती, सुशीला, माया, शान्ति, सत्यवती, प्रतिभा, विद्या आदि।

(२) महापुरुषों एवं देवताओं के नाम भी बच्चों के नाम रखे जा सकते हैं। जैसे—रामावतार, कृष्णचन्द्र, शिवकुमार, गणेश, सवितानन्दन, विष्णुप्रसाद, लक्ष्मण, भरत, याज्ञवल्क्य, पाराशर, सुभाष, रवीन्द्र, बुद्ध, महावीर, हरिश्चन्द्र, दधीचि आदि। लड़कियों के नाम—कौशल्या, सुमित्रा, देवकी, पार्वती, दमयन्ती, पद्मावती, दुर्गा, लक्ष्मी, कमला, सरस्वती, सावित्री, गायत्री, मदालसा, सीता, उर्मिला अनुसुइया आदि।

(३) प्राकृतिक विभूतियों के नाम पर रखे जा सकते हैं। जैसे—रजनीकान्त, अरुणकुमार, रत्नाकर, हिमाचल, घनश्याम, वसन्त, हेमन्त, कमल, गुलाब, चन्दन, पराग आदि। लड़कियों के नाम—उषा, रजनी, सरिता, मधु, गंगा, यमुना, त्रिवेणी, वसुन्धरा, सुषमा आदि। लड़की और लड़कों के नामों की एक बड़ी सूची बनाई जा सकती है। उसी में से छाँटकर लड़के और लड़कियों के उत्साहवर्धक, सौम्य एवं प्रेरणादायक नाम रखने चाहिए। समय-समय पर बालकों को यह बोध भी कराते रहना चाहिए कि उनका यह नाम है, इसलिए गुण भी अपने में उन्हें वैसे ही पैदा करने चाहिए।

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चार के साथ नाम से सज्जित थाली या तख्ती पर से वस्त्र हटाया जाय। यह सबको दिखाया जाय। यह कार्य आचार्य या कोई सम्माननीय व्यक्ति करे। भावना की जाय कि यह घोषित नाम ऐसे व्यक्तित्व का प्रतीक बनेगा, जो सबका गौरव बढ़ाने वाला होगा।

ॐ मेधां ते देवः सविता मेधां देवी सरस्वती।
मेधां ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।।

—आश्व. गृ. १/१५/२

मन्त्र पूरा होने पर अनावरणकर्त्ता नाम सबको दिखाएँ और तीन नारे लगवायें—

१. (प्रमुख कहे) शिशु ..... रखा हुआ नाम लें (सब कहें) चिरंजीवी हो।

२. .. . . (सब कहें) धर्मशील हो !

३. .. . . (सब कहें) प्रगतिशील हो !

परस्पर परिवर्तन

शिक्षण और प्रेरणा—माता अपने रक्त मांस मे उदरस्थ बालक के शरीर का निर्माण करती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। अपना श्वेत रक्त . . . . . दूध पिलाकर उसका पालन करती है, इसलिए इस उत्पादन में उसका श्रेय अधिक है। बालक माता के समीप ही अधिक रहते हैं इसलिए उसके क्रिया-कलापों एवं भावनाओं से प्रेरणा भी अधिक लेते हैं, यह बात ठीक है। पर साथ ही यह भी निश्चित है कि अकेली माता उसका सर्वांगीण विकास कर सकने में समर्थ नहीं हो सकती। आहार, चिकित्सा, खेल, शिक्षा, संस्कार आदि का बहुत कुछ उत्तरदायित्व परिवार के अन्य लोगों पर भी समान रूप से है। इस परिवर्तन की क्रिया द्वारा घर से सभी लोग क्रमशः बालक को अपनी गोदी में लेते हैं और यह उत्तरदायित्व अनुभव करते हैं कि इस बालक के स्वस्थ विकास में सभी शक्ति भर योगदान करेंगे। वेशक माता के बाद अधिक उत्तरदायित्व पिता पर आता है। पर घर के अन्य सदस्य भी उससे मुक्त नहीं रह सकते। साझे की खेती की तरह बालकों के निर्माण में घर के सब लोगों का समान योगदान रहना चाहिए।

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चारण प्रारम्भ के साथ माता बालक को पहले उसके पिता की गोद में दे। पिता अन्य परिजनों को दे। शिशु एक-दूसरे के हाथ में जाता स्नेह-दुलार पाता हुआ पुनः माँ के पास पहुँच जाय। भाव की जाय कि बालक सबका स्नेह पात्र बन रहा है, सबके स्नेह अनुदानों का अधिकार पा रहा है।

ॐ अथ सुमंगल नामानऽ ह्वयति बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेति। यऽएव वन्नामाभवनि कल्याणमेवैतन्मानुष्यै वाचो वदति।।

लोकदर्शन

शिक्षण और प्रेरणा—कोई वयोवृद्ध व्यक्ति बच्चे को गोदी में लेकर घर से बाहर ले जाते हैं और उसे बाहर का खुला संसार, खुला वातावरण दिखाते हैं। बालक घर में ही कूपमण्डप न बना रहे, वरन् वह जगती के विस्तृत प्रांगण में भी अपने को गतिशील बनावे, प्रकृति की गोद में रहे, विशाल वातावरण में बढ़े इसके लिए बाहर खुले वातावरण में उसे घुमाया जाता है। विनोद, क्रीड़ा एवं ज्ञान संवर्धन द्वारा सर्वांगीण विकास का द्वारा खोला जाता है।

❑ यह संसार विराट् ब्रह्म है। इसे प्रत्यक्ष परमेश्वर समझना चाहिए। भगवान राम ने कौशल्या और काकभुशुण्डि को और भगवान कृष्ण ने यशोदा तथा अर्जुन को विराट् रूप दिखाते हुए विश्व ब्रह्माण्ड का ही साक्षात्कार कराया था, जो इस जगत को ईश्वर की विशाल शक्ति के रूप में देखने लगा समझना चाहिए कि उसने ईश्वर का दर्शन कर लिया।

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चारण के साथ नियुक्त व्यक्ति उसे गोद में उठाये-खुले में जाकर विभिन्न दृश्य दिखाकर ले आवें। भावना की जाय कि बालक में इस विराट् विश्व को सही दृष्टि से देखने, समझने एवं प्रयुक्त करने की क्षमता देव अनुग्रह और सद्भावना के सहयोग से प्राप्त हो रही है।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। —यजु. १३/४

इसके बाद अग्नि स्थापना से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूरी करने का क्रम चलाया जाय। तब विशेष अहुतियाँ दी जावे।

विशेष आहुति

क्रिया और भावना—हवन सामग्री के साथ निर्धारित मेवा, मिष्ठान, खीर आदि मिलाकर पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्र से दी जावें। भावना की जाय विशेष उद्देश्य के लिए विशेष वातावरण का निर्माण हो रहा है।

ॐ भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम। —ऋग्वेद ९/६६/२०

बाल प्रबोधन

शिक्षण और प्रेरणा—शिशु के विकास के लिए जितना आवश्यक स्नेह-दुलार है, उतना ही आवश्यक है उसे समयानुकूल उद्बोधन देना। यही नहीं सोचना चाहिए कि बालक क्या समझता है ? यह बड़ी भाँति है ? समझने-समझाने के लिए भाषा भी एक माध्यम है पर वही सब कुछ नहीं स्नेह स्पन्दनों और विचार-तरंगों के सहारे मनुष्य अधिक गहराई से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझता है। भाषा भी उसी को स्पष्ट करती है। बालक भाषा न भी समझे तो भी मूल स्पन्दनों के प्रति बहुत संवेदनशील होता है। अस्तु उसे सम्बोधित करके श्रेष्ठ आदर्शयुक्त प्रेरणाएँ देते रहना चाहिए। अपने मनोरंजन या खीझ की प्रतिक्रिया स्वरूप उसके साथ फूहड़ और हीन वार्तालाप नहीं करना चाहिए। उसे सम्बोधित करके प्रबोधन देने का सुभारम्भ इस संस्कार के समय किया जाता है जिसे विचारशीलों, हितैशियों द्वारा आगे भी चलाते रहना चाहिए।

क्रिया और भावना—आचार्य बालक को गोद में लें। उसके कान के पास भावनापूर्वक नीचे वाला मन्त्र बोलें। सभी लोग भावना करें कि भाव-भाषा को शिशु हृदयंगम कर रहा है और श्रेष्ठ सार्थक जीवन की दृष्टि प्राप्त कर रहा है।

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि
संसारमाया परिवर्जितोऽसि।
संसारमाया त्यज मोहनिद्रां
त्वां सद्गुरुः शिक्षयतीति सूत्रम्।।

प्रबोधन के बाद पूर्णाहुति आदि शेष कृत्य पूरे किए जावें। विसर्जन के पूर्व आचार्य शिशु एवं अभिभावकों को पुष्प, अक्षत, तिलक सहित आशीर्वाद दें फिर सभी मंगल मन्त्रों के साथ अक्षत, पुष्प वृष्टि करके आशीर्वाद दें।

आशीर्वचन—आचार्य पहले बालक को आशीर्वाद दें—फिर अभिभावक को। नीचे लिखे उद्बोधन के अतिरिक्त आशीर्वचन के अन्य मन्त्रों का पाठ भी करना चाहिए।

हे बालक ! त्वमायुष्मान् वर्चस्वी, तेजस्वी श्रीमान् भूयाः।।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अन्नप्राशन—संस्कार

अन्नप्राशन संस्कार-विवेचन

जो खाया जाता है उससे रस रक्त, माँस, मज्जा, हड्डी, मेद, वीर्य सप्त धातुएँ बनती हैं और शरीर का ढाँचा बनकर खड़ा हो जाता है। चेतन आत्मा के द्वारा विचार, व्यवहार का कार्य होता है। पर शरीर का कलेवर जो कुछ भी खड़ा दीख रहा है, उसमें अन्न ही प्रधान कारण है। खाया हुआ भोजन उलट-पलट कर कई तरह के रूप बदलता हुआ, शरीर के रूप में खड़ा दीखता है। आज जो वस्तु रोटी-दाल के रूप में थाली में रखी है, वही पेट में जाकर कल रस, परसों रक्त, तरसों हड्डी अगले दिन वीर्य, तेज, ओज और फिर मन बन जायेगी। बेशक रोटी जैसा रूप उस परिपाक क्रिया में पड़ जाने के बाद नहीं रह जाता। फिर भी पदार्थ वही हैं। पानी समयानुकूल भाप, बादल, ओस बिन्दु, बर्फ की चट्टान आदि के कई रंग-रूपों में परिवर्तित होता रहता है, फिर भी वस्तुतः मूल में जल का जल ही रहता है। इसी प्रकार शरीर के जो बाहरी और भीतरी अवयव, अंग-प्रत्यंग दिखाई पड़ते हैं, वे वस्तुतः अन्न के ही बदले हुए स्वरूप हैं।

आहार न मिले तो शरीर दिन-दिन दुर्बल होता चला जायगा, रक्त माँस सूख जायेगा और थोड़े ही दिनों में मृत्यु हो जायेगी। कारण स्पष्ट है—अन्न से ही जीवन-तत्व मिलता है, वही रक्त-माँस बनकर जीवन धारण किए रहने की क्षमता उत्पन्न करता है। आधार ही न रहेगा तो जीवन टिकेगा किस पर ? इस तरह अन्न को शरीर ही नहीं जीवन भी कहा जा सकता है।

उपनिषदकार ने अन्न को 'प्राण' भी कहा है। अन्न को विष्णु, अन्न को यज्ञ और अन्न को ब्रह्म भी कहा गया है। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य की विचारणा, भावना, आकांक्षा एवं अन्तरात्मा भी बहुत कर अन्न पर ही निर्भर रहती है। "जो जैसा खाता है, वह वैसा ही बन जाता है" की उक्ति केवल शरीर के सम्बन्ध में ही लागू नहीं होती वरन् उसका तात्पर्य मानसिक एवं आन्तरिक स्थिति से भी है। पौष्टिक एवं सात्विक आहार करने वाले शरीर की दृष्टि से निरोग, बलवान, दीर्घजीवी और सुडौल होते हैं और जिनका आहार गया-गुजरा, अनुपयुक्त होता है, वे रोगी, दुर्बल, अल्पायु और बेडोल होते हैं, इसके प्रमाण पग-पग पर हर जगह मिलते हैं। इसी प्रकार यह भी एक सुनिश्चित तथ्य है कि "जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन" आहार का जैसा स्तर होगा उसके अनुरूप मनुष्य की भावनाओं का भी निर्माण होगा।

अन्नप्राशन का प्रयोजन

बालक जब लगभग छः महीने का हो जाता है, तब उसे दूध के अतिरिक्त अन्य वस्तुएँ खाने को दी जाती हैं। यह क्रम धीरे-धीरे आरम्भ किया जाता है। जो बालक जल्दी ही अन्न पर टूट पड़ते हैं, उनका पेट खराब हो जाता है और पाचन तन्त्र बिगड़ जाने पर बच्चा अनेक रोगों से ग्रसित ही नहीं हो जाता वरन् अपने जीवन से भी हाथ धो बैठता है। बड़ी आयु में तो शरीर इतना सुदृढ़ हो जाता है कि अनुपयुक्त भोजन को भी पचा ले और उससे होने वाली हानि को सहन कर ले, किन्तु कोमल बालकों में वैसी क्षमता नहीं होती, वे आहार की गड़बड़ी से होने वाली प्रतिक्रिया को सहन नहीं कर पाते और जल्दी ही लड़खड़ा जाते हैं। इसलिए बालकों के लिए आहार सम्बन्धी सावधानी बरतने की अत्यधिक आवश्यकता पड़ती है।

प्रथम बार जब बच्चे को अन्न खिलाया जाता है, तब उस प्रक्रिया को धार्मिक वातावरण में उत्सव एवं धर्मानुष्ठान के रूप में सम्पन्न करते हैं। अन्नप्राशन इसी संस्कार का नाम है। अन्य संस्कारों की भाँति इस आयोजन में भी स्वजन सम्बन्धियों, मित्र, पड़ौसियों को एकत्रित करते हैं। मंडप, यज्ञवेदी, कलश स्थापन आदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी की यथावत् सुन्दर एवं आकर्षक व्यवस्था की जाती है। प्रयोजनीय उपकरण एकत्रित करने में असुविधा न हो इसलिए शाखा की ओर से अथवा आचार्य की ओर से सभी वस्तुओं का प्रबन्ध रखा जाय। लाने ले जाने की जिम्मेदारी यजमान की रहे। इस तरह बहुत-सा समय और पैसा जो उन चीजों को इकट्ठा करने में लगता है, सहज ही बचाया जा सकता है।

अन्नप्राशन के विधान में गायत्री यज्ञ की प्रक्रिया मुख्य है। प्रधानतः वही सारा विधि-विधान काम में लाया जाता है। रक्षा विधान के बाद और अग्नि स्थापन से पूर्व (१) तुलादान, (२) चम्मच पूजन, (३) क्षीर प्राशन, (४) विशेष पंचाहुतियाँ देने की चार विशेष क्रियाएँ पूरी की जाती हैं।

तुलादान

बालक के शरीर के बराबर अन्न तौल कर दान दिया जाता है। एक नये पलड़ों की सुन्दर तराजू में एक ओर बालक को बिठाते हैं और दूसरी ओर अन्न रखकर तौलते हैं। तौलने का कार्य किसी सम्मानित व्यक्ति को दिया जाय। तौलते समय **'ॐ तेजोसि शुक्रममृतम्'** मन्त्र उच्चारण करते हैं। यह अन्न किसी सत्पात्र को अथवा सत्कार्य में दान कर दिया जाता है।

"खाने से पूर्व देना" भारतीय संस्कृति का अविच्छिन्न अंग है। कमाई भले ही अपनी, अपने गाढ़े पसीने की ही क्यों न हो, पर उसे सबका सब स्वयं ही खा जाना पाप है। गीता में कहा गया है कि—**तै र्ददाति प्रदातेभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव स।** (जो दिये बिना खाता है, सो चोर है।) श्रुति कहती है—जो अकेला खाता है, सो पाप खाता है। **(केवलाघी भवति केवलादी)**। इस प्रकार के अगणित शास्त्र वचन धर्म-ग्रन्थों में भरे पड़े हैं, जिनमें बताया गया है कि अपनी पूरी कमाई मनुष्य को अपने ही काम में खर्च नहीं कर डालनी चाहिए, वरन् उपभोग से पहले ही उसका एक महत्त्वपूर्ण अंश दान कर देना चाहिए। यजुर्वेद, ४०वें अध्याय का पहला मन्त्र **"तेन त्यक्तेन भुंजीथा"** (त्याग के साथ भोग करने) का निर्देश करता है। हमारी परम्परा यही है—भोजन थाली में आते ही चींटी, कुत्ता, गाय आदि का भाग उसमें से निकालकर पंचबलि करते हैं। भोजन ईश्वर को समर्पण कर या अग्नि में आहुति देकर तब खाते हैं। होली का पर्व तो इसी प्रयोजन के लिए ही है। नई फसल में से एक दाना भी मुख में डालने से पूर्व पहले उसकी आहुतियाँ होलिका यज्ञ में देते हैं, तब उसे खाने का अधिकार मिलता है। किसान फसल मींज-मीड़ कर जब अन्न-राशि तैयार कर लेता है, तो पहले उसमें से एक टोकरी भरकर धर्म कार्य के लिए अन्न निकालता है, तब घर ले जाता है।

भारतीय परम्परा यह रही है कि समाज का पहले और अपना पीछे ध्यान रखा जाय। मछली की प्रसन्नता और सुरक्षा तभी है, जब तालाब में पर्याप्त और अच्छा पानी रहे। पानी विषैला हो जाय तो कोई भली-भोली, चतुर और सुन्दर मछली भी अपनी प्रसन्नता और सजीवता बनाये नहीं रख सकती। जिस समाज में हम रहते हैं, वह यदि दरिद्र, दीन, दुष्ट और मूढ़ होगा, तो अपनी सफलता एवं सम्पन्नता भी निरर्थक चली जायगी। दूसरे बुरे लोग हमें भी चैन से नहीं रहने देंगे। चोर और उचक्कों से भरे मुहल्ले में रहने वाले अमीर व्यक्ति की सम्पत्ति भी सुरक्षित नहीं। गन्दे-गलीज लोगों के पड़ौस में रहकर कोई स्वच्छताप्रिय व्यक्ति भी गन्दगी की हानि से बच नहीं सकता। मुहल्ले में हैजा फैले, आग लगे तो अपना घर भी सुरक्षित कहाँ रहेगा ? समस्त समाज की एक छोटी इकाई के रूप में ही मनुष्य का अस्तित्व है। कोई मशीन जीर्ण-शीर्ण हो जाये तो उसमें लगे हुए अच्छे पुर्जे की भी क्या कीमत है ? उसी प्रकार समाज की स्थिति पर बहुत करके अपनी और अपनी पीढ़ियों की सुखशान्ति निर्भर रहती है।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए विचारशील लोगों ने सही कहा है कि अपने शरीर और परिवार की व्यवस्था बनाते रहने मात्र से काम न चलेगा वरन् समाज की स्वस्थता की भी उतनी ही चिन्ता करनी पड़ेगी, उतनी ही जिम्मेदारी अनुभव करनी पड़ेगी। यह कार्य तभी सम्भव है, जब हमारा योगदान समाज के उत्कर्ष में लगता रहे। केवल विचार करते रहने से क्या बनेगा ? काम करने से ही कुछ बात बनती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समाज के प्रति यदि हम सच्चे, बफादार और ईमानदार हैं तो अपनी शक्ति, सामर्थ्य का एक अंश भी उसे देना चाहिए। समय, श्रम, धन, विद्या, प्रतिभा एवं क्षमता का एक बड़ा अंश हमें समाज कल्याण कार्यों के लिए निश्चित रूप से लगाए रहना चाहिए। इसे आवश्यक एवं अनिवार्य मानना चाहिए। यह धर्म कर्त्तव्य एवं प्राथमिकता दिये जाने योग्य है। जो अपनी कमाई आप ही खाता है, वह कानून या प्रथा-परम्परा के अनुसार भले ही सभ्य हो, नैतिकता एवं धार्मिकता के अनुसार चोर है। ईश्वर ने जो कुछ अनुदान दिया है, उसे अपने दूसरे भाई-बहिनों को बाँटे बिना स्वयं ही भोगते रहा जायेगा तो यह एक घृणित प्रकार की संकीर्णता एवं दुष्टता ही मानी जायेगी।

भारतीय धर्म एवं संस्कृति के किसी अनुयायी को स्वार्थी और संकीर्ण, कृपण और कंजूस, लालची और मदान्ध नहीं होना चाहिए। उदारता, सेवा और परमार्थ का बड़े से बड़ा प्रकाश उसके जीवन में रहना चाहिए। इसके बिना उसको ऋषि सन्तान, आस्तिक एवं धार्मिक कहलाने का अधिकार नहीं मिलता। भारतीय धर्म महानता का ही दूसरा नाम है और इस महानता को किसी के द्वारा समाज कल्याण के लिए किए गये निःस्वार्थ श्रम से ही आँका जा सकता है। धर्म और दान एक ही बात है। इसीलिए हिन्दू धर्म की हर छोटी-बड़ी परम्परा में दान को अनिवार्य शर्त के रूप में जोड़ दिया गया है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हर संस्कार में, हर धर्मानुष्ठान में, देव-दर्शन में, दान के बिना काम नहीं चलता। यह परम्परा इसीलिए है कि मनुष्य सामान्य और असामान्य हर स्थिति में दान करने की बात उदार और उत्साह भावना के साथ विचारता और करता रहे।

तुलादान में उसी पुण्य परम्परा को प्रधान रूप से प्रदर्शित किया जाता है। बच्चा अन्नप्राशन करने की स्थिति में आ जाय-तो इस हर्ष की अभिव्यक्ति कैसे की जाय ? इस नये अवतरण का स्वागत कैसे हो ? तरीका एक ही हो सकता है कि लोक-मंगल की आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए—समाज को सुविकसित एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए दान किया जाय। बालक के शरीर को तराजू के एक पलड़े में और अन्न को दूसरे पलड़े में रखकर तौलने का अर्थ यह है कि यह जितना भारी है, उतना अपने भार के अनुरूप वह दान भी करेगा। भार से तात्पर्य सामर्थ्य से है। वैभव एवं विभूतियों से है। स्वल्प शक्ति वाले लोकमंगल के लिए थोड़ा काम करें तो अधिक शक्ति वाले को अधिक करना चाहिए। यह प्रतिस्पर्द्धा कार्य के बाहय स्वरूप के अनुरूप नहीं वरन् शक्ति के अनुपात से होनी चाहिए। बालक के शरीर में जितना भार है, जितनी उसकी सामर्थ्य है, उसको तौलते हुए दान कर रहा है। इस प्रकार की सामर्थ्य सम्पत्ति की मात्रा पर निर्भर नहीं, मनुष्य की आन्तरिक उदारता एवं महानता पर निर्भर रहती है। कंजूस लखपती दो रुपया देते हुए झिझकता है, पर उदार घसियारा अपना पेट काटकर चार रुपया दे सकता है। धर्म कर्त्तव्यों में इस उदारता को ही सामर्थ्य कहा गया है। इस दृष्टि से जो जितना भारी हो, उसे उसमें तनिक भी कोताही किए बिना अपने शरीर के, भावना के भार के अनुसार दान करना चाहिए। पैसे का ही नहीं श्रम, समय, विद्या, प्रतिभा आदि का भी। यही तो तुलादान की आत्मा है।

आज दान तो बहुत लोग करते हैं, पर उसमें विवेक नहीं रहने से वह धूर्तों और कुपात्रों के हाथ चला जाता है। फलस्वरूप वे अधिक निठल्ले, भिक्षा जीवी एवं अनैतिक काम करने वाले बन जाते हैं। हराम की कमाई हर आदमी के व्यक्तित्व एवं चरित्र को गिराती है। जो लोग समाज-सेवा में संलग्न हों उनके निर्वाह का प्रबन्ध करना जनता का कर्त्तव्य है। पूर्वकाल में देश, धर्म, समाज और संस्कृति के उत्कर्ष में जन-जागरण एवं लोक निर्माण में निरन्तर लगे रहने वाले ब्राह्मणों को समय-समय पर सम्मानपूर्वक भोजन तथा धन इसी आधार पर दिया जाता था कि वे निर्वाह की चिन्ता छोड़कर पूरा समय लोक कल्याण के लिए लगा सकें। आज तो वंश विशेष में जन्मे हुए व्यक्ति ही लोक-मंगल का कोई काम न करते हुए भी दान बटोरना अपना अधिकार मान बैठे हैं। मूढ़ जनता उन्हें देने में पुण्य मानती भी है। इस दुर्बुद्धि ने समाज का भारी अहित किया है। लाखों व्यक्ति जो उपयोगी कार्य कर सकते थे, हराम की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आमदनी देखकर निठल्ले हो गये, भिक्षा ने उनकी आत्मा गिरा दी। दूसरी ओर उस दान द्वारा जो उपयोगी कार्य जन कल्याण के लिए हो सकते थे वे बन्द हो गये। जितना धन आज धर्म के नाम पर निरर्थक व्यक्तियों तथा कार्यों पर बर्बाद किया जाता है, वह यदि सार्थक कार्यों में खर्च किया जाने लगे तो हमारे समाज का वर्तमान स्वरूप ही बदल जाय।

आज के युग की तथा अधःपतित मानव की एक ही आवश्यकता है कि उसे जीवनोत्कर्ष की प्रेरणा देने वाला सद्ज्ञान मिले। इसी से व्यक्ति तथा समाज में दुःखों, अभावों, समस्याओं एवं विपत्तियों का समाधान होगा। दान के नाम पर जो भी पैसा विवेकपूर्वक दिया जाय उसकी एक-एक पाई युग धर्म के अनुरूप-जन जागरण के प्रयोजन में ही खर्च होनी चाहिए। समय, श्रम, विद्या, प्रतिभा आदि का भी जो अनुदान जिससे हो वह उसी कार्य के लिए करे। तुला दान के समय जो अन्न दान किया जाय वह किसी पेशेवर भिक्षुक को देने से काम न चलेगा वरन् उसका उपयोग शिक्षा एवं विद्या दान के लिए होना चाहिए। यह धन किसी विद्यालय, पुस्तकालय एवं सद्ज्ञान-वर्धक आयोजन के लिए देना चाहिए।

प्राचीनकाल में अन्न एवं पशु ही धन थे। इसलिए अन्न-दान, गौ-दान की परम्परा ही उन दिनों चलती थी। अब रुपये-पैसे का प्रचलन हो जाने के कारण तुलादान में तौले गये अन्न का मूल्य, उतना ही या उससे अधिक किसी लोकोपयोगी कार्य के लिए दिया जा सकता है। प्रतीक रूप में तुलादान की प्रक्रिया पूरी करके, दान का दूसरा व्यवस्थित तरीका सोचा जा सकता है। घर में नये बच्चे के आगमन की खुशी में सत्प्रयोजन के लिए जो अधिकाधिक दान किया जाय, वह सब तुलादान में गिना जायेगा। तुलादान में बालक का कल्याण होना माना जाता है। वह जीवन के आरम्भ से ही दान की प्रक्रिया को हृदयंगम किए रहेगा तो निश्चय ही भावी जीवन में महापुरुष बनेगा। ऐसे सुविकसित अन्तःकरण वाले लौकिक एवं पारलौकिक जीवन में सच्ची प्रगति एवं समृद्धि का लाभ उठाते हैं। इसलिए बालक की प्रशिक्षा अन्नप्राशन के समय यही की जाती है कि वह खाने से पहले दान की बात सोचा करे, जैसा कि आज तुलादान के समय किया जा रहा है। उपस्थित लोगों को भी यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि शरीर की सार्थकता दान में है। उन्हें अपनी कृपणता छोड़कर लोकमंगल के लिए मुक्त हस्त से अपनी शक्तियों को लगाने के लिए तत्पर होना चाहिए।

चम्मच पूजन

तुलादान के उपरान्त खीर चटाने की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है। इसके लिए चाँदी का चम्मच प्रयुक्त होता है। जहाँ ऐसे चम्मच न मिलें वहाँ चाँदी की किसी वस्तु के सहारे खीर खिलाते हैं। इस चम्मच का प्रथम पूजन किया जाता है, तब वह उपयोग में आने योग्य बनता है। पूजन का मन्त्र **"ॐ मनोजूतिर्जुषताम् . . "** है।

पाश्चात्य देशों में भोजन बनाते समय तथा खाते समय हाथ से नहीं छुआ जाता। इन कार्यों के लिए वहाँ पृथक्-पृथक् उपकरण प्रयुक्त होते हैं। उनका कहना है कि नाखूनों के नीचे गन्दगी का कुछ अंश बना ही रहता है। साथ ही शरीर के हर अंग से पसीना निकलता है, जो अन्य छिद्रों से निकलने वाले दूषित स्रावों की तरह ही अशुद्ध होता है। भोजन बनाने या खाने में हाथ का स्पर्श लगने से उसमें इन दूषित तत्वों के मिल जाने और शरीर के भीतर पहुँचने पर हानि पहुँचने की संभावना रहती है। इसी तर्क के अनुसार वे लोग भोजन करने में छुरी, काँटा चम्मच आदि का उपयोग करते हैं। हमारे देश में वैसा प्रचलन एवं परिस्थिति नहीं है। यह दूसरी बात है कि तर्क की यथार्थता को ध्यान में रखते हुए इस सम्बन्ध में जितना कुछ हो सकता हो, अवश्य करना चाहिए। विशेषतया छोटे कोमल बालकों को आहार सम्बन्धी अशुद्धियाँ अधिक हानि पहुँचा सकती हैं, इसलिए उनके प्रारम्भिक भोजन उपकरण के रूप में चम्मच का प्रयोग किया जाय तो अच्छा ही है।

चाँदी सब धातुओं से पवित्र मानी गई है। हर धातु में अपने सूक्ष्म गुण होते हैं। चाँदी में सात्विकता अधिक है। इसी से जिन्हें सुविधा होती है, वे चाँदी के बर्तनों में भोजन करते हैं। विवाह शादियों में भी भोजन करने के बर्तन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाँदी के देने का रिवाज है। मन्दिरों में देव-प्रतिमाओं के पूजा-उपकरण में तथा निजी पूजा उपासना में चाँदी के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। चाँदी के जेवर भी बहुत करके इसी उद्देश्य से पहने जाते थे। भोजन करने में चम्मच चाँदी का रहे, इसमें आहार को मुँह में पहुँचाने का प्रसाधन अधिक सात्विक रखने का प्रयोजन है। चाँदी सम्पन्नता की प्रतीक भी है। अपना बालक चाँदी के बर्तनों का उपयोग कर सकने लायक सम्पन्न बने, यह शुभ कामना भी इस चम्मच पूजा में सन्निहित है। मन्त्रों से अभिमन्त्रित सम्पूजित चम्मच, अध्यात्म विज्ञान के अनुसार अपेक्षाकृत अधिक पवित्र और अधिक उपयुक्त रहता है। जिस बर्तन में वह खीर रखी जाय वह तस्तरी, कटोरी आदि भी चाँदी की हो तो अधिक उपयुक्त है। तब दोनों का ही धूप, दीप, गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करना चाहिए।

यह रजत पात्र आहार के साधन हैं। साधनों को पवित्र रखने के लिए चाँदी का उपयोग तथा पूजा-विधान का प्रयोग किया जाता है। उद्देश्य यही है कि आहार पवित्र साधनों के माध्यम से ग्रहण किया जाय। आध्यात्मिक दृष्टि से प्रसाधनों का तात्पर्य तरीकों से है। आहार अर्थात् आजीविका को जिन साधनों से प्राप्त किया, कमाया जाता है, वे पवित्र होने चाहिए। बेईमानी, चोरी, दगाबाजी से आजकल लोग अपनी कमाई बढ़ाते हैं। कितने ही व्यक्ति बिना परिश्रम किए बैठे-बैठे ब्याज-भाड़े की आमदनी से, पुरखों की कमाई पर गुलछर्रे उड़ाते हैं। यह दोनों ही तरीके अवांछनीय हैं। इस प्रकार जो लोग आमदनी कर रहे होंगे, उसका उपयोग कर रहे होंगे, वे अनुपयुक्त खा रहे होंगे और उस दुष्ट आहार से न केवल उनका शरीर एवं मन ही अस्वस्थ रहेगा वरन् भविष्य भी अन्धकारमय बनेगा।

ईमानदारी और मेहनत-मजदूरी से उचित मात्रा में सीमित आमदनी होती है। उससे वे ही लोग काम चला सकते हैं, जो अपने खर्च पर 'बजट' पर कड़ा नियन्त्रण रखते हैं, जो अत्यन्त आवश्यक एवं उचित है उसी में खर्च करते हैं, वे सीमित आदमनी में खर्च चला सकते हैं, पर जिनने अपनी आवश्यकताए बढ़ा रखी हैं, जो अमीरी का ढोंग बनाते हैं, शेखी-खोरी में अपनी शान-समझते हैं, व्यसनों और शौक-मौज में डूबे रहते हैं, अपने से अधिक धनवानों तथा फिजूलखर्ची करने वाले बेबकूफों की नकल करते हैं, वे ईमानदारी की सीमित कमाई में काम नहीं चला सकते। वह उनके लिए अपर्याप्त होती है। इसी प्रकार जो लोग लालची हैं, तृष्णा से ग्रसित अधिकाधिक जोड़ने, जमा करने, बड़ी-बड़ी जायदादें या अमीरों जैसी शान बनाने के लिए—बैंक बैलेंस बढ़ाने, जेबर-जवाहरात बनवाने, बेटे-पोतों को सात पुश्त तक बैठकर खाने लायक साधन जुटा जाने की माया भरी चिन्ता में फँसे रहते हैं। उनके लिए ईमानदारी से मिल सकने वाली थोड़ी-सी कमाई असन्तोषजनक रहती है, उतने में उनका काम नहीं चलता। इस कमी की पूर्ति कहाँ से हो ? इसका उत्तर बेईमानी से आमदनी बढ़ाने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता।

अमेरिका, इंग्लैण्ड, रूस जैसे साधन अभी इस देश में नहीं हैं, जिनसे कोई व्यक्ति अपनी उपार्जन क्षमता आसानी से बढ़ा सके या एक को छोड़कर दूसरा ऐसा काम ढूँढ़ सके, जिसमें आमदनी की असाधारण वृद्धि हो जाय। बचे हुए समय का उपयोग जिनमें हो सके वैसे जापान जैसे घरेलू उद्योग-धन्धे पनपने की स्थिति भी यहाँ नहीं है। देश-व्यापी भयानक गरीबी, बेकारी को देखते हुए भारतीय नागरिक को इन दिनों इसी में संतोष करना पड़ेगा कि किसी प्रकार उसके गुजारे लायक व्यवस्था हो जाये। जिन्हें इतने से संतोष नहीं, जो बहुत ऊँचे स्तर का खर्चीला जीवन जीना चाहते हैं या दौलत जमा करना चाहते हैं, उन्हें निष्ठुरतापूर्ण अनैतिक एवं अवांछनीय तरीके ही अपनाने पड़ेंगे। आज हर क्षेत्र में बेईमानी, जालसाजी, लूट-खसोट, शोषण, अपहरण की बाढ़ आ रही है। क्या व्यापारी, क्या सरकारी कर्मचारी, क्या मजदूर, क्या महन्त हर क्षेत्र में आर्थिक भ्रष्टाचार बुरी तरह बढ़ रहा है। बढ़े हुए खर्चे की पूर्ति के लिए और कोई रास्ता भी तो नहीं। कर्ज लेकर काम चलाना और फिर उसे चुकाने से इंकार कर देना तथा विभिन्न प्रकार के अपराधों को अपनाना, आज मनुष्य के लालच एवं विलास का ही दुष्परिणाम है।

इस अवांछनीय स्थिति को मिटाने के लिए जन साधारण के मन में यह आस्था जमाई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जानी चाहिए कि ईमानदारी और परिश्रम की कमाई से ही काम चलाया जाय। मितव्ययिता बरती जाय और सादगी अपनाई जाय, तो औसत आमदनी में शान्तिपूर्वक काम चल सकता है। बजट बनाकर आय-व्यय का सन्तुलन बना लिया जाय तो गरीबी में भी सज्जनता का जीवन जीया जा सकता है। यही मान्यता लोक-जीवन में प्रवेश करे तो ही सामाजिक अशान्ति का ठोस निराकरण संभव हो सकेगा।

चाँदी के चम्मच का पूजन करने का प्रयोजन ऐसी ही साधन सात्विकता के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना है। अनुचित साधनों से कमाई हुई दौलत को लेने से वैसे ही डरना चाहिए जैसा कि सर्प, बिच्छू, व्याघ्र, विष, तेजाब, बारूद जैसी भयानक वस्तुओं से डरा जाता है। बेईमानी का पैसा कभी फलता-फूलता नहीं, वह चोरी, ठगी, बीमारी, नशेबाजी, व्यभिचार, राजदण्ड आदि ऐसे कार्यों में चला जाता है, जिनके लिए पीछे पश्चाताप ही करना पड़ता है। उससे अपनी और अपने परिवार की बुद्धि भ्रष्ट होती है, कुमार्ग पर चलने की प्रेरणा ऐसा ही पैसा देता है। व्यक्ति और समाज के पतन की अनेकों परिस्थितियाँ उपज ही पड़ती हैं। इससे समी को कष्ट और दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है। अतएव अर्थ साधनों की पवित्रता पर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इस तथ्य से सभी को अवगत होना चाहिए। चाँदी के चम्मच का पूजन करना, उसमें पवित्रता का समावेश करना इस बात का संकेत है कि इस बालक को उचित साधनों से कमाया हुआ अन्न ही ग्रहण करना चाहिए। प्रकारान्तर से यह शिक्षा अभिभावकों तथा उपस्थित लोगों के लिए ही है, क्योंकि बालक जब कमाने-खाने लायक होने पर इस शिक्षा को स्वयं कार्यान्वित करने लगेगा, उसमें अभी काफी देर है। बालकों के लिए वैसे साधन एवं शिक्षण तो अभिभावकों को ही प्रस्तुत करते रहने हैं ताकि बड़ा होने पर वह इस रीति-नीति को अपनाये रह सके।

यज्ञावशिष्ट भोजन

अग्निस्थापन के उपरान्त सामान्य हवन विधान करते हुए गायत्री मन्त्रों की आहुतियाँ तक का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए। इसके पश्चात् स्विष्टकृत से पूर्व पाँच आहुतियाँ खीर की माता-पिता को देनी चाहिए। इसमें से जो खीर बचे उसे बालक को खिलाना चाहिए। चाँदी के चम्मच से पाँच बार थोड़ी-थोड़ी करके भी खीर बालक को चटानी चाहिए। इसका मन्त्र **"ॐ अन्नपते अन्नस्य ..... है ।**

यज्ञ से बचा हुए अन्न ही खाया जाय। इस तथ्य को बालक के मुख से सर्वप्रथम अन्नग्रास देते हुए समझाया जाता है। अपनी कमाई में से प्रथम सामाजिक उत्कर्ष की आवश्यकता पूरी की जानी चाहिए। अपने से भी अधिक पिछड़े हुए, गिरे हुए, दुःखी, दिग्भ्रान्त लोगों को प्रकाश पहुँचाने के लिए सर्व प्रथम अपनी कमाई का उपयोग होना चाहिए। फालतू पैसा या समय बचे तब कुछ शुभ कार्य के लिए दिया जा सकता है, ऐसा सोचना धर्म विरुद्ध है। मानवता का आदर्श यह है कि प्राथमिकता लोक-मंगल को मिलनी चाहिए और अपनी सुविधा का प्रश्न दूसरे नम्बर पर रहना चाहिए। दान करना किसी पर अहसान करना नहीं है, वरन् धर्म की—"ऐक्साइज ड्यूटी" है। उत्पादन कर चुकाये बिना जिस तरह माल फैक्टरी से बाहर नहीं निकल सकता, उसी तरह लोक-मंगल के लिए अपना आवश्यक योग-दान दिये बिना शरीर, मन और धन अशुद्ध एवं अनुपयुक्त ही बना रहता है। इस प्रकार का अनुपयुक्त उपयोग अवांछनीय एवं धर्म विरुद्ध ही ठहराया गया है।

बालक को सर्वप्रथम यज्ञ से बचा हुआ आहार ही खिलाया जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा उस पर यही संस्कार डाला जाता है कि जब वह कमाने लायक हो, श्रम करने लायक समर्थ हो तो अपनी शक्ति, सम्पदा एवं विभूति का एक बड़ा अंश सर्वप्रथम लोक-मंगल के सत्कार्यों में लगाने के लिए सुरक्षित रख ले। इसके पश्चात् जो समय, जो धन बचे उसे अपने तथा अपने परिवार के गुजारे में खर्च किया करे। अपनी पूरी कमाई अपने लिए ही खर्च करेगा, लोकमंगल का अंश न देगा तो कहना चाहिए कि वह एक प्रकार का अपराधी जीवन जी रहा है। सरकारी कानून में ऐसे लोगों के लिए कोई दण्ड विधान भले ही न हो, ईश्वरीय कानून में निश्चित रूप से वह एक अपराध है, जिसके फलस्वरूप अगले जीवन में उसे सब प्रकार की सुविधाओं से रहित कृमि-कीटों की योनियों में भटकने का दण्ड मिल सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घरों में अग्नि-देव को बने हुए भोजन के प्रथम छोटे-छोटे पाँच ग्रास घी और शक्कर में मिलाकर होमने का रिवाज है। यह धर्म परम्परा प्रायः सभी आस्तिक घरों में चलती थी। जहाँ लुप्त हो वहाँ फिर चलनी चाहिए ताकि लोग समझ सकें कि यज्ञ भगवान को प्रथम भोजन कराके ही तब स्वयं भोजन करना चाहिए। इसका सन्देश यह है कि प्रथम परमार्थ का भाग निकाला जाय, तब अपने खर्च की व्यवस्था बनाई जाय।

क्षीर प्राशन (खीर बनाना)

दूध और चावल से बनी खीर बालक का प्रथम आहार है। यह सुपाच्य एवं सात्विक गुण होने से देव कार्यों में प्रयुक्त होती है। त्यौहारों, शुभ अवसरों एवं प्रीति-भोजों में खीर की प्रधानता रखी जाती है। सुपाच्य और सात्विक यही दो कारण हैं जिनसे आहार में प्रमुखता खीर को मिली है।

बालक के आहार में इन दोनों तथ्यों का बराबर ध्यान रखा जाय। उसे कोई ऐसी चीज न दी जाय जो पाचन में कठिनाई उत्पन्न करे। मात्रा इतनी अधिक न हो जो आमाशय और आँतों पर भार बनकर बालक के जीवन का संकट बन जाय। तमोगुणी, रजोगुणी मिर्च मसाले वाले चटपटे पकवान, मिष्ठान्न, नशीले पदार्थ उसके कोमल शरीर पर भयानक प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। शरीर में अनेक प्रकार के रोग और मन में विविध-विविध विकार उत्पन्न करते हैं। जिगर बढ़ाना, तिल्ली, दस्त, काँच निकलना, पेट में कीड़े, नाक से पानी बहना, अधिक रोना, चिड़चिड़ापन, नींद कम आना जैसे रोगों का एक मात्र कारण अपच होता है। जो अभिभावक बालकों के आहार की मात्रा, खाने के समय एवं सुपाच्यता, सात्विकता का ध्यान नहीं रखते, वे उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ने के अपराधी होते हैं। आज की स्थिति यही है। लोग बच्चे पैदा तो कर लेते हैं, पर उनके आहार तक के बारे में समुचित ज्ञान नहीं रखते, अनावश्यक मात्रा में अनुपयुक्त चीजें खिलाते रहते हैं। फलस्वरूप बालक रोगी होते हैं और अकाल में ही काल-कलवित हो जाते हैं। हमारे देश में इस प्रकार की शिशु हत्या बड़ी मात्रा में अभिभावकों द्वारा ही की जाती है। भले ही वे भूल अज्ञानवश करते हों, पर इससे भी क्या, विष अगर भूल से भी खा लिया जाय तो उसका प्रतिफल मिलेगा ही। संसार में बाल मृत्यु की औसत सबसे अधिक भारत में ही है, इसका प्रधान कारण छोटे बालकों का आहार सम्बन्धी अज्ञान ही समझना चाहिए। लाड़वश जो अनुपयुक्त आहार कराया जाता है, वही बालकों के लिए प्राणघातक बन जाता है।

खीर खिलाने में इस तथ्य की ओर प्रत्येक अभिभावक का ध्यान आकर्षित किया जाता है कि अधिक मात्रा व अनुपयुक्त भोजन के खतरे को समझें और बच्चे को कुछ भी खिलाते समय इस सम्बन्ध में पूरी-पूरी सतर्कता बरतें। भोजन देने, कराने का उत्तरदायित्व कुछ ही व्यक्तियों पर रहना चाहिए। हर कोई, चाहे जो चीज, चाहे जब मुँह में ठूँस दे, इसकी रोकथाम रखी जानी बालक की जीवन रक्षा के लिए बहुत ही आवश्यक है।

इस सम्बन्ध में स्मरणीय बातें नीचे दी जा रही हैं। इनका ध्यान रखा जाय, तो अन्न-प्राशन संस्कार का समुचित लाभ मिल सकता है।

(१) जन्म से लेकर पाँच महीने तक बालक को दूध पर रखना चाहिए, जब तक माता के दूध से पेट भरता रहे और बच्चे का पेट भरा रहे तथा वह भूख से रोये-चिल्लाये नहीं तब तक माता का दूध ही दिया जाय।

(२) जब माता का दूध कम पड़ने लगे तो गाय या बकरी का दूध दिया जाय। बच्चे की पाचन शक्ति का अनुमान लगाकर इस प्रकार के दूध की मात्रा नियत करनी चाहिए। माता का दूध या बाहरी दूध नियत समय पर ही दिया जाय। साधारणतया अधिक स्वस्थ बच्चे को तीन-तीन घण्टे बाद और कमजोर बच्चे को चार-चार घण्टों बाद दूध दिया जाना चाहिए।

(३) माता का और बाहरी दूध मिलाकर चौबीस घण्टे में प्रायः एक सेर पर्याप्त है। पहले, दूसरे महीनों में कुछ कम और तीसरे, चौथे, पाँचवे महीनों में इससे कुछ अधिक की आवश्यकता पड़ सकती है। इसलिए एक-सी मात्रा नहीं हो सकती। वह उनके स्वास्थ्य पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्भर है। पर यह मोटा अनुमान समझना चाहिए कि कुल मिलाकर रोज एक सेर दूध हो।

(४) जिस बोतल से दूध पिलाना हो उसे गरम पानी से भीतर तक अच्छी तरह से धो लिया जाय और रबड़ की चुसनी को धोने के बाद धूप में सुखा भी लिया जाय। इनमें गन्दगी रहने से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

(५) यदि ऊपर का दूध आधा सेर से अधिक दिया जा रहा हो तो उसमें थोड़ा-थोड़ा करके आधी छटाँक से लेकर एक छटाँक तक मीठे सन्तरे का रस भी मिलाते रहना चाहिए।

(६) छठे माँस में दूध के अतिरिक्त अन्य आहार देना आरम्भ किया जा सकता है। आरम्भ से दूध में चावल या गेहूँ का दलिया काफी पतला बनाकर देना चाहिए। दिन में एक-एक चम्मच दो-तीन बार देने से आरम्भ करना चाहिए और फिर इसकी मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए।

(७) छः महीने बाद टमाटर, लौकी, गाजर, परवल, तुरई आदि शाकों को पकाकर उसका पतला रसा थोड़ा-थोड़ा करके देना भी आरम्भ किया जाय। थोड़ा नमक, जीरा उसमें डाला जा सकता है। तेज मिर्च-मसालों से बचाया जाय।

(८) अन्न की मात्रा क्रमशः बढ़ानी चाहिए। बच्चा हजम कर पा रहा है या नहीं, इसकी परीक्षा उसके पेट की मुलायमी तथा टट्टी के गाढ़ेपन को देखकर की जा सकती है। पेट कड़ा, उठा तथा फूला हुआ प्रतीत हो, दस्त अधिक संख्या में तथा अधिक पतले हो जाने लगें तो अपच समझकर उसका अन्न कम कर देना चाहिए। फलों का रस, शाक तथा दूध देते रहना चाहिए। दही भी दिया जा सकता है। छोटे बच्चों को घी नहीं देना चाहिए।

(९) पानी पिलाते रहने का ध्यान रखना चाहिए। पानी के साधन अधिक दीखने पर बच्चे अनावश्यक पानी पी जाते हैं और पानी दिखाई न देने पर उसे पीना भूल जाते हैं। इससे दोनों ही तरह हानि होती है।

(१०) बच्चों को हँसने-खेलने, दौड़ने-भागने का पूरा अवसर देना चाहिए, जिससे शारीरिक श्रम होता रहे और अन्न हजम हो जाय।

(११) पिछला खाया हुआ भोजन पचा या नहीं यह अनुमान लगा लेना सामान्य बुद्धि वाले माता-पिता के लिए कुछ भी कठिन न होना चाहिए। इसी प्रकार यह जानकारी होना भी कुछ कठिन नहीं कि बीमार, कमजोर बालकों के लिए हलका और सुपाच्य भोजन क्या हो सकता है ? यदि अपनी जानकारी कम हो तो किसी कुशल चिकित्सक से इस सम्बन्ध में परामर्श लिया जा सकता है। भोजन कम पौष्टिक भले ही हो पर गरिष्ठ न हो। मात्रा कम भले ही रह जाय पर आवश्यकता से अधिक न बढ़नी चाहिए।

(१२) चाय जैसी नशीली चीजें बालकों को न दी जाएँ माताएँ कृत्रिम नींद लाने के लिए बच्चों को अफीम खिला देती हैं। नशे बालक के पेट, मस्तिष्क, शरीर और स्वभाव को बिगाड़ देते हैं। इसलिए उनसे बचाव करना चाहिए।

(१३) माँस, मछली, पक्षियों का शोरवा, अण्डे, मछली का तेल आदि अभक्ष्य पदार्थों को बालकों को सर्वथा दूर रखना चाहिए। आजकल डाक्टर लोग और अंग्रेजी सभ्यता में रंगे हुए लोग इन चीजों को एक फैशन समझकर या लाभदायक बताकर खाने पर जोर देते हैं, पर सच बात यह है कि ये वस्तुएँ मनुष्य का स्वाभाविक आहार न होने से अन्ततः शरीर को ही हानि पहुँचाती हैं। मन एवं स्वभाव को आसुरी बना देना तो निश्चित है। आहार का मन पर जो प्रभाव पड़ता है, उसे ध्यान में रखते हुए ऐसे अभक्ष्य पदार्थों को दूर रखना ही उचित है।

(१४) आहार गटक से निगल न लिया जाय वरन् धीरे-धीरे चबाकर खाया जाय, इस आदत को आरम्भ से ही डालना चाहिए।

(१५) बालकों में विचार कम होता है, उनकी क्रियाएँ आदत के आधार पर चलती हैं। भोजन का वातावरण सामने रहे, घर के अन्य लोग खाते हुए दिखाई पड़ें तो बालक भी उनके पास जा पहुँचता है। वे लाड़ वश उसे खिलाते रहते हैं, इस प्रकार सब के साथ वह खाता रहता है। अब उसे आदत पड़ जाती है। पेट में गुंजायश न होने पर भी वह खाने का आग्रह करता रहता है, इससे स्वास्थ्य बिगड़ता है। खाने के समय उसे चौके से दूर रखा जाय, कम से कम तीन घण्टे के अन्तर से थोड़ा-थोड़ा आहार दिया जाय। बच्चे का भोजन विशेषतया हलका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होना चाहिए। इसलिए उसे बड़े लोगों के भारी भोजन से वैसे भी अलग ही रखा जाना चाहिए।

(१६) अधिक मीठा खाने की आदत से बालक के दाँत खराब होते हैं, हड्डियाँ टेढ़ी पड़ जाती हैं, पेट में कीड़े पड़ते हैं और कई तरह की बीमारियाँ पैदा होती हैं। इसलिए लाड़-चाव में मीठा देने की अपेक्षा उसे फल देने चाहिए, जो सुपाच्य हों और कच्चे या सड़े-गले न हों।

(१७) हाथ के पिसे आटे या दलिया का यदि उपयोग किया जाय तो मशीन के पिसे या बाजार से खरीदे आटे की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा रहेगा। तेज आग पर पकाने से, भूनने-जलने से भोजन का जीवन तत्व नष्ट हो जाता है, इसलिए यदि कुकर में पकाई हुई वस्तुएँ दी जाएँ तो उनमें सजीवता अधिक रहने से बालक का हित भी अधिक रहता है।

(१८) एक वर्ष का होने पर बालक से माता का दूध छुड़ा देना चाहिए। अधिक दिनों तक दूध पीते रहना न बालक के लिए आवश्यक है और न माता के लिए उपयुक्त।

(१९) बच्चे गन्दे हाथों से, जहाँ-तहाँ जमीन में या अनुपयुक्त स्थान पर रखकर भोजन खाने लगते हैं, गन्दे बर्तनों में पानी पी लेते हैं। कोई खिलौना आदि चूसने लगते हैं। उसमें लगी गन्दगी पेट में पहुँचकर स्वास्थ्य को हानि पहुँचाती है। इसलिए खाने-पीने के सम्बन्ध में स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाय।

(२०) जब बालक क्रोध में हो, रो रहा हो, सोया हुआ हो तो उस स्थिति में उसे कुछ खिलाया-पिलाया न जाय। क्रोध के समय पेट में पहुँचा भोजन हानिकारक होता है। इसलिए बच्चा प्रसन्न एवं जागृत हो तभी उसे खिलाया-पिलाया जाय। माता यदि क्रोध या शोक में है तो भी उस समय बालक को अपना दूध न पिलावे। क्षुब्ध मन के समय शरीर की स्थिति भी अनुपयुक्त हो जाती है, उस समय जो दूध निकलेगा, वह बालक पर बुरा प्रभाव डालेगा।

आहार सम्बन्धी यह बीस मोटे नियम हैं। यदि इन्हें भली प्रकार समझा और काम में लाया जाय तो बालक की स्वास्थ्य-रक्षा हो सकती है। अकाल में ही जो लाखों शिशु काल-कवलित हो जाते हैं, उनके प्राण बच सकते हैं। भोजन सम्बन्धी नियमों के व्यतिक्रम से आधे बच्चे मरते हैं। अभिभावक यदि थोड़ी सावधानी बरतें तो उनके प्राण बचाये जा सकते हैं। बालकपन में अनुपयुक्त ढंग से आहार करते रहने पर कितने ही बच्चों के पेट आरम्भ से ही दुर्बल हो जाते हैं और वे किसी प्रकार बचे रहने पर भी बड़े होकर अनेक उदर विकारों से ग्रसित रहते हैं। बचपन का बिगड़ा पेट बड़े होने पर नियम-सेवन व दवा-दारू से भी ठीक नहीं रह पाता। पेट खराब रहने से स्वास्थ्य का सारा ढाँचा ही चरमरा जाता है। अपच रहने से रक्त दूषित बनता है और उससे अनेक प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न होती रहती हैं। जिसका शरीर कमजोर, बीमार रहेगा, भावनाएँ वैसी ही विश्रृंखलित रहेंगी। ऐसी दशा में उसका जीवन-क्रम ही अस्त-व्यस्त हो जायेगा।

जिन अभिभावकों को अपने बालकों का भविष्य उज्ज्वल बनाना हो उन्हें उनके शरीर की, स्वास्थ्य की नींव आरम्भ से ही मजबूत बनानी चाहिए। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का मूल-साधन आरोग्य ही तो है। स्वास्थ्य बिगड़ गया तो यह चारों ही बिगड़ेंगे। स्वास्थ्य की स्थिरता आहार की सुव्यवस्था पर निर्भर है। इसलिए जब तक बालक अबोध है तब तक अभिभावकों को उसका पेट खराब न होने का उत्तरदायित्व सँभालना चाहिए और जब बच्चा थोड़ा समझदार हो जाय तो उसे ऐसी आदतें डाल देनी चाहिए जिससे वह स्वयं ही अपने स्वास्थ्य के मूल आधार पेट को सुव्यवस्थित बनाए रह सके।

(१) कड़ी भूख लगने पर ही खाना, (२) भूख से कम खाना, (३) चबा-चबाकर खाना, (४) भोजन नाक को सिकोड़ते हुए नहीं खाना चाहिए, भगवान का प्रसाद समझकर प्रसन्न चित्त से खाना चाहिए, (५) पकवान और मिठाइयों का, तले-भुने पदार्थों का कम से कम उपयोग करना, (६) दिन में दो बार ही खाना, (७) मिर्च-मसालों से बचना, (८) मांसाहार से सर्वथा दूर रहना, (९) नशा न करना, (१०) शाक और फलों की मात्रा भोजन में आधी रखना और दूध-दही को प्रमुखता देना। यह दस नियम आहार के सम्बन्ध में सदा बरतने के हैं। शुद्ध वातावरण में, शुद्ध स्थान पर, शुद्ध पात्रों में, शुद्ध व्यक्तियों द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बनाये हुए आहार का भी व्यवहार किया जाय। आहार की पौष्टिकता जितनी आवश्यक है, उतनी ही उसकी शुद्धि भी अपेक्षित है। जाति-बिरादरी के आधार पर मानी जाने वाली आज की निरर्थक छूत के स्थान पर हमें भोजन की वैज्ञानिक स्वच्छता एवं शुद्धता का ही ध्यान रखना चाहिए। जब भोजन किया जाय तो मन प्रसन्न रहे। कोई आवेश या क्षोभ उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ या बातें उस समय न हों।

बालक के अन्न-प्राशन संस्कार कराने का प्रयोजन यही है कि इन विषयों के आधार पर उसकी आहार क्रिया चले। यह प्रशिक्षण विशेषतया अभिभावकों के लिए हैं क्योंकि बालक की अबोध अवस्था में इस दिशा में पूरी देखभाल रखने और बड़े होने पर ऐसी ही आदतें डालने की जिम्मेदारी उन्हीं की है। स्वास्थ्य रक्षा के अन्य नियम भी हैं, जैसे व्यायाम, सफाई, जल्दी सोना, जल्दी उठना, प्रसन्न रहना, ब्रह्मचर्य आदि अन्य बातें भी आवश्यक हैं, उन्हें भी सिखाना और उपयोग में लाना चाहिए, तभी सर्वांगीण स्वास्थ्य रक्षा संभव होगी, पर चूँकि बालक जब अन्न खाने योग्य हुआ है और उसका संस्कार उसी सन्दर्भ से किया जाता है तो प्रशिक्षण भी इसी सम्बन्ध का होना चाहिए। अतएव इस अवसर पर उस सम्बन्ध में ही अधिक विचार किया गया है। तथ्य यह भी है कि स्वास्थ्य रक्षा का तीन चौथाई आधार आहार पर निर्भर है, इसलिए उस पर अधिकाधिक ध्यान दिया ही जाना चाहिए।

इन बातों का ध्यान रखा जाय

यह बात ध्यान रखने की है कि बालक का शारीरिक विकास सन्तुलित आहार पर निर्भर है। यदि अभिभावक अपने बच्चे का हित चाहते हैं, तो उन्हें चाहिए कि थोड़ा विवेक से काम लें। अपना स्वास्थ्य उन्होंने आहार सम्बन्धी जिन बुराइयों या बुरी आदतों से बिगाड़ा है, उन्हें बच्चों में न पड़ने दें। जो अभक्ष्य और अखाद्य खाकर उन्होंने अपना स्वास्थ्य नष्ट किया है, उसे बालकों को न खाने दें। शरीर और कुछ नहीं अन्न का ही प्रत्यावर्तन है। यदि निरोग, दीर्घजीवी, स्फूर्तिवान, कान्तिवान शरीर अभीष्ट हो तो उसके निर्माण के लिए आहार सम्बन्धी उपयुक्त वस्तुओं का चुनाव एवं खान-पान सम्बन्धी अच्छी आदतों का अभ्यास कराने की जिम्मेदारी भी अभिभावकों को ही उठानी चाहिए। बच्चा क्या पसन्द करता है, क्या चाहता है, क्या माँगता है, कब किसके लिए मचलता और ललचाता है इसको महत्त्व न देकर इस बात को महत्त्व देना चाहिए कि उसकी भलाई एवं प्रगति किस प्रकार संभव है ?

इसके लिए केवल बच्चे को डराने-धमकाने या उस पर प्रतिबन्ध लगाने से काम न चलेगा। सारे घर का वातावरण ही बदलना पड़ेगा। मिर्च-मसाले खाकर, चाय काफी पीकर बच्चे अपनी आँतों को तथा रक्त को खराब न करें, यदि यह अभीष्ट हो तो बच्चे के आहार में से ही नहीं, सारे घर के आहार में से इस प्रकार की अनुपयुक्त वस्तुओं को हटाना पड़ेगा। अन्यथा आगे-पीछे देखा-देखी उन सब चीजों को बच्चे सीख ही जायेंगे। घर में जिस प्रकार का वातावरण बना हुआ है, दूसरे लोग जिन आदतों से ग्रसित हैं, उससे बालकों को बचाया नहीं जा सकता।

यह भी स्मरण रखने की बात है कि आहार शरीर से ही नहीं, मन से भी प्राप्त किया जाता है। अन्न द्वारा शरीर का और विचार द्वारा मन का पोषण एवं निर्माण होता है। शरीर ही नहीं मन भी निरोग समर्थ रखा जाना आवश्यक है। पूर्ण स्वस्थता शरीर और मन दोनों के निरोग रहने पर ही उपलब्ध होती है। साहस, धैर्य, स्वच्छता, उदारता, श्रमशीलता, सज्जनता जैसे गुणों का विकास कर सकने वाले विचार बच्चों को आरम्भ काल से ही दिये जाने चाहिए। यह कार्य भी कोई उपदेशों से न बन पड़ेगा। यदि गन्दगी, कलह, ईर्ष्या, द्वेष छल, कपट, भय, आलस, उच्छृंखलता जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ घर में फैल रही हों तो बच्चा अपनी संवेदनशीलता के कारण मानसिक दृष्टि से रुग्ण बनता जायेगा और उसका प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर भी पड़ेगा। आहार और व्यवहार दोनों की उपयुक्त खुराक बच्चे को पहुँचती रहे उसकी समुचित प्रेरणा अभिभावकों को करना ही "अन्न-प्राशन-संस्कार" का प्रमुख उद्देश्य है।

"अन्न-प्राशन संस्कार" की व्याख्या में आठ श्लोक संस्कार पद्धति में दिये गये हैं, उनमें उपर्युक्त विचारों का प्रतिपादन है। जिस विचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का प्रसंग हो, उसमें से उसी सम्बन्ध का श्लोक उद्धृत कर प्रतिपादित विषय की पुष्टि की जा सकती है।

अन्य संस्कारों की भाँति गायत्री यज्ञ का शेष कार्यक्रम पूरा करते हुए उपस्थित लोग अक्षत पुष्पों की वर्षा करते हुए **"ॐ श्री वर्चस्व०"** मन्त्र से बालक को आशीर्वाद दें और सत्संकल्प पाठ के साथ कार्यक्रम पूरा समाप्त किया जाय।

अन्नप्राशन-संस्कार—पद्धति के उद्देश्य और शिक्षा

अन्नस्य सूक्ष्मभागेन विकासो मनसा भवेत्।
अतो न्यायादर्जनं कुर्याच्चामलं सत्क्रियादिभिः।। १।।

अन्न के सूक्ष्म भाग से ही मन का विकास होता है। अतः उसे न्यायपूर्वक अर्जन करें और सात्विक क्रिया एवं पवित्र भाव से उसे स्वच्छ और निर्मल करें।

स्वसन्ततौ च पुरुषो गुणानिच्छेद् यादृशान्।
तथान्नचयनं कृत्वा कारयेत्प्राशनं तदा।। २।।

शिशु के हृदय में जैसे गुणों को उत्पन्न करना चाहें वैसा ही अन्न चयन कर तब प्राशन कराएँ।

आश्रितसंहवासिभ्यस्तथाभ्यागतादये।
दत्वान्नं तदवशिष्टं भुञ्जीत सुखपूर्वकम्।। ३।।

अपनी स्थिति के अनुसार आश्रितों, सहवासियों तथा अभ्यागत आदि प्राणियों को देने के उपरान्त शेष अन्न को सुखपूर्वक ग्रहण करें।

मत्वान्नं 'ब्रह्म हीत्येतत् प्रेमश्रद्धादरेण च।
ह्रासोच्छिष्टं बिना कुर्यादुपयोगं विधानतः।। ४।।

अन्न को "ब्रह्म" मानकर प्रेम, श्रद्धा और आदर के साथ विधिपूर्वक उपयोग करें, नष्ट नहीं करें, तथा उच्छिष्ट नहीं छोड़ें।

भोज्यस्य शुद्धिमात्रायाः समयस्य तथैव च।
अपेक्षितानुकूल्येन ह्युपभोगं समाचरेत्।। ५।।

भोजन का समय, आवश्यकता, मात्रा, स्वच्छतादि का विचारपूर्वक सदुपयोग करें।

भुक्तिकाले च सततं पाचने परिवेषणे।
सद्भावसुविचाराणां संकल्पानां तथैव च।। ६।।
सन्निवेशो हि हृदये कर्त्तव्यो ध्यानपूर्वकम्।
शिष्टानुनयेनान्नं सत्क्रियाभिः समादरेत्।। ७।।

भोजन को सिद्ध करने (पकाने), परोसने, खिलाने और खाने के समय उसमें सद्भावों, सुविचारों एवं संकल्पों को सदा सन्निवेश कराएँ। तथा नम्रता, शिष्टता तथा अच्छे व्यवहार से आदर करें।

प्रसादौषधरूपं च प्रसन्नमनसा हि तत्।
ज्ञात्वा ब्रह्मात्मकं नित्यं सानन्दं भक्षयेत्पुनः।। ८।।

अन्न को, ओषधि, प्रसाद तथा ब्रह्मस्वरूप समझ कर प्रसन्न हृदय एवं सानन्द ग्रहण करें।

अन्नप्राशन-संस्कार-प्रयोजन एवं विधि-व्याख्या

संस्कार प्रयोजन—बालक को जब पेय पदार्थ, दूध आदि के अतिरिक्त अन्न देना प्रारम्भ किया जाता है तो वह शुभारम्भ यज्ञीय वातावरण युक्त धर्मानुष्ठान के रूप में होता है। इसी प्रक्रिया को अन्नप्राशन संस्कार कहा जाता है।

❑ बालक के दांत निकल आने पर उसे पेय के अतिरिक्त खाद्य दिये जाने की पात्रता का संकेत है। तदनुसार अन्नप्राशन ६ माह की आयु के आस-पास कराया जाता है।

❑ अन्न का शरीर से गहरा सम्बन्ध है। मनुष्यों और प्राणियों का अधिकांश समय साधन आहार व्यवस्था में जाता है। उसका उचित महत्व समझकर उसे सुसंस्कार युक्त बनाकर लेने का प्रयास करना उचित है। अन्नप्राशन संस्कार में भी यही होता है।

❑ अच्छे प्रारम्भ का अर्थ है आधी सफलता। अस्तु बालक के अन्नाहार के क्रम को श्रेष्ठतम संस्कारयुक्त वातावरण में करना अभीष्ट है।

❑ यजुर्वेद, ४०वें अध्याय का पहला मन्त्र, **'तेन त्यक्तेन भुंजीथा'** (त्याग के साथ भोग करने) का निर्देश करता है। हमारी परम्परा यही है—भोजन थाली में आते ही चींटी, कुत्ता आदि का भाग उसमें से निकालकर पंचबलि करते हैं। भोजन ईश्वर को समर्पण कर या अग्नि में आहुति देकर तब खाते हैं। होली का पर्व तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रयोजन के लिए है। नई फसल में से एक दाना भी मुख में डालने से पूर्व, पहले उसकी आहुतियाँ होलिका यज्ञ में देते हैं, तब उसे खाने का अधिकार मिलता है। किसान फसल मींज मांड़कर जब अन्नराशि तैयार कर लेता है तो पहले उसमें से एक टोकरी भर कर धर्म कार्य के लिए अन्न निकालता है, तब घर ले जाता है। त्याग के संस्कार के साथ अन्न का प्रयोग करने का दृष्टि से ही धर्म घट-अन्नघट रखने की परिपाटी प्रचलित है।

विशेष व्यवस्था—यज्ञ एवं देवपूजन आदि की व्यवस्था के साथ अन्नप्राशन के लिए नीचे लिखी व्यवस्था विशेष रूप से बनाकर रखनी चाहिए।

❑ अन्न प्राशन के लिए प्रयुक्त होने वाली कटोरी तथा चम्मच। चाटने के लिए चाँदी का उपकरण हो सके तो अच्छा है।

❑ अलग पात्र में बनी हुई चावल या सूजी (रवा) की खीर, शहद, घी, तुलसी दल तथा गंगाजल यह पाँच वस्तुएँ तैयार रखनी चाहिए।

विशेष कर्मकाण्ड—निर्धारित क्रम से मंगलाचरण से लेकर रक्षा विधान तक के क्रम पूरे करके विशेष कर्मकाण्ड कराया जाता है। उसमें—(१) पात्र पूजन, (२) अन्न-संस्कार, (३) विशेष आहुति तथा (४) क्षीर प्राशन सम्मिलित है।

पात्र-पूजन

शिक्षण एवं प्रेरणा—पात्र-पात्रता का प्रतीक होता है। ईश्वरीय अनुदान चाहिए या लौकिक सफलता चाहिए तो पात्रता प्राप्त करनी पड़ती है। इसलिए पात्र पूजनीय है।

❑ संस्कारयुक्त आहार कुसंस्कारयुक्त पात्र में नहीं रखा जा सकता है। दवा सामान्य पात्र में नहीं रखी जा सकती उसे यन्त्रों में स्टरलाइज, आटोक्लेप विधि से स्वच्छ बनाया जाता है। संस्कारयुक्त अन्न के लिए माध्यम-पात्र संस्कारयुक्त बनाने के लिए पूजन कृत्य किया जाता है।

चाटने के लिए यथासम्भव चाँदी का उपकरण लेते हैं। चाँदी शुभ निर्विकारता की प्रतीक है। जल्दी विकारग्रस्त नहीं होती। ऐसे ही माध्यमों से बालक तक आहार पहुँचना चाहिए।

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चार के साथ अभिभावक पात्रों पर चन्दन, रोली से 卐 बनाये अक्षत पुष्प चढ़ायें।

भावना करें कि पवित्र वातावरण के प्रभाव से पात्रों में दिव्यता की स्थापना की जा रही है, जो बालक के लिए रखे गये अन्न की दिव्यता प्रदान करेगी, उसकी रक्षा करेगी।

ॐ हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृण सत्यधर्माय दृष्टये।।

—ईशोपनिषद्—१५

अन्नसंस्कार

शिक्षण एवं प्रेरणा—❑ शिशु को पेय से अन्न पर लाते समय लेह्य (चाटने योग्य) खीर दी जाती है। यह पेय और खाद्य के बीच की स्थिति है अर्थात् उसकी आयु, पाचन क्षमता तथा आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही खाद्य का चयन किया जाना चाहिए। जब चाहे, सो खिलाते रहना ठीक नहीं।

❑ खीर के साथ मधु, घृत, तुलसीदल तथा गंगाजल मिलाते हैं। यह सभी पौष्टिक, रोगनाशक तथा पवित्र आध्यात्मिक गुण संवर्धक हैं। विशेष रूप से खीर सुपाच्य-सन्तुलित आहार, मधु-मधुरता, घी-स्नेह, तुलसी-विकारनाशक तथा गंगा-पवित्रता की प्रतीक है। खाद्य में सभी सुसंस्कार जागृत किए जाने चाहिए।

❑ पात्र में सभी वस्तुएँ मन्त्रोच्चार के साथ मिलाई जाती हैं। भोजन सिद्ध करते (पकाते, तैयार करते) समय सद्भावों, सद्विचारों और श्रेष्ठ संकल्पों का उसमें सन्निवेश कराया जाना चाहिए। अन्न जल में भावनाओं के अधिग्रहण की पर्याप्त क्षमता होती है। इसीलिए भोजन पकाते, परोसते समय प्रसन्न मन तथा ईश्वर-समर्पण के भाव रखने का विधान है।

प्रयोग के लिए मुख्य पात्रों से आवश्यकता के अनुसार सभी वस्तुएँ निकालते हैं। भावना यही है कि अपनी आवश्यकता जितना ही पदार्थ लिया जाय। अधिक ले लेने से या तो छोड़ने से-उसका तिरस्कार होगा या फिर खाने से पेट का सन्तुलन बिगड़ेगा। दोनों ही स्थितियों से बचकर सही मात्रा में प्रसाद रूप भोजन लेना और पाना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रिया और भावना—नीचे लिखे मन्त्रों के पाठ के साथ अन्न प्राशन के लिए रखे गये पात्र में एक-एक करके भावनापूर्वक सभी वस्तुएँ डाली-मिलाई जावें।

पात्र में खीर डालें। मात्रा इतनी लें कि ५ आहुतियाँ करने के बाद भी शिशु को चटाने के लिए उसमें कुछ बच रहे। भावना करें कि यह अन्न दिव्य संस्कारों को ग्रहण करके बालक में उन्हें स्थापित करने जा रहा है।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे।
पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
—यजु. १८/३६

पात्र में खीर के साथ थोड़ा शहद मिलायें। भावना करें कि यह मधु उसे सुस्वादु बनाने के साथ-साथ उसमें मधुरता के संस्कार उत्पन्न कर रहा है। इससे शिशु के आचरण, वाणी, व्यवहार सभी में मधुरता बढ़ेगी।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। —यजु. १३/२७-२८-२९

पात्र में थोड़ा घी डालें-मन्त्र के साथ मिलायें। यह घी रूखापन मिटाकर स्निग्धता देगा। बालक के अन्दर शुष्कता का निवारण करके उसके जीवन में स्नेह, स्निग्धता, सरसता का संचार यह पदार्थ करेगा।

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। —यजु. ६/११

पात्र में तुलसीदल के टुकड़े मन्त्र के साथ डालें। यह ओषधि शारीरिक ही नहीं आधिदैविक और आध्यात्मिक रोगों, विकारों का शमन करने में भी सक्षम है। यह अपनी तरह ईश्वर को समर्पित होने के संस्कार बालक को प्रदान करेगी।

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहँ शतं धामानि सप्त च।।
—यजु १२/७५

गंगाजल की कुछ बूँदें पात्र में डालकर मिलायें पतित पावनी गंगा खाद्य की पापवृत्तियों का हनन करके उसमें पुण्य सम्वर्द्धन के संस्कार पैदा कर रही है। ऐसी भावना के साथ उसे चम्मच से मिलाकर एक दिल कर दें। जैसे यह सब भिन्न-भिन्न वस्तुयें एक हो गयीं, उसी प्रकार भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ संस्कार बालक को एक समग्र श्रेष्ठ व्यक्तित्व प्रदान करें।

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
—यजु ३४/११

सभी वस्तुयें मिलाकर वह मिश्रण पूजा वेदी के सामने संस्कारित होने के लिए रख दिया जाय। इसके बाद अग्नि स्थापन से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूरी करने का क्रम चलाया जाय।

विशेष आहुति

गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूरी हो जाने पर पहले तैयार की गई खीर से ४ विशेष आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्र के साथ की जावें। भावना की जाय कि वह खीर इस प्रकार यज्ञ भगवान का प्रसाद बन रही है।

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवोवदन्ति। सानो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु स्वाहा। इदं वाचं इदन्नमम्।
—८/१००/११

अन्न प्राशन

आहुतियाँ पूरी होने पर शेष खीर से बच्चे को अन्न प्राशन कराया जाय।

शिक्षण और प्रेरणा—'जैसा अन्न—वैसा मन' की उक्ति सर्वविदित है। **"आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः"** का शास्त्र वचन भी विज्ञजन जानते हैं। इसीलिए अन्न को संस्कारिता करके देना आवश्यक है।

❑ अन्न के रुप, रंग, उसका स्वाद और गुण-धर्म भिन्न-भिन्न होते हैं। यह सब जानते हैं। यज्ञीय भावना द्वारा उसके संस्कारों का शोधन नवीनीकरण सम्भव है, इसलिए अन्नप्राशन यज्ञावशिष्ट अन्न से कराया जाता है। यह एक संकेत मात्र है। यह क्रम सहज जीवन में भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रखा जाना चाहिए। बलिवैश्व एवं भोग लगाकर भोजन करने की परम्परा इसीलिए बनाई गई थी।

❑ गीता में कहा गया है कि "यज्ञ से बचा हुआ अन्न खाने वाला सनातन बह्म की प्राप्ति करता है। ऐसा न करने वालो को तो इस जीवन में सद्गति नहीं मिल पाती, आगे की तो क्या कहें ?" इस उक्ति का मर्म है—अन्न वही लें जो श्रेष्ठ संस्कारयुक्त है। इस तथ्य को समझना और जीवन में अपनाया जाना चाहिए। बालकों के लिए सुस्वादु एवं स्वास्थ्यवर्धक आहार की तरह ही सुसंकारी अन्न जुटाने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि मिर्च-मशाले खाकर, चाय-काफी पीकर बच्चे अपनी आँतों को तथा रक्त को खराब न करें। यदि यह अभीष्ट हो तो बच्चे के आहार में से ही नहीं, सारे घर के आहार में से इस प्रकार की अनुपयुक्त वस्तुओं को हटाना पड़ेगा। अन्यथा-आगे पीछे देखा-देखी उन सब चीजों को बच्चे सीख ही जायेंगे, घर में जिस प्रकार का वातावरण बना हुआ है, दूसरे लोग जिन आदर्तों से ग्रसित हैं, उनसे बालकों को बचाया नहीं जा सकता।

क्रिया और भावना—खीर का थोड़ा-सा अंश चम्मच से मन्त्र के साथ बालक को चटा दिया जाय। भावना की जाय कि वह यज्ञावशिष्ट खीर अमृतोपम गुणयुक्त है और बालक को शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक सन्तुलन, वैचारिक उत्कृष्टता तथा चारित्रिक प्रामाणिकता प्राप्त करने का पथ प्रशस्त करेगी।

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

—यजु. ११/८३

इसके बाद स्विष्टकृत होम से लेकर विसर्जन तक के कर्म पूरे किए जावें। विसर्जन के पूर्व बालक को सभी लोग आशीर्वाद दें। विसर्जन तथा जयघोष के साथ कार्यक्रम समाप्त किया जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

चूड़ाकर्म एवं कर्णवेध-संस्कार

चूड़ाकर्म-संस्कार-विवेचन

शिर के बाल जब प्रथम बार उतारे जाते हैं, तब वह चूड़ाकर्म या मुण्डन संस्कार कहलाता है। यह समारोह इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि मस्तिष्कीय विकास एवं सुरक्षा पर इस समय विशेष विचार किया जाता है और वह कार्यक्रम भी शिशु-पोषण में सम्मिलित किया जाता है, जिससे उसका मानसिक विकास व्यवस्थित रूप से आरम्भ हो जाय।

मस्तिष्क बालों से ढंका रहता है। बाल सर्दी-गर्मी और बाहरी उतार-चढ़ावों से शिर की रक्षा करते हैं, इसलिए प्रकृति ने शरीर के इस सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान की सुरक्षा के लिए एक स्थायी परिधान लपेट दिया है। यह प्रकृति की दी हुई चिरस्थायी टोपी है। इसलिए आमतौर से यही उचित रहता है कि शिर पर बाल रखे रहें। सफाई में अड़चन पड़ती हो तो बहुत लम्बे केश न रखकर उन्हें छोटे भी कटाया जा सकता है, जैसा कि आजकल लोग मझोले बाल रखते भी हैं। महिलाओं को अवकाश भी रहता है और वे उसे श्रृंगार, सौन्दर्य का साधन भी मानती हैं इसलिए पूरे लम्बे केश रखे रहती हैं। मस्तिष्क की सुरक्षा की दृष्टि से यह उचित भी है। प्राचीनकाल में ब्रह्मचारी और साधु महात्मा पंच-केश रखाये भी रहते थे।

चूड़ाकर्म का रहस्य

मुण्डन का एक विशेष वैज्ञानिक प्रयोजन है। अब तक चल रही विचारधारा में कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करना हो तो उसके लिए विचार संस्थान को विशेष रूप से प्रभावित करना पड़ता है। चूँकि केश मस्तिष्क पर पड़ने वाले बाह्य प्रभावों को रोकते हैं इसलिए उन्हें हटाकर यह सुविधा उत्पन्न कर ली जाती है कि शिर के रोम कूपों द्वारा कोई विशिष्ट प्रेरणा मस्तिष्क के अन्तराल विचार संस्थान तक पहुँचाई जा सके। ऐसे मुण्डन किसी विशेष अवसरों पर ही कराये जाते हैं। चूड़ा कर्म संस्कार के अवसर पर इसलिए कि अब तक चले आ रहे जन्म-जन्मान्तरों के पशु संस्कारों को संकीर्ण स्वार्थ में ग्रस्त विचारों को बदलकर मानवीय आदर्शों को अपनाने के लिए मस्तिष्क प्रशिक्षित किया जाय, यज्ञोपवीत वेदारम्भ संस्कार के अवसर पर इसलिए कि जिस ज्ञान को मस्तिष्क में धारण किया जा रहा है, उसका प्रयोजन एवं लक्ष्य समझ लिया जाय। मरणोत्तर संस्कार में उत्तराधिकारी तथा कुटुम्बीजन इसलिए मुण्डन कराते हैं कि प्रियजन के स्वर्गवास से जो आघात लगा है, जो शोक और मोह उत्पन्न हुआ है, उसे हटाया जा सके। कुछ सम्प्रदायों के सन्यासी शिर मुड़ाते हैं ताकि जीवन क्रम में अब तक चली आ रही व्यक्तिवादी विचारधारा को बदलकर विश्वात्मा के साथ अपने तादात्म्य की नई भाव-चेतना को विकसित किया जा सके। बंगाल आदि प्रान्तों में विधवायें भी इसी प्रयोजन के लिए शिर मुंड़ाती हैं कि वे गृहस्थ निर्माण सम्बन्धी अपने सपनों को मिटाकर उसके स्थान पर आत्म निर्माण, विश्व-निर्माण के परिष्कृत दृष्टिकोण को अपना सकें।

तात्पर्य यह है कि जीवन-क्रम के प्रचलित ढर्रे को बदल डालने का वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक माध्यम मुण्डन माना गया है। वैज्ञानिक इसलिए कि संस्कार विधान के अवसर पर होने वाले मन्त्रोच्चार, यज्ञ एवं कर्मकाण्ड की अध्यात्म विद्या के आधार पर बनी हुई पद्धति का प्रयोग करके शिर संस्थान के तन्तुओं को अमुक दिशा में चलने के लिए प्रभावित किया जाता है। इस माध्यम से मस्तिष्क के गहन अन्तराल में भी हलचल मचती है और उससे अभीष्ट प्रयोजन भावनात्मक परिवर्तन सरल हो जाता है।

मनोवैज्ञानिक इसलिए कि किसी विचार का कार्य के साथ सम्बन्ध जोड़ देने से वह अपना एक प्रभाव एवं संस्कार बनाकर चिरस्थाई हो जाता है। चोटी रखने से व्यक्ति यह विश्वास जमा लेता है कि वह हिन्दू है। मुसलमानों में सुन्नत का रिवाज इसलिए भी है कि वह सदा यह समझता रहे कि वह मुस्लिम धर्म में दीक्षित

है। भावरें फिर लेने से यह मान लेता है कि विवाह हो गया। दुपट्टे में गाँठ बाँध लेने से उस बात के भूल जाने की सम्भावना नहीं रहती। गलती का प्रायश्चित करते हुए भविष्य में उसे न करने का स्मरण बनाए रखने के लिए कान पकड़कर उठक-बैठक करने का दण्ड भी मिलता है। विजयी लोग पराजित से उसका गर्व समाप्त कराने और उसे दीनता अनुभव कराने के लिए परास्त व्यक्ति की मूँछें मुड़ा देते थे। बाजी हारने का सार्वजनिक प्रदर्शन करने के लिए लोग मूँछ मुड़ाने की शर्त लगाते हैं। नाक छिदा लेने से लड़की को अपनी नारीत्व का बोध होता रहता है। अन्यथा यदि वेश-विन्यास, बोल-चाल, रीति-रिवाजों का अन्तर जहाँ न हो, वहाँ रहने पर लड़का-लड़की में कोई विशेष अन्तर न रहेगा। नारी से नर में जो भिन्नता दिखाई देती है, वह उसकी संस्कृति बदल जाने के कारण ही होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि कुछ शारीरिक क्रियाकृत्य या वेश-विन्यास में हेर-फेर के साथ-साथ भावनात्मक परिवर्तन का तारतम्य भी छिपा रहता है। मुण्डन जैसे संस्कारों का यह भी प्रयोजन है कि इस प्रदर्शन घोषणा के आधार पर व्यक्ति स्वयं वैसे ही अनुभव करे और दूसरे भी वैसा ही समझें जैसा कि उस कृत्य का मूल प्रयोजन था। मनोवैज्ञानिक दृष्टि में मुण्डन एक सार्वजनिक घोषणा प्रदर्शन है जिसका प्रयोजन अब तक चली आ रही मान्यता कार्य पद्धतियों को बदल देना है।

अन्य योनियों के संस्कार

चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते रहने के कारण मनुष्य कितने ही ऐसे पाशविक संस्कार, विचार एवं मनोभाव अपने भीतर धारण किए रहता है, जो मानव जीवन में अनुपयुक्त अवांछनीय होते हैं। इन्हें हटाने और उस स्थान पर मानवतावादी आदर्शों के प्रतिष्ठापित किये जाने का कार्य इतना महान एवं आवश्यक है कि वह पूरा न हो सका तो यही कहना होगा कि आकृति मात्र मनुष्य की हुई—प्रवृत्ति तो पशु की ही बनी रही। ऐसे नर-पशुओं की इस संसार में कमी नहीं जो चलते-बोलते, खाते-पहनते तो मनुष्यों की तरह ही हैं, पर उनके आदर्श और मनोभाव पशुओं जैसे होते हैं। ऐसे लोग मानव-जीवन को कलंकित ही करते हैं। ईश्वर की अनुपम देन को निरर्थक गँवाने वाले इन लोगों को अभागा ही कहना पड़ता है।

जीव साँप की योनि में रहते हुए बड़ा क्रोधी होता है, अपने बिल के आस-पास किसी को निकलते देख ले तो उस पर क्रुद्ध होकर प्राण हरण करने वाला आक्रमण करने से नहीं चूकता। कितने ही मनुष्य उन क्रूर संस्कारों को धारण किये रहते हैं और छोटा-सा कारण होने पर भी इतने क्रुद्ध-कुपित होते हैं कि उस आवेश में सामने वाले का प्राण हरण कर लेना भी उनके लिए कुछ कठिन नहीं रहता। जिन जीवों को शूकर योनि के अभ्यास बने हुए हैं, वे अभक्ष्य खाने में कोई संकोच नहीं करते। मल-मूत्र, रक्त-माँस, कुछ भी वे रुचिपूर्वक खा सकते हैं, वरन् फल-मेवा, दूध, घी जैसे सात्विक पदार्थों की उपेक्षा करते हुए वे उन अभक्ष्यों में ही अधिक रुचि एवं तृप्ति अनुभव करते हैं। कुत्ते की तरह पेट के लिए दुम हिलाने वाले, लक्कड़बग्घे की तरह निष्ठुर, लोमड़ी की तरह धूर्त, बन्दर की तरह चंचल, जोंक की तरह रक्त पिपासु, कौए की तरह चालाक, मधु-मक्खियों की तरह जमाखोर, बिच्छुओं की तरह दुष्ट, छिपकली की तरह घिनौने, कितने ही मनुष्य होते हैं। किसी का भी खेत चरने में संकोच न हो, ऐसे सांड कम नहीं, जिन्होंने कामुकता के उफान में लज्जा और मर्यादा को तिलांञ्जलि दे दी हों ऐसे श्वान प्रकृति नर-पशुओं की कमी नहीं। दूसरों के घोंसले में अपने अण्डे पालने के लिए रख जाने वाली हरामखोर कोयलें कम नहीं, जो आरामतलबी के लिए अपने शिशु-पोषण जैसे महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्यों को भुलाए हुए दूसरों का मनोरंजन करने के लिए फूल वाली डाली पर गाती-नाचती फिरती है। ऐसे लोभी भौंरे जो फूल के मुरझाते ही बेवफाई के साथ मुँह मोड़ लेते हैं, मनुष्य समाज में कम नहीं है। शुतुरमुर्ग की तरह अदूरदर्शी, भैंसे की तरह आलसी, खटमल की तरह पर-पीठक, मकड़ी और मक्खियों की तरह निरर्थक मनुष्यों की यहाँ कुछ कमी नहीं।

यही प्रकृति मनुष्यों में भी रहे तो उसका मनुष्य शरीर धारण करना निरर्थक ही नहीं मानवता को कलंकित करने वाला ही कहा जायेगा। समझदार व्यक्तियों का सदा यह प्रयत्न

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहता है कि उनके द्वारा पाली-पोसी गई सन्तान ऐसी न हो, संस्कारों की प्रतिष्ठापना प्रधानतया बालकपन में ही होती है, इसलिए हमें अपने माता-पिता की वैसी सहायता न मिलने से मानवोचित विकास करने का अवसर भले ही न मिला हो पर अपने बालकों के सम्बन्ध में तो वैसी भूल न की जाय, उन्हें तो सुसंस्कारी बनाया ही जाय। चूड़ाकर्म मुण्डन-संस्कार के माध्यम से किसी बालक के सम्बन्ध में उसके सम्बन्धी, परिजन, शुभचिन्तक यही योजना बनावें कि उसे पाशविक संस्कारों से विमुक्त एवं मानवीय आदर्शवादिता से ओत-प्रोत किस प्रकार बनाया जाय ?

चूड़ाकर्म आरम्भ

अन्य संस्कारों की भाँति माता-पिता बालक के साथ मण्डप में उपस्थित होते हैं। पवित्रीकरण, आचमन, शिखा बन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन, कलश पूजन, देव पूजन, नमस्कार, षोडशोपचार, चन्दन धारण, स्वस्तिवाचन, रक्षाविधान के उपरान्त इस संस्कार का विशेष कार्यक्रम आरम्भ हो जाता है।

बालक के बालों को गौ के दूध, दही, घी में जल मिलाकर भिगौते हैं। भिगोते समय **"ॐ सविता प्रसूता ....."** मन्त्र बोला जाता है। इस क्रिया को 'मस्तक लेपन' कहते हैं।

मस्तक लेपन

गौ-माता कल्याणकारक, परोपकारी, सरल, सौम्य प्रकृति की होती है। उसके शरीर से निकले हुए गोरस भी इसी प्रकृति के होते हैं। इन पदार्थों में वे सब गुण रहते हैं, जो गौ-माता में विद्यमान हैं। इनसे मस्तक का लेपन, बालों का भिगोना, इस बात का प्रतीक है कि हमारी विचारणा, मानसिक प्रवृत्ति गौ-माता जैसी-गोरस जैसी स्निग्ध सौम्य होनी चाहिए। घृत को स्नेह कहते हैं। स्नेह का दूसरा नाम प्रेम भी है। दूध, दही, घी तीनों ही स्नेहा सिक्त हैं। इनसे शिरस्थ रोम कूपों का भिगोया जाना, इस बात का निर्देश करता है कि हम जो कुछ सोचें-विचारें उसके पीछे प्रेम भावना का समुचित पुट होना चाहिए।

कितने ही व्यक्तियों की बौद्धिक प्रतिभा बड़ी विलक्षण होती है, परीक्षा में वे अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण होते हैं, चेहरा-मोहरा रौबीला होता है, बातून पूरे होते हैं, चतुरता की कमी नहीं होती, सब कुछ ठीक रहने पर भी एक कमी रह जाती है कि भावना की दृष्टि से बड़े स्वार्थी और संकीर्ण होते हैं। अपना मतलब गाँठने के लिए किसी से भी किसी भी प्रकार का व्यवहार कर सकते हैं। ऐसे लोगों की मानसिक शक्ति उनके निज के लिए कोई तात्कालिक लाभ भले ही उपस्थित कर दे, पर अन्ततः तो उन्हें भी पतित, घृणित संकटग्रस्त एवं दुःखी बनाती है। दूसरों के लिए तो वे विपत्ति के कारण बनते ही हैं। ऐसे लोगों का चतुर और तेज दिमाग होना एक प्रकार से अनिष्टकर ही सिद्ध हुआ। इससे तो वे मूर्ख होते तो अच्छे रहते। जेलखाने में बन्द और बाहर जितने भी अपराधी और दुष्ट-दुरात्मा हैं, वे सभी मस्तिष्क की दृष्टि से काफी चतुर होते हैं। यदि ऐसा न होता तो चोरी, ठगी, जालसाजी, उठाईगीरी, जेबकटी आदि कर सकना उनके लिए सम्भव ही न होता। कोई साधारण बुद्धि का व्यक्ति ऐसा दुस्साहस कर ही नहीं सकता। कोई कर भी बैठे तो सहज ही पकड़ा जाता है। धूर्त लोग कुकर्म भी करते-रहते हैं और महात्मा भी बने रहते हैं, यह बुद्धि कौशल का चमत्कार ही तो है।

ऐसा बुद्धि चमत्कार निरर्थक है। उससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होती है। इसकी अपेक्षा वह मन्दबुद्धि अच्छा जो सरल, सौम्य और सीधे मार्ग पर चलता हुआ, किसी प्रकार अपना सादा जीवन व्यतीत कर लेता है। बालक को बुद्धिमान, क्रिया-कुशल, चतुर, प्रतिभावान बनाया जाता है, उसके मानसिक विकास पर समुचित ध्यान दिया जाता है। इसके लिए प्रत्येक अभिभावक को आवश्यक ध्यान रखना और आवश्यक प्रयत्न करना पड़ता है। किया भी जाना चाहिए, किन्तु उससे भी अधिक आवश्यक यह है कि उस मानसिक विकास को स्नेह, सद्भाव के खूँटे से मजबूत बाँध दिया जाय। वह इस मर्यादा को भंग न करने पावे। बुद्धिमता का उपयोग इस प्रकार किया जाय कि उससे दूसरों का हित होता हो, उनकी प्रगति होती हो, प्रसन्नता बढ़ती हो तथा शान्ति मिलती हो। जो कुछ कहा जाय, मधुर हो, प्रेम, शुभकामना और सद्भावना से ओत-प्रोत हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिससे प्रेरणा एवं उल्लास मिलता हो। दिशा पतन से बदलकर उत्थान की ओर मुड़ती हो। अपना भी चित्त प्रसन्न हो और दूसरों को भी प्रकाश मिले, ऐसा ही भाषण सराहनीय एवं सार्थक है। ऐसा भाषण केवल जिह्वा नहीं कर सकती, इसके मूल में सबके प्रति स्नेह सिक्त सद्भावना का पुट रहना चाहिए। मानसिक स्तर भावनापूर्ण होगा, तो कथन का स्वरूप भी उसी प्रकार का बनेगा। ऐसी वाणी अपना भी कल्याण करती है तथा औरों का भी।

अच्छी कृतियाँ भी मानसिक उत्कृष्टता के ऊपर, भावनात्मक श्रेष्ठता के ऊपर निर्भर हैं। मन में उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठा होगी, मानवता को गौरवान्वित करने की आकांक्षा उठती रहेगी तो कार्यशैली भी ऐसी बनेगी, जिसे सर्वत्र सराहा जाय और अपनी अन्तरात्मा को सन्तोष मिले। कर्म से ही मनुष्य ऊँचा उठता और नीचे गिरता है। क्या भौतिक और क्या आत्मिक दोनों ही प्रकार की प्रगति हमारे सत्कर्मों पर सुव्यवस्थित रीति-नीति अपनाने पर निर्भर रहती है। यदि उसमें चूक होती रहे तो अस्त-व्यस्त, दीन-दरिद्र, असफल एवं तिरस्कृत जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। दिशा चाहे कोई भी क्यों न हो सफलता उन्हें मिलती है, जो पराक्रमी, पुरुषार्थी, परिश्रमी, मनस्वी एवं निष्ठावान होते हैं। इस प्रकार का स्वभाव अनायास ही नहीं बन जाता, उसके लिए मानसिक सत् चिन्तन एवं सच्चा मनन आवश्यक है। मस्तिष्क की प्रवृत्ति एवं प्रगति प्रेम सम्पुटित हो तो समझना चाहिए कि भविष्य सब प्रकार शुभ है, पर यदि उसमें दुष्टता, असुरता भर गई है तो भविष्य अन्धकारमय बनने में कोई सन्देह ही नहीं रहता।

मस्तक लेपन की क्रिया चूड़ाकर्म में इसलिए कराई जाती है कि इस आधार पर यह स्मरण रखा जा सके कि इस बालक का मानसिक विकास रूखा, संकीर्ण तथा अनैतिक अवांछनीय दिशा में न होने पावे। उसकी रुझान गौ जैसी-गोरस जैसी रहे। गौ अपने बछड़े को जैसे प्यार करती है वैसे ही हम समस्त परिवार और समाज को किया करें। अपने लिए मरते-पचते न रहें, वरन् जैसे गौ अपना रस, चर्म, अस्थि, मांस, गोबर तथा सन्तान को दूसरे के लिए उत्सर्ग करती रहती है वैसी ही रीति-नीति हमारी भी हो। रूखे-सूखे सिर को इस गोरस से आर्द्र इसलिए बनाया जाता है कि उसमें सहृदयता-भावुकता, करुणा-मैत्री, प्रेम-उदारता की आर्द्रता आजीवन बनी रहे। बालक की ऐसी प्रकृति बनाने के लिए अभिभावकों को ऐसा ही वातावरण घर में बनाना पड़ता है। बालक निर्देशों या भाषणों द्वारा समझाए सुधारे नहीं जा सकते। वे अनुकरण प्रिय होते हैं। जैसा देखते हैं वैसा करने लगते हैं, इसलिए घर में प्रेम और सद्भावना का वातावरण बनाया जाना चाहिए, ताकि बालक भी वैसी ही सौम्यता, सहृदयता को अपनाने के लिए अभ्यस्त होते रहें। गोरस से मस्तिष्क को आर्द्र बनाने का प्रयोजन इसी तरह पूरा हो सकता है।

तीन शिखाएँ

बालों के गीले हो जाने पर सम्पूर्ण बालों को दायें-बायें तथा बीच में तीन भागों में विभक्त करते हैं। उन्हें कुशाओं तथा कलावे से जूड़े की तरह बाँध देते हैं। इस प्रकार शिर पर तीन शिखाएँ बनी हुई दृष्टिगोचर होती हैं। कुशाओं से शिखा बाँधते समय तीन मन्त्र बोले जाते हैं। प्रथम दाहिनी ओर का जूड़ा बाँधते समय **"ॐ ब्रह्म जज्ञानं . . . . . "** बीच में जूड़ा बाँधते समय **"ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे . . . . . "** मंत्र तथा बाँया जूड़ा बाँधते समय **"ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव . . . . . "** मंत्र उच्चारण किया जाता है।

यह तीनों मन्त्र क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र के हैं। तीनों देवताओं का मस्तिष्क में आह्वान-स्थापन करने का प्रयोजन यह है कि मस्तिष्क में देवत्व के भाव भरे रहें, असुरता के लिए उसके किसी कोने में गुँजाइश न रहे। ब्रह्मा उत्पादन के, विष्णु पोषण के और रुद्र संहार के देवता हैं। हमें निर्माणात्मक, रचनात्मक कार्यों में लगना चाहिए। जो बनाया जा चुका है उसे बढ़ाया जाना चाहिए। जो अनुपयुक्त हो गया हो उसे हटा-मिटा देना चाहिए। यह तीनों ही बातें हमारे स्वभाव की अंग बनें तो समझना चाहिए कि उपर्युक्त तीनों देवताओं का निवास मनोभूमि में रहने लगा। सत्, रज, तम यह तीन गुण भी क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, महेश के प्रतीक हैं। हमारा जीवन इस प्रकार विकसित होना चाहिए कि इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीनों तत्वों के समुचित सदुपयोग की उचित सम्भावना बढ़ती रहे। हम अन्तःकरण से सतगुणी बनें, अपनी भावना, आकांक्षा तथा प्रकृति सौम्य-सात्विक रखें। सन्तों जैसी पवित्र, कोमल और उदार मनोवृत्ति का परिचय देते रहें। भौतिक जीवन में समृद्ध, सम्पन्न एवं सुविकसित बनें। रजोगुण का अर्थ समृद्धि है। दीन-दरिद्र व्यक्ति आत्मिक दृष्टि से भी गये-गुजरे रहते हैं। कहते हैं कि "खाली बोरा सीधा खड़ा नहीं रह सकता" अर्थात् अभावग्रस्त मनुष्य देर तक ईमानदारी पर कायम नहीं रह सकता। सुस्थिर जीवन एवं स्वस्थ विकास के लिए मनुष्य की आमदनी इतनी होनी चाहिए, जिससे कोई आवश्यक काम रुका न रहे। तमोगुण का अर्थ है—तेजस्विता, संघर्ष, शक्ति एवं अनुपयुक्त तथ्यों को परास्त कर सकने की क्षमता। इस क्षमता को उत्पन्न करने के लिए शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक एवं संगठनात्मक बलों की आवश्यकता पड़ती है। इसी से शिव की पत्नी शक्ति कहलाती है। संघर्ष भयानक होता है इसलिए शिव को रुद्र-रौद्र रूपधारी-भयानक भी कहते हैं। विष्णु की पत्नी लक्ष्मी है। लक्ष्मीपति विष्णु रजोगुण के प्रतीक हैं। रजोगुणी अर्थात् लक्ष्मीवान। ब्रह्मा वेद के ज्ञान के सृष्टा माने जाते हैं। उनकी पत्नी गायत्री अर्थात् सद्बुद्धि-सद्भावना ऋतम्भरा प्रज्ञा है। मस्तिष्क में तीनों देवताओं की स्थापना का अर्थ जीवन-विकास की तीनों आवश्यकताओं-सद्भावना, समृद्धि और शक्ति को प्रचुर मात्रा में निरन्तर बढ़ाते रहना ही है। बालक जब बड़ा हो जाय तो उसे इन महती आवश्यकताओं की पूर्ति में लगाना चाहिए। वह इस योग्य बन सके इसके लिए अभिभावकों को आवश्यक साधन सुविधा जुटानी चाहिए। जो लोग बालकपन छोड़कर बड़े हो चुके हैं, पर इन अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अभी समुचित ध्यान नहीं दिया है। उन्हें इसके लिए अब प्रयत्न आरम्भ कर देना चाहिए। चूड़ा-कर्म के उद्देश्यों को सभी उपस्थित व्यक्ति हृदयंगम करें, यही उचित है।

बड़े होने पर जिस तरह तीन धागे वाला यज्ञोपवीत पहनाते हैं और तीन लड़ों के माध्यम से महत्त्वपूर्ण शिक्षाँ बटुक को देते हैं, उसी प्रकार इन तीन शिखाओं में भी तीन शिक्षाओं का समावेश है। माता-पिता-गुरु इन तीनों के अनुशासन में रहना, तीनों के प्रति कृतज्ञता एवं श्रद्धा की भावनाँ रखना, उन्हें प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखना तीन शिखाओं का सन्देश है।

दुखों के तीन कारण हैं, अज्ञान, अशक्ति और अभाव। इन तीनों को अपने जीवन में से तथा समाज में से हटाने के लिए प्रयत्न करते रहने का व्रत लेना, इन तीन शिखाओं का संदेश है। विद्या, समृद्धि और शक्ति इन तीनों को निरन्तर बढ़ाते रहने से ही उपर्युक्त तीन कष्टों का निवृत्ति होती है। इन तीन महाशक्तियों सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के रूप में पूजा जाता है। पूजा का अर्थ है—उन्हें प्राप्त करना।

शैशव, यौवन और वृद्धावस्था इन तीन अवस्थाओं का समुचित सदुपयोग करना तीन शिक्षाएँ बताती हैं। बालकपन में शारीरिक एवं मानसिक बल संग्रह करना, यौवन में समृद्धि बढ़ाना तथा वृद्धावस्था सद्ज्ञान के लिए समर्पित करना तीन अवस्थाओं का सदुपयोग है।

भूत, भविष्य, वर्तमान तीन कालों के सम्बन्ध में समुचित सतर्कता रखना तीन शिखाओं का सन्देश है। जो कुछ हुआ है, हो रहा है तथा होने वाला है, उन पर समान रूप से ध्यान रखा जाय। अतीत के इतिहास से शिक्षा ग्रहण करें। वर्तमान में कठोर कर्त्तव्यों का पालन करें, अपनी समस्त शक्तियों को सदुपयोग के लिए नियोजित रखें। भविष्य को उज्जवल बनाने की चेष्टा करें और आशा रखें। त्रिकालदर्शी, दूरदर्शी, विवेकशील होना ही सच्ची बुद्धिमत्ता है।

मस्तिष्क के विकास के लिए विद्याध्ययन में अभिरुचि बढ़ाना, स्वाध्यायशील होना, चिन्तन और मनन की आदत डालना, आवश्यक है। जिज्ञासा जागृत की जाय, प्रश्न पूछने के लिए बालक को प्रोत्साहित किया जाय और पूछे हुए प्रश्नों के समुचित उत्तर देने के लिए अपनी तैयारी रखी जाय। छोटे बालकों की ज्ञानवृद्धि का सबसे श्रेष्ठ उपाय उन्हें कथा-कहानियों द्वारा उपयोगी विषयों का ज्ञान एवं समय-समय पर सामने प्रस्तुत होने वाली समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना ही है। इसके लिए अपने को कथा-कहानियाँ सीख लेनी चाहिए, जो बच्चों को सुनाकर उनकी विचारशीलता बढ़ाने में सहायक हो सकें। पाठशाला जाने योग्य हो जाने पर तो उसे पढ़ने भेजना ही चाहिए, पर जब तक उस योग्य नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो जाता, तब तक भी उसे बहुत कुछ सिखा देना चाहिए। मुण्डन संस्कार इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करता है कि बालकों के मानसिक विकास का हर सम्भव उपाय किया जाय। तीन शिक्षाएँ—भौतिक, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक तीनों ही ज्ञानों को अधिकाधिक मात्रा में बालक को उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी अभिभावकों पर सौंपती हैं। जिनने शिखाएँ रखाने में योगदान दिया है, उनका कर्त्तव्य है कि इसके लिए सदा शक्ति भर प्रयास करते रहें।

छुरा (उस्तरा) पूजन

जिस छुरे से नाई शिर मुण्डन करेगा, वह इन्हीं प्रयोजनों में काम आने वाला होना चाहिए। सब के बाल जिससे बनते रहते हैं, उस पर सब के संस्कार होते हैं। इसलिए देव-कार्य में उसका उपयोग ठीक नहीं माना जाता। अच्छा हो एक बढ़िया उस्तरा तेज धार किया हुआ, शाखा या पुरोहित अपने पास तैयार रखें और उसे ही मुण्डन संस्कारों के काम लाया करें। प्राचीनकाल में प्रथम केश उतारने का कार्य पुरोहित ही करते थे। अब उन्हें यह कला नहीं आती तो क्षौर कर्म नाई से करा सकते हैं, पर छुरा ऐसा ही लिया जाय जो सर्वसाधारण के उपयोग में न आता हो। लोहा विद्युत शक्ति को अधिक ग्रहण करता है, अस्वस्थ शरीर और मन वालों के शिर पर प्रयोग होते रहने से छुरा भी उस प्रकृति का बन जाता है और फिर उसका प्रभाव बालक पर अनुपयुक्त ही पड़ता है। हर बालक के लिए नया छुरा खरीदना सम्भव न हो तो कम से कम ऐसा प्रबन्ध तो करना ही चाहिए कि छुरा केवल इसी काम के लिए नियत रहे।

उपयोग से पूर्व छुरा गरम पानी से तथा मिट्टी से अच्छी तरह धो-माँज लेना चाहिए तथा सिल्ली पर घिस लेना चाहिए ताकि उसमें जो पूर्व संस्कार हों वे हट जायें। इसके बाद उसे किसी बड़े पत्ते या तश्तरी में रखकर पूजन के लिए माता-पिता के सामने रखा जाय। दोनों रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें और उसके मूल में कलावा बाँध दें। इस पूजन के समय **"ॐ शिवो नामासिः ·····"** मन्त्र बोला जाता है। इस पूजन का उद्देश्य यह है कि यह छुरा साधारण लौह उपकरण न रहकर अभिमन्त्रित शक्ति सम्पन्न होकर बालक के मस्तिष्क में सुसंस्कारों का प्रवेश कर सके।

गर्भ से आने वाले बाल सामान्य संस्कारों वाले होते हैं। इस आच्छादन को उतारकर उसके स्थान पर ऐसे बाल उगने चाहिए, जो उत्कृष्ट भावनाएँ साथ लेकर ऊपर आवें। पुराने बालों को पिछले जीवन में जमे हुए अनुपयुक्त संस्कारों का प्रतीक माना गया है। इन बालों को काटने का प्रयोजन पाशविक विचारणाओं एवं आकांक्षाओं को हटाने-मिटाने का प्रयत्न करना है। इस उद्देश्य के लिए जिस छुरे का प्रयोग किया जा रहा है, वही पर्याप्त नहीं, क्योंकि लौह उपकरणों से कुसंस्कारों को हटाया-मिटाया जाना सम्भव नहीं। विचार तो विचारों से कटते हैं। लोहे को लोहा काटता है। काँटे से काँटा निकलता है। विष से विष का शमन होता है, लाठी का जवाब लाठी से दिया जाता है, इसी प्रकार कुविचारों का शमन उसके विरोधी तीव्र विचारों से ही सम्भव होता है। यह छुरा ऐसे प्रखर विचारों का प्रतीक-प्रतिनिधि है, जो पाशविक विचारधारा को परास्त करके अपनी गहरी छाप छोड़ सके। छुरे का पूजन करने का अर्थ है ऐसे उत्कृष्ट विचारों का श्रद्धापूर्वक आह्वान अभिनन्दन, जो मनोभूमि में जमे हुए असुर संस्कारों को निरर्थक झाड़-झंखाड़ों की तरह उखाड़ फेंकने में सफल, समर्थ हो सकें। कटीली झाड़ियाँ कुदाल, फावड़े से ही खोदी काटी जाती हैं, उसी प्रकार अवांछनीय विचारों तथा आदतों को उखाड़ने के लिए जीवन-निर्माण की आध्यात्मिक विचारधारा को उग्र स्तर पर विकसित करना पड़ता है। सेना का मुकाबला सेना करती है, तोपों की लड़ाई में तोप, टैंकों की लड़ाई में टैंक और हमलावर जहाजों को रोकने के लिए वैसे ही मजबूत जहाज सामने अड़ाने पड़ते हैं। कुविचारों और कुसंस्कारों को उखाड़ फेंकने के लिए प्रखर एवं उग्र आध्यात्मिक मान्यताओं की आवश्यकता पड़ती है। इन्हें ही छुरा कहना चाहिए। छुरे से बाल बनाने का अलंकारिक कर्मकाण्ड वस्तुतः यही तथ्य प्रस्तुत करता है कि हमें पाशविक-भोगवादी, स्वार्थपूर्ण, आसुरी मनोवृत्तियों से छुटकारा पाना ही होगा और उसके लिए अपने विचार क्षेत्र में ऐसी प्रतिपक्षी-सतोगुणी-आदर्शवादी भावनाएँ जमानी होंगी, जो हमें पतन की स्थिति से ऊपर उठाकर उत्थान के आसन पर प्रतिष्ठित कर सकें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आलस्य, प्रमाद, चटोरपन, कामुकता, फिजूलखर्ची, कटुभाषण, अशिष्टता, आवेश, मलीनता, नशेबाजी, ऐय्याशी, निराशा, चिन्ता, आत्महीनता, कायरता, कृतघ्नता, छिद्रान्वेषण, असहिष्णुता, बेईमानी, छल, लालच, निष्ठुरता आदि कितने ही दोष-दुर्गुण मनुष्य में हो सकते हैं। वे देर तक अभ्यास में आते रहने पर स्वभाव का एक अंग बन जाते हैं। इन्हें हटाने मिटाने के लिए यह आवश्यक है कि अपने में जो दोष-दुर्गुण हों उनसे होने वाली हानियों की एक ब्योरेवार सूची बनाई जाय। ऐसे उदाहरण प्रमाण तथा तथ्य एकत्रित किये जायें, जिनमें इन बुराइयों के द्वारा जिनने जो हानियाँ उठाई हों, उनकी जानकारी मिले। इसी प्रकार यह भी ब्यौरा तैयार करना चाहिए कि यदि अपने दोषों को छोड़ दिया जाय तो उनमें नष्ट होने वाली शक्ति की कितनी बचत हो सकती है और उस बचत का उपयुक्त दिशा में प्रयोग करने पर कितना लाभ हो सकता है।

उदाहरण के लिए एक तम्बाकू पीने वाला व्यक्ति जितना पैसा, जितना समय, जितना स्वास्थ्य नित्य नष्ट करता है, उसका लेखा-जोखा तैयार किया जाय और फिर यह देखा जाय कि यदि इस कुटेव को छोड़ दिया जाय और यह धन समय और स्वास्थ्य की बचत जीवन निर्माण के कार्य में लगाई जाय तो उससे प्रगति का पथ कितना अधिक प्रशस्त हो सकता है। इसका विस्तृत विवरण तैयार कर लिया जाय और बार-बार उसे पढ़ा और विचारा जाय तो कुछ समय में तम्बाकू पीने की निरर्थकता एवं हानि समझ में आ जायेगी और उसे छोड़ने की इच्छा उठने लगेगी। तीव्र इच्छा उठी नहीं कि कठिन से कठिन कार्य सरल हुआ नहीं। अपने में जो भी दोष-दुर्गुण हों उनकी हानियों और उन्हें छोड़ देने पर मिल सकने वाले लाभों का यदि विवरण तैयार करने और उस पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन-मनन करने का क्रम चलने लगे तो समझना चाहिए कि मुण्डन संस्कार में पूजन किये गये छुरे की तरह विचार परिष्कार का माध्यम उपकरण बनकर तैयार हो गया।

हर अच्छी बुरी बात के पक्ष-विपक्ष में कुछ दलीलें दी जाती हैं। जब तक हमारा मन दोषों की उपयुक्तता के सम्बन्ध में दलीलें प्रस्तुत करता रहता है, तब तक उन्हें अपनाये रहने की इच्छा रहती है, पर जब मन ईमानदार वकील की तरह उन दुर्गुणों के प्रतिपक्षी सद्गुणों के लाभों पर पूरा जोर देने लगे तो सहज ही वह छटपटाहट पैदा हो जायगी जो उस दोष को छोड़ने के लिए विवश कर सके। आलसी जब तक इस दुष्प्रवृत्ति के कारण हो रहे विनाश और परिश्रम एवं उत्साह के सहारे हो सकने वाले विकास का पूरा चिन्तन न करेगा, तब तक यह दोष स्वभाव का अंग ही बना बैठा रहेगा। छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति हर आदमी को दोषी ठहराती है, पर जब गुण ग्राहक दृष्टिकोण विकसित कर लिया जाय तो हर व्यक्ति में बहुत कुछ अच्छाई नजर आने लगती है। द्वेष, बुद्धि से देखने पर हर कोई अपना शत्रु तथा हानि पहुँचाने वाला सूझ पड़ता है, पर जब प्रेम और आत्मीयता की दृष्टि से देखते हैं तो वह सहयोगी, सहायक एवं उपयोगी दीख पड़ने लगता है। संसार का रंग-रूप हम अपनी आँख पर चढ़े हुए रंगीन शीशों के अनुरूप देखते हैं। यह चश्मा बदल दिया जाय तो सब कुछ बदला हुआ मालूम पड़ेगा। क्षोभ और असंतोष उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों में भी चित्त का समाधान कर सकने वाले बहुत कुछ तथ्य उपलब्ध हो जायेंगे। अनुपयुक्त विचारों से मोर्चा लेकर उन्हें परास्त कर सकने वाले रचनात्मक प्रौढ़ विचारों की सेना अपने पास संग्रह हो जाय तो समझना चाहिए कि जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने का ब्रह्मास्त्र मिल गया। इसे ही मुंडन का छुरा भी प्रकारान्तर से कहा जा सकता है। इसका पूजन-वन्दन किया ही जाना चाहिए।

मुण्डन कृत्य

छुरा पूजन के बाद बालक और माता को यज्ञशाला से बाहर भेज देते हैं। यज्ञ मण्डप में क्षौर कर्म नहीं होता इसलिए उसे बाहर भेजना आवश्यक होता है। समीप ही किसी स्थान पर बैठकर मुण्डन कराया जाय। मुण्डन करते समय अभिभावक तथा अन्य उपस्थित व्यक्ति मन ही मन गायत्री मन्त्र का जप करते रहें और भावना करें कि उनके द्वारा किया गया यह जप बालक के मस्तिष्क में सद्बुद्धि का प्रकाश बनकर प्रवेश कर रहा है। बालों को आटे या गोबर के गोले में बन्द करके जमीन में गाढ़ देते हैं। अन्न के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस दुष्काल में आटे में बाल रखने की प्रथा बन्द कर देनी चाहिए और गोबर में ही उन्हें रख किसी खेत में गाढ़ना चाहिए। मुण्डन होने के बाद बच्चे को स्नान कराया जाय और नवीन वस्त्रों का पूजन कराके उन्हें पहनाया जाय तथा घुटे हुए शिर पर स्वास्तिक '卐' अथवा 'ॐ' चन्दन या रोली से लिख दिया जाना चाहिए।

बालों का खाद

बालों को गोबर में रखकर जमीन में इसलिए गाढ़ा जाता है कि उनकी भी गोबर की तरह खाद बन जाय। पशुओं के शरीर का हर अवयव मल-मूत्र-दूध आदि दूसरों के काम आते हैं। वृक्ष वनस्पतियाँ भी अपने पत्र, पुष्प, फल एवं लकड़ी सब कुछ परमार्थ के लिए समर्पित करते हैं। मनुष्य के लिए भी यह उचित है कि अपनी उपलब्धियों का अधिकाधिक उपयोग परमार्थ के लिए करे। बाल भी जहाँ-तहाँ बिखरकर गन्दगी न बढ़ावें वरन् वे गोबर के साथ मिलकर किसी खेत की खाद बनें और धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ायें यही उनकी सार्थकता है।

कितने ही व्यक्ति घायलों के लिए अपना रक्तदान करते हैं। जीवित या मृत अवस्था में अपने नेत्र अथवा दूसरे अंग दान कर देते हैं। विवेकशील लोग देहातों में टूटटी जाते हुए खुरपी लेकर जाते हैं। खेत में गड्डा खोदकर मल त्यागते हैं और फिर मिट्टी से उसे ढंक देते हैं ताकि वह मल गन्दगी न फैलाकर जल्दी ही खाद बन जाय। कई व्यक्ति मरने के बाद अपना शरीर जलाने, गाढ़ने की अपेक्षा कुत्ते, कौओं के लिए—सियार, गिद्धों के लिए आहार के रूप में खुला छोड़ देने की वसीयत करते हैं। इस प्रकार के कार्य उन व्यक्तियों की इस महान भावना के सूचक हैं कि उनके शरीर का कोई भाग निरर्थक न जाय, उससे दूसरे लोग लाभ उठायें। यही मानवोचित भावना है। बालों को खाद बनाने के लिए देते हुए बालक को यही पाठ पढ़ाया जाता है तथा उपस्थित लोगों को यही अनुभव कराया जाता है कि उनके शरीर, मन और साधनों का सच्चा उपयोग परमार्थ प्रयोजनों में लगाने का ही है। जिस प्रकार आज बालों को खाद बनाने के लिए लोकहित में समर्पित किया जा रहा है, उसी प्रकार हर अवयव, हर विचार, हर साधन लोक मंगल के लिए जितना अधिक लग सके उतना ही उसको सार्थक हुआ माना जाय।

गोबर की सार्थकता, खाद के लिए जमीन में गाड़ने, डालने से ही सम्भव है। उसे उपले बनाकर जलाया न जाय। जो गोबर उपले आदि बनकर दस-पाँच रुपये का लाभ देता है, वही यदि जमीन में गाढ़ा जाय तो सैकड़ों रुपयों की उपज बढ़ा सकता है। गोबर को जलाने में नष्ट करना बहुमूल्य सम्पत्ति में आग लगाने के बराबर है। इस तथ्य को सब लोग समझें और गोबर को जमीन में ही गाढ़ने का ध्यान रखें, बालों के साथ गोबर इस दृष्टि से भी जमीन में गाढ़ा जाता है।

वस्त्र धारण

मुण्डन होने के बाद बालक को स्नान कराया जाता है। उसे नये वस्त्र पहनाये जाते हैं। इन वस्त्रों को अभिमन्त्रित किया जाता है। पहनाते समय **"ॐ तस्माद् यज्ञात्"** मन्त्र को बोलते हैं।

नवीन वस्त्र धारण करने का तात्पर्य है—नवीन कलेवर धारण करना। पुराना चोला उतारकर नया चोला धारण करना। जिस प्रकार सर्प पुरानी केंचुली त्यागकर नई धारण करता है, उसी प्रकार मुण्डन के अवसर पर शिर के बाल ही नहीं मुंड़ाते वरन् पुरानी केंचुली भी बदलते हैं, पुराने कपड़ों को उतारकर नये पहनते हैं। इन वस्त्रों में एक वस्त्र पीला भी होना चाहिए।

नवीन कलेवर इस बात का प्रतीक है कि शिर के बाल उतारकर केवल पाशविक विचारों को ही नहीं हटाया गया है वरन् शरीर पर लिपटे हुए पुराने सड़े-गले जीर्ण-शीर्ण स्वभाव एवं क्रम प्रवाह को बदल दिया गया है। मस्तिष्क में अवस्थित विचार तो बदल जायें पर शरीर उसी अवांछनीय ढर्रे पर लुढ़कता रहे, काम वैसे ही होते रहें, तो विचार परिवर्तन का क्या मूल्य रहा ? विचार परिवर्तन की सार्थकता तभी है जब साथ ही कार्य पद्धति भी बदल जाय। जो विचार व्यावहारिक जीवन में उतरते हैं, कार्य रूप में परिणत होते हैं, उन्हीं की सराहना हो सकती है अन्यथा दिमाग में तो बड़े-बड़े उछाल-उफान आते रहते हैं, पानी के बबूले की तरह ऐसे ही ठण्डे पड़ जायें तो इसे एक निरर्थक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कल्पना-जल्पना मात्र समझा जायेगा। मुण्डन के समय बालक के विचार परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव की गई थी और अभिभावकों ने उसके लिए आवश्यक वातावरण बनाने एवं साधन उत्पन्न करने का निश्चय किया था। अब नवीन वस्त्र धारण कराते समय यह निश्चय भी कराना है कि शरीर का आवरण भी इसी से ताल-मेल बिठाकर चले। जो सोचा जाय वह किया भी जाय। मानवता को सार्थक करने वाले उत्कृष्ट आदर्शवादी विचार मस्तिष्क में घूमें और साथ ही शरीर भी उसी धुरी पर अपने कार्यक्रमों का निर्धारण करे, जो भी काम शरीर से बन पड़े वह ऐसा हो जिससे अपनी अन्तरात्मा सन्तुष्ट हो, दूसरे अनुकरण की प्रेरणा प्राप्त करके अपने को धन्य हुआ अनुभव करें।

पीला रंग, त्याग, शौर्य, साहस और गतिशीलता का सूचक है। सूर्य प्रातःकाल पीत वर्ण का निकलता है—उससे पूर्व आने वाली ऊषा भी पीत होती है। रात्रि में उदय होने वाली शान्ति और प्रफुल्लता का देवदूत चन्द्रमा भी पीत वर्ण का होता है। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, ऊषा में जो गुण हैं, उन्हें प्रतीक रूप से अपने जीवन में धारण करने की अभिरुचि प्रदर्शित करना पीत रंग वस्त्र धारण करने का उद्देश्य है। सूर्य की तरह तेजस्वी, गतिशील, चन्द्रमा की तरह शान्त, शीतल, अग्नि की तरह प्रखर, ऊषा की तरह स्फूर्तिवान बनने की शिक्षा पीत रंग देता है। इसलिए सम्भव हो तो सभी वस्त्र अन्यथा कम से कम एक वस्त्र मुण्डन के बाद बालक को पीत रंग पहनाते हैं।

स्वस्तिक लिखना

मुण्डन किये हुए मस्तक पर स्वस्तिक (卐) या "ॐ" शब्द चन्दन या रोली से लिखते हैं। यों यह लेखन कार्य करने वाले आचार्य करा सकते हैं पर अच्छा हो ऐसे कार्य किन्हीं अन्य सम्भ्रान्त सज्जन से कराये जायें। उससे उन्हें सम्मान मिलता है, उनकी रुचि और सद्भावना उस कार्य में बढ़ती है। अतएव ऐसे छुटपुट कार्य सदा उपस्थित लोगों में से किसी गणमान्य व्यक्ति से कराने चाहिए। हर संस्कार में कई-कई ऐसे कार्यक्रम होते हैं, अच्छा हो उनमें से प्रत्येक के लिए अलग-अलग सम्भ्रान्त व्यक्तियों को श्रेय दिया जाय, उनके हाथों वे कार्य कराये जायें। मुण्डन-संस्कार में वस्त्र धारण, स्वस्तिक लेखन, मस्तक लेपन, तीन शिखा बन्धन आदि प्रयोजनों के लिए अलग-अलग व्यक्ति रखे जायें तो हर्ज नहीं-वैसे इन कार्यों को माता-पिता, अभिभावक या आचार्य भी कर सकते हैं। स्वस्तिक-लेखन के समय **"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः ....."** मन्त्र बोला जाय।

'ॐ' ईश्वर का प्रकृति प्रदत्त नाम है। नाद योग के अभ्यासी एक अनाहत नाद सुनते हैं, जिसमें काँसे के घड़ियाल में हलकी चोट लगने पर उत्पन्न होने वाली "ओं ओं ओं ओं जैसे ध्वनि सुनाई देती है। यह प्रकृति पुरुष का समागम कहलाता है। यह अनाहत 'ॐ' शब्द ही ईश्वर का स्वघोषित नाम है, इसी शब्द शक्ति से विश्व की सारी गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं। अस्तु इस ईश्वरीय नाम को मस्तक पर लिखकर यह प्रयत्न किया जाता है कि बालक ईश्वर भक्त-आस्तिक बने। स्वस्तिक (卐) ॐ की ही प्राचीनतम लिपि है। जब अक्षर-विज्ञान परिष्कृत नहीं हुआ था तब 'ॐ' को स्वस्तिक के रूप में लिखा जाता था। दोनों में अन्तर कुछ नहीं केवल लिखने के ढंग का अन्तर मात्र है। प्राचीनता की प्रतिष्ठा और उसका स्मरण रखने की दृष्टि से आमतौर से स्वस्तिक को प्रधानता दी जाती है। जहाँ जैसा लिखना उचित प्रतीत होता हो वहाँ स्वस्तिक (卐) या ॐ बच्चे के शिर पर केशर, कपूर मिश्रित चन्दन से अथवा रोली से लिख देना चाहिए।

सर्वव्यापी न्यायकारी परमात्मा को जो अपने भीतर और बाहर उपस्थित देखता है वह पाप नहीं कर सकता। सशस्त्र कोतवाल को सामने उपस्थित देखकर भला कौन चोरी करने का साहस करेगा ? ईश्वर विश्वासी को सर्वत्र उपस्थित परमात्मा पर जब सच्चा विश्वास हो जाता है, तब वह गुप्त या प्रकट रूप से कोई पाप नहीं कर सकता है। पाप ही दुःखों के कारण हैं। जो पाप से बचा रहेगा, वह दुःखों से भी बचा रहेगा। आस्तिकता मनुष्य को पाप करने से रोकती है और कुकर्मों के फलस्वरूप मिलने वाले विविध विधि शोक सन्तापों से अनिष्ट संकटों से बचाती है। ईश्वर सत्कर्मों से प्रसन्न और दुष्कर्मों से अप्रसन्न होता है। वह अपने न्याय एवं व्यवस्था में रत्ती भर भी अन्तर नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आने देता। इसलिए ईश्वर का अनुग्रह और उपहार प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति को सन्मार्ग पर चलना पड़ता है। यह मान्यता आस्तिकता से सरल अविच्छिन्न रूप से जुड़ी है। इसलिए ईश्वर विश्वासी के मन से, सद्भाव और शरीर से सत्कर्म ही होते हैं। इस गतिविधि को अपनाने वाला आस्तिक अपने जीवन को सफल बनाता है और समाज में सुख शान्ति की अभिवृद्धि करता है। जिसे अपने साथ सहचर के रूप में ईश्वर की उपस्थिति अनुभव होती है, वह इतना बड़ा हिमायती पाकर न किसी से न तो डरता है और किसी विषम घड़ी में विचलित होता है। आस्तिकता की भावनायें ईश्वर जैसे सर्वसमर्थ को अपना साथी सहचर अनुभव करने की हिम्मत बँधाती है, इस भावना से भावान्वित ईश्वर भक्त के लिए इस संसार में कोई भय नहीं रहता, उसे सर्वत्र प्रभु का मंगलमय सौन्दर्य ही दृष्टिगोचर होता है। भविष्य के उज्जवल होने की आशा उसकी आँखों में चमकती रहती है।

आस्तिकता के अनेक लाभ हैं। उपासना और साधना का आश्रय लेकर कोई व्यक्ति परम प्रभु से अपनी घनिष्ठता स्थापित कर लेता है तो उसे उत्तराधिकार में वह सब कुछ मिल जाता है, जो ईश्वर के पास है। उसकी विभूतियों का पारावार नहीं रहता। उत्कृष्ट दृष्टिकोण के कारण सर्वत्र उसे स्वर्ग दिखाई देता है और दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारा पाने पर जीवन मुक्ति का आनन्द भी इसी जीवन में मिलता है। जो हर वस्तु में, हर व्यक्ति में, हर जीव में ईश्वर की उपस्थिति देखेगा, वह उनके साथ सद्व्यवहार करेगा। उसे ईश्वर दर्शन का आनन्द हर घड़ी मिलता रहेगा। परलोक में, स्वर्ग में, मुक्ति में जिन आनन्दों की कल्पना की गई है, वे सभी परिष्कृत दृष्टि वाले सच्चे आस्तिक को इसी जीवन में मिल जाते हैं। मुण्डन के उपरान्त मस्तक पर 'ॐ' लिखने का प्रयोजन बालक को, अभिभावकों को तथा उपस्थित लोगों को सच्चे अर्थों में ईश्वर-भक्त आस्तिक बनने की प्रेरणा देना है।

यह स्वस्तिक लेखन चन्दन, केशर, कपूर के सम्मिश्रण से लिखा जाता है, जिसका तात्पर्य विचारधारा को शीतल, सुसंगठित एवं परिपुष्ट बनाना है। चन्दन शीतल, कपूर सुसंगठित एवं केशर को पुष्टि का प्रतीक मानते हैं। इनसे ईश्वर का नाम 'ॐ' लिखा गया। अर्थात् हमारी आस्तिकता ऐसी हो जो इन तीनों परिणामों के साथ सामने आये। कई व्यक्ति माला तो बहुत लम्बी फेरते हैं, पूजा अर्चा का विधान तो बड़ा विस्तृत बनाते हैं पर विचारों का स्तर निकृष्ट और कार्यों का तारतम्य घृणित बनाये रहते हैं। सोचते हैं थोड़ी-सी पूजा-पत्री की रिश्वत देकर कुकर्मों के दण्ड से छुटकारा पा लेंगे और मनमाने वरदान ले लेंगे। ऐसी अन्धड़ मान्यताओं से सच्ची आस्तिकता का कोई वास्ता नहीं, सच तो यह है कि ऐसा सोचना अध्यात्म तत्व ज्ञान के सर्वथा विपरीत है। हमारी आस्तिकता का लक्षण एवं स्वरूप क्या हो ? इसका स्पष्टीकरण चन्दन, केशर और कपूर मिले मिश्रण से 'ॐ' लिखने में भली प्रकार कर दिया गया है। हमारे विचार, शरीर, कार्य अपने को और दूसरों को शान्ति शीतलता प्रदान करें, सुगन्धित यशस्वी हों, प्रगति एवं शक्ति की प्रेरणा देते हों, तो ही वे आस्तिकता, धार्मिकता से सम्पुटित माने जायेंगे। यों झूठ-मूठ के ईश्वर भक्त लाखों निठल्ले और कुकर्मी व्यक्ति आज भी नाना प्रकार के आडम्बर बनाये और प्रपंच रचे बैठे हैं। ऐसी आस्तिकता को नास्तिकता से भी गई गुजरी कहा जाय तो अनुचित न होगा।

उपर्युक्त मुण्डन में विशेष क्रिया-कृत्य करने के साथ-साथ उनकी व्याख्या विवेचना भी करते चलना चाहिए। संस्कार पद्धति में इस सन्दर्भ में जो १२ श्लोक लिखे गये हैं, उनमें भी इसी विचारधारा का विवरण है। जहाँ उपयुक्त हो वहाँ इन श्लोकों का भी पुट अपनी व्याख्या विवेचना में देते चलना चाहिए।

चूड़ाकर्म और उसकी प्रेरणा

चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार की प्रस्तावना में जो १२ श्लोक अभिनव संस्कार पद्धति में लिखे हैं, उनका सारांश बहुत ही प्रेरणाप्रद है, उसकी विस्तापूर्वक व्याख्या विवेचना की जानी चाहिए। चूड़ाकर्म वस्तुतः मस्तिष्क की पूजा अभिवन्दना है। हर व्यक्ति को जानना चाहिए कि मस्तिष्क मानव शरीर में दिव्य चेतना के निवास का उसी प्रकार मर्मस्थल है, जिस प्रकार उच्च अफसरों के ठहरने को डाक बँगले होते हैं। शरीर रूपी देव-मन्दिर में वह प्रतिमा प्रतिष्ठापना की एक दिव्य स्थली है। इसमें केवल शुभ संकल्प और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट विचारों को ही निवास के लिए स्थान मिलना चाहिए। आग की चिनगारी कहीं थोड़ी देर के लिए भी ठहर जाती है तो वहाँ सब कुछ भस्म करने का सत्यानाशी संकट उपस्थित कर देती है। इसी प्रकार मस्तिष्क में कुविचारों को यदि स्थान मिलने लगे तो जीवन प्रक्रिया को नष्ट-भ्रष्ट कर डालने की प्रक्रिया उपस्थित कर देते हैं।

मस्तिष्क सार्वजनिक सम्पत्ति है। कुएँ, तालाब, सड़क आदि की तरह इसका लाभ व्यक्ति विशेष को नहीं वरन् समाज को मिलना चाहिए। शरीर की कमाई मजदूरी से शरीर का गुजारा होना चाहिए। मस्तिष्क को जो शिक्षा, प्रतिभा, बुद्धि एवं सूझ-बूझ मिली है, उसे ईश्वरीय विशेष अनुदान मानकर सार्वजनिक उपयोग में लगाना चाहिए। बुद्धि बल का लाभ समस्त समाज की प्रगति के लिए प्रयुक्त होना चाहिए। जिसके पास जितना अधिक बुद्धि बल, मनोबल हो वह उतना ही अधिक सार्वजनिक उपयोग करें तभी उसकी सार्थकता है। संसार के सच्चे बुद्धिमानों ने, महापुरुषों ने किया भी यही है। अपनी मानसिक प्रतिभा का लाभ स्वयं ही नहीं उठाया वरन् उसे लोकमंगल में लगाये रखकर इस ईश्वरीय विशेष अनुदान का प्रयोजन पूर्ण किया है।

मस्तिष्क की श्रेष्ठता इस बात में नहीं, कि वह अधिक भौतिक सफलतायें प्राप्त करके-अधिक समृद्धिवान बन जाय और अधिक ऐश्वर्य का उपयोग करे। वरन् उसकी सार्थकता इस बात में है कि अपने गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार कर उत्कृष्ट स्तर का व्यक्तित्व विकसित करे। सादगी, नम्रता, प्रसन्नता, पवित्रता, सन्तोष, उदारता आदि सद्गुणों की पूँजी जो जितनी अधिक कमा सके, उस मस्तिष्क को उतना ही अधिक सफल और सार्थक माना जायेगा। साहसी, सन्तुलित, गम्भीर, धैर्यवान, निडर मनोवृत्ति का उपार्जन जो कर सके, वस्तुतः उसे ही सच्चा ज्ञानी कहा जायेगा।

कुशाग्र बुद्धि, परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के लिए अधिक नम्बर लाने वालों को ही नहीं कहना चाहिए। सच्चे बुद्धिमान वे हैं, जो विवेकशीलता के धनी हैं। उचित-अनुचित का नीर-क्षीर विवेक कर सकते हैं। अनुचित को त्यागने और उचित को अपनाने के लिए बड़े से बड़े भय एवं प्रलोभन की परवाह नहीं करते। जो किसी भी कारण अनुचित को अंगीकार और उचित को परित्याग नहीं करते—जो आज के छोटे से प्रलोभन के लिए भविष्य को अन्धकारमय नहीं बनाते, वस्तुतः उन्हें ही बुद्धिमान कहा जाना चाहिए। जो निन्दनीय कुमार्ग से बचे रहने और सन्मार्ग पर चल सकने का मनोबल एकत्र कर सका, उसी की बुद्धि कुशाग्र एवं प्रशंसनीय कही जायेगी।

मस्तिष्क एक प्रकार का विद्युत प्रवाह यन्त्र-ट्रांसमीटर है। इसमें जो विचार उठते हैं, से स्वयंमेव ईश्वर तत्व की सहायता से विस्तृत होकर समस्त संसार में भ्रमण करने लगते हैं और दूसरों के मस्तिष्कों से टकराकर उन्हें सन्मार्ग या कुमार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देते हैं। हमारे मस्तिष्क में यदि कुविचार उत्पन्न होंगे तो वे वायुमण्डल में अपनी तरंगें बहाते हुए अन्य असंख्य मस्तिष्कों को वैसी ही स्फुरणा देंगे और वैसी ही प्रवृत्ति उत्पन्न करेंगे। यही बात सद्विचारों के सम्बन्ध में भी है। इसीलिए शुभ विचारों की धारणा करने वाला व्यक्ति परोपकार या पुण्य लाभ करता है और दुर्भाव मन में भरे रहने वाला प्रत्यक्ष पाप न करते हुए असंख्य मनुष्यों को कुमार्ग की प्रेरणा देने का निमित्त बनने के कारण पापी बनता रहता है और कुविचार करने जैसा ही ईश्वरीय दण्ड एवं कोप का भागी बनता है। अतएव मस्तिष्क का श्रेष्ठतम सदुपयोग करना ही बुद्धिमता है। ऐसी बुद्धिमता चूड़ाकर्म करने वाले बालकों में उत्पन्न हो इसका प्रयास करना सभी उपस्थित लोगों का, परिवार तथा समाज का कर्त्तव्य है। सुनने वालों तथा दूसरों को भी अपने तथा अपने सम्बन्धियों के मस्तिष्कों का सार्थक सदुपयोग हो सके ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। चूड़ा-कर्म की यही वास्तविक प्रेरणा है।

व्याख्या विवेचन के उपरान्त अग्नि स्थापन से लेकर विसर्जन, सूर्यार्घ्यदान तक सारे क्रिया-कृत्य गायत्री हवन-विधि के अनुसार किये जायें। उपस्थित लोग अक्षत पुष्पों की वर्षा बालक पर करते हुए आशीर्वाद मन्त्र **"ॐ श्रीवर्चस्व • • • • • "** बोलें। माता की गोदी में मंगल फल **"ॐ विष्णो नु • • • "** मन्त्र से देते हुए विदा करें। मंगल फल देने वालों को मन्त्र न आता हो, तो **"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो • • • "** मन्त्र भी बोला जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चूड़ाकर्म संस्कार : उद्देश्य और शिक्षा

मस्तिष्कं नास्ति सम्पत्तिर्व्यक्तेरेवात्र कस्यचित्।
अपि त्वेतद्धि विश्वस्य, कुर्याद्यत्नं तदुन्नतेः।। १।।

मस्तिष्क इस संसार में किसी की व्यक्ति सम्पत्ति नहीं है, अपितु यह विश्व की सम्पत्ति है। अतः इसे श्रेष्ठतम बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

इदं संचालकं केन्द्रं जीवनस्य निसर्गतः।
केन्द्रबिन्दुमिमं लब्ध्वा तास्सुरासुरशक्तयः।। २।।
संचालनं चिकीर्षन्ति मानवजीवनस्य वै।
सम्यग् विविच्य मेधावी दिव्यत्वं प्रति संचरेत्।। ३।।

यह स्वाभाविक जीवन का संचालन केन्द्र है। इस केन्द्र बिन्दु को प्राप्त कर दैवी और आसुरी शक्तियाँ मानव-जीवन के संचालन की इच्छा करती हैं। अतः बुद्धिमान् भली प्रकार विचार कर दैवी प्रवृत्ति की ओर संचरण करे।

द्वेष दुर्भाव चिन्ताश्च शोकानीति विलासिताः।
स्वार्थत्व काम क्रोधाश्च निराशा लुब्धतादयः।। ४।।
आसुरी वृत्तयो ह्येता वदन्तीति मनीषिणः।
सद्विचारो विरागश्च सद्भावः प्रेम नम्रता।। ५।।

द्वेष, दुर्भाव, चिन्ता, शोक अनीति, विलासिता, स्वार्थ-भावना, काम, क्रोध निराशा एवं लोभ आदि आसुरी प्रवृत्तियाँ मनीषियों ने बताई हैं।

समता निरहङ्कारः सत्सङ्कल्पः पवित्रता।
ज्ञानं सरलतौदार्य्य प्रसन्नतादयस्तथा।। ६।।

समता, निरहंकार , सत्य-संकल्प, पवित्रता, ज्ञान, सरलता, उदारता तथा प्रसन्नातादि ये देवी प्रवृत्तियाँ हैं जो संकट में भी ग्रहणीय हैं।

दिव्याः प्रवृत्तयो ह्येता ग्रहणीया विपद्यपि।
ग्रहणमासुरीवृत्तेः स्वार्थे ज्ञानस्य योजनम् ।। ७।।
दुष्प्रयोगो विवेकस्य शक्तेश्चैवाति विनिन्द्यते।
स्थापनं दिव्यतत्वानामुत्सृज्य स्वार्थवृत्तिताम्।। ८।।

आसुरी तत्वों को ग्रहण करना, और वैयक्तिक स्वार्थ में ज्ञान (मस्तिष्कीय विवेक) शक्ति का प्रयोग इसका दुरुपयोग है, और निन्दित है। अतः सर्वदा भली-भाँति बुद्धि से विचार कर कर्त्तव्य धर्म ही करना चाहिए।

कल्याणाय च लोकानां प्रयोगो बुद्धिज्ञानयोः।
साफल्यं मानवीयस्य जीवनस्येह निश्चितम्।। ९।।

देवी गुणों को प्रतिष्ठित करना अपने स्वार्थ का उत्सर्ग कर लोक-कल्याण के लिए प्रभायुक्त ज्ञान-किरण और मस्तिष्क की प्रतिभा के उपयोग में ही इसकी सफलता और सार्थकता बुद्धिमानों ने कही है।

ध्यानैकाग्रतयोः शान्ते निष्कामत्वसमत्वयोः।
तथा प्रसाद भावस्य केन्द्रीकरणमेव च।। १०।।
तथा भवति मस्तिष्कमात्मदिव्यगुणान्वितम्।
पुष्टं च सबलं तस्मात्कुर्यात्तत्केन्द्रितं सदा।। ११।।
लक्ष्येणानेन सद्यत्नैर्बुद्धिमद्भिर्जनैर्हितम्।
नित्यावहित चित्तैश्च रक्षणीयमिदं धनम्।। १२।।

ध्यान, एकाग्रता, शान्ति, समता, निष्कामता, प्रमाद तथा वृत्तियों के केन्द्रीयकरण की दशा में ही यह मस्तिष्क आत्मा के दिव्य गुणों से भर जाता है तथा पुष्ट होता है, इसीलिए इसे सदा केन्द्रित रक्खें। इसी लक्ष्य से सदयत्नों से सावधान चित्त वाले बुद्धिमान् पुरुषों को सर्वदा इस धन की रक्षा करनी चाहिए।

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार—प्रयोजन एवं विधि

संस्कार प्रयोजन—इस संस्कार में शिशु के शिर के बाल पहली बार उतारे जाते हैं। लौकिक रीति यह प्रचलित है कि मुण्डन बालक की आयु एक वर्ष की होने तक करा लें अथवा २ वर्ष पूरे होने तक तीसरे वर्ष में करायें।

❑ यह समारोह इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि मस्तिष्कीय विकास एवं सुरक्षा पर इस समय विशेष विचार किया जाता है और वह कार्यक्रम शिशु पोषण में सम्मिलित किया जाता है, जिससे उसका मानसिक विकास व्यवस्थित रूप से आरम्भ हो जाय। पूर्व जन्म के मस्तिष्क में बैठे कुसंस्कारों-कुप्रभावों को समाप्त करने के लिए ही यह संस्कार आयोजित किया जाता है। चूड़ाकर्म (मुण्डन संस्कार) के माध्यम से बालक के सम्बन्धी-परिजन यही योजना बनाते हैं कि बच्चे को पाशविक संस्कारों से मुक्त तथा मानवीय सद्गुणों से ओत-प्रोत बनाया जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ मुण्डन का प्रतीक कृत्य किसी देव स्थल तीर्थ आदि पर इसीलिए कराया जाता है कि इस सदुद्देश्य में वहाँ के दिव्य वातावरण का लाभ मिल सके। यज्ञादि धार्मिक कर्मकाण्डों द्वारा इस निमित्त किए जाने वाले मानवी पुरुषार्थ के साथ-साथ सूक्ष्म सत्ता का सहयोग उभारा और प्रयुक्त किया जाता है।

नीचे लिखे अनुसार विशेष तैयारी पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

(१) मस्तक लेपन के लिए यथा सम्भव गाय का दूध एवं दही पचास-पचास ग्राम भी बहुत है।

(२) कलावे के लिए लगभग छः-छः इंच लम्बे तीन टुकड़ों के बीच में छोटे-छोटे कुश के टुकड़ों को बाँधकर रखना चाहिए।

(३) प्रज्ञा संस्थानों-शाखाओं को इस उद्देश्य के लिए कैंची, छुरा अलग से रखना चाहिए उन्हीं का पूजन कराकर नाई से केश उतरवाना चाहिए।

(४) बालक के लिए मुण्डन के बाद नवीन वस्त्रों की व्यवस्था रखनी चाहिए।

(५) बाल एकत्र करने के लिए गुंथ आटे या गोबर की व्यवस्था रखनी चाहिए।

विशेष कर्मकाण्ड—बालक एवं उसके अभिभावकों का मंगलाचरण से स्वागत करते हुए क्रमबद्ध रूप से निर्धारित प्राथमिक उपचार तथा रक्षा विधान तक का क्रम पूरा कर लेना चाहिए। उसके बाद क्रमशः विशेष कर्मकाण्ड कराये जायें।

मस्तक लेपन

शिक्षण और प्रेरणा—बालक के बालों को गौ के दूध, दही, घी में जल मिलाकर भिगोते हैं। गौ माता कल्याणकारक, परोपकारी, सरल, सौम्य प्रकृति की होती है। उसके शरीर से निकले हुए गौरस भी इसी प्रकृति के होते हैं। इन पदार्थों में वे सब गुण रहते हैं जो गौ माता में विद्यमान हैं। इनसे मस्तक का लेपन, बालों का भिगोना इस बात का प्रतीक है कि हमारी विचारणा-मानसिक प्रवृत्ति गौ माता जैसी—गौरस जैसी स्निग्ध, सौम्य होनी चाहिए। घृत को स्नेह कहते हैं। स्नेह का दूसरा नाम प्रेम भी है। दूध, दही, घी तीनों ही स्नेहसिक्त हैं। इनसे शिरस्थ रोमकूपों का भिगोया जाना इस बात का निर्देश करता है कि हम जो कुछ सोचे विचारें उसके पीछे प्रेमभावना का समुचित पुट होना चाहिए।

मस्तक लेपन की क्रिया चूड़ाकर्म में इसलिए कराई जाती है कि इस आधार पर यह स्मरण रखा जा सके कि इस बालक का मानसिक विकास रूखा, संकीर्ण तथा अनैतिक-अवांछनीय दिशा में न होने पावे। उसका रुझान गौ जैसी-गौरस जैसी रहे। गौ अपने बछड़े को जैसे प्यार करती है। वैसे ही हम समस्त परिवार और समाज में किया करें। अपने लिए ही मरते पचते न रहें वरन् गौ अपना रस, चर्म, अस्थि, माँस, गोबर तथा सन्तान को दूसरे के लिए उत्सर्ग करती रहती है वैसी ही रीति हमारी भी हो। रूखे सिर को इस गौरस से आर्द्र इसलिए बनाया जाता है कि उसमें सहृदयता, भावुकता, करुणा, मैत्री, प्रेम एवं उदारता की आर्द्रता बनी रहे। बालक को ऐसी प्रकृति बनाने के लिए अभिभावकों को ऐसा ही वातावरण बनाना पड़ता है।

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चार के साथ-साथ माता-पिता दूध, दही और जल के मिश्रण से बालक-बालिका के केश गीले करें। गर्मी की ऋतु हो तो अच्छी तरह भी भिगो सकते हैं अन्यथा थोड़ा-थोड़ा स्पर्श भर करके काम चला लिया जाय।

भावना करें कि मस्तिष्क के इस दिव्योपचार प्रसंग में द्रव्यों के माध्यम से शुभ देव-शक्तियों, देव-वृत्तियों का स्पर्श बालक को दिया जा रहा है। अशुभ के उच्छेदन तथा शुभ की स्थापना का कार्य स्नेह प्रेम के आधार पर ही किया जाना है।

ॐ सविता प्रसूता दैव्या आप ऽ उदन्तु ते तनूम् दीर्घा युत्वाय वर्चसे।—पार. गृ. सू. २। १६

त्रिशिखा बन्धन

शिक्षण और प्रेरणा—मनुष्य का मस्तिष्क अपने आप में एक चमत्कार है। इसमें अगणित अद्भुत सामर्थ्य युक्त केन्द्र हैं। इन केन्द्रों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

१—निर्माण परक केन्द्र—जो काय में चलने वाली सभी निर्माण प्रक्रिया का नियन्त्रण संचालन करते हैं।

२—पोषण परक केन्द्र—जो काया संस्थान में चलने वाली पुष्टि, पोषण, स्वास्थ्य, आरोग्य सम्बन्धी प्रक्रियाओं के लिए उत्तरदायी हैं।

३—नियमित केन्द्र—जो विचारों के निष्कासन, समग्र, अनुशासन और परिवर्तन विकास क्रम का नियन्त्रण करते हैं। क्रिया की प्रक्रियाओं का चक्र सम्भालते हैं।

यह केन्द्र क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र से सम्बद्ध माने जाते हैं। इन केन्द्रों को उनके अधिष्ठाता देवताओं की साक्षी में शोधित विकसित किया जाता है। इसलिए सिर के बालों को तीन भागों में विभक्त करके उन्हें कुश बँधे कलावे से तीन गुच्छों में बाँधते हैं। यह हिस्से हैं—सामने वाला एक, पीछे वाले दायें और बायें भाग अलग-अलग। पिछले दायें गुच्छे को ब्रह्म-ग्रन्थि, पिछलें बायें गुच्छे को विष्णु ग्रन्थि तथा सामने वाले को रुद्र ग्रन्थि कहते हैं।

❑ कुश पवित्रता तथा तेजस्विता के प्रतीक होते हैं, कल्याण मंगलकामना का प्रतीक है। मस्तिष्क के विभिन्न केन्द्रों से अवांछित कुसंस्कारों के उन्मूलन तथा शुभ के लिए जागरण के लिए मंगलकामना, पवित्रता तथा तेजस्वी प्रक्रिया का त्रिवेणी योग निभाना बिठाना कठिन होता है।

क्रिया और भावना—एक-एक करके मन्त्रों के क्रम से निर्धारित केन्द्रों को कलावा बाँधा जाय। तदनुरूप भावना की जाय।

ब्रह्म ग्रन्थि बन्धन

सिर के पिछले भाग में दायीं ओर के बालों में मन्त्र के साथ कलावा बाँधें। भावना करें कि मस्तिष्क की रचना शक्ति का ब्रह्मा की शक्ति देवों की साक्षी में प्रतिबद्ध किया जा रहा है। आसुरी शक्तियाँ इसका उपयोग न कर सकेंगी। यह उनका उपकरण न बन सकेगा-देवत्व की मर्यादा में ही इसका विकास और संचालन होगा।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। —यजु. १३/३

विष्णु ग्रन्थि बन्धन—पिछले हिस्से के बायें भाग के केशों से कलावा बाँधें, भावना करें कि मस्तिष्क के पोषण, संचालन करने वाले केन्द्र भगवान विष्णु की शक्ति से प्रतिबद्ध हो रहे हैं। उन पर असुरत्व का शासन न चल सकेगा। देव मर्यादा से यह केन्द्र सत्प्रवृत्तियों को ही पोषण देंगे।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाᳬसुरे स्वाहा। —यजु. ५/१५

रुद्र ग्रन्थि बन्धन

सिर के अगले भाग के केशों से मन्त्र के साथ कलावा बाँधें। भावना करें कि रुद्र शिव की शक्ति इस क्षेत्र पर आधिपत्य कर रही है। असुरता की दाल अब नहीं गलेगी। रुद्र की शक्ति विकारों को जला डालेगी और ईश्वरीय मर्यादा के अनुकूल कल्याणकारी अनुशासन लागू करेगी।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। —यजु १६/१

छुरा (उस्तरा) पूजनम्

शिक्षण और प्रेरणा—जिस छुरे से नाई सिर का मुण्डन करेगा, वह इन्हीं प्रयोजनों में काम आने वाला होना चाहिए। अच्छा हो एक बढ़िया कैंची, उस्तरा तेज धार किया हुआ, शाखा या पुरोहित अपने पास तैयार रखें और उसे ही मुण्डन संस्कारों के काम में लाया करें। प्राचीन काल में प्रथम केश उतारने का कार्य पुरोहित ही करते थे। अब उन्हें यह कला नहीं आती इसलिए क्षौर कर्म नाई से करा सकते हैं। पर छुरा ऐसा ही लिया जाय जो सर्वसाधारण के उपयोग में न आता हो।

उपयोग से पूर्व औजार गरम पानी से तथा मिट्टी से अच्छी तरह धो माँज लेना चाहिए तथा सिल्ली पर घिस लेना चाहिए, उसे तश्तरी में रखकर पूजन के लिए माता-पिता के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामने रखा जाय। दोनों रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें और उसके मूल में कलावा बाँध दें। इस पूजन का उद्देश्य यह है कि यह छुरा साधारण लौह उपकरण न रहकर अभिमन्त्रित शक्ति सम्पन्न होकर बालक के मस्तिष्क में सुसंस्कारों का प्रवेश करा सके।

गर्भ में आने वाले बाल सामान्य संस्कार वाले होते हैं। इस आच्छादन को उतारकर उसके स्थान पर ऐसे बाल उगने चाहिए, जो उत्कृष्ट भावनाएँ साथ लेकर ऊपर आवें। पुराने बालों को पिछले जीवन में जमे हुए अनुपयुक्त संस्कारों का प्रतीक माना गया है। इन बालों को काटने का प्रयोजन पाशविक विचारों एवं विचारणाओं एवं आकांक्षाओं को हटाने-मिटाने का प्रयत्न करना है। इस उद्देश्य के लिए जिस छुरे का प्रयोग किया जा रहा है, वही पर्याप्त नहीं क्योंकि लौह उपकरणों से कुसंस्कारों को हटाया मिटाया जाना सम्भव नहीं। विचार तो विचारों से कटते हैं। लोहे को लोहा काटता है। कांटे से कांटा निकलता है। विष से विष का शमन होता है, लाठी का जबाव लाठी से दिया जाता है। इसी प्रकार कुविचारों का शमन उनके विरोधी तीव्र विचारों से ही सम्भव होता है। वह छुरा प्रखर विचारों का प्रतीक प्रतिनिधि है, जो पाशविक विचारधारा को परास्त करके अपनी गहरी छाप छोड़ सके। छुरा पूजन का अर्थ है ऐसे उत्कृष्ट विचारों का श्रद्धापूर्वक आवाहन अभिनन्दन, जो मनोभूमि में जमे हुए असुर संस्कारों को निरर्थक झाड-झंखाड़ों की तरह उखाड़ फेंकने में सफल हो सकें। कटीली झाड़ियाँ कुदाल, फावड़े, से खोदी जाती हैं उसी प्रकार अवाँछनीय विचारों तथा आदतों को उखाड़ने के लिए जीवन निर्माण की आध्यात्मिक विचारधारा को उग्र स्तर पर विकसित करना पड़ता है। प्रारम्भिक बालों को इसी भावना के साथ काटा जाता है।

क्रिया और भावना—थाली-तश्तरी में रखे कैंची-छुरे को पूजा मन्त्रोच्चार के साथ अभिभावक द्वारा करा ली जाय। वे भावना करें कि बालक के कुविचारों को काटने के लिए उनकी काट करने में समर्थ पैने उपकरण सद्विचारों की अभ्यर्थना कर रहे हैं। जिस प्रकार स्थूल बालों की सफाई के लिए यह औजार प्रभु कृपा से मिलते हैं, वैसे ही सूक्ष्म प्रवाह भी मिलेंगे। उनका उपयोग पूरा तत्परता जागरूकता से करेंगे।

ॐ यत् क्षुरेण मर्ज्जयता सुपेशसा वप्त वापतिकेशान्। छिन्धि शिरो मास्यायुः प्रमोषीः।।

आश्व. गृ. सू. १.१७

त्रिशिखाकर्त्तन

शिक्षण और प्रेरणा—शिशु के मस्तिष्क के विभिन्न केन्द्रों का ग्रन्थि-बन्धन देव-शक्तियों से किया गया । उस नाते उन्हें उसी मर्यादा में रहने और उसी दिशा में बढ़ने की व्यवस्था बनानी होती है। इस उद्देश्य में बाधक कुसंस्कारों, दुष्प्रवृत्तियों को काटना, उखाड़ना पड़ता है। जंगली पौधा मनमाने ढंग से बढ़ता है, उपवन के पौधे को माली का अनुशासन मानना होता है। उसके लिए उसे जहाँ स्नेह से खाद पानी मिलता है, वहाँ कड़ाई से काटा छांटा भी जाता है। यही उद्देश्य केश कर्तन के समय ध्यान में रखना चाहिए और उससे सम्बद्ध उत्तरदायित्वों के पालन की दृष्टि और व्यवस्था विकसित करनी चाहिए।

❑ ब्रह्म ग्रन्थि कर्तन का तात्पर्य यह है मस्तिष्क में द्वेष, दुर्भाव, ईर्ष्या आदि के आधार पर दूसरों को नीचा गिराने के लिए विध्वंसक योजना न रचने दी जाय। उस प्रकृति का उच्छेदन किया जाय। अपने विकास तथा निर्माणकारी योजनाओं के लिए स्थान सुरक्षित रखा जाय।

❑ विष्णु ग्रन्थि कर्तन के पीछे उद्देश्य है कि अन्तर से उठने वाली हीन आकांक्षाओं का पालन न होने दिया जाय। मस्तिष्क अपनी नहीं प्रभु की सम्पत्ति है, अस्तु स्वार्थपरक आकांक्षाओं के पोषण की उसे छूट नहीं। उन्हें काटा जाय। ईश्वरोन्मुख आकांक्षाओं के पोषण के लिए ही शक्ति सुरक्षित रहे।

❑ रुद्र ग्रन्थि कर्तन का अर्थ है ईश्वरीय मर्यादा में बढ़ने में बाधक हर प्रवृत्ति को कठोरता से काटा जाय। जो भी परिवर्तन लाये जायें वे अशिव न होकर शिव ही हों। अशिव वृत्तियों को शिव की शक्ति से काट फेंके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रिया और भावना—पुरोहित स्वयं कैंची या उस्तरे से एक-एक करके मन्त्रों के उच्चारण के साथ-साथ तीनों ग्रन्थियों के केशों के सिरे काट दें। सभी लोग भावना प्रवाह पैदा करने में योगदान दें।

❑ ब्रह्म ग्रन्थि के साथ भावना करें कि निर्माण की शक्ति विनाशक प्रवृत्तियों को काट रही है। अब रचनात्मक प्रवृत्तियों के लिए यह केन्द्र सुरक्षित रहेंगे।

ॐ येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्माणो वपते दमस्य गोमानस्वानयमस्तु प्रजावान्।। —अथर्व. ६/६८/३

विष्णु ग्रन्थि कर्तन के साथ भावना करें, भगवान विष्णु की शक्ति अपने प्रतिकूल प्रवृत्तियों का उन्मूलन निवारण कर रही है। मस्तिष्क अब अनैतिक पोषण न दे सकेगा-नीति सत्ता में ही प्रयुक्त होगा।

ॐ येन धातावृहस्पतेरग्नेरिन्द्रस्य-वायुषेऽवपत्। तेन त ऽ आयुषे वपामि सुश्लोक्याय स्वस्तये। —आश्व. १ /१७ /१२

रुद्र ग्रन्थि कर्तन के साथ यह भावना करें रुद्र त्रिपुरारि की प्रचण्ड शक्ति दुर्धर्ष दुष्प्रवृत्तियों पर चोट कर रही है, अब उसका निवारण होगा ताकि मस्तिष्क में दिव्य दृष्टि, दिव्यानुभूति क्षमता विकसित हो सके।

ॐ येन भूयश्च रात्र्यां ज्योक् च पश्याति सूर्यम्। तेन त ऽ आयुषे वपामि सुश्लोक्याय स्वस्तये। —आश्व. १/१७/१२

नवीन वस्त्र पूजन

शिक्षण एवं प्रेरणा—नवीन वस्त्र धारण करने का तात्पर्य है—नवीन कलेवर धारण करना। पुराना चोला उतारकर नया चोला धारण करना। जिस प्रकार सर्प पुरानी केंचुली त्यागकर नई धारण करता है, उसी प्रकार मुण्डन के अवसर पर शिर के बाल ही नहीं मुड़ाते वरन् पुरानी केंचुली भी बदलते हैं, पुराने कपड़ों को उतारकर नये पहनते हैं, उन वस्त्रों में एक वस्त्र पीला भी होना चाहिए।

नवीन कलेवर इस बात का प्रतीक है कि शिर के बाल उतारकर केवल पाशविक विचारों को ही नहीं हटाया गया है वरन् शरीर पर लिपटे हुए पुराने सड़े-गले जीर्ण स्वभाव एवं क्रम प्रभाव को भी बदल दिया गया है।

क्रिया और भावना—एक थाली में रखकर बालक के नये वस्त्रों पर अक्षत पुष्प, मन्त्रोच्चार के साथ चढ़ाए जायें। भावना की जाय कि जिस प्रकार अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप वस्त्र आच्छादनों की व्यवस्था की सामर्थ्य प्रभु ने दी है—वैसे ही अपने गौरव के अनुरूप व्यक्तित्व बनाने की सामर्थ्य भी मिल रही है। उस दिव्यता के प्रति वस्त्रों प्रतीकों के पूजन द्वारा अपनी आस्था व्यक्त की जा रही है।

ॐ तस्माद् यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

—यजु. २/३१/७

वस्त्र पूजन के बाद अग्नि स्थापन से गायत्री यज्ञ की आहुति देने तक का क्रम पूरा करके विशेष आहुतियाँ दी जायें।

विशेष आहुति

हवन सामग्री में थोड़ा मेवा मिष्ठान मिलाकर ५ आहुतियाँ निम्न मन्त्र से दें। भावना करें कि यज्ञीय ऊष्मा बालक के मस्तिष्क को अपने अनुरूप संस्कारों से भर रही है।

ॐ भूर्भवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्वदुच्छुनां स्वाहा इदमग्नये इदन्नमम।। —ऋग्वेद ९/६६/१९

इसके बाद यज्ञ के शेष कृत्य पूरे कर लिए जायें। विसर्जन न किया जाय। नाई द्वारा मुण्डन कर देने पर बालक को स्नान के बाद नये वस्त्र पहनाकर पुनः देवस्थल पर लाया जाता है। तब शिखा पूजन और स्वस्तिक लेखन और आशीर्वाद के बाद विसर्जन किया जाता है। यदि घर पर आयोजन है तो इस बीच गीत, भजन कीर्तन उद्बोधन का क्रम चलाते रहना चाहिए। सार्वजनिक स्थल पर हो, तो अन्य लोग बालक पर अक्षत पुष्प वृष्टि करके प्रसाद लेकर विदा भी हो सकते हैं अथवा सर्वोपयोगी भजन सत्संग का लाभ उठाते हुए रह सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुण्डन कृत्य

शिक्षण एवं प्रेरणा—बालक और माता को यज्ञशाला से बाहर भेज देते हैं। यज्ञ-मण्डप में क्षौर कर्म नहीं होता, इसलिए उसे बाहर भेजना आवश्यक होता है। समीप ही किसी स्थान पर बैठकर मुण्डन कराया जाय। मुण्डन करते समय अभिभावक तथा उपस्थित व्यक्ति मन ही मन गायत्री मन्त्र का जप करते रहें और भावना करें कि उनके द्वारा किया गया यह जप् बालक के मस्तिष्क में सद्बुद्धि का प्रकाश बनकर प्रवेश कर रहा है। बालों को आटे या गोबर के गोले में बन्द करके जमीन में गाड़ देते हैं या जलाशय में विसर्जित कर देते हैं। मुण्डन होने के बाद बच्चे को स्नान कराया जाय।

बालों को गोबर में रखकर जमीन में इसलिए गाड़ा जाता है कि उनकी भी गोबर की तरह खाद बन जाय। पशुओं के शरीर का हर अवयव मल-मूत्र, दूध आदि दूसरों के काम आते हैं। वृक्ष-वनस्पतियाँ अपने पत्र-पुष्प फल एवं लकड़ी सब कुछ परमार्थ के लिए समर्पित करते हैं। मनुष्य के लिए भी यह उचित है कि अपनी उपलब्धियों का अधिकाधिक उपयोग परमार्थ के लिए करे। बाल भी जहाँ-तहाँ बिखर कर गन्दगी न बढ़ावें वरन् गोबर के साथ मिलकर किसी खेत में खाद बनें और धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ायें यही उनकी सार्थकता है।

इस तथ्य को सब लोग समझें और गोबर को जमीन में ही गाढ़ने का ध्यान रखें, बालों के साथ गोबर इस दृष्टि से ही जमीन में गाड़ा जाता है।

क्रिया और भावना—नाई द्वारा केश उतारना प्रारम्भ किया जाय तब निम्नलिखित मन्त्र बोला जाय। बच्चे को बहलाने-फुसलाने के साथ माता मानसिक रूप से ग़ायत्री जप करती रहे। भावना की जाय गर्भ से आये बालों को हटाने के साथ दिव्य सत्ता के प्रभाव से सारी मानसिक दुर्बलतायें हट रहीं हैं, जो बालक को अनिष्ट में डालती हैं। इस प्रक्रिया में सहायक हर शक्ति और हर व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता के भाव रखे जावें। भगवान से प्रार्थना की जाय कि इस संस्कार से प्रारम्भ दिशा धारा के निर्वाह की क्षमता प्रदान करें।

ॐ येन पूषा बृहस्पतेर्वायोरिन्द्रस्य चावपत्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे। मन्त्र ब्राह्मण १ / ६ / ७

शिखा पूजन

शिक्षण और प्रेरणा—यह संस्कार शिखा स्थापना संस्कार है। भारतीय धर्म के दो प्रधान प्रतीक हैं, एक शिखा दूसरा सूत्र-यज्ञोपवीत। मुसलमानों में जिस तरह सुन्नत कराना, सिक्खों में केश रखना आवश्यक माना जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक हिन्दू धर्मानुयायी को अपने मस्तिष्क रूपी किले के ऊपर हिन्दू धर्म की—गायत्री मन्त्र सन्निहित दूरदर्शिता, विवेकशीलता की ध्वजा फहरानी चाहिए। शिखा यही है। विवेकशीलता अपनाना मन को सद्भावनाओं से भरे रखना, अन्तःकरण में ऋतम्भरा प्रज्ञा का प्रकाश करना, यही प्रयोजनों शिखा के साथ जुड़े हुए हैं। मुण्डन संस्कार के अवसर पर अथवा उसके तुरन्त बाद बाल चढ़ने पर शिखा रख दी जाती है। इसके प्रति संकल्प रूप में शिखा स्थल का पूजन किया जाता है।

क्रिया और भावना—शिशु के माता-पिता से बालक के सिर में शिखा के स्थान पर रोली चावल द्वारा शिखा पूजन कराया जाय। भावना की जाय कि यह बालक ध्वजाकारी सैनिक की तरह गौरव एवं तेजस्विता का धनी बनेगा। भारतीय संस्कृति की ध्वजा लेकर उसके अनुरूप उच्चतम लक्ष्यों को प्राप्त करके गौरवान्वित होगा।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

स्वस्तिक लेखनम्

शिक्षण और प्रेरणा—मुण्डन किए हुए मस्तिष्क पर स्वस्तिक (卐) या "ॐ" शब्द चन्दन अथवा रोली से लिखते हैं। यों यह लेखन का कार्य संस्कार कराने वाले आचार्य कर सकते हैं, पर अच्छा हो ऐसा कार्य किन्हीं सम्भ्रान्त सज्जन से कराया जाय। उससे उन्हें सम्मान मिलता है, उनकी रुचि और सद्भावना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस कार्य में बढ़ती है। अतएव छुट-पुट कार्य सदा उपस्थित लोगों में किसी गणमान्य व्यक्ति से कराने चाहिए। हर संस्कार में कई-कई ऐसे कार्यक्रम होते हैं, अच्छा हो तो उनमें से प्रत्येक के लिए अलग-अलग सम्भ्रान्त व्यक्तियों को श्रेय दिया जाय, उसके हाथों वे कार्य कराये जायें। मुण्डन संस्कार में वस्त्र धारण, स्वस्तिक लेखन, मस्तक लेपन, शिखा-बन्धन आदि प्रयोजनों के लिए अलग-अलग व्यक्ति रखे जायें तो हर्ज नहीं, वैसे इन कार्यों को माता-पिता, अभिभावक कोई गुरुजन कर सकते हैं।

सर्वव्यापी न्यायकारी परमात्मा को जो व्यक्ति अपने भीतर और बाहर उपस्थित देखता है, वह पाप नहीं करता। सशस्त्र कोतवाल को सामने उपस्थित देखकर भला कौन चोरी का साहस करेगा ? ईश्वर विश्वासी को सर्वत्र उपस्थित परामात्मा पर जब सच्चा विश्वास हो जाता है तब वह गुप्त या प्रकट रूप से कोई पाप नहीं कर सकता। पाप ही दुःखों के कारण हैं। जो पाप से बचा रहेगा वह दुःखों से बचा रहेगा। आस्तिकता मनुष्य को पाप करने से रोकती है और कुकर्मों के फलस्वरूप मिलने वाले विविध-विध शोक-सन्तापों से ,अनिष्ट संकटों से बचाती है। मुण्डन के उपरान्त मस्तक पर "ॐ" या 卐 लिखने का प्रयोजन बालक को, अभिभावकों तथा उपस्थित लोगों को सच्चे अर्थों में ईश्वर भक्त, आस्तिक बनाने की प्रेरणा देना है।

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। —यजु. २५/१९

क्रिया और भावना—आचार्य या कोई सम्माननीय पूज्य व्यक्ति बालक के मुण्डित सिर पर रोली या चन्दन से शुभ चिह्न बनाये। मन्त्रोच्चार के साथ इस चिह्न के अनुरूप श्रेष्ठ प्रवृत्तियों की मस्तिष्क में स्थापना की भावना की जाय। संयुक्त सद्भाव एवं प्रभु अनुग्रह से एकता, शान्ति, प्रखरता, समता, पवित्रता, संकल्पशीलता, सरलता, उदारता, प्रसन्नता, ज्ञान, परमार्थ, जैसी सत्प्रवृत्तियों और श्रेष्ठ गुणों की स्थापना की भावभरी प्रार्थना की जाय।

आशीर्वाद, विसर्जन, जयघोष आदि के साथ कार्यक्रम समाप्त किया जाय।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विद्यारम्भ-संस्कार

विद्यारम्भ-संस्कास-विवेचन

शास्त्रकार ने विद्या-विहीन की तुलना पशु से की है। ज्ञान ही मनुष्य की विशेषता है अन्यथा और अनेक बातों में तो वह पशुओं से भी पिछड़ा हुआ है। हाथी के बराबर बलवान, सिंह की तरह पराक्रमी, घोड़े की तरह चलने वाला, बैल की तरह परिश्रमी, कुत्ते की तरह गन्ध ज्ञानी, बन्दर की तरह वृक्षारोही, गौ की तरह सौम्य भला कौन मनुष्य हो सकता है ? इन दृष्टियों से मनुष्य की अपेक्षा पशु ही कहीं अधिक बढ़-चढ़े होते हैं। उनकी तुलना में मनुष्य में जो विशेषता है, वह उसकी ज्ञान शक्ति की है। अज्ञानी मनुष्य का जीवन स्तर निश्चय ही पशुओं से गया-गुजरा है। उसे किसी दिशा में प्रगति करने उल्लासपूर्ण जीवन जीने का अवसर तो मिलता ही नहीं। शरीर धारण की, निर्वाह की आवश्यकता भी कठिनाई से पूरी कर पाता है। अनेक असुविधा, अभावों और आपत्तियों से भी जिन्दगी जीनी पड़ती है। ज्ञान की जिसमें अपूर्णता है, उसको संसार में सर्वत्र अभाव ही अभाव अनुभव होते रहेंगे। मानवोचित प्रगति के सभी द्वार उसके लिए बन्द पड़े रहेंगे।

विद्या-विहीन न रहें

इसलिए मनीषियों ने हर व्यक्ति को विद्या पढ़ने की अनिवार्य आवश्यकता बताई है। विद्या ज्ञान की आधारशिला है। जिसे विद्या नहीं आती उसे ज्ञान लाभ से वंचित ही रहना पड़ेगा। 'ज्ञानात् मुक्ति' सूत्र के अनुसार कष्ट और क्लेशों से छुटकारा केवल ज्ञानवान् को ही मिल सकता है। अज्ञानी तो निविड़ बन्धनों में बँधा ही रहता है और बन्धनों में पड़े हुए बन्दी को कष्ट भोगने पड़ते हैं। उन्हें सहता ही रहता है। अन्धकार में 'टकना ही पड़ता है, सही मार्ग प्रकाश होने पर ही मिलेगा। अज्ञान को अन्धकार और ज्ञान को प्रकाश बताया गया है। हमें क्या करना, किधर चलना, कैसे रहना है, इन प्रश्नों का उत्तर ज्ञान के आधार पर ही उपलब्ध किया जा सकता है। इसलिए अध्यात्म साधना के तीन साधनों— ज्ञान-योग, कर्म-योग और भक्ति योग में प्रथम स्थान ज्ञान-योग का ही है। ज्ञान के बिना मानवीय स्तर पर प्रगति की कोई सम्भावना नहीं रहती।

यों खाने, नहाने, सोने, कमाने, बच्चे पैदा करने आदि शारीरिक प्रवृत्तियों का प्रकृति प्रदत्त ज्ञान पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों को भी होता है। उतनी ही जानकारी जिसे हो उसे अज्ञानी ही कहा जायेगा। जैसे सांस लेने, आहार पचाने, कमाने और खर्चने की मोटी जानकारियाँ हर शरीरधारी को शरीर धर्म के रूप में स्वतः ही बिना प्रयास के ही मिली हुई होती हैं। जो इतना ही जानते हैं वस्तुतः वे शरीरधर्मी जानकारी तक ही सीमित हैं। ज्ञान तो मानसिक चेतना के उस विकास को कहते हैं, जिसे विश्वव्यापी क्षेत्र में अब तक मानवीय शोधों एवं उपलब्धियों द्वारा हृदयंगम किया जाता है। इसी से व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का विकास होता है। यह विकसित व्यक्तित्व ही मनुष्यता की शोभा और शान है।

शिक्षा से व्यक्तित्व का विकास

मनुष्य को स्वाभाविक संस्कारगत, वंश परम्परा से प्राप्त चतुरता तो एक सीमा तक मिली हुई है, पर उसका विकास प्रयत्नों से ही सम्भव है। ज्ञान के अंकुर मात्र ही मानवीय चेतना में विद्यमान हैं, पर उनका विकास तभी सम्भव है, जब अनुकूल परिस्थितियों का सिंचन मिले। यह सिंचन अध्ययन अथवा संगति से प्राप्त होता है। बिना दूसरों के सिखाये मनुष्य की बुद्धिमत्ता किसी काम नहीं आती। छोटे बालक को जिन परिस्थितियों में रहना पड़ता है, वह उसी प्रकार का ढल जाता है। कुछ दिन पूर्व आगरा जिले के खन्दौली गाँव से एक मनुष्य बालक को एक मादा भेड़िया उठा ले गयी। उसने उसे खाया नहीं, अपना दूध पिलाकर पाल लिया। बच्चा छः वर्ष का हो गया। शिकारियों ने उस बच्चे को भेड़ियों की माँद में देखा, तो उन्होंने भेंड़ियों को मारकर बालक को

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पकड़ लिया। यह बालक आजकल लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में हैं, 'रामू' उसका नाम रखा गया है। बचपन से ही जैसा उसने सीखा, भेड़ियों की तरह ही वह चलता है, वैसे ही गुर्राता है, वैसे ही कच्चा माँस खाता है। उसकी सारी आदतें भेड़ियों जैसी ही हैं। मनुष्य की तरह रहने, सोचने, चलने की जानकारी उसे कराई जा रही है, पर अभी बहुत थोड़ी सफलता मिली है।

जंगली लोगों के बच्चों और सुसंस्कृत लोगों के बच्चों में जो अन्तर देखा जाता है, वह उनका जन्मजात नहीं वरन् वातावरण और संगति के प्रभाव का फल है। इस सुविधा से जिन्हें वंचित रहना पड़ता है, वे मानसिक दृष्टि से गई-गुजरी दशा में पड़े रह जाते हैं और जिन्हें उपयुक्त सुविधायें मिल जाती हैं, वे सुविकसित जीवन जीने की परिस्थितियाँ प्राप्त कर लेते हैं। इसलिए जिन्हें निकृष्ट परिस्थितियों में पड़ा नहीं रहना है, उन्हें ऐसी मानसिक परिस्थितियाँ प्राप्त करनी ही चाहिए, जिनके आधार पर उत्कर्ष की दिशा में आगे बढ़ सकना सम्भव हो सके।

एक ही उपाय विद्याध्ययन

दैनिक जन-सम्पर्क से तो कुछ सीखा ही जाता है—मात-पिता, कुटुम्बी, पड़ोसी एवं सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति तो कुछ सिखाते ही हैं, पर इस सीमित दायरे में भी बहुत थोड़ा ज्ञान होता है। उतने मात्र से काम नहीं चल सकता। मानव जाति ने अब तक जिस विशाल ज्ञान का संग्रह किया है, उससे भी लाभ उठाना आवश्यक होता है। इसके लिए एक ही उपाय है—विद्याध्ययन। साक्षरता ही वह प्रवेश द्वार है, जिसमें घुसकर हम यह देख समझ सकते हैं कि मनुष्य जाति ने अपने आदिकाल से लेकर अब तक क्या सोचा, क्या किया और क्या सीखा ? मनुष्यों द्वारा कमाये और जमा किये धन तो खर्च और नष्ट होते रहे हैं, पर उनकी उपार्जित ज्ञान-सम्पदा अभी भी सुरक्षित रखी हुई है, साथ ही उसकी यह भी एक विलक्षण विशेषता है जो भी चाहे उस महान् ज्ञानकोष को बिना किसी मूल्य या उत्तराधिकार के प्राप्त कर सकता है। पूर्वजों के धन को तो उनके वंशज या उत्तराधिकारी ही प्राप्त कर सकते हैं, पर ज्ञान भण्डार किसी भी महान् पुरुष द्वारा किसी भी क्षेत्र या दिशा में उपार्जित क्यों न हो, संसार के किसी भी देश का कोई भी व्यक्ति मनचाही मात्रा में चाहे जब प्राप्त कर सकता है, किन्तु इस उपलब्धि की एक अनिवार्य शर्त-प्रवेश फीस है—विद्याध्ययन। इसके बिना किसी के लिए भी यह सम्भव नहीं कि इस विश्व में विद्यमान महान् ज्ञान-धन का अपरिमित मात्रा में लाभ प्राप्त कर सके।

सम्बन्धित व्यक्तियों के पास तो बहुत थोड़ा ज्ञान और अवकाश होता है। उतने मात्र से शरीर निर्वाह की आवश्यकता पूर्ति ही की जा सकती है। किसान अपने लड़के को खेती और दुकानदार अपने बच्चों को खरीद-फरोख्त तो सिखा सकता है, पर अगणित दिशाओं में फैले हुए ज्ञान-विज्ञान की जिसे स्वयं जानकारी नहीं, वह अपने बालकों को कहाँ से सिखायेगा ? जो जितना अधिक जानता है, वह जीवन क्षेत्र में उतना ही अधिक सफल रहता है। अतएव ज्ञानवान होना ही सच्चे अर्थों में सामर्थ्यवान एवं सम्पत्तिवान बनना है। यह उपार्जन विद्याध्ययन के माध्यम से ही सम्भव है। इसलिए विद्या-पढ़ना-पढ़ाना मनुष्य का अत्यन्त आवश्यक कर्त्तव्य माना गया है। जो इसकी उपेक्षा करते हैं, उन्हें मानवीय विशेषताओं से पतित पशु बताया गया है। विद्या-विहीन को पशु की उपमा दी गई है।

अभिभावकों का कर्त्तव्य

प्रत्येक अभिभावक का यह परमपुनीत धर्म कर्त्तव्य है कि बालक को जन्म देने के साथ-साथ आई हुई जिम्मेदारियों में से भोजन-वस्त्र आदि की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर उसकी शिक्षा-दीक्षा का भी प्रबन्ध करे। जिस प्रकार कोई माता-पिता जन्म देने के बाद उसके पालन-पोषण की जिम्मेदारी से इनकार कर उसे कहीं झाड़ी आदि में फेंक दें तो वे अपराधी माने जायेंगे, ठीक उसी प्रकार जो लोग अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध न करके, उन्हें मानसिक विकास एवं मानव-जाति की संग्रहीत ज्ञान सम्पत्ति का साझीदार बनने से वंचित रखते हैं, वे भी उसे श्रेणी के अपराधी हैं जैसे कि बच्चे को भूखों मार डालने वाले। इस पाप एवं अपराध से मुक्ति पाने के लिए हर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभिभावक को अपने हर बच्चे की शिक्षा का चाहे वह लड़की हो चाहे लड़का, अपनी सामर्थ्यानुसार पूरा-पूरा प्रबन्ध करना होता है। इस धर्म कर्त्तव्य की पूर्ति का शुभारम्भ करते हुए उसे अपने उत्तरदायित्व को निभाने की घोषणा के रूप में बालक का विधारम्भ संस्कार करना पड़ता है। देवताओं की साक्षी में समाज को यह बताना पड़ता है कि मैं अपने परम पवित्र कर्त्तव्य को भूला नहीं हूँ, वरन् उसकी पूर्ति के लिए समुचित उत्साह के साथ कटिबद्ध हो रहा हूँ। ऐसा ही प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। किसी को भी अपनी सन्तान विद्या से वंचित न रहने देनी चाहिए।

शरीर की सामर्थ्य आहार के आधार पर बढ़ती रहती है। मन की सामर्थ्य विद्या के माध्यम से विकसित होती है। बालक के जन्मते और आहार करते समय जिस प्रकार उत्सव मनाया गया था, उसी प्रकार विद्याध्ययन के अवसर पर भी उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव अत्यन्त आवश्यक और सार्थक है। अन्धे को आँख मिलने के लिए ऐसे अस्पताल में भर्ती होने पर, जिसमें उसे दीखने लगना निश्चित ही है, सचमुच असाधारण रूप से प्रसन्न होना चाहिए। बालक के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए शिक्षा एक उज्ज्वल प्रकाश किरण की तरह है। उसका जीवन भवन में अवतरण हो रहा हो तो किसे उत्साह और उल्लास का अनुभव न होगा ?

विद्या सचमुच ज्ञान चक्षुओं का काम करती है। जिसे यह नेत्र नहीं मिले वह वस्तुओं के बाह्य स्वरूप को देख सकने वाला, चमड़े की आँखों वाला भर है। ज्ञान दृष्टि से वह वंचित व्यक्ति तत्वतः तो अन्धा ही माना जायेगा। यह हो सकता है कि कोई सुशिक्षित व्यक्ति कुमार्ग पर गया हो और उसने उपलब्ध ज्ञान का दुरुपयोग किया हो, पर इतना तो सुनिश्चित ही है कि कोई अशिक्षित व्यक्ति मानसिक या आत्मिक स्तर पर कुछ अधिक प्रगति नहीं कर सकता। संसार में जितने भी अशिक्षित व्यक्ति हैं उनमें से अधिकांश को पशुओं जैसी संकीर्ण मनःस्थिति में पड़े हुए ही अपना दिन गुजारना पड़ता है।

शास्त्र वचन है कि जिसे विद्या नहीं आती उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चारों फलों से वंचित रहना पड़ता है। इसलिए विद्या की अनिवार्य आवश्यकता है। यह बात इस संसार में उपस्थित प्रत्येक नर-नारी, बाल-वृद्ध को समझाई जानी चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि स्नान, भोजन, शयन आदि दैनिक नित्य कर्मों की तरह अध्ययन को भी एक अनिवार्य कर्त्तव्य समझें। जो थोड़ा पढ़े-लिखे हैं, वे अपनी शिक्षा आगे भी जारी रखें। जो नहीं पढ़े हैं, वे तत्काल आरम्भ कर दें। पढ़ने के लिए कभी कोई मनुष्य बूढ़ा नहीं होता। यह सही है कि विद्या बचपन में ही आरम्भ करनी चाहिए, पर यह सच नहीं है कि यदि बालकपन में पढ़ना आरम्भ नहीं किया गया या कम पढ़ा गया है तो फिर बड़ी आयु में इस सम्बन्ध में कुछ करना ही नहीं चाहिए। कोई व्यक्ति बचपन में भूलें करता रहा तो इसका अर्थ यह तो है नहीं कि बड़े होने पर भी उसी गलती को करते रहा जाय, उसमें कुछ सुधार न किया जाय। आयु की दृष्टि से मनुष्य चाहे बूढ़ा ही क्यों न हो गया हो, उसे कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि अब पढ़ने की आयु चली गई। जब तक जीवन है, तब तक हर घड़ी विद्यारम्भ के लिए शुभ मुहुर्त है। बालक का विद्यारम्भ संस्कार देखने के लिए उपस्थित व्यक्तियों में से प्रत्येक को विद्या की आवश्यकता, उपयोगिता एवं अनिवार्यता को समझना चाहिए। बच्चे को आशीर्वाद देना चाहिए तथा स्वयं के लिए यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम भी अपनी पढ़ाई आरम्भ करेंगे या जारी रखेंगे। अध्ययन मानवीय विकास की कुञ्जी है। इस तथ्य को बालक ही नहीं, हर उपस्थित व्यक्ति को भली प्रकार समझाना, स्वीकार करना चाहिए और इस संस्कार के उपरान्त अपनी तथा अपने से सम्बन्धित अन्य परिजनों की शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

संस्कार का कार्यारम्भ

माता बालक के दाहिनी ओर तथा पिता बायीं ओर बैठें, बच्चे को बीच में रखा जाय। पवित्रीकरण, आचमन, शिखा वन्दन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन, वरण, संकल्प, पञ्चामृत पान, मार्जन, दीप पूजन, कलश-पूजन, देव-पूजन, चन्दन-धारण, स्वस्ति-वाचन, रक्षा-विधान तक सारे कार्यक्रम अन्य संस्कारों की भाँति 'गायत्री हवन विधि' के अनुसार ही पूरे कर लेने चाहिए। इसके उपरान्त विद्यारम्भ संस्कार का विशेष कृत्य आरम्भ किया जाय। इसी स्थल पर उपरोक्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आधार पर विद्या की विशेषता से उपस्थित लोगों को परिचय कराया जाय और यह प्रभाव डाला जाय कि उपस्थित लोगों में से जो अपने बच्चों को, विशेषतया बच्चियों को पढ़ाने में लापरवाही, उपेक्षा बरत रहें हैं, वे उस भूल को तत्काल सुधारें। इसी प्रकार जो बड़ी आयु के हो चुके, पर अभी तक अशिक्षित ही रहे या थोड़ा पढ़कर उसे भूल गये, वे भी प्रेरणा प्राप्त करें और अधिक आयु हो जाने पर विचार मन में से निकालकर पुनः विद्याध्ययन का शुभ कार्य आरम्भ कर दें। विद्या की महत्ता बताने वाले, उसकी दिशा निर्धारित करने वाले ६ श्लोक इस प्रकरण में दिये गये हैं, उनकी व्याख्या-विवेचना करनी चाहिए। यह प्रवचन जितना प्रभावशाली होगा उतना ही विद्यारम्भ संस्कार का उद्देश्यपूर्ण हुआ माना जायेगा।

विद्यारम्भ संस्कार के विशेष कार्यक्रम में सबसे प्रथम गणेश और सरस्वती का पूजन किया जाता है। दो प्रतिमायें दोनों की रखी जाती हैं। चाँदी की पीतल की प्रतिमायें अक्सर बाजार में मिलती हैं। शीशे में मढ़े हुए चित्र भी इसके लिए प्रयुक्त किये जा सकते हैं। जहाँ यह व्यवस्था न हो सके, वहाँ एक-एक मुट्ठी चावल लाल-पीले रंगों में रंग कर दो ढेरियाँ चौकी पर लगा लेनी चाहिए। लाल रंग गणेश का और पीला रंग सरस्वती का माना गया है। इसलिए यह ढेरियाँ भी दोनों देवताओं का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं।

स्थापना के बाद दोनों का पूजन करना चाहिए। यदि थोड़ा अधिक अवकाश हो तो पुरुष सूक्त के १६ मन्त्रों से गणेश का और श्री सूक्त के १६ मन्त्रों से सरस्वती का षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। किस मन्त्र से पूजा की क्या वस्तु समर्पित की जा सकती है, इसका विधान संस्कार पद्धति में दिया हुआ है। समय कम हो तो पुरुष सूक्त से एक साथ ही दोनों प्रतिमाओं के आगे पूजा पदार्थ रखते हुए कृत्य कराया जा सकता है और भी जल्दी हो तो आसन समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्पयामि आदि सूत्रों से भी षोडशोपचार पूजन कराया जा सकता है।

षोडशोपचार के बाद दोनों देवताओं का विशेष पूजन पुष्पहार, गुलदस्ता, घृत, दीप, धूपबत्ती आदि की विशेष श्रद्धांजलि के द्वारा कराना चाहिए। गणेश पूजन का मन्त्र **'ॐ गणानांत्वा गणपति .....''** और सरस्वती पूजन का मन्त्र **''ॐ पावकानः सरस्वती .....''** है।

गणेश पूजन का रहस्य

गणेश को विद्या का और सरस्वती को शिक्षा का प्रतीक माना गया है। विद्या और शिक्षा दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है। शिक्षा उसे कहते हैं, जो स्कूलों में पढ़ाई जाती है। भाषा, लिपि, गणित इतिहास, शिल्प-रसायन, चिकित्सा, कला, विज्ञान आदि विभिन्न प्रकार के भौतिक ज्ञान इसी क्षेत्र में आते हैं। शिक्षा से मस्तिष्कीय क्षमता विकसित होती है और उससे लौकिक सम्पत्तियों, सुविधाओं, प्रतिष्ठाओं एवं अनुभूतियों का लाभ मिलता है। सांसारिक जीवन की सुख-सुविधा के लिए इस प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता भी है। ऊँचे वेतन, अच्छे व्यवसाय, सफल नेतृत्व मनोरम आकर्षण आदि विविध लाभ इसी आधार पर मिलते हैं। शिक्षा के बिना केवल शारीरिक श्रम एवं आकर्षण ही बच रहता है, जिसका मूल्य बौद्धिक क्षमता की तुलना में नगण्य है। एक वैज्ञानिक, इंजीनियर, कलाकार जितना कमा सकता है, उनकी तुलना में शारीरिक श्रम से बहुत ही स्वल्प उपार्जन सम्भव होता है। मात्र शारीरिक श्रम करने वाला मजदूर उतना कभी भी नहीं कमा सकता जितना बुद्धिजीवी, विद्वान् एवं सुशिक्षित व्यक्ति धन तथा अन्य सुख-साधन उपार्जित करता है। शिक्षा को लौकिक प्रगति की कुञ्जी कहें तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति न होगी। भगवती सरस्वती की जो आराधना करता है, उसे लौकिक सुख-साधनों की कमी नहीं रहती।

विद्या का प्रतिनिधित्व गणेश करते हैं। विद्या का अर्थ है विवेक एवं सद्भाव की शक्ति। सद्गुण इसी वर्ग में गिने जाते हैं। उचित और अनुचित का, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का विवेक विद्वानों को ही होता है। आज के छोटे-से लाभ-हानि की तुलना में वे दूरवर्ती हानि-लाभ को महत्त्व देते हैं और इतना साहस और धैर्य बनाये रहते हैं, जिनके आधार पर दूरवर्ती बड़े लाभ के लिए वर्तमान में थोड़ा कष्ट सह सकें अथवा भविष्य की अधिक हानि की कठिनाइयों का स्वरूप समझते हुए आज के छोटे-मोटे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रलोभन या आकर्षण का परित्याग कर सकें। विचारों और कर्मों को सुव्यवस्थित बनाने के लिए किया हुआ श्रम, गणेश आराधना के लिए किया गया तप ही मानना चाहिए। आदर्शवादिता की उच्चस्तरीय सद्भावनाओं का समावेश जिस विचारणा में सन्निहित हो, उसे गणेश कहना चाहिए।

गणेश का पूजन शुभ कार्य में सबसे प्रथम किया जाता है, इसका तात्पर्य यह है कि उस कार्य के मूल में सदुद्देश्य का समावेश होना चाहिए। सदुद्देश्य के लिए किये गये कार्यों की ही सराहना है, क्योंकि उन्हीं से व्यक्ति का, समाज का वास्तविक कल्याण होता है। अनुचित तरीकों से कई सफलतायें चतुर व्यक्ति प्राप्त तो कर लेते हैं, पर उनका अन्ततः दुष्परिणाम ही होता है। इस तरह की सफलतायें मनुष्य को कुमार्ग पर चलने और दुष्प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इस ओर कदम बढ़ने लगे तो फिर नाश ही निश्चित है। दोष-दुर्गुणों के बढ़ते रहने से जो थोड़ी-बहुत भौतिक सफलता मिली थी, उसका कोई महत्व नहीं रह जाता। आदर्शहीनता व्यक्तित्व का महत्व ही नष्ट कर देती है। गलत गतिविधियाँ अपनाने वालों को दूसरों के सम्मान, विश्वास, सद्भाव एवं सहयोग से वंचित होना पड़ता है और यह हानि इतनी बड़ी है कि बहुत-सी दौलत कमा लेने पर भी उसकी क्षति पूर्ति नहीं हो सकती। अन्तरात्मा का कलुषित होना एक ऐसी दुर्घटना है जिस के साथ अनेकों आपत्तियाँ-विपत्तियाँ जुड़ी रहती हैं। अतएव सबसे अधिक सतर्कता यह रखी जानी चाहिए कि हम जो सोचते या करते हैं उसमें अनैतिकता का समावेश तो नहीं हो रहा है ? इसमें सदुद्देश्य की प्रधानता है या नहीं ? इस तथ्य को ध्यान में रखने की बात गणेश पूजन द्वारा पूरी की जाती है। प्रत्येक कार्य की वास्तविक एवं चिरस्थाई सफलता का आधार यही है। इसलिए धार्मिक परम्परा यही चली आती है कि कार्य को आरम्भ करने से पूर्व अन्य देवताओं को पूजने से पहले गणेशजी का आह्वान, आराधन, अभिवादन किया जाय।

सरस्वती पूजन का मर्म

विद्यारम्भ संस्कार आरम्भ करते हुए बच्चों से गणेश एवं सरस्वती का पूजन कराया जाता है। गणेश का स्थान प्रथम और सरस्वती का दूसरा है। भावना को प्रधान और चतुरता को गौण माना गया है। शिक्षा के, चतुरता के ऊपर विवेक एवं आदर्श को अंकुश लिये हुए देखा जा सकता है। धर्म, कर्त्तव्य एवं औचित्य का गणेश का नियन्त्रण हमारी सारी गतिविधियों पर होना चाहिए अन्यथा वे निरंकुश होकर उच्छृंखलता बरतेंगी और पतन के गहन गर्त में गिरा देंगी। बालक विद्या चाहे जितनी पढ़े, विद्वान् और क्रियाकुशल कितना ही अधिक क्यों न हो जाय ? उसे आजीवन यह ध्यान रखना चाहिए कि सदुद्देश्य से एक कदम भी विचलित न हुआ जाय। समृद्धियों एवं विभूतियों को तनिक भी उच्छृंखल न होने दिया जाय। शिक्षा और बुद्धि का दुरुपयोग न होने पाए। उनके द्वारा जो भी प्रगति हो वह पतन की ओर नहीं उत्थान की ओर ही ले जाने वाली हो। मस्तिष्क पर सदैव विवेक का नियन्त्रण बना रहे, इस तथ्य को भाव में प्रतिष्ठापित करने के लिए बालक विद्यारम्भ के समय गणेश पूजन करता है।

गणेश के बाद सरस्वती पूजन का नम्बर आता है। ज्ञान-संचय की साधना इस संसार में सर्वोपरि पुरुषार्थ है। मानसिक विकास के ऊपर व्यक्तित्व का विकास निर्भर है और विकसित व्यक्तित्व द्वारा ही सम्पत्तियाँ एवं विभूतियाँ उपार्जित की जाती हैं। मानसिक विकास के लिए चिन्तन मनन, सत्संग आदि भी उपाय हैं, पर उन सबका मूल शिक्षा ही है। शिक्षा के बिना मस्तिष्क का इतना विकास भी तो नहीं हो पाता कि वह महत्त्वपूर्ण विषयों की भूमिका को भी ठीक तरह समझ सके। अशिक्षित लोगों के सामने किसी गम्भीर विषय पर प्रवचन किया जाय तो वे उसका एक स्वल्प अंश ही ग्रहण कर पाते हैं। शेष उनकी समझ में ही नहीं आता। विचारों के अधिक विस्तृत परिधि में घूम सकने की क्षमता शिक्षा से ही आती है। अशिक्षित व्यक्ति कितना ही बुद्धिमान् क्यों न हो, उसकी बुद्धिमत्ता एक बहुत छोटी परिधि तक ही सीमित रहेगी। जो विषय उसके दैनिक जीवन में सीधे सम्बन्ध नहीं रखते उनके विषय में वह अनजान ही बना रहता है। वह शिक्षा ही है, जो मनुष्य शरीर में सबसे महत्त्वपूर्ण मस्तिष्क को विकसित करके जीवन के सभी क्षेत्रों में विविध-विधि सफलताओं का द्वार खोलती है। इसलिए परमेश्वर की अर्धांगिनी की तरह सरस्वती की उपासना करनी चाहिए। ब्रह्मा को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही ब्रह्म कहते हैं। ज्ञान और विवेक के देवता ब्रह्मा की पत्नी, अर्धांगिनी सरस्वती है। सरस्वती अर्थात्-शिक्षा। जो सुशिक्षित है उसे ब्रह्म के आधे अंग की प्राप्ति हो गई समझनी चाहिए।

माता का अनुग्रह प्यार मिलने पर पिता का भी ध्यान बालक पर रहता है। प्रकृति परमेश्वर के—सरस्वती और ब्रह्मा के जोड़े में से एक ने स्थूल और दूसरे ने सूक्ष्म जगत् की विधि-व्यवस्था अपने हाथ में सँभाली हुई है। शिक्षा की, सरस्वती की आराधना से लौकिक-जीवन की सुख-शान्ति एवं समृद्धि बढ़ती है। ब्रह्म की उपासना से, ईश्वराधन से सूक्ष्म जगत् में, आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति होती है। मनुष्य जीवन सुविधाओं और समृद्धियों की अपेक्षा करता है इसलिए उसे सरस्वती की साधना करनी होती है। दुर्दशा में पड़ा हुआ व्यक्ति ब्रह्म की प्राप्ति भी नहीं कर सकता, इसलिए शिक्षा प्राप्ति को भी एक ऐसी साधना तपश्चर्या माना गया है, जिसका प्रत्यक्ष वरदान मिलने में किसी के लिए कोई सन्देह करने की गुञ्जायश नहीं।

अशिक्षित व्यक्ति अज्ञानग्रसित रहने के कारण किसी भी दिशा में कोई महत्वपूर्ण प्रगति नहीं कर सकता और उसे पशु स्तर में पड़े हुए अपना जीवन गुजारना पड़ता है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए बालक को विद्याध्ययन में श्रद्धा भावना उत्पन्न करनी चाहिए। बेगार भुगतने की तरह घर वालों के दबाव में अनिच्छापूर्वक बस किसी प्रकार पढ़ाई पूरी करता रहे यह पर्याप्त नहीं। विद्या प्राप्ति का उद्देश्य नौकरी प्राप्त करना जैसा निकृष्ट नहीं होना चाहिए। हमें नौकरी नहीं करनी है तो क्यों पढ़ें ? ऐसा ओछा विचार किसी को मन में नहीं लाना चाहिए। शिक्षितों को अधिक पैसे की नौकरी मिल जाती है, यह उसका गौण लाभ है। मूल लाभ तो मानसिक स्तर एवं व्यक्तित्व का विकास करना है। अतएव जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है, नौकरी नहीं करनी चाहिए। उन्हें बचपन में ही नहीं वरन् आजीवन विद्याध्ययन करते रहने में प्रयत्नशील रहना चाहिए। बूढ़े हो जाने पर भी पढ़ना न छोड़ना चाहिए। स्कूली पढ़ाई जहाँ तक सम्भव हो, जब तक सम्भव हो करते रहना चाहिए। किन्तु इसके उपरान्त भी यह व्रत लेना चाहिए कि जब तक जीयेंगे अपना अध्ययन क्रम सदा जारी रखेंगे, कभी बन्द न करेंगे।

सरस्वती पूजन इसी भावना से करना चाहिए। माता का स्नेह जिस प्रकार पुत्र को आजीवन आवश्यक रहता है, उसी प्रकार विद्या सरस्वती का अनुग्रह भी मनुष्य पर आजीवन रहना चाहिए। सरस्वती माता हमारी प्रत्यक्ष देवी है। अध्ययन के द्वारा ही उनकी आराधना होती है। उपासना, आहार, स्नान, शयन आदि की तरह अध्ययन भी हमारे दैनिक जीवन का एक आवश्यक अंग बना रहे तो समझना चाहिए कि सरस्वती पूजन का वास्तविक तात्पर्य समझ लिया गया।

उपकरणों की पवित्रता

गणेश और सरस्वती पूजन के उपरान्त शिक्षा उपकरणों का-दवात, कलम और पट्टी का पूजन किया जाता है। शिक्षा प्राप्ति के लिए यह तीनों ही प्रधान उपकरण हैं। इन्हें वेदमंत्रों से अभिमन्त्रित किया जाता है ताकि उनका प्रारम्भिक प्रभाव कल्याणकारक हो सके। विद्या प्राप्ति में सहायता मिल सके। मन्त्रों से इन तीनों को पवित्र-अभिमन्त्रित किया जाता है, ताकि इन उपकरणों में पवित्रता स्थिर रखी जा सके।

उपकरणों की पवित्रता हर कार्य में आवश्यक है। साधन पवित्र होंगे तो ही साध्य की उत्कृष्टता कायम रखी जा सकेगी। गलत उपायों से दूषित उपकरणों से, यदि कोई सफलता प्राप्त कर भी ली जाय तो उस सफलता का लाभ उतना सुखप्रद नहीं होता जितना कि अनुपयुक्त माध्यमों को अपनाने से बिगड़ा अपना स्वभाव अपने लिए दूरगामी अहित एवं अनिष्ट उत्पन्न करता है। जिस प्रकार स्वच्छ बर्तन में रखा हुआ दूध ही पीने योग्य होता है, मैले-गन्दे बर्तन में रखने पर वह फट जाता है और पीने पर रोग विकार उत्पन्न करता है, उसी प्रकार अनुपयुक्त उपकरणों से जो भी किया किया जाता है, वह बाहर से कितना ही अच्छा क्यों न दीखता हो, कितनी ही जल्दी सफल क्यों न हुआ हो, अवांछनीय ही है। अवांछनीय परम्परायें अनेक व्यक्तियों को वैसी ही प्रेरणा देती हैं और वे भी उचित-अनुचित का भेद छोड़कर जिस तरह भी बने, इस तरह अपना काम बनाने की नीति पर विश्वास करने लगते हैं। स्वयं को भी वैसी ही आदत पड़ जाती है। इस पथ भ्रष्टता से उत्पन्न हुई हानि की पूर्ति उस धन से कभी भी नहीं हो सकती, जो गलत साधनों से कमाया गया है। बड़े से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बड़ा लाभ भी अनैतिकता के अभ्यास से होने वाली हानि की तुलना में नगण्य है। अतएव मनीषियों द्वारा सदा ही यही कहा जाता रहा है कि साध्य की अच्छाई का ही नहीं उपकरणों की पवित्रता का भी ध्यान रखा जाय।

विद्या प्राप्ति के उपकरणों का भी पवित्र होना आवश्यक है। इसलिए कलम, दवात, पट्टी आदि का सर्वप्रथम भावनात्मक पवित्रीकरण किया जाता है। पूजा प्रक्रिया का उद्देश्य भी यही है कि वस्तुओं में, उपकरणों में, वातावरण में तथा भावनाओं में पवित्रता का समावेश किया जाय, बिजली, भाप, अग्नि, तेल आदि की तरह श्रद्धा में भी अपनी निज की शक्ति रहती है। पत्थर की प्रतिमा श्रद्धा के आधार पर ही भगवान् दिखाई देती है। श्रद्धा मान्यताओं की रक्षा के लिए मनुष्य हँसते-हँसते प्राणों का परित्याग कर देता है। भावनात्मक शक्ति स्रोत श्रद्धा में ही सन्निहित है। उपकरणों में पवित्रता की श्रद्धा उत्पन्न करने से उनके उपयोग में मनुष्य सदा भावनान्वित रहता है और उनके आगे आशाजनक प्रगति करता है। कलम, दवात, पट्टी, पुस्तक आदि को प्राचीन समय के छात्र बड़ी पवित्र दृष्टि से देखते थे, उन्हें अपवित्र स्थानों में नहीं रखते थे, अपवित्र हाथों से नहीं छूते थे। भूलवश इनमें से किसी से भी पैर लग जाय तो पश्चाताप की तरह उसे मस्तक से लगाते थे। पुस्तक, पट्टी, कलम आदि को इस तरह सावधानी से पकड़ते थे कि वे टूटने-फूटने न पावें। फलस्वरूप वे देर तक चलती थीं। इसके अतिरिक्त उनके प्रयोग करते समय किसी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति, दैवी अनुकम्पा की उपलब्धि का जो ध्यान बना रहता था, उससे भावनात्मक लाभ बहुत होता था। श्रद्धा से अभिरुचि उत्पन्न होती थी, तत्परता एवं सतर्कता बरतने का, एकाग्र होने का अवसर मिलता था। इस प्रकार की मनःस्थिति शिक्षार्थी के हित में ही थी, अध्ययन में सफलता एवं प्रगति की सम्भावना इससे बहुत बढ़ जाती थी। अब समय बदल गया है। विद्या प्राप्ति के उपकरणों की पवित्रता पर आस्था नहीं रही, फलस्वरूप पुस्तकों, कलम, दवात आदि के टूटने-फूटने का खर्च ही नहीं बढ़ा, इन वस्तुओं को तुच्छ समझने की मान्यता के साथ-साथ विद्या प्राप्ति के महत्त्व एवं गौरव को भी स्वल्प समझा जाने लगा। इससे विद्या प्राप्ति की दिशा में अवरोध ही उत्पन्न हुआ है।

विद्यारम्भ संस्कार का प्रयोजन यह है कि शिक्षार्थी का ध्यान विद्या की महत्ता एवं उसे प्राप्त करने के उपकरणों की पवित्रता की ओर आकर्षित किया जाय। अध्ययन तो एक निमित्त मात्र है। वस्तुतः "उपकरणों की पवित्रता" यह एक दृष्टिकोण एवं आदर्श है, जिसे हर क्षेत्र में अपनाया जाना चाहिए। हम जो कुछ भी कार्य, व्यवहार एवं प्रयोग करें, उसमें इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखें कि किसी प्रलोभन या जल्दबाजी में अनुपयुक्त साधनों का उपयोग न किया जाय। अपना हर उपकरण पूरी तरह पवित्र रहे।

शिक्षा की तीन अधिष्ठात्री देवियाँ

उपासना-विज्ञान की मान्यताओं के आधार पर कलम की अधिष्ठात्री देवी 'धृति', दवात की अधिष्ठात्री देवी 'पुष्टि' और पट्टी की अधिष्ठात्री देवी 'तुष्टि' मानी गई है। षोडश मात्रिकाओं में यह भी तीन देवियाँ हैं। देवियाँ किन्हीं शक्तियों एवं भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो विद्या प्राप्ति के लिए आधारभूत हैं। विद्यारम्भ संस्कार में कलम-पूजन का मन्त्र बोलते समय धृति का, दवात का पूजन करते समय पुष्टि का एवं पट्टी का पूजन करते समय तुष्टि का आह्वान करते हैं। निर्धारित मन्त्रों में उन्हीं की वन्दना अभिव्यञ्जना की गई है।

कलम-पूजन

विद्यारम्भ करते हुए सबसे पहले कलम हाथ में लेनी पड़ती है। कलम से ही विद्या आरम्भ होता है। उसे पकड़कर ही अक्षराम्भ होता है। कलम की देवी धृति का अर्थ है—अभिरुचि। विद्या प्राप्त करने वाले अन्तःकरण में यदि उसके लिए अभिरुचि होगी, तो प्रगति के समस्त साधन बनते चले जायेंगे। बिना रुचि जागृत हुए पढ़ना ही नहीं, कोई भी काम भार रूप प्रतीत होता है, उसमें मन नहीं लगता, अधूरे मन से किये हुए काम तो अस्त-व्यस्त एवं बेतुके रहते ही हैं। ऐसी दशा में कोई उल्लेखनीय सफलता भी नहीं मिलती। तीव्र बुद्धि और बढ़िया मस्तिष्क भी तब कुछ विशेष उपयोगी सिद्ध नहीं होते। किन्तु यदि पढ़ने में तीव्र अभिरुचि हो तो मन्द बुद्धि व्यक्ति भी अपने अध्यवसाय के बल पर आशाजनक प्रगति कर लेते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कालिदास, बोपदेव आदि के अनेक उदाहरण ऐसे हैं जिसमें मन्द बुद्धि व्यक्तियों द्वारा अभिरुचि जाग पड़ने पर उच्चकोटि के विद्वानों में स्थान पाने के प्रमाण मिलते हैं। मन्दचर कछुए ने तीव्रगामी खरगोश से निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने की बाजी जीती थी, यह कथा प्रसिद्ध है। विद्या प्राप्ति में असफल रहे हुए व्यक्तियों में से अधिकांश में एक ही दोष रहता है कि वे इस महान उपलब्धि का महत्त्व नहीं समझते और अध्ययन में जो रस और लाभ है, उससे अपरिचित बने रहते हैं। यदि वे उन लाभों को समझ पाते, जो विद्याध्ययन द्वारा प्राप्त हो सकते हैं, यदि वे उन सम्भावनाओं को जान पाते, जो शिक्षित होने पर उपलब्ध हो सकती है तो निश्चय ही पढ़ने की ओर उनकी अभिरुचि जगी होती और उस जागरण के उपरान्त मस्तिष्क सम्बन्धी कमजोरी, साधनों की असुविधा, समय न मिलना आदि सभी कमियों को पूरा करने का मार्ग मिल गया होता। जहाँ तीव्र इच्छा है, वहाँ प्रगति का द्वार खुला ही पड़ा हुआ समझना चाहिए।

अभिभावकों का कर्त्तव्य है कि शिक्षार्थी की अभिरुचि जगावें, उसे विद्या प्राप्ति के लाभ बतावें। उनके उदाहरण सुनावें, जो पढ़े-लिखे होने के कारण ऊँची स्थिति प्राप्त करने में—धन, यश एवं सुविधा साधन उपार्जित कर सकने में सफल हुए। साथ ही ऐसे उदाहरण भी सुनाने चाहिए, जिनमें पारिवारिक सुख-साधनों में सन्तुष्ट लड़कों ने पढ़ने में उपेक्षा की और अन्त में साधन जब बिखर गये, तब उन्हें अपने अशिक्षित, अविकसित व्यक्तित्व के आधार पर जीवनयापन के साधन जुटाने में कितनी कठिनाई उठानी पड़ी। शिक्षा मनुष्यत्व का सम्मान है और अशिक्षित होना अपमान। अशिक्षित या स्वल्प शिक्षित रहना किसी व्यक्ति के पारिवारिक या वैयक्तिक स्तर के गिरे हुए होने का ही प्रमाण माना जाता है। इस अपमान से हर किसी को बचाया जाना चाहिए।

शिक्षा संस्थानों में इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि अध्ययन रूखा विषय न बन जाय जिससे शिक्षार्थी का मन ऊबने लगे। आकर्षक एवं मनोरंजक ढंग से पढ़ाने की पद्धति छोटे बच्चों के लिए तो अनिवार्य रूप से आवश्यक है। बड़ों के लिए भी विद्यालयों का वातावरण जेलखानों जैसा नहीं वरन् मनोरंजन, क्लब एवं खेलकूद प्रतिष्ठानों जैसा होना चाहिए, जिसमें कितना ही अधिक किया गया श्रम भी विनोद जैसा ही प्रतीत हो। वह थकाने वाला भार रूप प्रतीत न हो। तात्पर्य यह है कि 'धृति' की अभिव्यंजना कलम का पूजन कराते समय इस प्रकार की जाय कि शिक्षार्थी की अभिरुचि अध्ययन में निरन्तर बढ़ती जाय। धूप, दीप, अक्षत, पुष्प, कलावा आदि से कलम को **'ॐ पुरुदस्मो . . . . . '** मन्त्र में पूजा जाय और साथ ही इस बात को गाँठ में बाँध लिया जाय कि पढ़ने वाले की अभिरुचि में शिथिलता न आने पाए इसकी आवश्यक देखभाल एवं व्यवस्था की जाती रहेगी।

दवात की पूजा

कलम का उपयोग दवात के द्वारा होता है। स्याही या खड़िया के सहारे ही कलम कुछ लिख पाती है। इसलिए कलम के बाद दवात के पूजन का नम्बर आता है। दवात की अधिष्ठात्री देवी 'पुष्टि' है, पुष्टि का अर्थ है—एकाग्रता। एकाग्रता से ही अध्ययन की प्रक्रिया गतिशील-अग्रगामी होती है। कितने ही व्यक्ति तीव्र बुद्धि होते हैं, मस्तिष्क बढ़िया काम करता है, पढ़ना भी चाहते हैं, पर मन अनेक दिशाओं में भागा-भागा फिरता है। एकाग्र नहीं होता, चंचलता भरी रहती है। प्रस्तुत विषय में चित्त जमता नहीं। ऐसे डाँवाडोल मन वाले शिक्षार्थी की प्रगति संदिग्ध ही बनी रहती है जब चित्त लगेगा ही नहीं तो मस्तिष्क पकड़ेगा क्या ? जब कोई बात पकड़ में ही नहीं आ रही है तो उसके स्मरण रहने का साधन ही क्या रह गया ? ऐसी दशा में बहुत बड़ी-बड़ी कल्पनायें, आशायें और महत्त्वाकांक्षायें रखने वाले व्यक्ति भी अभीष्ट प्रयोजन पूरा नहीं कर पाते। इसके विपरीत जो लोग पूरा ध्यान देकर एकाग्रता तत्परता एवं बारीकी समझते हुए पढ़ने की आदत डाल लेते हैं समझ-समझकर पढ़ते हैं, उनका मस्तिष्क मन्दबुद्धि होने पर भी सफलता का पथ प्रशस्त होता रहता है। स्मरण शक्ति की कमी की शिकायत वे ही लोग करते हैं, जिनका मन डाँवाडोल रहता है। आधे-चौथाई मन से पढ़ी हुई,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुनी हुई बात का शरीर तो कहीं अन्यत्र चला जाता है—पूँछ ही हाथ पड़ती है। किसी की स्मरण शक्ति वस्तुतः कम भी हो, तो सावधानी के साथ दत्तचित्त होकर पढ़ने पर वह कमी सहज ही पूरी हो जाती है। आरम्भ में मन्दबुद्धि समझे जाने वाले शिक्षार्थी आगे चलकर बहुत ही प्रतिभावान२ सिद्ध होते हुए भी देखे गये हैं। इस आश्चर्यजनक परिवर्तन के पीछे उनकी एकाग्रता ही प्रधान कारण रही होती है।

दवात पूजन के समय **"ॐ देवी-स्तिस्रस्तिस्त्रो ....."** मन्त्र बोला जाता है। पञ्चोपचार से दबात के कण्ठ में कलावा बाँधा जाता तथा रोली, धूप, दीप, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन किया जाता है। यह दबात की अधिष्ठात्री देवी 'पुष्टि' का अभिवन्दन है। इस पूजा का प्रयोजन यह है कि शिक्षार्थी को एकाग्रता का महत्त्व समझाया जाना चाहिए और इसका उसे व्यावहारिक अभ्यास भी कराया जाना चाहिए। समुचित मात्रा में अभिरुचि हो और साथ ही एकाग्रता का अभ्यास हो जाय तो फिर विद्या-लाभ की दिशा में आशाजनक सफलता सम्भव हो जाती है।

पट्टी पूजन

उपकरणों में तीसरा पूजन पट्टी का है। कलम, दवात की व्यवस्था हो जाने पर उसका उपयोग पट्टी या कापी कागज पर ही होता है। इनकी अधिष्ठात्री देवी 'तुष्टि' है। तुष्टि का अर्थ है—श्रमशीलता। अध्ययन के लिए श्रम की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि अभिरुचि एवं एकाग्रता की। किसी छात्र की पढ़ने में अभिरुचि भी है, चित्त भी एकाग्र कर लेता है, पर आलसी स्वभाव होने के कारण परिश्रम नहीं करता, जल्दी ही ऊब जाता है और पढ़ाई बन्द करके दूसरे काम में लग जाता है, तो देर तक लगातार मेहनत न करने का दुर्गुण उसकी अन्य विशेषताओं पर पानी फेर देता है। जिस प्रकार भौतिक, निर्माणात्मक कार्यों की सफलता शारीरिक श्रम पर निर्भर रहती है, उसी तरह मानसिक उपलब्धियाँ मानसिक श्रम पर अवलम्बित हैं। श्रम के बिना इस संसार में कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। साधन कितने ही प्रचुर एवं प्रखर क्यों न हों, उनका लाभ तो तभी मिलेगा, जब उनका उपयोग किया जायेगा। उपयोग में श्रम अपेक्षित है। इस ऊबड़-खाबड़ दुनियाँ को सुरम्य, सुव्यवस्थित बनाने का श्रेय मानवीय श्रम को ही है। यदि लोग आलसी बने पड़े रहते तो अन्य पशुओं की तरह उदर-पूर्ति ही मुश्किल से हो पाती है। कृषि, उद्योग, शिल्प, शिक्षा, विश्राम आदि की जो अद्भुत उपलब्धियाँ दृष्टिगोचर होती हैं, उनका कहीं अता-पता भी नहीं होता। संसार की दृश्यमान शक्तियों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण श्रम शक्ति ही है, जो इसका ठीक तरह उपयोग कर सकता है, वही सच्चा तपस्वी है। पुराणों में ऐसी सहस्रों कथायें पढ़ने को मिलती हैं, जिनमें तपस्या के फलस्वरूप अनेक प्रकार की सिद्धियाँ, विभूतियाँ एवं वरदान मिलने का उल्लेख है। यह तप और कुछ नहीं शारीरिक एवं मानसिक अनवरत कठोर श्रम को ही तपस्या कहा गया है। श्रमनिष्ठ ही सच्चा तपस्वी है। विभूतियाँ उसके चारों ओर आरती उतारती फिरती रहा करती हैं। हीरा खराद पर छीलने से ही चमकता है, तलवार की धार शान के पत्थर पर घिसने से तीव्र होती है। मनुष्य के अन्तराल में छिपी हुई एक से एक अद्भुत प्रतिभाओं एवं क्षमताओं का विकास भी अनवरत मानसिक श्रम एवं अध्यवसाय से ही होता है। इसलिए शिक्षार्थी को परिश्रमी भी होना चाहिए। उसे पढ़ने में जी लगाकर मेहनत करने का अभ्यास बनाना चाहिए। यह आदत जिस प्रकार पड़े उसका उपाय अभिभावकों को करना चाहिए।

पट्टी की अधिष्ठात्री देवी 'तुष्टि' का पूजन **'ॐ सरस्वती योन्यां ....."** मन्त्र से रोली, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प, कलावा आदि उपकरणों से किया जाता है। पट्टी, दवात, कलम तीनों उपकरणों का पूजन करने के साथ-साथ तथ्य भी हृदयंगम किये जाते हैं कि हमारे सभी साधन पवित्र हों। विद्या भी पवित्र साधनों से पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्राप्त की जाय। अभिरुचि, एकाग्रता और श्रमशीलता का आधार लेकर विद्या लाभ के महत्त्वपूर्ण मार्ग पर आगे बढ़ा जाय।

शिक्षा प्राप्ति के लिए अध्यापक के सान्निध्य में जाना पड़ता है। जिस तरह गौ अपने बछड़े

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को दूध पिलाती है, उसी तरह गुरु भी शिष्य को विद्यारूपी अमृत पिलाते हैं। इस प्रक्रिया में परस्पर श्रद्धा-सद्भावना का होना आवश्यक है। गाय और बछड़े के बीच प्रेम न हो तो दूध पीने और पिलाने की प्रक्रिया कैसे चले ? इसी प्रकार शिक्षार्थी अध्यापक के प्रति श्रद्धा और अध्यापक शिक्षार्थी के प्रति वात्सल्य न रखे तो ऊपरी मन से, रुखाई के साथ सिखाने का कार्य सारहीन ही रहेगा। जिस प्रकार गाढ़ी कमाई का पैसा ही फलता-फूलता है, उसी प्रकार गुरु के प्रति श्रद्धा, सद्भावना रखकर उनका स्नेह, वात्सल्य प्राप्त करते हुए जो सीखा जाता है वह जीवन में लाभदायक सिद्ध होता है। परस्पर उपेक्षा, उदासीनता अथवा मनोमालिन्य, तिरस्कार के भाव रखकर सिखाने से एक तो विद्या आती ही नहीं, यदि आती भी है तो वह फलती-फूलती नहीं। माता-पिता की तरह गुरु का भी स्थान है। माता को ब्रह्मा, पिता को विष्णु और गुरु को महेश कहा गया है। यह तीनों ही देवताओं की तरह श्रद्धा, सम्मान के पात्र हैं। अतएव विद्यारम्भ संस्कार में गुरु पूजन को एक अंग माना गया है। कलम, दवात, पट्टी का पूजन करने के उपरान्त शिक्षा आरम्भ कराने वाले गुरु को पुष्प माला, कलावा, तिलक, आरती, फल आदि की श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए नमस्कारपूर्वक पूजन करना चाहिए। **ॐ गुरुर्ब्रह्मा ....."** श्लोक से अथवा **"ॐ बृहस्पते अति य दर्यो ....."** मन्त्र से पूजन किया जाता है।

इस पूजन का प्रयोजन यह है कि शिक्षार्थी अपने शिक्षकों के प्रति पिता जैसी श्रद्धा रखे, उन्हें समय-समय पर प्रणाम अभिवादन करे, समुचित शिष्टाचार बरते, अनुशासन माने और जैसा वे निर्देश करें वैसा आचरण करे। अपने परिश्रम और शिष्टाचार से उन्हें प्रसन्न रखने का प्रयत्न करे। इसी प्रकार अध्यापक का भी कर्त्तव्य है कि वह शिक्षार्थी को अपने पुत्र की तरह समझे, उसे अक्षर-ज्ञान ही नहीं स्नेह, सद्भाव, वात्सल्य भी प्रदान करें। बालकों से अक्सर अधिक गलतियाँ होती रहती हैं, उनका बुरा न माने वरन् उदारतापूर्वक उन्हें सँभालने-सुधारने का यथोचित प्रयत्न करता रहे। पुत्र उत्पन्न कर लेने पर जैसे पिता के कन्धों पर उसके लालन-पालन, भरण-पोषण, शिक्षा-दीक्षा आदि की जिम्मेदारियाँ आती है, वैसे ही शिक्षक के ऊपर केवल अक्षर ज्ञान करा देने मात्र का ही नहीं वरन् उसके संस्कार, आचार-विचार, व्यवहार में आवश्यक उत्कृष्टता लाने का भी उत्तरदायित्व है। शिक्षक को दोनों ही दिशा में प्रयत्नशील रहना होता है। अक्षरज्ञान के साथ-साथ ऐसा भी प्रयत्न करना होता है कि छात्र का मस्तिष्क एवं हृदय भी विशाल होता चले। उनके गुण-कर्म-स्वभाव में शालीनता की मात्रा दिन-दिन बढ़ती रहे। विद्यारम्भ संस्कार के अवसर पर छात्र एवं अध्यापक दोनों को ही अपने कर्त्तव्यों को समझना चाहिए और उन्हें पालन करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

अक्षरारम्भ

इसके पश्चात् पट्टी पर बालक के हाथ से **'ॐ भूर्भुवः स्वः'** शब्द लिखाये जायें। खड़िया से उन अक्षरों को अध्यापक बना दे और बालक उस पर कलम फेरकर अक्षर बना दे अथवा अध्यापक और छात्र दोनों कलम पकड़ लें और उपरोक्त पंचाक्षरी गायत्री मन्त्र पट्टी पर लिख दें।

ॐ परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है। भूःभुवः स्वः के यों अनेक प्रयोजनों के लिए अनेक अर्थ हैं पर विद्यारम्भ संस्कार में उनके गुण-बोधक अर्थ ही व्याख्या योग्य हैं। भूः का तात्पर्य श्रम, भुवः का संयम और स्वः का विवेक है। शिक्षा का प्रयोजन इन तीन महान प्रवृत्तियों को जागृत समुन्नत करना ही है। शिक्षित व्यक्ति यदि परिश्रमी, संयमी और विवेकवान् है तो समझना चाहिए कि उसका पढ़ना सार्थक हुआ अन्यथा पढ़े गधे तो लगभग करोड़ों गली-कूचों में भरे पड़े हैं, वे अधिक पैसा बनाने और अधिक खुराफात करने के अतिरिक्त और कुछ बड़ी बात कर नहीं पाते। विद्यारम्भ करते हुए सबसे प्रथम यह पाँच अक्षर इसलिए लिखाये जाते हैं कि बालक ॐ परमात्मा को अपनी मनोभूमि में सर्वोपरि स्थान दे। आस्तिक बने, ईश्वर से डरे, सदाचारी बने, निरालस्य कर्मरत रहे, संयम और व्यवस्था का कदम-कदम पर ध्यान रखे, भ्रान्तियों और लिप्साओं से बचकर विवेक को अपनाये और हँसते-खेलते दूसरों को प्रसन्न सन्तुष्ट रखते जीवन व्यतीत करे। पंचाक्षरी प्रशिक्षण शिक्षा के उद्देश्य का सार संकेत है। विद्या उसी का नाम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, जो मनुष्य के सद्गुणों को बढ़ावे। ॐ भूर्भुवः का सर्वप्रथम अक्षरम्भ इसी दृष्टि से कराया जाता है।

दिशाओं को नमस्कार

इसके उपरान्त क्रमशः पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, ऊपर और नीचे की दिशा को और मुँह फेरकर बैठे-बैठे घूमते हुए बालक दसों-दिशाओं को अभिवादन करे। इस अभिवादन का मन्त्र **'ॐ नमः शंभवाय च . . . . . '** है।

दसों दिशाओं में व्याप्त परमात्मा को देखना, समझना और उसकी विधि-व्यवस्था को बालकपन से ही समझना चाहिए। यह अनुभव करना चाहिए कि कहीं, कोई स्थान किसी भी दिशा में ऐसा नहीं है, जहाँ परमात्मा उपस्थित न हो। परमात्मा के सामने पाप कर्म करने का दुस्साहस हमें नहीं करना चाहिए और उसके न्याय दण्ड से डरना चाहिए। दसों दिशाओं में जो कुछ दिखाई देता है, वह सब परमात्मा का ही अभिवन्दनीय स्वरूप है। विराट् ब्रह्म इस विशाल विश्व के रूप में ही हमारे सामने उपस्थित है। इसको सुन्दर, सुव्यवस्थित एवं समुन्नत बनाने का प्रयत्न करना यही वास्तविक ईश्वर पूजा है। ऐसी आराधना से ही भगवान प्रसन्न होते हैं। नमस्कार का प्रयोजन सद्भावना, श्रद्धा, नम्रता एवं सज्जनता का प्रदर्शन भी है। दसों दिशाओं में जो भी पदार्थ, वृक्ष, वनस्पति, जीव-जन्तु एवं मनुष्य हैं, इन सब के प्रति नमस्कार की भावनाओं के अनुरूप सज्जनता एवं शालीनता का व्यवहार किया जाय। कहीं किसी को भी अपने सम्बन्ध में अनुपयुक्त व्यवहार की शिकायत न होने पाए, ऐसा जीवन जीया जाय। दिशाओं को नमस्कार इसी की प्रेरणा करता है।

इसके उपरान्त अग्नि स्थापन से लेकर सूर्यार्घ्यदान तक के सारे कार्य अन्य संस्कारों की भाँति गायत्री हवन विधि के अनुसार कराये जायें। उपस्थित लोग बालक को सामूहिक आशीर्वाद देते हुए अक्षत पुष्प बरसावें। बालक को फल उपहार देकर कार्य समाप्त किया जाय।

शिक्षा और विद्या का समन्वय

विद्यारम्भ संस्कार के अवसर पर शिक्षा और विद्या का भेद उपस्थित सभी लोगों को समझाया जाना चाहिए और बताया जाना चाहिए कि अक्षर ज्ञान एवं सांसारिक जानकारी कराने वाली अर्थकारी शिक्षा प्राथमिक आवश्यकता के रूप में अपेक्षित तो है पर उतने मात्र से आत्म-कल्याण का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता है। स्कूली शिक्षा प्राप्त करके कोई व्यक्ति सभ्य लोगों जैसा व्यवहार और सम्पन्न लोगों जैसा उपार्जन कर सकता है। जीवन विकास के लिए यह भी आवश्यक है, इसलिए प्राप्त तो शिक्षा भी करनी चाहिए, पर साथ ही ध्यान यह भी रखना चाहिए कि विद्या के आधार पर ही आन्तरिक शान्ति, व्यवहार में सन्तोष, जीवन में उल्लास और स्वर्गीय अनुभूति का आनन्द मिल सकता है। इसलिए शिक्षारम्भ के साथ-साथ ही विद्यारम्भ भी करना चाहिए।

शिक्षारम्भ अक्षर ज्ञान से आरम्भ होता है। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ से शिक्षा आरम्भ की जाती है और वह बढ़ते-बढ़ते स्नातकोत्तर कक्षाओं एवं पदवियों के रूप में मनुष्य को सम्मानित करती चलती है। इससे उसकी प्रतिष्ठा, बहुज्ञता एवं उपार्जन क्षमता बढ़ती है, विद्यारम्भ 'ॐ भूर्भुवः स्वः' से आरम्भ होता है। ॐ ईश्वर का नाम है। ईश्वर विश्वास, ईश्वरीय विधान और आदेश का अन्तःकरण में प्रतिष्ठापन और उसके अनुरूप जीवन की गतिविधियों का निर्धारण करना विद्या का लक्ष्य है। कोई व्यक्ति निरक्षर, होते हुए विद्वान हो सकता है। जो चरित्रवान सज्जन्, सद्गुणी, दूरदर्शी, विवेकवान् एवं संयमी है, उसे विद्यावान् कहना चाहिए।

विद्या शिक्षा से अनेक गुनी एवं आवश्यक है। शिक्षा मानव के भौतिक जीवन में सुख-समृद्धि उत्पन्न करती है और शिक्षा के द्वारा मनुष्य आन्तरिक जीवन में शान्ति एवं सन्तोष की अनुभूति करता है। शिक्षा और विद्या का समन्वय ही वस्तुतः मनुष्य की अन्तःचेतना का विकास है। सच्चे ज्ञान में दोनों का समन्वय आवश्यक माना गया है। इसलिए बालकों को जहाँ अक्षरज्ञान की व्यवस्था आरम्भ करके सुशिक्षित बनाने का प्रयत्न करना अभिभावकों का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार उनका यह भी धर्म है कि उसे सद्गुणी, सुसंस्कृत एवं विद्वान् बनाने के लिए प्रत्येक सम्भव उपाय आजीवन करते रहें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्यारम्भ संस्कार : उद्देश्य और शिक्षा

विद्या लक्ष्यं समुत्कृष्टं ब्रह्म ज्ञानं सनातनम्।
आत्म ज्ञानमुताहो वा सर्वज्ञानं तथैव च ।। १।।

विद्या का उत्कृष्ट लक्ष्य आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान उसी प्रकार सर्वज्ञान है।

विद्यार्थनाऽस्ति गायत्रि सरस्वत्योरुपासना।
अनयैवोपलब्धिश्च सुधानन्द-स्वरूपयोः ।। २।।

विद्या की पूजा (विद्याध्ययन) गायत्री और सरस्वती की उपासना है। इससे ही अमृतत्व और आनन्द की उपलब्धि होती है।

उभयो र्लोकयोरेषा सुखसमृद्धि साधनम्।
विद्यैव ज्ञान-संयुक्ता पराकाष्ठा सुकर्मणाम्।। ३।।

दोनों लोकों में यही सुख समृद्धि का साधन है। उत्कृष्ट कर्मों, ज्ञानपूर्ण कर्मों की पराकाष्ठा ज्ञानयुक्त विद्या में ही है।

देहान्तरात्मचित्तानां विकासोऽनयैव जायते।
सर्वविषयतथ्यानामाप्तिर्भवति वस्तुतः ।। ४।।

शारीरिक, मानसिक तथा अन्तरात्मिक विकास इसी के द्वारा ही सुसम्पन्न होता है वस्तुतः सर्व विषयक सत्यों की प्राप्ति होती है।

व्यक्तित्वे विनयत्वेन पात्रता वर्द्धनेन च।
प्राप्यन्ते निश्चयेनेह धनधर्मसुखानि वै।। ५।।

व्यक्तित्व में विनयभाव और पात्रता की बुद्धि से निश्चय इस लोक में धन, धर्म और सुखों की प्राप्ति होती है।

अस्याः सदुपयोगेन सर्वक्षेत्रेषु वर्धनम्।
विविधैश्वर्यसुखादीनां भवत्येव न संशयः।। ६।।

इसके सदुपयोग से सभी क्षेत्रों में विविध ऐश्वर्य, सुख आदि की अभिवृद्धि होती है इसमें कोई संशय नहीं है।

तथा दुरुपयोगेन लब्ध्वा प्रवृत्तिमासुरीम्।
असह्य वेदना युक्तां भुङ्क्ते नरक यातनाम्।।७।।

उसी प्रकार इसके दुरुपयोग से आसुरी प्रवृत्ति को प्राप्त कर असह्य वेदना सहित नरक यातना भोगते हैं।

वासनाऽज्ञानमोहेर्ष्याभयाऽनीतिमदभ्रमान्।
संछित्य चासुरमन्यान् मूलतोऽखिलदुर्गुणान्।। ८।।
विद्यया जायते मर्त्यः सदाचार-परायणः।
लोकसेवा रतो ज्ञानी जीवने श्रेयसाधकः।। ९।।

वासना, अज्ञान, मोह, भय, अनीति तथा भ्रम आसुरी प्रवृत्ति एवं अन्य दुर्गुणों का मूल से छेदन कर मनुष्य में विद्या से ही सदाचार परायण, लोक सेवी तथा मंगलमय सर्वांगीण जीवन का उदय होता है।

विद्यारम्भ संस्कार : प्रयोजन एवं विधि

संस्कार प्रयोजन—प्रत्येक माता-पिता या अभिभावक का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह अपने बच्चों की सुशिक्षा की उचित व्यवस्था करे। जो अभिभावक प्रमादवश ऐसा नहीं करते वे पाप के भागीदार बनते हैं।

❑ विद्यारम्भ संस्कार द्वारा बालक-बालिका में उन मूल संस्कार की स्थापना का प्रयास किया जाता है, जिनके आधार पर उसकी शिक्षा मात्र अक्षर ज्ञान न रहकर जीवन निर्माण करने वाली हितकारी विद्या के रूप में विकसित हो सके। समारोह द्वारा बालक के मन में ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्साह पैदा किया जाता है। उत्साहभरी मनोभूमि में देवाराधन तथा यज्ञ के संयोग से वाँछित ज्ञानपरक संस्कारों का बीजारोपण भी सम्भव हो जाता है।

विशेष व्यवस्था—विद्यारम्भ संस्कार के लिए सामान्य तैयारी के अतिरिक्त नीचे लिखी व्यवस्थायें पहले से बना लेनी चाहिए।

१- पूजन के लिए गणेशजी एवं माँ सरस्वती के चित्र या प्रतिमायें।

२- पट्टी, दवात और लेखनी पूजन के लिए। बच्चे को लिखने में सुविधा हो इसके लिए स्लेट, खड़िया भी रखी जा सकती है।

३- गुरु पूजन के लिए कुश या नारियल का प्रतीक रखा जा सकता है। बालक के शिक्षक प्रत्यक्ष में हों तो उनका पूजन भी कराया जा सकता है।

गणेश एवं सरस्वती पूजन

पूजन प्रक्रिया में गणेश का स्थान प्रथम और सरस्वती का दूसरा है। गणेश विद्या के देवता हैं तो सरस्वती शिक्षा की अधिष्ठात्री देवी। गणेश को बुद्धि प्रदाता कहा गया है। शिशु में उच्चस्तरीय दूरदर्शिता आ जाय, उचित-अनुचित का, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की पहचान हो जाय, इस कारण इस संस्कार में गणेश पूजन का विधान है। सरस्वती माता का सतत् अनुग्रह विद्या के रूप में मिलता रहे। इसलिए सरस्वती की आराधना की जाती है। सतत अध्ययन ही सरस्वती की आराधना है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

।। गणेश पूजन।।

क्रिया और भावना—बालक के हाथ में अक्षत, पुष्प, रोली देकर मन्त्र के साथ गणपतिजी के चित्र के सामने अर्पित करायें। भावना करें कि इस आवाहन पूजन के द्वारा विवेक के अधिष्ठाता से बालक की भावना का स्पर्श हो रहा है। उनके अनुग्रह से बालक मेधावी और विवेकशील बनेगा।

मन्त्र—ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। ॐ गणपतये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।। —यजु. २३/१९

सरस्वती पूजन

बालक के हाथ में अक्षत, पुष्प, रोली आदि देकर मन्त्र बोलकर माँ सरस्वती के चित्र के आगे पूजाभाव से समर्पित करायें। भावना करें कि कला, ज्ञान, संवेदना को देवी माता सरस्वती के स्नेह का पात्र यह बालक बन रहा है। उनकी छत्रछाया का रसास्वादन करके यह ज्ञानार्जन में सतत् रस लेता हुआ आगे बढ़ सकेगा।

मन्त्र—ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञ वष्टु धियावसुः। ॐ सरस्वत्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। —यजु. २०/८४

उपकरणों-माध्यमों की पवित्रता

गणेश और सरस्वती पूजन के उपरान्त शिक्षा के उपकरणों दवात, कलम और पट्टी का पूजन किया जाता है। शिक्षा प्राप्ति के लिए यह तीनों ही प्रधान उपकरण हैं। इन्हें वेदमन्त्रों से अभिमन्त्रित किया जाता है ताकि उनका प्रारम्भिक प्रभाव कल्याणकारी हो सके। विद्या प्राप्ति में सहायता मिल सके। मन्त्रों से इन तीनों को पवित्र अभिमंत्रित किया जाता है, ताकि इन उपकरणों में पवित्रता स्थिर रखी जा सके। इस सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक 'विद्यारम्भ संस्कार विवेचन' में देखें और तदनुरूप व्याख्या-विवेचना करते चलें। पट्टी, कलम, दवात (शिक्षा की तीन अधिष्ठात्री देवियों) की भी विस्तृत व्याख्या पिछले पृष्ठों पर देखी जा सकती है। यहाँ केवल लेखनी (कलम), दवात और पट्टी पूजन के सम्बन्धित मन्त्र दिये जा रहे हैं।

लेखनी-कलम पूजन

लेखनी का पूजन कराते समय 'धृति' की अभियोजना इस प्रकार की जाय कि शिक्षार्थी की अभिरुचि अध्ययन में निरन्तर बढ़ती चली जाय।

क्रिया और भावना—पूजन सामग्री बालक के हाथ में दी जाय। पूजा चौकी पर स्थापित कलम पर उसे मन्त्र के साथ श्रद्धापूर्वक चढ़ाया जाय। भावना की जाय कि धृति शक्ति बालक की विद्या के प्रति अभिरुचि को परिष्कृत कर रही है।

मन्त्र—ॐ पुरुदस्मो विषुरूप इन्दुरन्तर्महिमानमानञ्जधीरः।। एकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पदीमष्टापदी भुवनानु प्रथन्ताꣳ स्वाहा।। —यजु. ८.३०

दवात पूजन

दवात पूजन में दवात के कण्ठ में कलावा बाँधा जाता है व रोली, धूप, अक्षत, पुष्प आदि से पंचोपचार पूजन किया जाता है। यह दवात की अधिष्ठात्री देवी 'पुष्टि' का अभिवन्दन है। इस पूजा का प्रयोजन यह है कि शिक्षार्थी को एकाग्रता का महत्त्व समझाया जाना चाहिए और इसका उसे व्यावहारिक अभ्यास भी कराया जाना चाहिए। समुचित मात्रा में अभिरुचि हो और साथ ही एकाग्रता का अभ्यास हो जाय तो फिर विद्या लाभ की दिशा में आशाजनक सफलता सम्भव हो जाती है।

क्रिया और भावना—पूजा वेदी पर स्थापित दवात पर बालक के हाथ से मन्त्रोच्चार के साथ पूजन सामग्री अर्पित कराई जाय। भावना की जाय कि पुष्टि शक्ति के सान्निध्य से बालक में बुद्धि को तीव्रता एवं एकाग्रता की उपलब्धि होती है।

मन्त्र—ॐ देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीर्वयोधसं पतिमिन्द्रमवर्धयन्। जगत्या छन्दसेन्द्रियꣳ शूषमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।। —यजु. २८/४१

पट्टी पूजन

विद्यारम्भ का तीसरा उपकरण है—'पट्टी'—स्लेट या कापी-कागज। इसकी अधिष्ठात्री है—'तुष्टि'। तुष्टि का अर्थ होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है—श्रम की अभिरुचि। श्रम के बिना इस संसार में कुछ भी प्राप्त कर सकना कठिन है। अतः विद्यार्थी को तो खासतौर पर परिश्रमी होना चाहिए।

पट्टी, दवात, कलम तीनों उपकरणों का पूजन करने के साथ-साथ यह तथ्य भी हृदयंगम किये जाते हैं कि हमारे साधन पवित्र हों। विद्या भी पवित्र साधनों से पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्राप्त की जाय। अभिरुचि, एकाग्रता और श्रमशीलता का आधार लेकर विद्या लाभ के महत्त्वपूर्ण मार्ग पर बढ़ा जाय।

क्रिया और भावना—बालक द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ पूजा-स्थल पर स्थापित पट्टी पूजन सामग्री अर्पित कराई जाय। भावना की जाय कि इस आराधना से बालक तुष्टि शक्ति से सम्पर्क स्थापित कर रहा है। उस शक्ति के प्रवाह का लाभ उठाकर बालक में ज्ञानार्जन के लिए रुचिपूर्वक कठोर परिश्रम, साधना करने की क्षमता का विकास होगा।

मन्त्र—ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपाꣳरसेन वरुणो न साम्नेन्द्ꣳश्रिये जनयन्नप्सु राजा।। —यजु. १९/६४

गुरु पूजन

अशिक्षा एवं अज्ञान के अन्धकार को गुरु ही दूर करते हैं। गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता। अतः गुरुपूजन का विधान है। पट्टी पूजन के पश्चात् बालक से गुरुपूजन कराया जाता है। अक्षत, तिलक, पुष्पमाला, वरण, चरण-स्पर्श यह पाँच कृत्य गुरुपूजन में कराये जाने चाहिए।

क्रिया और भावना—मन्त्र के साथ बालक द्वारा गुरु के अभाव में उनके प्रतीक पूजन कराया जाय। भावना की जाय कि इस श्रद्धा प्रक्रिया द्वारा बालक में वह शिष्योचित गुण विकसित हो रहे हैं, जिनके आधार पर शिष्य भी धन्य हो जाता है और गुरु भी। गुरु तत्व की कृपा भाजन बालक बना रहे।

मन्त्र—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। उपायामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा।। ॐ श्री गुरवे नमः।

आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

—तै० सं० १/८/२२/१२, यजु. २९/३

।। अक्षर लेखन एवं पूजन।।

आचार्य पट्टी पर **"ॐ भूर्भुवः स्वः"** शब्द लिखे और बालक से पंचोपचार पूजन करावें, तत्पश्चात् आचार्य उक्त शब्द बालक से ५ बार उच्चारण करावे। उसके बाद बालक या बालिका उन अक्षरों पर कलम फेरकर अक्षर बना दे अथवा आचार्य और छात्र दोनों कलम पकड लें और उपरोक्त पंचाक्षरी गायत्री मन्त्र को पट्टी पर लिख दें। इसकी विस्तृत व्याख्या-'विवेचन' प्रकरण में पढ़ लें।

क्रिया और भावना—अक्षर लेखन करा लेने पर उन पर अक्षत, पुष्प बालक के हाथ से छुड़वायें। ज्ञान का उदय अन्तःकरण में होता है, पर यदि उसकी अभिव्यक्ति करना न आये तो अनिष्ट हो जाता है। ज्ञान की प्रथम अभिव्यक्ति अक्षरों को पूजकर अभिव्यक्ति की महत्ता और साधना के प्रति उमंग पैदा की जाय।

प्रणाम-अभिवादन

फिर बालक दशों दिशाओं में नमस्कार करे, आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

मन्त्र—ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय शिवतराय च।।

इसके बाद अग्नि स्थापना से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुति तक का क्रम चले। बालक को भी उसमें भाग दें। फिर विशेष आहुतियाँ कराई जायें।

विशेष आहुति (पाँच बार)

हवन सामग्री में कुछ मिष्ठान्न मिलाकर ५ आहुतियाँ निम्न मन्त्र से करायें। भावना करें यज्ञीय ऊर्जा बालक के अन्दर संस्कार द्वारा पड़े प्रभाव को स्थिर और बलिष्ठ बना रही है।

मन्त्र—ॐ सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः। रसं परिस्रुता न रोहितं नग्नहुधीरस्तसरं न वेम स्वाहा। इदं सरस्वत्यै इदन्न मम।। —यजु. १९/८३

विशेष आहुति के बाद यज्ञ के शेष कर्म पूरे करके आशीर्वचन, विसर्जन एवं जयघोष के बाद प्रसाद वितरण करके समापन किया जाय।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

यज्ञोपवीत-संस्कार

यज्ञोपवीत संस्कार-विवेचन

शिखा और सूत्र यह दो हिन्दू धर्म के सर्वमान्य प्रतीक हैं। सुन्नत होने से किसी को मुसलमान ठहराया जा सकता है, सिख धर्मानुयायी पंच-केशों के द्वारा अपनी धार्मिक मान्यता प्रकट करते हैं। पुलिस, फौज, जहाज और रेल आदि विभागों के कर्मचारी अपनी पोशाक से पहचाने जाते हैं। इसी प्रकार हिन्दू धर्मानुयायी अपने इन दो प्रतीकों द्वारा अपनी धार्मिक निष्ठा को प्रकट करते हैं। शिखा का महत्त्व अलग ट्रेक्ट में लिखेंगे, यहाँ यज्ञोपवीत की ही विवेचना की जा रही है।

उपयोगिता और आवश्यकता

यज्ञोपवीत के धागों में नीति का सारा सार सन्निहित कर दिया गया है। जैसे कागज और स्याही के सहारे किसी नगण्य से पत्र या तुच्छ-सी लगने वाली पुस्तक में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ज्ञान-विज्ञान भर दिया जाता है, उसी प्रकार सूत के इन नौ धागों में जीवन विकास का सारा मार्गदर्शन समाविष्ट कर दिया गया है। इन धागों को कन्धों पर, हृदय पर, कलेजे पर, पीठ पर प्रतिष्ठापित करने का प्रयोजन यह है कि सन्निहित शिक्षाओं का यज्ञोपवीत के ये धागे हर समय स्मरण करायें और उन्हीं के आधार पर हम अपनी रीति-नीति का निर्धारण करते रहें।

जन्म से मनुष्य भी एक प्रकार का पशु ही है। उसमें स्वार्थपरता की प्रवृत्ति अन्य जीव-जन्तुओं जैसी ही होती है, पर उत्कृष्ट आदर्शवादी मान्यताओं द्वारा वह मनुष्य बनता है। जब मानव की आस्था यह बन जाती है कि उसे इंसान की तरह ऊँचा जीवन जीना है और उसी आधार पर वह अपनी कार्य पद्धति निर्धारित करता है, तभी कहा जा सकता है कि इसने पशु-योनि छोड़कर मनुष्य योनि में प्रवेश किया अन्यथा नर-पशुओं से तो यह संसार भरा ही पड़ा है। स्वार्थ संकीर्णता से निकलकर परमार्थ की महानता में प्रवेश करने को, पशुता को त्याग कर मनुष्यता ग्रहण करने को दूसरा जन्म कहते हैं। शरीर-जन्म माता-पिता के रज-वीर्य से वैसा ही होता है जैसा अन्य जीवों का। आदर्शवादी जीवन लक्ष्य अपना लेने की प्रतिज्ञा लेना ही वास्तविक मनुष्य जन्म में प्रवेश करना है। इसी को द्विजत्व कहते हैं। द्विजत्व का अर्थ है—दूसरा जन्म। हर हिन्दू धर्मानुयायी को आदर्शवादी जीवन जीना चाहिये, द्विज बनना चाहिये। इस मूल तथ्य को अपनाने की प्रक्रिया का समारोहपूर्वक यज्ञोपवीत संस्कार के नाम से सम्पन्न किया जाता है। इस व्रत-बंधन को आजीवन स्मरण रखने और व्यवहार में लाने की प्रतिज्ञा तीन लड़ों वाले यज्ञोपवीत की उपेक्षा करने का अर्थ है—आदर्श-जीवन जीने की प्रतिज्ञा से इन्कार करना। ऐसे लोगों का किसी जमाने में सामाजिक बहिष्कार किया जाता था, उन्हें लोग छूते तक भी न थे। अपने पास नहीं बिठाते थे। इस सामाजिक दण्ड का प्रयोजन यही था कि वे प्रताड़ना-दबाव में आकर पुनः मानवीय आदर्शों पर चलने की प्रतिज्ञा—यज्ञोपवीत धारण को स्वीकार करें। आज जो अन्त्यज, चाण्डाल आदि दीखते हैं, वे किसी समय के ऐसे ही बहिष्कृत व्यक्ति रहे होंगे। दुर्भाग्य से उनका दण्ड कितनी ही पीढ़ियाँ बीत जाने पर भी उनकी सन्तान को झेलना पड़ रहा है। कितनी बड़ी विडम्बना है कि जिन्हें यज्ञोपवीत धारी बनाने के लिये कोई दण्ड व्यवस्था की गई थी, उनकी सन्तानें अब यदि यज्ञोपवीत पहनने की इच्छुक एवं आतुर हैं, तो उन्हें वैसा करने से रोका जाता है।

शास्त्रों के अभिवचन-यज्ञोपवीत द्विजत्व का चिन्ह है। कहा भी है—

मातुरग्रेऽधिजननम् द्वितीयम् मौञ्जिबन्धनम्।

अर्थात्—पहला जन्म माता के उदर से और दूसरा यज्ञोपवीत धारण से होता है।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणम् कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातंद्रष्टुमभि संयन्ति देवाः।। —अथर्व ११।५।३

अर्थात्—गर्भ में रहकर माता और पिता के सम्बन्ध से मनुष्य का पहला जन्म होता है। दूसरा जन्म विद्या रूपी माता और आचार्य रूप पिता द्वारा गुरुकुल में उपनयन और विद्याभ्यास द्वारा होता है।

"सामवेदीय छान्दोग्य सूत्र" में लिखा है कि यज्ञोपवीत के नौ धार्गों में नौ देवता निवास करते हैं। (१) ओ३मकार (२) अग्नि (३) अनन्त (४) चन्द्र (५) पितृ (६) प्रजापति (७) वायु (८) सूर्य (९) सब देवताओं का समूह। वेदमन्त्रों से अभिमंत्रित एवं संस्कारपूर्वक कराये यज्ञोपवीत में ९ शक्तियों का निवास होता है। जिस शरीर पर ऐसी समस्त देवों की सम्मिलित प्रतिमा की स्थापना है, उस शरीर रूपी देवालय को परम श्रेय साधन ही समझना चाहिये।

"सामवेदीय छान्दोग्य सूत्र" में यज्ञोपवत के सम्बन्ध में एक और महत्त्वपूर्ण उल्लेख है—

ब्रह्मणोत्पादितं सूत्रं विष्णुना त्रिगुणीकृतम्।
कृतो ग्रन्थिस्त्रिनेत्रेण गायत्र्याचाभिमन्त्रितम्।।

अर्थात्—ब्रह्माजी ने तीन वेदों से तीन धागे का सूत्र बनाया। विष्णु ने ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनों काण्डों से तिगुना किया और शिवजी ने गायत्री से अभिमन्त्रित कर उसमें ब्रह्म गाँठ लगा दी। इस प्रकार यज्ञोपवीत नौ तार और ग्रन्थियों समेत बनकर तैयार हुआ।

यज्ञोपवीत के लाभों का वर्णन शास्त्रों में इस प्रकार मिलता है—

येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतं तेनत्वा।
परिदधाम्यायुष्ये दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे।।
पारस्कर गृह्य सूत्र २।२।७

"जिस प्रकार इन्द्र को बृहस्पति ने यज्ञोपवीत दिया था उसी तरह आयु, बल, बुद्धि और सम्पत्ति की वृद्धि के लिये यज्ञोपवीत पहना जाय।"

देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसे ये निषेदुः।
भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धां दधाति परमे व्योमन्।। —ऋग्वेद १०।१०९।४

अर्थात्—तपस्वी, ऋषि और देवतागणों ने कहा कि यज्ञोपवीत की शक्ति महान् है। यह शक्ति शुद्ध चरित्र और कठिन कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा देती है। इस यज्ञोपवीत को धारण करने से जीव-जन भी परम पद को पहुँच जाते हैं।

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
—ब्रह्मोपनिषद्

अर्थात्—यज्ञोपवीत परम पवित्र है, प्रजापति ईश्वर ने इसे सबके लिये सहज बनाया है। यह आयुवर्धक, स्फूर्तिदायक, बन्धनों से छुड़ाने वाला एवं पवित्रता, बल और तेज देता है।

त्रिरस्यता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनि मान्यग्नेः।
अनन्ते अन्तः परिवीत आगाच्छुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः।। —ऋग्वेद ४।१।७

अर्थात्—इस यज्ञोपवीत के परम श्रेष्ठ तीन लक्षण हैं। (१) सत्य व्यवहार की आकांक्षा (२) अग्नि जैसी तेजस्विता (३) दिव्य गुणों से युक्त प्रसन्नता इसके द्वारा भलीप्रकार प्राप्त होती है।

नौ धागे नौ गुणों के प्रतीक हैं। (१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) तितिक्षा (५) अपरिग्रह (६) संयम (७) आस्तिकता (८) शान्ति (९) पवित्रता। (१) हृदय से प्रेम (२) वाणी में माधुर्य (३) व्यवहार में सरलता (४) नारी मात्र में मातृत्व की भावना (५) कर्म में कला और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति (६) सबके प्रति उदारता और सेवा भावना (७) गुरुजनों का सम्मान एवं अनुशासन (८) सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं सत्संग (९) स्वच्छता, व्यवस्था और निरालस्यता का स्वभाव। यह भी नौ गुण बताये गये हैं। अभिनव संस्कार पद्धति में इनके श्लोक भी दिये गये हैं।

यज्ञोपवीत पहनने का अर्थ है—नैतिकता एवं मानवता के पुण्य कर्त्तव्यों को अपने कन्धों पर परम पवित्र उत्तरदायित्व के रूप में अनुभव करते रहना। अपनी गतिविधियों का सारा ढाँचा इस आदर्शवादिता के अनुरूप ही खड़ा करना। इस उत्तरदायित्व को अनुभव करते रहने की प्रेरणा का यह प्रतीक सूत्र धारण किये रहना प्रत्येक हिन्दू का आवश्यक धर्म-कर्त्तव्य माना गया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस लक्ष्य से अवगत कराने के लिये समारोहपूर्वक उपनयन किया जाता है।

विधि व्यवस्था—बालक जब थोड़ा समझदार हो जाय और यज्ञोपवीत के आदर्शों को समझने एवं नियमों को पालने योग्य हो जाय तो उसका उपनयन संस्कार कराना चाहिये। साधारणतया १२ से १३ वर्ष की आयु इसके लिये ठीक है। जिनका तब तक न हुआ हो तो वे कभी भी करा सकते हैं। जिन महिलाओं की गोदी में छोटे बच्चे नहीं वे भी उसे धारण कर सकती हैं। जो पहनें उन्हें (१) मल-मूत्र त्यागते समय जनेऊ को कान पर चढ़ाना (२) गायत्री की प्रतिमा यज्ञोपवीत की पूजा प्रतिष्ठा के लिये एक माला (१०८ बार) गायत्री मन्त्र का नित्य जप करना, (३) कण्ठ से बिना बाहर निकाले ही साबुन आदि से उसे धोना, (४) एक भी लड़ टूट जाने पर उसे निकाल कर दूसरा पहनना, (५) घर में जन्म-मरण, सूतक, हो जाने या छः महीने बीत जाने पर पुराने जनेऊ हटाकर नया पहनना, (६) चाबी आदि कोई वस्तु उसमें न बाँधना—इन नियमों का पालन करना चाहिये।

जब भी यज्ञोपवीत पहनना या उतारना पड़े तब निम्न मन्त्रों को पढ़ा जाय।

पहनने का मन्त्र—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

उतारने का मन्त्र—

ॐ एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागी गच्छ सूत्र यथा सुखम्।।

अन्य संस्कारों की भाँति उपनयन संस्कार में भी मण्डप, यज्ञ-वेदी, पूजा-उपकरण आदि सभी वस्तुयें यथावत् एकत्रित एवं सुसज्जित रखनी चाहिये। बालक को क्षौर, स्नान कराके पीले नये शुद्ध वस्त्र पहनने चाहिये। अन्य संस्कारों की भाँति कार्यारम्भ किया जाये। अक्षत फेंकते हुये, "भद्रम् कर्णेभिः" मन्त्र से यजमान के स्थान पर यज्ञोपवीत धारण करने वाले को बिठाया जाये। इसके बाद पवित्रीकरण, आचमन, शिखाबन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन, आचार्य वरण, तिलक, संकल्प, पंचामृत-निर्माण एवं पान, प्रयुक्त होने वाली सभी वस्तुओं का मार्जन, दीप-पूजन, कलश-पूजन, देव-पूजन, नमस्कार, षोडशोपचार, चन्दनधारण, स्वस्ति-वाचन, रक्षा-विधान यह सब कृत्य गायत्री हवन विधि के अनुसार कर लिये जायें। तदुपरान्त यज्ञोपवीत संस्कार के विशेष कार्यक्रमों का क्रम चलाया जाय। इस सन्दर्भ में सबसे प्रथम कृत्य मेखला-बन्धन एवं कोपीन धारण है।

मेखला और कोपीन धारण

कमर में बाँधने की मेखला (कौंधनी) कलावे की बनाकर तैयार रखी जाय, कोपीन उसी के साथ हो। इन दोनों वस्तुओं को **'आपो हिष्टा'** मन्त्र से छींटे देकर पवित्र किया जाय। आचार्य दोनों हाथों के बीच इन्हें रखकर पाँच बार मानसिक गायत्री जपकर अभिमन्त्रित करें। इसके उपरान्त **'ॐ इयं दुरुक्तं .....'** मन्त्र उच्चारण करते हुये मेखला को कमर में बाँध दिया जाये। कोपीन उसी में लपेट दी जाये और कह दिया जाय कि वह संस्कार होने के बाद उसे ठीक तरह पहन ले।

मेखला और कोपीन धारण करने का प्रयोजन ब्रह्मचर्य पालन और प्रत्येक कार्य में जागरूक, निरालस्य एवं कर्त्तव्य पालने में कटिबद्ध रहने की प्रेरणा देना है। कोपीन पहनना अर्थात् लंगोट बांधना। ब्रह्मचारी भी पहलवानों की तरह लंगोट बाँधते हैं। लंगोट बाँधना ब्रह्मचर्य पालन का प्रतीक है। किशोरों को यही रीति-नीति अपनानी चाहिये। यदि उस अवधि में उसे नष्ट किया गया तो शरीर और मन दोनों का विकास रुक जायेगा। अपव्यय के कारण जो खोखलापन इन दिनों उत्पन्न हो जायेगा उसकी क्षति-पूर्ति फिर कभी न हो सकेगी, लड़कियों की शारीरिक अभिवृद्धि २० वर्ष की आयु तक और लड़कों की २५ वर्ष तक होती है। यह समय दोनों के लिये सतर्कतापूर्वक शक्तियों के संरक्षण का है। ताकि उनका उपयोग शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की नींव पक्की करने में हो सके। यह अवधि विद्या पढ़ने, मन लगाकर मानसिक एवं व्यायाम ब्रह्मचर्य आदि के द्वारा शारीरिक परिपुष्टता प्राप्त करने की है। जो इस कच्ची उम्र में जीवन रस के साथ खिलवाड़ करना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आरम्भ कर देते हैं, वे एक प्रकार से आत्महत्या ही करते हैं। इस भूल के कारण उत्पन्न हुई शक्तिहीनता पर उन्हें आजीवन पश्चाताप करना पड़ता है। इसलिये कोपीन पहनाकर यज्ञोपवीत संस्कार के साथ एक प्रकार से व्रत धारण कराया जाता है कि ब्रह्मचर्य तत्व-ज्ञान को ठीक तरह समझा एवं अपनाया जायेगा। जो बड़ी आयु के व्यक्ति यज्ञोपवीत लें वे भी ध्यान रखें कि इन्द्रिय संयम की दिशा में वे जितनी अधिक कड़ाई बरतेंगे उतना ही उनके लिये श्रेयस्कर है। विवाहित होने का अर्थ मर्यादाओं को तोड़-फोड़ डालना और क्षणिक आवेशों के आकर्षण में अपनी मूल्यवान जीवन पूँजी को जला डालना नहीं है। पति-पत्नी का युग्म अपनी शक्ति सामर्थ्य को बढ़ाकर एक-दूसरे की सहायता करें यही विवाह का उद्देश्य है, प्रेम का यही स्वरूप है। एक-दूसरे की शक्तियों को नष्ट करने और साथी को शारीरिक-मानसिक रोगों में फँसा देने की कुचेष्टाओं को यदि बढ़ा दिया जाये तो यह प्रेम कहाँ रहा, यह तो शत्रुता हुई। विवाहितों को अपने साथी के प्रति शत्रुता की नहीं मित्रता की नीति बरतनी चाहिये। प्रेम में त्याग करना पड़ता है। यह त्याग दाम्पत्य जीवन में अधिकाधिक संयम ब्रह्मचर्य के रूप में आवे तो ही सराहनीय है। कोपीन पहनाते हुये यही शिक्षा दी जाती है।

कमर में मेखला बाँधने का प्रयोजन वही है, जो पुलिस तथा फौज व सैनिक कमर में पेटी बाँधकर पूरा करते हैं। कमर बाँधकर कटिबद्ध रहना जागरूकता एवं सतर्कता का चिन्ह है। आलस्य और प्रमाद छोड़कर अपने नियत कर्त्तव्य कर्म के लिये मनुष्य को सदा उत्साह एवं प्रसन्नता के साथ तत्पर रहना चाहिये। आलस, प्रमाद, लापरवाही, ढील-पोल, दीर्घसूत्रता जैसे दुर्गुणों को पास भी नहीं फटकने देना चाहिये। आलसी और लापरवाह व्यक्ति आर्थिक ही नहीं हर दिशा में अपनी अपार क्षति करते रहते हैं। सौभाग्य इनके आगे आता है और उपयोग न किये जाने के कारण यों ही वापस चला जाता है। जिनके साथ ऐसे लापरवाह लोग काम करते हैं, उनकी भी भारी क्षति होती है। निर्धारित उत्तरदायित्वों को पूरा करने में ढील-पोल रखकर बिगड़ते हुये कार्यों की ओर से बेखबर बने रहने के कारण ऐसे लोग उनको भी चौपट कर देते हैं, जिनके साथ रहते हैं यथा जिनका कार्य संभालते हैं। जागरूक चोर और लापरवाह ईमानदार में से यदि तुलना की जाय तो लापरवाह ईमानदार अधिक हेय माना जा सकता है। चोर अपना काम तो बनाता है पर साथ ही जागरूकता की विशेषता के कारण जहाँ रहता है, वहाँ नुकसान नहीं होने देता। इसके विपरीत लापरवाह व्यक्ति न अपना काम बना पाता है न दूसरों का। वह सभी की हानि करता है। इसलिये बुद्धिमान मनुष्य उस व्यक्ति को साथी नहीं बनाते जो लापरवाह होता है। उससे किसी का भी भला नहीं होता, केवल हानि ही हानि की संभावना रहती है। आलस्य चाहे शारीरिक हो चाहे मानसिक उसे साक्षात् मूर्तिमान दारिद्र या दुर्भाग्य ही कहना चाहिये। इस बुरी आदत से सर्वथा बचा जाय, इसके लिये मेखला पहनाते हुये यज्ञोपवीतधारी को यह प्रेरणा दी जाती है कि वह इस कार्यक्षेत्र में सदा अपने कर्त्तव्यपालन के लिये फौजी सैनिक की तरह कटिबद्ध रहे। जागरूकता और सतर्कता को, स्फूर्ति और आशा साहस और धैर्य को अपना सच्चा सहचर समझें।

दण्ड धारण

यज्ञोपवीत धारण करने वाले को कोपीन-मेखला के उपरान्त दण्ड दिया जाता है। यह लाठी इसलिये दी जाती है कि वह उसे साथ रखें। दैनिक उपयोग में कुत्ते, साँप, बिच्छू आदि से रक्षा, पानी की थाह लेना, आक्रमणकारियों से आत्मरक्षा, अपनी शक्ति एवं साहसिकता का प्रदर्शन आदि कितने ही छुटपुट लाभ हैं। शस्त्र-सज्जा में लाठी सर्वसुलभ और अधिक विश्वस्त है। उसे साथ रखने से साहस बढ़ता है। लाठी चलाना एक बहुत ही उच्च स्तर का व्यायाम है। उससे देह-बल के साथ मनोबल भी बढ़ता है। लाठी चलाना हर धर्म प्रेमी को आना चाहिये ताकि दुष्ट, आततायी और अधर्मियों के हौंसले पस्त करने की सामर्थ्य दिखा सकें। संसार में अन्याय और शोषण इसलिये बढ़ा है कि उसका समुचित प्रतिकार नहीं किया गया। सताये जाने वाले लोग चुपचाप सहन करते रहते हैं। प्रतिकार के लिये जिस साहस और तेजस्विता की आवश्यकता होती है, उसे वे दिखा नहीं पाते अतएव दुष्टों को इसे कायरता एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भीरुता मानकर अधिक अन्याय करने को प्रोत्साहन मिलता है। उनकी हिम्मत बढ़ती है और फिर दूसरे अनेकों पर इसी प्रकार अनीति बरतते हुये संसार में गुण्डागर्दी, अनीति एवं अशान्ति फैलाते रहते हैं।

अन्याय सहना भी अन्याय करने के समान ही पाप है। दोनों ही पापी अपने-अपने ढंग के दण्ड भोगते हैं। अन्याय करने वाला मरने के बाद नरक को जाता है और अन्याय सहने वाला इसी जन्म में धनहानि, अपमान, असुविधा एवं आघात के कष्ट सहता रहता है। इसलिये हर धर्मप्रेमी को अनीति का प्रबल विरोध करने के लिये सदा तत्पर रहना चाहिये। इस तत्परता का एक प्रतीक-उपकरण लाठी है। यज्ञोपवीत धारण करने का अर्थ है—पशुता का परित्याग एवं मानवता को अंगीकार करना। इस परिवर्तन की प्रतिक्रिया यह तो होनी ही है कि नर-पशुओं के रोष एवं असन्तोष का निमित्त बनना पड़े। जहाँ सौ झूँठे रहते हों वहाँ एक सत्यवादी को सताया एवं तिरस्कृत किया जाता है। ऐसी सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुये उसे आवश्यक धैर्य, साहस एवं आत्मबल का एकत्रीकरण करना होता है। इस तैयारी की बात को सदा स्मरण रखने के लिये दण्ड धारण का विधान रखा गया है।

लाठी आमतौर से बाँस की होती है। बाँस की अनेक गाँठें मिलकर पूरा दण्ड बनता है। इसका प्रयोजन यह है कि अनेक व्यक्तियों के मिल-जुलकर रहने से, संगठित होने से ही धर्म रक्षा की शक्ति का निर्माण होता है। संघ शक्ति ही इस युग में सर्वोपरि है। उसी के द्वारा धर्म रक्षा एवं अधर्म का प्रतिकार सम्भव हो सकता है। धर्मात्मा व्यक्ति वैसे ही थोड़े हैं, इस पर भी वे असंगठित रहें तो फिर उनके आदर्श अच्छे रहते हुये भी व्यवहार की दृष्टि से उन्हें बेवकूफ ही कहा जायेगा। बेवकूफ सदा पिटते रहते हैं। असंगठित धर्मप्रेमियों को यदि तिरस्कृत एवं असफल रहना पड़े तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। खण्डों से मिलकर बना हुआ दण्ड हाथ में धारण करते समय यज्ञोपवीतधारी-मानवीय आदर्शों को अपनाने वाले को यह ध्यान रखना पड़ता है कि उसे साहसी शूरवीर ही नहीं, संगठन की उपयोगिता एवं आवश्यकता को भी समझना-स्वीकार करना चाहिये। अपने क्षेत्र में धर्म-प्रेमियों को संगठित करने की बात उसे सदा ध्यान में रखनी पड़ती है।

दण्ड, सत्ता एवं उत्तरदायित्व का भी प्रतीक है। शासनाध्यक्ष के हाथ में एक रौल जैसा 'दण्ड' अभिषेक एवं शपथ ग्रहण करते समय सौंपा जाता है। यह राजसत्ता हाथ में लेने का प्रतीक है। पुलिस, फौज के वरिष्ठ अफसरों के हाथ में भी एक छोटा-सा दण्ड आजकल रहता है। यह राजसत्ता को हाथ में सम्भाले रहने की भावना का प्रतीक है। कितने ही संन्यासी हाथ में धर्म-दण्ड रखते हैं, इसका अर्थ है कि वे धर्मरक्षा का उत्तरदायित्व अपने हाथ एवं कन्धों पर लिये हुये हैं। हर यज्ञोपवीतधारी के हाथ में भी यह धर्म-दण्ड सौंपा जाता है और यह आशा की जाती है कि वह आजीवन यह उत्तरदायित्व अनुभव करेगा कि उसे व्यक्तिगत जीवन में ही धर्मात्मा नहीं रहना वरन् समाज में, संसार में जो अधर्म होता हो, उसका प्रतिकार करने के लिये भी वह यथाशक्ति प्रयत्न करेगा। दण्ड प्रदान करने का मन्त्र **'ॐ यो मे दण्ड ·····'** है। कोई संभ्रान्त व्यक्ति दण्ड प्रदान करे और व्रतधारी उसे दोनों हाथों में ग्रहण करे।

सूर्य दर्शन और अर्घ्यदान—तदुपरान्त सूर्य दर्शन एवं सूर्यार्घ्यदान की क्रिया है। संस्कारार्थी सूर्य भगवान को देखता है और तीन अंजलि भर के उन्हें जल प्रदान करता है। दर्शन का मन्त्र **'ॐ तच्चक्षुर्देव हितं ·····'**, और अंजलि अर्घ्यदान, का **'सूर्य देव सहस्रांशो'** अथवा **'ॐ आपोहिष्टा मयोभव ·····'** है।

सूर्य के समान तेजस्वी बनना, उष्णता धारण किये रहना, गतिशील रहना, लोक कल्याण के लिये जीवन समर्पित करना, स्वयं प्रकाशित होना, अपने प्रकाश से दूसरों को प्रकाशित करना, अन्धकार रूपी अज्ञान को दूर करना जैसी अनेक प्रेरणायें सूर्य दर्शन करते हुये ग्रहण की जाती हैं। सूर्य आगे बढ़ता चलता है, पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ में अपने अन्य ग्रह, उपग्रहों को भी घसीटता ले चलता है। यज्ञोपवीतधारी को स्वयं तो प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना ही है, पर साथ ही यह भी ध्यान रखना है कि व्यक्तिगत उन्नति से ही सन्तोष न कर लिया जाय, अपने साथी समीपवर्ती लोगों को भी आगे बढ़ाते हुये साथ चलने का प्रयत्न करना है। सूर्य उदय होते हुये लाल और अस्त होते हुये भी लाल रहता है। उदय और अस्त में, हानि और लाभ में मनुष्य को संतुलित, धैर्ययुक्त एवं एक-सा रहना चाहिये। न तो सम्पत्ति से उन्मत्त हों और न विपत्ति में शोक संताप से विक्षुब्ध हों। धूप-छाँह की तरह जीवन में प्रिय-अप्रिय परिस्थितियाँ आती जाती रहती हैं, उन्हें हँसते-खेलते एवं क्रीड़ा-विनोद की तरह देखना चाहिये और शान्त चित्त से अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बिना एक क्षण भी उद्वेगों में गँवाये, आगे बढ़ते चलना चाहिये। सूर्य के समान लोक कल्याण के आयोजनों में पूरी अभिरुचि रखने की कार्य पद्धति अपनाने की योजना बनानी चाहिये। भगवान भास्कर अपनी किरणों द्वारा समुद्र के पानी को भाप बनाकर बादलों के रूप में परिणित करते हैं। बादलों से वर्षा होती है, उसी पर वृक्ष, वनस्पति, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी और मनुष्यों का जीवन निर्भर है।

सूर्य किरणों की गर्मी निर्जीव प्रकृति को सजीव बनाती है। संसार में जितना जीवन-तत्व है वह सब सूर्य से ही आया है, इसलिये सूर्य को जगत् की आत्मा भी कहा गया है। हमें भी सूर्य के दर्शन करते हुये इसी रीति को अपनाना चाहिये और श्रद्धापूर्वक तीन बार अञ्जलि देते हुये शरीर, मन और धन से इन आदर्शों में तत्पर रहने की सहमति स्वीकृति प्रकट करनी होती है।

तीन भाव देवियों के

पूजा वेदी पर तीन ढेरियाँ स्थापित करके उसमें गायत्री, सावित्री, सरस्वती के लिये पीत और सरस्वती की प्रतिष्ठापना की जाती है। गायत्री के लिये हरे चावलों की ढेरी लगाई जाती है। इन्हें पुष्पों से सजाया जाता है और ऊपर आटे के बने बीच की बत्ती वाले घृत दीप रखे जाते हैं। इन तीनों महाशक्तियों की पूजा यज्ञोपवीत धारण करने वाला करता है। गायत्री पूजन का मन्त्र **ॐ तां सवितुर्वरेण्यस्य** ..... सावित्री पूजन का **'ॐ सवित्रा, प्रसवित्रा, सरस्वती** ..... और सरस्वती पूजन का मन्त्र **'ॐ पावका नः सरस्वती** ....., है। पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत, जल से इन तीनों का पूजन करना चाहिये।

गायत्री आध्यात्मिक ज्ञान की, सावित्री भौतिक ज्ञान की एवं सरस्वती बौद्धिक ज्ञान की प्रतीक हैं। इन तीनों का समुचित संचय करना ही ज्ञान संचय का, विद्याध्ययन का लक्ष्य होना चाहिये।

अध्ययन की प्राचीन परम्परा

प्राचीनकाल में यह प्रथा थी कि छोटे बालक अक्षर ज्ञान अपने अभिभावकों के सान्निध्य में घर रहते हुये प्राप्त करते थे और प्राथमिक शिक्षा पूरी कर थोड़ा समझदार होते ही उत्कृष्ट व्यक्तियों के सान्निध्य में रहकर जीवन-निर्माण की कला, संजीवनी विद्या, ब्रह्म विद्या प्राप्त करने के लिये गुरुकुलों में चले जाते थे। गुण, कर्म, स्वभाव का निर्माण पुस्तकों या लेक्चरों से नहीं हो सकता, उसके लिये उपयुक्त वातावरण चाहिये। ऐसा वातावरण जो बालकों के कोमल मस्तिष्कों को सही दिशा में प्रेरणा दे सके, श्रेष्ठ व्यक्तित्वों की समीपता में ही सम्भव है। इसलिये वयस्क शिक्षार्थी अपनी किशोर अवस्था, जो जीवन निर्माण की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण एवं संवेदनशील हैं, सुयोग्य आचार्यों के ऋषियों के सान्निध्य में ही बिताते थे। इस शिक्षा में आध्यात्मिक ज्ञान, भौतिक ज्ञान एवं बौद्धिक ज्ञान तीनों का ही समुचित समावेश होता था ताकि शिक्षार्थी आत्मिक दृष्टि से विवेकवान बन सके। तीनों उद्देश्यों को समग्र रूप से सम्पन्न कर सकने वाली शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है। इस प्रकार का अध्ययन प्रारम्भ कराते हुये, गुरुकुल प्रवेश के समय यज्ञोपवीत संस्कार कराया जाता था, उसी के साथ-साथ वेदारम्भ होता था। वेद ज्ञान और विज्ञान के भाण्डारागार हैं। इसलिये अध्ययन का प्रमुख माध्यम उन्हें ही रखा जाता था। आज वैसी परम्परा नहीं रही, फिर भी अभिभावकों को यह प्रयत्न कराना चाहिये कि उसके बालक केवल अर्थकारी शिक्षा तक ही सीमित न रह जायें। आत्म-निरीक्षण की दिशा में भी उनका ज्ञान और प्रयत्न बढ़ता रहे। यज्ञोपवीत संस्कार का यही निर्देश है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री पूजन का उद्देश्य

व्यक्ति एवं समाज की समस्यायें सामयिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती हैं। पिछले सौ वर्षों में विज्ञान ने जिस तेजी से विकास किया है, उसने समाज का स्वरूप ही बदल दिया है। कितने प्रकार की नई समस्यायें उत्पन्न कर दी हैं। कितने प्रकार की नई मशीनें बनी हैं। इन समस्याओं का ठीक हल समझना ही ज्ञान का वास्तविक स्वरूप हो सकता है। आध्यात्मिक सिद्धान्त तो शाश्वत एवं प्राचीन ही हैं, पर आज की स्थिति में व्यक्ति उनका कहाँ, कितना कैसे प्रयोग कर सकता है, इसका वास्तविक स्वरूप बता सकने में समर्थ हो सके उसको ही सामयिक आध्यात्म कहना चाहिये। आज से हजारों-लाखों वर्ष पूर्व मानव-जीवन एवं समाज की स्थिति भिन्न थी, वह पुराने शास्त्र, पुराणों में वर्णित है। आज के शास्त्र वे ही हैं जो आज की समस्याओं का आज की स्थिति के अनुरूप हल सुझावें। ऐसे शास्त्र ही हमारी आज की आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकते हैं, फिर भले ही वे संस्कृत भाषा में लिखे न होकर हिन्दी या अन्य किसी भाषा में ही लिखे क्यों न हों। गायत्री पूजा में यह संकेत है कि हम अपने व्यक्तित्व को सुसंस्कृत बनाने वाले गुण, कर्म स्वभाव की उत्कृष्ट विचारणायें सीखें और उन्हें व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करने की कला जानें।

सावित्री पूजन

सावित्री पूजन का अर्थ है—भाषा, साहित्य, गणित, शिल्प, रसायन, चिकित्सा, व्यापार, कृषि, पशु-पालन आदि अर्थ उपार्जन में तथा लोक व्यवहार में काम आ सकने वाली जानकारियों का संग्रह। भौतिक उन्नति का आधार यही जानकारी है, आजकल पढ़ने-पढ़ाने का उद्देश्य भी यही है। सभी अर्थकारी विद्या के पीछे पड़े हैं। इसलिये इस सम्बन्ध में कुछ विशेष कहना नहीं है। सावित्री पूजा पर तो सबका ध्यान है ही।

सरस्वती पूजन

सरस्वती पूजा का अर्थ है—मानसिक विकास के लिये संसार की, अनेकानेक परिस्थितियों, समस्याओं, कारणों की जानकारी प्राप्त करना। आजकल बौद्धिक दृष्टि से मानव जाति निविड़, भ्रम, जंजालों में फँसी पड़ी है। धर्म और सम्प्रदायों की मान्यताओं में से तीन-चौथाई मान्यतायें अन्धविश्वास मात्र हैं, फिर भी करोड़ों लोग उनमें उलझे पड़े हैं और अपनी भ्रान्तियों को पत्थर की लकीर जैसी माने बैठे हैं। अपनी भ्रान्तियों को सच और दूसरों की विचारणाओं को गलत मानते हैं, इसी पर लड़ते, झगड़ते और एक-दूसरे की जान के ग्राहक बनते हैं। सामाजिक व्यवहार परम्पराओं में से भी तीन-चौथाई ऐसी मूर्खतापूर्ण हैं। मनुष्य मात्र की एक जैसी स्थिति होने के कारण उनका स्तर हर क्षेत्र में एक जैसा ही होना चाहिये था, पर रंगभेद, जाति-भेद, देश, प्रान्त, धर्म भाषा आदि के कारण जो विषमता फैली पड़ी है और उनके परिपेक्षण के लिये लोग जिस ऐड़ी-चोटी से जुटे हुये हैं उसे देखते हुये मानव जाति एक यदाकदा प्रयोग में आ सकने वाली नगण्य-सी इन्द्रिय प्रकृति पर कामुकता का कितना विशालकाय कलेवर खड़ा कर दिया है, उसे देखकर हैरत होती है। कामुकता से भरे साहित्य, चित्र, काव्य, संगीत, अभिनय एक प्रकार से मनुष्य को पागल बनाने में लगे हुये हैं। नारी का तो वेश-विन्यास, हाव-भाव एवं स्तर ही ऐसा बन गया है मानो वह इन्द्रिय भोग उपकरण मात्र ही हो। इस प्रचलित विडम्बना को जिनता धिक्कारा जाय उतना ही कम है।

धन का अपरिमित मात्रा में नीति-अनीति का विचार किये बिना अन्धाधुन्ध कमाते जाना, उसे बेटों-पोतों के लिये जोड़ जमाकर रख जाना, सदुपयोग से कोसों दूर रहना, यह कितना बड़ा पागलपन है। धर्मभावी कहलाने वाले व्यक्तियों को यदि इसी श्रेणी का पागल या सनकी कहा जाय तो इसमें भी अत्युक्ति न होगी। हिन्दू समाज में विवाह, मृत्यु भोज आदि के नाम पर पैसे की होली जलाने की, निठल्ले धूर्तों को दान देकर पुण्य लाभ की मान्यता रखने की मूर्खता व्यापक रूप से फैली हुई है। उसे देखते हुये यह कहना पड़ता है कि मनुष्य ने झूँठ-मूँठ ही बुद्धिमत्ता का बाना पहन रखा है। उसमें सोचने की शक्ति तो है, पर उस शक्ति को सोचने की दिशा में लगा सकने की अक्ल से वंचित ही रहना पड़ रहा है। संसार के देश एक दूसरे के शोषण-दमन के लिये युद्ध की जितनी विशाल तैयारियाँ कर रहे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं, उनके स्थान पर यदि परस्पर सहयोग की बात सोचते और जो जन-शक्ति, धन-शक्ति, साधन-शक्ति, संहार की तैयारी में लगी है, निर्माण की दिशा से लगी होती तो यह संसार स्वर्ग बन गया होता। पर मनुष्य की उस मूर्खता को क्या कहा जाये जिसके कारण उसे उचित-अनुचित और सही गलत तक का अन्तर समझने में नहीं आ रहा है।

यह कैसी सचाई है कि संसार में ज्ञान के नाम पर तीन-चौथाई अज्ञान फैला हुआ है और बुद्धिमान समझा जाने वाला मनुष्य स्वभाव और संस्कार से तीन-चौथाई अंश में मूर्ख एवं पथभ्रष्ट है। इस स्थिति में प्रचलित ढर्रे के पीछे लुढ़कने लगना किसी विचारशील व्यक्ति के लिये गौरव की बात नहीं हो सकती। सरस्वती पूजन का अर्थ यह है कि उसमें सचाई जानने के लिये निष्पक्ष रीति से पढ़ना, समझना और सोचना चाहिये। जन-प्रवाह को अबुद्धिमत्ता और अदूरदर्शिता पूर्ण मानते हुये स्वतन्त्र चिन्तन के, विवेक के आधार पर ही सत्य-असत्य का निर्णय करना चाहिये। इतना साहस हमें एकत्रित करना ही चाहिये कि जन-प्रवाह के ढर्रे की उपेक्षा करते हुये सत्य को अपनाने के लिये कटिबद्ध हो सकें, भले ही इसके लिये पागल स्तर का उपहास या विरोध ही क्यों न सहना पड़े। ऐसी मनःस्थिति जिस भी माध्यम से बनाई या बढ़ाई जा सके, उसे सरस्वती पूजन ही कहा जायेगा। यज्ञोपवीतधारी को गायत्री एवं सावित्री की तरह सरस्वती का भी उपासक होना चाहिये और अपने विचार संस्थान को समग्र रूप से सुविकसित एवं सुसंस्कृत बनाने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिये। त्रिदेवी पूजा का यही निष्कर्ष है।

इन तीनों देवियों की षोड़शोपचार पूजा श्रीसूक्त के सोलह मन्त्रों से की जा सकती है। अथवा **'गन्धम् समर्पयामि 'पुष्पं समर्पयामि'** सूत्रों से इन्हें पूजा जा सकता है। इनकी प्रतिष्ठा अभिवन्दना के लिये **'ॐ मनोजूतिर्जुताम्'** मन्त्र पढ़ा जा सकता है।

यज्ञोपवीत पूजन और धारण

अब यज्ञोपवीत पूजन, उसमें यज्ञ-शक्ति आह्वान, सूर्य-शक्ति आह्वान एवं धारणा करने का कार्यक्रम पूरा करना है। जनेऊ को सबसे प्रथम पवित्र करना चाहिये। उसे शुद्ध जल से, सम्भव हो तो गंगाजल से धोया जाये ताकि अब तक उस पर पड़े हुये स्पर्श संस्कार दूर हो जायें। इसके बाद उसे दोनों हाथों के बीच रखकर दस बार गायत्री मन्त्र का मानसिक जप किया जाय। इतना करने पर वह पवित्र एवं अभिमन्त्रित हो जाता है। इसके पश्चात् उसे किसी थाली या पत्तल पर रखकर तीन देवताओं की तीन शक्तियों को उसकी तीन लड़ों में प्रतिष्ठापित किया जाता है। प्रथम लड़ में ब्रह्मा दूसरी में विष्णु और तीसरी में रुद्र की स्थापना की जाती है। उपवीत इस ढंग से खुला रखा जाये कि उसकी तीनों लड़ें पृथक्-पृथक् रहें और उन पर पूजा उपादान चढ़ाये जा सकें। प्रथम लड़ से ब्रह्मा का आह्वान करते हुये **'ॐ ब्रह्मा जज्ञानं . . . . . '** मन्त्र का, द्वितीय लड़ से विष्णु का आह्वान करते हुये **'ॐ इदम् विष्णुर्विचक्रमे . . . . . '** मन्त्र का और तीसरी लड़ में रुद्र का आह्वान करते हुये **'ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव . . . . . '** इस मन्त्र का उच्चारण किया जाता है। चावल, रोली, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, जल को इन लड़ों पर छोड़ते हुये पूजन करते हैं।

इसके उपरान्त सम्पूर्ण उपवीत में यज्ञ शक्ति का आह्वान करते हैं। दोनों हाथों के अँगूठे और सबसे छोटी उंगली में फँसाकर यज्ञोपवीत को खुला तान लेते हैं और उसे यज्ञवेदी की ओर करते हुये 'ॐ यज्ञेन यज्ञ मन्त्र से यज्ञ आह्वान करते हैं। इसके उपरान्त दोनों हाथ ऊपर करके सूर्य की शक्ति यज्ञोपवीत में आने की भावना करते हैं और नेत्र बन्द करके सूर्य भगवान का ध्यान करते हैं। इस अवसर पर **'ओ३म् उपयाम गृहीतासि . . . . . '** मन्त्र बोला जाता है। इसके पश्चात् पाँच सुसंस्कारी व्यक्ति खड़े होकर उस यज्ञोपवीत को यजमान के हाथ में से ले लेते हैं। दाहिना हाथ ऊपर बाँया हाथ नीचे कराते हैं। पाँचों व्यक्ति दोनों हाथ पकड़कर उस यज्ञोपवीत को पहनाते हैं। धारण कराते समय **'ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं . . . . . '** मन्त्र बोला जाता है। इस प्रकार यज्ञोपवीत धारण की क्रिया सम्पन्न होती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाँच देवताओं की प्रतिष्ठापना

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यज्ञ और सूर्य-इन पाँच देवताओं को पाँच दिव्य भावनाओं का प्रतीक माना गया है। ब्रह्मा अर्थात् आत्मबल, विष्णु अर्थात् समृद्धि, महेश अर्थात् व्यवस्था, यज्ञ अर्थात् परमार्थ, सूर्य अर्थात् पराक्रम, इन पाँचों गुणों को देवता मानकर हम यज्ञोपवीत के माध्यम से अपने हृदय और कलेजे पर धारण करें अर्थात् उन्हें अपने आस्था एवम् प्रकृति का अंग बनावें तथा वास्तविक कल्याण का मार्ग मिलेगा।

(१) ब्रह्मा

जीवन के भौतिक और आत्मिक दोनों ही पहलू सुविकसित होने चाहिये। हमें आत्मबल से सम्पन्न होने के लिये संयमी, सदाचारी, मधुरभाषी, शालीन, नेक, सज्जन, आस्तिक, सद्गुणी होना चाहिये। जिनका व्यक्तिगत जीवन पवित्र एवम् सद्भावना युक्त है, उसी का आत्मबल बढ़ेगा। यज्ञोपवीत में आवाहित प्रथम देवता ब्रह्मा को धारण करने का तात्पर्य इस मान्यता को हृदयंगम करना एवम् उसके लिये प्रयत्नशील रहना ही है।

(२) यज्ञ

आत्मबल बढ़ाने के लिये दूसरा अनिवार्य माध्यम परमार्थ है। यज्ञ इसी प्रवृत्ति का परिचायक है। धार्मिक व्यक्ति वही है, जिसके जीवन से सेवा, उदारता, सहृदयता एवं परोपकार की वृत्ति फूटी पड़ती है। जिसे सभी अपने लगते हैं, जिसे सभी से प्रेम है, वही सच्चा अध्यात्मादी कहा जायेगा। उसे अनिवार्यतः अपनी महत्वाकांक्षाओं और गतिविधियों में परमार्थ को प्रधानता देनी ही होगी। ब्रह्मा और यज्ञ इन दो देवताओं से वैयक्तिक जीवन को पवित्र एवं लोक सेवा की प्रवृत्ति को अपनाने से आत्मबल बढ़ता है और मनुष्यत्व से देवत्व की ओर प्रगति होती है।

(३) विष्णु

दो देवता आत्मबल बढ़ाने वाले हैं और तीन देवता लोक-बल। विष्णु लक्ष्मी के स्वामी हैं। हमें दीन, दरिद्र, हेय, परावलम्बी, गई- गुजरी स्थिति में नहीं पड़ा रहना चाहिये। स्वास्थ्य, शिक्षा, कुशलता आदि गुणों को बढ़ाना चाहिये। उनकी कीमत पर सुख-साधनों को, समृद्धि को उपलब्ध करने का सही मार्ग केवल एक ही अपनी सर्वांगीण प्रतिभा एवं योग्यताओं को बढ़ाना। इस दिशा में जो जितना विकास कर लेगा, उसे मूल्य पर आसानी से अधिक सुख-साधन मिल जायेंगे। समृद्धि को मनुष्य दूसरों की सुविधा बढ़ाने में खर्च करें तो उससे लोक एवं परलोक की सुख-शान्ति बढ़ेगी। यज्ञोपवीत में स्थापित विष्णु का संदेश यही है।

(४) महेश

महेश का अर्थ है, नियन्त्रण, व्यवस्था, क्रमबद्धता, उचित का चुनाव। ब्रह्मा को उत्पादन का, विष्णु को पालन का और शिव को संहार का देवता माना गया है। संहार का अर्थ है, अनुपयोगिता एवं अनौचित्य का निवारण। हमारी आधी से अधिक शक्ति-सामर्थ्य अव्यवस्था एवं अनौचित्य के अपनाये रहने से नष्ट होती रहती है, इसे बचाया जाना चाहिये। यज्ञोपवीत में शिव-देवता का आह्वान इन्हीं मान्यताओं को हृदयंगम करने के लिये किया जाता है।

(५) सूर्य

सूर्य अर्थात्-तेजस्विता, पराक्रम, श्रमशीलता। सूर्य की तरह हम निरन्तर संलग्न रहें, परिश्रम को अपना जीवन सहचर एवं गर्व का, गौरव का आधार मानें। आलस्य और प्रमाद को पास न फटकने दें। सदा जागरूक एवं चैतन्य रहें। पुरुषार्थी बनें। आत्महीनता एवं दीनता की भावना मन में न आने दें। तेजस्वी बनें। एक पैर से खड़े होकर पानी का लोटा सूर्य के सामने लुढ़का देने से नहीं, सूर्य की सच्ची उपासना, उसकी प्रेरणाओं को अपनाने से होती है।

यज्ञोपवीत में पाँच देवताओं को वेद मन्त्रों द्वारा प्रतिष्ठापित किया जाता है। उससे धारण करने वाले को यह प्रेरणा मिलनी चाहिये कि आन्तरिक एवं लौकिक जीवन सुविकसित बनाने के लिये वह साहसिक कदम उठाये। ब्रह्मा और यज्ञ की, सदाचरण और परमार्थ की नीति अपनाकर आत्मबल बढ़ाये और विष्णु, महेश एवं सूर्य की वैभव व्यवस्था एवं पुरुषार्थ की रीति अपनाकर लोक बल बढ़ाये। यज्ञोपवीत उभय पक्षीय बलिष्ठता के संचय की प्रेरणा ग्रहण करने के लिये ही धारण किया जाता है। देवता भावनाओं का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। जहाँ सद्भावनायें मौजूद हैं, वहीं देवताओं की प्रत्यक्ष उपस्थिति मानी जायेगी और वहाँ ऋद्धि-सिद्धियों के वरदान अनायास ही बरसते रहेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मन्त्र दीक्षा

यज्ञोपवीत धारण कराने के उपरान्त गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी जाती है। छोटे-छोटे टुकड़ों में गायत्री मन्त्र का एक-एक भाग पहले आचार्य कहे पीछे शिष्य उसे दुहराता चले। इस मन्त्र दीक्षा के समय गुरु और शिष्य दोनों ही पालथी मारकर मेरुदण्ड सीधा रखकर, उँगलियों को आपस में फँसाकर अँगूठे सीधे रखते हुये बैठते हैं। दोनों की दृष्टि नाखूनों पर ही रहनी चाहिये। यह मन्त्रोच्चारण तीन बार करना चाहिये।

यज्ञोपवीत गायत्री की मूर्तिमान् प्रतिमा है। यज्ञोपवीत के नौ धागे गायत्री के नौ शब्द हैं। तीन बीच की गाँठें व्याहृतियाँ भूर्भुवः स्वः हैं। एक बड़ी ब्रह्म ग्रन्थि ॐ है। यज्ञोपवीत धारण एक प्रकार से गायत्री महामन्त्र को छाती से लपेटकर उसमें सन्निहित भावनाओं और प्रेरणाओं के अपनाने का व्रत लेना ही है। सद्बुद्धि की देवी गायत्री को जो सच्चे मन से अपनावेगा उसके विचार ही नहीं कार्य भी उत्कृष्ट स्तर के होंगे। गायत्री मन्त्र की महत्ता एवं उपयोगिता पर हम अन्यन्त्र बहुत कुछ लिख चुके हैं, इसलिये यहाँ उसकी चर्चा न करके इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि प्रत्येक यज्ञोपवीत धारी को कम से कम १०८ मन्त्र नित्य नियमित रूप से जपने चाहिये और उसमें सन्निहित भावनाओं एवं प्रेरणाओं को श्रद्धापूर्वक अपनाना चाहिये।

वेदारम्भ

यज्ञोपवीत संस्कार के साथ ही प्राचीन काल में वेदारम्भ शिक्षा आरम्भ होती थी। ऋग्वेद, यजुर्वेद अथर्ववेद तथा सामवेद की पुस्तकों को वेद कहते हैं, पर मूलतः वेद उस सद्ज्ञान को कहते हैं, जो जीवन निर्माण, जीवन विकास एवं जीवन परिष्कार के उद्देश्य को पूरा करता है। उपरोक्त चार ग्रन्थ इस प्रयोजन के लिय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। संसार में सफलतायें तभी मिल सकती हैं, जब अपने आपको विकसित एवं व्यवस्थित बना लिया जाय।\ वेद इसी आवश्यकता को पूर्ण करता है। वेदाध्ययन कराने वाले, जीवन निर्माण की कला, संजीवनी विद्या सिखाने वाले को गुरु कहते हैं। गणित, इतिहास मात्र पढ़ाने वाले तो शिक्षक एवं अध्यापक हैं। अध्यापकों का सम्मान करना होता है और गुरुओं का पूजन। वेदारम्भ कराने वाले गुरु को आत्मा का उद्धारक मानकर उसके प्रति श्रद्धा रखी जाती है, तदनुसार उसका पूजन भी करते हैं।

गुरु पूजन

फूलमाला, गुलदस्ता, नैवेद्य, अक्षत, रोली, धूप, दीप आदि से यज्ञोपवीतधारी गुरु-पूजन करता है। इसके लिये 'गुरु ' मन्त्र पढ़ा जाता है। पूजन का प्रयोजन है—श्रद्धा की अभिव्यक्ति। आत्म निर्माण की विद्या वही सफलतापूर्वक सिखा सकता है, जिसके प्रति अगाध श्रद्धा है। जिसके व्यक्तित्व एवं ज्ञान के प्रति सन्देह है, उसके द्वारा दिये हुये ज्ञान को शिष्य हृदयंगम ही नहीं कर पाता, इसलिये आत्म-ज्ञान की, ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति में गुरु-भक्ति एक आवश्यक शर्त है। इस श्रद्धा की स्थापना का आरम्भ गुरु पूजन की इस प्रक्रिया के साथ किया जाता है।

इसके बाद वेद पढ़ाना आरम्भ किया जाता है। प्राचीनकाल में क्रमशः एक-एक वेद पढ़ाया जाता था। अब लोगों को न तो वैसी रुचि है न अवकाश। आजकल तो अर्थकारी शिक्षा का नाम ही 'विद्या' रख दिया गया है। ऐसी दशा में यही उचित समझा गया है कि चारों वेदों का एक-एक आरम्भिक मन्त्र यज्ञोपवीतधारी को पढ़ाकर उसे वेद से परिचित करा दिया जाय। संस्कार के बाद यज्ञोपवीतधारी का यह कर्त्तव्य आरम्भ होता है कि वह वेद ज्ञान से अपने को अलंकृत करने के लिये निरन्तर प्रयत्न करता रहे। सदा वेद पढ़े अर्थात् उपरोक्त ग्रन्थों एवं सद्ज्ञान का उद्देश्य पूरा करने वाले अन्य ग्रन्थों का स्वाध्याय मनन-चिन्तन करता रहे। इस निष्ठा को दैनिक धर्म कृत्य एवं नित्य कर्म की तरह आजीवन अपनाये रहे। वेद पढ़ाने से पूर्व वेद की पुस्तकों का पुष्प आदि से पूजन करते हैं, उसका मन्त्र **'ॐ' वेदोसि येन त्वं** ' हैं।

भिक्षा अभिनय

अध्ययन आरम्भ करने के उपरान्त भिक्षा माँगने की क्रिया की जाती है। यज्ञोपवीतधारी पीत वस्त्र की झोली बनाकर अपने माता, पिता, परिजनों अथवा उपस्थित सम्बन्धियों से भिक्षा माँगता है, वे लोग कुछ धन, अन्न, फल आदि देते हैं। इस उपलब्धि को गुरु के सम्मुख उपस्थित कर दिया जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस क्रिया से व्यक्तिगत लाभ के लिये भिक्षा न लेने की मानवोचित मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का उल्लंघन नहीं होता। बेशक व्यक्तिगत लाभ के लिये केवल अन्धे, अपाहिजों, असहाय एवं असमर्थों को ही भिक्षा लेने का अधिकार है, बाकी समर्थ और स्वस्थ व्यक्ति के लिये भीख माँगना अत्यन्त लज्जा की बात है, पर यज्ञोपवीत संस्कार के समय प्रत्येक शिष्य को भिक्षा माँगनी पड़ती है, इस विसंगति से किसी को भ्रम में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। अपने लिये नहीं, स्वार्थ के लिये नहीं, गुण एवं परमार्थ प्रयोजन के लिये भिक्षा माँगी जा रही है। इसमें दोष नहीं वरन् यह धर्म-कर्त्तव्य है।

सार्वजनिक धर्म कार्यों की पूर्ति एक व्यक्ति नहीं कर सकता, फिर कोई कर भी दे तो उससे जन-सम्पर्क का उद्देश्य पूरा नहीं होता। धर्म कार्यों में जन रुचि जगाने के लिये प्रत्येक का सहयोग आवश्यक होता है। यह सहयोग श्रम एवं धन के रूप में एकत्रित करना पड़ता है। इस कार्य को करने में लोग झिझकते हैं। व्यक्तिगत लाभ के लिये भिक्षा न माँगने का स्वाभिमानी स्वभाव, परमार्थ के लिये जन-सहयोग एकत्रित करने में भी बाधक बन जाता है। उसे हटाने का प्रयोजन ही यज्ञोपवीत के समय भिक्षा माँगने में है। अपने स्वजन सम्बन्धियों, मित्र और परिजनों को सदा यह प्रेरणा देनी चाहिये कि वे धर्म प्रयोजनों के लिये अपना श्रम एवं धन उदारतापूर्वक दिया करें।

इस पुण्य परम्परा को यज्ञोपवीत धारण के समय एक अभिनय के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्राचीन काल में बालकों की शिक्षा का भार केवल उनके अभिभावकों पर ही नहीं पड़ता था वरन् सारा समाज उसे मिल-जुलकर वहन करता था। आज वह उपयोगी परम्परा नष्ट हो गई, फिर भी उसकी उपयोगिता का स्मरण कराने के लिये यह भिक्षा अभिनय किसी कदर उपयोगी ही है।

इतना विशिष्ट कर्मकाण्ड करने के उपरान्त गायत्री हवन का शेष कार्य अग्नि स्थापन से लेकर विसर्जन तक पूरा करना चाहिये। खीर की पाँच आहुतियाँ स्विष्टकृत होम से पूर्व देनी चाहिये। उपस्थित लोग यज्ञोपवीत धारण करने वाले को आशीर्वाद दें और आचार्य मंगल फल देकर उसे विदा करें।

यज्ञोपवीत में निहित शिक्षायें

यों तो ऊपर से देखने पर यज्ञोपवीत तीन बँटे हुये धागों की पतली डोरी के समान ही जान पड़ता है, पर इस देश के प्राचीन मनीषियों ने इन तीन लड़ों में जितना गहरा तत्व ज्ञान भर दिया है, उसे यदि अच्छी तरह समझकर व्यवहार में लाया जाय तो मानव को महामानव बनते देर न लगे। शास्त्रों के मतानुसार प्रत्येक व्यक्ति पर तीन ऋण रहते हैं—(१) देव ऋण (२) ऋषि-ऋण (३) पितृ ऋण। जिन महापुरुषों ने मनुष्य जाति को दिव्य प्रकाश दिया है उनकी गिनती देवों में है। ऐसे आदर्शवादी, लोकसेवी महामानवों ने यदि अपना सर्वस्व होम कर हमारे सामने सद्मार्ग और सदाचारण का आदर्श न रखा होता तो आज हम आध्यात्मिक क्षेत्र में उस ऊँचाई पर न होते, जिससे हम संसार के अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ और सम्मान के अधिकारी माने जाते हैं। इसलिये ऐसे महामहानतों के उपदेशों का यथाशक्ति पालन करते हुये शुभ कर्मों में अपनी शक्ति लगाना हमारा परम कर्त्तव्य है। यही देव-ऋण से उऋण होना है।

ऋषि की विशेषता यह है कि वे संसार में श्रेष्ठ विचारधारा का निर्माण और प्रचार करते हैं। जिन कार्यों को देव पुरुष प्रत्यक्ष रूप में करके संसार को आगे बढ़ाते हैं, उसकी तैयारी ऋषि-परम्परा के लोग ही अपने जीवन को कल्याणकारी ज्ञान के अध्ययन, मनन और चिन्तन के लिये अर्पित करके करते हैं। वे जानते हैं कि जब तक मनुष्यों की मनोभूमियों को अच्छी तरह परिष्कृत करके, जोत करके तैयार न किया जायेगा, तब तक उसमें श्रेष्ठ विचारों और कर्मों के बीज नहीं जम सकते। ऋषि-ऋण के उऋण होने का मार्ग यही है कि हम स्वाध्याय सत्संग और मनन द्वारा अपनी मनोभूमि को उत्कृष्ट बनावें और दूसरों को भी इस कार्य में, जैसे भी हमारे लिये सम्भव हो सहायता दें।

पितृ का अर्थ है—पूर्वज। जो लोग हमको जन्म देकर अच्छी तरह जीवित रहने और प्रगति पथ पर अग्रसर होने योग्य बन गये उनके प्रति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारा कर्त्तव्य प्रत्यक्ष ही है। हम जानते हैं कि भारतवासियों का गौरव किसी समय समस्त जात में व्याप्त था और वे 'जगत्गुरु' की पदवी से अलंकृत किये गये थे। उनके ऋण को चुकाने का तरीका यही है कि हम भी ऐसे काम करें, जिससे उनके गौरव में किसी प्रकार की कमी न आवे। कोई यह न कह सके कि वर्तमान समय में भारतवासी तो सब तरह से दीन, हीन और क्षुद्र दिखाई पड़ते हैं, इनके पूर्वज किस प्रकार महामानव के पद के योग्य माने जा सकते हैं ?

इस प्रकार देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण को चुकाकर मानव जन्म को सार्थक बनाने का सन्देश हमको यज्ञोपवीत के माध्यम से प्राप्त होता है। उस सन्देश का तात्पर्य यही है कि जब तक तुम अपने कर्त्तव्य का उचित रूप से पालन करके अपनी शक्तियों का अपने मानव-भ्राताओं की सेवा-परोपकार में लगाकर, इन तीनों ऋणों को न चुकाओगे तब तक तुम बन्धन मुक्त नहीं हो सकते। इस प्रकार यज्ञोपवीत सदैव हमारे कन्धे पर रहकर हमको महत्त्वपूर्ण उपदेश और शिक्षायें प्रदान करता रहता है। वह हमारा ध्यान उपरोक्त तीनों ऋणों और उनको उपयुक्त रूप में चुकाने की तरफ आकर्षित करता रहता है। इसमें संदेह नहीं कि यदि हम तन, मन, धन से-सच्चे हृदय से उनका पालन करें, तो हम भी उच्च पदवी के अधिकारी बन सकते हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा

अस्ति यज्ञोपवीतं यद् बाह्यप्रतीकमेव तत्।
नवसूत्रसमायुक्तं यज्ञात्मक शरीरिण।।१।।

यज्ञात्मक शरीर में नौ सूत्र से युक्त यज्ञोपवीत यज्ञमय जीवन का बाह्य प्रतीक है।।१।।

दूरीकरोति त्वरितं जडतां तमसावृताम्।
विवेकालोकमाप्तुं च द्वितीयं दिव्यजीवनम्।।२।।

अन्धकार से युक्त जड़ता को शीघ्र स्वाहा कर विवेक, प्रकाश तथा द्वितीय दिव्य जीवन को ग्रहण करता है।।२।।

द्विजत्वमिदमेवास्ति यज्ञश्चाप्ययमेव हि।
माता सद्बुद्धिरूपास्याध्यात्मिकजीवनस्य सा।।३।।

यही द्विजत्व है यही यज्ञ भी है। यह आध्यात्मिक जीवन की जननी सद्बुद्धि (ज्ञानस्वरूपा) रूपी गायत्री है।।३।।

पितोत्कृष्टप्रेमयोर्यज्ञरूपात्मकः प्रभुः।
तस्मात्स्वस्थेन मनसा द्वावेमौ पितरौ प्रति।।४।।
श्रद्धामविचलामेवमास्थामविकलां तथा।
धारयेन्निश्चयं कुर्याद् व्यवहर्तुं स्वजीवने।।५।।

उत्कर्षभावमय प्रेम ही यज्ञ रूप (परमेश्वर रूप) पिता है। अतः इन दोनों माता-पिता के प्रति अविचल श्रद्धा तथा अविचल आस्था धारण करे और इस अपने जीवन में, व्यवहार में लाने का निश्चय करे। विद्वान् इसे ही द्विजत्व की दीक्षा बतलाते हैं।।४-५।।

द्विजत्वस्यास्ति दीक्षेयमुच्यते सुबुधर्जनैः।
यज्ञोपवीतसूत्राणि त्रीण्युक्तानि मनीषिभिः।।६।।
त्रिपादमेव गायत्र्या नवसूत्राणि तथैव च।
नवानां सूत्रमूर्त्तेश्च शब्दानां प्रति मूर्त्तयः।।७।।
पावनः प्रणवस्तिस्रो महाव्याहृतयश्च याः।
ग्रन्थयः सन्ति गायत्र्या अन्तर्हितसुशिक्षणम्।।८।।

यज्ञोपवीत सूत्र प्रतिभा रूप गायत्री के तीनों चरण ही तीन लड़ें बनी हैं। नव धागे नव शब्दों की प्रतिमूर्ति हैं। प्रणव और तीनों महा व्याहृति ही ग्रन्थियाँ हैं। उपनयनधारी गायत्री में अन्तर्हित शिक्षा को धारण करने के रूप में ही उसे धारण करते हैं।।६-७-८।।

गृहीतुमेव सततं व्रतिनो धारयन्ति तत्।
त्यागमयत्वं यज्ञस्य गायत्र्या ज्ञानरूपता।।९।।
सामञ्जस्यं द्वयोस्तत्तु भवति यज्ञसूत्रकम्।
धार्यं त्यक्तुं हि दुर्वृत्तिमहोरात्रं च तद् द्विजैः।।१०।।
प्रयन्तते सुलाभाय देवत्वमानवत्वयोः।
मुक्तये च ऋणेभ्योपि सदा देवर्षिपितृणाम्।।११।।

यज्ञ की त्यागमयता और गायत्री की ज्ञानमयता बौद्धिक—पवित्रता का सामंजस्य ही यज्ञोपवीत है।।९।।

यज्ञोपवीतधारी सदा पशु वृत्ति का त्याग करने एवं मानवता और देवत्व की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते हैं। वे देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण से उन्मुक्त होने के लिये यथाशक्ति प्रयत्न करते हैं तथा इन गुणों को धारण करते हैं।।१०-११।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यतन्ते च पूर्णशक्त्या धारयन्ति गुणान्निमान्।
अहिंसा सत्यमस्तेयं तितिक्षाञ्चपरिग्रहम्।।१२।।
आस्तिक्यं संयमं शान्तिं शुचित्र्च नव संख्यकान्।
हृदये विशदं प्रेम वाण्यां माधुर्यमुत्तमम्।।१३।।
व्यवहारे तु सारल्यं नारीषु मातृभावनाम्।
कलासौन्दर्ययोर्नित्यमभिव्यक्तिश्च कर्मसु।।१४।।
सुसेवा सत्कृती भूतान्निखिलान्प्रत्युदारता।
गुरूणां बहुसम्मानं तदादेशस्य पालनम्।।१५।।
स्वाध्यायः शुभशास्त्राणां सत्संगः साधने रुचिः।
तनूवस्त्रञ्चगृहाणां च शोभावृद्धिश्च शुद्धता।।१६।।
कुसंगालस्ययोस्त्यागः श्रमशीलत्वमुच्चकम्।
स्वभावाभ्यासयोस्तेषां भवन्त्यंगानि सर्वदा।।१७।।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, तितिक्षा, अपरिग्रह, संयम, आस्तिकता, शान्ति, पवित्रता इन नौ गुणों को विवेकपूर्वक धारण करता है।

हृदय में विस्तृत प्रेम, वाणी में माधुर्य, व्यवहार में सरलता, नारी मात्र में मातृत्व की भावना, कर्म में कला और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति, सभी के प्रति उदारता और सेवा भावना, गुरुजनों का सम्मान, उसी प्रकार उनका आदेश पालन, सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्संग, साधन में रुचि, शरीर वस्त्र, घर एवं स्थान की स्वच्छता तथा शोभा वर्द्धन एवं शुद्धता और कुसंग, आलस्य का परित्याग, श्रमशीलता उनके सदैव स्वभाव और अभ्यास के ढंग बन जाते हैं।।१२-१७।।

यज्ञोपवीत संस्कार—प्रयोजन और विधि

संस्कार प्रयोजन—शिखा और सूत्र भारतीय संस्कृति के दो सर्वमान्य प्रतीक हैं। शिक्षा भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था की प्रतीक है, जो मुण्डन संस्कार के समय स्थापित की जाती है। यज्ञोपवीत सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर अपने जीवन में आमूलचूल परिवर्तन के संकल्प का प्रतीक है। इसके साथ ही गायत्री मन्त्र की गुरुदीक्षा भी दी जाती है। दीक्षा यज्ञोपवीत मिलकर द्विजत्व का संस्कार पूरा करते हैं। इसका अर्थ यह होता है 'दूसरा जन्म' होना। शास्त्र वचन है—

"जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते"

अर्थात्—जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं और संस्कार हो जाने पर उसकी 'द्विज' संज्ञा होती है। यज्ञोपवीत भारतीय संस्कृति में श्रेष्ठता का संस्कारित मानव का प्रतीक है।

यज्ञोपवीत बालक को तब देना चाहिये जब उसकी बुद्धि और भावना का इतना विकास हो जाय कि इस संस्कार के प्रयोजन को समझकर उसक निर्वाह के लिये उत्साहपूर्वक लग सके।

यज्ञोपवीत से सम्बन्धित स्थूल-सूक्ष्म मर्यादायें इस प्रकार हैं—

१-यज्ञोपवीत गायत्री की मूर्तिमान प्रतिमा है। यज्ञोपवीत के नौ धागे गायत्री के नौ शब्द हैं। (१) तत्, (२) सवितुः (३) वरेण्यं, (४) भर्गो, (५) देवस्य, (६) धीमहि, (७) धियो, (८) योनः (९) प्रचोदयात्-यही नौ धागे हैं। यज्ञोपवीत में तीन गाँठें को भूः भुवः स्वः तीन व्याहृतियाँ माना गया है। गायत्री के 'ॐकार' को बड़ी ब्रह्म ग्रन्थि कहा गया है। गायत्री के एक-एक पद को लेकर ही उपवीत की रचना हुई है। इस प्रतिमा को शरीर मन्दिर में स्थापित करने पर उसकी पूजा-अर्चना करने का उत्तरदायित्व भी स्वीकार करना होता है। इसके लिये नित्य कम से कम एक माला गायत्री जप की साधना करनी चाहिये।

२-यज्ञोपवीत को व्रत बन्ध कहते हैं। व्रतों से बँधे बिना मनुष्य का उत्थान सम्भव नहीं। यज्ञोपवीत को व्रतशीलता का प्रतीक मानते हैं। इसीलिये इसे सूत्र (फार्मूला-सहारा) भी कहते हैं। यज्ञोपवीत के नौ धागे नौ गुणों के प्रतीक हैं। प्रत्येक धारण करने वाले को इन गुणों को अपने में बढ़ाने का निरन्तर ध्यान बना रहे, यह स्मरण जनेऊ के धागे दिलाते रहते हैं। नौ गुण हैं—(१) विवेक, (२) पवित्रता, (३) शान्ति, (४) साहस, (५) स्थिरता, धैर्य, (६) कर्त्तव्यनिष्ठा, (७) बलिष्ठता, (८) समृद्धि (९) सामूहिकता।

यज्ञोपवीत के धागों में नीति का सारा सार सन्निहित कर दिया गया है। जैसे कागज और स्याही के सहारे किसी नगण्य से पत्र या तुच्छ सी लगने वाली पुस्तक में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ज्ञान-विज्ञान भर दिया जाता है, उसी प्रकार सूत्र के इन नौ धागों में जीवन विकास का सारा मार्गदर्शन समाविष्ट कर दिया गया। इन धागों को कन्धों पर, कलेजे पर, हृदय पर, पीठ पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिष्ठापित करने का प्रयोजन यह है कि सन्निहित शिक्षा को यज्ञोपवीत के धागे स्मरण कराते रहें ताकि उन्हें जीवन व्यवहार में उतारा जा सके।

यज्ञोपवीत को माँ गायत्री और यज्ञ पिता की संयुक्त प्रतिमा मानते हैं। उसकी मर्यादा के कई नियम हैं जैसे--

(१) यज्ञोपवीत को मल-मूत्र विसर्जन के पूर्व दाहिने कान पर चढ़ा लेना चाहिये और हाथ स्वच्छ करके ही उतारना चाहिये। इसका स्थूल भाव यह है कि यज्ञोपवीत कमर से ऊँचा हो जाय और अपवित्र न हो। अपने व्रतशीलता के संकल्प का ध्यान इसी बहाने बार-बार किया जाये।

(२) यज्ञोपवीत का कोई तार टूट जाये या ६ माह से अधिक समय हो जाय तो बदल देना चाहिये। खण्डित प्रतिमा शरीर पर नहीं रखते। धागे कच्चे और गन्दे होने लगे, तो पहले ही बदल देना उचित है।

(३) जन्म-मरण के सूतक के बाद इसे बदल देने की परम्परा है। जिनके गोद में छोटे बच्चे नहीं हैं वे महिलायें भी यज्ञोपवीत सम्भाल सकती हैं। किन्तु उन्हें हर मास मासिक शौच के बाद उसे बदल देना पड़ता है।

(४) यज्ञोपवीत शरीर से बाहर नहीं निकाला जाता। साफ करने के लिये उसे कण्ठ में पहने रहकर ही घुमाकर धो लेते हैं। भूल से उतर जाय तो प्रायश्चित की एक माला जप करने या बदल लेने का नियम है।

(५) देव प्रतिमा को मर्यादा बनाये रखने के लिये उसमें चाबी के गुच्छे आदि न बाँधे। इसके लिये भिन्न व्यवस्था रखें।

बालक जब इन नियमों के पालन करने योग्य हो जायें तभी उनका यज्ञोपवीत करना चाहिये।

यज्ञोपवीत भारतीय धर्म का पिता है और गायत्री संस्कृति की माता, दोनों का जोड़ा है। यज्ञ पिता के कन्धे पर और गायत्री माता को हृदय में एक साथ धारण किया जाता है। गायत्री प्रत्येक भारतीय धर्मानुयायी का गुरु मन्त्र है। उसे यज्ञोपवीत के समय पर ही विधिवत् ग्रहण करना चाहिये। ज्ञान की मशाल को अन्तःकरण में अवस्थित सद्गुणों को ही गुरु मानना चाहिये। आज उस स्तर के गुरु दीख नहीं पड़ते जो स्वयं पार हो चले हों और दूसरों को अपनी नाव पर बिठा कर पार लगा सकें। जिधर भी दृष्टि डाली जाती है, नकलीपन और धोखा ही भरा मिलता है। अस्तु यह अच्छा है कि व्यक्तियों को गुरु न बनाया जाय। सद्गुरु (अन्तःकरण के प्रकाश के) प्रत्यक्ष में ज्ञान यज्ञ की दिव्य ज्योति लाल मशाल को गुरु माना जाय और यज्ञोपवीत के समय शुद्ध उच्चारण की दृष्टि से किसी भी श्रेष्ठ व्यक्ति के मन्त्रारम्भ की प्रक्रिया पूरी की जाये।

विशेष व्यवस्था

यज्ञोपवीत संस्कार के लिये यज्ञादि की सामान्य व्यवस्था के साथ-साथ नीचे लिखी व्यवस्थाओं पर भी दृष्टि रखनी चाहिये।

१-पुरानी परम्परा के अनुसार यज्ञोपवीत लेने वाले बालकों का मुण्डन करा दिया जाता था, उद्देश्य था शरीर की श्रृंगारिकता के प्रति उदासीनता। जिन्हें यज्ञोपवीत लेना हो उनसे एक दिन पूर्व बाल कटवा छँटवाकर शालीनता के अनुरूप करा लेने का आग्रह किया जा सकता है।

२-जितनों का यज्ञोपवीत होना है, उनके अनुसार मेखला कोपीन, दण्ड, यज्ञोपवीत, पीले दुपट्टों की व्यवस्था करा लेनी चाहिये।

मेखला और कोपीन संयुक्त रूप से दी जाती है। मेखला कहते हैं कमर में बाँधने योग्य नाड़ा जैसे सूत्र को। कपड़े की सिली हुई सूत की डोरी, कलावे के लम्बे टुकड़े से मेखला बना लेनी चाहिये। कोपीन लगभग ६ इन्च चौड़ा डेढ़ फुट लम्बा लंगोटी का कपड़ा होता है। इसे मेखला के साथ टाँककर भी रखा जा सकता है।

दण्ड के लिये लाठी या ब्रह्म दण्ड जैसा रोल भी रखा जा सकता है। यज्ञोपवीत पीले रंगकर रखे जाने चाहिये। न रंग पायें तो उनकी गाँठ को हल्दी से पीला कर देना चाहिये। संस्कार कराने वालों से पहले से ही कहकर रखा जाय कि सभी या कम से कम एक वस्त्र धारण करके बैठें। नया दुपट्टा भी लेना पर्याप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। संस्कार कराने वाले हर व्यक्ति के लिये पीले दुपट्टे की व्यवस्था करा ही लेनी चाहिये।

३-गुरू पूजन के लिये लाल मशाल का चित्र रखना चाहिये। गुरु व्यक्ति नहीं चेतना रूप है, ऐसा समझकर युग शक्ति की प्रतीक मशाल को ही गुरु का प्रतीक मानकर रखना अधिक उपयुक्त है।

४-वेद का अर्थ है—ज्ञान। वेद पूजन के लिये वेद की पुस्तक उपलब्ध न हो तो कोई भी पवित्र पुस्तक पीले वस्त्र में लपेटकर पूजा वेदी पर रख देनी चाहिये।

५-गायत्री, सावित्री एवं सरस्वती पूजन के लिये पूजन वेदी पर चावल की तीन छोटी-छोटी ढेरियाँ रख देनी चाहिये।

देव पूजन—रक्षा विधान तक के उपचार पूरे करके विशेष कर्मकाण्डों को क्रमबद्ध रूप से कराया जाता है। समय और परिस्थितियों के अनुरूप प्रेरणायें एवं व्याख्यायें भी की जानी चाहिये। क्रिया निर्देश और भाव संयोग का क्रम पूरी सावधानी के साथ बनाया जाये।

मेखला-कोपीन धारण

(मेखला-कोपीन धारण करने का प्रयोजन क्या है ? उसकी शिक्षा एवं प्रेरणा के लिये विवेचन प्रकरण पढ़ें)

क्रिया और भावना—मेखला एवं कोपीन एकत्रित रखकर आचार्य तीन बार गायत्री मन्त्र बोलते हुये उन पर जल के छींटे लगायें। भावना करें कि इनमें समय और तत्परता के संस्कार पैदा किये जा रहे हैं।

सिंचन के बाद उन्हें संस्कार कराने वालों के पास पहुँचा दिया जाय। वे हाथों के सम्पुट में रखें। मन्त्रोच्चार के साथ भावना करें कि प्राणशक्ति का संरक्षण तथा सही योजना करने का उत्तरदायित्व हम पर आ रहा है। उसे हम साहस और प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करते हैं। उस दिशा में मिलने वाले हर विचार, सहयोग एवं भावना को हम सम्मान के साथ स्वीकार करते रहेंगे। मेखला कोपीन के साथ दैवी संस्कार का वरण हम कर रहे हैं। मन्त्र पूरा होने पर उसे कमर में स्वयं बाँध लें या खोंसलें। लँगोट पहनने का अभ्यास बनाने का आग्रह भी किया जाये।

मन्त्रः ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमानां वर्णपवित्रं पुनतीम आगात।
प्राणापानाभ्याम् बलमादधाना स्वसादेवी सुभगा मेखलेयम्।। —पार० गृ० २/२/८

दण्ड धारणम्

शिक्षण और प्रेरणा—आश्रमवासी ब्रह्मचारियों को दण्ड धारण कराया जाता था। उसके साथ अनेक स्थूल उपयोग एवं सूक्ष्म प्रेरणायें जुड़ी हैं।

इसकी सुविस्तृत विवेचना पिछले पृष्ठों पर दी जा चुकी है।

क्रिया और भावना—दण्ड पर गायत्री मन्त्र के साथ कलावा बाँध देना चाहिये। यह कार्य पहले से भी करके रखा जा सकता है और उसी समय भी किया जा सकता है। दण्ड मन्त्र के साथ संस्कार कराने वालों को दिया जाय। वह उसे दोनों हाथों से लेकर मस्तक से लगायें।

भावना करें कि अध्यात्म क्षेत्र के प्रखर अनुशासन को ग्रहण किया जा रहा है, इसके साथ देव शक्तियों द्वारा उसके अनुरूप प्रवृत्ति और शक्ति प्रदान की जा रही है।

आचार्य निम्न मन्त्र बोलते हुये ब्रह्मचारी को दण्ड प्रदान करें—

मन्त्र—ॐ यो दण्डः परापतद्धायसोऽधिभूम्याम्।
तमहं पुनरादद ऽ आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।।
—पार० गृ० सू० २।२।११

यज्ञोपवीत पूजनम्

यज्ञोपवीत देव प्रतिमा है। उसकी स्थापना के पूर्व उसकी शुद्धि तथा उसमें प्राण प्रतिष्ठा का उपक्रम किया जाता है। जनेऊ को सबसे प्रथम पवित्र करना चाहिये। उसे शुद्ध जल से सम्भव हो तो गंगाजल से धोया जाय ताकि अब तक उस पर पड़े हुये स्पर्श संस्कार दूर हो जायें। इसके बाद उसे दोनों हाथों के बीच रखकर १० बार गायत्री मन्त्र का मानसिक जप किया जाये। इतना करने से वह पवित्र एवं अभिमन्त्रित हो जाता है। फिर हाथ में अक्षत पुष्प लेकर यज्ञोपवीत पूजन का मन्त्र बोला जाय। मन्त्र पूरा होने पर अक्षत पुष्प उस पर चढ़ा दिये जावें।

भावना की जाय की सूत्र की बनी इस देव प्रतिमा को शुद्ध एवं संस्कारवान् बनाकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसमें सन्निहित देवत्व के प्रति अपनी भावना आस्था समर्पित की जा रही है।

मन्त्र : ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामोऽ३प्रतिष्ठ। यजु. २/१२

पंच देवावाहनम्

शिक्षण और प्रेरणा—ब्रह्मा, विष्णु महेश, यज्ञ और सूर्य:—इन पाँच देवताओं को पाँच दिव्य भावनाओं का प्रतीक माना गया है ब्रह्मा—अर्थात् आत्म-बल, विष्णु-अर्थात् समृद्धि, महेश—अर्थात् व्यवस्था, यज्ञ—अर्थात् परमार्थ, सूर्य—अर्थात् पराक्रम—इन पाँचों गुणों को देवता मानकर हम यज्ञोपवीत के माध्यम से अपने हृदय और कलेजे पर धारण करें, अर्थात् उन्हें अपनी आस्था एवं प्रकृति का अंग बनावें तभी वास्तविक कल्याण का मार्ग मिलेगा।

(१) **ब्रह्मा**—जीवन के भौतिक और आत्मिक दोनों ही पहलू सुविकसित होने चाहिये। हमें आत्मबल से सम्पन्न होने के लिये संयमी, सदाचारी, मधुरभाषी, शालीन, नेक, सज्जन, आस्तिक, सद्गुणी होना चाहिये। जिनका व्यक्तिगत जीवन पवित्र एवं सद्भावनायुक्त है, उसी का आत्मबल बढ़ेगा। यज्ञोपवीत में आह्वाहित प्रथम देवता ब्रह्मा को धारण करने का तात्पर्य इस मान्यता को हृदयंगम करना एवं उसके लिये प्रयत्नशील रहना ही है।

क्रिया और भावना—यज्ञोपवीत खोलकर उसे हाथ के दोनों अंगूठों में फैला लें, ताकि फिर से न उलझे। अब उसे दोनों हाथों के सम्पुट में लें। मन्त्रोच्चार के साथ भावना करें कि आवाहित देवशक्ति का प्रवाह इस सूत्र में स्थापित हो रहा है। मन्त्र पूरा होने पर हाथों को मस्तक से लगावें।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
स बुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः।।
ॐ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

—यजु० १३/३, अथर्व० ५/६/१

(२) **विष्णु**—दो देवता आत्मबल बढ़ाने वाले हैं और तीन देवता लोक-बल। विष्णु लक्ष्मी के स्वामी हैं, हमें दीन, दरिद्र, हेय, परावलम्बी, गई-गुजरी स्थिति में नहीं पड़ा रहना चाहिये। स्वास्थ्य, शिक्षा, कुशलता आदि गुणों को बढ़ाना चाहिये ताकि उनकी कीमत पर सुख साधनों को, समृद्धि को उपलब्ध किया जा सके समृद्धि उपलब्ध करने का सही मार्ग केवल एक ही है, अपनी सर्वांगीण प्रतिभा एवं योग्यताओं को बढ़ाना। इस दिशा में जो जितना विकास कर लेगा उसे उस मूल्य पर आसानी से अधिक सुख साधन मिल जायेंगे। समृद्धि को मनुष्य अपनी तथा दूसरों की सुविधा बढ़ाने में खर्च करे तो उससे लोक एवं परलोक की सुख-शान्ति बढ़ेगी। यज्ञोपवीत में स्थापित विष्णु का संदेश यही है।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। यजु० ५/१५

(३) **महेश**—महेश का अर्थ है, नियन्त्रण, व्यवस्था, क्रमबद्धता उचित का चुनाव। ब्रह्मा को उत्पादन का, विष्णु को पालन का और शिव को संहार का देवता माना गया है। संहार का अर्थ है, अनुपयोगिता एवं अनौचित्य का निवारण। हमारी आधी से अधिक शक्ति सामर्थ्य अव्यवस्था एवं अनौचित्य को अपनाये रहने से नष्ट होती रहती है, इसे बचाया जाना चाहिये। यज्ञोपवीत में शिव देवता का आव्हान इन्हीं मान्यताओं को हृदयंगम करने के लिये किया जाता है।

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽ उतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि। ध्यायामि।। —यजु० १६/१

(४) **यज्ञ**—आत्मबल बढ़ाने के लिये दूसरा अनिवार्य माध्यम परमार्थ है। यज्ञ इसी प्रवृत्ति का परिचायक है। धार्मिक व्यक्ति वही है, जिसके जीवन से सेवा, उदारता, सहृदयता एवं परोपकार की वृत्ति फूटी पड़ती है, जिसे सभी अपने लगते हैं, जिसे सभी से प्रेम है, वही सच्चा अध्यात्मवादी कहा जायेगा। उसे अनिवार्यत: अपनी आकांक्षाओं और गतिविधियों में परमार्थ को प्रधानता देनी ही होगी। ब्रह्मा और यज्ञ इन दो देवताओं को—वैयक्तिक जीवन की पवित्र एवं लोक सेवा की प्रवृत्ति को—अपनाने से आत्मिक बल बढ़ता है और मनुष्यत्व से देवत्व की ओर प्रगति होती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञोपवीत खोलकर कनिष्ठिका व अंगुष्ठ में फँसाकर यज्ञ भगवान के सामने करें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। —यजु० ३१/१६

(५) **सूर्य**—सूर्य अर्थात् तेजस्विता, पराक्रम, श्रमशीलता। सूर्य की तरह हम निरन्तर कार्य संलग्न रहें, परिश्रम को अपना जीवन सहचर एवं गर्व गौरव का आधार मानें। आलस्य और प्रमाद को पास न फटकने दें। सदा जागरूक एवं चैतन्य रहें। पुरुषार्थी बनें। आत्महीनता एवं दीनता की भावना मन में न आने दें। तेजस्वी बनें एक पैर से खड़े होकर पानी का लोटा सूर्य के सामने लुढ़का देने से नहीं, सूर्य की सच्ची उपासना उसकी प्रेरणाओं को अपनाने से होती है।

यज्ञोपवीत को लिये हुये दोनों हाथ ऊपर उठायें, सूर्य भगवान का ध्यान करें—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।
ॐ सूर्याय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

—यजु. ३३/४३

यज्ञोपवीत धारणम्

शिक्षण और प्रेरणा—कोई भी वस्त्र आभूषण हो, अपनी शोभा प्रतिष्ठा तब बढ़ाता है जब उसे धारण किया जाये। यज्ञोपवीत प्रतीक को धारण करते हुये यह ध्यान रखा जाय कि यह सूत्र नहीं, इस माध्यम से जीवन में दिव्यता आदर्शवादिता को धारण किया जा रहा है। इसे सहज ही धारण किया जाना चाहिये क्योंकि इसके बिना मनुष्य में मनुष्यता का विकास सम्भव नहीं।

क्रिया और भावना—पाँच यज्ञोपवीतधारी व्यक्ति मिलकर यज्ञोपवीत पहनाते हैं। भाव यह है कि इस दिशा में नया प्रयास, प्रवेश करने वाले की अनुभवियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता रहे। पहनाने वाले जब यज्ञोपवीत पकड़ लें तो धारण करने वाला उसे छोड़ दे। बायाँ हाथ नीचे कर ले और दाहिना हाथ ऊपर ही उठाये रहे। मन्त्र के साथ यज्ञोपवीत पहना दिया जाये। मन्दिर में प्रतिमा स्थापना जैसा दिव्यभाव बनाये रखें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीत बलमस्तु तेजः।।

—पार० गृ० सू० २/२/११

सूर्य-दर्शन

शिक्षण एवं प्रेरणा—तदुपरान्त सूर्य दर्शन एवं सूर्य अर्घ्यदान की क्रिया है। संस्कारार्थी सूर्य भगवान को देखता है और तीन अंजलि भर के श्रद्धापूर्वक उन्हें जल प्रदान करता है। सूर्य की रीति-नीति अपनाने का भाव संकल्प करते हुये शरीर मन और धन-सम्पदा से इन आदर्शों पर चलने की स्वीकृति प्रदान करता है।

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चार के साथ सूर्य नारायण का ध्यान करते हुये हाथ जोड़कर नमस्कार करें, भावना करें, जगतात्मा सूर्य जिस प्रकार सारी प्रकृति को शक्ति देते हैं, वैसे ही उनका सूक्ष्म प्रवाह हमें मिल रहा है, हम उससे धारण और नियोजन की सामर्थ्य पा रहे हैं।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

—यजु. ३६/२४

त्रिपदा पूजन

शिक्षण एवं प्रेरणा—गायत्री माता के तीन चरण कहे गये हैं। यज्ञोपवीत की तीन लड़ें उसकी प्रतीक हैं। उन्हें सूत्र रूप में गायत्री, सरस्वती और सावित्री शक्तियों के रूप में जाना जाता है। इनकी प्रतिनिधि धारणायें क्रमशः श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा हैं। यह मनुष्य के कारण, सूक्ष्म और स्थूल कलेवरों को नियन्त्रित, विकसित करने वाली हैं। इन्हीं के सहारे देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋणों से मुक्त हुआ जा सकता है। इन्हें ही भक्ति, ज्ञान और कर्म की धाराओं की गंङ्गोत्री माना जाता है। इनका मर्म समझने तथा अनुसरण करने के भाव से त्रिपदा पूजन के अन्तर्गत इन्हीं तीन शक्तियों का पूजन किया जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रिया और भावना—पूजन वेदी पर स्थापित चावल की तीन ढेरियों को गायत्री, सावित्री एवं सरस्वती का प्रतीक मानकर उनके मन्त्र बोलकर अक्षत, पुष्प उन पर चढ़ाये जावें। भावना की जाय कि ऊँची सतह का पानी निचली सतह पर आता है। इन शक्तियों के आगे उनका पूजन करके झुककर-उनके प्रवाह को हम प्राप्त कर रहे हैं। गायत्री पूजन के साथ श्रद्धा सरस्वती के साथ प्रज्ञा और सावित्री के साथ निष्ठा सम्पदाओं के सम्बर्धन की भावना की जाये।

गायत्री पूजन

ॐ ता ऽ सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाऽहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम्।

यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीना ऽ सहस्रधारां पयसा महीं गाम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। —यजु० १७/७४

सरस्वती पूजन

ॐ पावकाः नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः। ॐ सरस्वत्यै नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। —यजु० २०/८४

सावित्री पूजन

ॐ सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभिरिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाऽग्निना तेजसा सोमेन राज्ञो विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्रसर्पामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।। —यजु० १०/३०

दीक्षा प्रकरण

यज्ञोपवीत संस्कार के साथ दीक्षा अनिवार्य रूप से जुड़ी है। बहुत बार पूज्य गुरुदेव के विचारों तथा मार्ग-दर्शन के प्रति आस्थावान व्यक्तियों को दीक्षा भी देनी पड़ती है। दोनों ही प्रकरणों में दीक्षा के उद्देश्य, महत्त्व और मर्यादाओं पर उनका ध्यान दिला देना चाहिये।

महत्त्व और मर्यादायें

दीक्षा पाने के लिये व्यक्ति बहुधा सहज श्रद्धावश पहुँच जाते हैं। दीक्षा के पूर्व उन्हें इस कृत्य का महत्त्व और उसकी मर्यादायें समझा देनी चाहिये। उसके मुख्य सूत्र यह हैं—

(१) गुरुदीक्षा सामान्य कर्मकाण्ड नहीं, एक सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रयोग है। उसके अन्तर्गत शिष्य अपनी श्रद्धा और संकल्प के सहारे गुरु के समर्थ व्यक्तित्व के साथ जुड़ता है। कर्मकाण्ड उस सूक्ष्म प्रक्रिया का एक अंग है।

(२) दीक्षा में समर्थ गुरु के विकसित प्राण का एक अंश शिष्य के अन्दर स्थापित किया जाता है। यह कार्य पूज्य गुरुदेव ही कर सकते हैं। उन्हीं का प्राणानुदान दीक्षा लेने वालों को मिलता है, कर्मकाण्ड कराने वाला स्वयंसेवक मात्र है।

(३) व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ता है, वह उसी प्रकार ठीक है जैसे— पौधा अपनी ही जड़ों से जीवित रहता है और बढ़ता है। किन्तु यह भी सत्य है कि वृक्ष की कलम सामान्य पौध में बाँध देने पर उसके उत्पादन में भारी परिवर्तन हो जाता है। दीक्षा में साधक रूपी सामान्य पौधे पर गुरु रूपी श्रेष्ठ वृक्ष की टहनी प्राणानुदान के रूप में स्थापित की जाती है। साधक इसका अनुपम लाभ उठा सकता है।

(४) कलम बाँधना एक कार्य है। यह गुरुदेव कर देते हैं। उसे रक्षित और विकसित करना दूसरा कार्य है, जिसके लिये शिष्य को पुरुषार्थ करना पड़ता है। दीक्षा लेने वालों को अपने इस दायित्व के प्रति जागरूक रहना चाहिये। इसके लिये गुरुदेव के विचारों के सतत् सान्निध्य में रहना आवश्यक है, मिशन की पत्रिकाओं से उनका मार्गदर्शन पाते रहना तथा तदनुरूप जीवन क्रम बनाने का प्रयास करना चाहिये।

(५) दीक्षा के बाद गुरु-शिष्य परस्पर पूरक बन जाते हैं। गुरु की शक्ति शिष्य के उत्कर्ष के लिये लगती रहती है। पर वह तभी सम्भव है, जब शिष्य की शक्ति गुरु के कार्यों-लोक मंगल के लिये नियमित रूप से लगती रहे। इसे देवत्व की साझेदारी कहा जा सकता है। शिष्य को अपने समय, पुरुषार्थ, प्रभाव, ज्ञान एवं धन का एक अंश नियमित रूप से गुरु के कार्य के लिये लगाना होता है। यह क्रम चलता रहे तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लगाई हुई कलम का फलित होना अवश्यम्भावी है।

क्रम व्यवस्था

यदि यज्ञोपवीत के साथ दीक्षा क्रम चलाना है तो त्रिपदा पूजन के बाद गुरु-पूजन-नमस्कार कराके दीक्षा दे दी जाये। यदि अलग से दीक्षा क्रम चलता है तो नीचे लिखे क्रम से उपचार करते हुये आगे बढ़े।

(१) **पहले षट्कर्म**—पवित्रीकरण, आचमन, शिखा बन्धन, प्राणायाम, न्यास एवं भूमि पूजन करायें। इनके साथ संक्षिप्त भावभरी सारगर्भित व्याख्यायें की जायें।

(२) षट्कर्म के बाद देवपूजन एवं सर्वदेव नमस्कार करायें।

(३) नमस्कार के बाद हाथ में पुष्प, अक्षत, जल लेकर स्वस्तिवाचन कराया जाय। स्वस्तिवाचन के अक्षत, पुष्प एकत्रित करने के साथ ही नियुक्त स्वयंसेवकों द्वारा कलावा बाँधने एवं तिलक करने का क्रम चलाया जाय। उसके मन्त्र एवं व्याख्यायें संचालक खोलते रहें।

यदि दीक्षा क्रम यज्ञ के साथ चल रहा है तो उपरोक्त में से जो उपचार पहले कराये जा चुके हैं, उन्हें पुनः कराना आवश्यक नहीं। उस स्थिति में गुरु पूजन करके ही दीक्षा दी जाये।

गुरु पूजन

जिस प्रकार भगवान मूर्ति नहीं, एक चेतना है, उसी प्रकार गुरु को व्यक्ति नहीं, चेतना रूप मानना चाहिये। जो ईश्वर को मूर्तियों चित्रों तक सीमित मानता है, वह ईश्वरीय सत्ता का समुचित लाभ नहीं उठा सकता। इसी प्रकार जो गुरु को शरीर तक सीमित मानता है, वह गुरु सत्ता का लाभ उठा नहीं सकता। जिस प्रकार ईश्वर है—पर भक्त की मान्यता की भावना के अनुरूप प्रत्यक्ष फल देता है, वैसे ही गुरु भी शिष्य की आस्था के अनुरूप फलित होता है। यह ध्यान में रखकर गुरु वन्दना के साथ अन्तःकरण में गुरु चेतना के प्रकटीकरण और उसके उपयोग की सामर्थ्य प्राप्त होने की प्रार्थना की जानी चाहिये।

क्रिया और भावना—गुरुदेव के प्रतीक पर मन्त्र के साथ अक्षत पुष्प चढ़ाकर उनका पूजन करें। फिर हाथ जोड़कर भाव-भरी वन्दना करें। भावना करें कि उनकी कृपा से उन्हें चेतना रूप में समझने, अपनाने की क्षमता का विकास हो रहा है।

ॐ बृहस्पते ऽ अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा।।

ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। ततो नमस्कारं करोमि।

—तै० सं० १/८/२२/२, ऋग्वेद २/२३/५, यजु० २६/३

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

—गुरुगीता ४४

मन्त्र दीक्षा

शिक्षण और प्रेरणा—गायत्री मन्त्र सहज रूप से एक छन्द है, प्रार्थना है। गुरु जब उसके साथ अपने तप, पुण्य और जोड़ देता है तो यह मन्त्र बन जाता है। यह सब देने की सामर्थ्य जिसमें न हो वह दीक्षा देने का प्रयास करे तो निरर्थक रूप से पातक का भागी बनता है। स्वयंसेवक भाव से गुरुदेव की ही चेतना का प्रवाह दीक्षित व्यक्ति से जोड़ने में अपनी सद्भावना का प्रयोग करना उचित है।

क्रिया और भावना—अब साधकों को सावधान होकर बैठने को कहें। कमर सीधी। हाथ की उंगलियाँ परस्पर फँसाकर हाथ के अंगूठों को सीधा रखते हुये परस्पर मिलायें। अँगूठे के नाखूनों पर साधक अपनी दृष्टि टिकायें। यह स्थिति मन्त्र दीक्षा चलने तक बनी रहे। कहीं इधर-उधर न देखें। मन्त्र दीक्षा के बाद जब सिंचन हो जाये, तब दृष्टि हटायें और हाथ खोलें।

उपरोक्त मुद्रा बनाने के बाद दीक्षा कर्मकाण्ड कराने वाले स्वयं सेवक पूज्य गुरुदेव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का ध्यान करते हुये गायत्री मन्त्र का एक-एक शब्द अलग-अलग करके बोलें। दीक्षा लेने वाले उसे दुहराते चलें। इस क्रम से पाँच बार गायत्री मन्त्र दुहराया जाय।

भावना की जाये 'गुरु की दिव्य सामर्थ्य, उनके तप, पुण्य और प्राण का अंश मन्त्राक्षरों के साथ साधक के अन्दर प्रविष्ट-स्थापित हो रहा है। उपयुक्त मनोभूमि में वह फलित होकर ही रहेगी।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। —यजु. ३६/३

सिंचन-अभिषेक

शिक्षण एवं प्रेरणा—वृक्ष, बीज या कलम आरोपित करने के बाद उसमें पानी दिया जाता है। पानी उसके अनुरूप होना चाहिये अन्यथा तेल साबुन, तेजाबयुक्त पानी पौधे को नष्ट करेगा। गुरू के अनुदान के दिव्य रस श्रेष्ठ कर्मों उसके द्वारा निर्दिष्ट अनुशासनों के पालन में उल्लास की अनुभूति से सींचा जाता है। पेड़ लगे, फले-फूलें यह भाव सींचने का है। अभिषेक राजाओं, योद्धाओं, सत्पुरुषों का किया जाता है। दीक्षा लेकर नया श्रेष्ठ जीवन प्रारम्भ किये जाने का अभिनन्दन करते हुये अभिषेक किया जाता है।

क्रिया और भावना—कुछ स्वयंसेवक कलश लें। आम के पत्ते या कुश या पुष्प द्वारा मन्त्र के साथ जल के छींटे दीक्षितों पर लगायें। भावना की जाय कि सिंचन के साथ दैवी शक्तियों, स्नेहियों की भावनाओं की वर्षा हो रही है, साधकों को साधना फलीभूत होने की स्थिति बन रही है।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा ऽअरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथा च नः॥ —यजु० ३०/५४-१६

यदि केवल दीक्षा क्रम अलग से चल रहा है तो सिंचन के बाद गुरु दक्षिणा संकल्प करायें। यज्ञोपवीत के साथ दीक्षा है तो यज्ञोपवीत के शेष कर्म पूरे कराकर संकल्प करायें।

भिक्षा-चरणम्

शिक्षण एवं प्रेरणा—गुरु दक्षिणा द्वारा साधक अपने विकास की सुनिश्चित मर्यादा घोषित करता है। सदुद्देश्य के लिये अपना अंशदान देता है परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं होती। सत्कार्यों में अपने योगदान के लिये औरों का योगदान भी जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिये। इसके लिये देने की स्थिति और इच्छा जिनमें है, उनसे लेकर उसे सत्कार्य में लगाना परम पुनीत कार्य माना जाता है। भिक्षा की परम्परा इसी दृष्टि से श्रेष्ठ मानी जाती थी। शिष्य इस परिपाटी के पालन का साहस करे। अपने अहं को गलाकर जन सहयोग एकत्रित करके गुरुकार्य में लगाये। इसी भाव से यज्ञोपवीत के साथ भिक्षा चरण का क्रम भी जुड़ा रहता है।

क्रिया और भावना—शिष्य दुपट्टे की झोली बनाकर भिक्षा माँगे पहले माँ के पास जाये कहे "भवति भिक्षां देहि" फिर पिता के पास जाकर कहे, "भवान् भिक्षां देहि"। फिर इसी प्रकार कहता हुआ अपने कुटुम्बियों महिलाओं-पुरुषों से याचना करे, जो मिले उसे गुरु के सम्मुख अर्पित कर दे। भिक्षा के लिये देने वालों के हाथों में अक्षत दे दिये जायें। अपनी इच्छा से वे कुछ द्रव्य डालना चाहें तो डाल सकते हैं।

'भवति-भवान् भिक्षां देहि' कहते हुये शिक्षा पूरी करके उपलब्ध सामान गुरु के सम्मुख चढ़ा दिया जाता है।

वेद पूजनम्—अध्ययनम्

शिक्षण और प्रेरणा—गायत्री को वेद माता कहा गया है। उसकी उपासना तथा संदेशों को अन्तःकरण में प्रतिष्ठापित करना वेद का आरम्भ कहा जा सकता है। वेदों का सार गायत्री है। उसे वेद-बीज या वेद-मूल भी कहते हैं। इस महामन्त्र का अवगाहन, वेदारम्भ संस्कार भी कहा जा सकता है। इसे कम से कम १०८ बार नित्य जपना चाहिये और उसके अर्थों को अपने लिये ईश्वरीय निर्देश मानकर उस आधार पर अपनी गतिविधियों का निर्धारण करना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेदमाता गायत्री के निर्देशों के अनुरूप जीवन निर्माण की अपनी आस्था के प्रतीक रूप में वेद पूजन भी इस अवसर पर किया जाता है।

क्रिया और भावना—हाथ में पुष्प-अक्षत लेकर वेदों का प्रतीक पूजन किया जाय। फिर नीचे दिये प्रत्येक वेद के एक-एक मन्त्र बुलवाये जावें। आचार्य कहें, दीक्षित व्यक्ति दुहरावें।

ॐ वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः। देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः।। ॐ वेदपुरुषाय नमः।। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। —यजु० २/२१

वेदाध्ययनम्

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।। होतारं रत्नधातमम्।। —ऋग्वेद १/१/१

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽ आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत ऽ माघशं ँ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।। —यजु० १/१

ॐ अग्नेऽआ याहि वीतये गृणानोहव्य दातये। निहोता सत्सिबर्हिषि।। —साम० १/१/१

ॐ ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वारूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।

—अथर्व० १/१/१

विशेष आहुति

इसके बाद अग्नि स्थापन से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियों तक के उपचार पूरे करें। स्विष्टकृत आहुति के पूर्व विशेष आहुतियाँ की जायें।

शिक्षण एवं प्रेरणा—यज्ञोपवीत व्रत बन्ध है। व्रतशील तेजस्वी जीवन जीने का आरम्भ यहाँ से किया जाता है। इस व्रतशीलता के लिये पाँच व्रतपति देवताओं के नाम की आहुतियाँ डालते हैं। यह देव शक्तियाँ हैं—अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र और इन्द्र।

अग्नि से ऊष्मा, प्रकाश, ऊँचे उठना, सबको अपने जैसा बनाना तथा प्राप्त को वितरित करके अपने लिये कुछ न शेष रखना आदि प्रेरणायें प्राप्त होती हैं।

वायु में सतत् गतिशीलता, जीवों की प्राण रक्षा के लिय स्वयं उन तक पहुँचना, सहज उपलब्ध रहना, बादल सुगन्धि जैसी सत्प्रवृत्तियों के प्रसार वितरण के माध्यम बनने की प्रेरणाएँ उभरती हैं।

सूर्य से प्रकाश, नियमितता, सतत् चलते रहना, बिना भेदभाव सब तक अपनी किरणें पहुँचाने जैसा पुण्य शिक्षण प्राप्त होता है।

चन्द्र स्वप्रकाशित नहीं फिर भी प्रकाश देता है। स्वयं सूर्यताप सहकर शीतल प्रकाश फैलाता है—ऐसी सत्प्रवृत्तियों के प्रतीक चन्द्रदेव से प्रेरणायें प्राप्त करते हैं।

इन्द्र देवत्व के संगठक हैं। बिखराव से ही देवत्व का पराभव होता है, देव वृत्तियों के एकीकरण तथा हजार नेत्रों से सतत् जागरूकता की प्रेरणा इन्द्र देव से प्राप्त होती है।

क्रिया और भावना—मन्त्र के साथ आहुतियाँ दें। प्रत्येक आहुति के साथ भावना करें कि इस देवशक्ति के पोषण के लिये यह हमारा योगदान है। वह हमें संरक्षण और मार्गदर्शन देंगे। यह वृत्तियाँ उनके आशीर्वाद से हमें मिल रही हैं, जिससे हमारा कल्याण होता है।

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।

तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।

तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।

ॐ सूर्यो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।

तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।

ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।

तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा। इदं चन्द्राय इदं न मम।

ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।

तेनर्ध्यासमिदमहनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा। इदमिन्द्राय व्रतपतये इदं न मम। —मन्त्र ब्राह्मण १/६/६/१३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैश्वानर-नमस्कार

हाथ जोड़कर अग्नि देवता को नमस्कार करें। भावना करें कि यज्ञाग्नि जिसके सान्निध्य से देवत्व मिलता है, उसके प्रति हम अपना श्रद्धा सम्मान प्रकट कर रहे हैं।

ॐ वैश्वानरो नऽऊतयऽआ प्रयातु परावतः। अग्निर्नः सुष्टतीरुप। ॐ वैश्वानराय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। —यजु. १८/७२

हाथ जोड़कर अग्नि देवता को नमस्कार करें, भावना करें कि यज्ञाग्नि, जिनके सान्निध्य से देवत्व मिलता है, उसके प्रति हम अपना श्रद्धा सम्मान प्रकट कर रहे हैं। इसके बाद पूर्णाहुति आदि कर्म करावें। विसर्जन के पूर्व गुरु दक्षिणा संकल्प करायें।

गुरु दक्षिणा संकल्प

शिक्षण और प्रेरणा—दीक्षा के साथ व्रतशीलता की शर्त जुड़ी है। व्रत कहते हैं सुनिश्चित लक्ष्य के लिये सुनिश्चित साधना क्रम बनाना। जो व्रतशील नहीं वह जीवन के ढर्रे को बदल नहीं सकता। उसे बदले बिना दीक्षा फलित नहीं होती। यह ढर्रा बदलने के लिये गुरु दक्षिणा दी जाती है। अपने समय, प्रभाव, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश गुरुदेव के निर्देशानुसार खर्च करने का संकल्प ही गुरु दक्षिणा में किया जाता है। दीक्षा लेने वालों के संकल्प पत्र पहले से भरवा लेने चाहिये। संकल्प के साथ संकल्प पत्र में ऊपरी बातों का स्मरण किया जाता है।

गुरु दीक्षा के साथ अपनी शक्ति देता है, शिष्य दक्षिणा देकर अपनी पात्रता, प्रामाणिकता सिद्ध करता है। दीक्षा आहार प्रदान करने जैसा है। दक्षिणा उसे पचाने की क्रिया है। दीक्षा कलम लगाने जैसी प्रक्रिया है, दक्षिणा जड़ों का रस उस कलम तक पहुँचाकर, उसे विकसित फलित करने वाला उपक्रम है।

क्रिया और भावना—साधकों के हाथ में अक्षत पुष्प देकर दक्षिणा संकल्प बोला जाय भावना की जाय इस दिव्य आदान-प्रदान द्वारा गुरु शिष्य का व्यक्तित्व मिलकर एक नया व्यक्तित्व बन रहा है।

संकल्प—गोत्र और नाम तक यथावत् क्रम से बोला जाये। आगे जोड़ा जाय— **श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तं फलप्राप्त्यर्थं ममकायिकवाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञातसकलदोष निवारणार्थं, आत्म- कल्याणार्थं पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्येण प्रदत्ता गुरुदीक्षा, तन्निमित्तकं श्रद्धानिष्ठापूर्वकं गुरु-दक्षिणा संकल्पमहं करिष्ये।**

संकल्प बोले जाने के बाद अपने व्रतों की घोषणा सहित संकल्प पत्र, दक्षिणा फल आदि गुरुदेव के प्रतीक के आगे चढ़वाये जावे। आचार्य की भूमिका निभा रहे स्वयं सेवक या कोई वरिष्ठ साधक कार्यकर्त्ता उन्हें तिलक करें। साधक सबको नमस्कार प्रणाम करें, उन पर शुभ कामना, आशीर्वाद अक्षत पुष्प छोड़े जायें। घोष आदि के साथ संस्कार क्रम समाप्त किया जाये।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विवाह-संस्कार

विवाह-संस्कार—विवेचन

संस्कार-प्रयोजन

विवाह दो आत्माओं का पवित्र बन्धन है। दो प्राणी अपने अलग अस्तित्वों को समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं। स्त्री-पुरुष दोनों में परमात्मा ने कुछ विशेषतायें और कुछ अपूर्णतायें रखी हैं। विवाह सम्मिलन से एक-दूसरे की अपूर्णताओं को अपनी विशेषताओं से पूर्ण करते हैं। इनसे एक समग्र व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसलिए विवाह को सामान्यतया मानव-जीवन की एक आवश्यकता माना गया है। एक-दूसरे को अपनी योग्यताओं एवं भावनाओं का लाभ पहुँचाते हुए गाड़ी में लगे हुए दो पहियों की तरह प्रगति-पथ पर अग्रसर होते जाना विवाह का उद्देश्य है। वासना का दाम्पत्य जीवन में अत्यन्त तुच्छ स्थान है, प्रधानतः तो दो आत्माओं के मिलने से उत्पन्न होने वाली उस महती शक्ति का निर्माण करना है जो दोनों के लौकिक एवं आध्यात्मिक जीवन के विकास में सहायक सिद्ध हो सके।

विवाह का स्वरूप

आज विवाह वासना-प्रधान बनते चले जा रहे हैं। रंग, रूप एवं वेश-विन्यास के आकर्षण को पति-पत्नी के चुनाव में प्रधानता दी जाने लगी है, यह झुकाव बहुत ही भयानक है। यदि लोग इसी तरह सोचते रहे तो दाम्पत्य जीवन शरीर प्रधान रहने से एक प्रकार के वैध व्यभिचार का ही रूप धारण कर लेगा। पाश्चात्य देशों जैसी स्थिति भारत में भी हो जायेगी। शारीरिक आकर्षण की न्यूनाधिकता का अवसर सामने आने पर विवाह जल्दी-जल्दी टूटते बनते रहेंगे। अभी पत्नी का चुनाव शारीरिक आकर्षण को ध्यान में रखकर किये जाने की प्रथा चली है, थोड़े ही दिनों में इसकी प्रतिक्रिया पति के चुनाव में भी सामने आवेगी। तब असुन्दर पतियों को कोई पत्नी पसन्द ही न करेगी और उन्हें दाम्पत्य सुख से वंचित ही रहना पड़ेगा। समय रहते इस बढ़ती हुई प्रवृत्ति को रोका जाना चाहिए और शारीरिक आकर्षण की उपेक्षा कर सद्गुणों तथा सद्भावनाओं को ही विवाह का आधार पूर्वकाल की तरह बने रहने देना चाहिए। शरीर का नहीं आत्मा का सौन्दर्य देखा जाय और साथी में जो कमी है, उसे प्रेम, सहिष्णुता, आत्मीयता एवं विश्वास की छाया में जितना सम्भव हो सके सुधारना चाहिए, जो सुधार न हो सके, उसे बिना असन्तोष लाये सहन करना चाहिए। इसी रीति-नीति पर दाम्पत्य जीवन की सफलता निर्भर है। अतएव पति-पत्नी को एक-दूसरे के प्रति आत्म-समर्पण करने और सम्मिलित शक्ति उत्पन्न करने, उससे जीवन-विकास की सम्भावनायें उत्पन्न करने की बात सोचनी चाहिए।

चुनाव करते समय तक साथी को पसन्द करने या न करने की छूट है। जो कुछ देखना ढूँढ़ना, परखना हो वह कार्य विवाह से पूर्व ही समाप्त कर लेना चाहिए। जब विवाह हो गया तो फिर यह कहने की गुञ्जायश नहीं रहती कि भूल हो गई इसलिए साथी की उपेक्षा की जाय। जिस प्रकार के भी गुण-दोष युक्त साथी के साथ विवाह बन्धन में बँधे उसे अपनी ओर से कर्त्तव्य-पालन समझकर पूरा करना ही फिर एकमात्र मार्ग रह जाता है। इसी प्रतिज्ञा के लिए विवाह संस्कार का आयोजन किया जाता है।

समाज के सम्भ्रान्त व्यक्तियों की, गुरुजनों की, कुटुम्बी सम्बन्धियों की, देवताओं की उपस्थिति इसीलिए धर्मानुष्ठान के अवसर पर आवश्यक मानी जाती है कि दोनों में से कोई इस पवित्र कर्त्तव्य बन्धन की उपेक्षा करे तो उसे रोकें और प्रताड़ित करें। पति-पत्नी इन सम्भ्रान्त व्यक्तियों के सम्मुख अपने निश्चय की, प्रतिज्ञा बन्धन की घोषणा करते हैं। यह प्रतिज्ञा समारोह ही विवाह संस्कार है। इस अवसर पर दोनों को यह भावनायें गहराई तक अपने मन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में जमानी चाहिए कि वे प्रथक व्यक्तित्वों की सत्ता समाप्त कर एक एकीकरण की आत्मीयता में विकसित होते हैं। कोई किसी पर न तो हुकूमत जमावेगा और न अपने अधीन वशवर्ती रखकर अपने लाभ या अहंकार की पूर्ति करना चाहेगा। वरन् वह करेगा जिससे साथी को सुविधा मिलती हो। दोनों अपनी इच्छा आवश्यकता को गौण और साथी की आवश्यकता को मुख्य मानकर सेवा और सहायता का भाव रखेंगे, उदारता एवं सहिष्णुता बरतेंगे तभी गृहस्थी का रथ ठीक तरह बढ़ेगा। इस तथ्य को दोनों भली प्रकार हृदयंगम कर लें और इसी रीति-नीति को आजीवन अपनाये रहने का व्रत धारण करें। इसी प्रयोजन के लिए यह पुण्य-संस्कार आयोजित किया जाता है। इस बात को दोनों भली प्रकार समझ लें और सच्चे मन से स्वीकार कर लें तो ही विवाह बन्धन में बँधें। विवाह संस्कार आरम्भ करने से पूर्व या विवाह वेदी पर बिठाकर दोनों को यह तथ्य भली प्रकार समझा दिया जाय और उनकी सहमति माँगी जाय। यदि दोनों इन आदर्शों को अपनाये रहने की हार्दिक स्वीकृति दें तो ही विवाह संस्कार का कार्य आगे बढ़ाया जाय।

मण्डप निर्माण और कार्यारम्भ

मण्डप इतना सुन्दर, आकर्षक और मनोरम बनाया, सजाया जाय कि उसे देखते ही आयोजन की महत्ता ध्यान में आये। उस सुसज्जा से उपेक्षा का नहीं, मनोयोग का आभास मिलना चाहिए। जरूरी नहीं कि सजावट में बहुत खर्च किया जाय। घर के वस्त्रों से, पल्लवों से, पुष्पों से, झण्डियों से, रंगों के उपयोग से उस स्थान को जितना सम्भव हो सके सजाना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए पहले से तैयार किये हुए आवश्यक उपकरण अधिक सुविधाजनक होते हैं।

विवाह वेदी पर प्रथम वर को बुलाया जाता है। उसका आवश्यक स्वागत-सत्कार करने के पश्चात् कन्या को विवाह वेदी पर बुलाने की प्रथा है। सुविधानुसार दोनों को एक साथ भी बुलाया जा सकता है। उन्हें स्थान देने के लिए सब लोग अक्षत फेंकते हुए मंगल मंत्र **'ॐ भद्रं कर्णेभिः . . . . . '** बोलें। कन्या पक्ष का प्रतिनिधि-पिता, भाई या जो भी हो, पत्नी सहित दाहिने पक्ष में बैठें। इन अभिभावकों तथा वर-कन्या के सामने जल भरे पंचपात्र और चम्मच हों। पवित्रीकरण, आचमन, शिखा-बन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन के षट्कर्म सम्पन्न किये जायें।

स्वागत सत्कार

इसके उपरान्त प्रधान अतिथि के रूप में पधारे हुए वर का स्वागत किया जाय। 'साधु भवनास्ता" सूत्र से स्वागत वाक्य, विस्टर, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, गो-दान यह स्वागत षट्कर्म करने के उपरान्त नियमित कार्य आरम्भ करें। कन्या को अभी न बुलाया गया हो तो अब बुला लेना चाहिए। आचार्य-वरण कन्या और वर का वरण, तिलक आदि कृत्य करें। यज्ञोपवीत धारण करायें। पश्चात् कलश-पूजन, देव-पूजन, नमस्कार-षोडशोपचार पूजन, चन्दन धारण, स्वस्ति-वाचन, रक्षा-विधान, कार्यों को गायत्री हवन विधि के सामान्य विधान के अनुसार पूरा कर लें। इन धर्म-कृत्यों का उद्देश्य यज्ञीय-देव वातावरण का सृजन करना है। देव शक्तियों का आह्वान, उनके द्वारा इस पुण्य अवसर पर उपस्थित होकर विवाह के उद्देश्य को सफल बनाने की प्रेरणा एवं आशीर्वाद प्राप्त करना, उपरोक्त पूजा विधान का प्रयोजन है। इस पुण्य कार्य में न संस्कार के समय और न कभी पीछे कोई विघ्न आये इसके लिए दशों दिशाओं में अक्षत फेंकते हुए रक्षा विधान सम्पन्न किया जाता है।

मंगलाष्टक

मंगलाष्टक के आठ श्लोक सम्भव हों तो वाद्य यंत्रों के साथ वे लोग गायें जो उन्हें एक साथ मिलकर मधुर स्वर से गा सकें। साथी न हो तो आचार्य अकेले भी इन्हें पढ़ सकते हैं। इन मन्त्रों में समस्त दिव्य आत्माओं और दिव्य शक्तियों से विवाह प्रयोजन को मंगलमय बनाने का अनुरोध किया गया है। कन्या तथा वर के हाथ पर पुष्प, अक्षत, फल, जल आदि रख देते हैं, जो मंगलाष्टक पूरा होने पर देव स्थापना वाली चौकी पर चढ़ा देते हैं।

विवाह घोषणा

विवाह घोषणा की एक छोटी-सी संस्कृत भाषा की शब्दावलि है, जिसमें वर-कन्या के गोत्र, पिता-पितामह आदि का उल्लेख है और घोषणा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि यह दोनों अब विवाह सम्बन्ध में आबद्ध होते हैं। इनका सहचर्य धर्म संगत, जनसाधारण की जानकारी में घोषित किया हुआ माना जाय। बिना घोषणा के गुपचुप चलने वाले दाम्पत्य स्तर के प्रेम सम्बन्ध, नैतिक धार्मिक एवं कानूनी दृष्टि में अवांछनीय माने जाते हैं। जिनके बीच दाम्पत्य सम्बन्ध हों उसकी घोषणा सर्वसाधारण के समक्ष की जानी चाहिए। समाज की जानकारी से जो छिपाया जा रहा हो वही व्यभिचार है। घोषणापूर्वक विवाह सम्बन्ध में आबद्ध होकर वर-कन्या धर्म परम्परा का पालन करते हैं। अन्यों को भी यही ध्यान रखना चाहिए। उपस्थिति लोगों में से प्रत्येक यह ध्यान रखे कि किसी को भी अघोषित स्त्री-पुरुष का सहचर्य नहीं ही करना चाहिए।

वस्त्र उपहार

वर और कन्या एक-दूसरे को उपहार में वस्त्र प्रदान करते हैं। यह वस्त्र खादी के बने या स्वदेशी दुपट्टे हों, जो इसी समय दोनों के कन्धों पर धारण करा दिये जायें। विवाह कृत्य इन्हीं के साथ सम्पन्न हो। प्रेम उपहार निरर्थक विलासिता की वस्तुओं का नहीं वरन् उपयोगिता पूर्ण हो। इस उपहार को जहाँ-तहाँ फेंक न दिया जाय वरन् प्रेमपूर्वक शरीर पर धारण किया जाय और उस उपहार के माध्यम से प्रदान किये प्रेम को छाती से लगाकर उसी के साथ यह पुण्य आयोजन पूर्ण किया जाय। उसी अवसर पर दोनों एक-दूसरे को पुष्प मालायें भी पहनावें और विवाह के अन्त तक उन्हें धारण किये रहें।

इस अवसर पर दोनों को एक-दूसरे के लिए-सार्वजनिक घोषणा के रूप में, अपनी पूर्ण सहमति, स्वीकृति एवं अभिव्यक्ति के रूप में निर्धारित प्रतिज्ञाओं को दुहराना चाहिए। इसके लिए १० श्लोक पति की ओर से कन्या के प्रति और १० श्लोक कन्या की ओर से वर के प्रति कहे जाते हैं। यदि दोनों शिक्षित हैं तो वे स्वयं ही इन्हें पढ़कर सुनावें, पुस्तकें उनके हाथ में दे दी जायें और कहा जाय कि वे स्पष्ट एवं प्रखर वाणी से इस शब्दावली को उपस्थित लोगों के सामने पढ़ें, साथ ही इन भावनाओं को आजीवन मन में स्थिर रखने का संकल्प करें। यदि वर-कन्या अशिक्षित हैं तो दोनों पक्षों के आचार्य उन्हें पढ़कर सुना सकते हैं, पर स्वीकृति उनकी भी स्पष्ट शब्दों में ही लेनी चाहिए।

वर की प्रतिज्ञायें

वर की ओर से की गई प्रतिज्ञाओं में प्रमुख यह हैं— (१) पत्नी को अपने शरीर का आधा अंग समझूँगा और उसका उतना ही ध्यान रखूँगा, जितना अपने शरीर में हाथ, पैर, सिर, पेट आदि का रखता हूँ। (२) पत्नी के साथ परामर्श करके जीवन की गतिविधि तथा कार्यक्रम व्यवस्था बनाया करूँगा। (३) कुरूपता, अस्वच्छता, स्वभाव भिन्नता के दोष आदि के कारण असन्तोष व्यक्त नहीं करूँगा वरन् उन्हें प्रेमपूर्वक सुधारते या सहन करते हुए प्रेम की भावना एवं आत्मीयता में किसी प्रकार की कमी न रहने दूँगा। (४) पत्नी व्रत धर्म का पूरी निष्ठा के साथ पालन करूँगा। परनारी को वासनात्मक दृष्टि से नहीं देखूँगा और न इस प्रकार का कोई सम्पर्क ही बनाऊँगा। (५) घर की अर्थव्यवस्था का प्रधान उत्तरदायित्व पत्नी को सौंपूँगा। आमदनी उसके हाथ में रहेगी और खर्च उसकी सहमति से होगा। पत्नी की सुख-सुविधाओं एवं प्रगति, प्रसन्नता के लिए सामर्थ्य भर प्रयत्न करूँगा। (७) मतभेदों को एकान्त में बैठकर हल करूँगा। दूसरों की दृष्टि में कलह, द्वेष या तिरस्कार जैसी सम्भावना न बनने दूँगा। सबके सामने मतभेदों की चर्चा न करूँगा। न किसी के सामने पत्नी को लांछित, तिरस्कृत करूँगा। (८) सहिष्णुता एवं मधुरता का व्यवहार करूँगा। समझौता एवं समन्वय की नीति बरतूँगा। (९) पत्नी के शारीरिक दृष्टि से असमर्थ हो जाने, सन्तान उत्पन्न न करने अथवा त्रुटिपूर्ण व्यवहार करते रहने पर भी मैं अपने पवित्र कर्त्तव्यों में रत्ती भर भी कमी न होने दूँगा। अपनी ओर से बिना किसी बदले की आशा के पत्नी के साथ उत्कृष्टतम सज्जनता बरतता रहूँगा। (१०) पत्नी के स्वास्थ्य, शिक्षा, ज्ञान, अनुभव तथा व्यक्तित्व को अब की अपेक्षा अधिक समुन्नत बनाने की शक्ति भर व्यवस्था करता रहूँगा।

वधू की प्रतिज्ञायें

पत्नी की ओर से जो प्रतिज्ञायें हों उनमें भी लगभग ऐसी ही भावनाओं की अभिव्यक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है। पत्नी प्रतिज्ञा करती है कि— (१) अपने व्यक्तित्व को पति के व्यक्तित्व में घुला दूँगी, उनके जीवन में अपने जीवन को मिलाकर एक नये समग्र व्यक्तित्व का सृजन करूँगी। सच्चे अर्थों में अर्धांगिनी सिद्ध हूँगी। (२) पति के परिवार से समस्त परिजनों के साथ सेवा, शिष्टता, उदारता, मधुरता एवं सहिष्णुता बरतूँगी। उन्हें प्रसन्न एवं संतुष्ट रखने में कोई कमी नहीं रखूँगी। (३) आलस्य को पास भी नहीं फटकने दूँगी। परिश्रमशील बनकर पति की गृह व्यवस्था एवं जीवन विकास में समुचित योगदान करूँगी। (४) पति को आराध्य देव मानकर उनके प्रति समुचित श्रद्धा भक्ति रखूँगी। (५) सेवा भावना का, मधुर बोलने और प्रसन्न रहने का स्वभाव बनाऊँगी। ईर्ष्या करने और रूठने, कुढ़ने का दुर्गुण न अपनाऊँगी। (६) मितव्ययता बरतूँगी, अनावश्यक खर्च न करूँगी न करने दूँगी। (७) आपसे विमुख न होऊँगी। आपका साथ न छोड़ूँगी, आपसे कपट एवं दुराव न करूँगी। (८) पति के शारीरिक या आर्थिक दृष्टि से असमर्थ हो जाने पर भी उसका साथ नहीं छोड़ूँगी। (९) परस्पर के मतभेदों को दूसरों के आगे निन्दात्मक रीति से प्रस्तुत न करूँगी। आपका अपमान न करूँगी। एकान्त में मतभेदों का निराकरण कर लिया करूँगी। (१०) पति की ओर से कर्त्तव्य-पालन में कमी रहने पर भी मैं अपनी ओर से बिना प्रतिफल की आशा किये अपने धर्म कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करती रहूँगी।

इन प्रतिज्ञाओं की विवेचना आचार्य लोग ऐसे हृदयग्राही ढंग से करें कि पति-पत्नी ही नहीं उपस्थित अन्य उन लोगों को भी जो विवाहित हो चुके हैं या होने वाले हैं, इन भावनाओं के हृदयंगम करने का अवसर मिले। जो इसमें भूल कर रहा है वह अपनी भूल सुधारें। दाम्पत्य जीवन की सफलता इन प्रतिज्ञाओं के पालन पर ही निर्भर है। गृहस्थ सुख इस संसार का असाधारण सुख है, पर उसे प्राप्त वे ही बड़भागी करते हैं, जो विचार एवं व्यवहार से अपनी ओर से इन धर्म कर्त्तव्यों को पूरा करने में त्रुटि नहीं करते। साथी यदि कुछ गलती भी कर रही है तो अपनी महानता से प्रभावित करके ही झुकाने की नीति अपनाई जानी चाहिए। इस दृष्टिकोण को दोनों ही अपनालें तब तो घर के स्वर्ग बनने में कोई सन्देह ही नहीं रह जाता पर यदि एक ओर से भी पूरी सज्जनता बरती जाती रहे तो दूसरे पक्ष का देर-सबेर में सुधरना सुनिश्चित है। विवाह संस्कार का प्राण इन प्रतिज्ञाओं का भली प्रकार विवेचना करना ही है। जिन्हें संस्कार करना है, वे इन तथ्यों पर संक्षेप में किन्तु सारगर्भित रूप से विवेचन कर सकने की तैयारी पहले से ही करते रहें।

कन्यादान

कन्यादान को कन्या के अभिभावक करते हैं, माता-पिता या जो कन्या के प्रधान संरक्षक हों वे कन्या के हाथों में हरिद्रा पोतते हैं। हरिद्रा मंगलसूचक है। लक्ष्मी का प्रतीक स्वर्ग है और स्वर्ग पीले रंग का होता है। अब तक बालिका के रूप में यह लड़की रही, अब यह गृहलक्ष्मी का उत्तरदायित्व वहन करेगी। इसलिए उसके हाथों को पीतवर्ण मंगलमय बनाया जाता है। उसके माता-पिता ने लाड़-प्यार से पाला, उसके हाथों में कोई कठोर कर्त्तव्य नहीं सौंपा। अब उसे अपने हाथों नव-निर्माण के अनेक उत्तरदायित्व सँभालने को तैयार करना है, अतएव उन्हें पीत वर्ण-मांगलिक, लक्ष्मी प्रतीक-सृजनात्मक होना ही चाहिए। पीले हाथ करते हुए कन्या परिवार के लोग उस बालिका को यही मौन शिक्षण संदेश देते हैं कि उसे आगे सृजन शक्ति के रूप में प्रकट होना है और इसके लिए इन कोमल हाथों को अधिक उत्तरदायी, कठोर, अधिक मांगलिक बनाना है।

कन्यादान के समय कुछ गुप्तदान देने की प्रथा है। आटे की लोई में छिपाकर कुछ धन कन्यादान के समय दिया जाता है। दहेज का यही स्वरूप है। कन्या के घर से विदा होते समय उसके अभिभावक किसी आवश्यकता के समय काम आने के लिए उपहार स्वरूप कुछ धन देते हैं पर वह होता गुप्त है। अभिभावक और कन्या के बीच का यह एक निजी उपहार है। दूसरों को इसके सम्बन्ध में जानने या पूछने की कोई आवश्यकता नहीं। दहेज के रूप में क्या दिया गया है या क्या दिया जाना चाहिए, इस सम्बन्ध में ससुराल वालों को कहने या

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूछने का कोई अधिकार नहीं। न उसके प्रदर्शन की आवश्यकता है। क्योंकि गरीब-अमीर अपनी स्थिति के अनुसार जो दें, यह चर्चा का विषय नहीं बनना चाहिए, उसके साथ निन्दा प्रशंसा नहीं जुड़नी चाहिए। एक-दूसरे का अनुकरण करने लगें, प्रतिस्पर्द्धा पर उतर आयें तो इससे अनर्थ ही होगा। कन्या पक्ष पर अनुचित दबाव पड़ेगा और वर पक्ष अधिक न मिलने पर अप्रसन्न होने की धृष्टता करने लगेगा। इसलिए कन्यादान के साथ कुछ धनदान का विधान तो है, पर दूरदर्शी ऋषियों ने लोगों की स्वार्थपरता एवं दुष्टता की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए यह नियम बना दिया है कि जो कुछ भी दहेज दिया जाय वह सर्वथा गुप्त हो। उस पर किसी को चर्चा करने का अधिकार न हो। आटे के गोले के अन्दर धन रखकर गुप्तदान के रूप में इसलिए दहेज दिया जाता है।

गुप्तदान का दहेज

माता-पिता अपने हाथ में कन्या के हाथ गुप्तदान का धन और पुष्प रखकर संकल्प बोलते हैं और उन हाथों को वर के हाथों में सौंप देते हैं। वह इन हाथों को गम्भीरता और जिम्मेदारी के साथ अपने हाथों से पकड़कर स्वीकार शिरोधार्य करता है। अभिभावकों का कन्यादान और वर का पाणिग्रहण यह दोनों ही विवाह के प्रधान अंग हैं। कन्यादान का संकल्प **'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु वरुणो.. .....'** बोला जाता है। पाणिग्रहण का मन्त्र **'ॐ यदैषि मनसा . . . . . '** है। इसके बाद वर-कन्या के दुपट्टों के छोर पुष्प, अक्षत, दूर्वा, हरिद्रा, पैसा आदि मंगल प्रतीक वस्तुयें रखकर गाँठ बाँध देते हैं। इसे ग्रन्थि-बन्धन कहते हैं। ग्रन्थि बन्धन का मन्त्र **'ॐ समजन्तु . . . . . '** है।

कन्यादान का अर्थ है—अभिभावकों के उत्तरदायित्वों का वर के ऊपर, ससुराल वालों के ऊपर स्थानान्तरित होना। अब तक माता-पिता कन्या के भरण-पोषण, विकास, सुरक्षा, सुख-शान्ति, आनन्द, उल्लास आदि का प्रबन्ध करते थे, अब वह प्रबन्ध वर और उसके कुटुम्बियों को करना होगा। कन्या नये घर में जाकर विरानेपन का अनुभव न करने पाये, उसे स्नेह, सहयोग, सद्भाव की कमी अनुभव न हो इसका पूरा ध्यान रखा जाता है। कन्या दान स्वीकार करते समय वर तथा उसके अभिभावकों को यह बात भली प्रकार अनुभव कर लेनी चाहिए कि उन्हें उस स्वीकार किये गये उत्तरदायित्व को पूरी जिम्मेदारी तथा तत्परता के साथ निबाहना है।

कन्यादान का यह अर्थ नहीं कि जिस प्रकार कोई सम्पत्ति, जमीन-जायदाद या गाँव, बकरी किसी को बेच दी या दान कर दी जाती है, उसी प्रकार लड़की को भी एक सम्पत्ति समझकर किसी न किसी को चाहे जो उपयोग करने के लिए दे दिया है। हर मनुष्य की एक स्वतन्त्र सत्ता एवं स्थिति है। कोई मनुष्य किसी मनुष्य को बेच या दान नहीं कर सकता। फिर चाहे वह पिता ही क्यों न हो। व्यक्ति के स्वतन्त्र अस्तित्व एवं अधिकार से इन्कार नहीं किया जा सकता, न उसे चुनौती दी जा सकती है। लड़की हो या लड़का अभिभावकों को यह अधिकार नहीं कि वे उन्हें बेचें या दान करें। ऐसा करना तो बच्चों के स्वतन्त्र व्यक्तित्व के तथ्य को ही झुठलाना हो जायेगा। विवाह एक उभयपक्षीय समझौता है, जिसे वर और वधू दोनों ही पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निर्वाह कर सफल बनाते हैं। यदि कोई किसी को खरीदी या बेची सम्पत्ति के रूप में देखे और उस पर पशुओं जैसा स्वामित्व अनुभव करे या वैसा ही व्यवहार करे तो यह मानवता के मूलभूत अधिकारों का हनन करना ही होगा। कन्यादान का यह तात्पर्य कदापि नहीं। उसका प्रयोजन इतना ही है कि कन्या के अभिभावक बालिका के जीवन को सुव्यस्थित, सुविकसित एवं सुख-शान्तिमय बनाने की निष्ठा और जिम्मेदारी को वर तथा उसके अभिभावकों पर छोड़ते हैं, जिसे उन्हें चौगुने-सौगुने मनोयोगपूर्वक निबाहना चाहिए। पराये घर में पहुँचने पर कच्ची उम्र की अनुभवहीन व भावुक बालिका को अखरने वाली मनोदशा में होकर गुजरना पड़ता है। इसलिए इस आरम्भिक संधिबेला में तो विशेष रूप से वर पक्ष वालों को यह प्रयास करना चाहिए कि हर दृष्टि से वधू को अधिक स्नेह, सहयोग मिलता रहे। कन्या-पक्ष वालों को भी यह नहीं सोच लेना चाहिए कि लड़की के पीले हाथ कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिये, कन्यादान हो गया, अब तो उन्हें कुछ भी करना-धरना या सोचना-विचारना नहीं है। उन्हें भी लड़की के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सदा योगदान देते रहना है।

पाणिग्रहण

कन्या अपना हाथ वर के हाथ में सौंपे और वर अपना हाथ कन्या के हाथों में सौंप दे। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे का पाणिग्रहण करते हैं। कन्यादान की तरह वरदान की क्रिया तो नहीं होती, फिर भी उस अवसर पर वर की भावना भी ठीक वैसी ही होनी चाहिए जैसी कि कन्या को अपना हाथ सौंपते समय होती है। वर भी यह अनुभव करे कि उसने अपने व्यक्तित्व का-अपनी इच्छा, आकांक्षाओं एवं गतिविधियों के संचालन का केन्द्र इस वधू को बना दिया और अपना हाथ भी सौंप दिया। दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने के लिए एक-दूसरे का हाथ जब भावनापूर्वक समाज के सम्मुख पकड़ लें तो समझना चाहिए कि विवाह का प्रयोजन पूरा हो गया।

ग्रन्थि बन्धन

इसके बाद दोनों को एक गाँठ में बाँध दिया जाता है। दुपट्टे के छोर में बाँधने का अर्थ है, दोनों के शरीरों और मनों का एक संयुक्त इकाई के रूप में एक नई सत्ता का आविर्भाव होना। अब दोनों एक-दूसरे के साथ पूरा तरह बँधे हुए हैं। ग्रन्थि-बन्धन में पैसा, पुष्प, दूर्वा, हरिद्रा और अक्षत यह पाँच चीजें भी बाँधते हैं। पैसा इसलिए रखा जाता है या पैसा रखने का अर्थ यह है कि धन पर किसी एक का अधिकार नहीं रहेगा। एक मनमाना खर्च न कर सकेगा, चाहे वह कमाने वाला ही क्यों न हो ? जो भी कमाई या सम्पत्ति होगी, उस पर दोनों का संयुक्त अधिकार माना जायेगा और खर्च करने के लिए दोनों की सहमति से योजना एवं व्यवस्था बनेगी। दूर्वा का अर्थ है—कभी निर्जीव न होने वाली प्रेम भावना। दूर्वा का जीवन तत्व नष्ट नहीं होता। सूख जाने पर भी वह पानी डालने पर हरी हो जाती है। इसी प्रकार दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए अजस प्रेम और आत्मीयता बनी रहे। चन्द्र-चकोर की तरह एक-दूसरे पर अपने को निछावर करते रहें। अपना कष्ट कम और साथी का कष्ट बढ़कर मानें, अपने सुख की अपेक्षा साथी के सुख का अधिक ध्यान रखें। अपना आन्तरिक प्रेम एक-दूसरे पर उड़ेलते रहें। हरिद्रा का अर्थ है—आरोग्य। एक-दूसरे के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सुविकसित रखने का प्रयत्न करें। ऐसा व्यवहार न करें जिससे साथी का स्वास्थ्य खराब होता हो या उद्वेग पैदा होता हो। कुटुम्ब में कितने ही व्यक्ति होते हैं। उन सबका समुचित ध्यान रखना, सभी को सँभालना, संजोग पति-पत्नी का परम-पावन कर्त्तव्य है। ऐसा न हो कि एक-दूसरे को तो प्रेम करें पर परिवार के लोगों की उपेक्षा करने लगें। इसी प्रकार परिवार से बाहर भी जन-समाज की सेवा जिम्मेदारी हर भावनाशील मनुष्य पर रहती है। ऐसा न हो कि दोनों में से कोई किसी को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ सहयोग तक ही सीमित कर ले, उसे समाज-सेवा की सुविधा न दे। इस दिशा में लगने वाले समय या धन का विरोध करे। अक्षत इसी का संकेत करते हैं कि आप दोनों एक-दूसरे के लिए ही नहीं बँधे हैं वरन् समाज सेवा का व्रत एवं उत्तरदायित्व भी आप लोगों के ग्रन्थि बन्धन में एक महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में विद्यमान है। पुष्प का अर्थ है, हँसते-खिलते रहना। एक-दूसरे को हँसायें-खिलायें, एक-दूसरे को देखकर प्रसन्न प्रमुदित हों, एक-दूसरे को सुगन्धित बनाने के लिए, यश फैलाने की प्रशंसा करने के लिए सदा तत्पर रहें। कोई किसी का न तो दूसरों के आगे अपमान करे और न तिरस्कार। इस प्रकार दूर्वा, पुष्प, हरिद्रा, अक्षत और पैसा इन पाँच चीजों को रखकर दोनों का ग्रन्थि-बन्धन किया जाता है और यह आशा की जाती है कि वे जिन लक्ष्यों के साथ आपस में बँधे हैं, उन्हें आजीवन निरन्तर स्मरण रखे रहेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवाह का विशेष यज्ञ

यह सब कृत्य करने के उपरान्त यज्ञ-कार्य आरम्भ होता है। अग्नि स्थापन, अग्नि प्रदीपन, समिधादान, जल प्रसेचन, आज्याहुति करने के बाद विवाह कार्य में विशेष रूप से कुछ आहुतियाँ दी जाती हैं। इन्हें (१) प्रायश्चित होम, (२) राष्ट्रभृत होम, (३) जया होम और (४) लाजा होम, इन चार भागों में विभक्त किया गया है। कई पद्धतियों के अनुसार हवन कृत्य बहुत बड़ा है। यहाँ बहुत आहुतियाँ दी जाती हैं और उनका विभागीकरण भी लम्बा है। हम समय और सुविधा का ध्यान रखते हुए उपरोक्त चार प्रकार की आहुतियाँ देते हुए उनका मर्म समझ लें तो पर्याप्त है। (१) प्रायश्चित होम की आहुतियाँ देते समय यह भावना दोनों के मन में आनी चाहिए कि दाम्पत्य जीवन में बाधक हो सकने वाले जो भी कुसंस्कार अब तक मन में रहे हों उन सबको स्वाहा किया जा रहा है। किसी से पतिव्रत या पत्नीव्रत का उल्लंघन करने की कोई भूल हुई है तो उसे अब एक स्वप्न जैसी बात समझकर विस्मरण कर दिया जाय। इस प्रकार की भूल के कारण किसी को न तो दोष दें, न सन्देह की दृष्टि से देखें और न लांछन लगायें। इस प्रकार कोई अन्य नशेबाजी जैसा दुर्व्यसन रहा हो या स्वभाव में रुक्षता, कठोरता, स्वार्थपरता, अहंकार जैसी कोई त्रुटि रही हो तो उसका अब तो त्याग करना ही है। साथ ही उन भूलों का प्रायश्चित करते हुए भविष्य में कोई ऐसी भूल न करने का संकल्प भी करना है जो दाम्पत्य जीवन की प्रगति में बाधा उत्पन्न करे। (२) दूसरे प्रकार की आहुतियाँ 'राष्ट्रभृत होम' की हैं। परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति जो उत्तरदायित्व गृहस्थ के ऊपर हैं उन्हें उत्साह, श्रद्धा एवं उदारता के साथ निबाहा जायेगा। इस संकल्प को अग्निदेव के सामने हृदयंगम करने के लिए राष्ट्रभृत होम की आहुतियाँ दी जाती हैं। (३) जया होम का अर्थ है—अपने-अपने असंयम लोभ, क्रोध एवं अहंकार जैसे दोषों को जीतना। इन दुष्प्रवृत्तियों के उच्छृंखल बने रहने से विवाह का आदर्श एवं उद्देश्य ही नष्ट हो जाता है। पति-पत्नी आत्मजयी होकर ही एक-दूसरे के लिए उपयोगी बन सकते हैं, तभी प्रेम स्थिर रह सकता है। दोनों में से कोई भी असंयम बरतेगा, अहंकार दिखावेगा, सतावेगा या शोषण करेगा तो वह दूसरों की अश्रद्धा एवं असन्तोष बढ़ावेगा। फलस्वरूप दाम्पत्य प्रेम में सौमनस्य नहीं रह सकेगा। अतएव आत्मजय के लिए अग्निदेव को साक्षी देकर इसी क्षण से प्रयत्न आरम्भ किया जाता है और उसकी आहुतियाँ दी जाती हैं। (४) लाजा होम लज्जा, यश, प्रतिष्ठा, सम्मान की अभिवृद्धि के लिए हैं। एक-दूसरे को यशस्वी एवं विकसित बनायेंगे। लोकलज्जा का ध्यान रखेंगे। लाजा का एक अर्थ धन-धान्य एवं वैभव भी है। इन आहुतियों में यह भी संकेत है कि दोनों मिल-जुलकर पारिवारिक समृद्धि, उत्पादन एवं व्यवस्था को सुव्यस्थित बनाने के लिए पूरा-पूरा प्रयत्न करें। चारों प्रकार के होम विवाह के अवसर पर उन्हीं महत्वपूर्ण प्रयोजनों के लिए किये जाते हैं। इसके बाद गायत्री मन्त्र की २४ आहुतियाँ सामूहिक सस्वर उच्चारण के साथ देनी चाहिए।

प्रायश्चित होम, राष्ट्रभृति होम, जया और गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ वर-वधू बैठे-बैठे ही करते हैं। वर के हाथों घी और कन्या के हाथों साकल्य की आहुतियाँ दी जाती हैं। लाजा होम की सात भाँवरें फिरते हुए, खड़े होकर दी जाती हैं। लड़की का भाई थाली में शमीपत्र तथा घृत मिश्रित भुने हुए चावलों की खील लेकर वर-वधू के पीछे खड़ा हो जाता है। वर-वधू की परिक्रमा करते हुए नियत स्थान पर आता है, तब भाई एक मुट्टी खील बहिन के हाथ में देता है। यह क्रम परिक्रमाओं के साथ चलता रहता है। प्रत्येक बार तीन-तीन आहुतियाँ दी जाती हैं। यह क्रम तीन बार तक चलता है अर्थात् ३ × ३ = ९ आहुतियाँ तीन बार में और चौथी परिक्रमा के समय दी जाती है अर्थात् कुल १० आहुतियाँ लाजा होम की होती हैं। **(१) ॐ अर्यमणं देव . . . . . (२) ॐ इदं नार्यु . . . . . (३) ॐ इमांल्लाजानाय . . . . . ,** यह तीन मंत्र तीन-तीन बार तीन परिक्रमाओं में प्रयोग होते हैं। चौथी परिक्रमाओं में एक बार ॐ भगाय स्वाहा मंत्र की आहुति दी जाती है। तीन परिक्रमाओं में कन्या आगे और वर पीछे रहता है। चौथी बार में वर आगे और कन्या पीछे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

रहती है। इसके बाद तीन और परिक्रमायें होती हैं। उनमें लाजा होम नहीं होता। परिक्रमा के समय अतुयमग्र..... मंत्र का उच्चारण किया जाता है। प्रत्येक परिक्रमा में एक पत्थर के टुकड़े पर वर-वधू पैर लगाते हैं। इस शिलारोहण का मन्त्र ॐ आरोहम..... है।

सात परिक्रमा

शास्त्राचार से ४ और लोकाचार से ७ परिक्रमायें की जाती हैं। इन्हें ही भाँवर फिरना कहते हैं। प्रथा सात की चल पड़ी है। इसलिए सात बार भाँवरें फिरने में कुछ दोष नहीं। यज्ञ की परिक्रमा चार बार की जाती है, पर यदि ७ बार कर ली जाय तो उसमें कोई अनुचित बात नहीं है।

यज्ञ भगवान की परिक्रमा करते हुए वर-वधू यह भावना हृदयंगम करते हैं कि अग्निदेव की एक बार नहीं सात बार परिक्रमा करते हुए, उनके सामने उपस्थित रहते हुए, उनकी शपथ खाते हुए हम लोग एक महान धर्म बन्धन में बँधते हैं और यह प्रण करते हैं कि देव सान्निध्य में किये हुए इस संकल्प को निबाहने और उसे सफलतापूर्वक चरितार्थ करने में प्राण-प्रण से प्रयत्न करेंगे, यथासम्भव कोई त्रुटि न रहने देंगे।

शिलारोहण

शिलारोहण के द्वारा पत्थर पर सात बार पैर रखते हुए यह प्रतिज्ञा करते हैं कि जिस प्रकार अंगद ने अपना पैर गाड़ दिया था उसी तरह हम पत्थर की लकीर की तरह अपना पैर आगत उत्तरदायित्वों को निबाहने के लिए जमाते हैं। यह धर्मकृत्य खेल-खिलौने की तरह नहीं किया जा रहा जिसे एक मखौल समझकर तोड़ा जाता रहे। वरन् यह प्रतिज्ञायें, निष्ठायें पत्थर की लकीर की तरह अमिट बनी रहेंगी। इन्हें चट्टान की तरह अटूट एवं चिरस्थाई रखा जायेगा।

लाजा होम

लाजा होम में भाई के घर से अन्न आदि लाजाओं के रूप में बहिन को मिलता है उसे वह अपने पति को सौंप देती है। कहती है बेशक मेरे व्यक्तिगत उपयोग के लिए पितागृह से मुझे कुछ मिला है, पर उसे मैं छिपाकर अलग से नहीं रखती आपको सौंपती हूँ। अलगाव या छिपाव का कोई भाव मन में न आवे इसलिए जिस प्रकार पति कुछ करता है तो पत्नी को सौंपता है, उसी प्रकार पत्नी भी अपनी उपलब्धियों को पति के हाथ में सौंपती हैं। पति सोचता है, हम लोग हाथ-पैर से जो कमायेंगे, उसी से अपना काम चलावेंगे। किसी के उदारतापूर्वक दिये हुए अनुदान को बिना श्रम किये खाकर क्यों हम किसी के ऋणी बनें, इसलिए पति उन घृत मिश्रित लाजाओं को अपने खाने के लिए नहीं रख लेता वरन् उन्हें यज्ञ में होम देता है। जन-कल्याण के लिए उन पदार्थों को वायुभूत बनाकर संसार के वायुमण्डल में बिखेर देता है। इस प्रक्रिया में यह महान् मानवीय आदर्श सन्निहित है कि मुफ्त का माल या तो स्वीकार ही न किया जाय या मिले भी तो उसे लोकहित में खर्च कर दिया जाय। लोग अपनी-अपनी निज की पसीने की कमाई पर ही गुजर-बसर करें। मृतक-भोज के पीछे भी यही आदर्शवादिता थी कि पिता के द्वारा उत्तराधिकार में मिले हुए धन को लड़के अपने काम में नहीं लेते थे वरन् समाज-सेवी ब्राह्मणों के निर्वाह में, या अन्य पुण्य कार्यों में खर्च कर डालते थे। यही बात दहेज के सम्बन्ध में भी है। ठीक है कि पितागृह से उदारतापूर्वक मिला सो उनकी भावना सराहनीय है, पर आपकी भी तो कुछ भावना होनी चाहिए। मुफ्त का माल खाते हुए किसी कमाऊ मनुष्य को गैरत आनी स्वाभाविक है। उसका यह सोचना ठीक ही है कि बिना परिश्रम का धन, वह भी दान की उदार भावना से दिया हुआ, उसे पचेगा नहीं। इसलिए इस उपहार को जन-मंगल के कार्य में, परमार्थ यज्ञ में आहुति देना ही उचित है। इसलिए भाई के द्वारा दी गई लाजाओं को वह यज्ञ-कार्य में लगा देता है। दहेज का ठीक उपयोग यही है। प्रथा भी है कि विवाह के अवसर पर वर-पक्ष की ओर से बहुत-सा दान-पुण्य किया जाता है। अच्छा हो जो कुछ मिले वह सब का सब ही दान कर दें। विवाह के समय ही नहीं, अन्य अवसरों पर भी यदि कभी किसी से कुछ ऐसा ही बिना परिश्रम का कोई उपहार मिले तो उसके सम्बन्ध में एक ही नीति रहनी चाहिए कि मुफ्त का माल खाकर हम परलोक के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋणी न बनेंगे। वरन् ऐसे अनुदान को परमार्थ में लगाकर उस उदार परम्परा को अपने में न रोककर आगे जनकल्याण के लिए बढ़ा देंगे। कहाँ भारतीय संस्कृति की यह उदार भावना और कहाँ आज के धन-लोलुपों द्वारा कन्या पक्ष की आँतें नोंच डालने वाली दहेज की पैशाचिक माँग। दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर है। जिनने अपनी आत्मा का टुकड़ा कन्या दे दी—उनके प्रति वरपक्ष का रोम-रोम कृतज्ञ होना चाहिए था और यह सोचना था कि इस अलौकिक उपहार के बदले में किस प्रकार अपनी श्रद्धा, सद्भावना व्यक्त करें। यह न होकर उल्टे जब कन्या-पक्ष को दबा हुआ समझकर उसे तरह-तरह से सताने और चूसने की योजना बनाई जाती है तो यही समझना चाहिए कि भारतीय परम्परायें बिल्कुल उल्टी हो गई हैं। धर्म के स्थान पर अधर्म का, देवत्व के स्थान पर असुरता का साम्राज्य छा गया है। लाजा होम वर्तमान की क्षुद्र मान्यताओं को धिक्कारता है और दहेज के सम्बन्ध में सही दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है।

सप्तपदी

भावरें फिर लेने के उपरान्त सप्तपदी की जाती है। सात बार वर-वधू साथ-साथ कदम से कदम मिलाकर फौजी सैनिकों की तरह आगे बढ़ते हैं। चावल की सात ढेरी या कलावा बँधे हुए सकोरे रख दिये जाते हैं। इन लक्ष्य चिन्हों को पैर लगाते हुए दोनों एक-एक कदम आगे बढ़ते हैं। रुक जाते हैं और फिर अगला कदम बढ़ाते हैं। इस तरह सात बार में सात कदम बढ़ाये जाते हैं। प्रत्येक कदम के साथ एक-एक मन्त्र बोला जाता है।

पहला कदम अन्न के लिए, दूसरा बल के लिए, तीसरा धन के लिए, चौथा सुख के लिए, पाँचवाँ प्रजा के लिए, छठवाँ ऋतुचर्या के लिए, सातवाँ मित्रता के लिए उठाया जाता है। विवाह होने के उपरान्त पति-पत्नी को मिलकर सात कार्यक्रम अपनाने पड़ते हैं। उनमें दोनों का उचित और न्यायसंगत योगदान रहे इसकी रूपरेखा सप्तपदी में निर्धारित की गई है। प्रथम कदम अन्न के लिए। आहार स्वास्थ्यवर्धक हो, घर में चटोरपन को कोई स्थान न मिले। रसोई में जो बने वह ऐसा हो कि स्वास्थ्य रक्षा का प्रयोजन पूरा करे भले ही वह स्वादिष्ट अधिक न हो। अन्न का उत्पादन, अन्न की रक्षा, अन्न का सदुपयोग जो कर सकता है, वही सफल गृहस्थ है। अधिक पका लेना, जूठन छोड़ना, बर्तन खुले रखकर अन्न को चूहों से बर्बादी कराना, मिर्च-मसालों की भरमार से उसे तमोगुणी बना देना, स्वच्छता का ध्यान न रखना आदि बातों से आहार पर बहुत खर्च करते हुए भी स्वास्थ्य नष्ट होता है। इसलिए दाम्पत्य जीवन का उत्तरदायित्व यह है कि आहार की सात्विकता का समुचित ध्यान रखा जाय। दूसरा कदम शारीरिक और मानसिक बल के लिए है। व्यायाम, परिश्रम उचित एवं नियमित आहार-विहार से शरीर का बल स्थिर रहता है। अध्ययन एवं विचार-विमर्श से मनोबल बढ़ता है। जिन उपायों से दोनों प्रकार के बल बढ़े, दोनों अधिक समर्थ, स्वस्थ एवं सशक्त बनें उसका उपाय सोचते रहना चाहिए।

तीसरा कदम धन के लिए है। अर्थव्यवस्था बजट बनाकर चलाई जाय। अपव्यय में कानी-कौड़ी भी नष्ट न होने पावे। उचित कार्यों में कन्जूसी न की जाय, फैशन, व्यसन, शेखी-खोरी आदि के लिए पैसा खर्च न करके उसे पारिवारिक उन्नति के लिए सम्भाल कर बचाकर रखा जाय। उपार्जन के लिए पति-पत्नी दोनों ही प्रयत्न करें। पुरुष बाहर जाकर कृषि, नौकरी आदि करते हैं, तो स्त्रियाँ सिलाई, धुलाई, रसोई, सफाई, टूटी वस्तुओं की मरम्मत आदि करके इस तरह की कमाई करती हैं। उपार्जन पर जितना ध्यान रखा जाता है, खर्च की मर्यादाओं का भी उतना ही ध्यान रखते हुए घर की अर्थव्यवस्था सँभाले रहना दाम्पत्य जीवन का आवश्यक कर्त्तव्य है। चौथा कदम सुख के लिए। विश्राम, मनोरंजन, विनोद, हास-परिहास का ऐसा वातावरण रखा जाय कि गरीबी में भी अमीरी का आनन्द मिले। दोनों प्रसन्नचित्त रहें, मुस्काने की आदत डालें, हँसते-हँसते जिन्दगी काटें। चित्त को हल्का रखें। सन्तोषी सदा सुखी की नीति अपनावें। पाँचवाँ कर्त्तव्य प्रजापालन का है। घर के सभी सदस्य उपार्जन करने वाले की प्रजा होते हैं। सन्तान भी प्रजा है। आश्रित पशुओं और नौकरों को भी प्रजा कहा जा सकता है। सभी आश्रितों की समुचित देखभाल, सुरक्षा,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उन्नति एवं सुख-शान्ति के लिए सदा सोचते रहने और करते रहने में लापरवाही न बरती जाय। छटा कर्त्तव्य ऋतुचर्या का है। सन्तानोत्पादन एक स्वाभाविक वृद्धि है, इसलिए दाम्पत्य जीवन में उसका भी एक स्थान है। पर उस सम्बन्ध में मर्यादाओं का इतनी कठोरता एवं सतर्कता से पालन किया जाय क्योंकि असंयम के कारण दोनों के स्वास्थ्य का सर्वनाश होने की आशंका रहती है। वह स्थिति न आने पावे। गृहस्थ में रहकर भी ब्रह्मचर्य का समुचित पालन किया जाय। दोनों एक-दूसरे को साथी, सहयोगी, मित्र की दृष्टि से देखें, कामुकता के सर्वनाशी प्रसंगों को जितना सम्भव हो सके दूर रखा जाय। सातवाँ कर्त्तव्य मित्रता को स्थिर रखने एवं बढ़ाने के लिए है। दोनों इस बात पर बारीकी से विचार करते रहें कि उनकी ओर से कोई ऐसी त्रुटि नहीं बरती जा रही है, जिसके कारण साथी को रुष्ट या असंतुष्ट होने का अवसर आवे। दूसरा पक्ष कुछ भूल भी कर रहा हो तो उसका उत्तर कठोरता, कर्कशता एवं दुष्टता से नहीं वरन् सौजन्यता, सहृदयता के साथ दिया जाना चाहिए ताकि उस महानता से दबकर साथी को स्वतः ही अपने को सुधारने की अन्तःप्रेरणा मिले। बाहर के लोगों के साथ, दुष्टों के साथ, दुष्टता की नीति किसी हद तक अपनाई जा सकती है, पर आत्मीय जनों का हृदय जीतने के लिए उदारता, सेवा, सौजन्य, क्षमा जैसे अस्त्र ही काम में लाये जाने चाहिए। सप्तपदी में सात कदम बढ़ाते हुए इन सात आधारों को हृदयंगम करना पड़ता है। इन आदर्शों और सिद्धान्तों को यदि पति-पत्नी ने अपना लिया और उसी मार्ग पर चलने के लिए कदम से कदम बढ़ाते हुए अग्रसर होने की ठान ली तो दाम्पत्य जीवन की सफलता में कोई सन्देह ही नहीं रह सकता।

आसन परिवर्तन

सप्तपदी के पश्चात् आसन परिवर्तन करते हैं। अब तक वधू दाहिनी ओर थी। अर्थात् बाहरी व्यक्ति जैसी स्थिति में थी। अब सप्तपदी होने तक की प्रतिज्ञाओं में आबद्ध हो जाने के उपरान्त वह घर वाली, अपनी आत्मीय बन जाती है। इसलिए उसे बाँई ओर बिठाया जाता है। बाँये से दाँये लिखने का क्रम है। बाँया प्रथम और दाहिना द्वितीय माना जाता है। सप्तपदी के बाद अब पत्नी को प्रमुखता प्राप्त हो गई। लक्ष्मीनारायण, उमा-महेश, सीताराम, राधेश्याम, शचीपुरन्दर आदि नामों से पत्नी को प्रथम और पति को द्वितीय स्थान प्राप्त है। दाहिनी ओर से वधू का बाँई ओर आना, इसी अधिकार का हस्तान्तरण है। बाँई ओर आने के बाद पत्नी गृहस्थ-जीवन की प्रमुख सूत्रधार बनती है।

दिन में विवाह हो तो पति-पत्नी सूर्य दर्शन का और रात्रि में हो तो ध्रुव तारे का दर्शन करते हैं। सूर्य दर्शन का मन्त्र **'ॐ तच्चक्षुर्देवहितम् पुरस्तात.....'** और ध्रुव दर्शन का मंत्र **'ॐ ध्रुव मसि.....'** है।

ध्रुव या सूर्य दर्शन

ध्रुव स्थिर तारा है, अन्य सब तारागण गतिशील रहते हैं, पर ध्रुव अपने निश्चित स्थान पर ही स्थिर रहता है, अन्य तारे उसकी परिक्रमा करते रहते हैं। ध्रुव दर्शन का अर्थ है—दोनों अपने-अपने परम पवित्र कर्त्तव्यों पर उसी तरह दृढ़ रहेंगे जैसे कि यह ध्रुव तारा स्थित है। कुछ कारण उत्पन्न होने पर भी इस आदर्श से विचलित न होंगे कि प्रतिज्ञा को निभाया जाय, व्रत को पाला जाय और संकल्प को पूरा किया जाय। ध्रुव स्थिर चित्त रहने और अपने कर्त्तव्य पर सुदृढ़ रहने की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार सूर्य की अपनी प्रखरता, तेजस्विता, महत्ता सदा स्थिर रहती है। वह अपने निर्धारित पथ पर ही चलता है, यही हमें करना चाहिए। यह भावना पति-पत्नी सूर्य दर्शन करते हुए ग्रहण करें।

शपथ आश्वासन

पति-पत्नी को एक अत्यन्त हृदयस्पर्शी आश्वासन देकर अपनी अन्तिम प्रतिज्ञा करता है कि वह निस्संदेह निश्चित रूप से अपने बच्चों का पालन करेगा। इसके लिए वह पत्नी के कन्धे पर या सिर पर हाथ रखकर शपथपूर्वक अपनी ईमानदारी एवं निष्ठा का विश्वास दिलाता है कि उसके सम्बन्ध में तनिक भी आशंका न की जाय, अविश्वास की बात न सोची जाय। वह हर हालत में अपना वचन आजीवन निबाहेगा।

पिछले दिनों पुरुषों का व्यवहार स्त्रियों के साथ छली-कपटी और विश्वासघातियों जैसा रहा है। रूप-यौवन के लोभ में कुछ दिन मीठी बातें

बनाते हैं, पीछे क्रूरता एवं दुष्टता पर उतर आते हैं। पग-पग पर उन्हें सताते और तिरस्कृत करते हैं। पैर की जूती बनाकर रखते हैं और इतने बन्धन-प्रतिबन्ध लगाते हैं जितने पालतू पशु-पक्षियों पर भी नहीं होते। प्रतिज्ञाओं को तोड़कर आर्थिक एवं चारित्रिक उच्छृंखलता बरतते हैं और पत्नी की इच्छा-आवश्यकता की परवाह नहीं करते। समाज में ऐसी घटनायें कम घटित नहीं होतीं। ऐसी दशा में सामान्य पत्नी के मन में पति के द्वारा की गई इन प्रतिज्ञाओं को भी एक औपचारिकता मात्र रह जाने की आशंका हो सकती है। स्थिति को देखते हुए ऐसा भय स्वाभाविक भी है। सन्तान न होने या लड़कियाँ होने जैसे तुच्छ बहाने पर लोग जब दूसरा विवाह करने पर उतारू हो जाते हैं तो वे तरह-तरह के अत्याचार करते हैं, उसे देखने-सुनने वाली नारी के मन में आशंका के बीज रहेंगे ही। पति सिर पर हाथ रखकर कसम खाता है कि दूसरे दुष्ट-दुरात्माओं की श्रेणी में उसे न गिना जाय वह देवताओं की उपस्थिति में सम्भ्रान्त लोगों की साक्षी में उसके सिर या कन्धे पर हाथ रखकर विश्वास दिलाता है, वचन देता है कि उसकी ओर से अन्यों जैसी दुष्टता का कोई ऐसा अवसर न आवेगा।

इस आवश्यकता का एक रूप पति द्वारा पत्नी का हृदय स्पर्श करना भी था। वह पत्नी के हृदय पर हाथ रखकर वहाँ कोई सन्देह नहीं रहने देने के लिए हाथ रखता था, पर वर्तमान शिष्टाचार के अनुसार ऐसा करना थोड़ा अनुचित और अश्लील जैसा लगता है। इसलिए सिर या कन्धे पर हाथ रखकर 'ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि' मन्त्र बोलने का ही प्रचलन है। मन्त्र का अर्थ है—हम दोनों एक हृदय होकर रहेंगे और दाम्पत्य जीवन के उत्तरदायित्वों को पूरी ईमानदारी के साथ निबाहेंगे।

सुमंगली

इसके पश्चात् सुमंगली क्रिया होती है। वधू की माँग में वर अपनी अँगूठी या चाँदी की शलाका से सिन्दूर लगाता है। इसे माँग भरना भी कहा जाता है। मन्त्र इसका 'ॐ सुमंगली रियंवधू..... है। माँग भराने में अक्सर लड़कियाँ संकोच करती हैं। इसीलिए साड़ी के ऊपर या मस्तक पर लगाकर ही इस क्रिया को पूरा किया जा सकता है।

माँग भरना सौभाग्य का, सुहाग का चिन्ह माना जाता है। वधू द्वारा वर से माँग भराने की क्रिया इस बात की घोषणा है कि हम दोनों ने विवाह स्वेच्छापूर्वक पूर्ण सहमति से किया है, इसमें किसी का दबाव या छल नहीं है। हम लोग परस्पर सहयोग से मिलकर स्वेच्छापूर्वक इस निर्णय पर पहुँचे हैं और अब यह घोषणा समस्त समाज के सामने कर रहे हैं कि एक-दूसरे को निबाहने और उठाने के लिए जो कुछ सम्भव है वह सब कुछ करेंगे, दूसरों के सामने अपना एक आदर्श, अनुकरण उपस्थित करेंगे, अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने सच्चे रहेंगे। इस आत्म-समर्पण रूपी यज्ञ का ऐसा वातावरण उत्पन्न करेंगे, जिससे हम दोनों को नहीं, सारे परिवार को, सारे समाज को बल एवं उल्लास प्राप्त हो सके।

सुमंगली क्रिया के पश्चात् यज्ञ का शेष कार्य पूरा किया जाता है। सिवष्टकृत होम, पूर्णाहुति, वसोधारा, आरती, घृत-अवघ्राण, भस्म धारण, क्षमा-प्रार्थना, साष्टांग-नमस्कार, शुभकामना, अभिसिंचन, प्रदक्षिणा, विसर्जन, सत्संकल्प का पाठ किया जाय। उपस्थित लोग अक्षत-पुष्प वर्षा करते हुए वर-वधू को आशीर्वाद दें। दोनों को उपहार में फल देते हुए यज्ञ वेदी से विदा किया जाय।

विवाह संस्कार के समय जो प्रतिज्ञायें की गई हैं, जो प्रशिक्षण दिया गया है, उसे वर-वधू एक रस्म मात्र समझें और सुना-अनसुना करके पल्ला झाड़ दें, तो इतने बड़े क्रियाकृत्य का कोई मूल्य ही न रह जायेगा। उन दोनों को इन भावनाओं को मन में गहराई तक जमाये रहना चाहिए और समय-समय पर विवाह पद्धति में सम्मिलित इन भावनाओं एवं प्रेरणाओं पर अधिक गम्भीरतापूर्वक चिन्तन, मनन करना चाहिए। दोनों ओर से प्रयत्न किया जाना चाहिए कि इन भावनाओं को कार्यान्वित करने के लिए अधिक से अधिक ईमानदारी और सावधानी बरती जाय। यह प्रयत्न जितनी सच्चाई के साथ किया जायेगा उतना ही विवाह का उद्देश्य पूर्ण होगा और उसी अनुपात से दाम्पत्य जीवन में आनन्द एवं उल्लास की अभिवृद्धि होती चलेगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन प्रतिज्ञाओं और भावनाओं को बार-बार हृदयंगम करने के लिए विवाह दिवसोत्सव की प्रथा-परम्परा प्रचलित की जानी चाहिए। विवाह संस्कार के सारे क्रियाकृत्य तो नहीं पर जो सरल और महत्वपूर्ण हैं वे हर साल विवाह की तिथि पर एक छोटे से उत्सव-आयोजन के रूप में पुनः-पुनः दुहराये जा सकते हैं। इससे हर साल दाम्पत्य जीवन को उत्कृष्ट एवं आदर्श बनाने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

जिनके विवाह हो चुके हैं या होने वाले हैं, उन्हें भी विवाह संस्कार के अवसर पर मिलने वाली प्रेरणाओं को हृदयंगम करना चाहिए और अपने दाम्पत्य जीवन में उनका समावेश उसी तरह करना चाहिए जैसा कि नव वर-वधू को कहा गया है।

विवाह के उद्देश्य और शिक्षा

विवाहो गद्यते लोके शक्तिशक्तिमतोरिव।
एकीकरणमुभयोरात्मनोरिति च श्रुतिः।। १।।

दो आत्माओं का एकीकरण विवाह है यह श्रुति का वचन है। इन दो पति-पत्नी की आत्मा शक्ति और शक्तिमान् के एकीकरण की भाँति है।

द्वयस्य धीन्द्रियहृदां द्वयो प्राणशरीरयोः।
उभयो रात्मनोश्चैव प्रेमव्रतसमन्वयः।। २।।
कृति पतिपत्नीत्वेन लोके गौरीशयोरिव।
प्रेमादर्शो विवाहः स्याज्जीवने सुखदः स्मृतः।। ३।।

दो शरीर, दो मन और बुद्धि, दो हृदय, दो प्राण व दो आत्माओं का समन्वय करके अगाध प्रेम के व्रत को पालन करने वाले दम्पत्ति, उमा महेश्वर के प्रेमादर्श को धारण करते हैं, यही विवाह का स्वरूप है।

वासना-मोह-संवेगे रूपसौन्दर्य वैकृतः।
उपयोगस्तु वैशद्यं प्रेम्णः करोति धूमिलम्।। ४।।
वासना येन चात्मानं मत्वा विषयसेवनम्।
पुण्यपरिणयस्यास्य प्रयोगस्तमसावृतः।। ५।।

वासना के मोहावेग में रूप सौन्दर्य का विकृत उपयोग करने से प्रेम की विशदता धूमिल हो जाती है और वासनात्मक प्रेम को ही आत्मा मानकर विषय का सेवन यह परिणय के पुण्य संस्कार का तामसिक उपयोग है।

आत्म संयम सन्मार्गे नारीपुरुषयोः शुभा।
एषा सफलतैवास्य सार्थकता च पूर्णता।। ६।।
दूषितवासनाजन्य-प्रेम्णा ह्युपभोगं सदा।
विजेतुं तत्परौ स्यातामाश्रित्येमात्मगुणान्वै।। ७।।
सम्बलं साधनं शक्तिः साहाय्यं दृढ़साहसः।
शुभोत्साहः षडेते हि तयोः सन्ति सहायकाः।। ८।।

आत्म-संयम के पुनीत पथ में नारी पुरुष की यही शुभ सफलता सार्थकता एवं पूर्णता है कि प्राणिक वासना प्रेम और भोग के ऊपर विजय पाने के लिए दोनों (पति-पत्नी) सम्बल, साधन, शक्ति, सहायता, दृढ़ साहस, शुभ उत्साह इन छः सहायक साधनों के साथ संलग्न हों।

समुत्कर्षविकासार्थमन्योन्यस्य च द्वावपि।
कल्याणानन्दयोः स्यातां स्पर्धाशीलौ प्रसारणे।। ९।।

दोनों एक दूसरे की सेवा करते हुए विकास उत्कर्ष, हित कल्याण और आनन्द के विस्तार के लिये स्पर्धाशील हों।

अन्योन्यं सेवितुं प्रेम्णा द्वयोर्धर्मः क्रमागतः।
समानो ह्यधिकारस्तु दम्पत्योर्निश्चितः सदा।। १०।।

दम्पत्ति के पारस्परिक समान अधिकार क्रमागत निश्चित हैं।

पितृगृहं परित्यज्य प्रविश्यपम च।
तदेव सा स्वकं मत्वा महात्यागं करोति वै।। ११।।
इति स्मृत्वा सुकर्त्तव्यं पुरुषस्य विशेषतः।
पत्न्याः सुखाय स्वास्थ्याय रक्षायै कुशलाय च।। १२।।

पिता के घर को त्यागकर पति घर में आकर उसे अपना समझती हुई पत्नी जो यह बहुत बड़ा त्याग करती है, इसको स्मरण कर पति-वर्ग का विशिष्ट कर्म इस प्रकार कहा गया है कि उसके सुख, स्वास्थ्य, रक्षा, कुशलता एवं प्रसन्नता के लिये पति निश्चय ही आजीवन यत्नशील रहे।

प्रसादाय सयत्नोऽसौ भवेदाजीवनं खलु।
नम्राज्ञापालिका नारी श्रमशीला च सेविका।। १३।।
उदारोत्सक्ता सा प्रेममूर्तिः स्वभावतः।
भवत्यतो विकासाय तस्या यच्छेदावसरम्।। १४।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नारी-जाति स्वभाव से ही नम्रा, विनीता, श्रमशीला, सेवा भाव-युक्ता, उदार, उत्सर्गमयी होती है, अतः उनके विकास के लिये सदैव अवसर प्रदान करें।

स्वातन्त्र्येण गुणानान्तु भावनायास्तथैव च।
आत्मनिर्भरतायाश्च विकासः साधनैः सह।। १५।।
जायते सोऽपि नारीणामवरुद्धश्च कुण्ठितः।
परतन्त्रतया प्रायो वैवश्येन च बन्धनैः।। १६।।
ताभ्यो जीवनपर्यन्तं प्रदेया सुविधा शुभा।
व्यवस्थां सुखदां कुर्वन्त्यागं चात्मसुखस्य च।। १७।।

सद्गुणों की स्वतन्त्रता, भावना एवं आत्मनिर्भरता का पूर्ण साधनों के साथ विकास होता है किन्तु उसी प्रकार परतन्त्रता, विवशता तथा बन्धन से सद्गुणों का विकास कुण्ठित और अवरुद्ध हो जाता है।

ऋण मुक्तः स्वजायायाः पतिर्भवति नान्यथा।
नारी साक्षाद् गृहे लक्ष्मीस्तत्प्रसादो ह्यपेक्षते।। १८।।
अपराधेऽपि पत्न्यास्तु ताडनोत्पीडने ध्रुवम्।
दानवत्वं नरस्यैव निन्दनीयमसंशयम्।। १९।।
तामुदारतया प्रेम्णां तथा स्नेहन प्रेरयेत्।
त्युक्तुमवगुणान् स्वीयानभ्यासेन शनैः शनैः।। २०।।

अतः जब तक वह (पति) जीवन पर्यन्त पत्नी को सुखप्रद व्यवस्था और बहुत सुख प्रदान नहीं करता तब तक अपनी पत्नी के ऋण से मुक्त नहीं होता है। पत्नी को उसके द्वारा अपराधित होने पर उसे प्रताड़ित एवं उत्पीड़ित करना निन्दनीय घोर दानवता है। उसको उदारता, प्रेम और स्नेहपूर्वक अवगुणों को धीरे-धीरे अभ्यास द्वारा त्यागने के लिये प्रेरित करे।

बुध्यात्मनो हि दायित्वं पूर्णंच स्वपत्नीं प्रति।
शिक्षा-सुधार-संयुक्तां व्यवस्थां कारयेत्पतिः।। २१।।
आनृण्यार्थं न यो यत्नमात्मोत्सर्गेण स नरः।
कृतघ्नः कुरुते पत्न्या पशुतुल्यो हि गण्यते।। २२।।

जो व्यक्ति अपनी पत्नी के आत्मोत्सर्ग से ऋण-मुक्त होने का प्रयत्न नहीं करता वह कृतघ्न नर-पशु है।

दाम्पत्यजीवनोद्देश्यो महान्सेवामयस्तथा।
समाजदेशविश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्।। २३।।
व्यक्तित्वमद्वितीयञ्च निर्देशः संस्कृतेरयम्।
अस्माकं भारतीयानां पावनः कथितो बुधैः।। २४।।

दाम्पत्य जीवन का उद्देश्य महान् सेवक की भाँति, समाज, देश और विश्व के लिये दिव्य आत्मा तथा अद्वितीय व्यक्ति को प्रदान करना है। यही हमारी संस्कृति का पुण्य निर्देश बुद्धिमानों ने बतलाया है।

विवाह संस्कार-प्रयोजन एवं विधि

विवाह मानव समाज की एक महत्वपूर्ण व्यवस्था है। कहा जाता है कि संसार में एक समय ऐसा था जब मनुष्य पशुओं की तरह निवास करता था, उन्हीं की तरह रहता था। उसे न माता-पिता का ज्ञान रहता था और न भाई-बहिन का बोध। उस समय वह प्रशुओं की अपेक्षा भी हीन स्थिति. में रहता था, क्योंकि उसमें न हाथी के समान बल था और न शेर के समान तेज दाँत तथा नाखून। न उनका शरीर गेंडा के समान कठोर ढालों से सुरक्षित था और न ही वह अन्य किसी प्रकार अपनी आत्म-रक्षा कर पाता था। इतना होने पर भी उसमें एक ऐसी सहयोगी बुद्धि और संगठन की प्रवृत्ति अवश्य थी जिसका सहारा लेकर वह पशुओं पर विजय पा लेता था और अपनी रक्षा और वृद्धि में समर्थ होता था। पर उस समय भी किसी नियत घर, भोजन और वस्त्रों की स्थायी व्यवस्था न होने से मनुष्य समुदाय बनाकर बड़ी गुफाओं या घने पेड़ों में निवास करते थे। उस अवस्था में परिवार का निर्माण न होने से स्त्री-पुरुषों में पाये जाने वाले आजकल के से रिश्तों का अस्तित्व नहीं था और समूह की सब स्त्रियाँ सभी पुरुषों की पत्नियाँ समझी जाती थीं तथा उनसे उत्पन्न लड़के-लड़की भी समुदाय की सन्तान माने जाते थे। महाभारत में एक उपाख्यान आता है कि इस व्यवस्था की खराबियों को देखकर श्वेतकेतु नामक सामाजिक नेता ने विवाह-प्रणाली की स्थापना की और तभी से वर्तमान कुटुम्ब-व्यवस्था का श्रीगणेश हुआ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसमें सन्देह नहीं कि विवाह-प्रथा ने मानव-समाज को सुसंगठित और विकसित बनाने में महत्वपूर्ण योग दिया है और इसके कारण मनुष्य बड़े-बड़े परिवारों में सम्मिलित होकर सहयोग की भावना को बहुत अधिक बढ़ाकर महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन कर सका है। इसीलिए भारतीय मनीषियों ने विवाह को एक धर्म-कृत्य का रूप देकर घोषणा की कि पति-पत्नी सम्बन्ध सुनिश्चित और पवित्र माना जाय और वे जीवन-क्षेत्र में इस प्रकार एकात्म भाव से कार्य करें कि उनकी शक्ति एक और एक मिलकर ग्यारह के बराबर हो जाय। आगे चलकर यह परिवार ही जाति का आधार बन गया और उन्हीं से राष्ट्रों की रचना हुई।

इस प्रकार से विवाह का प्रचार होने पर भिन्न-भिन्न प्रदेशों में स्थानीय परिस्थिति के अनुसार उसके रस्म-रिवाजों में कुछ अन्तर तो अवश्य रहा, पर उसका मुख्य रूप यही रहा कि कन्या का पिता किसी सुयोग्य वर को देखकर पुरोहित द्वारा कुछ धार्मिक कृत्य कराके अपनी कन्या को वर के लिए अर्पण कर देता था और साथ में उन्हें कुछ अन्न, वस्त्र, बर्तन आदि अपनी गृह-सामग्री में से दे देता था, जिससे उनको अपने निर्वाह की व्यवस्था बनाने में सुविधा हो। प्राचीन समृतियों तथा पुराणों के उपाख्यानों में विवाह प्रणाली का जो वर्णन मिलता है उसमें कहीं विवाह के पहले दहेज की रकम तय करने, बड़ी-बड़ी बरात ले जाने, कई-कई दिन तक नाच-गान और दावतें होने का जिक्र नहीं है। उनमें हवन करके देवताओं की साक्षी में वैवाहिक प्रतिज्ञायें करने का विधान विस्तारपूर्वक अवश्य दिया गया है, पर तरह-तरह के अलन-चलन, नेग-जोग और खर्चीले आडम्बरों का उल्लेख कहीं नहीं पाया जाता। अगर कुछ काव्यों और महाकाव्यों में बढ़ा-चढ़ाकर उनका वर्णन भी किया गया है तो वह पिछले कवियों की रचना है जो उन्होंने अपने समय की परिस्थिति को देखकर तदनुसार गढ़ डाली है।

विवाह की अधिकांश रस्मों का सामयिक होना इससे भी प्रकट है कि वे विभिन्न प्रदेशों और इलाकों में अलग-अलग रूप में प्रचलित हैं। कहीं लड़की वाला लड़के वालों को दहेज में हजारों रुपया देता है और कहीं लड़के वाले को लड़की के मूल्य स्वरूप सैकड़ों या हजारों रुपया देना पड़ता है। कहीं पर चार-चार गोत्र बचाकर विवाह सम्बन्ध निश्चित किये जाते हैं और कहीं उच्च कहलाने वाले ब्राह्मण भी अपनी छोटी-सी उपजाति में गुन्जायश न होने के कारण मामा फूफा की लड़कियों से विवाह कर लेते हैं। मालाबार की तरफ के ब्राह्मणों में विवाह का बहुत-सा कृत्य वर के बजाय उसका मामा ही करता है। अनेक जातियों में विवाह के पहले लड़की का विधवा विवाह जैसा वेश बनाकर खूब शोक मना लिया जाता है तो कहीं विवाह के पश्चात् ससुर बहू को गोदी में उठाकर ले जाता है। इस प्रकार समस्त हिन्दू समाज में ऐसी अलग-अलग तरह की प्रथायें और परम्परायें प्रचलित हैं जो एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत हैं और अपनी-अपनी जातियों और उपजातियों में मानवीय तथा धर्मानुकूल मानी जाती हैं। इस कारण अगर कोई यह ख्याल करे कि इस समय उनके यहाँ जो प्रथायें प्रचलित हैं वे ही ईश्वरीय आदेश या 'वेद वाक्य' हैं तो यह उसके अज्ञान का ही परिचायक होगा।

इस समय विवाहों में जो सबसे बड़ी खराबी पैदा हो गई है वह है उसे अत्यन्त खर्चीला बना देना। विवाह एक हर्षोत्सव अवश्य है और उस अवसर पर दो आत्माओं और दो परिवारों में एक गहरा सम्बन्ध स्थापित होता है, जिससे आगे चलकर अनेक शुभ परिणाम उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। उस समय मनुष्य का एकाकीपन मिटकर उसे एक जीवन-साथी भी मिलता है, जिससे सुख-दुःख, सम्पत्ति-विपत्ति में सहारा मिलने का पूरा भरोसा रहता है। इसलिए ऐसे अवसर पर दस-पाँच इष्ट-मित्रों को बुलाकर आमोद-प्रमोद मनाया जाय तो इसमें कोई अनुचित बात नहीं है। इसी प्रकार यदि वर-कन्या के अभिभावकों की तरफ से उन दोनों को कुछ उपहार दिये जायँ तो भी उसे बुरा नहीं कहा जा सकता। शास्त्र-विधि के अनुसार पाणिग्रहण करने के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ-साथ थोड़ा-बहुत खुशी और मनोरंजन का कार्यक्रम बना लिया जाय तो उसे जीवन की एक विशेष घटना के रूप में याद रखने का अवसर मिलता है। पर जब ये बातें एक सनक या पागलपन का-सा रूप ग्रहण कर लेती हैं तो वे हमारी आर्थिक स्थिति के लिए खतरनाक बन जाती हैं। यही कारण है कि आजकल लोग विवाहों से बड़े परेशान हैं और विशेषतः लड़कियों के विवाहों से तो भगवान के कोप की तरह डरते रहते हैं। इस समय कुछ बड़े लोगों ने नई-नई तरह के खर्चे बढ़ाकर विवाह प्रथा को ऐसा खर्चीला बना दिया है कि साधारण स्थिति के व्यक्ति का उसकी थोड़ी-बहुत नकल करने में ही दिवाला निकल जाता है और उसका दुष्परिणाम उसे वर्षों तक सहना पड़ता है।

विवाह—शादियों के समय होने वाला अपव्यय हमारे समाज की सबसे बड़ी कुरीति है। बेटे वाला चाहता है कि लड़की वाले का घर-घूरा बिकवा कर जो कुछ उसके पास है वह तथा कर्ज लेकर जितना भी इकट्ठा कर सके, दहेज के नाम पर वसूल कर ले। बेटी वाला भी कम नहीं, वह चाहता है कि लड़के की पढ़ाई में जिसने अपना घर खाली कर लिया है वह सेठ साहूकारों की तरह सोने, चाँदी, हीरे, मोती के बहुमूल्य जेवर और रेशम, मखमल के रईसों-अमीरों जैसे कपड़े लड़की के लिए चढ़वाकर अपनी आर्थिक स्थिति को नष्ट कर दे।

दोनों ही पक्ष अपनी शतरंज की चाल चलते रहते हैं। बेटे वाला चाहता है कि अधिक से अधिक दहेज मिले ऐसा सम्बन्ध पक्का किया जाय और लड़की वाला उस घर की तलाश करता है जो अधिक जेवर चढ़ा सके। उस प्रतिस्पर्धा में दोनों पर भारी आर्थिक दबाव पड़ता है और एक-दो ब्याह-शादियों में ही आर्थिक दृष्टि से खोखले हो जाते हैं।

विवाह के उत्सव का व्यय-भार भी तो कम नहीं होता। बरात सजाने और ले जाने में बेटे वाले को और स्वागत-संस्कार में बेटी वाले को कमरतोड़ आर्थिक दबाव सहना पड़ता है। बराती काम छोड़कर सजधज के कपड़े लत्ते बनवाने में पैसे खर्च करते हैं और जो बरात में ले गया है उस पर अहसान जताते हैं। बेटे वाला भी अपनी शोभा बनी देखकर बराती का उपकार मानता है और उसे ले जाने के लिए सवारी एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था करता है। बेटी वाला अपनी सामर्थ्य भर प्रयत्न करते हुए भी उन्हें सन्तुष्ट नहीं कर पाता तो उसका चित्त भी दुःखी ही रहता है। बरात को ठहराने, खिलाने एवं स्वागत सुविधा के साधन जुटाने में उसे कितनी चिन्ता और भागदौड़ करनी पड़ती है उसे भुक्तभोगी ही जानता है।

विवाह संस्कार का प्रयोजन व स्वरूप विस्तारपूर्वक पहले ही 'विवाह-संस्कार विवेचन' में बताया जा चुका है।

विशेष व्यवस्था

विवाह संस्कार में देव पूजन यज्ञ आदि से सम्बन्धित सभी व्यवस्थाएँ पहले से बनाकर रखनी चाहिए। सामूहिक विवाह हो तो प्रत्येक जोड़े के हिसाब से प्रत्येक वेदी पर आवश्यक सामग्री रहनी चाहिए, कर्मकाण्ड ठीक से होते चलें इसके लिए प्रत्येक वेदी पर एक-एक जानकार व्यक्ति भी नियुक्त करना चाहिए। एक ही विवाह है तो आचार्य स्वयं ही देख-रेख रख सकते हैं। सामान्य व्यवस्था के साथ जिन वस्तुओं की जरूरत विशेष कर्मकाण्ड में पड़ती है उन पर प्रारम्भ में दृष्टि डाल लेनी चाहिए। उसके सूत्र इस प्रकार हैं।

(१) वर सत्कार के लिए सामग्री के साथ एक थाली रहे ताकि हाथ, पैर धोने की क्रिया में जल फैले नहीं। मधु पर्क पान के बाद हाथ धुलाकर उसे हटा दिया जाय।

(२) यज्ञोपवीत के लिए पीला रँगा हुआ यज्ञोपवीत १ जोड़ा रखा जाय।

(३) विवाह घोषणा के लिए वर-वधू पक्ष की पूरी जानकारी पहले से ही नोट कर ली जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(४) वस्त्रोपहार तथा पुष्पोपहार की मालायें तैयार रहें।

(५) कन्यादान में हाथ पीले करने को हल्दी, गुप्तदान के लिए गूँदा हुआ आटा (लगभग एक पाव) रखें।

(६) ग्रन्थि बन्धन के लिए हल्दी, पुष्प, अक्षत, दूर्वा और पैसा पाँच मंगल द्रव्य हों।

(७) शिलारोहण के लिए पत्थर की शिला या समतल पत्थर का एक टुकड़ा रखा जाय।

(८) हवन सामग्री के अतिरिक्त लाजा (धान की खीलें) रखनी चाहिए।

(९) वर-वधू के पद प्रक्षालन के लिए परात या थाली रखी जाय।

(१०) वर-वधू को आशीर्वाद देने के लिए पुष्प आदि पर्याप्त मात्रा में रखे जायें।

(११) पहले से वातावरण इस प्रकार बनाना चाहिए कि संस्कार के समय वर और कन्या पक्ष के अधिक से अधिक परिजन, स्नेही उपस्थित रहें।

(१२) सबके भाव संयोग से कर्मकाण्ड के उद्देश्य में रचनात्मक सहयोग मिलता है। इसके लिए व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ही ढंग से आग्रह किये जा सकते हैं।

(१३) विवाह के पूर्व यज्ञोपवीत संस्कार हो चुकता है। अविवाहितों को एक यज्ञोपवीत तथा विवाहितों को जोड़ा पहनाने का नियम है।

(१४) यदि यज्ञोपवीत न हुआ हो तो नया यज्ञोपवीत और हो गया हो तो एक के स्थान पर जोड़ा पहनाने का संस्कार विधिवत् किया जाना चाहिए। अच्छा हो कि जिस शुभ दिन को विवाह-संस्कार होना है उस दिन प्रातःकाल यज्ञोपवीत धारण का क्रम व्यवस्थित ढंग से करा दिया जाय। विवाह-संस्कार के लिए सजे हुए वर के वस्त्र आदि उतरवाकर यज्ञोपवीत पहनना-बदलना अटपटा-सा लगता है। इसलिए उस प्रकरण को पहले ही पूराकर लिया जाना उचित है। यदि वह सम्भव न हो तो स्वागत प्रकरण के बाद यज्ञोपवीत धारण करा दिया जाता है। उसे वस्त्रों पर ही पहना देना चाहिए, जो संस्कार के बाद अन्दर कर लिया जाता है।

(१५) जहाँ पारिवारिक स्तर के परम्परागत विवाह आयोजनों में मुख्य संस्कार से पूर्व द्वाराचार (टीका) की रस्म होती है वहाँ यदि उस हो-हल्ला के वातावरण को संस्कार के उपयुक्त बनाना सम्भव लगे तो स्वागत तथा वस्त्र एवं पुष्पोपहार वाले प्रकरण उस समय भी पूरे कराये जा सकते हैं। विशेष आसन पर बिठाकर वर का सत्कार किया जाय। फिर कन्या को बुलाकर परस्पर वस्त्र और पुष्पोपहार सम्पन्न कराये जायें। परम्परागत ढंग से दिये जाने वाले अभिनन्दन-पत्र आदि भी उसी अवसर पर दिये जा सकते हैं।

(१६) पारिवारिक स्तर पर सम्पन्न किये जाने वाले विवाह संस्कारों के समय कई बार वर-कन्या पक्ष वाले किन्हीं लौकिक रीतियों के लिए आग्रह करते हैं। यदि ऐसा आग्रह है तो पहले से नोट कर लेना-समझ लेना चाहिये। कर्मकाण्ड के मुख्य प्रवाह में उसे कुशलता से फिट कर देना चाहिए।

विशेष कर्मकाण्ड

विवाह वेदी पर वर और कन्या दोनों को बुलाया जाय, प्रवेश के साथ मंगलाचरण 'भ्रदं कर्णेभिः.....।' मन्त्र बोलते हुए उन पर अक्षत डाले जायें। कन्या दायीं ओर वर बायीं ओर बैठे। कन्यादान करने वाले प्रतिनिधि कन्या के पिता, भाई जो भी हों, उन्हें पत्नी सहित कन्या की ओर बिठलाया जाय। सभी के सामने आचमन आदि के उपकरण हों। पवित्रीकरण, आचमन, शिखा-वन्दन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी-पूजन आदि षट्कर्म सम्पन्न करा लिये जायें।

वर-सत्कार—अतिथि रूप में आये हुए वर का सत्कार किया जाय। (१) आसन, (२) पाद्य, (३) अर्घ्य, (४) आचमन, (५) नैवेद्य आदि निर्धारित मन्त्रों से समर्पित किये जायें।

दिशा और प्रेरणा— वर का अतिथि के नाते सत्कार किया जाता है। गृहस्थाश्रम में गृहलक्ष्मी का महत्व सर्वोपरि होता है। उसे लेने वर एवं उसके हितैषी परिजन वधू को सम्मानपूर्वक लेने कन्या के पिता के पास चल कर आते हैं। श्रेष्ठ उद्देश्य से सद्भावनापूर्वक आये अतिथियों का स्वागत करना कन्या पक्ष का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्त्तव्य हो जाता है। दोनों पक्षों को अपने-अपने इन सद्भावों को जागृत रखना चाहिए।

वर का अर्थ होता है—श्रेष्ठ, स्वीकार करने योग्य। कन्या-पक्ष वर को अपनी कन्या के अनुरूप श्रेष्ठ व्यक्ति मानकर ही सम्बन्ध स्वीकार करें, उसी भाव से श्रेष्ठ भाव रखते हुए सत्कार करें और भगवान से प्रार्थना करें कि यह भाव सदा बनाये रखने में सहायता करें।

वर पक्ष सम्मान पाकर निरर्थक अहं न बढ़ाये। जिन मानवीय गुणों के कारण श्रेष्ठ मानकर वर का सत्कार करने की व्यवस्था ऋषियों ने बनाई है, उन शालीनता, जिम्मेदारी, आत्मीयता, सहकारिता जैसे गुणों को इतना जीवन्त बनाकर रखें कि कन्या पक्ष की सहज श्रद्धा उनके प्रति उमड़ती ही रहे। ऐसा सम्भव हो तो पारिवारिक सम्बन्धों में देवोपम स्नेह-मधुरता का संचार अवश्य होगा।

इन दिव्य भावों के लिए सबसे अधिक घातक है, संकीर्ण स्वार्थ-परक लेन-देन का आग्रह। दहेज, दिखावा, चढ़ावा आदि के नाम पर यदि एक-दूसरे पर दबाव डाले जाते हैं तो सद्भाव नाम की वस्तु तो समाप्त हो ही जाती है, द्वेष और प्रतिशोध के दुर्भाव उभर आते हैं। वर-वधू और समस्त परिवार के सुखद भविष्य को ध्यान में रखकर ऐसे अप्रिय प्रसंगों को विष मानकर उनसे सर्वथा दूर रहना चाहिए।

ध्यान रखें कि सत्कार में स्थूल उपचारों को नहीं हृदयगत भावों को प्रधान माना जाता है। उन्हीं के साथ निर्धारित क्रम पूरा किया कराया जाय।

क्रिया और भावना—स्वागतकर्त्ता हाथ में अक्षत लेकर भावना करें कि वर की श्रेष्ठतम प्रवृत्तियों का अर्चन कर रहे हैं। देव-शक्तियाँ उन्हें बढ़ाने, बनाये रखने में सहयोग करें। निम्न मन्त्र बोलें—

ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्।

—पार. गृ. सू. १/३/४

वर दाहिने हाथ में अक्षत स्वीकार करते हुए भावना करे कि स्वागत कर्त्ता की श्रद्धा पाते रहने के योग्य व्यक्तित्व बनाये रखने का उत्तरदायित्व स्वीकार कर रहे हैं। बोलें—**'ॐ अर्चय'।**

आसन—स्वागतकर्त्ता आसन या उसका प्रतीक हाथ में लेकर निम्न मन्त्र बोलें। भावना करें कि वर को श्रेष्ठता का आधार-स्तर प्राप्त हो। हमारे स्नेह में उसका स्थान बने।

ॐ विष्टरो, विष्टरो, विष्टर, प्रतिगृह्यताम्।

—पार. गृ. सू. १/३/६

वर कन्या के पिता के हाथ से विष्टर लेकर कहें—

'ॐ प्रतिगृह्णामि'

—पार. गृ. १/३/७

उसे भावनापूर्वक बिछाकर बैठ जाय इस क्रिया के साथ निम्न मन्त्र बोला जाय।

ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।।

—पारस्कर गृ. सू. १/३/८

पाद्य—स्वागतकर्त्ता पैर धोने के लिए छोटे पात्र में जल लें। भावना करें कि ऋषियों के आदर्शों के अनुरूप सद्गृहस्थ बनने की दिशा में बढ़ने वाले पैर पूजनीय हैं। कहें—

ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

—पार. गृ. सू. १/३/६

वर कहे

'ॐ प्रतिगृह्णामि' —पार. गृ. १/३/७

भावना करें कि आदर्शों की दिशा में चरण बढ़ाने की उमंग इष्टदेव बनाये रखे। पद प्रक्षालन की क्रिया के साथ यह मन्त्र बोला जाय।

ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।।

—पारस्कर गृ. सू. १/३/११

अर्घ्य—स्वागतकर्त्ता चन्दन युक्त सुगन्धित जल पात्र में ले भावना करे कि सत् पुरुषार्थ में लगने का संस्कार वर के हाथों में जागृत करने हेतु अर्घ्य दे रहे हैं। कहे—

ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः प्रतिगृह्यताम्।

—पार. गृ. १/३/१२

जल पात्र स्वीकार करते हुए वर कहे—

ॐ प्रतिगृह्णामि। —पार. गृ. १/३/७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावना करे कि सुगन्धित जल सत्पुरुषार्थ के संस्कार दे रहा है। जल से हाथ धोयें। क्रिया के साथ निम्न मन्त्र बोला जाय।

ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानि।

ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभि गच्छत।

अरिष्टाऽअस्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः।। —पार. गृ. १/३/१३-१४

आचमन—स्वागतकर्त्ता आचमन के लिए जल पात्र प्रस्तुत करे। भावना करे वर-श्रेष्ठ अतिथि का मुख उज्ज्वल रहे, उसकी वाणी उसका व्यक्तित्व तदनुरूप बने, कहे—

ॐआचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्प्रतिगृह्यताम्।।

—पार. गृ. १/३/५/ ६

ॐ प्रतिगृह्णामि —पार. गृ. १/३/७

भावना करें कि मनबुद्धि और अन्तःकरण तक यह भाव बिठाने का प्रयास कर रहे हैं। तीन बार आचमन करें। आचमन के समय यह मन्त्र बोला जाय।

ॐ आमाग यशसा ससृज वर्चसा। तां मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशुनामरिष्टिं तनूनाम्।

—पार. गृ. १/३/१५

नैवेद्य मधुपर्क—एक पात्र में दूध, दही, शर्करा और तुलसी दल डालकर रखें। स्वागत कर्त्ता यह पात्र हाथ में लें। भावना करें कि वर को श्रेष्ठता बनाये रखने योग्य सात्विक सुसंस्कारी और स्वास्थ्यवर्धक आहार, उन्हें सतत् प्राप्त होता रहे। कहें—

ॐ मधुपर्को, मधुपर्को, मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम।

—पार. गृ. १/३/५-६

वर पात्र स्वीकार करते हुए कहे—

ॐप्रतिगृह्णामि। —पार. गृ. १/३/७

मधुपर्क का पान करे। भावना करे अभक्ष्य के कुसंस्कारों से बचने, सद्पदार्थों के सुसंस्कार अर्जित करते रहने का उत्तरदायित्व स्वीकार रहे हैं। पान के समय यह मंत्र बोला जाय।

ॐ यन्मधुनो मध्व्यं परमऽरूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मध्व्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मध्व्योऽन्नादोऽसानि।। —पार. गृ. १/३/२०

तत्पश्चात् जल से वर हाथ-मुख धोवे। स्वस्थ होकर अगले क्रम के लिए बैठे। इसके बाद चन्दन धारण करायें। यदि यज्ञोपवीत धारण पहले नहीं कराया गया है तो यज्ञोपवीत प्रकरण के आधार पर संक्षेप में उसे सम्पन्न कराया जाय। इसके बाद क्रमशः कलशपूजन, नमस्कार, षोडशोपचार पूजन, स्वस्तिवाचन, रक्षाविधान आदि सामान्य विधान क्रम करा लिये जावें। रक्षा विधान के बाद संस्कार का विशेष प्रकरण चालू किया जाय।

वरण सूत्र एवं चन्दन धारणम्

तत्पश्चात् आचार्य वर-कन्या वरण करें। निम्न मन्त्र बोलते हुए रक्षा सूत्र बाँधे।

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्य मानाः। तन्मऽआबध्नामि शत शारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।। —यजु. ३४/५२

रक्षा-सूत्र बाँधने के बाद वर-कन्या को निम्न बोलते हुए तिलक करे।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम।।

श्री सूक्त

यज्ञोपवीत धारणम्

नियमानुसार विवाह संस्कार के पहले यज्ञोपवीत संस्कार हो चुकता है। यदि वर का यज्ञोपवीत न हुआ तो विवाह के पूर्व विधिवत् यज्ञोपवीत करा देना चाहिए। यज्ञोपवीत हो चुका है तो भी विवाह के पूर्व यज्ञोपवीत पहनाया जाता है। अविवाहित व्यक्ति एक ही सूत्र पहनता है, जबकि विवाहित को जोड़ा पहनाया जाता है। विवाह के पूर्व व्यक्ति पर केवल अपने जीवन को यज्ञीय परम्परा से जोड़े रखने का उत्तरदायित्व होता है। पर विवाह के बाद अपनी धर्मपत्नी को भी उस मार्ग पर साथ-साथ बढ़ाने का उत्तरदायित्व उठाना होता है। इसी भाव को सतत् स्मरण रखने के लिए यज्ञोपवीत का जोड़ा पहना जाता है। अस्तु विवाह के पूर्व यज्ञोपवीत पहना देना चाहिए। निम्न मन्त्र के साथ क्रिया पूरी करे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

विवाह घोषणा—इसके पश्चात् आचार्य विवाह की घोषणा करें कि वर-कन्या अब धर्मसंगत विवाह सूत्र में आबद्ध होते हैं।

स्वस्ति श्रीमन्नन्द-नन्दन-चरणकमल भक्ति सद्विद्या विनीतनिजकुलकमलकलिका प्रकाशनैक भास्कर सदाधार सच्चरित्र सत्कुल सत्प्रतिष्ठा गरिष्ठस्य....गोत्रस्य.....महोदयस्य प्रपौत्रः। ..... महोदस्यय पौत्रः.....महोदयस्य पुत्रः।।

.....महोदस्य प्रपौत्री, ...महोदयस्य पौत्री ..... महोदयस्य पुत्री। प्रयत पाणिः शरणं प्रपद्ये। स्वस्ति संवादेषू भयोर्वृद्धिर्वरकन्ययोश्चिरंजीविनौ भूयास्ताम्।।

अथमंगलाष्टकम्

विवाह घोषणा के बाद सस्वर मंगलाष्टक मन्त्र बोले जायें। इन मन्त्रों में सभी श्रेष्ठ शक्तियों से मंगलमय वातावरण, मंगलमय भविष्य के निर्माण की प्रार्थना की जाती है। पाठ के समय सभी लोग भावनापूर्वक वर वधू के लिये मंगल कामना करते रहें।

श्रीमत्पंकजविष्टरो हरिहरौवायुर्महेन्द्रोऽनल
श्चन्द्रो भास्कर वित्तपाल वरुणप्रेताधिपादिग्रहाः।
प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः,
स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम्।।१।।

गंगा गोमतिगोपतिर्गणपतिर्गोविन्दगोवर्धनौ,
गीतागोमयगोरजौ गिरिसुता गंगाधरो गौतमः।
गायत्री गरुडो गदाधरगया गम्भीरगोदावरी,
गन्धर्वग्रहगोप गोकुलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम्।। २।।

नेत्राणां त्रितयं महत्पशुपतेरग्नेस्तु पादत्रयं,
तत्तद्विष्णुपदत्रयं त्रिभुवने ख्यातिं च रामत्रयम।
गंगाबाहुपथत्रयं सुविमलं वेदत्रयं ब्राह्मणम्,
संध्यानां त्रितयं द्विजैरभिमतं कुर्वन्तु वो मंगलम्।। ३।।

वाल्मीकिः सनकः सनन्दनमुनिर्व्यासोवसिष्ठो भृगु,
र्जाबालिर्जमदग्निजह्नु जनको गर्गो गिरा गौतमः।
मान्धाता भरतो नृपश्च सगरो धन्यो दिलीपो नलः,
पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषौ कुर्वन्तु वो मंगलम्।। ४।।

गौरी श्रीकुलदेवता च सुभगा कण्डूसुपर्णाशिवाः
सावित्री च सरस्वती च सुरभिः सत्यव्रतारुन्धती।
स्वाहा जाम्बवती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्नविध्वंसिनी,
वेलाचान्युनिषेः समीनमकरा कुर्वन्तु वो मंगलम्।। ५।।

गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा,
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका।
शिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी,
पुर्णाः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम्।। ६।।

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा,
गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवांगनाः।
अश्वः सप्तमुखः सुधा हरिधनुः शंखो विषं चाम्बुधे,
रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम्।। ७।।

ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सुर्यो ग्रहाणां पतिः,
शुक्रो देवपतिर्नलो नरपतिः स्कन्दश्च सेनापतिः।
विष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिस्तारापतिश्चन्द्रमा।
इत्येते पतयस्युपर्ण-सहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम्।। ८।।

परस्पर उपहार

वस्त्रोपहार—वर पक्ष की ओर से कन्या को और कन्या पक्ष की ओर से वर को वस्त्र आभूषण भेंट किये जाने की परम्परा है। यह कार्य श्रद्धानुरूप पहले ही हो जाता है। वर-वधू उन्हें पहनकर ही संस्कार में बैठते हैं। यहाँ प्रतीक रूप में पीले दुपट्टे एक-दूसरे को भेंट किये जायें। यही ग्रन्थि बन्धन के भी काम आ जाते हैं। आभूषण पहिनाना हो तो अँगूठी या मंगलसूत्र जैसे शुभ चिन्हों तक ही सीमित रहना चाहिए।

दोनों पक्ष भावना करें एक-दूसरे का सम्मान बढ़ाने उन्हें अलंकृत करने का उत्तरदायित्व समझने और निभाने के लिए संकल्पित हो रहे हैं। नीचे लिखे मन्त्र के साथ परस्पर उपहार दिये जायें।

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जदरष्टिरस्मि।
शतं च जीवामि शरदः पुरूचीरायस्पोषमभि संव्ययिष्ये।

—पार. गृ. सू. २/६/२०

पुष्पोपहार (माल्यार्पण)—वर-वधू एक-दूसरे को अपने अनुरूप स्वीकार करते हुए, पुष्प मालायें अर्पित करते हैं। हृदय से वरण करते हैं। भावना करें कि देव शक्तियाँ और सत्पुरुषों के आशीर्वाद से वे परस्पर एक दूसरे के गले के हार बनकर रहेंगे। मन्त्रोच्चार के साथ पहले कन्या वर को फिर वर-कन्या को माला पहनाये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ यशसा माद्यावापृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती। यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्।

—पार. गृ. २/६/२१ मानव गृ. सू. ९/६/२७

हस्तपीत करणम्

शिक्षा एवं प्रेरणा—कन्यादान करने वाले कन्या के हाथों में हल्दी लगाते हैं। हरिद्रा मंगल सूचक है। अब तक बालिका के रूप में यह लड़की रही। अब यह गृह लक्ष्मी का उत्तरदायित्व वहन करेगी। इसलिए उसके हाथों को पीत वर्ण मंगलमय बनाया जाता है। उसके माता-पिता ने लाड़-प्यार से पाला, उसके हाथों में कोई कठोर कर्त्तव्य नहीं सौंपा। अब उसे अपने हाथों नव-निर्माण के अनेक उत्तरदायित्व सँभालने को तैयार करना है, अतएव उन्हें पीत वर्ण मांगलिक-लक्ष्मी प्रतीक-सृजनात्मक होना चाहिए। पीले हाथ करते हुए कन्या परिवार के लोग उस बालिका को यही मौन शिक्षण संदेश देते हैं कि उसे आगे सृजन शक्ति के रूप में प्रकट होना है और इसके लिये इन कोमल हाथों को अधिक उत्तरदायी, मजबूत और अधिक मांगलिक बनाना है।

क्रिया एवं भावना—कन्या दोनों हथेलियाँ खोलकर हाथ सामने कर दे। कन्यादान कर्त्ता गीली हल्दी उस पर मन्त्र के साथ मले। भावना करें कि देव सान्निध्य में इन हाथों को स्वार्थपरता के कुसंस्कारों से मुक्त कराते हुए त्याग परमार्थ के संस्कार तथा उन्हें पूरा करने की दृढ़ता जागृत की जा रही है। इसे प्रयासपूर्वक बढ़ाना और सुरक्षित रखना है।

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳसं परिपातु विश्वतः।।

—यजु. २९/५१

कन्यादान-गुप्तदान

कन्यादान को महादान कहा गया है। इसके महत्व को वर-एवं कन्या पक्ष दोनों को ही समझना चाहिए। इस सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक 'विवेचन प्रकरण' में पहले ही लिखा जा चुका हैं।

क्रिया और भावना—कन्या के हाथ हल्दी से पीले करके माता-पिता अपने हाथ में कन्या के हाथ, गुप्तदान का धन और पुष्प रखकर संकल्प बोलते हैं और उन हाथों को वर के हाथों में सौंप देते हैं। वह इन हाथों को गम्भीरता और जिम्मेदारी के साथ अपने हाथों से पकड़कर स्वीकार शिरोधार्य करता है।

भावना करें कि कन्या वर को सौंपते हुए उसके अभिभावक अपने समग्र अधिकार भी सौंपते हैं। कन्या के कुल गोत्र अब पितृ परम्परा से नहीं पति परम्परा के अनुसार होंगे। कन्या को यह भावनात्मक पुरुषार्थ करने तथा पति को उसे स्वीकार करने या निभाने की शक्ति सत् शक्तियाँ प्रदान कर रही हैं। इस भावना के साथ कन्यादान का संकल्प बोला जाय। संकल्प पूरा होने पर संकल्पकर्त्ता कन्या के हाथ वर के हाथ में रख दे।

कन्यादान-संकल्प

अद्येति..... नामाहं..... नाम्नीमिमां कन्यां। भगिन्नीं सुस्नातां यथाशक्त्यलंकृतां गन्धाद्यर्चितां वस्त्रयुगच्छन्नां प्रजापति दैवत्यां शतगुणीकृत ज्योतिष्टोमातिरात्रशतफल प्राप्तिकामोऽहं..... नाम्ने विष्णुरूपिणे वराय भरणपोषणाच्छादनपालनादीनां स्वकीयोत्तरदायित्वभारमखिलमद्य तव पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।

वर उन्हें स्वीकार करते हुए कहे—

ॐ स्वस्ति—

गौदान

दिशा प्रेरणा—गौ पवित्रता और परमार्थ परायणता की प्रतीक है। कन्या पक्ष वर को कुछ दे तो पवित्रता और परमार्थ भाव से दे, ऐसा दान दे जो उन्हें पवित्रता और परमार्थ की प्रेरणा दे। यदि कन्या के पिता को देने की और वर को पालने के लिए स्थान आदि की सुविधा हो तो कन्यादान के अवसर पर गाय दहेज में दी जा सकती है। वह कन्या के व उसके परिवार के लोगों के स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयुक्त भी है।

आज की स्थिति में यदि गौ देना या लेना असुविधाजनक हो तो उसके लिये भी कुछ धन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया जा सकता है। इस प्रकार प्राचीन गौदान की परिपाटी को जीवित रखा जा सकता है।

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽदित्यानाममृतस्यनाभिः। प्र नु, वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिंवधिष्ट।।

ऋ. ८/१०१/१५ पार. गृ.

क्रिया और भावना—कन्यादान करने वाले हाथ में संकल्प लें, भावना करें कि वर-कन्या के भावी जीवन को सुखी समुन्नत बनाने लिए श्रद्धापूर्वक श्रेष्ठदान कर रहे हैं। मन्त्रोच्चार के साथ संकल्पित सामग्री वर के हाथ में दे दें।

मर्यादाकरण

दिशा एवं प्रेरणा—कन्यादान गौदान के बाद दाता वर से सत् पुरुषों और देव शक्तियों की साक्षी में मर्यादा की विनम्र अपील करता है। वर उसे स्वीकार करता है। कन्या का उत्तरदायित्व वर को सौंपा गया है। ऋषियों द्वारा निर्धारित अनुशासन विशेष लक्ष्य के लिए है। अधिकार पाकर उस मर्यादा को भूलकर मनमाना आचरण न किया जाय। धर्म, अर्थ और काम की दिशा में ऋषि प्रणीत मर्यादा का उल्लंघन अधिकार के नशे में न किया जाय। यह निवेदन किया जाता है, जिसे वर प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करता है।

क्रिया और भावना—कन्यादान करने वाले अपने हाथ में जल, पुष्प, अक्षत लें। भावना करें कि वर को मर्यादा सौंप रहे हैं। वर मर्यादा स्वीकार करे, उसके पालन के लिए देव शक्तियों के सहयोग की कामना करें।

नीचे लिखे मन्त्रों के साथ क्रिया सम्पन्न की जाय। कन्यादान कर्त्ता कहे—

गौरी कन्यामिमां पूज्य ! यथाशक्ति विभूषिता।
गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां देव समाश्रय।।
धर्मस्या चरणं सम्यक् क्रियतामनया सह।
धर्मे चार्थे च कामे च यत्त्वं नातिचरेर्विभो।।

वर कहे—

"नातिचरामि।"

।। पाणिग्रहण ।।

दिशा एवं प्रेरणा—वर द्वारा मर्यादा स्वीकारोक्ति के बाद कन्या अपना हाथ वर के हाथ में सौंपे और वर अपना हाथ कन्या के हाथ में सौंप दें। इस प्रकार दोनों एक दूसरे का पाणिग्रहण करते हैं। यह क्रिया हाथ में हाथ मिलाने जैसी होती है। वे मानो एक दूसरे को आगे बढ़ाने के लिए ही एक दूसरे का हाथ पकड़कर सहारा दे रहे हों।

क्रिया एवं भावना—नीचे लिखे मन्त्र के साथ कन्या अपना हाथ वर की ओर बढ़ाये, वर उसे अँगूठा सहित (समग्र रूप से) पकड़ ले। भावना करे कि दिव्य वातावरण में परस्पर मित्रता के भाव सहित एक-दूसरे के उत्तरदायित्व स्वीकार कर रहे हैं।

ॐ यदैवि मनसा दूरं दिशोऽनुपवमानो वा।
हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु असौ।।

—पार. गृ. १/४/१५

ग्रन्थि बन्धन

दिशा और प्रेरणा—वर-वधू द्वारा पाणिग्रहण एकीकरण के बाद समाज द्वारा दोनों को एक गाँठ में बाँध दिया जाता है।

[वर-कन्या के दुपट्टों को आपस में बाँध दिया जाता है। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी 'विवाह-संस्कार विवेचन' में पहले ही दी जा चुकी है।]

क्रिया और भावना—ग्रन्थिबन्धन, आचार्य, आचार्य का प्रतिनिधि अथवा कोई मान्य व्यक्ति करे। दुपट्टे के छोर एक साथ करके उसमें मंगल-द्रव्य रखकर एक साथ गाँठ बाँध दी जाय। भावना की जाय कि मंगल-द्रव्यों के मंगल-संस्कार सहित सत् शक्तियों के समर्थक तथा स्नेहियों की सद्भावना के संयुक्त प्रभाव से दोनों इस प्रकार जुड़ रहे हैं जो सदा जुड़े रहकर एक-दूसरे की जीवन लक्ष्य यात्रा में पूरक बनकर चलेंगे। ग्रन्थि के साथ यह मन्त्र बोला जाय—

ॐ समंजन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ।।

ऋ. १०/८५/४७।। पार. गृ. १/४/१४

वर-वधू की प्रतिज्ञायें

दिशा एवं प्रेरणा—किसी भी महत्वपूर्ण पद ग्रहण के साथ शपथ ग्रहण समारोह भी अनिवार्य रूप से जुड़ा रहता है। कन्यादान पाणिग्रहण एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ग्रन्थि-बन्धन हो जाने के साथ वर-वधू द्वारा और समाज द्वारा दाम्पत्य सूत्र में बँधने की स्वीकारोक्ति हो जाती है। इसके बाद अग्नि एवं देव-शक्तियों की साक्षी में दोनों को एक संयुक्त इकाई के रूप में ढालने का क्रम चलता है। इस बीच उन्हें अपने कर्त्तव्य धर्म का महत्व भली प्रकार समझना और निष्ठापूर्वक उसके पालन का संकल्प लेना चाहिये। इस दिशा में पहली जिम्मेदारी वर की होती है। अस्तु पहले वर तथा बाद में वधू की प्रतिज्ञायें कराई जाती हैं।

क्रिया और भावना—प्रतिज्ञा के समय वर-वधू के हाथ में पुष्प, अक्षत, जल देना चाहिये। आचार्य संस्कृत सहित अथवा केवल हिन्दी में एक-एक करके प्रतिज्ञायें व्याख्या सहित समझायें। पूरी होने पर उनसे कहलवायें, स्वीकार है। प्रतिज्ञा पूरी होने पर अक्षत आदि देव-पूजन वेदी पर चढ़ा दिये जायें।

वर की प्रतिज्ञायें

धर्मपत्नीं मिलित्वैव त्वेकं जीवनमावयोः।
अद्यारभ्यवयतो में त्वमर्द्धांगिनीति घोषिताः।। १।।

आज से धर्म पत्नी को अर्धांगिनी घोषित करते हुए, उसके साथ अपने व्यक्तित्व को मिलाकर एक नये जीवन की सृष्टि करता हूँ। अपने शरीर के अंगों की तरह धर्म पत्नी का ध्यान रखूँगा।

स्वीकरोमि सुखेन त्वां गृहलक्ष्मीमहन्ततः।
मन्त्रयित्वा विधास्यामि सुकार्याणि त्वया सह।। २।।

प्रसन्नतापूर्वक गृहलक्ष्मी का महान अधिकार सौंपता हूँ और जीवन के निर्धारण में उसके परामर्श को महत्व दूँगा।

रूपस्वास्थ्यस्वभावान्तु गुणदोषादीन् सर्वतः।
रोगाऽज्ञान विकारांश्च तव विस्मृत्य चेतसः।। ३।।

रूप, स्वास्थ्य, स्वभावगत गुण-दोष एवं अज्ञान जनित विकारों को चित्त में नहीं रखूँगा, उनके कारण असन्तोष व्यक्त नहीं करूँगा। स्नेहपूर्वक सुधारते या सहन करते हुए आत्मीयता बनाये रखूँगा।

सहचरो भविष्यामि पूर्णस्नेहं प्रदास्य ते।
सत्यता मम निष्ठा च यस्याऽऽधारं भविष्यति।। ४।।

पत्नी का मित्र बनकर रहूँगा और पूरा-पूरा स्नेह देता रहूँगा। इस वचन का पालन पूरी निष्ठा और सत्य के आधार पर करूँगा।

यथा पवित्रचित्तेन पातिव्रत्यं त्वया धृतम।
तथैव पालयिष्यामि पत्नीव्रतमहं ध्रुवम्।। ५।।

पत्नी के लिये जिस प्रकार पतिव्रत की मर्यादा कही गयी है, उसी दृढ़ता से स्वयं पत्नीव्रत धर्म का पालन करूँगा। चिन्तन और आचरण दोनों से ही पर नारी के प्रति वासनात्मक सम्बन्ध नहीं जोड़ूँगा।

गृहस्यार्थव्यवस्थायां मन्त्रयित्वा त्वया सह।
संचालनं करिष्यामि गृहस्थोचित-जीवनम्।। ६।।

गृह-व्यवस्था में धर्म-पत्नी को प्रधानता दूँगा। आमदनी और खर्च का क्रम उसकी सहमति से करने की गृहस्थोचित जीवन-चर्या अपनाऊँगा।

समृद्धि-सुख-शान्तीनां रक्षणाय तथा तव।
व्यवस्थां वै करिष्यामि स्वशक्तिवैभवादिभिः।। ७।।

धर्मपत्नी की सुख-शान्ति तथा प्रगति-सुरक्षा की व्यवस्था करने में अपनी शक्ति और साधनों आदि को पूरी ईमानदारी से लगाता रहूँगा।

यत्नशीलो भविष्यामि सन्मार्गसेवितुं सदा।
आवयोः मतभेदांश्च दोषान्संशोध्य शान्तितः।। ८।।

अपनी ओर से श्रेष्ठ व्यवहार बनाये रखने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूँगा। मतभेदों और भूलों का सुधार शान्ति के साथ करूँगा। किसी के सामने पत्नी को लांछित, तिरस्कृत नहीं करूँगा।

देवाऽग्नि-सन्मनुष्याणां सान्निध्ये कृतनिश्चयः।
त्वां प्रत्यहं भविष्यामि सहिष्णुः मृदुलस्तथा।। ९।।

देवतागण, अग्नि तथा सत्पुरुषों की साक्षी में वचन देता हूँ कि पत्नी के प्रति सहिष्णु और मधुर भाषी बनकर रहूँगा।

भवत्यामसमर्थायां विमुखायाञ्च कर्मणि।
विश्वासं सहयोगञ्च, मम प्राप्स्यसि त्वं सदा।। १०।।

पत्नी के असमर्थ या अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाने पर भी अपने सहयोग और कर्त्तव्य-पालन में रत्ती भर भी कमी न रखूँगा, ऐसा विश्वास दिलाता हूँ।

मधुरा प्रेम संयुक्ता वार्ता सत्यव्यवहृति।
दृढं पत्नीव्रतमेकं वचो मे तव सन्निधौ।। ११।।

मधुर प्रेम युक्त चर्चा, सद्व्यवहार तथा दृढ़ पत्नीव्रत के पालन का वचन देता हूँ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कन्या की प्रतिज्ञायें

स्वजीवनं मेलयित्वा भवतः खलु जीवने।
भूत्वा चार्धांगिनी नित्यं वसिष्यामि गृहं सदा।। १।।

अपने जीवन को पति के साथ संयुक्त करके नये जीवन की सृष्टि करूँगी। इस प्रकार घर में हमेशा सच्चे अर्थों में अर्धांगिनी बनकर रहूँगी।

शिष्टतापूर्वकं सर्वैः परिवारजनैः सह।
औदार्येण विधास्यामि व्यवहारं च कोमलम्।। २।।

पति के परिवार के परिजनों को एक ही शरीर के अंग मानकर चलूँगी, सभी के साथ शिष्टता बरतूँगी, उदारतापूर्वक सेवा करूँगी, मधुर कोमल व्यवहार करूँगी।

त्यक्त्वालस्यं करिष्यामि गृहकार्ये परिश्रमम्।
भर्तुर्हर्षं हि ज्ञास्यामि स्वीयामेव प्रसन्नताम्।। ३।।

आलस्य को छोड़कर परिश्रमपूर्वक गृहकार्य करूँगी। इस प्रकार पति की प्रगति और जीवन विकास में समुचित योगदान करूँगी।

श्रद्धया पालयिष्यामि धर्मं पातिव्रतं परम्।
सर्वदैवानुकूल्येन पत्युरादेशपालिका।। ४।।

पतिव्रत धर्म का पालन करूँगी, पति के प्रति श्रद्धा भाव बनाये रखकर सदैव उसके अनुकूल रहूँगी। कपट-दुराव न करूँगी, निर्देशों के अविलम्ब पालन का अभ्यास करूँगी।

सुश्रूषणपरा स्वच्छा मधुर-प्रियभाषिणी।
प्रतिजाने भविष्यामि सततं सुखदायिनी।। ५।।

सेवा परायण, स्वच्छता, प्रसन्नता तथा प्रियभाषण का अभ्यास बनाये रखूँगी। इसके विपरीत ईर्ष्या, कुढ़न, रूठने आदि के दोष न अपनाऊँगी, इस प्रकार सदा प्रसन्नता देने वाली बनकर रहूँगी।

मितव्ययेन गार्हस्थ्यसञ्चालने हि नित्यदा।
प्रयतिष्ये च सोत्साहं तवाहमनुगामिनी।। ६।।

मितव्ययी बनकर घर का संचालन करूँगी, फिजूलखर्ची से बचूँगी। पति के आर्थिक या शारीरिक दृष्टि से असमर्थ हो जाने पर भी उत्साहपूर्वक सद्गृहस्थ के अनुशासन का पालन करूँगी।

देवस्वरूपो नारीणां भर्त्ता भवति मानवः।
मत्वेति त्वां भजिष्यामि नियता जीवनावधिम्।। ७।।

नारी के लिए पति देव स्वरूप होता है—यह मानकर मतभेद भुलाकर सेवा साधना करते हुए जीवन भर सक्रिय रहूँगी, कभी भी पति का अपमान न करूँगी।

पूज्यास्तव पितरो ये श्रद्धया परमा हि मे।
सेवया तोषयिष्यामि तान्सदा विनयेन च।। ८।।

जो पति के पूज्य और श्रद्धा पात्र हैं उन्हें सेवा द्वारा और विनय द्वारा सदैव सन्तुष्ट रखूँगी।

कदापि क्वापि किमपि करिष्ये न पराङ्मुखी।
प्रति जानामि मम च त्वमेव सर्वमेव हि।। ९।।

किसी भी स्थिति में कभी भी, स्वयं पति के विमुख हो जाने पर भी प्रतिफल की आशा किए बिना अपने कर्त्तव्यों का पालन करूँगी।

यज्ञ आहुति

शपथ ग्रहण के बाद उनकी श्रेष्ठ भावनाओं के विकास और पोषण के लिए यज्ञीय वातावरण निर्मित किया जाता है। अग्नि स्थापना, अग्नि प्रज्वलन, समिधा धान्न, जल प्रसिंचन, आज्याहुति आदि करा के, क्रमबद्ध ढंग से गायत्री मन्त्र की २४ आहुतियाँ की जायें।

इसके बाद प्रायश्चित्य होम कराया जाय।

दिशा एवं प्रेरणा—प्रायश्चित होम द्वारा हवन तो गायत्री मन्त्र से ही होता है। केवल पाँच आहुतियाँ प्रायश्चित होम की अतिरिक्त रूप में दी जाती है। वर के हाथ में घी और कन्या के हाथ में सामग्री दी जाती है। प्रायश्चित होम की आहुतियाँ देते समय यह भावना दोनों के मन में आनी चाहिए कि दाम्पत्य जीवन में बाधक होने वाले जो भी कुसंस्कार अब तक मन में रहे हों उन सबको स्वाहा किया जा रहा है। किसी से पतिव्रत का उल्लंघन करने की कोई भूल हुई है तो उसे अब तक स्वप्न जैसी बात समझकर विस्मरण कर दिया जाय। इस प्रकार की भूल के कारण कोई किसी को न तो दोष दे न सन्देह की दृष्टि से देखे, न लांछन लगाये, इसी प्रकार कोई अन्य नशेबाजी जैसा दुर्व्यसन रहा हो या स्वभाव में रुक्षता, कठोरता, स्वार्थपरता, अहंकार जैसी कोई त्रुटि रही हो तो उसका अब तो त्याग करना ही है। साथ ही उन भूलों का प्रायश्चित करते हुए भविष्य में कोई ऐसी भूल न करने का संकल्प भी करना है जो दाम्पत्य जीवन की प्रगति में बाधा उत्पन्न करे।

क्रिया और भावना—वर-वधू दोनों हवन सामग्री से आहुति करें। भावना करें कि प्रत्येक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रायश्चित्य आहुति के साथ पूर्वकृत दुष्कर्मों, दुश्चिंतनों की धुलाई हो रही है। स्वाहा के साथ आहुति डालें इदं न मम के साथ हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वहितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां इदं न मम।।

—यजु. २१/३, ऋग्वेद ४/१/१४

ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणो रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां इदं न मम। —यजु. ४/१/१५

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजᳬस्वाहा। इदममग्नये अयसे इदं न मम। —कात्या. श्री. सू. २५/१/११

ॐ ये तो शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदं न मम।

—का. श्रौ. २५/१/११

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम श्रथाय। अधा वयमादित्य व्रते तवानागसौ अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च इदं न मम।

—यजु. १/२४/१५

शिलारोहण

दिशा एवं प्रेरणा—शिलारोहण के द्वारा पत्थर पर सात बार पैर रखते हुए प्रतिज्ञा करते हैं कि जिस प्रकार अंगद ने अपना पैर गाढ़ दिया था इसी तरह हम पत्थर की लकीर की तरह अपना पैर आगत उत्तरादायित्वों को निबाहने के लिए जमाते हैं। यह धर्मकृत्य खेल-खिलौनों की तरह नहीं किया जा रहा, जिसे एक मखौल समझकर तोड़ा जाता रहे वरन् यह प्रतिज्ञायें-निष्ठायें पत्थर की लकीर की तरह अमिट बनी रहेंगी, ये चट्टान की तरह अटूट एवं चिरस्थाई रखी जायेंगी।

क्रिया और भावना—मन्त्र बोलने के साथ वर-वधू अपने दाहिने पैर शिला पर रखें। भावना करें कि उत्तरदायित्वों के निर्वाह करने तथा बाधाओं को पार करने की शक्ति हमारे संकल्प और देव अनुग्रह के संयोग से मिल रही है।

ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वᳬस्थिरा भव।

अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः।।

—पार. गृ. सू. १/७/१

लाजाहोम एवं परिक्रमा (भाँवर)

प्रायश्चित्य आहुति के बाद लाजाहोम और यज्ञाग्नि की परिक्रमा (भाँवर) का मिला-जुला क्रम चलता है। लाजाहोम के लिए कन्या का भाई एक थाली में धान (चावल) लेकर पीछे खड़ा हो। एक मुट्ठी धान अपनी बहिन को दे। कन्या उसे वर को सौंप दे। वर उसे आहुति मन्त्र के साथ हवन कर दे। इस प्रकार तीन बार किया जाय। तीनों बार भाई के द्वारा दिए हुए चावल कन्या अपने पति को दे, वह तीनों बार हवन में अर्पण कर दे। लाजाहोम में भाई के घर से अन्न (चावल के रूप में) बहिन को मिलता है, उसे वह अपने पति को सौंप देती है। कहती है बेशक मेरे व्यक्तिगत उपयोग के लिए पितागृह से मुझे कुछ मिला है पर उसे मैं छिपाकर अलग से नहीं रखती, आपको सौंपती हूँ। अलगाव या छिपावे का कोई भाव मन में न आवे, इसलिए जिस प्रकार पति कुछ कमाई करता है तो पत्नी को सौंपता है, उसी प्रकार पत्नी भी अपनी उपलब्धियों को पति के हाथ में सौंपती है। पति सोचता है, हम लोग हाथ-पैर से जो कमायेंगे, उसी से अपना काम चलायेंगे, किसी के उदारतापूर्वक दिए हुए अनुदान को बिना श्रम किये खाकर क्यों हम किसी के ऋणी बनें इसलिये पति उन लाजाओं को अपने खाने के लिए नहीं रख लेता वरन् यज्ञ में होम देता है। जन कल्याण के लिए उस पदार्थ को वायुभूत बनाकर संसार के वायु मण्डल में बिखेर देता है। इस क्रिया में यह महान् मानवीय आदर्श सन्निहित है कि मुफ्त का माल या तो स्वीकार ही न किया जाय या मिले भी तो उसे लोकहित में खर्च कर दिया जाय। लोग अपनी-अपनी निज की पसीने की कमाई पर ही गुजर-बसर करें। लाजाहोम वर्तमान काल की क्षुद्र मान्यताओं को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धिक्कारता है और दहेज के सम्बन्ध में सही दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है।

परिक्रमा—अग्नि की पति-पत्नी परिक्रमा करें। बाँये से दाँये की ओर चलें। पहली चार परिक्रमाओं में कन्या आगे रहे और वर पीछे। चार परिक्रमा हो जाने पर लड़का आगे हो जाय और लड़की पीछे। परिक्रमा के समय परिक्रमा मन्त्र बोला जाय तथा हर परिक्रमा पूरी होने पर एक-एक आहुति वर-वधू गायत्री मन्त्र से करते चलें। इसका तात्पर्य है—घर-परिवार के कार्यों में लड़की का नेतृत्व रहेगा, उसके परामर्श को महत्व दिया जायेगा, वर उसका अनुसरण करेगा, क्योंकि उन कार्मों का नारी को अनुभव अधिक होता है। बाहर के कार्यों में वर नेतृत्व करता है और नारी उसका अनुसरण करती है क्योंकि व्यावसायिक क्षेत्रों में नर का अनुभव अधिक होता है। वैसे दोनों को घर और बाहर के सभी कार्यों में परस्पर परामर्श से ही कोई नीति निर्धारित करनी चाहिए। जिसमें जिस दिशा की जानकारी कम हो, दूसरे में उसकी जानकारी बढ़ाकर अपने समतुल्य बनाने में प्रयत्नशील रहें। भावना क्षेत्र में नारी आगे है, कर्म क्षेत्र में पुरुष। दोनों पक्ष अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण हैं। कुल मिलाकर नारी का वर्चस्व पद, गौरव एवं वचन बड़ा बैठता है। इसलिए उसे चार परिक्रमा करने और नर को तीन परिक्रमा करने का अवसर दिया जाता है। गौरव के चुनाव के ४ वोट कन्या को और ३ वोट वर को मिलते हैं, इसलिए सदा वर से पहला स्थान नारी को मिला है। सीताराम, राधेश्याम, लक्ष्मीनारायण, उमामहेश आदि युग्मों में पहले नारी का नाम है, पीछे नर का।

क्रिया और भावना—लाजा होम और परिक्रमा का मिलाजुला क्रम चलता है। शिलारोहण के बाद वर-वधू खड़े-खड़े गायत्री मन्त्र से एक आहुति करें। अब परिक्रमा मन्त्र के साथ परिक्रमा करें। वधू आगे वर पीछे चले।

—एक परिक्रमा पूरी होने पर लाजाहोम की एक आहुति करें। आहुति करके दूसरी परिक्रमा पहले की तरह मन्त्र बोलते हुए करें।

—इसी प्रकार लाजाहोम की दूसरी आहुति करके तीसरी परिक्रमा तथा तीसरी आहुति करके चौथी परिक्रमा करें।

—इसके बाद गायत्री मन्त्र की आहुति लगाते हुए तीन परिक्रमायें वर को आगे करके परिक्रमा मन्त्र बोलते हुए करायी जावें।

—आहुति के साथ भावना करें कि बाहर यज्ञीय ऊर्जा तथा अन्तःकरण में यज्ञीय भावना तीव्रतर हो रही है। परिक्रमा के साथ भावना करें कि यज्ञीय अनुशासन केन्द्र प्रेरणा को मानकर, यज्ञाग्नि को साक्षी करके आदर्श दाम्पत्य के निर्वाह का संकल्प दृढ़ कर रहे हैं।

लाजाहोम मन्त्रः

ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत। स नोऽअर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा। इदमर्यम्णे अग्नये इदं न मम।। १।।

ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजा नावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।। २।।

ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियं स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।। ३।।

—पा. गृ. १/६/२

परिक्रमा मन्त्रः

ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्यां वहतु ना सह।

पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह।।

ऋग्वेद १०/८५/३८ पार. गृ. सू. १/७/३

सप्त पदी

दिशा एवं प्रेरणा—भाँवर फिर लेने के उपरान्त सप्तपदी की जाती है। सात बार वर वधू साथ-साथ कदम से कदम मिला फौजी सैनिकों की तरह आगे बढ़ते हैं। सात चावल की ढेरी या कलावा बँधे हुए सकोरे रख दिये जाते हैं, इन लक्ष्य चिन्हों को पैर लगाते हुए दोनों एक-एक कदम आगे बढ़ाते हैं, रुक जाते है और फिर अगला कदम बढ़ाते हैं। इस तरह सात बार में सात कदम बढ़ाये जाते हैं। प्रत्येक कदम के साथ एक-एक मन्त्र बोला जाता है। [विस्तृत जानकारी के लिए 'विवाह संस्कार विवेचन' देखें]

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रिया और भावना—वर वधू खड़े हों। प्रत्येक कदम बढ़ाने के पहले देव शक्तियों की साक्षी का मन्त्र बोला जाता है, उस समय वर-वधू हाथ जोड़कर ध्यान करें। उसके बाद चरण बढ़ाने का मन्त्र बोलने पर पहले दाँया कदम बढ़ायें। इसी प्रकार एक-एक करके सात कदम देव साक्षी के साथ बढ़ाये जायें। भावना की जाय कि योजनाबद्ध प्रगतिशील जीवन के लिए देव साक्षी में संकल्पित हो रहे हैं, संकल्प और देव अनुग्रह का संयुक्त लाभ जीवन भर मिलता रहेगा।

(१) अन्न वृद्धि के लिए पहली साक्षी—

ॐ एको विष्णुर्जगत्सर्वं व्याप्तं येन चराचरम्।
हृदये यस्ततो यस्य तस्य साक्षी प्रदीयताम्।।

पहला चरण—**ॐ इष एकपदी भवसा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। १।।**

(२) बल वृद्धि के लिए दूसरी साक्षी—

ॐ जीवात्मा परमात्मा च पृथिवी आकाशमेव च।
सूर्यचन्द्रद्वयोर्मध्ये तस्य साक्षी प्रदीयताम्।।

दूसरा चरण—**ॐ ऊर्जे द्विपदी भव सा सामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। २।।**

(३) धन वृद्धि के लिए तीसरी साक्षी—

ॐ त्रिगुणश्च त्रिदेवाश्च त्रिशक्तिः सत्परायणाः।
लोकत्रये त्रिसन्ध्यायाः तस्य साक्षी प्रदीयताम्।।

तीसरा चरण—**ॐ रायस्पोषाय त्रिपदी भव सा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ३।।**

(४) सुख वृद्धि के लिए चौथी साक्षी—

ॐ चतुर्मुखस्ततो ब्रह्मा चत्वारो वेदसंभवाः।
चतुर्युगाः प्रवर्तन्ते तेषां साक्षी प्रदीयताम्।।

चौथा चरण—**ॐ मायो भवाय चतुष्पदी भव सा मामनुव्रता भवा विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ४।।**

(५) प्रजा पालन के लिए पाँचवी साक्षी—

ॐ पंच मे पंच भूतानां पंचप्राणैः परायणाः।
तत्र दर्शन पुण्यानां साक्षिणः प्राणपंचधा।।

पाँचवाँ चरण—**ॐ प्रजाभ्यः पंचपदी भव सा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ५।।**

(६) ऋतु व्यवहार के लिए छठवीं साक्षी—

ॐ षष्ठे षष्ठऋतूणां च षण्मुखः स्वामिकार्तिकः।
षड्रसाः यत्र जायन्ते कार्तिकेयाश्च साक्षिणः।।

छठवाँ चरण—**ॐ ऋतुभ्यः षट्पदी भव सा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ६।।**

(७) सुख वृद्धि के लिए-सातवीं साक्षी—

ॐ सप्तमे सागराश्चैव सप्तद्वीपाः सपर्वताः।
येषां सप्तर्षिपत्नीनां तेषामादर्श साक्षिणः।।

सातवाँ चरण—**ॐ सखे सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ७।।**

—पार. गृ. सू. १/८/१-२, आश्व. गृ. १/७/१६।।

आसन परिवर्तन

सप्तपदी के पश्चात् आसन परिवर्तन करते हैं। अब तक वधू दाहिनी ओर थी अर्थात् बाहरी व्यक्ति जैसी स्थिति में थी। अब सप्तपदी होने तक की प्रतिज्ञाओं में आबद्ध हो जाने के उपरान्त वह घर वाली अपनी आत्मीय बन जाती है, इसलिए उसे बायीं ओर बिठाया जाता है। बाँये से दाँये लिखने का क्रम है। बाँया प्रथम और दाहिना द्वितीय माना जाता है। सप्तपदी के बाद अब पत्नी को प्रमुखता प्राप्त हो गयी। लक्ष्मी-नारायण, उमा-महेश, सीता-राम, राधे-श्याम, शची-पुरन्दर आदि नामों से पत्नी को प्रथम, पति को द्वितीय स्थान प्राप्त है। दाहिनी ओर से वधू का बाँयी ओर आना, अधिकार हस्तांतरण है। बायीं ओर आने के बाद पत्नी गृहस्थ जीवन की प्रमुख सूत्रधार बनती है।

ॐ इह गावो निषीदन्तु इहाश्वा इह पुरुषाः।
इहो सहस्त्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदन्तु।।

—पा. गृ. सू. १/८/१०

पादप्रक्षालनम्

आसन परिवर्तन के बाद गृहस्थाश्रम के साधक के रूप में वर-वधू का सम्मान पद प्रक्षालन करके किया जाता है। कन्या पक्ष की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओर से प्रतिनिधि स्वरूप कोई दम्पति या अकेले व्यक्ति पद प्रक्षालन करें। पद प्रक्षालन करने वालों का पवित्रीकरण सिंचन किया जाय। हाथ में हल्दी, दूर्वा, थाली में जल लेकर प्रक्षालन करें। प्रथम मन्त्र के साथ तीन बार वर-वधू के पैर पखारें फिर दूसरे मन्त्र के साथ यथा श्रद्धा भेंट दें।

ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाहनी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूर्जारघ्नी ततऽएनां करोमि सा जीर्य त्वं मया सह।।

ॐ ब्रह्मणा शालां निमितां कविभिर्निमतां मिताम्। इन्द्राग्नी रक्षतां शालाममृतौ सोम्यं सदः।।

—अथर्व ६/१३/६

ध्रुव-सूर्य ध्यान—ध्रुव स्थिर तारा है। अन्य सब तारागण गतिशील रहते हैं, पर ध्रुव अपने निश्चित स्थान पर ही स्थिर रहता है। अन्य तारे उसकी परिक्रमा करते हैं। ध्रुव दर्शन का अर्थ है—दोनों अपने-अपने परम पवित्र कर्त्तव्यों पर उसी तरह दृढ़ रहेंगे जैसे कि यह ध्रुव धारा स्थित है। कुछ कारण उत्पन्न होने पर भी इस आदर्श से विचलित न होने की प्रतिज्ञा को निभाया जाय, व्रत को पाला जाय और संकल्प को पूरा किया जाय। ध्रुव स्थिर चित्त रहने की और अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ रहने की प्रेरणा देता है इसी प्रकार सूर्य की अपनी प्रखरता, तेजस्विता, गहता सदा स्थिर रहती है। वह अपने निर्धारित पथ पर ही चलता है यही हमें करना चाहिए। यह भावना पति-पत्नी सूर्यदर्शन करते हुए ग्रहण करें।

सूर्य ध्यान

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

—यजु. ३६/२४

ध्रुव ध्यान

ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि। मह्यं त्वादात्।। बृहस्पतिर्मयापत्या प्रजावतीसञ्जीव शरदः शतम्।।

पार. गृ. सू. १/८/१६

शपथ आश्वासन—पति-पत्नी एक दूसरे के सिर पर हाथ रखकर समाज के सामने शपथ लेते हैं, एक अत्यन्त हृदयस्पर्शी आश्वासन देकर अन्तिम प्रतिज्ञा करते हैं कि ये निःसन्देह निश्चित रूप से एक-दूसरे को आजीवन ईमानदार, निष्ठावान और वफादार रहने का विश्वास दिलाते हैं।

पिछले दिनों पुरुषों का व्यवहार स्त्रियों के साथ छली-कपटी और विश्वासघातियों जैसा रहा है। रूप, यौवन के लोभ में कुछ दिन मीठी बातें बनाते हैं, पीछे क्रूरता एवं दुष्टता पर उतर आते हैं। पग-पग पर उन्हें सताते और तिरस्कृत करते हैं, पैर की जूती बनाकर रखते हैं, और इतने बन्धन प्रतिबन्ध लगाते हैं, जितने पालतू पशु-पक्षियों पर भी नहीं होते। प्रतिज्ञाओं को तोड़कर आर्थिक एवं चारित्रिक उच्छृंखलता बरतते हैं, और पत्नी की इच्छा-आवश्यकता की परवाह नहीं करते। समाज में ऐसी घटनायें कम घटित नहीं होतीं। ऐसी दशा में सामान्य पत्नी के मन में पति द्वारा की गई इन प्रतिज्ञाओं को भी एक औपचारिकता मात्र रह जाने की आशंका हो सकती है, स्थिति को देखते हुए ऐसा भय स्वाभाविक भी है। सन्तान न होने या लड़कियाँ होने जैसे तुच्छ बहाने पर लोग दूसरा विवाह करने पर उतारू हो जाते हैं। तरह-तरह के अत्याचार करते हैं तो उसे देखने-सुनने वाली नारी के मन में आशंका के बीज रहेंगे ही। पति सिर पर हाथ रखकर कसम खाता है कि दूसरे दुष्ट-दुरात्माओं की श्रेणी में उसे न गिना जाय, वह देवताओं की उपस्थिति में सम्भ्रान्त लोगों की साक्षी में, उसके सिर या कन्धे पर हाथ रखकर विश्वास दिलाता है, वचन देता है कि उसकी ओर से अन्यों जैसी दुष्टता का कोई ऐसा अवसर न आवेगा। इस प्रकार पत्नी अपनी निष्ठा के बार में पति को इस शपथ-प्रतिज्ञा द्वारा विश्वास दिलाती है। मन्त्रोच्चार के साथ दोनों एक दूसरे के सिर अथवा कन्धे का स्पर्श करें।

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुमंगली-मंगल तिलक-सिंदूरदान

मन्त्र के साथ वर अँगूठी से सिन्दूर वधू की माँग में तीन बार लगाये। भावना करे कि मैं वधू का सौभाग्य बनकर ही रहूँ, उसके सौभाग्य को बढ़ाने वाला सिद्ध होऊँ।

ॐ सुमंगलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्वा यथास्तं विपरेतन। सुभगा स्त्री सावित्र्यास्तव सौभाग्यं भवतु।।

ऋ. १०/८५/३३

मंगल तिलक

वधू वर को मंगल तिलक करे। भावना करे, पति का सम्मान करते हुए गौरव को बढ़ाने वाली सिद्ध होऊँ।

ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय ऽ आदित्यासो भवन्तु नः।।

—ऋग्वेद ५/५१/१२

इसके पश्चात् स्विष्टकृत होम, पूर्णाहुति, वसोर्धारा, आरती, घृत-अवघ्राण, भस्म, धारण, क्षमा-प्रार्थना, साष्टांग नमस्कार।

अभिषेकसिंचन

शुभ कामना के पश्चात् वर-कन्या को बिठाकर कलश का जल लेकर उनका सिंचन-अभिषेक किया जाय। भावना की जाय कि जो सुसंस्कार बोये गये हैं उन्हें दिव्यजल से सिंचित किया जा रहा है। सबके सद्भाव से उनका विकास होगा और सफलता-कुशलता के कल्याणप्रद सुफल उनमें लगेंगे।

गणपतिः गिरिजा वृषभध्वजः
षण्मुखो नन्दीमुख डिमडिमा।
मनुज माल त्रिशूल- मृगत्वचः
प्रतिदिनं कुशलं वर कन्ययोः।। १।।

रवि शशी कुज इन्द्र जगत्पतिः
भृगुज भानुज सिन्धुज केतवः।
उडुगणा तिथ योग च राशयः
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः।। २।।

वरुण इन्द्रः कुबेर हुताशनाः,
यम समीरण वारण कुंजराः।
सुरगणाः सुराश्च महीधराः
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः।। ३।।

सुरसरी रविनन्दिनि गोमती,
सरयूतामपि सागरघर्घरा।
कनकया सयि गण्डकि नर्मदा
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः ।। ४।।

हरिपुरी मथुरा च त्रिवेणिका
बदरि विष्णु बटेश्वर कौशिला।
मय गयामपि दर्दरद्वारिका
प्रतिदिनं कुशलंवर कन्ययोः।। ५।।

भृगु मुनिश्च पुलस्ति च अङ्गिरा
कपिलवस्तु अगस्त्य च नारदः।
गुरुवसिष्ठ सनातन जैमिनी,
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः।। ६।।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणः।
रक्षन्तु चतरोवेदाः यावच्चन्द्रदिवाकरौ।।

इसके पश्चात् विसर्जन का क्रम पूर्ण कर वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान करें। इसके लिए उपस्थित जन समुदाय के हाथ में अक्षत, पुष्प दे दें तथा वर वधू के ऊपर "मंगलम् भगवान विष्णुः" या 'श्री वर्चस्व मायुष्य मारोग्यं" तथा अन्य मांगलिक मन्त्र बोलते हुए अक्षत, पुष्प छुड़वायें। प्रसाद वितरण आदि क्रम भी सुविधानुसार चलाया जाये, जयघोष आदि का क्रम भी अपना सकते हैं।

संस्कार पूरा होने पर वर वधू को लेकर अपनी-अपनी कुल परम्परा के अनुसार शिष्टाचार बरते जा सकते हैं। सभी जगह विवाहोपरान्त दम्पत्ति को एक साथ देव-दर्शन के लिए ले जाया जाता है। जहाँ शीक्तपीठें हों, वहाँ उन पर, अपने घरेलू देव-स्थल अथवा किसी निर्दिष्ट स्थान पर ले जाकर देव-दर्शन करा देना चाहिए फिर पारिवारिक शिष्टाचारों का क्रम चलाया जा सकता है।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वानप्रस्थ-संस्कार

वानप्रस्थ-संस्कार-विवेचन

जन्म और मरण की अवधि में दो बार संचय काल और दो बार उपयोग काल आता है। बालकपन और बुढ़ापा संचय-काल है और यौवन तथा परलोक—भोग उपयोग काल है। संचय की अवधि में जो इकट्ठा कर लिया जाता है उपभोग-काल में उसी को आनन्द उपलब्ध होता है। बचपन में विद्याध्ययन एवं व्यायाम आदि के द्वारा जो शारीरिक, मानसिक बल उपार्जित किया जाता है, उसी का सत्परिणाम यौवन काल में वैभव एवं आनन्द के रूप में उपभोग करने को मिलता है।

बचपन का श्रम यौवन में लाभदायक

जिन्होंने बचपन में परिश्रमपूर्वक पढ़ाई जारी रखी, उच्च शिक्षा प्राप्त की, अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण हुए, कला-कौशल सीखी, वे अपने उस अध्ययन-तप का लाभ युवावस्था में उठाते हैं। अपनी बौद्धिक क्षमता बढ़ी-चढ़ी होने के कारण अच्छा व्यवसाय, अच्छी नौकरी, अच्छा काम मिल जाता है। अच्छी आमदनी होती है। प्रतिष्ठा का पद मिलता है। इन उपलब्धियों के फलस्वरूप वे शौक-मौज के, ऐश-आराम, के गौरव-सम्मान के अनेकानेक साधन जुटा लेते हैं। स्वयं मौज में रहते हैं, अपने घर वालों को मौज में रखते हैं तथा दूसरें का भी कुछ भला कर लेते हैं।

वृद्धावस्था और मरणोत्तर जीवन

इसी प्रकार जिनने व्यायाम, ब्रह्मचर्य, आहार-विहार के संयम द्वारा अपना स्वास्थ्य बना लिया, वे सदा निरोग रहते हैं, बहुत दिन जीते हैं, परिपुष्ट रहने से यौवन इन्द्रिय सुख भी भोगते हैं। अच्छी नींद सोते हैं और हँसी खुशी के दिन बिताते हैं। पुष्ट शरीर से काम भी खूब होता है और विरोधी भी डरते रहते हैं। जो खाते हैं, वही पच जाता है।

बीमारियों की व्यथायें नहीं सहनी पड़तीं, सन्तानें स्वस्थ होती हैं और दवा-दारू का खर्च नहीं करना पड़ता। तात्पर्य यह है कि जिसने बचपन में स्वस्थ रहने की तपश्चर्या कर ली, वह उसका लाभ जवानी में उठाता है। बचपन और कुछ नहीं, यौवन को जैसा भी बनाना हो उसकी तैयारी का समय है। किसी को डाक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, अफसर, पहलवान आदि जो कुछ महत्त्व प्राप्त करना हो उसकी तैयारी का तप बचपन में ही करना होता है। जो लोग उस तैयारी की अवधि को आलस्य, प्रमाद और उच्छृंखलता में बिता देते हैं, उसका दुष्परिणाम युवावस्था में भोगना पड़ता है।

जिन लड़कों ने बचपन में पढ़ने से जी चुराया वे बड़े होने पर बिना पढ़े गँवार बने रहे और आजीविका, पद तथा सामाजिक सम्मान की दृष्टि से गये-गुजरे स्तर पर पड़े रहने के लिए विवश हुए, कोई अच्छा काम न पा सके, उच्चस्तरीय लोगों के बीच शिर उठाकर बैठ सकने की स्थिति न रही। इसी प्रकार जिनने व्यायाम न किया, आहार-विहार में असंयम बरता, ब्रह्मचर्य तोड़ा उनको जवानी आने से पूर्व ही बुढ़ापे ने धर दबाया। तरह-तरह की बीमारियों के शिकार बने रहे। देह से कुछ महत्त्वपूर्ण काम न हो सका। दवा-दारू में पैसा उड़ता रहा, देह कष्ट भुगतती रही, इन्द्रिय सुख भोगने का सौभाग्य ही न मिला, सन्ताने दुबली हुईं, अल्प अवधि में ही काल कवलित हो गये, जब तक जिये तब तक भी दूसरे उपहास, उपेक्षा अथवा तिरस्कार की दृष्टि से देखते और घृणा भरा व्यवहार करते रहे। बलवान शत्रुओं ने सताने में कमी न छोड़ी। अपनी दुर्बलता अपने को भी डराती एवं परेशान करती रही। बचपन में शरीर बल संचय के कर्त्तव्य की जो उपेक्षा की गई थी, उसका दण्ड यौवन में भुगता ही जाना था, भुगतना पड़ा। संचय काल की बर्बादी उपभोग-काल में विपत्ति बनकर सामने आती है, यह एक सुनिश्चित तथ्य है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तप और उसका वरदान

जिन्हें यौवन काल समुचित स्थिति में व्यतीत करने की महत्त्वाकांक्षा हो, उन्हें बचपन एवं किशोर अवस्था में उसके लिए आवश्यक तप करना ही होता है। इसके बिना और कोई रास्ता युवावस्था को शानदार बनाने का है नहीं। अपवाद की बात दूसरी है, छप्पर फाड़कर किसी को दौलत मिले, तो यह उसका पूर्व संचित भाग्य कहा जायेगा, पर आमतौर से ऐसा होता नहीं, होता यही है कि जो किया जाता है उसका फल मिलता है। इसलिए क्या अभिभावक, क्या अध्यापक, क्या शुभचिन्तक, क्या अच्छे मित्र सभी किशोर और नवयुवकों को यही नेक सलाह देते हैं कि वे पूरी मेहनत, एकाग्रता और दिलचस्पी से अपने बौद्धिक एवं शारीरिक विकास में लगे रहें। जो लड़के इस सलाह को मान लेते हैं वे आगे चलकर सुख पाते हैं। जो इन परामर्शों पर कान नहीं धरते उन्हें समय आने पर उस उपेक्षा का बेतरह पश्चाताप करना पड़ता है।

दृश्य यौवन की तरह एक अदृश्य यौवन भी है। स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म की शक्ति एवं महत्ता कहीं अधिक होती है। स्थूल शरीर की तुलना में हमारा सूक्ष्म शरीर अधिक सामर्थ्यवान है। शरीर बल की तुलना में बुद्धि-बल का उपयोग अधिक है। ठीक उसी प्रकार मरणोत्तर यौवन का महत्त्व इस दृश्य यौवन की अपेक्षा हजारों लाखों गुना अधिक है। दीखने वाली जवानी दस-बीस वर्ष ठहरती है, पर मरने के बाद स्वर्ग-नरक की अवधि उसकी तुलना में बहुत अधिक लम्बी होती है। उनमें मिलने वाले सुख एवं दुःखों का स्तर भी जवानी में मिलने वाली थोड़ी-सी सुख-सुविधाओं की तुलना में कहीं अधिक गहरा होता है। स्वर्ग में जो आनन्द है, वह सांसारिक पदार्थों में कहाँ ? नरक में जो व्यथा-वेदना है, स्थूल जगत में उसका हजारवाँ अंश भी नहीं। यहाँ तो सुख-दुःख को बँटाने वाले भी कई मिल जाते हैं, पर वहाँ तो सब कुछ अकेले ही सहना पड़ता है। यौवन उसे कहते हैं, जिसमें शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित हों। सांसारिक जीवन में हमारी अन्तःचेतना बहुत करके प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती हैं। इन्द्रिय-लिप्सा एवं सांसारिक आकर्षण एवं मानसिक भ्रम-जंजाल उसे दबाये बैठे रहते हैं, पर मरणोत्तर काल में वे सभी हट जाते हैं और अन्तःचेतना अपने प्रौढ़ रूप में विकसित होती है, तब उसके सुख-दुःख की अनुभूतियाँ भी तीव्र हो जाती है।

स्वर्ग-नरक के सुख-दुःखों का स्तर इसलिए इस संसार की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा होता है। नये जन्म की सारी भूमिका भी इसी मरणोत्तर यौवन में बन जाती है। जिस प्रकार युवावस्था में जैसा शरीर होता है, वैसा ही सन्तान का भी स्वास्थ्य होता है। ठीक इसी प्रकार प्राणी को मरणोत्तर काल में जैसी संवेदनायें भुगतनी पड़ती हैं, ठीक उसी स्तर का पुनर्जन्म भी होता है। नरक भोगने वाले प्राणी संसार में उतरते हैं, तो उन्हें नीच योनियों में कष्टकारक परिस्थिति में जन्मना पड़ता है और जो स्वर्ग से आते हैं, वे अपनी आत्मिक स्थिति के अनुरूप उत्कृष्ट स्तर के वातावरण में जन्मते और महत्त्वपूर्ण जीवनयापन करते हैं।

उच्चस्तरीय सुख के लिए उच्चस्तरीय तप

इस मरणोत्तर यौवन को सुखी एवं समुन्नत स्तर का बनाने के लिए बुढ़ापे में तैयारी करनी पड़ती है। जिस प्रकार बचपन की सीमा-रेखा में यौवन जुड़ा है, उसी प्रकार बुढ़ापे की सीमा-रेखा से मरणोत्तर यौवन जुड़ा हुआ है। इसलिए उस सूक्ष्म, अदृश्य, किन्तु महान् यौवन की तैयारी भी ठीक इन्हीं दिनों करनी पड़ती है। जिन्होंने अपनी ढलती आयु का ठीक उपयोग कर लिया, उसने मरणोत्तर यौवन को सुव्यवस्थित बनाने की योजना बना ली, किन्तु जो उस महत्त्वपूर्ण अवधि को आलस्य, प्रमाद और माया-मोह में गँवाते रहे उनका महान् मरणोत्तर यौवन उसी प्रकार अन्धकारमय बनता है जैसा कि उच्छृंखल और अवारा बच्चों का सांसारिक जीवन अस्त-व्यस्त रहता है। कितने ही बेवकूफ लड़के अपनी ढीठता में इतने ग्रसित होते हैं कि भावी जीवन के बनने-बिगड़ने की बात में उन्हें कोई सार दिखाई नहीं पड़ता। इसी तरह कितने ही बूढ़े ऐसे अदूरदर्शी होते हैं कि वे अजर-अमर बने रहने पर विश्वास करते हैं और मरणोत्तर यौवन की समस्याओं को फूटी आँख से भी नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखना, सोचना चाहते। उस सम्बन्ध में सोचने की उन्हें फुर्सत ही नहीं मिलती। नाती-पोतों की ममता उन्हें छोड़ती ही नहीं। जो कमाना, जो करना, जो सोचना सो सब बेटे-पोतों के लिए ही। इस प्रकार के मूढ़ताग्रस्त बुड्ढे फिर चाहे वे पढ़े-लिखे हों या अनपढ़ सच्चे अर्थों में मूढ़मति कहे जायेंगे। आज हमारा समाज उच्छृंखल लड़कों और अदूरदर्शी मंद मति बूढ़ों से भरा पड़ा है। फलस्वरूप हम प्राचीन गौरव गरिमा से दिन-व-दिन नीचे गिरते हुए पतन के गहरे गर्त में गिरते चले जा रहे हैं।

इस स्थिति को बदलना ही होगा। नव-निर्माण की, युग परिवर्तन समस्या इसी प्रकार हल होगी। बालकों में अनुशासन, संयम, परिश्रम एवं शिष्टाचार की भावनाएँ विकसित करके, उन्हें सांसारिक प्रगति में योगदान कर सकने योग्य बनाना आवश्यक है। उसी प्रकार वयोवृद्धों को कहना होगा कि वे मरणोत्तर जीवन को समुन्नत बनाने की तैयारी में लग जायें। यहाँ तैयारी दुहरे लाभ की है। उनका निज का परलोक स्वर्गीय सुख-शान्ति से परिपूर्ण होगा, पुनर्जन्म की महती सम्भावना रहेगी एवं मुक्ति का आनन्द मिलेगा। साथ ही इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए जो साधना करनी पड़ेगी वह संसार में सर्वतोमुखी सद्भावना उत्पन्न करने की दृष्टि से अन्ततः महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। वे करेंगे तो अपने आत्म-कल्याण का कार्य, पर उसके फलस्वरूप विश्व-शान्ति में जो योगदान मिलेगा वह लोक-कल्याण की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जायेगा। इसलिए दूरदर्शी महर्षियों ने भारतीय जीवन के अन्तिम अध्याय को जिस प्रकार व्यतीत करने की परम्परा बनाई है, उसमें दुहरा लाभ है। वृद्ध पुरुष परलोक तो सुधारते ही हैं साथ ही संसार की भी इतनी बड़ी सेवा करते हैं कि इस लोक में स्वर्ग के अवतरण का मनोरम दृश्य दिखाई देने लगता है। जनसाधारण को उनके इस तप से गुलाब या चन्दन की सुगन्धि की तरह अनायास ही महत्त्वपूर्ण लाभ मिलता है।

ढलती उम्र का तकाजा

ढलती उम्र का तकाजा है—वानप्रस्थ। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ जैसे ही हलकी होने लगें, घर को चलाने के लिए बड़े बच्चे समर्थ होने लगें और अपने छोटे भाई-बहिनों की देखभाल करने लगें तब वयोवृद्ध व्यक्तियों का एकमात्र कर्त्तव्य यही रह जाता है कि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों से धीरे-धीरे हाथ खींचें और क्रमशः वह भार समर्थ लड़कों के कन्धों पर बढ़ाते चलें। ममता को परिवार की ओर से शिथिल कर समाज की ओर विकसित करते चलें। सारा समय घर के लोगों के लिए ही खर्च न कर दें, वरन् उसका कुछ अंश क्रमशः अधिक बढ़ाते हुए समाज के लिए समर्पित करते चलें।

घर छोड़कर एकान्त कुटी में जा बैठना और भजन के नाम पर निष्क्रिय जीवन बिताने लगना आजकल लोगों ने भक्ति या वैराग्य का रूप मान लिया है। इसी दृष्टि से सभी आध्यात्मवादी व्यक्ति तीर्थों में नदियों के किनारे, एकान्त कोठरियों में जा बैठने का ही बड़ा आध्यात्मिक पुरुषार्थ मान बैठे हैं। यह सर्वथा मिथ्या, सर्वथा अशोभनीय कार्य पद्धति है, जो अज्ञानान्धकार युग के निराशावादी और अकर्मण्य लोगों ने फैलाई, जिसके फलस्वरूप आज ५६ लाख व्यक्ति धर्म के नाम पर निष्क्रिय, अनुपयोगी जीवन बिताते हुए भिक्षुक बने हुए जनता पर भार बनकर जी रहे हैं। यह विडम्बना न अध्यात्म है, न धर्म, न योग है, न वैराग्य न उससे व्यक्ति का भला होता है और न समाज का। प्राचीन काल का वैराग्य रचनात्मक वैराग्य था, जिसमें व्यक्ति के कल्याण तथा समाज के उत्सर्ग के उभय पक्षीय कार्यक्रम समान रूप से सन्निहित थे। बुढ़ापे को वानप्रस्थ के लिये समर्पित करने का जो शास्त्रीय विधान है, उसका स्वरूप यह है कि (१) उपासना (२) स्वाध्याय, (३) संयम, (४) सेवा—इन चार कार्यक्रमों में अपनी शक्तियों को सुव्यवस्थित रीति से संलग्न किया जाय। वृद्धों को उचित है कि घर-परिवार से अपना समय और मन जिस अनुपात से बचावें, उसे उसी अनुपात से इन चार कार्यों में संलग्न करते चलें।

वानप्रस्थ की पुण्य प्रतिक्रिया

वानप्रस्थ का अर्थ घर छोड़कर किसी दूर देश में चले जाना कदापि नहीं। घर से सम्पर्क शिथिल हो, पारिवारिक ममता घटे, इस दृष्टि से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घर में एक अलग कमरा लेकर रहने लगना और सोचना कि मैं छात्रावास निरीक्षक की तरह इस परिवार का मार्गदर्शक तो हूँ पर इनसे बँधा हुआ नहीं, वरन् मेरा जीवन समाज की सम्पत्ति है, वास्तविक वानप्रस्थ है। जहाँ तक सम्भव हो, परिवार की स्थिति यदि उपयुक्त है तो निर्वाह खर्च घर से ही लेना चाहिए। जिनकी पेन्शन है या जिनकी पूर्व संचित सम्पत्ति, कृषि आदि है, वे उसका उपयोग अपने निर्वाह में करें तो यह न्यायोचित है। यह जरूरी नहीं कि अपनी उपार्जित अब तक की सारी सम्पत्ति परिवार को ही दे दी जाय और खुद भिक्षुक बनकर दूसरों की रोटी पर जिया जाय। आजकल दूसरों का धान-कुधान्य ही है। उसे खाने से आत्मिक विकास में सहायता नहीं मिलती, वरन् बाधा ही पड़ती है। इसलिए सेवा कार्य में संलग्न स्थिति में कहीं अवसर आने पर किसी के यहाँ रोटी खाली, यह बात दूसरी है, साधारणतया गुजारा अपने बलबूते पर ही करना चाहिए। यदि पारिवारिक स्थिति ठीक न हो तो कुछ समय परिश्रम करके गुजारे की व्यवस्था निकाल लें और बाकी समय अपने आध्यात्मिक कार्यक्रमों में लगाएँ।

जीवन का उत्तरार्ध लोक-सेवा में लगे

जिन्होंने अपने जीवन का पूर्वार्ध उपभोग कर लिया है, उनका नैतिक एवं धार्मिक कर्त्तव्य है कि वे अपने जीवन का उत्तरार्ध परमार्थक समाज-सेवाओं में लगायें, इससे उनकी आत्मा का कल्याण और समाज, राष्ट्र व संसार का हित होगा। ऐसे साधु ब्राह्मणों को परिव्राजक लोकसेवी वानप्रस्थी कहते हैं।

सौ वर्ष की आयु का अनुमान कर मानव-जीवन की सुविधा एवं सार्थकता की दृष्टि से इस आयुष्य-अवधि को दो भागों में विभक्त कर दिया गया है। एक पूर्वार्ध दूसरा उत्तरार्ध। मानव-जीवन का यह विभाजन किन्हीं लौकिक पुरुषों द्वारा नहीं बल्कि शास्त्रों एवं दूरदर्शी ऋषियों द्वारा ही निर्धारित किया गया है।

ऋषियों के आदेशानुसार मनुष्य को चाहिए कि वह जीवन का पूर्वार्ध अर्थात् पाचास वर्ष तक की आयु तो समाज में रहकर, समाज के सहयोग से अपनी शक्तियों को विकसित करके संसार को सुखोपभोग करने में व्यतीत करे, पूर्वार्ध में गृहस्थी बसाये, बाल-बच्चों तथा घर-वार का पालन करे। धन, मान, बड़ाई तथा अन्य प्रकार की विभूतियों का उपार्जन एवं उपभोग करे। अनन्तर इक्यावन वर्ष से लेकर आयु पर्यन्त का शेष जीवन समाजसेवा में लगाये और उन उपकारों का ऋण चुकाये जो गृहस्थ-काल में उसने समाज से पाये हैं।

गृहस्थ-जीवन अर्थात् आयु के पूर्वार्ध में मनुष्य की न जाने कितनी आवश्यकतायें होती हैं जिनकी पूर्ति वह समाज की सहायता एवं सहयोग के बल पर ही कर पाता है। अकेला एक मनुष्य अपनी आवश्यकतायें पूरी नहीं कर सकता। सुख-सुविधा के जो भी साधन और जीवन-विकास के जितने उपकरणों की आवश्यकता होती है, उनके प्रस्तुत करने में अगणित लोगों की श्रम-साधना लगा करती है। एक-एक वस्तु के तैयार होने और उपयोग को दशा में लाने तक प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से लाखों करोड़ों-लोगों का सहयोग रहा करता है।

यदि दूर-दृष्टि से देखा और गहराई से विचार किया जाय तो पता चलेगा कि मनुष्य पग-पग दूसरों से उपकृत होता है। संसार में जिसने जीवन धारण किया है और एक सभ्य मनुष्य की तरह जीवन जिया है, वह समाज के अन्य लोगों के उपकार से रहित नहीं हो सकता। उसने जीवन में जो और जितना सुख पाया होता है, वह एक प्रकार से दूसरों का ही दिया होता है। यद्यपि मनुष्य स्वयं भी इसके लिये परिश्रम एवं प्रयत्न किया करता है तथापि वह अन्य लोगों द्वारा उपकृत हुए बिना नहीं बच सकता। जब तक अन्य लोगों का स्नेह, सद्भाव अथवा साहाय्य प्राप्त नहीं होता परिश्रम एवं प्रयत्न भी कोई फल उत्पन्न नहीं कर पाते। इस प्रकार हर दशा में मनुष्य पर किसी-न-किसी रूप से अन्य असंख्य लोगों का उपकार चढ़ता रहता है।

इसीलिये ऋषियों ने यह व्यवस्था की कि प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन के पूर्वार्ध में तो समाज की सहायता सहयोग से अपने जीवन को उन्नत एवं सफल बनाकर सांसारिक सुखों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपभोग करे और उत्तरार्ध में समाज एवं संसार का उपकार, ऋण चुकाने के लिए संलग्न हो जाये। जीवन के इसी विभाजन को क्रम से गृहस्थ एवं वानप्रस्थ स्थिति कहा गया है। यों तो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास—चार आश्रमों अथवा जीवन-विभागों का वर्णन है, किन्तु आज की परिवर्तित स्थित में इन चारों आश्रमों को अलग-अलग चला सकना सम्भव नहीं। आज पूर्वकाल जैसे आश्रम एवं गुरुकुल नहीं हैं, जहाँ घर से दूर जाकर वटुक रह सकें और ब्रह्मचर्य की साधना के साथ विद्या-लाभ कर सकें और न पूर्वकाल जैसे वनस्थल ही रह गये हैं, जहाँ संन्यासावस्था में सुरक्षापूर्वक रहा जा सके और आत्म-कल्याण की साधना की जा सके। इसीलिए ब्रह्मचर्य-आश्रम को गृहस्थ आश्रम एवं संन्यास आश्रम को वानप्रस्थ में जोड़कर वास्तविक प्रयोजन को चरितार्थ किया जाये यही उचित है। जिस प्रकार आज बालक घर रहकर ही माता-पिता के अवधान में विद्याध्ययन करता है, वहीं रहकर अपनी शक्तियों एवं योग्यताओं का विकास करता है, उसी प्रकार संन्यास स्थिति का पालन समाज-सेवा द्वारा, वानप्रस्थ में ही किया जाये।

यह बात सही है कि सज्जन लोग गृहस्थ-जीवन में भी स्वार्थ के साथ कुछ-न-कुछ परमार्थ करते रहते हैं फिर भी गृहस्थ की परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी होती हैं कि वह लेता अधिक है और देता कम है। जिस अनुपात से सामाजिक सहयोग का ऋण उस पर चढ़ता जाता है, उस अनुपात से उसका प्रतिकार नहीं कर पाता और गृहस्थ-जीवन की पूर्ति तक वह इतना अधिक हो जाता है कि उसे चुकाने के लिये उतनी ही अवधि की आवश्यकता होती है। इसीलिये जीवन का पूरा उत्तरार्ध समाज का प्रत्युपकार करने के लिये निश्चित किया गया है।

समाज की सहायता एवं सहयोग के आधार पर संसार का भौतिक सुख लेने और प्रेमपूर्ण पारिवारिक जीवन-यापन करने के लिये पचास वर्ष की अवधि कुछ कम नहीं है। इन पचास वर्षों में मनुष्य गृहस्थ-सुखों को पूरी तरह भोग चुकता है और जब तक बच्चे भी सयाने होकर स्थैर्य प्राप्त कर चुके होते हैं। मनुष्य का पारिवारिक उत्तरदायित्व भी परिमुक्त हो चुका होता है। तथापि यदि कोई उसके आगे भी उसी परिधि में रहकर उसी प्रकार की तृष्णा, वासना एवं एषणा में पड़ा रहना चाहता है तो यह उसका घोरतम स्वार्थ ही होगा। इसका ठीक-ठीक यही अर्थ होगा कि वह आजीवन समाज से कुछ लेता ही रहना चाहता है और उसके उपकार का कोई बदला नहीं चुकाना चाहता। ऐसे स्वार्थी संसार से उऋण होकर नहीं जाना चाहते। जिसका फल यह होता है कि वे अगले जन्म में गधा, घोड़ा, ऊँट, बैल आदि होकर मनुष्यों का भार ढोकर सेवा-रूप में ऋण चुकाते हैं और नाना प्रकार के कष्ट उठाते हैं।

परमात्मा की इस न्यायपूर्ण सृष्टि में ऋण-भार रोकने की कोई आवश्यकता नहीं है। मनुष्य को संसार का ऋण यदि इस जीवन में नहीं तो अगले जीवन में किसी-न-किसी रूप में दण्ड के साथ ही चुकाना होगा। गधा, घोड़ा, बैल, ऊँट आदि जिन जानवरों को मनुष्यों की सेवा में मरते-खपते देखा जाता है, उन्हें उस जन्म के वे ही व्यक्ति समझना चाहिये, जो समाज का ऋण चुकाए बिना संसार से चले गये थे। इसलिये बुद्धिमानी इसी में है कि जिस ऋण को चुकाये बिना निस्तार नहीं, उसे क्यों न इसी जीवन में हँसी-खुशी के साथ चुका दिया जाये।

फिर मानव-जीवन का मात्र उद्देश्य इतना ही तो नहीं है कि खाने-कमाने और मौज-मजा लेने में ही उसे समाप्त कर दिया जाये। जहाँ उस पर पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उत्तदायित्वों का भार होता है, वहाँ अपनी आत्मा का उद्धार करने का सबसे बड़ा कर्त्तव्य भी उसके कन्धों पर है। यह मानव-जीवन ही एक ऐसा अवसर है जिसका सदुपयोग कर मनुष्य अपने आत्मोद्धार के महान् एवं पुनीत कर्त्तव्य को पूरा कर सकता है। यदि वह इस स्वर्ण अवसर को वासना-तृष्णा की विभीषिका में पड़कर चूक जाता है तो चौरासी लाख का वक्र उसे न जाने कब तक पूरा करना पड़े और कब उसे दुबारा यह अवसर मिले। इसके विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। जो मनुष्य तनिक भी विवेकशील होगा वह इस मानव-जीवन के महत्त्व और इसको गँवा देने की हानि समझकर अपने कर्त्तव्यपूर्ण करने में तत्काल तत्पर हो उठेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपना सांसारिक तथा आत्मिक उभय प्रकार का दायित्व सुचारु एवं सुविधापूर्ण निभाने का सबसे सरल, एवं समीचीन उपाय यही है कि मनुष्य अपने जीवन का पूर्वार्ध सांसारिक कर्त्तव्यों में लगाये और उत्तरार्ध संसार की सेवा करने में लगाये। इससे उसका लोक भी बनेगा और परलोक भी। ऋण से उऋण होकर बन्धन से छूट जायेगा।

अधिकतर लोग जीवन के उत्तरार्ध अर्थात् वानप्रस्थ अवस्था में आकर भजन-पूजन तथा जप-तप को ही आत्मोद्धार का साधन मान लेते हैं और इसी पूजा-पाठ को ही वानप्रस्थ का प्रयोजन ही समझते हैं। वानप्रस्थ के लिये जप-तप, पूजा-पाठ, आत्मसंयम एवं मानसिक सन्तुलन के लिये आवश्यक है, किन्तु यह उस आश्रम का एकमात्र ध्येय अथवा प्रयोजन नहीं है। वानप्रस्थ का मुख्य धर्म सेवा-धर्म ही है।

जीवन के उत्तरार्ध में वानप्रस्थ लेकर समाज से अलग-थलग होकर केवल पूजा-पाठ अथवा जप-तप करते रहने से सम्भव है। कोई आत्मोद्धार की दिशा में थोड़ा बहुत बढ़ जाये, किन्तु सेवा-कार्यों के बिना पूर्णरूपेण कृत्कृत्य हो सकना सम्भाव्य नहीं समझ पड़ता। व्यक्तिगत पूजापाठ करते रहने से संसार अथवा समाज के उस ऋण से उऋण होने की सम्भावना नहीं रहती जो जीवन के पूर्वार्ध में सिर पर चढ़ जाता है। वह ऋण तो समाज सेवा द्वारा ही शोधन किया जा सकता है।

जहाँ व्यक्तिगत पूजा-पाठ में समाज सेवा का समावेश नहीं रहता, वहाँ समाज-सेवा में जनता-जनार्दन की परिचर्या करने, विश्व-विराट की संराधना करने में भजन-पूजन का भाव सन्निहित रहता है। भजन शब्द 'भज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ सेवा ही होता है। जिस विधान में सेवा सम्मिलित नहीं, वह न तो पूजा है और न आराधना। वानप्रस्थ आश्रम का मूल प्रयोजन भी समाज-सेवा ही है। विषय-वासनाओं एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व से मुक्त होकर ही कोई मनुष्य निःस्वार्थ भाव से समाज-संराधना के कार्यक्रमों में योगदान कर सकता है। यदि समाज की रखवाली करने वाले उसे ठीक दिशा दिखलाने और दुष्प्रवृत्तियों से सावधान करने वाले अनुभवी व्यक्ति आगे न बढ़ते रहें तो निश्चय ही मानव-समाज कुछ ही समय में भयानक रूप से पतित हो जाये और ऐसी अवस्था में मनुष्य की क्या दशा हो जाये, कुछ नहीं कहा जा सकता। निस्पृह, निःस्वार्थ, निष्काम, अनुभवी एवं परितृप्त व्यक्ति ही समाज की रखवाली ठीक तरह से कर सकते हैं और ऐसे साधु पुरुष वे वानप्रस्थी ही हो सकते हैं, जो पारिवारिक उत्तरदायित्व से मुक्त होकर उस अवस्था में आ गये हैं, जिसमें वितृष्णाओं की कमी हो जाती है और वे किसी रूप में शोभा भी नहीं देतीं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि वानप्रस्थी अर्थात् जनमन में ज्ञानज्योति जलाने वाले परिव्राजक राष्ट्र के प्राण, मानव जाति के शुभचिंतक एवं देवस्वरूप होते हैं। जिस देश का परिव्राजक जीवित रहता है—घर-घर में जाकर वेद सन्देश सुनाता है, जन मन में जागरण का सन्देश सुनाता है, मानवता के शत्रुओं को सदाचारी ज्ञान निष्ठ बनाता है, वह राष्ट्र, वह जाति, वह समाज भाग्यवान होता है। उसके कदम प्रगति, उन्नति एवं उत्थान की ओर अग्रसर हो उठते हैं। मृत प्रायः जाति में दिव्य चेतना का संचार हो उठता है। उदाहरणार्थ भारत के वैदिक युग महाभारत एवं रामायण काल को देखें। उस समय सच्चे परिव्राजकों ने आर्य जाति को, इस पुण्यमयी ऋषि भूमि को सब तरह से उन्नति एवं विकास की ओर अग्रसर किया, जिसके फलस्वरूप संसार में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ।

वानप्रस्थी या परिव्राजक बनने के लिए मुख्यतया निम्न बातों की आवश्यकता है, जिन्हें अपना कर स्वयं का एवं मानव जाति का कल्याण किया जा सकता है—

(१) कर्त्तव्यनिष्ठा

परिव्राजक का कर्त्तव्यनिष्ठ होना प्रथम व्रत है। इसलिए तपश्चर्या और त्याग की आवश्यकता है। अपने जीवन को यम, नियम साधना, सेवाकार्य आदि तपश्चर्याओं से तपातपा कर विशुद्ध बना लेना आवश्यक है, क्योंकि जो स्वयं तपा हुआ नहीं है, वह दूसरे को क्या तपा सकता है ? जिसका स्वयं का जीवन व्यवहार आदि आदर्शपूर्ण नहीं है, वह दूसरे को कैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभावित कर सकता है और अपनी छाप छोड़ सकता है। यह ध्रुव सत्य है कि कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के शब्द जो ही दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। हमारे ऋषि महर्षि आदि कर्त्तव्यनिष्ठ थे। यही कारण है कि आज भी उनकी वाणी अज्ञानी को ज्ञान प्रकाश, अशक्त को महान् शक्ति, दुराचारी और अनैतिक लोगों को सदाचार और नैतिकता, ईश्वर दर्शनाभिलाषियों को ईशदर्शन प्रदान करती है। कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के शब्द अन्तर्रात्मा निकले होते हैं, जो विपरीत व्यक्ति पर भी सफल प्रभाव डालते हैं इसे ही सिद्धि-महापुरुषों का चमत्कार कहते हैं।

जीवननिष्ठा के साथ-साथ परिव्राजक में त्यागवृत्ति होना अत्यावश्यक है। उसके हृदय में यह भावना प्रतिध्वनित होनी चाहिए कि "मैं ईश्वरीय आदेशों को जन मन में उतारने के लिए उसका एक माध्यम बनकर आया हूँ।" ईश्वर ने मेरा कार्य "देना ही देना" बताया है और वह भी सद्ज्ञान, इसके बदले में मुझे संसार से बहुत ही कम जीवन निर्वाह की सामग्री मात्र लेनी है। जब तक यह भाव पैदा नहीं होता और इसके प्रति निष्ठा नहीं होती, तब तक परिव्राजक का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता। परिव्राजक के लिए अपने पवित्र उद्देश्य की पूर्ति कर्त्तव्य पालन के लिए सर्वस्व यहाँ तक कि अपने शरीर को त्याग देने के लिए तैयार रहना चाहिए। यही महान् वीर परिव्राजक के त्याग की कसौटी है। वही वीर परिव्राजक जन जागरण ज्ञान प्रचार जनकल्याण आदि कार्यों के उद्देश्यों को पूर्ण कर सकता है, जिसने त्याग को ही जीवन की कसौटी बनाया है। वही विश्व में नव चेतना फूँक सकता है। त्यागहीन जीवन इस ओर कुछ नहीं कर सकता।

परिव्राजक को इस त्याग पथ पर अग्रसर होने के साथ-साथ अपने कर्त्तव्य पालन के बदले कीर्ति, यश, नामवरी या अन्य किसी प्रकार की कामना होना स्वर्णघट में विष भरे होने के सदृश्य ही है, जिसे सभी लोग घृणा की दृष्टि से देखेंगे और दूर हट जायेंगे। अतः इनसे भी दूर रहना चाहिए।

(२) योग्यता वृद्धि

धर्म प्रचारक को जीवन भर विद्यार्थी का जीवन व्यतीत करना चाहिए। ज्ञान-विज्ञान की साधना को निरन्तर जारी रखना चाहिए। जब तक परिव्राजक का ज्ञान परिपूर्ण रूप से नहीं होता तो वह दूसरों में ज्ञान प्रकाश भली प्रकार पैदा नहीं कर सकता। ज्ञान प्राप्ति और बुद्धि बल के विकास के लिए जीवन भर विद्याध्ययन और साधना अत्यावश्यक है। अपने कर्त्तव्य धर्म का पालन करते हुए भी उक्त दोनों क्रम योग्यता वृद्धि के लिए चलते रहने चाहिए।

(३) दृढ़ता और साहस

परिव्राजक का जीवन एक क्रान्तिकारी का जीवन होता है, जिसमें वह ज्ञान प्रकाश, वेदवाणी, नैतिकता, सदाचार, जन जागरण की प्रतिष्ठापना करता है और विरोधी एवं दूषित तत्व अनैतिकता, असभ्यता, अज्ञानान्धकार मुर्दनी को समाप्त करता है। मानवजीवन में नवीन प्राण का संचार करता है। इस महान् क्रान्तिकारी उद्देश्य में विघ्न- बाधाओं, रुकावटों, कठिनाइयों एवं विरोधी तत्त्वों का सबल आक्रमण होना भी सम्भव है, किन्तु इनसे लोहा लेकर अपने पवित्र एवं महान् उद्देश्य की और बढ़ने वाला परिव्राजक अदम्य उत्साह एवं अचल दृढ़ता से ही सफल हो सकता है। जहाँ पर अपने उद्देश्य के लिए कष्ट सहिष्णुता, दुःख, पेरशानियों को सहर्ष झेलने की क्षमता नहीं, वहाँ उपरोक्त गुणों से सम्पन्न होते हुए भी परिव्राजक जीवन का उद्देश्य सफल होना असम्भव है। हिन्दू धर्म के लिए कई ऋषियों, ब्राह्मणों, परिव्राजकों को राक्षसों का आहार बनना पड़ा, मौत के घाट उतरना पड़ा। बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए लाखों करोड़ों बौद्ध भिक्षु विदेशों में काट दिए गये, कईयों ने दलदलों में, नालों में, बीमारियों में फँसकर प्राण त्याग दिये कि उनके उत्साह और दृढ़ता में तथा लगनशीलता ने एशिया के बहुत बड़े भाग में बौद्ध धर्म का विस्तार किया। गत दो सौ वर्षों से ईसाई मिशनरियाँ किस प्रकार कठोर गर्मी, सर्दी लू, भूख प्यास, परेशानियाँ, विरोध आदि को सहन करती हुई दृढ़ता और साहस के साथ विश्व में ईसाई धर्म प्रचार का कार्य कर रही हैं। अतः परिव्राजक के जीवन में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अदम्य उत्साह, दृढ़ता और लगनशीलता की आवश्यकता है।

उक्त बातों के साथ-साथ साधु को संसार की निन्दा स्तुति की भी परवाह नहीं करनी चाहिए। जो निन्दा स्तुति की चिन्ता करेगा, वह परिव्राजक के महान् उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकता। विरोधी तत्त्वों द्वारा उत्पन्न निन्दा, किंवदन्तियाँ आदि उसके कदम को रोक देंगी।

परिव्राजक की महानता, उद्देश्य और आवश्यक बातों को अपनाकर जो व्यक्ति इस ओर बढ़ता है, वह न केवल स्वयं का ही वरन् अपने कुटम्ब, समाज देश तथा मानव मात्र का कल्याण करता है।

खेद है भारत भूमि जो विश्व के लिए परिव्राजकों की केन्द्र भूमि थी, जिसके निवासियों का जीवन इस महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता था आज वह परिव्राजकों से रहित होती जा रही है। विश्व की बात तो दूर रही स्वयं भारतीय जाति के लिए आज सच्चे परिव्राजकों की संख्या बहुत ही अल्प है। आज देश एवं जाति की इस महान् आवश्यकता की पूर्ति के लिए राष्ट्र उन महान् आत्माओं का आह्वान कर रहा है, भारत माता उन सपूतों की ओर आँखें लगाकर देख ही है, जो परिव्राजक धर्म स्वीकार कर यहाँ पुनः वैदिक युग की स्वर्ण झाँकी को साकार करे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज हमारे देश को सच्चे, परिव्राजकों, धर्मसेवकों, धर्म प्रचारकों की अत्यन्त आवश्यकता है जो घर-घर जाकर नैतिकता, सदाचार, धार्मिकता, नवजागरण संगठन का सन्देश सुनायेंगे। इस आवश्यकता पूर्ति के लिए सेवापरायण, त्यागी, तपस्वी आत्माओं को तैयार होना आवश्यक है ताकि यह राष्ट्र पुनः उठ सके और उन्नति के शिखर पर पहुँच सके। भारतीय जाति नव चेतना, नव प्राण लेकर जाग उठे। इनमें संगठन हो, शक्ति हो, सामर्थ्य हो सम्पन्नता हो यही आज की सर्वोपरि आवश्यकता है।

कार्य पद्धति की रूपरेखा

किसी जमाने में वानप्रस्थ लोग वनों में रहते थे। उस जमाने में वनों में कन्दमूल, फल इतने अधिक थे कि जीवन निर्वाह की व्यवस्था गाँव, नगरों की अपेक्षा अधिक सरलता से हो जाती थी। अब कहीं कोई ऐसा जंगल ही नहीं रहा, इसलिए निर्वाह की सुविधा गाँव-नगरों के माध्यम से ही जुटानी पड़ती है। अतएव निवास का प्रबन्ध भी वैसा ही करना उचित है। प्राचीनकाल में वानप्रस्थी पीत वस्त्र धारण करके ऋषियों के गुरुकुलों में छात्रों की तरह ही स्वाध्याय करते थे। बच्चों की पढ़ाई और बूढ़ों की पढ़ाई में अन्तर तो होता है, पर रीति एक ही है। वानप्रस्थों को अपना मानसिक विकास करने के लिए स्वाध्याय की अनिवार्य आवश्यकता रहती है। प्राचीनकाल में वानप्रस्थ संयम की दृष्टि से ब्रह्मचर्य और आहार के सम्बन्ध में पूरी कड़ाई बरतते थे। आज की परिस्थिति में इतनी ढील रखी जा सकती है कि इन्द्रियों का संयम अधिकाधिक सावधानी से किया जाय। हर ऐसा कोई व्रत न लिया जाय जो टूट जाय तो आत्मग्लानि में जलना पड़े। उपासना का द्वार गृहस्थ और विरक्त सबके लिए समान रूप से खुला है। गृहस्थी की उपासना बहुत थोड़ी चल पाती है और अनियमित भी हो जाती है, वानप्रस्थ इस सम्बन्ध में अधिक तत्परता बरतेगा उनकी साधना संकल्पपूर्वक, नियमित एवं व्यवस्थित चलनी चाहिए। समय भी अपेक्षाकृत अधिक लगाना चाहिए। चौथा काम सेवा का है। वयोवृद्ध वानप्रस्थों को जनमानस का स्तर ऊँचा उठाने, जनता में सद्भावना एवं सत्प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करने के लिए सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप रचनात्मक कार्यक्रम बनाने चाहिए और उन्हें पूरा करने के लिए उसी तरह उत्साह से लगा रहना चाहिए जैसे कि गृहस्थ में धन उपार्जन के लिए तत्परता बरती जाती है। वानप्रस्थ का प्रतीक पीत वस्त्र है। सारे वस्त्र पीले न हों तो एक दुपट्टा या रूमाल पीले रंग का अपने पास एक धार्मिक वर्दी की तरह रखा जा सकता है। उपर्युक्त क्रम में यदि अपना जीवन क्रम ढाल लिया जाय, तो समझना चाहिए कि वानप्रस्थ की तैयारी एवं व्यवस्था पूर्ण हो गई।

उपर्युक्त प्रकार की सुविधा जो जुटा सकते हैं, उन्हें पचास वर्ष की आयु के बाद वानप्रस्थ लेना चाहिए। जिनके पास पहिले से ही पारिवारिक गुजारे की व्यवस्था बनाने के लिए पैतृक सम्पत्ति मौजूद है या जिसके बाल-बच्चे हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही नहीं वे किसी भी आयु में वानप्रस्थ ले सकते हैं। उन्हें एक ही बात का ध्यान रखना होगा कि वानप्रस्थ के उपरान्त सन्तानोत्पादन न करें।

धर्म और संस्कृति का प्राण

वानप्रस्थ संस्कार भारतीय धर्म और संस्कृति का प्राण है। जीवन को ठीक तरह जीने की समस्या उसी से हल हो जाती है। युवावस्था के कुसंस्कारों का शमन एवं प्रायश्चित इसी साधना द्वारा होता है। जिस देश, धर्म, जाति तथा समाज में उत्पन्न हुए हैं, उनकी सेवा करने का ऋण-मुक्त होने का अवसर भी इसी स्थिति में मिलता है। इसीलिए जिन भी नर-नारियों की स्थिति इसके लिए उपयुक्त हो, उन्हें वानप्रस्थ लेना चाहिए। एक प्रतिज्ञा-बन्धन में बँध जाने पर व्यक्ति अपने जीवनक्रम को तदनुरूप ढालने में अधिक सफल होता है। बिना संस्कार कराये मनोभूमि पर वैसी छाप गहराई तक नहीं पड़ती। इसलिए कदम कभी आगे, बढ़ते, कभी पीछे हटते रहते हैं। विवाह न होने तक प्रेमिका का सहचरत्व संदिग्ध रहता है, पर जब विवाह हो गया तो सब कुछ स्थायी एवं सुनिश्चित हो जाता है। संस्कार के बिना पारमार्थिक भावनाओं का उफान कभी शिथिल या समाप्त भी हो सकता है, पर यदि विधिवत् संस्कार कराया गया तो अन्तःप्रेरणा तथा लोक-लज्जा दोनों ही निर्धारित गति-विधि अपनाये रहने की प्रेरणा देती रहेंगी। इसलिए शास्त्र मर्यादा के अनुरूप जिन्हें सुविधा हो वे विधिवत् संस्कार करा लें, जिन्हें सुविधा न हो वे बिना संस्कार के भी उपर्युक्त प्रकार की रीति-नीति अपनाने के लिए यथा सम्भव प्रयत्न करते रहें।

सुसंस्कार का सृजन

वृद्धावस्था में जो संस्कार जगते हैं, वे ही मरणोत्तर जीवन में साथ जाते हैं, इसलिए इस अवधि में उत्कृष्ट विचारों को मस्तिष्क में भरे रहने और उत्कृष्ट गतिविधियाँ अपनाये रहने का प्रयत्न करना चाहिए। विचार और कर्म दोनों के सम्मिलन से ही संस्कार बनते हैं और यह संस्कार ही प्राणी के साथ जाते हैं। विचारों की उत्कृष्टता अर्जित करने के लिए शास्त्रों का स्वाध्याय नितान्त आवश्यक है। इस अध्ययन की पुष्टि तब होती है, जब उसे दूसरों को भी सुनाया जाय। जिस प्रकार पढ़ने और लिखने की दोनों क्रियायें मिलने पर पढ़ाई का पूरा क्रम बनता है, केवल पढ़ते ही रहें, लिखें नहीं, तो साक्षरता अधूरी रहेगी। इसी प्रकार स्वाध्याय तो करें, पर उसे किसी को सुनावें नहीं तो वह अध्ययन भी ठीक तरह हृदयंगम न हो सकेगा। ज्ञान अर्जन और ज्ञान दान दोनों ही वानप्रस्थी के आवश्यक कर्त्तव्य हैं। उपासना भी उसी प्रकार उभय पक्षीय है। भगवान् का भजन, ध्यान, पूजन, जप, कीर्तन एक पक्ष है। दूसरा पक्ष विश्व-मानव के विराट ब्रह्म के मूर्तिमान स्वरूप संसार की रचनात्मक सेवा करने से, विचार और कार्य का समन्वय होने से भजन में समग्रता आती है। जो केवल माला फेरते हैं, सेवा करवाते हैं, उनका भजन वैसा ही है जैसा कि रोटी तो खाना पर पानी न पीना। आहार-विहार का संयम शारीरिक, मानसिक स्वस्थता की दृष्टि से आवश्यक है। इन्द्रिय निग्रह की तपश्चर्या से मनुष्य की भावनात्मक प्रवृत्तियों का मोड़ वासन-तृष्णा से हटकर परमार्थ प्रयोजनों की ओर प्रवाहित होता है। यह सारी विधि-व्यवस्था ऐसी है, जिससे वयोवृद्ध व्यक्ति अपनी अन्तःचेतना को उस मार्ग पर विकसित करते हैं, जिस पर चलते हुए मरणोत्तर जीवन में रक्षा सुख-शान्ति को प्राप्त कर सकना सरल हो जाता है।

लोक शिक्षण की आवश्यकता

इस गतिविधि को अपनाने से समाज की भी भारी सेवा होती है। प्राचीनकाल में लोक निर्माण की सारी गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों के संचालन का उत्तरदायित्व साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थों पर ही था। वे अपनी सारी शक्तियाँ परमार्थ भावना से प्रेरित होकर जन-मानस को सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त किये रहने में लगाये रहते थे। फलस्वरूप चारों ओर धर्म, कर्त्तव्य, सदाचार का ही वातावरण बना रहता था। वयोवृद्ध, अनुभवी, परमार्थ परायण लोकसेवियों का प्रभाव जन-साधारण पर स्वभावतः बहुत गहरा पड़ता है। टिकाऊ भी होता है। ऐसे लोग जन नेतृत्व करने के लिए जब धर्म तंत्र का उचित उपयोग करते थे तो सारे समाज में सत्प्रवृत्तियों के लिए उत्साह उमड़ पड़ता था। शिक्षा, स्वास्थ्य,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सदाचार, न्याय, विवेक, वैभव, शासन, विज्ञान, सुरक्षा, व्यवस्था आदि सभी क्षेत्रों में यह वयोवृद्ध लोग ही नेतृत्व करते थे। इतने अधिक अनुभवी और धर्म परायण व्यक्तियों की निःशुल्क सेवा जिस देश या समाज को उपलब्ध होती हो उसको संसार का मुकुटमणि होना ही चाहिए। प्राचीनकाल में ऐसी ही स्थिति थी। आज वानप्रस्थ की परम्परा नष्ट हुई, बूढ़े लोगों को लोभ-मोह के बन्धनों में ही ग्रसित रहना प्रिय लगा तो फिर देश का पतन अवश्यम्भावी था, हुआ भी, हो भी रहा है।

यह पुण्य परम्परा पुनः सजीव हो

प्रयत्न यह किया जाना चाहिए कि समाज में पूर्वकाल की भाँति यह प्रथा प्रचलित हो कि हर ढलती आयु का व्यक्ति वानप्रस्थ लेकर पारमार्थिक जीवन जिए और समाज द्वारा विविध विधि प्राप्त हुई, सुख-सुविधाओं का ऋण वृद्धावस्था में समाज सेवा का व्रत लेकर चुकाये। अपना परलोक सुधारे, जीवन सार्थक करे और संसार को सुरम्य बनाने में समुचित योगदान करे।

जिन्हें आश्रम व्यवस्था का पालन करने की महत्ता पर विश्वास हो उन्हें ढलती आयु में वानप्रस्थ लेने की तैयारी करनी चाहिए। निर्धारित तिथि पर वैसी ही आवश्यक व्यवस्था कर ली जाय जैसी कि अन्य संस्कारों के समय होती है। मण्डप, यज्ञवेदी, देवस्थापना, पूजा उपकरण सभी को शुद्ध, स्वच्छ और आकर्षक विधि व्यवस्था के साथ यथासमय एकत्रित कर लिया जाय। पति-पत्नी यदि दोनों ही उपयुक्त व्रत धारण करना चाहते हों तो दोनों ही अन्यथा जो भी लेना चाहें वह उस दिन धारण करने के लिए पीत वस्त्रों का प्रबन्ध कर लें।

दस स्नान

यज्ञशाला से कुछ दूर दस स्नानों की व्यवस्था करनी चाहिए। चौकी पर नहाने के लिए यजमान को बिठाया जाय। कई बाल्टी पानी भर के रख लिया जाय। इन दस स्नानों में (१) भस्म (२) मिट्टी (३) गोमूत्र (४) गोबर (५) गोदुग्ध (६) गोदधि (७) गोघृत (८) सर्वौषधि (हल्दी) (९) कुशा (१०) मधु। यह दस वस्तुयें मँगाकर रख ली जायें। क्रमशः एक-एक वस्तु से स्नान कराया जाय। भस्म स्नान करते समय बाईं हथेली पर भस्म रखें, उसमें थोड़ा पानी डालें। दोनों हथेलियों से उसे मिलाएँ। मिलाते समय निर्धारित मंत्र बोलें। फिर बाँये हाथ से कमर के नीचे के अंगों पर और दायें हाथ से कमर के ऊपर के अंगों पर उसे लेपन करें। इसके बाद स्वच्छ जल से स्नान कर डालें। इसी प्रकार अन्य दश वस्तुओं से स्नान करें। अधिक शीत हो, शरीर दुर्बल हो और बार-बार का स्नान कठिन पड़े तो सब वस्तुओं को एक बार मिलाकर भी स्नान किया जा सकता है या गरम पानी लिया जा सकता है। दशों स्नानों के मंत्र पढ़े जायें। इसके पश्चात् अन्तिम बार शुद्ध जल से स्नान कर शरीर को भली प्रकार पोंछकर पीले वस्त्र धारण करें। उन वस्त्रों के धारण का मन्त्र **'ॐ सूर्यो चक्षुर्वातः . . . . . "** है। स्नान कराते और वस्त्र पहनाते समय सभी लोग मिलकर मंत्रोच्चार करें।

यह दस स्नान अब तक के किए हुए पापों का प्रायश्चित करने तथा अभिनव जीवन में प्रवेश करने के लिए है। जिस प्रकार साँप अपनी केंचुली छोड़कर नई त्वचा के साथ नई स्फूर्ति, नई चेतना प्राप्त करता है, उसी प्रकार दश स्नानों से पिछले ढर्रे को समाप्त करके भावी जीवन की उत्कृष्ट रीति-नीति अपनाने का व्रत लिया जाता है।

भावना और प्रेरणा

(१) भस्म स्नान की भावना यह है कि यह शरीर भस्मास्त है। कभी भी सम्भावित मृत्यु को स्मरण रखते हुए भावी मरणोत्तर जीवन के लिए तैयारी आरम्भ की जा रही है। (२) मिट्टी से स्नान का मतलब है कि जिस मातृभूमि का असीम ऋण अपने ऊपर है, उससे उऋण होने के लिए देश-भक्ति का, मातृभूमि की सेवा का व्रत ग्रहण किया जा रहा है। (३) गोबर से स्नान का तात्पर्य है कि गोबर की तरह शरीर खाद बनकर संसार को फलने-फूलने के लिए उत्सर्ग करना। (४) गोमूत्र क्षार प्रधान रहने से मलीनता नाशक माना गया है। साबुन की तरह सफाई करता है और रोग कीटाणुओं को नष्ट करता है। गोमूत्र से स्नान करते समय शारीरिक और मानसिक दोष-दुर्गुणों को हटाकर भीतरी और बाहरी स्वच्छता की नीति हृदयंगम करनी चाहिए। (५) दुग्ध स्नान में जीवन को दूध जैसा धुला,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सफेद, निर्मल, उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा है। (६) दधि स्नान का अर्थ—नियंत्रित होना, दूध पतला होने से इधर-उधर ढुलता है, पर दही गाढ़ा होकर स्थिर बन जाता है। पिछला जीवन चंचलता और लालसाओं से इधर-उधर भले ही ढुलता रहा हो, पर अब अपनी रीति-नीति दही के समान स्थिर, प्रगाढ़ नियोजित रहनी है। (७) घृत स्नान की भावना है—चिकनाई। जीवन क्रम को चिकना सरल बनाना। घृत को स्नेह भी कहते हैं। जीवन में प्यार की प्रचुरता रखे रहना। (८) सर्वोषधि (हरिद्रा) स्नान का अर्थ है—अवांछनीय तत्वों से संघर्ष। हल्दी रोग कीटाणुओं का नाश करती है। शरीर, मन तथा व्यवहार में जो दोष दुर्गुण हों, समाज में जो विकृतियाँ दीखें उनसे संघर्ष करने के लिए तत्पर होना। (९) कुशाओं के स्पर्श का अर्थ है—तीक्ष्णतायुक्त रहना। (१०) मधु स्नान का अर्थ है—समग्र मिठास। सज्जनता, सौजन्य, सेवा, करुणा, शिष्टाचार, मधुर, भाषण आदि सबको प्रिय लगने वाले सद्गुणों का अभ्यास। दस स्नानों का कृत्य वेद मन्त्रों के साथ सम्पन्न करने से दिव्य प्रभाव पड़ता है। साथ ही उनके साथ जो प्रेरणा समाविष्ट है, उसको हृदयंगम किया जाय तो भी आन्तरिक उत्कर्ष में बड़ी सहायता मिलती है।

दस स्नान करने, पीत वस्त्र धारण कराने के उपरान्त वानप्रस्थ लेने वाले संस्कार वेदी पर बुलाते हैं। **'भद्रं कर्णेभिः'** मन्त्र से उसे स्थान देते हैं। इसके बाद पवित्रीकरण, आचमन, शिखा बन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन, यज्ञोपवीत धारण, पुराना यज्ञोपवीत उतारना, आचार्य वरण, आचार्य तिलक, यजमान वरण, यजमान तिलक, संकल्प, पंचामृत मिलाना उपयोग में आने वाली वस्तुओं का शुद्धिकरण, मार्जन, दीप पूजन, कलश पूजन, देव पूजन, नमस्कार, षोडशोपचार पूजन, चन्दन धारण, स्वस्तिवाचन रक्षा विधान तक सारे कार्य गायत्री हवन विधि के अनुरूप करने चाहिए। इसके पश्चात् वानप्रस्थों का अभिषेक किया जाता है। ५४ घड़ों में या लोटों में जल भरकर कलश तैयार किये जाते हैं। उनके कण्ठ में कलावा बाँध देते हैं। मुख पर आम्रपल्लव रखते हैं। अभिसिंचन करने के लिए कुशाएँ अथवा पुष्प गुच्छ उसमें डाल देते हैं। २४ सम्भ्रान्त व्यक्ति इन कलशों को बायें हाथ पर रखकर यजमान के दायें-बायें और पीछे खड़े हो जाते हैं। **"ॐ शुद्ध वाल . . . . . "** इस मंत्र का सामूहिक उच्चारण करते हुए जल के छींटे दिये जाते हैं।

अभिषेक की अभिव्यंजना

अभिषेक कृत्य ठीक उसी तरह का है जैसा कि किसी राजा को राजगद्दी देते समय राज्याभिषेक किया जाता है। राज दरबारी लोगों के संरक्षण में राज्याभिषेक होता है। प्रजाजनों और धर्म संरक्षकों के द्वारा, वानप्रस्थ का धर्माभिषेक किया जाता है। यह पद भी राजा के समान ही गौरव और महत्त्व का है। राजा अपनी प्रजा की सुरक्षा एवं साधन व्यवस्था के भौतिक उपकरण जुटाता है, इसलिए उसे प्रजापालक कहकर सम्मानित किया जाता है। वानप्रस्थ प्रजा की आत्मिक सुरक्षा, सुव्यवस्था एवं सुख-शान्ति के उपकरण जुटाता है। उसे सन्मार्ग पर चलने की, सद्भावनाओं से ओत-प्रोत रहने की सत्प्रेरणायें प्रदान करता है। यह अनुदान भौतिक सभी सुविधा-साधनों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। राजा केवल एक सीमित प्रदेश में रहने वाली प्रजा की भौतिक सुरक्षा के लिए ही उत्तरदायी है, पर वानप्रस्थ के कन्धों पर संसार के समस्त मानवों, प्राणियों के लिए न्याय एवं धर्म का प्रकाश उपलब्ध कराने का भार है। भौतिक सुरक्षा की तुलना में आत्मिक प्रगति का मूल्य महत्त्व असंख्य गुना बड़ा है। इसी प्रकार एक सीमित क्षेत्र में रहने वाली प्रजा के साज-सँभाल की तुलना में समस्त विश्व के प्राणियों को सत्प्रेरणा देना कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। अतएव राजा की तुलना में धर्मसेवी महात्मा का, वानप्रस्थ का पद तथा गौरव भी अत्यधिक है। उसको अपना उत्तरदायित्व पूरी सावधानी से तथा जिम्मेदारी से निभाना है, इसी भावना को हृदयंगम कराने के लिए यह अभिषेक क्रिया की जाती है।

समाज के सम्भ्रान्त धर्मसेवी एवं विचारशील २४ व्यक्ति जो यह अभिषेक करने खड़े हुए हैं, समस्त समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। जल से वानप्रस्थ का अभिसिंचन करते हुए, वे लोग समाज की ओर से नई भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अभिषेक की भावना

प्रथम भावना उनके शुभ संकल्प का अभिनन्दन करने की है। वानप्रस्थ लेना जहाँ अपनी आत्मा का उद्धार करना है, वहाँ उस उद्धार साधना के कार्यक्रमों में समाज निर्माण की क्रिया पद्धति अनिवार्य रूप से जुड़ी होने के कारण समस्त संसार का भी उसमें महान् हित साधन सन्निहित है। अमीर लोग अन्न, जल, वस्त्र, औषधि, धन आदि देकर किसी निर्धन, रोगी आदि का भौतिक दुःख थोड़ी देर के लिए दूर कर सकते हैं। किसी के जीवन को स्थाई रूप से सुखी बनाने की सामर्थ्य किसी दानी में नहीं, पर ज्ञान दान देने वाले भावनात्मक प्रेरणायें प्रदान करने वाले धर्मसेवियों के द्वारा सर्वसाधारण को जो प्रकाश मिलता है, उससे उन्हें चिरस्थायी और सच्चे सुख का लाभ मिलता है। वानप्रस्थों का यह अनुदान समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसलिए ऐसे धर्म सेवियों को सच्चा दानी कहा जाता है। जिस समाज के कल्याण के लिए वानप्रस्थ ने त्याग और बलिदान भरे कदम उठाने का साहस किया है, उस समाज का भी कर्त्तव्य है कि इस उदारता के बदले में कृतज्ञता प्रगट करे। यह अभिसिंचन इस प्रकार की कृतज्ञता भरी लोक भावना की अभिव्यक्ति है, जिसे यह चौबीस व्यक्ति जल छिड़कते हुए प्रगट करते हैं।

द्वितीय अभिव्यक्ति संसार के समस्त विचारशील और धर्म प्रेमी लोगों की ओर से, महात्माओं और देवताओं की ओर से उस सत्संकल्प के सफल होने का आशीर्वाद देने की है। सन्मार्ग में चलते हुए मनुष्य की आन्तरिक दुर्बलताएँ बार-बार बाधक बनकर सामने आती हैं। सेवा धर्म अपनाने में व्यक्तिगत भौतिक लाभ तो मिलता नहीं, उलटे असुविधाएँ सहनी पड़ती हैं। कभी-कभी तिरस्कृत भी होना पड़ता है। एक ओर एक रूखा मार्ग दूसरी ओर संसार के विविध-विधि प्रलोभन-इस कुचक्र में फँसा हुआ व्यक्ति व्रत लेकर भी पीछे हट जाता है। जो उत्साह उठा था, वह कुछ दिन में ठण्डा हो जाता है और पहले की तरह ही स्वार्थसिक्त जीवन जीने लगता है। व्रत लेने की बात को भुला देता है। अनेक व्यक्ति इसी प्रकार पथभ्रष्ट होते रहते हैं। लोभ, मोह के कुसंस्कार उन्हें आ दबोचते हैं। फलस्वरूप बाहर से साधु-ब्राह्मण का कलेवर पहने रहने पर भी, वानप्रस्थी होते हुए भी—चित्त को वैसे ही गोरखधन्धे में उलझाये रहते हैं। यही इस पथ की सबसे बड़ी बाधा है। इसे ही यज्ञ में असुरता का आक्रमण कहा जाता है। बाहर की बाधायें तो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं, पर आन्तरिक दुर्बलतायें सारा व्रत, संकल्प चौपट करके रख देती हैं। आलस्य और संकोच में पड़कर सेवा-धर्म से कतराने की कमजोरी सामने आ खड़ी होती है और फिर कहने भर का निर्जीव, निष्क्रिय वानप्रस्थ ही शेष रह जाता है। यही इस मार्ग की पथभ्रष्टता है। यह विघ्न, आसुरी, आक्रमण वस्तुतः वानप्रस्थी के जीवन यज्ञ को असफल न कर दे, उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए आशीर्वाद लिया जाता है कि वह इस कठिन मंजिल को दृढ़तापूर्वक पार करने की सामर्थ्य प्राप्त कर ले।

तीसरी अभिव्यक्ति व्यक्तित्व की अशुद्धता घोषित करने की है। मनुष्य का पिछला जीवन कितना ही कलुषित क्यों न रहा हो, पर यदि वह सच्चे मन से आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण एवं आत्मविकास के पथ पर संकल्पपूर्वक अग्रसर हो रहा है और लोक सेवा की गंगा में स्नान करके अपना बाह्य एवं आन्तरिक जीवन निर्मल बनाने के पथ पर पड़ा है तो पिछले जीवन में हुई भूलों के कारण अब उसे अविश्वस्त, अपवित्र मानने की आवश्यकता नहीं रही। अब उसे सन्तों की पंक्ति में ही गिना तथा बिठाया जाना है। वाल्मीकि, अंगुलिमाल, जैसे डाकू, सूर, तुलसी जैसे कामी, गणिका, गीध, अजामिल जैसे पतित जब सच्चे मन से धर्म की शरण में आने के उपरान्त पवित्र गिने जा सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि अन्य व्यक्तियों के लिए वह रास्ता खुला न रहे। पिछले जीवन में कितना ही कलुषित क्यों न रहा, पर जब वह ईश्वर-प्रेम की, सेवा-धर्म की, आत्म-शुद्धि की भावनाओं से ओत-प्रोत होता है, तो उसकी पवित्रतता में कोई सन्देह नहीं रह जाता। २४ व्यक्ति जल अभिसिंचन करते हुए उस व्यक्ति की पवित्रता घोषित करते हैं और कहते हैं कि पिछली किसी बुरी दिनचर्या से अब इस व्यक्ति का कोई सम्बन्ध न जोड़ा जाय, इसके लिए निन्दा, भर्त्सना की चर्चा न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की जाय। आज से उसे पवित्र सन्तों की श्रेणी में गिना जाय। साथ ही वानप्रस्थ पर भी यह उत्तरदायित्व सौंपा जाता है कि वह भावी जीवन में अपनी प्रमाणिकता एवं उत्कृष्टता में किसी प्रकार की त्रुटि न आने दे।

चौथी अभिव्यक्ति अशुभ-अनिष्टों की शान्ति की है। किसी बाहरी व्यक्ति या शक्ति के द्वारा अनिष्ट किया जाय तो उसका मुकाबला आसानी से किया जा सकता है, पर जब आन्तरिक शत्रु ही अपना विनाश करने उठ खड़े होते हैं, तब उनसे रक्षा व्यवस्था करनी कठिन हो जाती है। आलस्य और प्रमाद, लोभ और मोह, आवेश और उद्वेग, तृष्णा और वासना, काम और क्रोध जैसे आन्तरिक शत्रुओं की प्रबलता होने पर हर व्यक्ति हर मोर्चे पर हारता है और अपना भविष्य अन्धकारमय बना लेता है। परमार्थ पथ पर चलने वालों के लिए वित्तेषणा की प्रबलता हो तो परमार्थ पथ अपना लेने पर भी वे लालच में डूबे रहते हैं। लोभी व्यक्ति एक प्रकार का व्यापारी है, जो धर्म को भी एक धन्धा बनाकर अपने और अपने आदर्श को बदनाम करता है।

पुत्रेषणा प्रबल रहे, तो लोक-सेवा के मार्ग में जन-सम्पर्क के अवसर आते हैं, उनमें भ्रष्टाचार उत्पन्न कर सकता है, दूसरों की बहू-बेटियों को कुमार्गगामी बना सकता है। इसी प्रकार यदि लोकेषणा की प्रबलता हो तो उसका सारा ध्यान मान-प्रतिष्ठा पर रहता है। जहाँ यश और सम्मान मिले, वहाँ पहुँचने को लालायित रहता है। मान-सम्मान में कमी आए तो क्षुब्ध होता है। सेवा के स्थान, पुण्य, परमार्थ जैसे आदर्श तो गौण बन जाते हैं, पद-प्रतिष्ठा को प्राथमिकता मिल जाती है। ऐसा लोक-सेवी दो कौड़ी का ही सिद्ध होता है। वह जिस संस्था, संगठन या क्षेत्र में जाता है, वहीं यश की आपाधापी में ऐसे कौतुक रचता है, जिससे घृणा, क्षोभ, असन्तोष उबल पड़ते हैं और मूल उद्देश्य को भारी क्षति पहुँचती है। आजकल पद लोलुपता ने भी सभी संस्था संगठनों को बुरी तरह चौपट कर रखा है। इस तरह के मनोविकारों से बचना परमार्थ पथ के पथिकों के लिए नितांत आवश्यक है। इनकी शान्ति के लिए, समाप्ति के लिए यह अभिसिंचन किया जाता है। मानव मन में कुहराम मचाने वाले ये उद्वेग शान्त हो जायें तो वानप्रस्थ सेवा की सही रीति-नीति अपनाकर लक्ष्य प्राप्ति के लिए तेजी से आगे बढ़ चले, यह कामना रखते हुए यह विश्व मानव का प्रतिनिधि मण्डल कलशों द्वारा यजमान का अभिसिंचन करता है।

अभिषेक कराते समय वानप्रस्थ को इन भावनाओं पर नेत्र बन्द कर ध्यान करते रहना चाहिए। इस संस्कार के बाद कन्धों पर आये हुए उत्तरदायित्वों को समझना चाहिए और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उसे इतनी सामर्थ्य दे कि मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को परास्त करते हुए वह धैर्य, साहस और विवेक का सम्बल लेकर अपने व्रत पूर्ति में संलग्न रह सके।

मेखला और कोपीन

अभिसिंचन के उपरान्त वानप्रस्थ के हाथों में धर्मदण्ड और मेखला कोपीन का उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। दण्ड धारण करने का मन्त्र **'ॐ यो मे दण्डः न ....'** एवं कोपीन मेखला धारण का मंत्र **'ॐ इयं दुरुक्तं .....'** है।

कोपीन धारण करने का अर्थ है—इन्द्रिय संयम बरतना।

वानप्रस्थ को सन्तानोत्पादन बन्द कर देना चाहिए। अब तक की उत्पन्न हुई सन्तान का पालन-पोषण, विकास-निर्माण ठीक तरह हो जाय तो बहुत है। पचास वर्ष की आयु के बाद बच्चे पैदा करते रहना तो एक लज्जा की बात है, उससे कठिनाई बढ़ती है। बच्चे दुबले पैदा होते हैं। अनाथ रह जाते हैं तथा उनकी जिम्मेदारी मरते समय तक बनी रहने से समाज सेवा, परमार्थ साधना जैसे जीवन को सार्थक बनाने वाले प्रयोजनों के लिए अवसर ही नहीं मिलता, जिसके पीछे जितनी कम घरेलू जिम्मेदारी है, वह उतना ही अच्छी तरह वृद्धावस्था का सदुपयोग कर सकेगा। फिर जिसने वानप्रस्थ धारण किया तो उसके लिए सन्तानोत्पादन एक विसंगति ही है। इसलिए उसे इस प्रकार की मर्यादाओं का पालन करने के लिए इन्द्रिय संयम का मार्ग अपनाना पड़ता है। वानप्रस्थी उसे धारण करता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मेखला

कमर में रस्सी बाँधना, कोपीन धारण के लिए तो आवश्यक है ही साथ वह सैनिकों की तरह कमर कसकर, पेटी बाँधकर, परमार्थ के मोर्चे पर आगे बढ़ने की मनःस्थिति का भी प्रतीक है। कमर कसना-मुस्तैदी, सतर्कता, तत्परता, निरालस्यता जैसे शारीरिक एवं मानसिक स्थिति बनाये रखने का भाव-प्रतीक है। वानप्रस्थी को वैसा ही रहना चाहिए। आत्म-कल्याण और लोक-निर्माण के दो मोर्चों पर एक साथ लड़ने वाले सैनिक को जिस सतर्कता से कार्य करना होता है वैसा ही उसे करना चाहिए।

धर्म दण्ड का धारण

वानप्रस्थी को हाथ में लाठी दी जाती है। गुरुकुलों में विद्याध्ययन करने वालों को वन्य प्रदेश की आवश्यकता के अनुरूप लाठी सुविधा की दृष्टि से आवश्यक होती थी। इसके अतिरिक्त यह धर्म दण्ड इस मंतव्य का भी प्रतीक है कि राजा जिस तरह राज्याभिषेक के समय शासन-सत्ता का प्रतीक राज-दण्ड, छोटा लकड़ी का दण्डा हाथ में विधिवत् समारोह के साथ ग्रहण करता है, उसी प्रकार वानप्रस्थी संसार में धर्म व्यवस्था कायम रखने की अपनी जिम्मेदारी को हर घड़ी स्मरण रखे रहे और तदनुरूप अपना जीवन-धर्म बनाये रहे, इसलिए भी यह धर्म दण्ड है। धर्म के मार्ग पर चलते हुए अनेक अभाव कष्टों का , लांछन, तिरस्कारों का सामना करना पड़ता है। उन कठिनाइयों को स्वेच्छा से स्वीकार की हुई प्रतीक्षा के रूप में स्वीकार किया जाता है और यह समझ जाता है कि यह प्रतीक्षारूपी तपस्यारूपी धर्म-दण्ड है। कष्टों को आमतौर से किसी अपराध का दण्ड मानते हैं। स्वार्थी संकीर्ण लोगों की दृष्टि में धर्म-मार्ग पर चलना यदि मूर्खता या अपराध हो तो उसका दण्ड सहने का साहस भी अपने में बनाने के लिए वानप्रस्थी धर्मदण्ड साथ में रखते हैं और बताते हैं कि सन्मार्ग पर चलने वाले को धर्म-दण्ड, धर्म-धक्के सहने का भी साहस करना पड़ता है और वह खुशी-खुशी सहन स्वीकार करने के लिए यह धर्म-दण्ड हाथ में ग्रहण करता है।

धर्म-दण्ड हाथ में लेकर वानप्रस्थी को समाज में धर्म-आस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए प्राणपत्र से प्रयत्न करना चाहिए। साधना, स्वाध्याय, संयम के आवश्यक नित्य कर्म करने के उपरान्त जैसे पहले आजीविका उपार्जन के लिए दिन भर श्रम करते थे वैसे ही अब लोकमंगल के लिए, समाज में सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। जैसे कोई ग्वालिया लाठी लेकर अपनी गाय-भैंसों को, भेड़-बकरियों को चराता है, उसी तरह वानप्रस्थी को, समस्त जनता को धर्म का चारा खिलाने के लिए उचित स्थान पर चरने की व्यवस्था के लिए लाठी लेकर घूमना चाहिए। वानप्रस्थी वस्तुतः समाज की धर्म-रक्षा का एक जिम्मेदार प्रहरी है। प्रहरी के हाथ में कुछ तो शस्त्र रहता ही है। इस शस्त्र की आवश्यकता पूर्ति उसे इस भावना मिश्रित धर्म-दण्ड को धारण करते हुए करनी होती है।

शेष क्रिया-कृत्य

खीर की पाँच आहुतियों से वानप्रस्थी को अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र और इन्द्र को साक्षी देकर यह प्रतिज्ञा करनी पड़ती है कि वह व्रतशील होकर रहेगा। साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा के चतुर्विध धर्म-कर्त्तव्यों में ही अपना शेष जीवन व्यतीत करेगा। इसके उपरान्त हाथ में पुष्प, अक्षत्, जल लेकर वह संकल्प करता है, संकल्प की सार्वजनिक घोषणा करता है कि आज से मैंने वानप्रस्थ व्रत ग्रहण कर लिया। अब मैं अपना या परिवार का न रहकर समस्त समाज का बन गया। मेरा जीवन सार्वजनिक सम्पत्ति समझा जाय। उसे अपने परिवार वालों के लाभ के लिए नहीं वरन् विश्व-मानव के लाभ की, आवश्यकता पूर्ति का ध्यान रखते हुए जिया जायेगा।

इसके पश्चात् अग्नि स्थापन, गायत्री स्तवन, अग्नि-प्रदीपन, समिधादान, जल प्रसेचन, आज्याहुति, स्विष्टकृत, पूर्णाहुति, वसोर्धारा, आरती, घृत अवघ्राण, भस्म धारण, क्षमा-प्रार्थना, साष्टांग नमस्कार, शुभकामना, अभिसिंचन, प्रदक्षिणा, विसर्जन, सूर्यार्घ्य आदि कार्य पूरे किये जाते हैं। वानप्रस्थ धारण करने वाले के ऊपर अक्षत्-पुष्पों की वर्षा करते हुए, उपस्थित लोग आशीर्वाद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वचन बोलते हैं। **"स्वस्ति न इन्द्रो"** मन्त्र से आशीर्वाद दिया जाता है। आचार्य उसे मंगलफल देते हुए विदा करते हैं।

ब्रह्मविद्या की शिक्षा और आवश्यक तपश्चर्या

गृहस्थ से वानप्रस्थ की कार्य पद्धति एवं विचारधारा में काफी अन्तर आता रहता है। अब तक के ढर्रे को बदलकर नया ढर्रा अपनाना काफी कठिन पड़ता है। इसलिए इस परिवर्तन के अनुरूप अभ्यास बनाने के लिए कुछ दिन घर से बाहर किसी ऐसे स्थान पर रहने की आवश्यकता होती है, जहाँ संकल्प के अनुरूप स्वभाव एवं अभ्यास बनाने में सुविधा हो। प्राचीन काल में लोग वानप्रस्थ लेकर वन में निवास करने चले जाते थे और जिस तरह छोटे विद्यार्थी भौतिक जीवन में काम आने वाली अर्थकारी विद्या पढ़ते हैं, उसी प्रकार वानप्रस्थों को आत्म-कल्याण एवं लोक-मंगल के उपयुक्त मनोभूमि विकसित करने के लिए ब्रह्म-विद्या पढ़नी होती थी। वन में रहते हुए ऋषियों के पास इस अवधि में वानप्रस्थी लोग बह्म-विद्या पढ़ते और जीवन साधना को सुव्यवस्थित बनाने का अभ्यास करते थे। अब भी किसी न किसी रूप में उस परिपाटी का उपयोग किया जाना चाहिए। यदि ऐसा न किया गया तो वानप्रस्थ-संस्कार भी एक लकीर पीटना मात्र बनकर रह जायेगा। आजकल होता भी ऐसा ही है। संस्कार तो करा लिया, पर ढर्रा वह पुराना ही रखा। वही पहले जैसे घर-गृहस्थी के गोरख-धन्धे में फँसे रहते हैं। भावनाओं का निर्माण ही नहीं हुआ तो एक घण्टे का संस्कार वैसी प्रेरणा कहाँ से देगा। कई व्यक्ति वानप्रस्थ लेकर नदी, पर्वतों की तलाश करते हैं और कुटिया बनाकर एकाकी रहने में शान्ति की खोज करते हैं। वे भूल जाते हैं कि शान्ति स्थानों में नहीं ज्ञान और कर्म में सन्निहित है। जहाँ न कोई ज्ञान के साधन, न कर्म के, ऐसे एकान्त में रहकर किसी को कुछ भी नहीं मिल सकता। उलटे सक्रियता छूट जाने से आलस्य-अर्कमण्यता का तमोगुण पल्ले बँध जाता है। निरुद्योगी जीवन एक प्रकार से मानवता का तिरस्कार ही है।

समाज के ऋण को चुकाने, मनुष्य शरीर के बनाने में ईश्वर ने जो अनुपम कारीगरी दिखाई है, उसे सार्थक करने और आत्म-कल्याण का लक्ष्य साधने के लिए वानप्रस्थ साधना आवश्यक है। सेवा-धर्म को अपनाये बिना, किसी मानव शरीरधारी को शान्ति नहीं मिल सकती। जिस प्रकार भौतिक जगत की सुख-सुविधा के लिए घर उपार्जन आवश्यक है, उसी प्रकार आध्यात्मिक समृद्धि के लिए सेवा का पुण्य संचय भी आवश्यक है। 'पुण्य' का महत्त्व और सुखदायक प्रतिफल शास्त्रों में पग-पग पर वर्णन किया गया है। यह 'पुण्य' पण्डितों का दान करने या तीर्थ-स्नान करने से नहीं, मानव-जाति की विवेकपूर्ण निस्पृह सेवा करने से ही उपलब्ध हो सकता है। कहना न होगा कि जितने भी दान-पुण्य हैं, उनमें ज्ञान दान का, ब्रह्म-दान का महत्त्व सर्वोपरि है। सद्ज्ञान के अभाव से ही मानव-समाज दिग्भ्रान्त होकर भ्रम-जंजालों में फँसा विविध-विध कष्ट पा रहा है। यदि अज्ञान से छुटकारा मिल जाय, मनुष्य सही मार्ग पर चलने लगे, सही ढंग से विचार करने लगे तो उसका नारकीय जीवन स्वर्गीय सुख-शान्ति में परिणत हो सकता है। वानप्रस्थ संस्कार का प्रयोजन मनुष्य को इसी महान् प्रयोजन में संलग्न होने की प्रेरणा देता है।

वानप्रस्थ के उद्देश्य और शिक्षा

जीवनस्य चतुर्थांशं परमार्थे नियोजयेत्।
वैराग्यं विषयात्कृत्वा लोभ-मोहौ परित्यजेत्।। १।।

जीवन का चतुर्थांश परमार्थ में व्यतीत करे। विषम से वैराग्य की ओर अग्रसर होकर लोभ ओर मोह को त्याग दें।

अनासक्तेः सुकर्त्तव्ये ममता बन्धनं स्वयम्।
कृत्वा परिणतं युक्त्या स्वाध्याय निरतो भवेत्।। २।।
सत्संगे चात्मसंलग्नो भवेत् सार्थक जीवनः।
गृहस्योत्तरदायित्वं प्रहृष्टमनसा श्रियेत्।। ३।।

ममता के बन्धन को अनासक्त कर्त्तव्य में परिणित कर स्वयं स्वाध्याय, सत्संग उसी प्रकार आत्मचिन्तन में संलग्न होवे।

स्कन्धयारुत्तरे स्वस्य योग्याधिकारणः शनैः।
मनसः वासना तृष्णे, द्वेष दुर्भावने तथा।। ४।।
दूरीकृत्य भवेल्लग्नः साधनोपासनादिषु।
निरतो लोकसेवायां स्वेन्द्रियाणि नियन्त्रयेत्।। ५।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथा घर का उत्तरदायित्व प्रसन्नचित्त से अपने योग्य उत्तराधिकारी के कन्धों पर डाल दे।

मन में वासना, तृष्णा, द्वेष दुर्भाव दूर कर अपनी साधना उपासना आदि में संलग्न होवे। लोक-सेवा में तत्पर होता हुआ अपनी इन्द्रियों का नियन्त्रण करे।

सदाध्यात्मिक सम्पत्तिः सञ्चयेल्लोकसेवया।
समयस्य विशिष्टांशं शुभकार्ये नियोजयेत्।। ६।।
विश्वं मत्वाऽऽत्मरूपं यत् शिक्षकवद् गृहाद्बहिः।
जीवनस्यास्य साफल्यं वैराग्योपरि तिष्ठिति।। ७।।

सदैव आध्यात्मिक सम्पत्ति को लोक सेवा से संचित करे। विश्व को आत्मस्वरूप मानकर शिक्षक की भाँति घर से बाहर समय का विशिष्टांश शुभ कार्य में लगाए। क्योंकि इस जीवन की सफलता निःस्वार्थ भाव पर निर्भर है।

यद्यपि सर्वलोकेभ्यः विरक्ते सश्रमः स्मृतः।
सन्यासस्तु स्मृतस्तस्मै विदुषे ब्रह्मज्ञानिने।। ८।।

यद्यपि सभी व्यक्तियों के लिये विरक्त आश्रम कहा गया है किन्तु संन्यास उन विरक्तों से ही लेना चाहिए जो विद्वान ब्रह्म परायण हों।

वानप्रस्थ संस्कार—विधि

विशेष व्यवस्था—वानप्रस्थ संस्कार जितने व्यक्तियों का हो उनके लिए समुचित आसन तैयार रखे जाएँ। वानप्रस्थ परम्परा को महत्त्व देने की दृष्टि से उनके लिए सुसज्जित मंच बनाया जा सके तो बनाना चाहिए। पूजन-अर्चन की सामान्य सामग्री के साथ-साथ संस्कार के लिए प्रयुक्त विशेष वस्तुओं को पहले से देख-सँभाल लेना चाहिए। उनका विवरण इस प्रकार है—

(१) वानप्रस्थों को पीले रंग के वस्त्रों में पहले से तैयार रखना चाहिए।

(२) पंचगव्य एक पात्र में पहले से तैयार रहे।

(३) संस्कार कराने वाले जितने व्यक्ति हों उतने (१) पीले यज्ञोपवीत (२) पचगव्य पान कराने केलिए छोटी कटोरियाँ (३) मेखला-कोपीन (कमरबन्द सहित लंगोटी) (४) धर्मदण्ड (हाथ में लेने योग्य गोल डण्डा) रूल (५) पीले दुपट्टे तैयार रखे जावें।

(४) ऋषि पूजन के लिए सात कुशायें एक साथ बँधी हुई।

(५) वेद पूजन के लिए कोई पवित्र पुस्तक पीले कपड़े में लपेटी हुई।

(६) यज्ञ पुरुष पूजन के लिए कलावा लपेटा हुआ नारियल या गिरी का गोला।

(७) अभिषेक के लिए स्वच्छ लोटे या कलश एक जैसे, कम से कम ५ अधिक २४ तक हों तो अच्छा है। अभिषेक के लिए कन्याएँ अथवा सम्माननीय साधकों को पहले से निश्चित कर लेना चाहिए।

(८) विधिवत् स्नान करके, पीत वस्त्र पहनाकर वानप्रस्थ लेने वालों को संस्कार-स्थल पर लाया जाय। प्रवेश एवं आसन ग्रहण के समय अक्षत वृष्टि के साथ मंगलाचरण बोला जाय।

(९) सबके यथास्थान बैठ जाने पर नपे-तुले शब्दों में संस्कार का महत्त्व तथा उसके महान् उत्तरदायित्वों पर सबका ध्यान दिलाकर भावनापूर्वक कर्मकाण्ड प्रारम्भ कराएँ।

दस स्नान

वानप्रस्थ संस्कार के लिए यज्ञ मण्डप में आने से पूर्व दस-स्नान करना और पीले वस्त्र धारण करना आवश्यक है। दस स्नान करने और पीत वस्त्र धारण करने के मंत्र नीचे दिये जाते हैं।

निम्न मंत्र बोलते हुए क्रमशः दस स्नान करावें।

भस्म स्नान

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सꣳ सृज्य मातृभिष्ट्व ज्योतिष्मान्पुनराऽसदः।। १।।

मृतिका स्नान

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा।। २।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गोमय स्नान

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोपुमा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।। ३।।

गोमूत्र स्नान

ॐ तत्सर्वितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। ४।।

दुग्ध स्नान

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णयम्। भवा वाजस्य संगथे।। ५।।

दधि स्नान

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्राणऽआयूꣳषि तारिषत्।। ६।।

घृत स्नान

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा-पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

सर्वौषधि स्नान

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन् पारयामसि।।७।।

कुशोदक स्नान

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रियै दधामि बृहस्पतेष्ट्व साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।। ६।।

शहद स्नान

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषपो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ ॐ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। १०।।

पीत वस्त्र धारण

धोती, कुर्ता, दुपट्टा यह तीन वस्त्र निम्न मन्त्र बोलते हुये पहनावें।

सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणोऽन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम्। अस्तृततो नामाहमयमस्मि स आत्मानं निदधे द्यावापृथिवीभ्यां गोपीथाय।। ११।।

विशेष कर्मकाण्ड

—प्रारम्भ में षट्कर्म के बाद ही संकल्प करा दिया जाए। तिलक और रक्षा सूत्र बन्धन के उपचार करा दिये जाएँ।

—समय की सीमा का ध्यान रखते हुए सामान्य प्रकरण पूजन आदि का समुचित विस्तार संक्षेप में किया जाए।

—रक्षा विधान के बाद विशेष कर्मकाण्ड नीचे दिये गये क्रम से कराये जाए।

संकल्प

दिशा एवं प्रेरणा—साधक हाथ में पुष्प, अक्षत, जल लेकर संकल्प करता है। संकल्प की सार्वजनिक घोषणा करता है कि आज से मैंने वानप्रस्थ व्रत ग्रहण कर लिया। अब मैं अपना या अपने परिवार का न रहकर समस्त समाज का बन गया । मेरा जीवन सार्वजनिक सम्पत्ति समझा जाये, उसे अपने या परिवार वालों के लाभ के लिए नहीं, वरन् विश्व मानस के लाभ का आवश्यकता-पूर्ति का ध्यान रखते हुए माना जाए।

क्रिया और भावना—संकल्प के लिए अक्षत, जल, पुष्प हाथ में दिये जायें। भावना करें कि देव संस्कृति के मेरुदण्ड वानप्रस्थ जीवन का शुभारम्भ करने के लिए अपने अन्तरंग और अन्तरिक्ष की देवशक्तियों से सहयोग की विनय करते हुए साहस भरी घोषणा कर रहे हैं।

संकल्प

ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... गोत्रोत्पनः ..... अद्यनामाऽहं स्वजीवनं व्यक्तिगतं न मत्वा सम्पूर्णसमाजस्यैतदिति ज्ञात्वा च, संयम स्वाध्यायोपासनेषु विशेषतश्च लोकसेवायां निरन्तरं मनसा वाचा कर्मणा च संलग्नो भविष्यामीति संकल्पमहं करिष्ये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञोपवीत परिवर्तन

नये जीवन की ओर पहला कदम त्याग, पवित्रता, तेजस्विता एवं परमार्थ के प्रतीक, यज्ञीय जीवन के व्रतबन्ध यज्ञोपवीत का नवीनीकरण किया जाता है।

यज्ञोपवीत का सिंचन करके पाँच देव शक्तियों के आह्वान, स्थापन के उपरान्त उसे धारण कर लिया जाता है, पुराना उतार दिया जाता है। यह क्रम यज्ञोपवीत संस्कार प्रकरण में दिया गया है। सुविधा की दुष्टि से मन्त्रादि यहाँ भी दिये जा रहे हैं।

यज्ञोपवीत सिंचन

निम्न मन्त्र बोलते हुए यज्ञोपवीत पर जल छिड़कें, पवित्र करें, नमस्कार करें।

ॐ प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं
कार्पास सूत्रोद्भव ब्रह्मसूत्रम्।
ब्रह्मत्वसिद्ध्यै च यशः प्रकाशं।
जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम।।

पंचदेवावाहन

निम्न मन्त्रों के साथ यज्ञोपवीत में विभिन्न देवताओं का आह्वान करें और प्रणाम करें।

(१) ब्रह्मा—ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्याऽउपमा ऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। ॐ ब्रह्मणे नमः।। —यजु० १३/३

(२) विष्णु—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः। —यजु० ५/१५

(३) शिव—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। ॐ रुद्राय नमः। —यजु० १६/१

यज्ञोपवीत खोल लें। दोनों हाथों की कनिष्ठा और अँगूठे से फँसाकर सीने की सीध में करें, फिर यज्ञ भगवान् का आह्वान मन्त्र बोलते हुए यज्ञ पूजन करें।

(४) यज्ञ पुरुष—ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। —यजु. ३१/१६

फिर दोनों हाथ ऊपर उठाकर सूर्य भगवान् का आह्वान करें।

(५) सूर्य—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ सूर्याय नमः।
—यजु ३३/४३

यज्ञोपवीत धारण

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। —पार० गृ० सू० २/२/११

पुराना यज्ञोपवतीत उतारना

ॐ एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

पंचगव्यपान

शिक्षण और प्रेरणा—पंचगव्य का पान पिछले जीवन में हुई भूलों के प्रायश्चित्य के लिए कराया जाता है। मैल हटे तो रंग चढ़े। दोषों की स्वीकारोक्ति, उनसे सम्बन्ध विच्छेद, जो प्रवृत्तियाँ इस ओर ले जाती हैं, उनका नियमन, भूलों से हुई हानियों को पूरा करने, साहस भरा शुभारम्भ यह सब मिलकर प्रायश्चित्य कर्म पूरे होते हैं। प्रायश्चित्य से शुद्ध चित्त पर देव अनुग्रह सहज ही बरस पड़ते हैं।

क्रिया और भावना—पंचगव्य की कटोरी बायें हाथ में लें और दाहिने हाथ की मध्यमा उँगली से मन्त्रोच्चार के साथ उसे घोलें-चलावें भावना करें कि इन गौ द्रव्यों को दिव्य चेतना से अभिमन्त्रित कर रहे हैं।

गोदुग्धं गोमयं क्षीरं दधि सर्प्पिः कुशोदकम्।
निर्दिष्टं पंचगव्यं तु पवित्रं मुनिपुंगवैः।।

प्रथम मन्त्र की समाप्ति पर कटोरी दाहिने हाथ में लेकर मन्त्रोचार के साथ पान करें। भावना करें कि दिव्य संस्कारों से पापों की जड़ पर प्रहार और पुण्यों को उभारने का क्रम आरम्भ हो रहा है, जो निष्ठापूर्वक चलाया जाता रहेगा।

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽदित्या नाममृतस्य नाभिः। प्रनु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।।
—ऋ० ८/१०१/१५ तै० आ० ६/१२/१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेखला-कोपीन धारण

शिक्षण एवं प्रेरणा—अभिसिंचन के उपरान्त वानप्रस्थ के हाथों में धर्मदण्ड और मेखला-कोपीन का उत्तरदायित्व सौंपा जाता है।

क्रिया और भावना—मेखला-कोपीन हाथों के सम्पुट में ली जाय। मन्त्रोच्चार के साथ भावना की जाय कि तत्परता, सक्रियता तथा संयमशीलता का वरण किया जा रहा है। मन्त्र पूरा होने पर कमर में बाँधे या धोती के साथ खोंस लें।

ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमानां वर्ण पवित्रं पुनतीमऽआगात्। प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम्।

—पा० ग० सू० २/२/१६

धर्मदण्ड धारणम्

शिक्षण एवं प्रेरणा—कोपीन या मेखला धारण के पश्चात् वानप्रस्थी के हाथ में एक ब्रह्मदण्ड दिया जाता है, जो धर्मदण्ड का प्रतीक है। यह इसलिए दिया जाता है ताकि वह धर्म-व्यवस्था कायम रखने के अपने उत्तरदायित्व को सतत् याद रखें और उसके अनुरूप अपने आचरण, व्यवहार एवं जीवनक्रम को बनाये रखे।

क्रिया और भावना—दण्ड दोनों हाथों से पकड़ें। भूमि के समानान्तर हृदय की सीध में स्थिर करें। मन्त्र पूरा होने पर मस्तक से लगायें और दाहिनी ओर रख लें। भावना करें कि धर्म चेतना को जीवन्त, व्यवस्थित एवं अनुशासित रखने का महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व स्वीकार किया जा रहा है। इसके साथ दिव्य शक्तियाँ ब्रह्मणत्व और ब्रह्मवर्चस् प्रदान कर रही हैं।

ॐ यो मे दण्डः परापतद्धैहायसोऽधिभूम्याम।
तमहं पुनराददे आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।।

—पा० गृ० सू० २/२/१२

पीतवस्त्र धारण

शिक्षण एवं प्रेरणा—पीत-वस्त्र वीरों और त्यागियों, परमार्थ परायणों का बाना कहा गया है। अज्ञान, अभाव एवं अनीति से संघर्ष करने के लिए विचारशील को संत, सुधारक और शहीदों की भूमिका निभाने की तैयारी करनी पड़ती है। संस्कृति की प्रतिष्ठा, उसके सनातन गौरव की रक्षा के लिए वही रंग प्रेरणा देता रहा है।

क्रिया और भावना—दोनों हाथों की हथेलियाँ सीधी करके दुपट्टा लें। मन्त्र के साथ ध्यान करें कि सत्-शक्तियों से पवित्रता, शौर्य और त्याग का संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। मन्त्र पूरा होने पर दुपट्टा कन्धों पर धारण कर लें।

ॐ सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणोन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम्। अस्तृतो नामाहमयमस्मि स आत्मानं निदधे द्यावापृथिवीभ्यां गोपीथाय।। —अथर्व ५/६/७

ऋषि पूजन

शिक्षण एवं प्रेरणा—सांस्कृतिक चेतना को जागृत-जीवन्त रखने, जीवन के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों की शोध और उनका लाभ जन-जन तक ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए समर्पित पवित्र और तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी उन महामानवों की परम्परा के अनुगमन, आत्म-कल्याण और लोकमंगल दोनों दृष्टियों से अनिवार्य है, उनके अनुगमन के शुभारम्भ के रूप में पूजन किया जाता है।

क्रिया और भावना—हाथ में पुष्प-अक्षत् लेकर ऋषियों का ध्यान कर मंत्रोच्चारण के साथ भावना करें कि हम भी उन्हीं की परिपाटी के व्यक्ति हैं, उनके गौरव के अनुरूप बनने के लिए अपने पुरुषार्थ के साथ उनके अन्नगृह को जोड़ रहे हैं, उसे पाकर अन्याय उन्मूलन के मौर्चे को सुदृढ़ बनायेंगे।

ॐ इमावेव गोतम-भरद्वाजावयमेव गोतमोऽयंभरद्वाजऽइमावेव विश्वामित्रो जमदग्नी-अयमेव विश्वामित्रो जमदग्निरिमावेव वसिष्ठ-कश्यपावयमेव वसिष्ठोऽयं कश्यपो वागेवात्रिर्वाचा ह्येन्नमश्नुतेतिर्हं वै नामैतद्यदत्रिरितिसर्वं स्यात्ताभवति सर्वयस्यान्नं भवति य एवद।।

ॐ सप्तऋषी नभ्यावर्ते। ते मे द्रविणं यच्छन्तु ते मे ब्राह्मण वर्चसम्। —अथर्व १०/५/३६

ॐ ऋषिभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

वेद पूजन

शिक्षण एवं प्रेरणा—वेद कहते हैं ज्ञान को अज्ञान हजार दुःखों का कारण है। ज्ञान सद्विचार की स्थापना से ही समाज को सुख-सद्गति मिलना सम्भव है। स्वयं ज्ञान की आराधना करने जन-जन को उसमें लगाने का भाव वेद पूजन के साथ रहता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रिया और भावना—पूजन सामग्री हाथ में लें। मन्त्रोच्चार के साथ भावना करें कि ज्ञान की सनातन धारा के वर्तमान युग के अनुरूप प्रवाह को अपने लिए, सारे समाज के लिए, पतित पावनी गंगा की तरह प्रवाहित करने के लिए अपनी भूमिका निर्धारित की जा रही है। अज्ञान का निवारण इसी से सम्भव होगा।

ॐ वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः। देवा गातुविदो गातुंवित्त्वा गातुमित्त्। मनसस्पतऽइमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः।। ॐ वेदपुरुषाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।।

—यजु० २/२१

यज्ञपुरुष पूजन

शिक्षण एवं प्रेरणा—यज्ञ देवत्व का आधार है। इसी से देव शक्तियाँ कल्याणकारी प्रवृत्तियाँ पुष्ट होती हैं। यज्ञीय भावना के आधार पर ही व्यक्ति और समाज अभावों से मुक्त होगा, अन्यथा कुबेर जैसी सम्पदा प्राप्त कर लेने के बाद भी शोषण, उत्पीड़न और कंगाली का वातावरण बना रहेगा। यज्ञीय भावना, यज्ञीय दर्शन और यज्ञीय जीवन क्रम अपनाने-फैलाने का संकल्प यज्ञ पूजन के साथ जुड़ा रहेगा।

क्रिया और भावना—पूजन सामग्री हाथ में ले। मन्त्र के साथ भावना करें कि धर्म और देवत्व के प्रमुख आधार को अंगीकार करते हुए उसे पुष्ट और प्रभावशाली बनाया जा रहा है।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नांक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। —यजु. ३१/१६

ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

व्रतधारण

शिक्षण एवं प्रेरणा—महानता की मंजिल पर मनुष्य एकाएक नहीं पहुँच जाता, उसके लिए एक-एक करके सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। श्रेष्ठ प्रवृत्तियाँ, आचरण एवं स्वभाव बनाने के लिए व्रतशील होकर चलना पड़ता है। छोटे ही सही, व्रत लेने, उन्हें पूरा करने फिर नये व्रत लेने का क्रम विकास के लिए अनिवार्य है।

व्रतशीलता के लिए कुछ देव शक्तियों को साक्षी करके व्रतशील बनने की घोषणा की जाती है। उन्हें अपना प्रेरक, निरीक्षक और नियंत्रक बनाना पड़ता है। सम्बन्धित देव शक्तियों की प्रेरणायें इस प्रकार हैं—

अग्निदेव—ऊर्जा के प्रतीक। ऊर्जा, स्फुरणा, गर्मी, प्रकाश से भरे पूरे रहने, अन्यों तक उसे फैलाने, दूसरों को अपना जैसा बनाने, ऊर्ध्वगामी आदर्शनिष्ठ रहने, यज्ञीय चेतना के वाहन बनने की प्रेरणा के स्रोत।

वायुदेव—स्वयं प्राणरूप, किन्तु बिना अहंकार सबके पास स्वयं पहुँचते हैं। कोई स्थान खाली नहीं छोड़ते, निरन्तर गतिशील सुगन्धित और मेघों जैसे परोपकारी तत्त्वों के विस्तारक सहायक।

सूर्यदेव—जीवनी शक्ति के निर्झर तमनिवारक, जागृति के प्रतीक, पृथ्वी को सन्तुलन और प्राण अनुदान से धन्य बनाने वाले, स्वयं प्रकाशित, सविता देवता।

चन्द्रदेव—स्वप्रकाशित नहीं, पर सूर्य का ताप स्वयं सहन करके निर्मल प्रकाश जगती पर फैलाने वाले, तप अपने हिस्से में—उपलब्धियाँ सब के लिए।

इन्द्रदेव—व्रतों में व्रतपति, देवों में प्रमुख, देव प्रवृत्तियों शक्तियों को संगठित-सशक्त बनाये रखने के लिए सतत् जागरूक, हजारों आँखों से सतर्क रहने की प्रेरणा देने वाले।

क्रिया और भावना—साधक मन्त्रोच्चार के समय दोनों हाथ ऊपर उठाकर रखें। भावना करें कि हाथ उठाकर व्रतशीलता की साहसिक घोषणा कर रहे हैं, साथ ही सत्प्रवृत्तियों को अपना हाथ थमा रहे हैं। वे हमें मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं सहारा देती रहेंगी। एक देवता का मन्त्र पूरा होने पर हाथ जोड़कर नमस्कार करें फिर पहले जैसी मुद्रा बना लें।

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि। ॐ अग्नये नमः।।१।।

ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यममुपैमि। ॐ वायवे नमः।।२।।

ॐ सूर्यो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्युपैमि। ॐ सूर्याय नमः।।३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि। ॐ चन्द्राय नमः।।४।।

ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि। ॐ इन्द्राय नमः।।५।। —मन्त्र ब्रह्मण

अभिषेक

शिक्षण एवं प्रेरणा—जिस तरह किसी राजा को राजगद्दी देते समय उसका राज्याभिषेक किया जाता है और वह अपनी प्रजा की सुरक्षा एवं पालन-पोषण की व्यवस्था जुटाता है, उसी तरह वानप्रस्थी समस्त विश्व के मनुष्यों के लिए आत्मिक, सुरक्षा, सुव्यवस्था एवं सुख-शान्ति के साधन जुटाता है। उसका काम न्याय एवं धर्म की सत्प्रेरणायें उभारना है। अपने इस उत्तरदायित्व को वह जिम्मेदारीपूर्वक निभाता रहे, यही अभिषेक का उद्देश्य है।

अभिषेक करने के लिए समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले २४ संभ्रान्त, धर्मसेवी एवं विचारशील लोग खड़े होते हैं। जल से वानप्रस्थी अभिसिंचन करते हुए लोग समाज की ओर से नई भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं।

क्रिया और भावना—निर्धारित मात्रा में कन्यायें या संस्कारवान् व्यक्ति कलश लेकर मन्त्रोच्चार के साथ साधकों का अभिषेक करें। भावना करें कि ईश्वरी ऋषिकल्प जीवन के अनुरूप स्थापनाओं, बीजरूप प्रवृत्तियों को सींचा जा रहा है, समय पाकर वे फलें-फूलेंगी। जीवन के श्रेष्ठतम रस में भागीदारी के लिए परमात्मा सत्ता से प्रार्थना की जा रही है, अनुदानों को धारण किया जा रहा है।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।। —यजु. ३६/१४-१६

विशेष आहुतियाँ

अभिषेक के बाद अग्नि स्थापना करके विधिवत् यज्ञ किया जाय। स्विष्टकृत के पूर्व सात विशेष आहुतियाँ दी जावें।

भावना की जाय कि युग देवता एक विशाल यज्ञ चला रहे हैं। उस यज्ञ में समिधा, द्रव्य बनकर हम भी सम्मिलित हो रहे हैं, धन्य हो रहे हैं।

ॐ ब्रह्म होता ब्रह्म यज्ञा ब्रह्मणा स्वरवो मिताः।। अध्वर्युब्रह्मणे जातो ब्रह्मणोऽन्तर्हितं हविः स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।। —अथर्व कां० १६/सू.

प्रव्रज्या

दिशा एवं प्रेरणा—परिव्राजक का काम है चलते रहना। रुके नहीं लक्ष्य की ओर बराबर चलता रहे, एक सीमा में न बँधे, जन-जन तक अपने अपनत्व और पुरुषार्थ को फैलाये। जो परिव्राजक लोकमंगल के लिए संकीर्णता के सीमा बन्धन तोड़कर गतिशील नहीं होता, सुख-सुविधा छोड़कर तपस्वी जीवन नहीं अपनाता वह पाप का भागीदार होता है।

क्रिया और भावना—यज्ञ की चार परिक्रमायें चरैवेति मन्त्रों के साथ करें। भावना करें कि हम सच्चे परिव्राजक बनकर गतिशीलों को मिलने वाले दिव्य अनुदानों के उपयुक्त सत्पात्र बन रहे हैं।

(१) नाना श्रान्ताय श्रीरस्तीति रोहित शुश्रुम। पापोनृषद् वरोजन इन्द्रइच्चरतः सखा चरैवेति चरैवेति।।

(२) पुष्पिण्यो चरतो जंघे भूष्णुरात्मा फलग्रहिः। शेरेऽस्य सर्वेपाप्मानः श्रमेण प्रपथे हताश्चरैवेति चरैवेति।।

(३) आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः। शेते निपद्य मानस्य चराति चरतो भगश्चरैवेति चरैवेति।।

(४) कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः। उत्तिष्ठँस्त्रेताभवति कृतं संपद्यते चरन् चरैवेति चरैवेति।।

(५) चरन् वै मधुविन्दति चरन् स्वादुमुदम्बरम्। सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन् चरैवेति चरैवेति।। —ऐतरेय ब्राह्मण

इसके बाद यज्ञ समापन पूर्णाहुति आदि उपचार कराये जावें। अन्त में सब लोग वानप्रस्थों पर मंगल मन्त्रों के साथ पुष्प-अक्षत् की वर्षा करें, शुभ कामना-आशीर्वाद आदि दें।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अन्त्येष्टि-संस्कार

अन्त्येष्टि-संस्कार–विवेचन

मानव शरीर इस धरती की सबसे बड़ी ईश्वरीय विभूति है। भगवान ने इसे बनाने में असाधारण श्रम किया है और इसे सर्वांगपूर्ण बनाने में कुछ उठा नहीं रखा है। यह परब्रह्म की सर्वोपरि कलाकृति है। मस्तिष्क में उठने वाले विचारों और अन्तःकरण में उठने वाले भावों की क्षमता इतनी अधिक है कि उनके आधार पर मनुष्य देवोपम आनन्द एवं उल्लास अनुभव कर सकता है। अपने को प्रकाशवान बनाते हुये उस प्रकाश से अन्य अनेकों को प्रकाशवान कर सकता है। आनन्द तो इसके रोम-रोम में भरा पड़ा है। यदि वह विकृतियों और भ्रान्तियों की माया-मूढ़ता. से बचा रह सके तो प्रभु के इस परम पवित्र संसार में उसे आह्लाद का अविरल स्रोत फूटता हुआ परिलक्षित होता है।

मानव शरीर की सार्थकता

प्रभु ने मानव शरीर की रचना में इतना अधिक श्रम इसलिये किया है कि वह उसके द्वारा नियोजित परमार्थ महायज्ञ का प्रधान होता—अध्वर्यु बनकर विश्व वसुधा को सर्वांग सुन्दर बनाने में आवश्यक योगदान कर सके। यों यह जगत जड़ है, उसमें सब कुछ ऊबड़-खाबड़ और अस्त-व्यस्त है, पर प्रेम, पुण्य और परमार्थ के दिव्य तत्वों का इसमें समन्वय हो जाने से सब कुछ दर्शनीय, अभिनन्दनीय बन गया है। प्रभु की इच्छा है कि मनुष्य के द्वारा उनकी विनिर्मित सृष्टि में 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' की प्राण प्रतिष्ठा निरन्तर की जाती रहे। उपनिषद्कार की भाषा में यह विश्व एक सुविस्तृत यज्ञ है। मानव शरीर को इसमें आहुति रूप बनकर यज्ञाग्नि में प्रवेश करने के लिये उत्पन्न किया गया, ताकि विश्व की यज्ञीय गौरव गरिमा अक्षुण्ण बनी रहे। जो व्यक्ति अपना जीवन ईश्वर की इसी आकांक्षा-अभिलाषा को पूर्ण करने में लगा देता है, उसी का नर-तनु धारण सार्थक कहा जा सकता है अन्यथा इस अनुपम सौभाग्य वरदान को माटी के मोल गँवा देने वाले तो अनेक कीट-पतंग आये दिन जन्मते-मरते रहते हैं।

यज्ञ एक जीवन सहचर

मनुष्य के जीवनोद्देश्य को बार-बार समय-समय पर स्मरण कराते रहने के लिये उसे यज्ञ आयोजन करते रहने, धर्म प्रक्रिया अपनाये रहने का निर्देश किया गया है। षोडश संस्कारों में से हर एक में यज्ञ अनिवार्य रूप से करना पड़ता है। प्रत्येक हँसी-खुशी का दिन पर्व-त्यौहार, यज्ञ-आयोजन के साथ जुड़ा हुआ है। शुभ कार्यों का श्री गणेश यज्ञ के साथ ही किया जाता है। नित्य कर्मों में यज्ञ का भी स्थान है। सन्ध्या-वन्दन के साथ-साथ नित्य यज्ञ का भी शास्त्रीय विधान है। यज्ञ को मनुष्य जीवन के साथ इसलिये भी जोड़ा गया है कि वह इस बात को पग-पग पर स्मरण रखे कि उसे यज्ञीय जीवन जीना है। परमार्थ एवं संयम के साथ जुड़ी हुई ज्ञानाग्नि को अन्तःकरण में निरन्तर प्रज्ज्वलित रखना है। उसके बिना मनुष्य जन्म की सार्थकता हो ही नहीं सकती। तृष्णा-वासना के लिये गँवा दिया गया जीवन तो एक प्रकार से निरर्थक चला गया ही माना जा सकता है। अयज्ञ जीवन की शास्त्रकारों ने पग-पग पर कटु भर्त्सना की है।

गीताकार के मतानुसार मनुष्य का सृजन करते हुए प्रजापति ने उसके साथ ही यज्ञ को भी उत्पन्न किया और निर्देश किया कि तुम यज्ञ आराधना करना, यज्ञ तुम्हारे सभी सुख-साधन जुटा देगा। तथ्य स्पष्ट है, स्वार्थ की संकीर्णता में जो जितना फँसेगा, वह अपना लोक-परलोक दोनों ही बिगाड़ेगा और भौतिक एवं आन्तरिक कष्ट-क्लेशों में हर घड़ी फँसा रहेगा। किन्तु जिसने परमार्थ को, यज्ञीय परम्परा को अपनाया, जीवन दूसरों का आनन्द अभिवर्द्धन करने के लिये उत्सर्ग किया, उसे बदले में इतने भौतिक तथा आत्मिक वरदान मिलते हैं, जिन्हें पाकर वह कृत-कृत्य होकर महापुरुषों की देव पंक्ति में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बैठा हुआ अनन्त उल्लास अनुभव करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। भारतीय संस्कृति यज्ञीय संस्कृति है। इसके अनुयायी को अपना आदर्श, यज्ञ, पुण्य और परमार्थ निरन्तर स्मरण रखना और अपनाना होता है।

यज्ञीय आदर्शों की संस्कृति

जिन्दगी जीने का सही तरीका यह है कि उसे यज्ञीय आदर्शों के अनुरूप जिया जाय। उसका जब अवसान हो तो भी उसे यज्ञ भगवान की परम पवित्र गोदी में सुला दिया जाय, यह उचित है। जीवन की समाप्ति यज्ञ प्रयोजन के लिये ही होनी चाहिये। यों स्थूल रूप से अग्नि जलाकर उसमें कोई वस्तुएँ होमना यज्ञ या अग्निहोत्र कहलाता है, पर उसका तात्विक अभिप्राय परमार्थ प्रयोजन से ही है। जिस प्रकार मेवा, मिष्ठान्न, घृत, औषधि आदि कीमती एवं आवश्यक वस्तुओं को वायु शुद्धि के लिये वायु-भूत बनाकर सर्वसाधारण को निरोग एवं परिपुष्ट बनाने के लिये बिखेर दिया जाता है, उसी प्रकार मानव वैभव की समस्त विभूतियों को विश्व मंगल के लिये बिखेरते रहा जाय, यही तात्विक यज्ञ है। अग्निहोत्र के द्वारा होताओं को यह यज्ञ भावना ही हृदयंगम करनी पड़ती है। स्वार्थपरता की पाशविकता से छुटकारा पाकर परमार्थ प्रवृत्तियों को विकसित करने का उत्साह जाग्रत करना पड़ता है।

अन्त्येष्टि का प्रयोजन

मनुष्य शरीर में से प्राण निकल जाने पर उसका क्या किया जाय ? इसका उत्तर देर तक सोचने के बाद ऋषियों को इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ा कि नर-तनु का प्रयोजन किसके लिये उत्सर्ग होने में सिद्ध होता है, इसका एक वृहत् प्रदर्शन करते हुये मृत शरीर की अन्त्येष्टि की जाय। सभी स्वजन-सम्बन्धी, मित्र, परिचित जो अन्तिम विदाई देने आवें, उन्हें इस जीवनोद्देश्य को समझने का स्पष्ट अवसर मिले इसलिये यज्ञ का एक भीमकाय आयोजन करते हुए उसी में मृतक का शरीर होम दिया जाता है। हिन्दू की सारी रीति-नीति, यज्ञ-दर्शन से ही प्रभावित रहती हैं, इसलिये उसका अवसान भी उसी महान सत्य के साथ सम्बद्ध कर दिया जाय तो यह उचित ही होगा। प्रवाह को यज्ञ आयोजन की व्यवस्था में मोड़ दिया जाये और तत्सम्बन्धित छोटे-बड़े कर्मकाण्डों में लगा दिया जाय तो उनका चित्त बदलता है और शोक-सन्ताप को हलका करने का अवसर मिलता है। ऐसे ही अनेक प्रयोजन अन्त्येष्टि के हैं।

सम्मानपूर्वक विदाई समारोह

आजकल लोग मुर्दे को ऐसे ही लकड़ियों के ढेर के बीच पटककर जला देते हैं। यह अव्यवस्था मृतक के प्रति उपेक्षा एवं असम्मान दिखाने जैसी है। इस अवसर पर उतावली या उपेक्षा शोभा नहीं देती। उचित यही है कि अन्त्येष्टि यज्ञ को उसी प्रेम और सम्मान के साथ व्यवस्थित रूप से किया जाये, जिसकी कि स्नेही स्वर्गीय आत्मा के साथ व्यवहृत होने की अपेक्षा की जाती है। इस संस्कार का हर कार्य ठीक ढंग से, ठीक व्यवस्था एवं सावधानी के साथ करना चाहिये, इस तरह; जिससे कि स्वजनों का प्रेम और सम्मान टपकता हो।

देखा गया है कि मृतक के कपड़े उतार लेते हैं और अत्यन्त सस्ते भद्दे कपड़े के टुकड़े शरीर पर लपेट दिये जाते हैं। यह किफायतीदारी उचित नहीं। धोती, कुर्ता, शिरस्त्राण यह तीनों ही वस्त्र ठीक तरह पहने रहें। जीवन शान्त हो जाने के कम से कम दो घण्टे इसकी प्रतीक्षा करनी चाहिये कि प्राण कहीं पुनः न लौट आवें। कई बार ऐसी घटनाएँ भी हो जाती हैं कि मृत्यु के लक्षण प्रकट होने के उपरान्त पुनः जीवन लौट आता है। इसलिये तत्काल जलाने के लिये ले चलना उचित नहीं। रोने-धोने की अपेक्षा मृत शरीर के समीप भजन, कीर्तन, जप-पाठ आदि के सामूहिक धार्मिक कार्यक्रम कर देने चाहिये। इससे जीवात्मा की शान्ति और सद्गति में योग मिलता है। अधिक रोने, चिल्लाने से उस आत्मा को भी कष्ट मिलता है। धर्म मान्यताओं के अनुसार मृत्यु हो जाने के उपरान्त भी जीवात्मा मृत शरीर के आस-पास ही मोहग्रस्त स्थिति में मँडराता रहता है। यदि स्वजन-सम्बन्धी अधिक रोने-धोने में संलग्न होंगे तो जीव का भी मोह-शोक बढ़ेगा। आवश्यकता उसे शान्ति देने की है। घर के लोग भी अधिक विलाप करके अपना शरीर क्षुब्ध एवं रुग्ण करते हैं, जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसलिये उचित यही है कि मृत्यु का निश्चय हो जाने के दो घण्टा उपरान्त तक वही धार्मिक वातावरण बनाये रहने की व्यवस्था की जाय।

मृत शरीर को यज्ञ में होमने ले जाया जा रहा है, इसलिये उसको स्नान कराया, मस्तक पर, शरीर पर चन्दन घिसकर लगाया जाना आवश्यक है। प्रथा के अनुसार कई जगह घर में ही स्नान कराके ले जाते हैं, कई जगह नदी समीप हो तो वहाँ स्नान कराते हैं। घर पर स्नान कराने में यह लाभ है कि स्वच्छ वस्त्र भी वहाँ आसानी से और ठीक प्रकार पहनाये जा सकते हैं। बाँस की मंजूषा, ठठरी पर पत्र-पल्लव, पुष्प आदि ठीक तरह सजाये जायँ। कहीं-कहीं पिण्डदान आदि की क्रियाएँ भी की जाती हैं। यह लोकाचार जहाँ जैसे प्रचलित हों, वहाँ वैसे ही किये जा सकते हैं। जिसे दाह क्रिया करनी है, उसे भी स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करने पड़ते हैं।

भूमि-शुद्धि की प्रक्रिया

श्मशान भूमि में जहाँ अन्त्येष्टि संस्कार होना है, वह स्थान अच्छी तरह झाड़-बुहार कर गोबर, मिट्टी या पानी से लीप लिया जाये। यज्ञ कार्य के लिये भूमि शुद्धि आवश्यक है। यज्ञ वेदी या यज्ञ कुण्ड बनाया जाना यदि सम्भव हो तो वैसा करना चाहिये, पर लोग न जाने क्यों मृत्यु को अशुभ मानते हैं और उसके हर कार्य को उपेक्षा और तिरस्कार के साथ जल्दी-जल्दी करते हैं। यह ठीक नहीं, मरण किसी जीवन का अन्तिम त्यौहार है। जिस प्रकार विवाह में दो व्यक्ति मिलकर एक नया संयुक्त जीवन बनाते हैं तो वह कृत्य बड़ा महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उसी प्रकार एक जीवन समाप्त होकर नया जीवन आरम्भ होना भी किसी व्यक्ति के लिये असाधारण रूप से महत्त्वपूर्ण अवसर है। महत्त्वपूर्ण अवसर को महत्त्वपूर्ण ढंग से ही क्यों न मनाया जाये ? यज्ञ-वेदी, कुण्ड यदि बन सके तो उसे बनाया जाना चाहिये। रंग-बिरंगे चौक पूरने की कला द्वारा वह मण्डप ठीक तरह सजाया जाना चाहिये। इतना न हो तो मिट्टी गोबर और पानी से ठीक तरह लीप तो लिया ही जाना चाहिये। यज्ञीय प्रयोजन के लिये भूमि को अभिमन्त्रित-संस्कारित किया जाता है। वही प्रक्रिया इस अवसर पर होनी चाहिये। उपस्थित लोगों में से कई व्यक्ति ऐसे होने चाहिये जो मन्त्रोच्चारण कर सकते हों। उनके हाथ में पुस्तकें रहें। उस कुण्ड को लीपने से पूर्व अभिमन्त्रित करते हुये झाड़ू लगायें। झाड़ू लगाते समय **'ॐ देवस्य त्वा ·····'** यह मन्त्र बोलें। जब लीप लिया जाय, वेदी कुण्ड बनाने, चौक पूरने आदि की क्रिया हो जाय तो उस भूमि को यज्ञ-कार्य के उपयुक्त बनाने के लिये अभिमन्त्रित किया जाये। संस्कार करने वाले हाथों में मिट्टी के पात्र में जल और कुशाएँ डालकर खड़े हों यह **'ॐ शुद्ध वाल ··'** मन्त्र से भूमि पर छींटे देते हुए अभिमन्त्रित करें। तत्पश्चात् उस भूमि पर स्वस्तिक '·' या 'ॐ' लिखा जाय। यह लेखन दाहिने हाथ की तर्जनी उँगली से वह करे, जिसे दाह कार्य करना है। संस्कार कराने वाले सामूहिक रूप से **'ॐ सपर्यणी घृतो ··'** मन्त्र का उच्चारण करे। इस प्रकार वह भूमि अन्त्येष्टि-संस्कार के उपयुक्त अभिमन्त्रित बन जायेगी।

प्रत्येक कार्य के लिये उपयुक्त स्थान का होना आवश्यक है। गंदा, मलीन, कुरुचिपूर्ण, बेढंगा स्थान हर कार्य के लिये अनुपयुक्त होता है। अन्त्येष्टि के लिये भी यह ही नियम है। कभी कोई कार्य करना हो तो उसमें चित्त वृत्ति ठीक तरह एकाग्र हो सके, इस योग्य स्वच्छ और व्यवस्थित वह स्थान बनाया जाना चाहिये। उपयुक्त वातावरण में ही कोई कार्य उपयुक्त ढंग से हो सकता है। घर, कारखाने जहाँ भी कोई कार्य करने हैं, वहाँ के स्थान को स्वच्छता एवं सुरुचिपूर्ण स्थान बनाने पर आवश्यक ध्यान दिया जाना चाहिये। कूड़े-कचरे से भरे घर, अस्त-व्यस्त चीजों से गिरे-पड़े कारखाने, टूटे-फूटे फर्नीचर और जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े कागजों वाले दफ्तर कुरुचि उत्पन्न करते हैं। कुरुचिपूर्ण परिस्थितियों में काम भी औंधे-तिरछे ही होते हैं। इसलिये स्वच्छता व व्यवस्था को प्राथमिकता देने का सार्वभौम, सर्वकालीन सिद्धान्त अन्त्येष्टि-संस्कार के अवसर पर भी प्रयुक्त होना चाहिये। भूमि का झाड़ना, लीपना, अभिसिंचित, अभिमन्त्रित किया जाना, ईश्वर के नाम 'ॐ' से उसे सुसज्जित किया जाना इस तथ्य को प्रतिपादित करता है कि करना चाहे जो भी हो सदा यह सिद्धान्त अटल ही रहेगा कि उपयुक्त कार्य के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिये उपयुक्त वातावरण बनाने की बात भी भुलाई न जाये।

क्रिया कृत्य का प्रारम्भ

जिस व्यक्ति को दाह-संस्कार का प्रधान बनाना है, उसे एक यजमान के रूप में पवित्र और अभिमन्त्रित किया जाना आवश्यक है। उपस्थित लोग कुशाएँ जल-पात्र में डुबोकर उस व्यक्ति के ऊपर छींटे लगायें और **'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा** . . . . . " मन्त्र बोलें। अन्य संस्कारों में यजमान को पवित्रीकरण, प्राणायाम न्यास आदि कृत्य भी करने पड़ते हैं। अन्त्येष्टि संस्कार में अभिसिंचन की एक क्रिया द्वारा ही ये पाँचों कृत्य पूरे कर लिये जाते हैं। इसी प्रकार कलश-पूजन, देव-पूजन आदि कृत्य भी नहीं होते हैं। इस अवसर पर कुछ धर्म-कृत्य करना लोग न जाने क्यों बुरा मानते हैं। यदि ऐसे रूढ़िवादियों का समुदाय न हो, संस्कार में विचारशील लोग हों तो स्वस्तिवाचन जैसा वेद-पाठ तो उस वातावरण में आध्यात्मिकता उत्पन्न करने के लिये किया ही जा सकता है।

मर्यादा परिधि की चार समिधाएँ

यज्ञ-कुण्ड या वेदी में चारों ओर मेखलाएँ बनाई जाती हैं। उस आवश्यकता की पूर्ति चार बड़ी-बड़ी लकड़ी चारों दिशाओं में स्थापित करके की जाती है। यह लकड़ियाँ चिता के चारों छोरों पर उसकी सीमा बनाने वाली होनी चाहिये। शेष लकड़ियाँ इन चारों के भीतर ही चिनी जाती हैं। इसलिये लम्बाई-चौड़ाई का ध्यान पहले से ही रख लेना चाहिये। यह लकड़ियाँ मन्त्रोच्चारण के साथ स्थापित की जाती हैं। दाह-प्रक्रिया करने वाला व्यक्ति समिधाओं को स्थापित करे और संस्कार कराने वाली पुस्तकों की सहायता से मन्त्रोच्चारण करे। पूर्व दिशा में लकड़ी स्थापित करते हुये **'ॐ प्राची दिगग्नि** . . . . . ' मन्त्र, दक्षिण दिशा में स्थापना के समय **'ॐ दक्षिणा दिगिन्द्रो** . . . ' मन्त्र, पश्चिम में **'ॐ प्रतीची दिग् वरुणो** . . . . ' तथा उत्तर में **'ॐ उदीची दिक् सोमो** . . ' मन्त्र का उच्चारण किया जाता है।

रहस्य और विवेचन

जीवन चारों दिशाओं में मर्यादित है। व्यक्ति की हर दिशा में एक सीमित मर्यादा है, उसे उसी घेरे में, उसी दायरे में रहना चाहिये। मर्यादाओं का उल्लंघन कर उच्छृंखल नहीं बनना चाहिये। यह निर्देश मृत शरीर में चारों ओर चार बड़ी समिधाएँ स्थापित करके किया जाता है।

(१) पहली मर्यादा धन सम्बन्धी है। धन उसे उपार्जित तो करना चाहिये, पर अनीतिपूर्वक नहीं, साथ ही इतना अधिक भी नहीं, जिससे समाज में असमानता, ईर्ष्या तथा विलासिता उत्पन्न हो। शरीर रक्षा, कुटुम्बपालन आदि कार्यों के लिये आजीविका उपार्जन आवश्यक है, पर उसकी उपयोगिता आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये ही समझी जाय। ऐसा न हो कि संग्रह लालच बढ़े और उसे गर्व-गौरव का विषय बना लिया जाये। धनी बनने की इच्छा यदि महत्त्वाकांक्षा का रूप धारण करके, तृष्णा बन जाय तो मनुष्य जीवन जिस प्रयोजन के लिये मिला है, उसके लिये न तो अवकाश मिलेगा न इच्छा ही रहेगी। इसलिये एक लकड़ी पूर्व दिशा में धन की आकांक्षा सीमित रखने के लिये रखी जाती है।

(२) दूसरी समिधा दक्षिण दिशा में काम सेवन सम्बन्धी मर्यादा का पालन करने की है। वासना की आग ऐसी है, जिसमें भोग का ईंधन जितना ही डाला जायेगा, वह उतनी ही भड़कती जायेगी। इसलिये मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य और आत्म-बल तीनों ही दृष्टियों से काम सेवन को जितना अधिक मर्यादित किया जा सके, उतना ही उत्तम है। ब्रह्मचर्य पालन की आवश्यकता व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिये है। जीवन-रस का अनावश्यक क्षरण करने से व्यक्ति, शरीर, मन और आत्मा तीनों ही तरह से दुर्बल बनता है। नारी की शरीर-रचना भी अन्य जीव-जन्तुओं की तरह ही है, जो यदा-कदा ही काम सेवन के दबाव को सहन कर सकती है। अनावश्यक दबाव पड़ने से उसके प्रजनन यन्त्र ही नहीं, शरीर के समस्त कल-पुर्जे अस्त-व्यस्त हो जाते हैं। कुमारियों और विधवाओं का जैसा स्वास्थ्य-सौन्दर्य होता है, वैसा ही गृहस्थ-नारियों का नहीं देखा जाता, इसका कारण उन पर ब्रह्मचर्य उल्लंघन के लिये दबाव ही एक मात्र कारण है। सन्तानोत्पादन में नारी की शक्ति को भारी क्षति पहुँचती है। बढ़ती हुई जनसंख्या, खाद्य संकट, बेकारी आदि अनेक प्रकार की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कठिनाइयाँ समाज के लिये उत्पन्न करती है। गृहस्थ का आर्थिक ढाँचा भी बढ़ती हुई सन्तान से चरमरा जाता है। इसलिये ब्रह्मचर्यपालन हर दृष्टि से आवश्यक है। गृहस्थ में पत्नीव्रत और पतिव्रत का कड़ाई के साथ पालन करते हुए भी शक्तियों के बचाव का ध्यान रखा जाये, कुत्सित मनोरंजन के लिये जीवन-तत्व से खिलवाड़ न किया जाय, व्यभिचार तो एक प्रकार की आत्मघाती विपत्ति के लिये खुला आमन्त्रण है। इससे अपने तथा दूसरे के परिवार में अविश्वास व असन्तोष का वातावरण उत्पन्न होता है। दात्पत्य जीवन की निष्ठाएँ नष्ट होती हैं। अन्तःकरण मलीन होता है। इससे नर-नारी के बीच रहने वाली पवित्रता की रेखा टूट-फूट कर नष्ट हो जाती है। इस प्रकार के अनेक तथ्यों को ध्यान में रखते हुये दक्षिण दिशा की लकड़ी स्थापित की जाती है और उपस्थित लोगों को ब्रह्मचर्य सम्बन्धी मर्यादा-पालन के लिये निर्देश किया जाता है।

(३) तीसरी समिधा पश्चिम दिशा में यश मर्यादा की है। लोक-लज्जा के कारण बुरे कार्यों से बचे रहने और सत्कर्म करने के फलस्वरूप लोक-सम्मान का सुख मिलने की इच्छा एक सीमा तक उचित है पर जब वह उच्छृंखल हो उठती है तो अवांछनीय उपाय अपनाकर उच्च पदवी पाने की लिप्सा उठ खड़ी होती है। तब सम्मान के वास्तविक अधिकारियों को एक ओर धकेलकर उनका स्थान स्वयं ग्रहण करने की दुरभिसंधि की जाने लगती है। आज पद—लोलुप व्यक्ति इसी प्रकार के पारस्परिक संघर्ष में लगे हुए हैं और जिन संस्थाओं के समर्थक होने का दम भरते हैं, उन्हीं को नष्ट करने में प्रवृत्त हैं। भाषा, जाति, सम्प्रदाय आदि की आड़ लेकर तथाकथित नेता लोग अपना व्यक्तिगत पद-गौरव बढ़ाने के लिये देश के भाग्य-भविष्य के साथ खिलवाड़ करने में लगे हुये हैं। राज-पाट लेने के नाम पर इतिहास के पृष्ठों पर मनुष्य की नृशंसता का वीभत्स चित्र देखा जा सकता है। चुनावों में करोड़ों रुपया इसी यश लोलुपता के लिये पानी की तरह बहा दिया जाता है, जो यदि किन्हीं रचनात्मक कार्यों में लगता तो उसका बहुत ही श्रेष्ठ सत्परिणाम होता। साधु, ब्राह्मण इसी लिप्सा से प्रेरित होकर अपने-अपने नाम के मत-पंथ चलाने का कुचक्र रचते रहते हैं। अभी भी हिन्दू समाज के धर्मध्वजियों की जो प्रवृत्ति एक-दूसरों का विरोधी बनाये हुये है, मिल-जुलकर धर्म सेवा करने की योजना में जो प्रधान रूप से बाधक है, वह अपने चेलों को अपने चंगुल में फँसाये रखने ओर उनसे मनमाने पैर पुजाते रहने की दुर्बलता ही है। उन्हें भय है कि यदि वे सब मिल-जुलकर कार्य करेंगे तो जनता किसी एक की अन्धी भक्त न रहकर सभी अच्छे लोगों का सम्मान करने लगेगी और वे घाटे में रहेंगे। इसी प्रकार व्यक्तिगत जीवन में छोटे-छोटे मान-सम्मान की आपा-धापी को लेकर लोग बुरी तरह आपस में मरते-कटते रहते हैं। तरह-तरह के फेशन, श्रृंगार, अमीरी के ठाट-बाट तथा ढोंग बनाकर वाहवाही लूटने की इच्छा से ढेरों पैसा नष्ट करते हैं। अहंकार का पोषण करने वाले यह सभी प्रपंच व्यक्ति तथा समाज के लिये हानिकारक हैं। अतएव मनीषियों ने यश कामना को मर्यादित रखने का निर्देश दिया है। तीसरी मर्यादा समिधा इसी की है।

(४) चौथी समिधा द्वेष को मर्यादित रखने की है। संस्कार में विभिन्न प्रकृति और प्रवृत्ति के लोग रहते हैं। उनके विचार और कार्य अपनी रुचि एवं मान्यता से मेल नहीं खाते तो बहुधा झगड़े की सूरत बन जाती है। अपने से प्रतिकूल को पसन्द नहीं किया जाता और उसे नष्ट करने की इच्छा होती है। यह क्रोध ही क्लेश और द्वेष का कारण बनता है। यह मत भिन्नता ही संसार में हो रहे अधिक लड़ाई-झगड़ों की जड़ है। असहिष्णुता के कारण छोटी-छोटी बातों पर लोग एक-दूसरे की जान के ग्राहक, भयंकर शत्रु बन जाते हैं। इस असहिष्णुता की प्रबलता के कारण लोग दस में से नौ बातों की सहमति, समानता और एकता को नहीं देखते, वरन् जो शेष एक मतभिन्नता थी, उसी को आगे रखकर दुर्भाव उत्पन्न करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ठीक है, बुराई का सहयोग न किया जाये, अनैतिक आचरण में सम्मिलित न हुआ जाय किन्तु अन्य विषयों में अनेक मान्यताओं के बीच समन्वय या सहिष्णुता का आधार बनाकर ही चलना चाहिये। विभिन्न धर्मों के बीच कई बातों में भिन्न मान्यता रहती है, क्या इसी कारण वे सब परस्पर लड़ें और दूसरे का खून बहाएँ ? हमें चाहिये कि अपनी उत्तम मान्यताओं को अपनायें, पर दूसरे भिन्न मत वालों को भी वैसी ही स्वाधीनता दें कि यदि वे हमारी मान्यता से सहमत नहीं तो अपना रास्ता प्रसन्नतापूर्वक अपनाये रह सकें। मत भिन्नता व्यक्तिगत द्वेष का कारण न बने, इतनी सहिष्णुता हर किसी में होनी चाहिये। परिवार में स्त्री-पुरुष, भाई-भाई, पिता-पुत्र के बीच भी इतनी सहिष्णुता होनी चाहिये कि बिना रोष-द्वेष के एक-दूसरे की विचार-भिन्नता को सहन कर सकें। किसी से मनोमालिन्य भी हो जाये तो भी उसकी इतनी उग्र प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिये कि दूसरे को खेदजनक अवांछनीय हानि पहुँचाने पर उतारू हो जाये। असहिष्णुता, को, द्वेष को मर्यादित रखने की मानवीय परम्परा को निबाहने के लिये मनुष्य संयम बरते, इसकी शिक्षा उपस्थित लोगों को देने के लिये, मानव जीवन का मर्यादा-विज्ञान समझाने के लिये, चौथी बड़ी समिधा उत्तर दिशा में स्थापित की जाती है।

शव-संस्कार

इन चार मर्यादा समिधाओं के स्थापित करने के बाद उनके बीच में व्यवस्थापूर्वक अन्य लकड़ियाँ, समिधाएँ चिन ली जायें, चिता पर मृत शरीर को रखने से पूर्व संस्कार कराने वाले व्यक्ति कुशाओं द्वारा जल से अभिसिंचन करें। अभिसिंचन का मन्त्र **'आपोहिष्ठा** . . . . . ' है। शव संस्कार के लिये इस मन्त्र को बोलकर उसे अपवित्र मृत शरीर न रहने देकर पवित्र बना दिया जाता है। यज्ञ में केवल वह वस्तु होमी जाती है, जो पवित्र हो। अस्थि माँस का शरीर बेशक अपवित्र है, पर जब उसमें मन्त्र शक्ति, विचारशीलता का समन्वय किया जाता है तो वह पवित्रता से ओत-प्रोत हो जाता है। शव-संस्कार का मन्त्र इसी प्रयोजन की पूर्ति करता है।

सामान्य जीवन में मन्त्र शक्ति की, उत्कृष्ट विचारशीलता एवं सद्भावना की महत्ता असाधारण है। वह किसी तुच्छ परिस्थितियों के व्यक्ति में हो तो भी उसकी महानता, पवित्रता उच्च शिखर पर पहुँचेगी। इसके विपरीत यदि व्यक्ति भावशून्य है, तृष्णा और वासना की पूर्ति में मशीन की तरह जुटा रहा है, पर किसी उत्कृष्ट प्रयोजन के लिये न कुछ सोचता है, न कुछ करता है तो भले ही वह सम्पत्तिवान बन जाये पर उसे अपवित्र ही माना जायेगा। पवित्रता शरीर और वस्त्रों की शुद्धि से भी होती है, पर वह अपूर्ण है। वास्तविक और सर्वांगपूर्ण शुद्धता तो भावनात्मक स्तर ऊँचा होने पर ही मानव जीवन में प्रतिष्ठापित होती है। मन्त्र का सम्पर्क बनाकर मृत शरीर को, शव संस्कार के अवसर पर पवित्र, हवि चरु बना लिया जाता है। इस प्रक्रिया में यही तथ्य छिपा हुआ है कि व्यक्ति यदि पवित्र एवं श्रेष्ठ बनना चाहता हो तो उसे मन्त्र शक्ति का, उत्कृष्ट विचारणा का आश्रय लेना चाहिये। उसका हाड़-माँस का अपवित्र शरीर देव-तुल्य प्रशंसनीय एवं पवित्र बन जायेगा।

चिता चूँकि एक प्रकार से यज्ञ प्रक्रिया ही है, इसलिये उसमें वे ही लकड़ियाँ काम में आती हैं, जो आमतौर से यज्ञ कार्यों में प्रयुक्त होती हैं। वट, पीपल, गूलर, ढाक, आम, शमी आदि पवित्र काष्ठों की ही समिधाएँ यज्ञ में काम आती हैं, वे ही मृतक शरीर की अन्त्येष्टि में काम आनी चाहिये। अगर, तगर, देवदारु, चन्दन आदि का सुगन्धित काष्ठ भी मिल सके तो उन्हें भी चिता में सम्मिलित कर लेना चाहिये।

ठठरी पर रखे हुये शरीर को उठाकर चिता पर सुलाया जाय, तब सम्मिलित स्वर से संस्कारकर्त्ता **'ॐ' अग्ने नय सुपथा राये** . . . मन्त्र उच्चारण करें। इस मन्त्र में अग्निदेव से जीव को उस ओर ले चलने की प्रार्थना की गई है, जिस ओर कि सज्जन, सन्मार्गगामी धर्मात्मा लोग प्रयाण करते हैं। शान्ति और सद्गति की ओर जीव की भावी यात्रा चल पड़े, यही ईश्वर-प्रार्थना एवं शुभ कामना उपस्थित लोगों द्वारा की जानी चाहिये। वही की भी गई है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अग्नि का सान्निध्य साहाय्य

अग्नि की सहायता से उसके सहारे जीव सद्गति की ओर प्रयाण करता है। इस मान्यता के आधार पर ही हिन्दू धर्म के प्रत्येक अनुयायी का अग्नि संस्कार किया जाता है। अग्नि का स्वभाव ऊर्ध्वगामिता है। उसकी लौ हमेशा ऊपर को ही उठती है। अग्नि रूपी धर्म के साथ जो जीव ऊपर उठेगा, उसकी सद्गति सुनिश्चित है। दुर्गति तो पतन से होती है, पतन का अर्थ है—नीचे गिरना। पुराणों में स्वर्ग को पृथ्वी के ऊपर और नरक को पृथ्वी के नीचे बताया गया है। इसका तात्पर्य यही है, जो व्यक्ति ऊर्ध्वगामी होंगे, अपने विचारों में उत्कृष्टता भरे रहे हैं, जिनके कार्यों का स्तर ऊँचा होगा, वे धर्म रूपी अग्नि के सहारे सद्गति को प्राप्त करेंगे और स्वर्गीय सुख-शान्ति के अधिकारी बनेंगे। जिनके विचार पतित होंगे, जो निकृष्ट कर्म करेंगे, उन्हें पतनोन्मुखी प्रवृत्तियाँ अपनाने के कारण नीचे नरक में गिरना पड़ेगा। जिसे सद्गति एवं शान्ति की आकांक्षा हो, उसे अग्नि का आश्रय लेना चाहिये। ज्ञान, प्रकाश, तेज, संयम, पुरुषार्थ जैसे गुणों को अग्नि का प्रतिनिधि माना गया है। इनका जो भी आश्रय लेंगे वे ऊपर उठेंगे, उसी तरह जिस तरह अग्नि में जलाये हुये शरीर के अणु-कण वायुभूत होकर ऊपर आकाश में उड़ते चले जाते हैं।

धार्मिक मान्यता के आधार पर अग्नि संस्कार में जीव के सूक्ष्म शरीर पर चढ़े हुए इन्द्रियलिप्सा, वासना, मोह, द्वेष आलस्य जैसे कुसंस्कार जल जाते हैं और जीव अग्नि में तपाये हुये स्वर्ण की तरह निर्मल होकर, वेद ध्वनियों की दिव्य शक्ति से प्रभावित होकर ऊर्ध्वगामी बनता है और शान्ति-सद्गति का लाभ प्राप्त करता है। शिक्षा और निष्कर्ष की दृष्टि से देखा जाय तो यही प्रेरणा मिलती है कि धर्म एवं कर्म रूपी अग्नि के सहारे हर व्यक्ति ऊपर उठ सकता है और अभीष्ट सुख-शान्ति प्राप्त कर सकता है।

शरीर यज्ञ प्रारम्भ

शव को चिता पर स्थापित करके उसके ऊपर भी समिधाएँ चिन दी जायें। अब अग्नि संस्कार किया जाये। कुशाओं के पुञ्ज में अंगार या जलते हुये कोयले रखकर उसे हवा में इधर-उधर हिलाया जाये। अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठेगी। इस अग्नि समेत एक परिक्रमा मृतक की करके उसे पूर्व निश्चित ऐसे स्थान पर रख दिया जाय, जहाँ लकड़ियों में आसानी से अग्नि प्रवेश हो सके। ऐसा स्थान पहले से ही वायु के लिये खाली और पतली छोटी जल्दी आग पकड़ने वाली समिधाओं से बनाया गया हो। अग्नि स्थापना के समय **"ॐ भूर्भवः स्वः द्यौरिव भूम्ना** . . . . . ' मन्त्र का पाठ किया जाये।

अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाये, तब घी की सात आहुतियाँ दी जाय। इस कार्य के लिये लम्बी डण्डी का चम्मच प्रयोग किया जाय। **ॐ प्रजापतये स्वाहा, ॐ इन्द्राय स्वाहा'** आदि सात मन्त्रों से सात घृत की आहुतियाँ वही व्यक्ति करे, जिसने अग्नि प्रवेश कराया हो। यह मृतक का पुत्र या निकटतम सम्बन्धी होता है। घृत आहुतियाँ होने के उपरान्त सामान्य हवन आरम्भ किया जाय। इसके लिये वही सुगन्धित सामग्री जो सामान्य हवन में प्रयुक्त होती है, जितनी मात्रा में सम्भव हो ले लेनी चाहिये। उस सामग्री में घृत और शक्कर भी मिला ली जाये। कुटुम्बी मित्रों में से जो लोग आहुतियाँ देना चाहें तो वे अपने पास मृत्तिका पात्रों में सामग्री रख लें। अग्नि से इतनी दूर रहें, जिससे उनके शरीरों पर विशेष प्रभाव पड़े। खड़े होकर आहुतियाँ दें। इस शरीर यज्ञ को आहुति देने का प्रधान मन्त्र एक ही है—**"ॐ आर्युयज्ञेन कल्पतां** . . . . ' पुस्तकें हाथ में लेकर जितने अधिक व्यक्ति इसका उच्चारण कर सकते हों, उच्च स्वर से मन्त्र बोलें और स्वाहा शब्द का अवसर आने पर चिता पर सामिग्री की आहुति चढ़ा दें। यह क्रम तब तक जारी रखा जाय जब तक कि सामग्री चलती रहे। सुविधानुसार आहुतियों की संख्या भी निर्धारित की जा सकती है। अन्त में पाँच आहुतियाँ गायत्री मन्त्र की देकर सामग्री की आहुतियों का क्रम पूरा कर लिया जाय। सामग्री हवन करने में कई व्यक्ति शामिल हो सकते हैं। सामग्री कितनी हैं, उसके आधार पर आहुति देने वालों की संख्या घटाई या बढ़ाई जा सकती है। घृत की आहुति देते रहने वाला एक ही व्यक्ति जिसने दाह-संस्कार कराया है, वही रहे, चूँकि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धीरे-धीरे अग्नि बहुत तीव्र हो जाती है और उसके समीप पहुँचना सम्भव नहीं रहता, इसलिये आहुतियाँ दूर से ही इस तरह फेंक कर डालते हैं कि वह चिता में ही गिरें। इस प्रकार घी होमने के लिये जो धातु चम्मच लिया जाता है, उसका डण्ठल किसी बाँस में मजबूती से बाँध लेते हैं, ताकि बाँस का सिरा पकड़कर चम्मच का उपयोग किया जा सके।

जीवन यज्ञ का स्वरूप

इस शरीर यज्ञ में जिस प्रधान मन्त्र का उपयोग किया जाता है, उसमें शरीर के जीवन के सभी प्रधान अंग विभागों का नाम लिया गया है और निर्देश किया गया है कि इन सभी का उपयोग यज्ञ प्रयोजन के लिये हो। आयु, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, वाक्, मक, आष्मा, ब्रह्म, ज्योति, स्वः पृष्ठ और स्वयं यज्ञ के लिये ही इस ईश्वरीय आदेश का इस मन्त्र में स्पष्टीकरण किया गया है।

अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर इस तथ्य का जोरों के साथ प्रतिपादन किया जाता है। दिवंगत आत्मा तो शरीर छोड़ गई, संस्कार में उपस्थित लोगों को भी कुछ समय बाद शरीर छोड़ना है। इस अवधि का उपयोग वे उसी प्रयोजन के लिये करें, जिसके लिये कि ईश्वर ने यह अवसर प्रदान किया है। आहुतियों के साथ मन्त्रोच्चार करते हुये प्रत्येक हवन करने वाला तथा वहाँ उपस्थित देखने-सुनने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस तथ्य का चिन्तन-मनन करे, जो इस आहुति मन्त्र में व्यक्त किया गया है। फिर शरीर छोड़ने वाला जीव भी धर्म मान्यताओं के अनुसार इस समय तक मोहवश शरीर के आस-पास ही मँडराता रहता है। उसकी मोह निवृत्ति के लिये भी शरीर जला दिया जाता है ताकि वह लौट-लौटकर उसी की ममता में अपनी प्रगति रोककर शोक-सन्ताप में वहीं-कहीं न बैठा रहे। ऐसा समझा जाता है कि जिनके शरीरों के कोई अंश भूमि में गढ़े या कहीं रखे रहते हैं वे जीव मोहवश उनमें अपना चित्त संजोये रहते हैं। इसलिये हिन्दू धर्मानुयायी मृत शरीर को ही नहीं जला देते, वरन् उसकी अस्थि आदि को भी गंगा आदि किसी पवित्र नदी में विसर्जित कर देते हैं। शव-संस्कार के अवसर पर आकाश क्षेत्र में उपस्थित प्राणी भी जीवनोद्देश्य को सुने-समझे और अगला जन्म जहाँ कहीं धारण करे, वहाँ इस निर्देश को गाँठ में बाँधकर ले जाय कि अगली बार उसे अपना जीवन बिताने की रीति-नीति क्या रखनी है ?

जीवन का उद्देश्य यज्ञ है। यज्ञीय जीवन जीने में ही मनुष्य शरीर की सार्थकता है। इस विश्व ब्रह्माण्ड को सुरम्य बनाने में श्रम करना ईश्वर का सृष्टि यज्ञ है। प्रभु चाहते हैं कि उसका पुत्र मानव भी इस यज्ञ का होता बने। ईश्वर अपने लिये नहीं जीता, निज की कोई व्यक्तिगत आकांक्षा भी उसे नहीं है, उसका क्रिया-कलाप विश्व-वसुधा को सुखी-सुरम्य बनाने के लिये है। इसी प्रकार व्यक्ति आजीविका उपार्जन और शरीर निर्वाह के बहुत ही सरल कार्यों को हलके-फुलके ढंग से पूरा करते हुये अपनी महत्त्वाकांक्षाओं और रीति-नीतियों को लोक-मंगल की सत्प्रवृत्तियों में नियोजित रखकर ऐसा जीवन जियें, जिससे अनेकों को प्रकाश, गरमी, स्फूर्ति एवं सुगन्धि उपलब्ध हो सके, यह दृष्टिकोण जिसने अपना लिया, इस दिशा में जिसने चलना आरम्भ कर दिया उसने ईश्वर का निर्देश स्वीकार कर लिया और जीवन की सार्थकता का अवलम्बन पा लिया समझना चाहिये। शरीर यज्ञ का प्रधान मन्त्र **'ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां** ..... हमें इसी तथ्य को हृदयंगम करने और व्यावहारिक जीवन में समाविष्ट करने का निर्देश करता है।

आहुति मन्त्र से ईश्वरीय निर्देश

मन्त्र में ईश्वरीय निर्देश है कि—'मानवीय आयुष्य यज्ञ के लिये हो, वह जब तक जिये परमार्थ के लिये जिये, विराट् ब्रह्म की पूजा उपासना अपने स्वेद कणों से करता रहे। मैं अपने लिये नहीं, समस्त समाज के लिये जीता हूँ, यही सोचता रहे।

'प्राण यज्ञ के लिये हों—अर्थ, साहस, शक्ति, क्षमता चातुर्य और प्रतिभा का समस्त कोष लोक-हित की बात सोचने में, आयोजन करने में तथा प्रवृत्त रहने में खर्च किया जाये।'

'चक्षु यज्ञ के लिये हो अर्थात् जो कुछ देखें, सदुद्देश्य के लिये देखें। अश्लीलता की विकार भरी दूषित दृष्टि से भिन्न लिंग वाले नर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

या नारी को न देखें, पवित्र और प्रेम भरी दृष्टि से हर व्यक्ति और वस्तु को देखें और उसे अधिक सुन्दर, सुविकसित बनाने का प्रयत्न करें। छिद्रान्वेषण न करें, वरन् गुणों को देखें, ढूँढ़ें तथा अपनाएँ। सत्साहित्य पढ़ें, प्रेरणाप्रद दृश्यों को देखें, जो दुर्भाव उत्पन्न करे ऐसे दृश्यों से नेत्रों को बचाये रखें।

'कान यज्ञ के लिये हों अर्थात् जो सुनें श्रेयस्कर एवं सद्भाव जाग्रत करने वाला ही हो। ऐसे वचन एवं गायन न सुनें, जो कुमार्ग पर चलने के लिये बहकाते हों।'

'वाणी यज्ञ के लिये बोलें अर्थात् मधुर, शिष्ट, उत्साहवर्धक, श्रेयस्कर वचन कहने का अभ्यास डाला जाये। मतभेद या अप्रिय प्रसंग आने पर भी वाणी की शालीनता को हाथ से न जाने दिया जाये। दूसरों को कुमार्ग पर ले जाने वाली सलाह, द्वेष एवं रोष उत्पन्न करने वाली, निन्दा, चुगली, व्यंग, उपहास एवं मर्म छेदन करने वाली वाणी हमारी कदापि न हो। असत्य और निरर्थक भी न बोलें।' जिह्वा का संयम सबसे बड़ा तप माना गया है। उसका अर्थ चटोरापन से बचना ही नहीं, वरन् नपी-तुली सुसंयत एवं श्रेयस्कर वाणी बोलना भी है। ऐसे वाक्संयम को ही 'मौन' कहते हैं।

'मन को यज्ञ के लिये गतिशील करें। मन में अनर्थपूर्ण, अनुपयुक्त, अनुचित, अवांछनीय बातें न आने दें। कुविचारों को मस्तिष्क में स्थान न दें। ऐसी इच्छायें न करें जिनकी पूर्ति के लिये दूसरों को हानि पहुँचाकर अपने लिये अनैतिक रीति से लाभ उठाने की योजना बनानी पड़े। तृष्णा में मन डुबा न रहे। उसमें द्वेष, शोषण, अपहरण एवं अन्यान्य के लिये कोई स्थान न मिले। छल, कपट एवं धोखा देने की इच्छा कभी भी न हो, ऐसा निर्मल मन यज्ञ रूप ही कहा जायेगा।

'आत्मा यज्ञमय हो। उसमें आस्थाएँ, निष्ठाएँ, भावनाएँ, मान्यताएँ, आकांक्षाएँ जो भी हों वे सब आदर्शवादिता, उत्कृष्टता एवं सात्विकता से भरी-पूरी हों। उद्वेग नहीं, सन्तोष एवं उल्लास की अन्तःकरण में प्रधानता रहे। शुभ ही अनुभव करे, शुभ ही सोचे और शुभ की ही आशा रखें। आत्मा को शुद्ध बनाते-बनाते परिष्कृत करते-करते उसे परमात्मा के रूप में परिणत करने की चेष्टा जारी रहे, तो यह प्रक्रिया आत्मा का यज्ञ कहलायेगी।'

'ब्रह्म-यज्ञ के लिये हो, यहाँ ब्रह्म शब्द का प्रयोग 'विवेक' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। हमारा विवेक जाग्रत रहे। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के जो कषाय-कल्मष उठते रहते हैं और अन्तःकरण में जो विविध विधि-विक्षेप उत्पन्न करते हैं, उनको विवेक द्वारा नियन्त्रित किया जाये। आत्म-निग्रह का कार्य विवेक द्वारा ही सम्पन्न होता है। इसलिये विवेक की सत्ता इतनी प्रबल रखी जाय कि मनोविकार सिर न उठा सके, कुमार्ग पर जीवन-रथ को घसीट न ले जा सकें।'

'ज्योति यज्ञ के लिये हो। यहाँ ज्योति शब्द क्रियाशीलता के अर्थ में प्रयुक्त होगा। हमारी शक्ति कुमार्गगामी न हो, हमारी बुद्धि सत्पथ का परित्याग न करे। हमारी आकांक्षा अनुचित की चाह न करे। हमारी प्रतिभा दूसरों पर अवांछनीय प्रभाव या दबाव न डाले। विद्या की दिशा अधोगामी नहीं, उर्ध्वगामी बने। पतन के लिये नहीं, उत्थान के लिये कदम बढ़े तो समझना चाहिये कि हमारी ज्योति यज्ञ के लिये प्रयुक्त हो रही है। जिस प्रकार दीपक अपने को जलाकर दूसरों के लिये प्रकाश उत्पन्न करता है वैसे ही हम भी अपने ज्योतिर्मय व्यक्तित्व से संसार में पुण्य-प्रकाश का सृजन, अभिवर्धन करते रहें।'

'स्वः यज्ञ के लिये हो। अपना व्यक्तित्व या अस्तित्व सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने के लिये 'सत्यं शिवं सुन्दरं' की महत्ता विकसित करने के लिये हो। हमारा 'अहं' अपना गर्व पूरा करने के लिये न हो। धर्म, सत्य और ईश्वर का गौरव बढ़ाने में नियोजित होता रहे।'

'पृष्ठ-भाग यज्ञ के लिये हो। आगे वाला, दिखाई देने वाला हिस्सा तो लोग भले आदमियों का-सा बना लेते हैं, चेहरे पर तो बढ़िया मुखौटा सजा लेते हैं, पर भीतर उसके गन्दगी ही गन्दगी भरी रहती है। इस प्रकार हम अपना वर्तमान तो किसी प्रकार गुजार लेते हैं, पर पीछे का हर पृष्ठ भाग जो मरणोत्तर जीवन से सम्बन्धित है, अंधेरे में ही पड़ा रहता है। इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संसार से विदा होने के पश्चात् हम अपने पीछे कोई महत्त्वपूर्ण स्मृति या परम्परा भी नहीं छोड़ जाते। यह खेद की बात है। मन्त्र में कहा गया है कि हमारा पृष्ठ भाग, पीछे का अदृश्य पहलू भी यज्ञ के लिये, श्रेष्ठ सत्प्रवृत्तियों के लिये प्रयुक्त हो।'

अन्त में यज्ञ भी यज्ञ के लिये हो। इसमें यज्ञीय संस्कृति का चरमोत्कर्ष बतलाया गया है। हम जो भी शुभ कार्य करें, सद्भाव रखें, उनके पीछे किसी प्रकार से लौकिक या पारलौकिक, व्यक्तिगत लाभ की इच्छा न हो। यद्यपि स्वभावतः परमार्थ पक्ष पर चलने वाले को इस लोक और परलोक में सुख-शान्ति का अविरल लाभ मिलता है, फिर भी इस प्रकार के लाभ की बात सोचकर व्यक्तिगत स्वार्थ की बात आगे न आने दी जाये। शुभ कर्म इसलिये किये जायें कि शुभ कर्मों से ही इस प्रकार की, मनुष्य की शोभा है। सत्य और औचित्य की विजय ही ईश्वर की विजय है। धर्म का अभिवर्धन एवं परिपोषण ही मानवोचित कर्त्तव्य है। इन उदात्त भावनाओं से यज्ञीय परम्परा को प्रदीप्त रखने की कामना से यज्ञ कर्म किये जायें।

उपयुक्त आदर्शवाद ही मानव जीवन की सार्थकता का रहस्य है। इस रहस्य को शरीर यज्ञ की आहुतियों में इसीलिये बार-बार प्रयुक्त किया जाता है कि क्षण-भंगुर नाशवान् शरीर की प्रस्तुत दुर्गति को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति अपना भविष्य सोचे और उसे उज्ज्वल बनाने के लिये जो करना चाहिये, उसकी प्रेरणा प्राप्त करे। यज्ञ ही मनुष्य का सच्चा सहचर है। अपने इसी मित्र की सहायता से वैसी ही विजयश्री प्राप्त की जा सकती है, जैसी कि अर्जुन ने कृष्ण की सहायता से प्राप्त की थी। अतएव हम यज्ञ की न उपेक्षा करें और न तिरस्कार ,वरन् उसे सदा छाती से लगाये रहें। जीवन भर ऐसा करें और अन्त में यह मृत शरीर भी यज्ञ पिता की गोदी में समर्पित करते हुए इस लोक की यात्रा पूर्ण करें।

गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ

गायत्री मन्त्र की पाँच आहुतियाँ इसलिये हैं कि पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँचों कर्मेन्द्रियाँ सद्भावना से ओत-प्रोत रहें। गायत्री महामन्त्र सद्बुद्धि का प्रेरक है। अन्त्येष्टि करने वाले सद्बुद्धि की सहायता से शोक की निरर्थक विडम्बना को समाप्त करें और स्वर्गीय व्यक्ति के छोड़े हुये अधूरे उत्तरदायित्वों को पूरा करने में सहायता देकर उसके प्रति अपनी सच्ची वफादारी का परिचय दें। इसी प्रकार दिवंगत आत्मा के लिये भी गायत्री मन्त्र की प्रेरणा यह है कि इस समाप्त जीवन के सम्बन्धियों की मोह ममता छोड़कर शान्ति की आराधना करें और इस विश्राम काल को अगला जीवन अधिक उत्कृष्ट बनाने की योजना में लगायें।

गायत्री मन्त्र की पाँच आहुतियाँ देने के उपरान्त पूर्णाहुति की जाय। शरीर जल चुकने पर सिर की हड्डियाँ भी पक जाती हैं, उनमें चोट देने से उनके जोड़ खिल जाते हैं, इसमें नारियल और घी डालकर अग्नि को और अधिक प्रज्ज्वलित कर दिया जाता है, ताकि मस्तिष्क अच्छी तरह भस्म हो जाये। यदि ऐसा न किया जायेगा तो मस्तिष्क की कड़ी हड्डी कच्ची रह जायेगी, उसकी भस्म ठीक तरह न हो पावेगी। पूर्णाहूति में कपाल, क्रिया भी हो जाती है। मस्तिष्क रूपी नारियल उस यज्ञ की पूर्णाहुति का फल प्रतीक होता है।

कपाल क्रिया पूर्णाहुति

मस्तिष्क जीवन का वास्तविक केन्द्र संस्थान है। उसमें जैसे विचार या भाव उठते हैं, उसी के अनुकूल जीवन की दिशा निर्धारित होती है और उत्थान-पतन का वैसा ही संयोग बन जाता है। मस्तिष्क को सीमाबद्ध, संकुचित नहीं रहना चाहिये। उसको व्यापक, विशाल आधार पर सुविकसित होना चाहिये, इस तथ्य का प्रतिपादन करने के लिये कपाल-क्रिया का कर्मकाण्ड करते हैं। सिर की खोपड़ी फोड़कर उसके भीतर भरे विचार संस्थान को यह अवसर देते हैं कि एक छोटी-सी परिधि के भीतर ही वह सोचता न रहे, वरन् विश्व-मानव की विभिन्न समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अपना कर्त्तव्य पथ निर्धारित करे। मस्तिष्क की हड्डी का घेरा टूटने से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की सुविधा हुई। मृत और जीवित सभी के लिये मानसिक संकीर्णता हानिकारक बताकर सोचने का दायरा बड़ा करना इस पूर्णाहुति क्रिया का लक्ष्य है। जिसका मस्तिष्क अन्तिम समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

तक विवेकशील बना रहा, समझना चाहिये उसने जीवन यज्ञ की ठीक तरह पूर्णाहुति कर ली। यह प्रतीक संकेत इस कपाल-क्रिया में मिलता है।

वसोर्धारा स्नेह सिंचन

वसोधारा, घी की धारा छोड़ते हुये पूर्णाहुति का अन्तिम भाग पूर्ण किया जाता है। घृत का दूसरा नाम स्नेह है। स्नेह-प्यार को कहते हैं। प्यार भरा जीवन ही सराहनीय है। रूखा, नीरस, निष्ठुर, कर्कश, सवार्थी, संकीर्ण जीवन तो धिक्कार योग्य ही समझा जाता है। वसोधारा में घृत की, स्नेह की अखण्ड धारा **ॐ वसो पवित्र मसि** · · · · · मन्त्र उच्चारण करते हुये डाली जाती है। उसका तात्पर्य यही है कि व्यक्ति का जीवन निरन्तर स्नेह की धारा में डूबा रहे।

परिक्रमा और नमस्कार

उपस्थित सभी लोग चिता की परिक्रमा **'यानि कानि च पापानि** · · · · · मन्त्र के साथ करते हुये स्वर्गीय आत्मा के प्रति अपना सम्मान एवं सद्भाव प्रकट करते हैं। **'ॐ नमोस्त्वनन्ताय** · · · · · ' मन्त्र से नमस्कार करते हैं। यह नमस्कार ईश्वर के लिये है, साथ ही स्वर्गीय आत्मा के लिये भी। ईश्वर के लिये इसलिये कि उसने दिवंगत आत्मा को मानव-जीवन का स्वर्णिम सौभाग्य प्रदान किया और उसे यह अवसर दिया कि अनन्त काल तक के लिये अविच्छिन्न सुख-शान्ति यदि वह चाहे तो प्राप्त कर ले। इस महान अनुकम्पा के लिये कृतज्ञता स्वरूप ईश्वर को नमस्कार किया जाता है। मृत व्यक्ति को इसलिये कि उसके द्वारा जीवित व्यक्तियों के साथ जो उपकार हुये हों, उनके लिये यह सजीव विश्व कृतज्ञ है। इस कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के लिये जन-जीवन का यह प्रतिनिधि अभिवन्दन है।

इसके पश्चात् सब लोग मिलकर शान्ति पाठ करें। दिवंगत आत्मा के शरीर त्याग से जो विकृतियाँ, विसंगतियाँ उत्पन्न हुई हैं, उनके समाधान के लिये ईश्वर प्रार्थना के रूप में यह शान्ति पाठ है। मृतक को शरीर त्यागने पर जो अशान्ति हुई होगी, उसकी निवृत्ति-कामना के लिये भी यह शान्ति पाठ किया जाता है।

इस प्रकार अन्त्येष्टि संस्कार पूरा होता है। इसे पूरा करने पर संस्कार में सम्मिलित लोग किसी जलाशय पर जाकर स्नान करें, वस्त्र धोएँ, लोकाचार के अनुसार नीम की पत्ती चबाने जैसे कृमिनाशक उपचार करें।

जीवन दर्शन की शिक्षा

आहुतियाँ पूरी होने से लेकर कपाल-क्रिया करने के बीच में, चिता जलने की क्रिया में एक-दो घण्टे का समय मिल जाता है। इस समय में लोग बैठे-ठाले इधर-उधर की गपशप करते रहते हैं, यह उचित नहीं। जीवन की नश्वरता को समझने और ईश्वर की दी हुई नर-तन जैसी दिव्य विभूति के सदुपयोग की प्रेरणा इस समय जैसी अच्छी तरह मिल सकती है, वैसी और किसी समय नहीं। मृतक का शरीर जलते देखकर हर भावनाशील अपने जीवन का भी आज नहीं तो कल ऐसा ही अन्त कल्पना क्षेत्र में अंकित करें तो उसकी मुँदी हुई आँखें खुल सकती हैं और मरणोत्तर जीवन की तैयारी, जिसकी ओर से आज सर्वथा उपेक्षा ही की जा रही है, तत्परतापूर्वक आरम्भ की जा सकती है। इस मोड़ देने वाले समय का सदुपयोग उसी प्रकार की भावनाएँ जाग्रत करने में किया जाना चाहिये।

इस संदर्भ में अगली पंक्तियों में छपे हुये २१ श्लोक बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। उनकी व्याख्या विवेचना एक धर्म प्रवचन के रूप में श्मशान भूमि में ही की जानी चाहिये। यदि कोई भावनाशील व्यक्ति ठीक ढंग से उन श्लोकों की व्याख्या कर सके तो उपस्थित लोगों में जीवन-दर्शन समझने तथा भावी जीवन को धर्म-कर्त्तव्यों से ओत-प्रोत बनाने का उत्साह उत्पन्न कर सकता है। ऐसा ही किया भी जाना चाहिये।

अन्त्येष्टि क्रिया सम्बन्धी चित्र-विचित्र मान्यताएँ

मृत शरीर के अन्तिम संस्कार के सम्बन्ध में विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार के क्रियाकृत्य प्रचलित हैं। इनके पीछे यह मान्यता काम करती है कि मरण के उपरान्त भी आत्मा किसी न किसी रूप में बनी रहती है। वह अपने मृत शरीर की स्थिति से प्रभावित होती है तथा यह भी देखती है कि उसके चले जाने के उपरान्त कुटुम्बी लोग किस प्रकार की अभिव्यक्ति प्रकट करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वस्तु स्थिति क्या है ? इस सम्बन्ध में कोई कुछ नहीं कह सकता। क्योंकि मरणोत्तर जीवन के सम्बन्ध में अनेक प्रमाण मिलने के उपरान्त भी यह नहीं कहा जा सकता कि मृत शरीर के साथ उसका क्या सम्बन्ध रहता है और अन्त्येष्टि क्रिया के समय किये गये उपचारों का उसकी स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? फिर यह चित्र-विचित्र प्रचलन क्यों है ? उसके सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि समझदारी और सामाजिकता का युग आरम्भ होने पर लोगों ने मृतक के साथ अपने सम्बन्धों और कर्त्तव्यों को बनाये रहने अथवा समाप्त करने की बात सोचकर अपने ढंग से कल्पनायें की होंगी और उनका अनुकरण उस क्षेत्र समुदाय के अन्य लोग भी करने लगे होंगे, कालान्तर में वे प्रथायें परम्परा बन गई होंगी और उनका करना आवश्यक एवं न करना असामाजिक अधार्मिक माना जाने लगा होगा।

इन कृत्यों से दिवंगत आत्मा का अनुग्रह प्राप्त करने का प्रलोभन तथा उनके कुपित होने पर अनिष्ट की आशंका का भय भी काम करता रहा हो तो आश्चर्य की बात नहीं। साधारणतया आगमन की तरह विदाई भी एक संवेदन भरा अवसर है। इसलिये मृतक के प्रति कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये। यह सोचकर जिसे जो सूझा होगा वह उसने सोचा और किया होगा। बाद में अन्धानुकरण की परिपाटी ने उसे एक प्रचलन के रूप में स्वीकार कर लिया होगा। शव के प्रति सम्मान एवं स्नेह प्रकट करने की भावना ने भी सोचा होगा कि किस प्रकार क्या किया जाये ? तब उस समय की परिस्थितियों एवं साधनों के अनुरूप किन्हीं अग्रणी लोगों ने कुछ कारनामा दिखाया होगा। किसी प्रतिभावान् की अजनबी बात को किसी रहस्य से भरी हुई मानकर दूसरे लोग भी वैसा ही सोचने करने लगें तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

जो हो, संसार के विभिन्न भागों में अन्त्येष्टि संस्कार के सम्बन्ध में जो प्रथायें पाई जाती हैं, वे कौतूहलवर्धक तो हैं ही साथ ही एक ऐसा इतिहास भी अपने में छिपाये हुये हैं जिसमें विभिन्न प्रयोजनों, निमित्त, विभिन्न समयों पर, विभिन्न क्षेत्रों के लोग किस प्रकार विचार करते रहे हैं, कल्पनायें किस प्रकार तथ्य बनतीं और प्रथाओं का रूप लेकर सामाजिक या धार्मिक मान्यतायें प्राप्त करती रही हैं। इन विविधताओं के पीछे यदि कोई तथ्य रहा होता और उसे जाना गया होता तो निश्चय ही विभिन्न क्षेत्रों या वर्गों ने किसी एक निष्कर्ष पर पहुँचने और एक प्रचलन अपनाने का प्रयत्न किया होता। पर जब कल्पनायें ही मान्यता बनने लगें, तब फिर 'अपनी ढपली अपना राग' की उक्ति ही कार्यान्वित होगी। इस सन्दर्भ में कुछ प्रचलन विचारणीय हैं जो बने, चले और साथ ही बदलते भी रहे हैं।

जापानी सम्प्रदाय में मुख्यतः शीन्गोन एवं अन्य बौद्धों में, जोड़ो मत के अनुसार मृतक के मस्तिष्क का वास्तविक अथवा शनुरूपण मुण्डन स्वर्ण क्षुरिका से ही किया जाता है। दुष्ट आत्मा को ढूँढ़ निकालने तथा आत्मा के निर्णयन को चित्रण करने के लिये, प्राचीन चीन में, दर्पण का उपयोग जादू-टोने द्वारा किया जाता था। उसी तरह से बौद्ध जापान में कांस्य दर्पण को मृतक के मस्तिष्क के पास रखा जाता था। मिस्र में हेलेनिस्तिक समय से पहले ताँबे के दर्पण को मृतक के मस्तिष्क के नीचे रखा जाता था। वैदिक और ब्राह्मण काल में भारत के सम्पन्न समुदाय में मृतक के मुख एवं शरीर के अन्य छिद्रों में स्वर्ण के छोटे टुकड़े भरने की प्रथा प्रचलित थी और प्राचीन चीन में अनगढ़ पत्थर के टुकडे इस प्रयोजन की पूर्ति करते थे। हेलेनिस्तिक समय से पहले मीसेन्ये में शव के नकाब में स्वर्ण, ताँबा, ठोस पत्थर, बहुरंगी, मृण्मूर्ति एवं अन्य पदार्थों का उपयोग होता था। जबकि ईसाई के जन्म से पूर्व मिश्र, पेरु तथा अन्य जगहों में चेहरे को लाल रंग के कपड़े से लपेटना पर्याप्त समझा जाता था। अन्तर्वती 'जगत में जाते समय राह खर्च के लिये मीसेन्ये, ग्रीस तथा रोम में शव के मुँह में तथा जापान में थैली में रखे जाते थे।

अन्त्येष्टि के समय शव को अक्सर अर्थी के साथ ही जला दिया जाता है। बौद्ध राष्ट्रों में उदाहरण के लिये कम्बोडिया और थाइलैण्ड में शव पेटी, जो लकड़ी और कागज की बनी रहती है को पवित्र प्राणी का रूप दिया जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है और उसे चिता, जो चारों तरफ से कपड़े में लपेटी रहती है, में जला दिया जाता है। भारत में, चिता पूरी तरह से जल जाने के बाद, भस्म को कलश में भरकर निष्कासित किया जाता है। इस तरह के कलश के आकार और बनावट में जगह-जगह विभिन्नता देखने को मिलती थी। वे पक्की मिट्टी, पत्थर, चट्टान, सिलखड़ी काँसा, चाँदी, सोना, मिट्टी तथा अन्य पदार्थ के बने रहते हैं।

प्राचीन मिश्र और हड़प्पा संस्कृति के तथा आदिम और प्रागैतिहासिक लोगों में शव को वृक्ष तन्तु से बनी चटाई से लपेटा जाता था। शव पेटी की कभी-कभी नक्काशी व रंगाई भी की जाती थी। प्राचीन रोम और आदिम लोगों की शव पेटी एक तरह से कच्ची रहती थी, जो वृक्ष के धड़ को खोखला कर बनाई जाती थी। हेलेस्तिनिक समय से पूर्व, मिश्र की बहुरंगीय लकड़ी की शव पेटी अथवा हान वंश से पूर्व की अनगढ़ पत्थर से जड़ित शव पेटी को मनुष्य का प्रारूप दिया जाता था, यद्यपि बहुलता लकड़ी से बनी अण्डाकार शव पेटी की ही रहती थी। प्राचीन ग्रीस में शव पेटी सरु की बनती थी। निस्बती, जापानी बौद्धों एवं शिण्टों की शव पेटियाँ घनाकार रहती थीं, जिसमें शव को बैठी या झुकी हुई स्थिति में रखा जाता था। वाइकिंग जैसे कुछेक तटवर्ती लोगों में मृतक को उसकी नाव में ही दफनाया जाता था अथवा समुद्र में ले जाकर नाव सहित डुबो दिया जाता था।

प्रागैतिहासिक समय से ही मृतक के साथ साधारण वस्तुयें उसकी शव पेटी अथवा कब्र में रखने की प्रथा प्रचलित थी। उन सर्व साधारण वस्तुओं में खाने-पीने के पात्र, सुराही, अस्त्र-शस्त्र, उपकरण तथा गहने और जवाहरात रहते थे। प्राचीन चीन के उच्च प्रकार के एकत्रित अन्त्येष्टि पदार्थों को प्रकाश में लाया जा सका है किन्तु सम्पूर्ण मृतक की अधिकतम सज्जा तो मिस्र की कब्र में ही देखने को मिलती है, जहाँ उस समय के सभी दृश्य भीतरी दीवारों पर चित्रित अथवा नक्काशी द्वारा उत्कीर्ण किये गये हैं। अन्त्येष्टि की प्रतिमाओं में प्राचीन मिस्र एवं चीन के हान, टेंग और मींग के समय के घर कुआँ, खेत, मवेशी और सेना का उपयोग लघुमूर्ति के रूप में किया जाता था। मिस्र के अन्त्येष्टि पदार्थों में मृतक के साथ उसके परिजन भी सम्मिलित रहने की लघुमूर्तियाँ देखने को मिलती हैं, जबकि चीन में परिजनों के साथ नर्तकी, वादक और सेना की लघुमूर्ति देखने को मिली है। शाही ताबूत में प्राप्त प्रतिमायें सम्भवतः पहले से बलिदान दिये गये नौकर-चाकरों के स्मृति-चिन्ह हैं।

ग्रीक और रोमन समुदायों में ऐसी मान्यता प्रचलित है कि मरने के बाद मनुष्य को नारकीय नदी पार करनी पड़ती है। नाविक को उतराई देने के लिये मृतक के मुख में पैसे रखे जाते हैं ताकि ऐसे अवसरों पर उसे आर्थिक तंगी से कष्ट का अनुभव न हो।

पुरा पाषाण युगीन लोग न केवल मृतक को दफन करते थे बल्कि इस आयोजन को धार्मिक अनुष्ठान का रूप देते थे। वे खाद्यान्न तथा अन्य जीवनोपयोगी उपकरणों का, इसके लिये प्रबन्ध करते थे। ऐसा विकास किया जाता था कि मृतक को कब्र में इनकी जरूरत पड़ती है।

चीन में मरणासन्न व्यक्ति को नहलाकर उसकी दाढ़ी तथा नाखून काटकर बैठा दिया जाता है ताकि उसकी आत्मा को प्रस्थान करने में सरलता रहे।

मुस्लिम धर्म में ऐसा बताया गया है कि मरणासन्न व्यक्ति का मुख मक्का की तरफ रखना चाहिये। इससे उसे सद्गति मिलती है।

मध्य युगीन ईसाई धर्म में ऐसी मान्यता थी कि जीवन के अन्तिम क्षण अत्यधिक संकट पूर्ण होते हैं। मृत्यु शैय्या के आसपास मंडराती रहने वाली दुष्टात्मायें, अन्तिम श्वांस के साथ प्रस्थान करने वाली आत्मा को दबोचने के लिये तत्पर रहती हैं। उनकी छाया से मरणासन्न व्यक्ति की रक्षा हेतु कई तरह के धार्मिक कर्मकाण्डों का प्रचलन था।

प्राचीन ईरान के पवित्र धर्म ग्रन्थों में मृत व्यक्ति को उचित रीति से न दफनाये जाने पर रोग तथा अन्य अनेकानेक विभीषिकायें व विपत्तियाँ आने का उल्लेख मिलता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मध्य युगीन कैथोलिकवाद के समय की अन्त्येष्टि विधि में काला कपड़ा पहनने, अविरंजित मोमबत्ती का उपयोग करने व चर्च में गम्भीर घंटा नाद करने की परिपाटी थी शव को शोक ग्रस्त धर्म गुरु और शोकातुरों के जुलूस के साथ भजन-स्तोत्र गाते तथा सुगन्धि जलाते चर्च में जमा कर दिया जाता था। काले कपड़े में लिपटी शवपेटी को चर्च में जमा कर दिया जाता था। वहाँ उसे सुगन्धि द्रव्य से गंधमय किया जाता था और उस पर मन्त्रोच्चार सहित पवित्र जल का छिड़काव किया जाता था। इसके बाद शव को प्रतिष्ठित भूमि में दफना दिया जाता था।

अफ्रीका में दक्षिणी सूडान की अलवीया जनजाति में अन्त्येष्टि क्रिया के समय शोक प्रदर्शन एक विशिष्ट नृत्य किसी धर्मानुष्ठान की तरह सम्पन्न किया जाता है। संध्या के समय मृतक के बिरादरी की 30 स्त्रियाँ अपने शरीर को मिट्टी से पोतकर जंगली लता से निर्मित आभूषण पहनती हैं तथा किसी एक आम्र वृक्ष के चारों ओर एक पंक्ति में खड़ी होकर नृत्य करती हैं।

भारत की धार्मिकता, संवेदनशीलता एवं परम्परा अनुगामिता जैसे कारणों से इस सम्बन्ध में अन्य देशों की तुलना में अधिक ऊहापोह किया गया है और अन्त्येष्टि कृत्य से लेकर मरणोत्तर संस्कार के कितने ही प्रतिपादन एवं निर्धारण बने हैं। उनमें से कितने ही उत्साह-पूर्वक प्रचलित भी हैं।

द्रष्टव्य यह है कि व्यक्तिगत सन्तोष की दृष्टि से जो सरल सुगम है, उसे सम्पन्न करने में किसी बड़ी आपत्ति की आवश्यकता नहीं है किन्तु जहाँ उसका प्रभाव देश की आर्थिक, नैतिक या सामाजिक स्थिति पर पड़ता हो वहाँ उस पर दूरदर्शितापूर्वक विचार किया जाय और जहाँ परिवर्तन की आवश्यकता हो वहाँ उसे बिना किसी भय आशंका के बदल दिया जाये।

मृतक को परलोक में धन राशि या सुविधा-साधन पहुँचाने की दृष्टि से अमुक वर्ग के लोगों को ढेरों दान करने में उथली भावुकता के अतिरिक्त और कोई तथ्य काम करता नहीं दीखता। ऐसे कृत्यों का समर्थन करने वाले शास्त्र वचन जो अपने समय की मात्र प्रथा का ही वर्णन करते हैं। कोई आधारभूत कारण न होने पर उन्हें पत्थर की लकीर मानने जैसा कोई कारण दीखता नहीं। दान देना हो तो इस दृष्टि से देना चाहिये कि मृतात्मा के प्रति स्नेह सद्भाव का प्रकटीकरण होने के साथ-साथ उस निमित्त लगाये गये श्रम एवं धन के उपयोगी प्रयोजनों में लगने पर सत्प्रवृत्ति संवर्धन जैसे सराहनीय प्रयोजन की पूर्ति भी होती रहे। इस दृष्टि से मृतक भोजों में खर्च होने वाली विपुल धन राशि का प्रवाह ऐसे कार्मों की ओर मोड़ना चाहिये, जिससे भाव श्रद्धा को अन्ध परम्परा से विरत करके लोकोपयोगी प्रयोजन में लगाया जाना सम्भव हो सके।

अन्त्येष्टि संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा

सम्मान्यः सादरं मृत्युर्जीवनस्यान्तिमोऽतिथिः।
नियन्ता सर्वविश्वस्य तस्मात्प्रसन्नचेतसा।। १।।

जीवन का अन्तिम अतिथि मृत्यु समस्त विश्व का नियन्ता है अतः प्रसन्नचित्त से आदर योग्य है।

अस्थिरा विश्वसम्बन्धा आत्मा सदाजरोऽमरः।
सन्त्यात्मनः स्वतन्त्रास्ते सम्बन्धाः समयानुगाः।।२।।
परिवर्त्तनशीलाश्च, तेषामत्र भवार्णवे।
प्राणाः स्वकर्मयन्त्रेण परिभ्रमन्ति चक्रवत्।। ३।।

विश्व के समस्त सम्बन्ध अनित्य हैं आत्मा सदैव अजर और अमर है। वे आत्मायें स्वतन्त्र हैं, सम्बन्ध समय के अनुयायी (कालगत) एवं परिवर्तनशील है। यहाँ उन (सम्बन्धों) के भवसागर में प्राण अपने कर्म यन्त्र के द्वारा चक्र की भाँति घूमते हैं।

अन्येषामस्ति केभ्योऽपि तस्माच्चिन्ता निरर्थका।
तथ्यं वास्तविकं नास्ति शोके किञ्चिदपि ध्रुवम्।। ४।।

इसीलिये किसी के लिये अन्यों की चिन्ता व्यर्थ है। शोक में वास्तविक तथ्य का निश्चय ही कुछ भी नहीं है।

मोहजं केवलं शोकमज्ञानं, प्रतिबिम्बजम्।
मत्वा क्लेशमयं ह्येतद् ज्ञानबुद्धया परित्यजेत्।। ५।।

शोक को केवल मोहजन्य मानकर विवेक बुद्धि से त्याग दे। अज्ञान के प्रतिबिम्ब से उत्पन्न यह शोक केवल कष्टयुक्त है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मत्या वस्तुस्थितिं ज्ञात्वा ज्ञानासिना विदीरयेत्।
विपत्तिं शोकरूपां तां मनोदेहविनाशिनीम्।। ६।।

बुद्धि से वस्तु स्थिति को जानकर ज्ञान रूपी खड्ग से मन और शरीर का विनाश करने वाली उस शोक नाम की विपत्ति को विदीर्ण कर दे।

मोहोद्भवो ह्यं शोकः शोकाद्बुद्धिविपर्ययः।
तस्मादवनतिर्नूनं शोकस्त्ज्यो मनीषिभिः।। ७।।

मोह से उत्पन्न यह शोक है, शोक से बुद्धि का विपर्यय होता है, बुद्धि विपर्यय से अवनति होती है। अतः निश्चय ही शोक सर्वथा त्याज्य है।

नेतव्यं शिक्षणं सम्यक् निधनात्मकशिक्षकात्।
इष्टं भंगुरदेहेन ह्यात्मनो हित साधनम्।। ८।।
अस्त्ये वेदं बुद्धिमत्वं लोके तद्वस्तुतः स्मरन्।
नश्वर देहाय चालं घातेनेहात्मनः खलु।।९।।

उस मृत्यु शिक्षक से यह शिक्षा भली प्रकार जानने योग्य है कि इस नाशवान शरीर से आत्मा का हित साधन करना यही वास्तविक बुद्धिमानी है। यह स्मरण करते हुये आत्मा की हानि नहीं करनी चाहिये।

अमूल्यः समयो ह्येतन्महाकालस्य शिक्षणम्।
विषयासक्तमनुष्येभ्यो निर्देशो हित साधकः।। १०।।

"समय अमूल्य है" महाकाल का शिक्षण है और विषयासक्त मनुष्य के लिये हित साधन करने वाला निर्देश है।

विनाशशीलो देहोऽयं गृहीतः शश्वदात्मना।
मृत्युः शिक्षयति नित्यं सम्बन्ध कल्पनोद्भवाः।। ११।।

यह विनाशशील शरीर नित्य अविनाशी आत्मा से धारण किया गया है। मृत्यु शिक्षा देती है कि समस्त सम्बन्ध काल्पनिक हैं।

पति पुत्रादयः सर्वे लोके सन्त्यल्पकालिकाः।
अभावे कस्यचित्कार्यमवरुद्धं न कस्यचित्।। १२।।

पति-पत्नी, पिता-पुत्र इत्यादिक सम्बन्ध थोड़े समय के लिये हैं, किसी के अभाव में किसी का कार्य अवरुद्ध नहीं होता।

विलोक्य मृत्युमन्येषां स्वमृत्युं चिन्तयेद् हृदि।
स्वात्मोत्थाने भवेल्लग्नो भूत्वा शीघ्रं सचेतनः।। १३।।

दूसरों की मृत्यु को देखकर अपनी मृत्यु का हृदय में विचार करे। अपनी आत्मा के उत्थान के लिये शीघ्र संलग्न होकर सचेत हो जाये।

रोदनापेक्षया कुर्यात्सुव्यवस्थां मृतात्मनः।
समाश्रितासमर्थानां पुत्रादीनां समाचरेत्।। १४।।
कल्याणमयकर्माणि मृतात्मनः सुशान्तये।
तच्छेषोत्तरदायित्वं विदधेच्च शुभेच्छया।। १५।।

इस प्रकार रोदन करने की अपेक्षा उस मृतात्मा के आश्रित असमर्थ पुत्रादिकों की अच्छी व्यवस्था करें तथा उस दिवंगत आत्मा की भली प्रकार शान्ति के लिये कल्याणमय कार्य करे और उसके अवशेष उत्तरदायित्व को सद्भावना से पूरा करें।

दुःखशोकविषादानां लाभो नास्त्यन्ततः क्वचित्।
विविच्यैवं प्रदेया तु परिवाराय सान्त्वना।। १६।।
कर्तुं यः प्रयतेन्मृत्योः रहस्यान्वेषणं तथा।
विजेतुमस्मिन् लोके सयत्नस्तं भवेत्सदा।। १७।।

अन्ततः दुःख शोक तथा विषाद से कुछ भी लाभ नहीं है ऐसा विचार कर अपनी ओर से परिवार को सान्त्वना देने के लिये प्रयत्न करे तथा मृत्यु के रहस्य का अन्वेषण कर उस पर विजय पाने को तत्पर होवे।

अथवैवं स्थितिं प्राप्तुं पुरुषार्थं समाचरेत्।
यतो ह्यात्मदर्शनं स्याद्विना क्लेशेन जीवने।। १८।।
पश्येन्मृत्युं दिनान्ते वै रात्रेः प्रवेशवत्तथा।
सामान्यतो देहत्यागे वस्त्र त्यागादिवाथवा।। १९।।

या ऐसी स्थिति के पाने के पुरुषार्थ में तत्पर होना चाहिये, जिससे आत्मा बिना क्लेश और व्याकुलता के दिवसोपरान्त रात्रि प्रवेश के सदृश देखने में समर्थ हो सकें। अथवा साधारणतया वस्त्र परिवर्तन के सदृश शरीर त्याग को समझे।

सञ्चयो वासनानीतिस्तृष्णा द्वेषोऽहंकृतिः।
निरर्थकाः षडेते वै तनोः प्रवचनं स्मृतम्।। २०।।

संचय, वासना, अनीति, तृष्णा, द्वेष, अहंकार यह छः निश्चय ही निरर्थक हैं यह (नश्वर) शरीर का प्रवचन है।

परमार्थः संयमो ज्ञानमात्मा धर्मः समादृतः।
सत्यानीमानि षड् वह्नेश्चिताया घोषणा शुभा।। २१।।

परमार्थ, संयम, सेवा, ज्ञान, आत्मा तथा धर्म यह छः सत्य हैं चिता कि वह्नि की यह शुभ घोषणा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्त्येष्टि संस्कार विधि

संस्कार प्रयोजन—भारतीय संस्कृति यज्ञीय आदर्शों की संस्कृति है। जिन्दगी जीने का सही तरीका यह है कि उसे यज्ञीय आदर्शों के अनुरूप जिया जाये। उसका जब अवसान हो तो भी उसे यज्ञ भगवान की परम-पवित्र गोदी में ही सुला दिया जाये यह उचित है। जीवन की समाप्ति यज्ञ आयोजन के लिये ही होनी चाहिये। यों स्थूल रूप से अग्नि जलाकर उसमें कोई वस्तुयें होमना यज्ञ या अग्निहोत्र कहलाता है। पर उसका तात्विक अभिप्राय परमार्थ प्रयोजन से ही है। जिस प्रकार मेवा, मिष्ठान्न, घृत, औषधि आदि कीमती एवं आवश्यक वस्तुओं को वायु शुद्धि के लिये बिखेर दिया जाता है, उसी प्रकार मानव वैभव की समस्त विभूतियों को विश्व मंगल के लिये बिखेरते रहा जाय—यही तात्विक यज्ञ है। अग्निहोत्र के द्वारा होताओं को यह भावना ही हृदयंगम करनी पड़ती है। स्वार्थपरता की पाशविकता से छुटकारा पाकर परमार्थ प्रवृत्तियों को विकसित करने का उत्साह जागृत करना पड़ता है।

पूर्व व्यवस्था—अन्त्येष्टि संस्कार के समय शोक का वातावरण होता है। अधिकांश व्यक्ति ठीक प्रकार सोचने-करने की स्थिति में नहीं होते इसलिये व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना पड़ता है। सन्तुलित बुद्धि के अनुभवी व्यक्तियों को इसके लिये सहयोगी के रूप में नियुक्त कर लेना चाहिये। व्यवस्था के सूत्र इस प्रकार हैं—

• मृतक के लिये नये वस्त्र, मृतक शैय्या (ठठरी) उस पर बिछाने-उढ़ाने के लिये वस्त्र एवं कुश तैयार रखें।

• "मृतक शैय्या की सज्जा के लिये पुष्प-झण्डियाँ आदि परिस्थितियों के अनुरूप उपलब्ध कर लें।

• "पिण्डदान के लिये जौ का आटा एवं एक पाव जौ, तिल, चावल आदि मिलाकर तैयार कर लें। यदि जौ का आटा न मिले तो गेहूँ के आटे में जौ मिलाकर गूंथ लिया जाता है।

• "कई स्थानों पर संस्कार के लिये अग्नि घर से ले जाने का प्रचलन होता है। यदि ऐसा है तो उसकी व्यवस्था कर ली जाय अन्यथा श्मशान घाट पर अग्नि लेने अथवा मन्त्रों के साथ माचिस से अग्नि तैयार करने का क्रम बनाया जा सकता है।

• "पूजन की थाली, रोली, अक्षत, पुष्प, अगरबत्ती, माचिस आदि उपलब्ध कर लें।

• "सुगन्धित हवन सामग्री, घी, सुगन्धित समिधायें, चन्दन अगर-तगर, सूखी तुलसी आदि समयानुकूल उचित मात्रा में एकत्रित कर लें।

• "यदि वर्षा का मौसम हो तो अग्नि प्रज्ज्वलित करने के लिये सूखा फूँस, पिसी हुई राल, बूरा आदि पर्याप्त मात्रा में रख लेना चाहिये। लकड़ियाँ गीली रहने पर कभी-कभी लाश जलने में परेशानी हो जाती है।

• "पूर्णाहुति (कपाल-क्रिया) के लिये नारियल का गोला छेद करके घी डालकर तैयार रखें।

• "वसोर्धारा आदि घृत की आहुति के लिये एक लम्बे बाँस आदि में लोटा या अन्य कोई ऐसा पात्र बाँधकर तैयार कर लिया जाय, जिससे घी की आहुति दी जा सके।

क्रम व्यवस्था—अन्त्येष्टि संस्कार भी अन्य संस्कारों जैसा दिखावा बनकर रह गया है। इसे भी संस्कार की गरिमा दी जानी चाहिये। मृतात्मा की सद्गति के लिये किये जाने वाले कर्मकाण्ड के समय, उसे कराने वाले पुरोहित, करने वाले सम्बन्धी तथा उपस्थित हितैषियों सभी का भावनात्मक एकीकरण किया जाना आवश्यक होता है।

इस कर्मकाण्ड के समय संचालक को विशेष विवेकशीलता तथा सन्तुलित वास्तविकता का प्रमाण देना होता है। मृत्यु के साथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दर्शन एवं प्रेरणायें जुड़ी हैं किन्तु शोक के वातावरण में केवल आदर्शवादिता के भाषण बेतुके लगते हैं, इसलिये हर महत्त्वपूर्ण शिक्षण संवेदनाओं के साथ जोड़कर सन्तुलित शब्दों में किया जाना चाहिये।

संस्कार के दो वर्ग किये जा सकते हैं—(१) घर पर और मार्ग में, (२) श्मशान घाट पर किये जाने वाले संस्कार। पूर्व व्यवस्था के संकेतों के अनुसार सारी व्यवस्था घर पर ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जुटा लेनी चाहिये। घर के अन्दर मृतक को नहला-धुलाकर, वस्त्र पहनाकर तैयार करने का क्रम तथा बाहर शैय्या (ठठरी) तैयार करने, आवश्यक सामग्री जुटान का क्रम एक साथ चालू किया जा सकता है। अन्दर शव संस्कार कराके, संकल्प, पिण्डदान करके शव बाहर लाकर शैय्या (ठठरी) पर रखा जाता है, वहाँ प्राथमिक पुष्पाञ्जलि देकर श्मशान यात्रा आरम्भ कर दी जाती है।

शव संस्कार

दिशा एवं प्रेरणा—भारतीय संस्कृति, देव संस्कृति जीवन के अनन्त प्रवाह को मान्यता देती है। मृत्यु जीवन का छीन लेने वाली भयावनी वस्तु नहीं, जीवन का जीर्णोद्धार करने वाली हितकारी प्रक्रिया मानी जाती है। जब आत्मा महत्-तत्व की ओर बढ़ गई तो शरीरगत पंचतत्वों को भी पंच महाभूतों में परिवर्तित करा देते हैं। जीवात्मा को सद्गति देने यथा कायागत पंचतत्वों का पंच महाभूतों में मिलाने के लिये यज्ञीय परिपाटी अपनाई जाती है। इसलिये शव को पवित्र किया जाता है।

शोक इस पुण्य प्रक्रिया में बाधक बनता है। दुःख स्वाभाविक है। दुःख उसे होता है जिसे मृतात्मा से स्नेह हो, उस स्नेह को जीवन्त रखना चाहिये, परन्तु उसे शोकपरक बनाने से मृतात्मा की सद्गति को महत्त्व देते हुये निर्धारित कर्मकाण्ड में भावनात्मक योग सभी को देना चाहिये। सभी का ध्यान आकर्षित करके संस्कार के अनुरूप वातावरण बनाकर क्रम आरम्भ किया जाय।

प्रथा के अनुसार कई जगह घर में ही स्नान कराके ले जाते हैं, कई जगह नदी समीप हो तो वहाँ स्नान कराते हैं, घर पर स्नान कराने में यह लाभ है कि स्वच्छ वस्त्र भी वहाँ आसानी से और ठीक तरह पहनाये जा सकते हैं।

क्रिया और भावना—घर में भूमि धोकर गोबर से लीपकर शुद्ध करके, इस पर स्वस्तिक आदि लिखकर तैयार रखें। शव को शुद्ध जल, गंगाजल से स्नान कराकर या गीले कपड़ों से पोंछकर, शुद्ध वस्त्र पहनाकर उस स्थान पर लिटायें।

मृतक कर्म करने वाले पवित्र जल लेकर परस्पर सिंचन करें। भावना करें कि शरीरगत पंचभूतों को यज्ञ के उपयुक्त बना रहे हैं। भूल से इनका उपयोग गलत कार्यों में हुआ तो शरीर यज्ञ के पूर्व उन कुसंस्कारों को दूर कर रहे हैं। 'ॐ आपोहिष्ठा' इत्यादि मन्त्र बोलकर शव स्नान करावें।

अब चन्दन एवं पुष्पादि से शव को सजायें। भावना करें कि पंचभूतों को ऐसा संस्कार दे रहे हैं, जो भविष्य में किसी का शरीर बने तो उसके आदर्शनिष्ठ जीवन में पूर्ण सहायक सिद्ध हों। निम्नांकित मन्त्र बोलते हुये शव को सजायें।

ॐ यमाय सोमं सुनुतऽयमाय जुहता हविः।
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः।।

—ऋ० १०।१४।१३

इसके बाद अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला दक्षिण दिशा को मुख करके बैठे। पवित्री करण करे फिर हाथ में यव-अक्षत, पुष्प, जल, कुश लेकर संस्कार का संकल्प करे—

. . . . . **नामाऽहं (मृतक का नाम) प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्या उत्तम लोक प्राप्त्यर्थं और्ध्वदैहिकं करिष्ये।**

संकल्प के बाद प्रथम पिण्डदान करें (मन्त्र आगे है) फिर शव उठाकर बाहर शव शैय्या (ठठरी) तक लायें। भावना करें कि यह यात्रा सभी को करनी है, इसलिये अपने कर्मों को करने योग्य कर्मों की तुलना में तौलते रहें।

मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त ँ शरीरम्।
ॐ क्रतो स्मर, कृत ँ स्मर क्रतो स्मर क्रत ँ स्मर।।

—ईशोपनिषद् १७

शैय्या पर शव लिटाने के बाद उसे बाँधें, सज्जित करें और दूसरा पिण्ड अर्पित करें।

अब सभी उपस्थित जन पुष्पांजलि दें। हाथ में पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन बोलें। भावना करें—मृतक की सद्गति के लिये तथा स्वयं सद्गति की पात्रता पाने योग्य कर्म करने की प्रबल आकांक्षा व्यक्त करते हुये सूक्ष्म जगत की दिव्य शक्ति का सहयोग भरा वातावरण निर्मित कर रहे हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वस्तिवाचन के बाद पुनः 'ॐ क्रतो स्मरः' मन्त्र बोलते हुये पुष्प अर्पित करें। तत्पश्चात् 'ॐ अग्ने नय सुपथा राये' · · · · · · मन्त्र बोलते हुये शव यात्रा प्रारम्भ की जाय।

पिण्डदानम्

दिशा एवं प्रेरणा—अन्त्येष्टि संस्कार के साथ पाँच पिण्डदान किये जाते हैं, यह एक कठोर सत्य को मान्यता देना है। जीव चेतना शरीर से बँधी नहीं है, उसे सन्तुष्ट करने के लिये शरीरगत संकीर्ण मोह से ऊपर उठना आवश्यक है। जीवात्मा की शान्ति के लिये, व्यापक जीव चेतना का तुष्ट करने के लिये मृतक के हिस्से के साधनों को अर्पित किया जाता है। पिण्डदान इसी महान परिपाटी के निर्वाह की प्रतीकात्मक प्रक्रिया है।

क्रिया और भावना—एक-एक पिण्ड दाहिने हाथ में लिया जाये। उस पर पुष्प, कुश, जल यव, तिलाक्षत डालकर मन्त्र बोला जाये। मन्त्र समाप्ति पर अँगूठे की ओर से (पितृ तीर्थ मुद्रा से) पिण्ड निर्धारित स्थान पर चढ़ाया जाये। भावना करें कि जीवात्मा का हित-सन्तोष शरीर तक ही सीमित नहीं इसके बाद भी है, उसी व्यापक हित और सन्तोष के लिये प्रयास किया जा रहा है।

प्रथम पिण्ड, घर के अन्दर शव संस्कार करके संकल्प के बाद दिया जाय। पिण्ड पेडू (कटि प्रदेश) पर रखा जाये।

· · · · · **नामाऽहं** · · · · · **(मृतक नाम)** · · · · **मृतिस्थाने शवनिमित्तको ब्रह्मदैवतो वा एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्टताम्।**

दूसरा पिण्ड बाहर शव शैय्या (ठठरी) पर शव स्थापना के बाद दिया जाये। पिण्ड पेट पर रखा जाये।

· · · · · **नामाऽहं** · · · · · **(मृतक नाम)** · · · · · **द्वारदेशे पान्थ निमित्तको विष्णुदैवतो वा एष ते पिण्डो मया दीयते तवो पतिष्ठताम्।**

तीसरा पिण्ड मार्ग में विश्रामस्थल पर दिया जाये। पिण्ड पेट और वक्ष की सन्धि पर रखा जाय।

· · · · · · **नामाऽहं** · · · · · · **(मृतक नाम)** · · · · · **खेचर-निमित्तक एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

चौथा पिण्ड श्मशान घाट पर शव रखने पर अर्पित करें। पिण्ड वक्ष (छाती) पर चढ़ावें।

· · · · · · · **नामाऽहं** · · · · · **(मृतक नाम)** · · · · · · · **विश्रान्तान्तिनिमित्तको भूतनाम्ना रुद्रदैवतो वा एष ते पिण्डोमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पाँचवां पिण्डदान चितारोहण के बाद किया जाये। पिण्ड शिरोभाग पर स्थापित करें।

· · · · · · **नामाऽहं** · · · · **(मृतक नाम)** · · · · · **चितास्थाने वायु निमित्तको यम दैवतो वा एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

भूमि-संस्कार

दिशा एवं प्रेरणा—श्मशान घाट पर पहुँचकर शव उपयुक्त स्थान पर रखें और चौथा पिण्ड दें, साथ ही चिता सजाने के लिये स्थान झाड़-बुहार कर साफ करें, जल से सिंचन करें, गोबर से लीपें, उसे यज्ञ वेदी की तरह स्वच्छ और सुरुचिपूर्ण बनायें। एक टोली पहले से पहुँचकर कार्य सम्पन्न करके रखती है चिता सजाने के पूर्व मन्त्रों से उपचार किया जाये।

धरती माता के ऋण को याद रखा जाय। उसी की गोद से उठे थे, उसी में सोना है, उसे बदनाम करने वाले आचरण हमसे न बन पड़े। धरती माँ से श्रेष्ठता के संस्कार माँगते पाते रहें। श्मशान भूमि-जो जीवन को नया मोड़ देती है, जहाँ सिद्धियाँ निवास करती हैं, उसे प्रणाम किया जाये, पवित्र बनाकर प्रयुक्त किया जाय।

क्रिया और भावना—तैयार भूमि के पास अन्त्येष्टि करने वाला व्यक्ति जाय, उसकी परिक्रमा हाथ जोड़कर करे तथा उसे नमन करे। भावना करे कि यह सिद्धिदायिनी भूमि मृतात्मा को वांछित उपलब्धियाँ देने वाली सिद्ध हो। मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वासाम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।

—यजु. ६।३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमि सिंचन पूजन—अब जल पात्र लेकर मन्त्र के साथ कुशों से भूमि का सिंचन करें। भावना करें कि इस यज्ञ भूमि को मन्त्र शक्ति से पवित्र किया जा रहा है। मन्त्र निम्नांकित है—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।। —यजु. २४।३

ॐकार लेखनम्

तीसरे मन्त्र के साथ मध्यमा उँगली से भूमि पर ॐ लिखें, पूजित करें। भावना करें कि भूमि के दिव्य संस्कारों को उभारा-बलिष्ठ बनाया जा रहा है।

ॐ ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवासऽआगत। दाश्वा ऽ सो दाशुषः सुतम्। उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्य ऽएष तेयोनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः।। —यजु. ७।३३

मर्यादाकरणम् (समिधारोपण)

यज्ञ-कुण्ड या वेदी के चारों ओर मेखलायें बनाई जाती हैं, उस आवश्यकता की पूर्ति चार बड़ी-बड़ी लकड़ी चारों दिशाओं में उपस्थित करके की जाती हैं। यह लकड़ियाँ चिता के चारों छोरों पर उसकी सीमा बनाने वाली होनी चाहिये। शेष लकड़ियाँ इन चारों के भीतर ही रखी जाती हैं। दाह-क्रिया करने वाला व्यक्ति समिधाओं को स्थापित करे।

दिशा एवं प्रेरणा—जीवन चारों दिशाओं में मर्यादित है। व्यक्ति की हर दिशा में मर्यादा है, उसे उसी घेरे में, उसी दायरे में रहना चाहिये। मर्यादाओं का उल्लंघन कर उच्छृंखल नहीं बनना चाहिये। यह निर्देश मृत शरीर में चारों ओर चार समिधायें स्थापित करके किया जाता है। (विस्तृत जानकारी के लिये विवेचन प्रकरण' में देखें)

पहली समिधा (पूर्व दिशा में)

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चार के साथ पूर्व दिशा में समिधा स्थापित करें। यह समिधा धन-सम्बन्धी मर्यादा पालन करने की है। सभी उपस्थित जन भावना करें कि धन-साधनों के उपयोग की मर्यादा स्वीकार करते हैं। मृतक से उस दिशा में कुछ भूलें हुई हों तो उसके हितैषी के नाते अपने साधनों के एक अंश को सत्कार्य में लगाकर, उसका पुण्य समिधा के साथ स्थापित करते हैं, मृतात्मा की सद्गति की कामना करते हैं। इसका मन्त्र निम्न प्रकार है—

ॐ प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमऽइषुभ्यो नमऽएभ्यो अस्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। १।।

—यजु ३।२७।१

दूसरी समिधा (दक्षिण दिशा में)

क्रिया और भावना—मन्त्रोच्चार के साथ दक्षिण दिशा में दूसरी समिधा स्थापित की जाये। यह समिधा काम सेवन सम्बन्धी मर्यादा पालन करने की है। सभी भावना करें कि कामवासना की मर्यादा का सिद्धान्त अंगीकार करते हैं। मृतक से इस दिशा में कुछ भूलें हुई हों तो उसके परिजन के नाते, उनके परिष्कार के लिये तपश्चर्यापूर्वक परिष्कार करेंगे। न्यूनतम तीन दिन तक दृष्टि और आचरण की पवित्रता बनाये रखने का तप करते हुये मृतात्मा की सद्गति की प्रार्थना करेंगे। यह पुण्य दूसरी समिधा के साथ स्थापित करते हैं। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ॐ दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितरऽइषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमऽइषुभ्यो नमऽएभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तम् वो जम्भे दध्मः।। २।। ऊर्ध्व. ३/२७/२

तीसरी समिधा (पश्चिम दिशा में)

क्रिया और भावना—तीसरी समिधा यश मर्यादा की है। इसे मन्त्रोच्चार करते हुये पश्चिम दिशा में स्थापित करें। सभी जन लोकेषणा को सीमित रखने का महत्त्व स्वीकार करें। भावना करें कि इस दिशा में मृतक से कोई भूलें हुई हों तो उसके ही हितचिन्तक होने के नाते उसके परिष्कार का प्रयास करेंगे। बिना यश की कामना किये तीन घण्टे जन-जन तक सद्विचार साहित्य पहुँचायेंगे। उस पुण्य को तीसरी समिधा के साथ स्थापित करते हैं। मन्त्र इस प्रकार है—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमऽइषुभ्यो नमऽएभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तंवो जम्भे। दध्मः॥ ३॥ —अथर्व १३।२७।३

चौथी समिधा (उत्तर दिशा में)

क्रिया और भावना—चौथी समिधा द्वेष को मर्यादित रखने की है। इसे उत्तर दिशा में मन्त्र के साथ रखा जाये। सभी भावना करें कि द्वेष-दुर्भाव पर अंकुश रखने का पाठ हृदयंगम करते हैं। मृतक से इस प्रकरण में भूलें हुई हों तो उनके शमन के लिये अपना उत्तरदायित्व निश्चित करते हैं। ऐसे व्यक्ति जिनसे अपनी पटती नहीं, उनके द्वारा किये जाने वाले किसी श्रेष्ठ कार्य में स्वयं खुले मन से सहयोग देंगे। इस तप-पुण्य को समिधा के साथ स्थापित करते हैं। मन्त्र निम्न इस प्रकार है—

ॐ उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमऽइषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥ ४॥ —अथर्व, ३।२७।४

चितारोहणम्

मर्यादा की समिधायें स्थापित करने के बाद अनुभवी व्यक्ति वट, पीपल, गूगल, ढाक, आम, अगर-तगर, देवदारु, चन्दन आदि पवित्र एवं सुगन्धित लकड़ियों से चिता सजायें। फिर ठठरी पर रखी हुई मृत काया को उठाकर **'ॐ अग्ने नय सुपथा राये . . . . .** मन्त्र का उच्चारण करते हुये उसे चिता पर सुला दें। यही चितारोहण है।

चितारोहण के बाद पूर्व निर्धारित मन्त्र से पाँचवां पिण्ड दिया जाय, फिर शव के ऊपर भी लकड़ियाँ जमा दी जायें।

शरीर यज्ञ आरम्भ

अग्नि स्थापना—कुशाओं के पुञ्ज में अंगार या जलते कोयले रखकर उसे हवा में इधर-उधर हिलाया जाय, अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठेगी। इस अग्नि समेत एक परिक्रमा मृतक की करके उसे उसके मुख के पास अथवा पूर्व निश्चित ऐसे स्थान पर रख दिया जाय, जहाँ लकड़ियों में आसानी से अग्नि प्रविष्ट हो सके। ऐसा स्थान पहले से ही वायु के लिये खाली और पतली छोटी जल्दी आग पकड़ने वाली समिधाओं से बनाया गया हो। अग्नि स्थापन के समय **'ॐ भूर्भुवः स्वः द्यौरिव भूम्ना . . . . .।'** मन्त्र का पाठ किया जाय फिर 'उद्बुध्यास्वाग्ने . . . . . ' मन्त्र के साथ अग्नि तीव्र करने के लिये आवश्यकतानुसार राल का चूर्ण बूरा आदि झोंकने चाहिये, हवा करनी चाहिये।

घृताहुति—अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाय, तब घी की सात आहुतियाँ दी जायें। इस कार्य के लिये लम्बी डण्डी का चम्मच प्रयोग किया जाये। 'ॐ इन्द्राय स्वाहा' इत्यादि सात मन्त्रों से सात घृत आहुतियाँ वही व्यक्ति करे, जिसने अग्नि प्रवेश कराया हो। यह मृतक। का पुत्र या निकटतम सम्बन्धी होता है।

सामान्याहुति—घृताहुति के बाद सभी लोग सुगन्धित हवन सामग्री से गायत्री मन्त्र बोलते हुये सात आहुतियाँ करें, इसके बाद शरीर यज्ञ की विशेष आहुतियाँ डाली जाती हैं।

विशेष आहुतियाँ (शरीर यज्ञ)

दिशा एवं प्रेरणा—शरीर यज्ञ का प्रधान मन्त्र **'ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां . . . . .** हमें इस तथ्य को हृदयंगम करने और व्यावहारिक जीवन में समाविष्ट करने का निर्देश करता है। मन्त्र में ईश्वरी निर्देश है कि 'मानवीय आयुष्य यज्ञ के लिये हो, वह जब तक जिये परमार्थ के लिये जिये, विराट् ब्रह्म की पूजा-उपासना अपने स्वेद कणों से करता रहे। मैं अपने लिये नहीं समस्त समाज के लिये जीता हूँ—यही सोचता रहे। प्राण, चक्षु, कान, वाणी, मन, आत्मा सब कुछ यज्ञ के लिये ही समर्पित रहे।'

'प्राण यज्ञ के लिये हों। साहस, शक्ति, क्षमता, चातुर्य और प्रतिभा का समस्त कोष लोकहित की बात सोचने में, आयोजन करने में तथा प्रवृत्त रहने में खर्च किया जाय। इन्हें ही पाँच प्राण-क्रमशः प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान कहकर सभी की आहुतियाँ दी जाती हैं।

(शरीर यज्ञ के लिये विस्तृत रूप से विवेचन प्रकरण में "आहुति मन्त्र से ईश्वरीय निर्देश" शीर्षक के अन्तर्गत देखें)

अन्त में शरीर के, व्यक्तित्व के प्रत्येक अंश को यज्ञमय बनाने की घोषणा-प्रेरणा के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ १६ आहुतियाँ पूर्ण की जाती हैं। सत्रहवीं आहुति शरीरगत पंचतत्वों को श्रेष्ठतम दिशा में गति देने की भावना से की जाती है। भावना करते हैं कि चक्षुशक्ति सूर्य की ओर वायु आत्म-तत्व द्युलोक की ओर, पृथ्वीतत्व, धर्मतत्व की ओर जलतत्व हितकारी औषधियों की ओर उन्मुख हों।

क्रिया और भावना—एक-एक मन्त्र से सम्बन्धित संक्षिप्त प्रेरणा दी जाय। सभी भावना करें कि मृतक के व्यक्तित्व के सभी अंश यत्रभूत हो रहे हैं हमारे व्यक्तित्व के सभी अंश यज्ञीय धारा के योग्य बनें। मन्त्र निम्न प्रकार हैं—

१. ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
२. ॐ प्राणो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
३. ॐ अपानो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
४. ॐ व्यानो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
५. ॐ उदानो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
६. ॐ समानो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
७. ॐ चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
८. ॐ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
९. ॐ वाग्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
१०. ॐ मनो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
११. ॐ आत्मा यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
१२. ॐ ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
१३. ॐ ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
१४. ॐ स्वर्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
१५. ॐ पृष्ठं यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।
१६. ॐ यज्ञो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

—यजु० २२।३३

१७. ॐ सूर्य चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथवीं च धर्मणा। अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रतितिष्ठा शरीरैः स्वाहा।

—ऋग्वेद १०।१६।३

सामूहिक जप-प्रार्थना

शरीर यज्ञ के बाद सभी परिजन चिता की ओर मुख करके शान्त भाव से पंक्तिबद्ध होकर बैठें। परस्पर चर्चा-वार्तालाप निषिद्ध कर दिया जाये। आवश्यकता पड़े तो सम्बन्धित व्यक्ति को इशारे से बुलाकर, कुछ दूर हटकर धीमे स्वर में संक्षिप्त चर्चा कर लें। वातावरण शान्त बनाये रखें। सभी लोग गायत्री मन्त्र का मानसिक जप करते हुये मृतात्मा की सद्गति तथा परिजनों के शोक निवारण की प्रार्थना करें। पूर्णाहुति कपाल क्रिया का समय आने तक यह क्रम चालू रखा जाय। श्मशान घाट पर की गई प्रार्थना-साधना का अपना ही महत्व है। तन्त्र विद्या के समर्थक तो उसे अनिवार्य मानते हैं। कपाल क्रिया से पूर्व स्थान न छोड़ने की परिपाटी है। कपाल क्रिया तब तक की जाती है, जब खोपड़ी की हड्डियाँ आग पकड़ लें और तालू भाग में छेद करने की स्थिति बन जाये। उस समय का उपयोग इसी प्रकार जप करके किया जाना चाहिये।

इस बीच एक-दो अनुभवी व्यक्ति चिता की अग्नि संभालते रहें। खिसकने वाली लकड़ियों को उचित स्थान पर जमाने का क्रम बनाये रखें।

पूर्णाहुति—कपाल क्रिया

क्रिया और भावना—अन्त्येष्टि करने वाले सज्जन बाँस हाथ में लें, चिता के शिरोभाग की ओर खड़े हों। सभी लोग खड़े हो जायें, पूर्णाहुति के लिए हवन सामग्री, नारियल-गोला तैयार रखें। सभी के हाथों में पूर्णाहुति के लिये हवन सामग्री तुलसी-चन्दन आदि की लकड़ी के टुकड़े दे दिये जायें। खोपड़ी की हड्डी का मध्य भाग तालु मुलायम होता है वह जोड़ सबसे पहले जलकर खुल जाता है—वहाँ बाँस की नोकों का दबाव देकर छेदकर दें। अब पूर्णाहुति मन्त्र **ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं . . . . . ''** बोलते हुये पूर्णाहुति का गोला बाँस के सहारे सिर के पास रख दिया जाये, सभी लोग सामग्री होमें।

भावना करें कि मस्तिष्क स्थित जीवन संचालक विचार-तन्त्रिका के जाल (सर्किट) को यज्ञीय पुट देकर विश्व चेतना में मिला दिया गया। अपने मस्तिष्क को भी इस संस्कार से युक्त बनाया जा रहा है।

स्थापन

पूर्णाहुति—कपाल क्रिया के बाद चिता शांत होने तक देख-रेख के लिये २-४ व्यक्ति छोड़कर शेष वापिस लौट सकते हैं अथवा स्थानीय परम्परानुसार एक साथ सम्पूर्ण कृत्य समाप्त होने पर सामूहिक स्नान, जलांजलि, शोक प्रार्थना आदि के कृत्य किये जा सकते हैं। वहाँ से चलने के पहले नीचे लिखे अनुसार समापन कर्म कर लिये जाने चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वसोर्धारा, स्नेह सिंचन—वसोर्धारा में घी की धारा छोड़ते हुये पूर्णाहुति का अन्तिम भाग पूर्ण किया जाता है। घृत की-स्नेह की अखण्ड धारा निम्नलिखित मन्त्रोच्चार करते हुये डाली जाती है—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।। यजु० १।३

परिक्रमा और नमस्कार—उपस्थित सभी लोग चिता की परिक्रमा **'यानि कानि च पापानि . . . . .** 'मन्त्र के साथ करते हुये स्वर्गीय आत्मा के प्रति अपना सम्मान एवं सद्भाव प्रकट करते हैं। ॐ नमोस्त्वनन्तायं . . . . . 'इत्यादि मन्त्र से नमस्कार करते हैं।

इसके उपरान्त सभी लोग मिलकर शान्तिपाठ करते हैं। इस तरह अन्त्येष्टि संस्कार पूरा हो जाने पर उसमें सम्मिलित सभी सहभागी जन एवं परिवार के सदस्य किसी जलाशय पर जाकर स्नान करते-वस्त्र धोते और नीम की पत्ती चबाते हैं।

अस्थिविसर्जनम्

दिशा एवं प्रेरणा—अन्त्येष्टि के बाद अस्थि अवशेष एकत्रित करके उन्हें किसी पुण्य तीर्थ में विसर्जित करने की परिपाटी है। जीवन का कण-कण सार्थक हो इसलिये शरीर के अवशेष भी पुण्य क्षेत्र में डाल दिये जाते हैं।

अस्थियाँ चिता शान्त होने पर तीसरे दिन उठाई जाती हैं, जल्दी उठानी हो तो दूध युक्त जल से अथवा केवल जल से सिंचित करके उठाते हैं। अस्थियाँ उठाते समय नीचे लिखा मन्त्र बोला जाये।

ॐ आ त्वा मनसाऽनार्तेन वाचा ब्रह्मणा त्रय्या विद्यया पृथिव्यामग्निकायामपा ँ रसेन निवपाम्यसौ।। —का० श्रौ० सू० २५।७।६

इन अस्थियों को कलश का पीत-वस्त्र में नीचे कुश रखकर एकत्रित किया जाये, फिर इन्हें तीर्थ क्षेत्र (नदी, तालाब या अन्य पवित्र स्थल) में ले जाकर उसे विसर्जन स्थल के निकट पवित्र स्थल पर रखें। हाथ में यव, अक्षत, पुष्प लेकर यम और पितृ आवाहन के मन्त्र बोलें, पुष्प चढ़ाकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

यम—ॐ यमग्ने कव्यवाहसनः त्वं चिन्मन्यसे रयिम्। तन्नो गीर्भिः श्रवाटयं देवत्रा पनया युजम्। —यजु १६।६४

ॐ यमाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।।

पितृ—ॐ इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासोऽयऽ उपरास ईयुः। ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नून ँ सुवृजनासु विक्षु।। —यजु० १६।६८

ॐ पितृभ्योनमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।।

अब अञ्जलि में अस्थि कलश या पोटली लेकर प्रवाह में या किनारे खड़े होकर यव-अक्षत पुष्प के साथ निम्न मन्त्र पढ़ते हुये अस्थियों को विसर्जित-प्रवाहित किया जाय।

ॐ अस्थि कृत्वा समिधं तदष्टायो असादयन् शरीरं ब्रह्म प्राविशत्।

—आश्व० गृ० सू० ६।३।८

तदुपरान्त हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र के साथ मृतात्मा को ध्यान करते हुये प्रार्थना करें—

ॐ सूर्य चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा। आपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रतितिष्ठा शरीरैः स्वाहा। —ऋ०१०।१६।३

ॐ ये चित्पूर्व ऋतसाता ऋतजाता ऋतावृधः। ऋषीन्तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात्।। —अथर्व कां १८, सू० २ मं० ५५

ॐ आयुर्विश्वायुः परिपातु त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्। यत्रासते सुकृतो यत्र तऽइयुस्तत्र त्वा दैवः सविता दधातु।। —अथर्व १८।२।५५

तत्पश्चात् घाट पर ही तर्पण आदि विशेष क्रम सम्पन्न करें। तर्पण के बाद तीर्थ क्षेत्र में विचरण करने वाली, निवास करने वाली सत्शक्तियों का नमस्कार करके क्रम समाप्त करें।

नमस्कार मन्त्र इस प्रकार है :—

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषंगिणः। तेषां ँ सहस्रयोजने ऽव धन्वानि तन्मसि।। —यजु० १६।६१

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मरणोत्तर-संस्कार

मरणोत्तर-संस्कार–विवेचन

हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार मरने के बाद भी दिवंगत आत्मा का घर के प्रति मोह-ममता का भाव बना रहता है। यह ममता उसकी भावी प्रगति के लिये बाधक है। जिस प्रकार पुराने वस्त्र उतारकर या किसी वस्तु, पदार्थ को बेचकर उसकी ममता से छुटकारा मिल जाता है, उसी प्रकार जीव के लिए यही उचित है कि पहले परिवार की ममता छोड़े और प्रत्येक प्राणी जिस प्रकार अपने भले-बुरे कर्मों का भोग भोगने और नये भविष्य का निर्माण करने में संलग्न है, उसी प्रक्रिया के अनुरूप अपना जीवन क्रम भी ढाले। अनावश्यक ममता कर्त्तव्य पथ में सदा बाधक रहती है। जीवनकाल में जो लोग अधिक मोह-ममता से ग्रसित रहते हैं, वे अपनी बहुमूल्य शक्तियों को, जिनका सदुपयोग करने पर अपनी आत्मा का, परिवार का तथा समाज का भारी हित साधन हो सकता था, ऐसे ही खेल-खिलवाड़ में निरर्थक खो डालते हैं। शरीर के बाद मनुष्य कुटुम्बियों को ही अपना समझता है। बाकी सारी दुनिया उसके लिए बिरानी रहती है। बिरानों के लिए कुछ सोचने और करने की इच्छा नहीं होती। सारा धन अपनों के लिए ही लगा रहता है और जो कुछ कमाता, उगाता है, उस सबका लाभ इस छोटे से दायरे के लिए ही बाँधकर रखता है। इस अज्ञान मूलक ममता से घर वाले आत्म-निर्भरता एवं स्वावलम्बन खोकर बिना परिश्रम किये प्राप्त की कमाई पर मौज करने के आदी हो जाते हैं। इच्छित शौक-मौज के साधन जुटाने पर गृहस्वामी पर क्रुद्ध होते हैं, उसका तिरस्कार करते एवं शत्रुता बरतते हैं। इसके मूल में गृह स्वामी की अवांछनीय मोह ममता ही है। यदि वह घर के लोगों के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करने तक का ही भाव रखे, तो वे भी स्वावलम्बी बनें और गृहपति को भी अपने आध्यात्मिक एवं सामाजिक कर्त्तव्य-पालन करने का अवसर मिले, पर यह हत्यारी मोह-ममता कुछ करने नहीं देती। सारा जीवन अनावश्यक, नीरस, निरर्थक गोरखधन्धों में उलझाकर बर्बाद कर देती है।

कष्टकारक मोह-ममता

यही ममता मरणोत्तर काल में भी जीव के लिए बड़ी कष्टकारक होती है। उसका मानसिक शोक-संताप इसी प्रपंच के कारण बढ़ा रहता है। कई बार भूत-प्रेत आदि की योनियाँ उसे इसी ममतावश लेनी पड़ती हैं। कई बार घर के मोह आकर्षण में ही वह छिपकली, छछूँदर, चूहा, कुत्ता, जुआँ, चींटी, मक्खी, झींगुर आदि की योनि धारण कर परिवार के लिए मरता-गिरता गुजर करता है। सद्गति एवं प्रगति की आकांक्षा को मोह-ममता दबाये रहती है। इससे उसे आगे बढ़ने का अवसर ही नहीं मिलता, उसी दुर्दशाग्रस्त अवस्था में पड़ा दिन काटता रहता है। वह मोह-ममता ही प्राणी के लिए वास्तविक भव-बन्धन है। इससे छुटकारा भी उसे अपने जीवन काल में ही प्राप्त कर लेना चाहिए, ताकि अपने भविष्य निर्माण तथा कर्त्तव्य पालन के लिए भी कुछ कर सके। पर यदि वह अज्ञानी इस संकीर्णता की कीचड़ में लोटते रहना ही श्रेयस्कर समझता है, तो और कोई उसके लिए करे भी क्या ? जिन्दगी तो हर आदमी अपनी इच्छानुसार ही बिताता है, पर मरने के बाद परिवार के व्यक्तियों का काम है कि उसे इस अनावश्यक मोह-ममता के कुसंस्कार से छुड़ाने के लिए मरणोत्तर संस्कार का प्रबन्ध करें।

बन्धन मुक्ति कैसे हो ?

इस संस्कार का उद्देश्य दिवंगत जीव को अपने भविष्य की तैयारी में लगने के लिए और वर्तमान कुटुम्ब से मोह-ममता छोड़ने के लिए प्रेरणा देना है। बन्धन टूटने पर ही मुक्ति होती है अन्यथा जीव जन्म-मरण की फाँसी में ही फँसा पड़ा रहता है। परिवार वाले मृतक के लिए अधिक कुछ न कर सकें तो कम से कम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना तो करना ही चाहिए कि उसे अवांछनीय ममता से छुटकारा दिलाने में सहायता करें। यह प्रयोजन मरणोत्तर संस्कार से पूरा होता है।

होना तो यह भी चाहिए कि वयोवृद्ध व्यक्ति जब कमाने की जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाये, बड़े बच्चे घर को सँभालने लगें तो छोटे भाई-बहिनों के लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा आदि की जिम्मेदारी उनके कन्धों पर सौंपकर स्वयं वानप्रस्थ आश्रम के अनुरूप अपनी गतिविधियाँ निर्धारित करें। आत्म-कल्याण और लोक-मंगल की साधना में संलग्न हों। इस कार्य में घर के लोगों को भी सहायता करनी चाहिए। मोह-जंजाल में फँसे पड़े घरघुस बूढ़े को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से यह प्रेरणा देते रहना चाहिए कि वह मोह बन्धनों से छुटकारा पाने और जीवन के अन्तिम अध्याय का अधिक उपयुक्त उपयोग करने में संलग्न हो। भले ही बूढ़ा बुरा माने, पर उसका हित उसी में है। इसलिए पितृऋण चुकाने के लिए जहाँ परिवार वाले अपने वयोवृद्धों की भोजन, वस्त्र, शरीर सेवा आदि की व्यवस्था रखें, वहाँ उसके मोह-जंजाल को काटने का भी प्रयत्न करें। यह वास्तव में उस वृद्ध के साथ सच्चा उपकार है, भले ही वह उसका महत्त्व न समझता हो। घर के लोग यदि अपने वयोवृद्धों को विराट ब्रह्म की साधना करने के लिए, लोक-मंगल की, वानप्रस्थ तपश्चर्या में संलग्न रहने के लिए, यदि आवश्यक प्रोत्साहन एवं साधन देते हैं तो यह निश्चित रूप से पितृ-ऋण चुकाना ही है। मरणोत्तर संस्कार का यह भी एक अंग है। मरने के बाद मृतक भोज आदि में जो खर्च किया जाता है यदि उतना धन वृद्ध व्यक्तियों को घर में निश्चिन्त रहकर आत्म-कल्याण की साधना में संलग्न होने के लिए दे दिया जाय तो यही कहा जायेगा कि परिवार के लोगों ने सच्चे अर्थों में पित-ऋण चुकाया और मरणोपरान्त संस्कार किया।

संस्कार का स्वरूप

शरीर समाप्त होने के तेरहवें दिन मरणोत्तर संस्कार किया जाता है। यह शोक, मोह की विदाई का विधिवत् आयोजन है। मृत्यु के कारण घर में शोक वियोग का वातावरण रहता है। बाहर के लोग भी संवेदना, सहानुभूति प्रकट करने आते हैं। यह क्रम तेरह दिन में पूरा हो जाना चाहिए। ताकि इसी लकीर को पीटने में समय और शक्ति का अपव्यय न होता रहे। शोक अज्ञान मूलक है। मरना सभी को है। जो सृष्टि का अनिवार्य नियम है, उसके विरुद्ध तूफान खड़ा करने से क्या लाभ ? दिन के बाद रात होनी ही है। रात होते ही कोई रोये-चिल्लाये और हाथ-पैर पीटे तो उसे अविवेकी ही कहा जायगा। जो अनिवार्य है, सुनिश्चित है, उसके लिए तो सभी को पहले से ही तैयार रहना चाहिए और समय आने पर खुशी-खुशी उस ईश्वरेच्छा को पूरा होने देना चाहिए। मरने के बाद जितना कम शोक मनाया जाय, उतनी ही विवेक की विजय मानी जायेगी। जो जितना सिर पीटते हैं वे उतने ही अविवेकी हैं। प्रचलित ढर्रे के अनुसार जन्म के समय हँसने और मरने के समय रोने की मान्यता है। हो तो यह भी सकता है कि जन्मने के समय रोया और मरने के समय हँसा जाता। जीव किसी की गोदी खाली करके आया है, उसे रोना पड़ रहा होगा, जीव को भी प्रबुद्ध सुविकसित शरीर छोड़कर यह छोटा-सा अशक्त शरीर मिला है, इसमें यह बालक तथा उसके पूर्व परिवार की हानि ही हुई, इस पर सहानुभूति स्वरूप रोया जा सकता था और बूढ़ा व्यक्ति अशक्त शरीर छोड़कर किसी नये सुकोमल शरीर में प्रवेश करेगा और वे आनन्द लेगा जो जरा-जीर्ण शरीर में सम्भव न थे, उसे अब की अपेक्षा आगे अधिक सुविधा ही मिलेगी, यह सोचकर मृत्यु के समय हँसा भी जा सकता था, पर जो ढर्रा चल पड़ा है, उसी पर लुढ़कना पड़ेगा। मृत्यु को शोक का विषय मान लिया गया है, तो यह मान्यता देर तक बनी ही रहेगी, किन्तु इतना तो होना ही चाहिए कि शोक मनाने का लोकाचार एक नियत अवधि तक ही सीमित रखकर तत्पश्चात् उसे पूर्णतया समाप्त कर दिया जाय। यह अवधि तेरह दिन की पर्याप्त है। शोक-सन्ताप की विदाई का आयोजन मरणोत्तर संस्कार के रूप में मनाया जाता है।

मृतक के शरीर से अशुद्ध कीटाणु निकलते हैं। इसलिए मृत्यु के उपरान्त घर की पूरी सफाई करनी आवश्यक होती है। दीवारों की पुताई, जमीन की धुलाई, लिपाई, वस्त्र की गरम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धुलाई, वस्तुओं की घिसाई, रंगाई आदि का ऐसा क्रम बनाना पड़ता है कि कोई छूत का अंश शेष न रहे। यह कार्य धीरे-धीरे न हो वरन् तेरह दिन में पूरा हो जाना चाहिए, क्योंकि उस दिन दिवंगत आत्मा का मरणोत्तर संस्कार भी किया जाना है।

तेरहवें दिन मरणोत्तर संस्कार की वैसी ही व्यवस्था की जाय जैसी अन्य संस्कारों की की जाती है। आँगन में यज्ञ वेदी बनाकर पूजन तथा हवन के सारे उपकरण इकट्ठे किये जायें। मण्डप बनाने या सजावट करने की आवश्यकता नहीं है। जिस व्यक्ति ने दाह संस्कार किया हो वही इस संस्कार का भी मुख्य कार्यकर्त्ता, यजमान बनेगा और वही दिवंगत आत्मा की शान्ति, सद्गति के लिए निर्धारित कर्मकाण्ड करावेगा। शरीर और वस्त्रों को शुद्ध करके वह आवश्यक कृत्य कराये।

'ॐ भद्रं कर्णेभि ..... यह मन्त्र बोलते हुए अक्षत् फेंकते हुए यजमान को आसन पर मंगल कामना के साथ बिठायें। फिर पवित्रीकरण, आचमन, शिखा-बन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन, यज्ञोपवीत धारण, आचार्य वरण तिलक, यजमान वरण तिलक, संकल्प, पंचामृत बनाना और पिलाना, उपयोग में आने वाली वस्तुओं का मार्जन, दीप पूजन, कलश पूजन, देव पूजन, नमस्कार, षोडशोपचार पूजन, चन्दन धारण, स्वस्तिवाचन एवं रक्षा विधान तक सारे क्रिया-कृत्य उसी प्रकार करें, जैसे कि सामान्य गायत्री हवन में किये जाते हैं।

पितृ आवाहन

इसके पश्चात् इस संस्कार के विशेष कृत्य आरम्भ किये जायें। एक छोटी चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर चावलों की छोटी ढेरी लगावें, उसके ऊपर दीपक रखें। इस दीपक के आस-पास पुष्पों का घेरा, गुलदस्ता आदि से शोभा बनायें। छोटे-छोटे आटे के बने ऊपर बत्ती वाले घृत दीप और भी किनारों पर बार्डर की तरह सजा दें। यह पितृ आह्वान की वेदी है। उपस्थित लोग हाथ में अक्षत् लेकर मृत-आत्मा के आह्वान की भावना करें और प्रधान दीपक की लौ में उसे प्रकाशित हुआ देखें। इस आह्वान का मन्त्र **'ॐ विश्वे देवास आगत'** है। सामूहिक मन्त्रोच्चार के बाद हाथों में रखे चावल स्थापना चौकी पर छोड़ दिये जायें। आवाहित पितृ का स्वागत सम्मान षोडशोपचार पूजन से किया जाय। इसके लिए **'आसनं समर्पयामि** . . . . . ' आदि वाक्य भी हैं और यदि अवकाश हो तो पुरुष सूक्त के १६ मन्त्रों से भी षोडशोपचार पूजन कराया जा सकता है।

छः तर्पण

आह्वान, पूजन, नमस्कार के उपरान्त तर्पण किया जाता है। जल में दूध, जौ, चावल, चन्दन डालकर तर्पण कार्य में प्रयुक्त करते हैं। मिल सके तो गंगाजल भी डाल लेना चाहिए। (१) देव तर्पण, (२) ऋषि तर्पण (३) दिव्य मानव तर्पण (४) दिव्य पितृ तर्पण (५) यम तर्पण (६) मानव-पितृ तर्पण—इन छहों के लिए तर्पण किया जाता है। केवल अपने ही मृत पितर का ही नहीं वरन् उपरोक्त सभी पितरों का तर्पण इस अवसर पर किया जाता है। छहों तर्पणों की विधियाँ संस्कार पद्धति पुस्तक में दी हुई हैं। हाथ की अञ्जलि में कुशा लेकर उस पर होकर मन्त्रोच्चारण करते हुए जल नीचे गिराना ही तर्पण का प्रमुख विधान है। घुटने, कुशा, जल डालने की दिशा तथा यज्ञोपवीत किस कन्धे पर रहे इसका हेर-फेर इन छहों तर्पणों में होता रहता है, बाकी सामान्य क्रम सबमें समान है। मनुष्य तर्पण में अपने पिता तथा माता की पीढ़ियों को जल दिया जाता है। पत्नी, पुत्र, भाई, बहिन, गुरु, शिष्य का तर्पण तथा जिन लोगों की कोई सन्तान न हो, उन लोगों को स्वयं भी तर्पण करना होता है।

तृप्ति के लिए तर्पण किया जाता है। स्वर्गस्थ आत्माओं की तृप्ति किसी पदार्थ से, खाने-पहनने आदि की वस्तु से नहीं होती, क्योंकि स्थूल शरीर के लिए ही भौतिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। मरने के बाद स्थूल शरीर समाप्त होकर केवल सूक्ष्म शरीर रह जाता है। सूक्ष्म शरीर को भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि की आवश्यकता नहीं रहती, उसकी तृप्ति का विषय कोई खाद्य पदार्थ या हाँड़-माँस वाले शरीर के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता। सूक्ष्म शरीर में विचारणा, चेतना और भावना की प्रधानता रहती है। इसलिए उनमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट भावनाओं में भरा अन्तःकरण या वातावरण ही शान्तिदायक होता है। द्वेष, दुर्भाव, शोक, संताप, ईर्ष्या, कपट, हिंसा, असत्य आदि दुष्प्रवृत्तियाँ जिस व्यक्ति के अन्तःकरण में भरी हों या जिस वातावरण में इन्हीं दोषों-दुर्गुणों से भरे कुकर्म हो रहे हों, वहाँ सूक्ष्म शरीर को अशान्ति, अतृप्ति एवं घुटन का अनुभव होता है। उन्हें तो श्रद्धा भरी सत्प्रवृत्तियाँ ही पसन्द हैं, उन्हीं में सन्तोष मिलता एवं आनन्द आता है। जहाँ प्रेम, सौजन्य, उपकार, दान, दया, भक्ति, उपासना यज्ञ जैसे सद्भाव भरे शुभ कर्म होते हैं, वहाँ पितरों का मन रमता है, उन्हें शान्ति और सन्तोष मिलता है।

इस दृश्य संसार में स्थूल शरीर वालों को जिस प्रकार इन्द्रिय भोग, वासना, तृष्णा एवं अहंकार की पूर्ति में सुख मिलता है, उसी प्रकार पितरों का सूक्ष्म शरीर शुभ कर्मों से उत्पन्न सुगन्ध का रसास्वादन करते हुए तृप्ति अनुभव करता है। उनकी प्रसन्नता तथा आकांक्षा का केन्द्र बिन्दु श्रद्धा है। श्रद्धा भरे वातावरण के सान्निध्य में पितर अपनी अशान्ति खोकर आनन्द का अनुभव करते हैं। इसलिए पितरों की प्रसन्नता के लिए श्रद्धा एवं तर्पण किये जाते हैं। इन क्रियाओं का विधि-विधान इतना सरल एवं इतना कम खर्च का है कि निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी बड़ी आसानी से उसे सम्पन्न कर सकता है।

तर्पण में प्रधानतया जल का ही प्रयोग है। उसे थोड़ा सुगन्धित एवं परिपुष्ट बनाने के लिए जौ, तिल, चावल, दूध, फूल जैसा दो-चार पैसे मूल्य की वस्तुएँ ही डाली जाती हैं। कुशाओं के सहारे जल की छोटी-सी अञ्जलि मन्त्रोच्चारपूर्वक डालने मात्र से पितर तृप्त हो जाते हैं। किन्तु इस क्रिया के साथ आवश्यक श्रद्धा, कृतज्ञता, सद्भावना, प्रेम, शुभकामना का समन्वय अवश्य होना चाहिए। यदि जलाञ्जिलि इन भावनाओं के साथ दी गई है तो तर्पण का उद्देश्य पूरा हो जायगा, पितरों को आवश्यक तृप्ति मिलेगी। किन्तु यदि इस प्रकार की कोई भावना तर्पण या श्राद्ध करने वाले के मन में नहीं है और केवल लकीर पीटने के लिए पानी इधर-उधर फैलाया मात्र जा रहा है तो इतने भर से कोई विशेष प्रयोजन पूर्ण न होगा। इसलिए इन पितृ-कर्मों के करने वाले यह ध्यान रखें कि इन छोटे-छोटे क्रिया-कृत्यों को करने के साथ-साथ दिवंगत आत्माओं के उपकारों का स्मरण करें, उनके सद्गुणों तथा सत्कर्मों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करें। कृतज्ञता तथा सम्मान की भावना उनके प्रति रखें और यह अनुभव करें कि यह जलाञ्जलि जैसे अंकिचन उपकरणों के साथ अपनी श्रद्धा की, सद्भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हुए स्वर्गीय आत्माओं के चरणों पर अपनी सद्भावना के पुष्प चढ़ा रहा हूँ। अपने व्यक्तित्व को, गतिविधियों को सद्भावना युक्त बनाकर स्वयं को उनकी इच्छा के अनुरूप बना रहा हूँ। इस प्रकार की भावनायें जितनी प्रबल होंगी, पितर को उतनी ही अधिक तृप्ति भी मिलेगी।

जिस पितर का स्वर्गवास हुआ है उसके किए हुए उपकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना, उसके अधूरे छोड़े हुए पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने में तत्पर होना तथा अपने व्यक्तित्व एवं वातावरण को मंगलमय ढाँचे में ढालना मरणोत्तर संस्कार का प्रधान प्रयोजन है। गृह शुद्धि सूतक निवृत्ति का उद्देश्य भी इसी के साथ जुड़ा हुआ है। देवाह्वान, यज्ञ आदि की क्रियायें भी इसी निमित्त की जाती हैं, किन्तु तर्पण केवल इन्हीं एक पितर के लिए नहीं पूर्वकाल में गुजरे हुए अपने परिवार, माता के परिवार, दादी के परिवार के तीन-तीन पीढ़ी के पितरों की तृप्ति का भी आयोजन किया जाता है। इतना ही नहीं इस पृथ्वी पर अवतरित हुए सभी महान् पुरुषों की आत्मा के प्रति भी इस अवसर पर श्रद्धा व्यक्त करते हुए उन्हें अपनी सद्भावना के द्वारा तृप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। सभी श्रेष्ठ पुरुष हर धर्म प्रेमी के पितर हैं और उन सबको तृप्त करने के लिए जलाञ्जलि देने के साथ-साथ उनकी परम्परा एवं आकांक्षा के अनुरूप अन्तःकरण तथा वातावरण बनाना भी कर्त्तव्य है। इन पूर्वजों के अनेक उपकारों के फलस्वरूप ही संसार एवं मानवजीवन इतना विकसित हो सका है, इसलिए हम सब उनके ऋणी हैं। इस पितृ-ऋण का स्मरण रखने और उसे चुकाने का कोई महत्त्वपूर्ण कदम उठाते रहने की प्रेरणा इन तर्पण जैसे क्रियाकृत्यों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिलती है। इस प्रकार प्रसुप्त भावनाओं को जगाना भी श्राद्ध तर्पण का उद्देश्य है।

तर्पण क्यों और किस लिए

तर्पण को छः भागों में विभक्त किया गया है— (१) देव-तर्पण, (२) ऋषि-तर्पण (३) दिव्य मानव तर्पण (४) दिव्य पितृ तर्पण (५) यम तर्पण (६) मनुष्य पितृ तर्पण।

देव शक्तियाँ ईश्वर की वे महान् विभूतियाँ हैं, जो मानव-कल्याण में सदा निःस्वार्थ भाव से प्रयत्नरत हैं। जल, वायु, सूर्य, अग्नि, चन्द्र, विद्युत तथा अवतारी ईश्वर अंशों की मुक्त आत्मायें एवं विद्या, बुद्धि, शक्ति, प्रतिभा, करुणा, दया, प्रसन्नता, पवित्रता जैसी सत्प्रवृत्तियाँ सभी देव शक्तियों में आती हैं। ये यद्यपि दिखाई नहीं देतीं, तो भी इनके अनन्त उपकार हैं। यदि इनका लाभ न मिले तो मनुष्य के लिए जीवित रह सकना भी संभव न हो सके। इसके प्रति कृतज्ञता की भावना व्यक्त करने के लिए देव-तर्पण किया जाता है।

दूसरा तर्पण ऋषियों के लिए है। व्यास, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, कात्यायन, अग्नि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र, नारद, चरक, सुश्रुत, पाणिनि, दधीचि आदि ऋषियों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति ऋषि तर्पण द्वारा की जाती है।

तीसरा तर्पण दिव्य मानवों के लिए है। जो पूर्ण रूप से समस्त जीवन को लोक-मंगल के लिए अर्पित नहीं कर सके, पर अपना अपने परिजनों का भरण-पोषण करते हुए लोकमंगल के लिए अधिकाधिक त्याग-बलिदान करते रहे, वे दिव्य मानव हैं। राजा हरिश्चन्द्र, रन्तिदेव, शिवि, जनक, पाण्डव, शिवाजी, प्रताप, भामाशाह, तिलक, गोखले, गाँधी जैसे महापुरुष इसी श्रेणी में आते हैं।

चौथे दिव्य पितृ हैं जो कोई बड़ी लोक-सेवा एवं तपश्चर्या तो नहीं कर सके, पर अपना व्यक्तिगत चरित्र हर दृष्टि से आदर्श बनाये रहे, उस पर किसी तरह की आँच नहीं आने दी। अनुकरणीय परम्परा एवं पवित्र प्रतिष्ठा की सम्पत्ति पीछे वालों के लिए छोड़ गये। ऐसे लोग मानव मात्र के लिए अभिनन्दनीय हैं और उनका तर्पण भी देव, ऋषि एवं दिव्य मानवों की तरह ही करना चाहिए। वे अपने गोत्र, वंश के न होते हुए भी अपनी महानता के कारण सभी के पूजनीय पितृ, सभी के लिए श्रद्धा के पात्र हैं। इसलिए सदा सर्वदा उनका-अभिनन्दन तर्पणों द्वारा होता रहता है।

यम नियन्त्रणकर्त्ता शक्तियों को कहते हैं। जन्म-मरण की व्यवस्था करने वाली शक्ति को यम कहते हैं। मृत्यु का स्मरण रखें, मरने के समय पश्चाताप न करना पड़े इसका ध्यान रखें और उसी प्रकार की अपनी गतिविधियाँ निर्धारित करें तो समझना चाहिए कि यम को प्रसन्न करने वाला तर्पण किया जा रहा है। राज्य शासन को भी यम कहते हैं। अपने शासन को परिपुष्ट एवं स्वस्थ बनाने के लिए प्रत्येक नागरिक को जो कर्त्तव्य पालन करना है उसका स्मरण भी यम तर्पण द्वारा किया जाता है। अपने इन्द्रिय निग्रह-कर्त्ता एवं कुमार्ग पर चलने से रोकने वाले विवेक को भी यम कहते हैं। इसे भी निरन्तर पुष्ट करते चलना हर भावनाशील व्यक्ति का कर्त्तव्य है। इन कर्त्तव्यों की स्मृति यम-तर्पण द्वारा की जाती है।

इसके बाद अपने परिवार से सम्बन्धित दिवंगत नर-नारियों का नम्बर आता है। (१) पिता, बाबा, पर-बाबा, माता, दादी, परदादी। (२) नाना, पर-नाना, बूढ़े पर-नाना, नानी, पर-नानी, बूढ़ी पर-नानी। (३) पत्नी, पुत्र, पुत्री, चाचा, माता, भाई, बुआ, मौसी, बहिन, सास, ससुर, गुरु, गुरु-पत्नी, शिष्य, मित्र। यह तीन वंशावलियाँ पारिवारिक तर्पण के लिए हैं।

इसके अतिरिक्त सृष्टि के सभी जीवधारी वर्गों का तर्पण भी किया जाता है। सुर, असुर, यक्ष, सिद्ध, भूत-प्रेत, पक्षी, जलचर, कीट, पतंग, स्वर्ग, नरक में रहने वाली आत्मायें ब्रह्माण्ड के सभी जीव-जन्तु अपने से किसी प्रकार सम्बन्धित प्राणी—इन सभी का तर्पण किया जाता है।

भीष्म के लिए एक विशेष श्रद्धाञ्जलि है। भीष्म पितामह ब्रह्मचारी थे, उन्होंने अपना निज का परिवार एवं वंश नहीं बनाया, वरन् समस्त संसार को ही अपना परिवार और सभी छोटों को अपनी सन्तान समझा। ऐसे ब्रह्मचारियों एवं विरक्तों का निज का वंश न होने पर भी समस्त संसार उनके कुल गौरव का होता है और सभी उन्हें तर्पण करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भीष्म (ब्रह्मचारियों) का तथा समस्त जीव-जन्तुओं का तर्पण अतिरिक्त परिशिष्ट तर्पण माना जाता है। छः पूर्व उल्लिखित भी इसमें जोड़े जायें तो कुल मिलाकर आठ तर्पण हो जाते हैं। इसमें एक प्रकार से सभी दिवंगत आत्माओं के लिए श्रद्धा, सद्भावना व्यक्त की गई है। इस अभिव्यक्ति के पीछे यह भाव भी रहना चाहिए कि कुछ दिन बाद हमें भी पितृ बनना है, इसलिए अपना आचरण ऐसा रखें जिससे दूसरे लोग हमें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए श्रद्धाञ्जलि अर्पित किया करें।

जिन आत्माओं के लिए तर्पण किया जाता है। उन तक जल, अन्न आदि वस्तुएँ भले ही न जायँ पर उनके माध्यम में आये व्यक्ति की श्रद्धा, सद्भावना उनके पास अवश्य पहुँचेगी। जिस भी लोक में, जिस भी योनि में, जिस भी स्थिति में वे होंगे इस श्रद्धाञ्जलि की सुगन्ध का रसास्वादन करते हुए तृप्ति का अनुभव करेंगे। इन पितरों से भी अधिक अपना लाभ है। इस कर्मकाण्ड के माध्यम से हम अपनी सद्भावनाओं को जागृत करते हैं, जो आगे चलकर सत्प्रवृत्तियों में परिणत हो सकती हैं और हमारे जीवन-लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हो सकती हैं।

पञ्चबलि विधान

तर्पण के पश्चात् पञ्चबलि का विधान है। बलि कहते हैं—भेंट को। विदाई का उपहार मृतक को भी उसी तरह दिया जाता है जिस प्रकार कन्या के विवाह के समय दहेज, जेवर, वस्त्र आदि से अलंकृत करके भेजा जाता है। परिवार के लोग उस दिवंगत आत्मा के जीवनकाल में उसकी सेवा सहायता का अवसर नित्य ही पाते थे, पर अब तो शरीर समाप्त होने के बाद वैसा अवसर रहा नहीं। इसलिए एक मुश्त कुछ विशेष उपहार उसे देने का नियम चला आता है। यह ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार कि संयुक्त परिवार का कोई सदस्य बँटवारा होने पर अलग होता है, तो उसे घर की सम्पत्ति में से उसका भाग एक साथ ही दे दिया जाता है। जब तक वह सम्मिलित रहता है, तब तक की थोड़ी-थोड़ी सुविधाएँ उसे नित्य मिला करती थीं, पर अब जब कि वह नित्य इस तरह भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, जेब खर्च आदि के दैनिक लाभ पाने का अधिकार छोड़ रहा है तो उसे एक बार ही कुछ विशेष लाभ मिलना उचित भी है। उसी प्रकार दिवंगत आत्मा जब अपना सम्बन्ध उस घर से विच्छेद करके जा रही है, तो उसे बोनस, प्रोवीडेण्ट फण्ड, ग्रेच्युटी आदि के रूप में कुछ विशेष उपहार परिवार के सदस्य मिलकर दिया करते हैं।

सरकार भी अब ५० हजार की सम्पत्ति से अधिक की पूँजी वाले पर मृत्यु टैक्स लेती है। इसी प्रकार धर्म टैक्स भी होता है। किसी व्यक्ति ने आजीवन बहुत कुछ कमाया, जमा किया, अब परलोक में उसकी सुख, सुविधा एवं प्रसन्नता के लिए कुछ पुण्य-पूँजी की आवश्यकता पड़ेगी, यह पूँजी धर्म दान के रूप में ही हो सकती है। अतएव सूतक शुद्धि संस्कार के अवसर पर तेरहवें दिन कुछ दान पुण्य स्वर्गीय आत्मा की शान्ति सद्गति के लिए करने की प्रथा है। यह उचित भी है।

आजकल यह प्रथा मृत्यु भोज के नाम से प्रसिद्ध है। मरणोत्तर उपहार भी यही है। धर्म कर भी इसे कहा जा सकता है। यह प्रक्रिया किस प्रकार की जाती है ? यह उपहार का कर किस प्रकार मृतक के कल्याण में काम आ सकने वाला बनाया जाना चाहिए ? इसका सारा विधि-विधान 'पञ्चबलि' के प्रतीक कर्मकाण्ड में संक्षिप्त रूप से बता दिया गया है। तर्पण के पश्चात् (१) गोबलि (२) काक बलि (३) श्वान बलि (४) देव बलि (५) कीट बलि के रूप में दी जाती हैं। पाँच पत्तलों पर घर में बने खाद्य पदार्थ रखकर गाय, कुत्ता, कौआ, देवता और कीट-पतंगों के लिए ऐसे स्थानों पर भिजवा दिये जाते हैं जहाँ उन्हें सुविधापूर्वक प्राप्त हो सकें। इन पाँचों के लिए पाँच संकल्प बोले जाते हैं। जिसने दाह संस्कार कराया हो वह व्यक्ति एक-एक करके क्रमशः उपर्युक्त पाँचों के लिए पत्तलें अपने हाथ में रखता है और उनका मंत्रपूर्वक संकल्प करता है। गौ बलि के लिए **'ॐ सौरभेय्य सर्वहिता .....'** मंत्र श्वान बलि के लिए **'ॐ द्वौ श्वानौ, श्याम शबलौ '** मन्त्र, काक बलि के लिए**'ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या .....'** मन्त्र, देव बलि के लिए—**'ॐ देवा मनुष्याः .....** ' मन्त्र और कीट बलि के लिए**'ॐ पिपीलिकाः .....'** मन्त्र बोला जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बलि प्रयोजन का निरूपण

मोटी दृष्टि से गाय, कुत्ता, कौआ, कीड़े-मकोड़ों पुण्य को तथा देवता के नाम पर किसी अतिथि को थोड़ा-सा आहार आये दिन किन्हीं मनुष्य या पशु-पक्षियों के लिए हर गृहस्थ में से इच्छा-अनिच्छा पूर्वक निकल जाता है। ऐसा पुण्य तो न्यूनाधिक मात्रा में नित्य ही होता रहता है। इतने छोटे से दान-पुण्य द्वारा पितर का उद्धार कल्याण कैसे हो जायेगा ? उतने मात्र में मरणोत्तर उपहार, धर्म कर का प्रयोजन कैसे पूरा हो जायगा, यह प्रश्न सहज ही उत्पन्न होता है और उसका उत्तर ढूँढ़ना ही चाहिए।

पशु-पक्षियों को भोजन देना एक सामान्य उदारता तो है, पर दान के लिए निर्धारित मर्यादाओं से उनका सीधा सम्बन्ध नहीं है। दान का अर्थ अपनी वस्तु किसी को भी दे डालना नहीं। ऐसे तो चोरी, ठगी, टैक्स, बीमारी आदि में जो पैसा चला गया वह भी दान मान लिया जायेगा। दान उसे कहते हैं, जो विश्व-मंगल के उच्च आदर्शों की पूर्ति के लिए सत्पात्रों को दिया जाता है। कुपात्रों के हाथ में मुफ्त की कमाई पड़ेगी तो उससे उनके निठल्लेपन तथा दुर्गुणों में और भी वृद्धि होगी। इससे समाज में और भी अव्यवस्था फैलेगी और उस अव्यवस्था से उत्पन्न अशान्ति का पाप उस दान देने वाले पर चढ़ेगा जिसने बिना पात्र-कुपात्र का विचार किये, ऐसे ही किसी रूढ़िवादिता के अनुरूप अनाधिकारी व्यक्तियों को धन दे डाला। दान के कुछ आदर्श, सिद्धान्त तथा कारण हैं, वे जहाँ पूरे होते हैं, केवल वहीं पुण्य-फल उत्पन्न होगा। पञ्चबलि में दान के उन पाँच माध्यमों का प्रतीक रूप से प्रतिपादन किया गया है। इन पाँच बलि-प्रतीकों के द्वारा संकेत रूप से यह बताया गया है कि पितर की आत्मा को शान्ति सद्गति देने के लिए किन माध्यमों से कुछ खर्च किया जाय, किस निमित्त दान-पुण्य किया जाय ?

गाय का अर्थ है—प्रत्युपकारिता। गाय जो खाती है, उसके बदले में अधिक मूल्य का दूध, गोबर, बच्चे आदि देकर पालने वाले को लाभान्वित करती है। स्वभाव की सरल, सीधी, सेवा भावी एवं सहृदय है। उसका उपकार, प्रतिदान भी ऐसा है जो लोगों के शरीर ही नहीं आत्मा का भी कल्याण करता है। गौ दुग्ध से सद्बुद्धि पनपती है। आत्मा शुद्ध होती है और परलोक के लिए पथ प्रशस्त होता है। दूध-घी से शरीर पोषण तो स्पष्ट ही है। कृषि, परिवहन आदि राष्ट्रीय समृद्धि बढ़ाने का बहुत कुछ श्रेय गौ को ही है। इस उपयोगिता को देखकर ही हिन्दू धर्म में गौ को धार्मिक महत्त्व दिया गया है। गौ-रक्षा, गौ-पालन, गौ-संवर्धन की प्रेरणा-गौ-बलि की प्रक्रिया में सन्निहित है। साथ ही यह भी प्रशिक्षण है कि इसी प्रकार के लोकसेवी, लोकोपयोगी व्यक्तियों की सेवा सहायता की जाय तो उपलब्ध दान की अपेक्षा अनेक गुना प्रत्युपकार समाज का भी हो सकता है।

देव बलि का अर्थ है उन लोगों की या उन प्रयोजनों की सहायता करना जो संसार का भावना स्तर ऊँचा उठाने में संलग्न हैं। अन्तरिक्ष में रहने वाले देवता भी यही करते हैं। वे जिस पर अनुग्रह करते हैं, उसे धन-दौलत तो नहीं देते पर उसका भावना स्तर बहुत ऊँचा उठा देते हैं। सच्चा जीवन लाभ भी मनुष्य इसी विभूति को पाकर प्राप्त कर सकता है। इस पृथ्वी के देवता ब्राह्मण कहे जाते हैं। इन्हें भूसुर भी कहते हैं। भूसुर का अर्थ है—पृथ्वी के देवता। जो धरती पर रहते हुए, मनुष्य शरीर में रहते हुए देव कार्य करें उन्हें भी देवता कहना ही उचित है। आज अमुक कुल वंश में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को ब्राह्मण कहा जाता है। भले ही वे निकृष्ट कर्म करने में रत हों। यह मान्यता असत्य है। ब्राह्मणत्व का सम्बन्ध वंश से नहीं, गुण, कर्म, स्वभाव से है। जिसने अपना भावनात्मक स्तर ऊँचा उठा लिया है और जो दूसरों की भी आध्यात्मिक प्रगति के लिए निरन्तर संलग्न रहते हैं, वे ही सच्चे ब्राह्मण हैं, फिर भले ही वे किसी भी वंश-कुल में उत्पन्न क्यों न हुए हों।

प्राचीनकाल में ऐसे महान् व्यक्तित्व वाले ब्राह्मण स्वयं ही एक पवित्र संस्था होते थे। अब उस प्रयोजन की पूर्ति के लिए संगठन बनने लगे हैं। ऐसी संस्थायें भी ब्राह्मण, भूसुर, देवता कही जायेंगी। पुस्तकालय, विद्यालय, सत्संग सम्मेलन, धर्म प्रचार आदि ऐसे सेवा संगठन, जो जन-मानस को आदर्शवादिता की ओर प्रेरित

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते हों, धरती पर रहने वाले अशरीरी देवता हैं। इन देवताओं का पोषण सहयोग करना चाहिए ताकि वे समाज को अधिक सुसंस्कृत, सुविकसित बनाने में योग दे सकें। ऐसे व्यक्ति भी जनसहयोग एवं जनसम्मान के अधिकारी हैं। देव-बलि इसी दिशा में संकेत करती है।

श्वान बलि का अर्थ है—स्वामिभक्ति, स्वाभाविक प्रेम, कर्त्तव्यपरायणता, स्वल्प सन्तोष जैसी सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन। श्रम का सम्मान, श्रम के द्वारा अपनी आजीविका चलाने का जिन माध्यमों से अवसर मिलता है ऐसे उद्योग संस्थानों का अभिवर्धन।

काक का स्वभाव है—स्वच्छता। सड़ी-गली निरर्थक चीजों को खाकर संसार की गन्दगी को स्वच्छता में परिणत करता रहता है। इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना काक-बलि का मूल प्रयोजन है। गन्दगी एक विपत्ति है। उसे अनैतिकता एवं तमसाच्छन्न असुरता भी कहा जा सकता है। आलस्य गन्दगी का पिता है। इसलिए आलसी प्रवृत्ति को हटाकर घर, शरीर, वस्त्र, पड़ोस, मोहल्ला, सड़क आदि को स्वच्छ करने के क्रिया- कलाप तथा व्यवहार में मन, कर्म, वचन में स्वच्छता का अभिवर्धन काक-वृत्ति का प्रोत्साहन है। सर्वत्र स्वच्छता का वातावरण उत्पन्न हो, अव्यवस्था, अस्त-व्यस्तता एवं गन्दगी का निराकरण हो, ऐसे जो भी व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयत्न होंगे धार्मिक भाषा में काक-वृत्ति के प्रतीक माने जायेंगे। इन प्रवृत्तियों को तन-मन-धन से बढ़ाने के लिए की गई चेष्टाएँ काक-बलि का उद्देश्य पूरा करेंगी।

पिपीलिका, चींटी आदि कीट-पतंग असमर्थता के प्रतीक हैं। संसार में अनेक व्यक्ति ऐसे हैं जो अपने पुरुषार्थ के आधार पर अपना निर्वाह नहीं कर सकते। शरीर से अपंग, असमर्थ, मानसिक दृष्टि से अविकसित एवं विक्षिप्त, रोग, दुर्घटना, अत्याचार, दैवी प्रकोप आदि आकस्मिक कारणों से संत्रस्त इसी श्रेणी में आते हैं। ऐसे कष्ट ग्रस्तों की सहायता करने का प्रयत्न पिपीलिका-बलि कहलायेगा। असमर्थ व्यक्तियों को भी जीवन धारण किये रहने का अधिकार है। वयोवृद्धों को असमर्थ हो जाने पर भी अपना आयुष्य पूरा करना पड़ता है। समाज का कर्त्तव्य है कि ऐसे हर असमर्थ व्यक्ति को वह सुविधा प्रदान करे जिससे वे जीवन धारण किये रहने तथा आपत्ति-विपत्ति का सामना कर सकने में समर्थ हो सकें। कुएँ, तालाब, बगीचे, प्याऊ, चिकित्सालय, अन्न क्षेत्र, पीड़ितों की सेवा-सहायता आदि के कार्य इसी श्रेणी में आते हैं।

उपरोक्त पंच-बलियों का तात्पर्य यह है कि पितरों की शान्ति, सद्गति एवं प्रसन्नता के लिए उनकी उपार्जित सम्पत्ति में से एक अंश उनके उत्तराधिकारी को दान रूप में भी निकालना चाहिए। किन्तु यह धन सत्प्रयोजनों में ही खर्च किया जाय। आज देव-तत्त्व सबसे अधिक कमजोर हो गया है, उसकी स्थिति रोगियों जैसी हो गई है। घर में कोई रोगी पड़ जाता है तो उसकी चिकित्सा, परिचर्या, पथ्य पर अधिक ध्यान दिया जाता है और अधिक खर्च किया जाता है। उसी प्रकार आज रुग्ण एवं दुर्बल पड़े हुए देवतत्व का परिपोषण युग-धर्म के अनुसार अत्यधिक आवश्यक है। जनसाधारण का भावनात्मक स्तर ऊँचा उठा सकने वाले प्रयत्नों की जब आवश्यकता नहीं थी, जब सभी लोग ऊँचे व्यक्तित्व एवं चरित्र के थे तब दान के और भी अनेक मार्ग थे, उन मार्गों का पञ्च-बलियों में संकेत है। पर आज तो देव-तत्त्व की दयनीय दुर्दशा को दूर करने की आवश्यकता को प्राथमिकता दी जानी है। यही सबसे अधिक आवश्यक है। इसलिए आज की मरणोत्तर दान परम्परा के केन्द्र भावनात्मक उत्कर्ष के लिए, देव प्रयोजनों के लिए ही जो कुछ सम्भव हो दान करना चाहिए। इस दृष्टि से प्रेरणाप्रद पुस्तकालयों का स्थान सर्वोच्च है, विद्या और शिक्षा का अभिवर्धन भी। इनके लिए दिवंगत आत्माओं के नाम पर जो दान देना सम्भव हो देना चाहिए, पञ्च-बलि का प्रयोजन इसी से पूरा होगा।

आज की रूढ़िवादिता सुधारी जाय

आज मृत्यु भोज को अवांछनीय प्रथा चल पड़ी है। यह सर्वथा अबुद्धिमत्ता पूर्ण है। विवाह-शादियों में होने वाले प्रीतिभोजों की तरह लम्बे-चौड़े मृतक भोज भी होते हैं। मानों किसी का मर जाना लोगों को बहुत ही खुशी का निमित्त प्रतीत हुआ है, जिसके लिए दावत उड़ाई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जा रही है। जिन लोगों को दावतें खिलाई जाती हैं वे ऐसे समाज सेवक नहीं होते जिन्हें खिलाने से कोई पुण्य फल मिल सकना सम्भव हो। ब्रह्मभोज तभी पुण्य फलदायक हो सकता है, जब आहार लोक मंगल के लिए जीवन उत्सर्ग करने वाले अपनी निज की आजीविका से रहित ब्रह्म परायण व्यक्तियों के लिए खर्च किया जाय। साधारण काम-काजी व्यक्तियों को खिलाना तो एक प्रकार का पारस्परिक व्यवहार है। इससे मृतात्मा को क्या लाभ मिल सकता है ? इसी प्रकार मृतक के लिए कपड़ा, जूता, थाली आदि देना भी उपहासास्पद है। सूक्ष्म शरीर इन वस्तुओं को भला क्या उपयोग करेगा। फिर किसी अन्य योनि में जन्म पाया होगा तो उन वस्तुओं से उसका क्या प्रयोजन होगा ?

यह स्मरण रखा जाय कि दान तभी पुण्यफल उत्पन्न कर सकता है, जब तक वह उत्कृष्ट प्रयोजन के लिए उत्कृष्ट व्यक्तियों को दिया जाय। वह धन जिस कार्य में, जिस प्रयोजन के लिए खर्च होगा उसी के अनुरूप पुण्य भी उत्पन्न होगा। ऐसे कुपात्रों को जिनका न तो व्यक्तिगत जीवन ही बहुत ऊँचा है न वे उस प्राप्त दान का उपयोग लोक-मंगल के लिए करने वाले हैं, दान का वह पैसा एक प्रकार से निरर्थक ही चला जाता है। जब दान का पैसा सत्कार्य में लगा ही नहीं तो पुण्यफल किस बात का ? आज पितरों के नाम पर ऐसी ही धन की बर्बादी होती है। विवेक का तकाजा यह है कि दान के नाम पर धन का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए वरन् इस भावनात्मक अवसर पर ऐसे प्रयोजनों के लिए कुछ दान पुण्य करना चाहिए, जिनसे लोकमंगल का प्रयोजन पूरा होता हो मृतात्मा की शान्ति सद्गति में कुछ योगदान इसी प्रकार मिलेगा— पञ्च-बलि का उद्देश्य तभी पूरा होगा।

पिण्ड की प्रक्रिया

पञ्च बलि के पश्चात् सात पिण्ड दान दिये जाते हैं। जौ या गेहूँ के आटे में तिल, शहद, घृत, दूध मिलाकर लगभग एक-एक छटाँक सात पिण्ड बनाकर एक पत्तल पर रख लेने चाहिए। संकल्प के बाद एक-एक करके यह पिण्ड जिस पर रखे जा सकें, ऐसी एक पत्तल समीप ही और रख लेनी चाहिए।

छः तर्पण जिनके लिए किये गये थे, उनमें से प्रत्येक वर्ग के लिए एक-एक पिण्ड है। सातवाँ पिण्ड मृतात्मा के लिए है। **(१) ॐ उदीरतामवर ....(२) ॐ अंगिरसो न पितरो ..... (३) ॐ आयन्तु नः पितरः (४) ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतम् .....(५) ॐ पितृभ्यः ..... (६) ॐ ये चेह पितरो .....** यह छः मन्त्र एक-एक करके एक-एक पिण्ड का संकल्प करते हुए बोले जाते हैं। सातवाँ पिण्ड **'ॐ नमो वः पितरो . . . .'** मन्त्र से मृतात्मा के लिए समर्पित किया जाता है। संकल्प के बाद यह सातों पिण्ड पक्षियों के लिए अथवा गाय के खाने के लिए किसी उपयुक्त स्थान पर रख दिये जाते हैं।

जिस प्रकार जल के माध्यम से तर्पण में अपनी श्रद्धा अभिव्यक्ति की गई थी, उसी प्रकार अब अन्न पिण्डों के द्वारा वैसी ही श्रद्धा का भाव प्रदर्शन किया जा रहा है। अन्न और जल दोनों की परस्पर संगति भी है। इसलिए श्रद्धा में तर्पण और पिण्ड-दान दोनों का ही उपयोग होता है। श्रद्धा, दया, उदारता आदि सभी उदात्त भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उस प्रकार के कर्मकाण्ड भी करने पड़ते हैं। विचार और कार्य दोनों के समन्वय से ही संस्कार बनता है और संस्कार द्वारा ही जीवात्मा का स्तर उठता तथा कल्याण होता है। केवल भावना एक उफान मात्र है, उसमें मजबूती तभी आती है, जब वैसे ही कार्य भी किये जायें। किसी की सेवा सहायता से तो सर्वथा दूर रहें और अपने उदार हृदय होने की कल्पना करते रहें तो उतने मात्र से काम न चलेगा। उच्च विचार यदि मन में उठते हैं, तो उसकी सच्चाई एवं स्थिरता उनके कार्य रूप में परिणत करने पर ही सिद्ध होगी। क्रिया रहित विचार को 'पंगु' और विचार रहित क्रिया को 'अन्ध' कहा गया है। हमें लँगड़ा-लूला नहीं, सर्वांगपूर्ण कार्यक्रम ही बनाना चाहिए। पितर के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करने की कृतज्ञता एवं सद्भावना की अभिव्यक्ति करनी है तो उसके लिए बिना खर्च का जल तर्पण ही नहीं वरन् पसीने से कमाया हुआ अन्न पिण्ड भी दान करना चाहिए। तात्पर्य यह कि सस्ती कल्पना करने से ही अपनी भावना समाप्त नहीं कर लेनी चाहिए, वरन् उन्हें रचनात्मक दिशा में भी मोड़ना चाहिए और इस भावनात्मक अवसर पर कुछ ऐसा कदम उठाना चाहिए जिससे लोकमंगल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की सम्भावना बढ़े। पिण्डदान इसी दिशा में कदम बढ़ाने का संकेत अपने भीतर धारण किये हुए है। प्राचीन काल में मुद्रा का प्रचलन न था। उस जमाने में अन्न दान ही मुद्रा दान का प्रयोजन पूरा करता था। पर आज तो अन्न दान (पिण्डदान) को धन का दान या श्रमदान का भी रूप दिया जा सके ऐसी सुविधा हो गई है।

शेष कृत्य की पूर्ति

पिण्डदान की उपरान्त हवन का शेष कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिए। अग्नि स्थापन, गायत्री स्तवन, अग्नि प्रदीपन, समिधाधान, जल प्रसेचन, अग्न्याहुति और गायत्री मंत्र से हवन इतना कार्य करने के उपरान्त विशेष हवन की तेरह आहुतियाँ देनी चाहिए। इसके लिए मेवा, केशर, घी, शहद मिली हुई गो-दुग्ध एवं चावल की खीर पहले से ही तैयार रखनी चाहिए। **'ॐ आयन्तु नः पितरः'** इसी मन्त्र से तेरह बार मन्त्रोच्चारण करके तेरह आहुतियाँ पितर कल्याण के निमित्त देनी चाहिए। तदुपरान्त स्विष्टकृत होम, पूर्णाहुति, साष्टांग नमस्कार, शुभकामना, अभिसिंचन, प्रदक्षिणा की क्रियायें पूरी करनी चाहिए। इतना हो जाने पर उपस्थित सभी लोगों को चावल पुष्प दिये जायें, सामूहिक रूप से **'ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवाः .....'** मन्त्र बोला जाय और उन अक्षत पुष्पों को पितर आत्मा की स्थापना वाली चौकी पर श्रद्धाञ्जलि के रूप में समर्पित किया जाय, प्रत्येक व्यक्ति लाइन से आएँ और चौकी पर अपने श्रद्धा पुष्प चढ़ाते हुए झुककर नमस्कार करे और अपने स्थान पर चले जायें। यह श्रद्धा समर्पण सभी लोग कर चुकें तो विसर्जन क्रिया की जाय और सूर्य अर्घ्यदान के उपरान्त मरणोत्तर संस्कार की क्रिया समाप्त कर दी जाय। युग निर्माण का संकल्प, अन्य सभी संस्कारों की तरह इस अवसर पर भी दुहराया जाय।

जीवन दर्शन पर प्रकाश

मरणोत्तर संस्कार के अवसर पर व्याख्या विवेचना करने योग्य छः श्लोक इस संस्कार के साथ जुड़े हुए हैं। संस्कार के आदि, मध्य या अन्त में जब भी अवसर हो इन श्लोकों की विस्तृत व्याख्या करनी चाहिए और लोगों में इस अवसर पर उत्पन्न होने वाली जीवन-मरण सम्बन्धी जिज्ञासा का ऐसा समाधान करना चाहिए जिससे सुनने वालों को अपने शेष जीवन का श्रेष्ठ सदुपयोग करने की प्रेरणा मिले। आमतौर से लोग मृत्यु को भूले रहते हैं। सदा अजर-अमर की तरह जीना चाहते हैं। यह नहीं सोचते कि चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के उपरान्त जो अलभ्य अवसर, दैवी अनुग्रह-मनुष्य जीवन के रूप में मिला है, उसका उपयोग उन प्रयोजनों के लिए किया जाय जो जीवन लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हो सकते हैं। आमतौर से लोग तृष्णा और वासना की अग्नि में अपने को जला-जला कर नष्ट कर डालते हैं और खाली ही नहीं, पापों की गठरी सिर पर बाँधकर यहाँ से विदा होते हैं। मनुष्य जन्म पाया इसलिए था कि उसका कुछ उत्तम उपयोग करेंगे, होता उलटा है कि इतने पाप सिर पर चढ़ जाते हैं जिससे फिर चिरकाल तक उनका दण्ड भुगतने को कष्ट भरी परिस्थिति में फँस जाना पड़ता है।

जानते हुए भी अनजान बने रहने की मूर्खता मनुष्य जैसे समस्यायें हल कर देता है, उन्हें तरह-तरह के उपदेश देता है, तो इतना भी करना चाहिए कि अपनी स्थिति पर सोच-विचार करे और अपने भविष्य को अन्धकारमय होने से बचाकर उज्ज्वल बनाने का उपाय ढूँढ़ निकाले। मानव-जीवन की सार्थकता आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए आन्तरिक स्तर विकसित करने में ही है और इसके लिए जहाँ आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण, आत्म-विकास की क्रियापद्धति अपनाना आवश्यक है, वहाँ यह भी अभीष्ट है कि विश्व-मानव को अधिक सुविकसित बनाने के लिए सेवा धर्म को अपना कर अधिक से अधिक परमार्थ प्रयोजनों में संलग्न रहे। मरणोत्तर जीवन के अवसर पर ऐसी ही शिक्षाएँ तथा प्रेरणाएँ दी जानी चाहिए। यह भावुकता भरा अवसर ऐसी ही शिक्षा के लिए उपयुक्त है।

वृषभोत्सर्ग की परम्परा

सनातन धर्म की प्राचीन परिपाटी के अनुसार मरणोत्तर संस्कार के अवसर पर 'वृषभोत्सर्ग' किया जाता था। एक बछड़ा पितर के नाम पर साँड़ बनाकर छोड़ते थे जो गौओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के झुण्डों में रहकर उनकी हिंसक पशुओं से रक्षा करे और सन्तानोत्पत्ति द्वारा गौ-कुल का संवर्धन करता रहे। अब गोचर-भूमि न रहने, गौओं के सामूहिक पालन की व्यवस्था टूट जाने से, वृषभोत्सर्ग की उपयोगिता न रही हो, पर उस भावना को अन्याय रूपों में अभी भी जीवित रखा और पालन किया जा सकता है।

पितर की स्मृति में ऐसी पुण्य परम्परा का समारम्भ करना जिससे समाज का हित-साधन होता हो, वृषभोत्सर्ग का मूल उद्देश्य है। आजकल लोग लम्बे-चौड़े मृतक भोज करते हैं । ऐसे लोग जिनको दावत खिलाने से पुण्यफल होने की सम्भावना नहीं, इन भोजों में माल-मिठाई उड़ाते हैं और मूँछों पर ताव देकर चले जाते और बीमार पड़ने पर उस भोज दाता को पाप का भागी बनाते हैं। यह धन का दुरुपयोग और अपव्यय है। इससे पितर का कोई भला नहीं होता।

होना यह चाहिए कि स्वर्गीय आत्मा की स्मृति में मरणोत्तर संस्कार के अवसर पर कोई ऐसे शुभ कार्य आरम्भ किये जायें जिनसे समाज का हित होता हो और उस हित का पुण्य चिरकाल तक पितर को मिलता रह सकता हो। वृषभोत्सर्ग का यही उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्धन लोग अपनी शारीरिक श्रम-साधना से वृक्ष लगाकर उनको सींचने तथा रखवाली का प्रबन्ध रखकर यदि उसे बड़ा बना दें तो इससे मनुष्यों तथा अन्यान्य पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों का चिरकाल तक हित साधन होता रह सकता है। बाँध, पुल, सड़क, स्कूल, पुस्तकालय, व्यायामशाला, उद्योग, शिक्षण व्यवस्था, सार्वजनिक उपयोग के लिए वाद्य यन्त्र, बिछौने आदि का प्रबन्ध, किसी मन्दिर, धर्मशाला का जीर्णोद्धार आदि कर सकते हैं। नर वृषभ के रूप में किसी सार्वजनिक कार्य-कर्त्ता की आजीविका का प्रबन्ध कर सकते हैं, जिससे वह निर्वाह की ओर से निश्चिन्त होकर लोक हित के कार्यों में संलग्न रह सके। सोचने पर स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप ऐसे अनेक कार्य सूझ पड़ेंगे, जो सार्वजनिक हित की दृष्टि से आवश्यक हैं। ऐसे कार्यों में यदि श्रम या धन लगाया जा सके तो यह 'वृषभोत्सर्ग' की पुण्य-परम्परा का पालन ही माना जायगा और उससे स्वर्गीय आत्मा को शान्ति, सन्तोष एवं पुण्यफल का लाभ मिलेगा।

मरणोत्तर संस्कार के उद्देश्य और शिक्षा

गुणान्तेषां स्मरेच्छान्त्वा प्रकटयेत्कृतज्ञताम्।
उपकारान्प्रति पितृणां दिवंगताऽऽत्मनां हृदि।। १।।

दिवंगत पितामहादिकों के उपकारों के प्रति कृतज्ञता को प्रकट करे हृदय में उनके गुणों का स्मरण करे।

तेषां जीवन वर्तिभ्यः श्रुत्वनुभूतिभ्यः सादरम्।
सुशिक्षां प्राप्नुयन्नित्यं वैशिष्टयञ्च प्रशंसयेत्।। २।।

उनके जीवन विषयक अनुभवों से आदरपूर्वक अच्छी शिक्षा को नित्य प्राप्त करे तथा उनकी विशिष्टता की प्रशंसा करे।

स्मारं चरित्र स्मरणं प्रेरयेच्च स्व सन्ततिम्।
पूर्वजानां हितकृतं उपकारान्हितसाधकान्।। ३।।

भावी सन्तान को अपने पूर्वजों के हित साधन करने वाले उपकारों को स्मरण करने के लिए प्रेरणा करें।

अनुभवेदात्मसम्बन्धं दिवंगतात्मभिस्सह।
शेषमुत्तरदायित्वं पूरयित्वाऽऽत्मनः स्वयम्।। ४।।
तृप्त्यर्थं तर्पयेत्तेषां पितृन् शास्त्रविधानतः।
उपासीत्सन्निमित्ताय सद्गतये च शान्तये।। ५।।

स्वर्गीय पूर्वजों के साथ (सूक्ष्म) आत्म-सम्बन्ध को अनुभव करे। उनके अवशेष उत्तरदायित्व को पूर्ण कर उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए स्वयं जैसा विधि विधान हो, तर्पण करे। उनके अच्छे निमित्त, सद्गति एवं शान्ति के लिए उपासना करें।

दानं दद्यात्सुपात्राय श्रद्धा भक्ति समन्वितम्।
श्रद्धया विहितं श्राद्धं व्याख्यातं विबुधैः जनैः।। ६।।

सुयोग्य पात्र को भक्ति और श्रद्धा सहित दान करे। "श्रद्धा से जो होता है वही श्राद्ध है" ऐसा बुद्धिमान् व्यक्ति व्याख्या करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मरणोत्तर संस्कार—विधि

दिशा एवं प्रेरणा—भारतीय संस्कृति ने यह तथ्य घोषित किया है कि मृत्यु के साथ जीवन समाप्त नहीं होता, अनन्त जीवन श्रृंखला की एक कड़ी मृत्यु भी है, इसलिए संस्कारों के क्रम में जीव की उस स्थिति को भी बाँधा गया है। जब वह एक जन्म पूरा करके अगले जीवन की ओर उन्मुख होता है, कामना की जाती है कि सम्बन्धित जीवात्मा का अगला जीवन पिछले की अपेक्षा अधिक सुसंस्कारवान् बने। इस निमित्त जो कर्मकाण्ड किये जाते हैं, उनका लाभ जीवात्मा को क्रिया-कर्म करने वालों की श्रद्धा के माध्यम से ही मिलता है—इसलिए मरणोत्तर संस्कार को श्राद्धकर्म भी कहा जाता है।

यों श्राद्धकर्म का प्रारम्भ अस्थि विसर्जन के बाद से ही प्रारम्भ हो जाता है। कुछ लोग नित्य प्रातः तर्पण एवं सायंकाल मृतक द्वारा शरीर त्याग के स्थान पर या पीपल के पेड़ के नीचे दीपक जलाने का क्रम चलाते रहते हैं।

मरणोत्तर संस्कार अन्त्येष्टि संस्कार से तेरहवें दिन किया जाता है। जिस दिन अन्त्येष्टि (दाह क्रिया) होती है, वह दिन भी गिन लिया जाता है। कहीं-कहीं बारहें दिन की भी परिपाटी होती है। बहुत से क्षेत्रों में दसवें दिन शुद्धि दिवस मनाया जाता है, उस दिन मृतक के निकट सम्बन्धी क्षौर कर्म कराते हैं, घर की व्यापक सफाई-पुताई शुद्धि तक पूर्ण कर लेते हैं, जहाँ तेरहवीं ही मनाई जाती है, वहाँ यह सब कर्म श्राद्ध संस्कार के पूर्व कर लिये जाते हैं।

अन्त्येष्टि के १३ वें दिन मरणोत्तर संस्कार किया जाता है। यह शोक-मोह का विधिवत् आयोजन है। मृत्यु के कारण घर में शोक-वियोग का वातावरण रहता है, बाहर के लोग भी संवेदना-सहानुभूति प्रकट करने आते हैं—यह क्रम १३ दिन में पूरा हो जाना चाहिए ताकि भावुकतावश शोक का वातावरण लम्बी अवधि तक न खिंचता जाये। कर्त्तव्यों की ओर पुनः ध्यान देना आरम्भ कर दिया जाय।

मृतक के शरीर से अशुद्ध कीटाणु निकलते हैं। इसलिए मृत्यु के उपरान्त घर की सफाई करनी आवश्यक होती है। दीवारों की पुताई, जमीन धुलाई-लिपाई, वस्त्रों की गरम धुलाई, वस्तुओं की घिसाई, रंगाई आदि का ऐसा क्रम बनाना पड़ता है कि कोई छूत का अंश न रहे। यह कार्य दस दिन की अवधि में पूरा हो जाना चाहिए।

तेरहवें दिन मरणोत्तर संस्कार की वैसी ही व्यवस्था की जाय जैसी अन्य संस्कारों की होती है। आँगन में यज्ञ वेदी बनाकर पूजन तथा हवन के सारे उपकरण इकट्ठे किए जायँ। मण्डप बनाने या सजावट करने की आवश्यकता नहीं है। जिस व्यक्ति ने दाह- संस्कार किया हो, वही इस संस्कार का भी मुख्य कार्यकर्त्ता, यजमान बनेगा और वही दिवंगत आत्मा की शान्ति-सद्गति के लिये निर्धारित कर्मकाण्ड करावेगा।

श्राद्ध संस्कार मरणोत्तर के अतिरिक्त पितृ पक्ष में अथवा देहावसान दिवस पर किये जाने वाले श्राद्ध के रूप में भी कराया जाता है। जीवात्माओं की शान्ति के लिए तीर्थों में भी श्राद्ध कर्म कराने का विधान है।

पूर्व व्यवस्था—श्राद्ध संस्कार के लिए समान्य यज्ञ देव पूजन की सामग्री के अतिरिक्त नीचे लिखे अनुसार व्यवस्था बना लेनी चाहिए।

(१) तर्पण के लिए पात्र—ऊँचे किनारे की थाली, परात, पीतल या स्टील की टैनियाँ (तसले, तगाड़ी के आकार के पात्र) जैसे उपयुक्त रहते हैं। एक पात्र जिसमें तर्पण किया जाय, दूसरा पात्र जिसमें जल अर्पित करते रहें। तपर्ण पात्र में जल पूर्ति करते रहने के लिए कलश आदि पास ही रहें। इसके अतिरिक्त कुश, पवित्री, चावल, जौ, तिल थोड़ी-थोड़ी मात्रा में रखें।

(२) पिण्ड दान के लिए लगभग एक पाव गुँथा हुआ जौ का आटा। जौ का आटा न मिल सके, तो गेहूँ के आटे में जौ, तिल मिलाकर गूँथ लिया जाय। पिण्ड स्थापन के लिए पत्तलें, केले के पत्ते आदि। पिण्डदान सिंचित करने के लिए दूध, दही, मधु, थोड़ा-थोड़ा रहे।

(३) पचंबलि एवं नैवेद्य के लिए भोज्य पदार्थ। सामान्य भोज्य पदार्थ के साथ उर्द की दाल की टिकिया (बड़े) तथा दही इसके लिए विशेष रूप से रखने की परिपाटी है। पंचबलि अर्पित करने के लिए हरे पत्ते लें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(४) पूजन वेदी पर चित्र, कलश एवं दीपक के स्थान पर एक छोटी ढेरी चावल की 'यम' आह्वान तथा तिल की ढेरी पितृ आह्वान के लिए बना देनी चाहिए।

क्रम व्यवस्था—श्राद्ध संस्कार में देव पूजन एवं तर्पण के साथ पंच यज्ञ करने का विधान है। यह पंच-यज्ञ, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ भूत-यज्ञ, एवं मनुष्य-यज्ञ है। इन्हें प्रतीक रूप में 'बलिवैश्व देव' की प्रक्रिया में भी कराने की परिपाटी है। वैसे पितृ-यज्ञ के लिए पिण्डदान, भूत-यज्ञ के निमित्त पंचबलि, मनुष्ययज्ञ के लिये श्राद्ध संकल्प आदि का विधान है। देवयज्ञ के लिये सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन-देव दक्षिणा संकल्प तथा ब्रह्म-यज्ञ के लिये गायत्री विनियोग किया जाता है।

अन्त्येष्टि करने वाले को प्रधान यजमान के रूप में बिठाया जाता है। विशेष कृत्य उसी से कराये जाते हैं। अन्य सगे सम्बन्धियों को भी देव, पूजन, स्वस्तिवाचन, यज्ञाहुति आदि में सम्मिलित किया जाना उपयोगी है।

प्रारम्भ में षट्कर्म के बाद संकल्प करायें। फिर रक्षा विधान तक के उपचार करा लिये जाते हैं। उसके बाद विशेषोपचार प्रारम्भ होते हैं।

प्रारम्भ में यम एवं पितृ आह्वान-पूजन करके तर्पण सम्पन्न कराया जाता है। तर्पण के बाद क्रमशः ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ एवं मनुष्य-यज्ञ के उपचार पूरे कराये जाने चाहिए।

इन यज्ञों के बाद अग्नि स्थापना करके विधिवत् गायत्री यज्ञ करायें। स्विष्टकृत आहुति के पूर्व विशेष आहुतियाँ कराई जायें। उसके बाद स्विष्टकृत पूर्णाहुति आदि सम्पन्न कराते हुए समय की सीमा को देखते हुए यज्ञ समापन के उपचार संक्षेप या विस्तारपूर्वक कराये जाने चाहिए।

विसर्जन के पूर्व दो थालियों में भोजन सजाकर रखें। इनमें देवों और पितरों के लिए नैवेद्य अर्पित किया जाय। पितृ नैवेद्य की थाली में किसी मान्य वयोवृद्ध अथवा पुरोहित को भोजन करा दें और देव नैवेद्य किसी कन्या को जिमाया जाय। विसर्जन करने के पश्चात् पंचबलि के भाग यथास्थान पहुँचाने की व्यवस्था करें। पिण्ड नदी में विर्सजित करने या गायों को खिलाने की परिपाटी है। इसके बाद निर्धारित क्रम से परिजनों, कन्या, ब्राह्मण आदि को भोजन करायें। रात्रि में संस्कार स्थल पर दीपक रखें।

..... नामाहं ..... नामकमृतात्मनः प्रेतत्वनिवृत्तिद्वाराऽक्षय्यलोकावाप्तये स्वकर्त्तव्यपालनपूर्वकं पितृणाद् आनृण्यार्थं सर्वेषां पितृणां शान्तितुष्टिनिमित्तं पंचयज्ञसहित श्राद्धकर्म महं करिष्ये।

।। यम देवता-पूजन ।।

यम को मृत्यु का देवता कहा जाता है। यम नियन्त्रण करने वाले को तथा समय को भी कहते हैं। सृष्टि का सन्तुलन नियन्त्रण बनाये रखने के लिए मृत्यु भी एक आवश्यक क्रिया है। नियन्त्रण-सन्तुलन को बनाये रखने वाली काल की सीमा का स्मरण रखने से जीवन सन्तुलित, व्यवस्थित तथा प्रखर एवं प्रगतिशील बनाये रखने की प्रेरणा मिलती है।

क्रिया और भावना—पूजन की वेदी पर चावलों की एक ढेरी यम की प्रतीक रखें तथा मन्त्र के साथ उसका पूजन करें। यदि समय की कमी न हो तो कई लोग मिलकर यम-स्त्रोत्र का पाठ भी करें। स्तुति करने का अर्थ है उनके गुणों का स्मरण तथा अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति करना।

हाथ में यव-अक्षत्-पुष्प लेकर जीवन-मृत्यु चक्र का अनुशासन बनाये रखने वाले तन्त्र के अधिष्ठाता का आह्वान करें—पूजन करें। भावना करें 'यम' का अनुशासन हम सबके लिये कल्याणकारी बने। मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।

—यजु. ३१/११

।। यम स्तोत्र ।।

नियमस्थः स्वयं यश्च कुरुतेऽन्यान्नियन्त्रितान्।
प्रहरिणे मर्यादानां शमनाय तस्मै नमः।। १।।
यस्य स्मृत्या विजानाति भंगुरत्वं निजं नरः।
प्रमादालस्यरहितो बोधकाय नमोऽस्तु ते।। २।।
विधाय धूलिशयनं येनाहं मानिनां खलु।
महतां चूर्णितो गर्वस्तस्मै नमोऽन्तकाय च।। ३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यस्य प्रचण्डदण्डस्य विधानेनहि त्रासिताः।
हाहाकारं प्रकुर्वन्ति दुष्टस्तस्मै नमो नमः।। ४।।
कृपादृष्टिरनन्ता च यस्य सत्कर्मकारिषु।
पुरुषेषु नमस्तस्मै यमाय पितृस्वामिने।। ५।।
कर्मणां फलदानं हि कार्यमेव यथोचितम्।
पक्षपातो न कस्यापि नमो यस्य यमाय च।। ६।।
यस्य दण्डभयाद्भुद्धः दुष्प्रवृत्तिकुकर्मकृत्।
कृतान्ताय नमस्तस्मै प्रदत्ते चेतनां सदा।। ७।।
प्राधान्यं येन न्यायस्य महत्त्वं कर्मणां सदा।
मर्यादा-रक्षणं कर्त्रे नमस्तस्मै यमाय च।। ८।।
न्यायार्थं यस्य सर्वे तु गच्छन्ति मरणोत्तरम्।
शुभाशुभं फलं प्राप्तुं नमस्तस्मै यमाय च।। ९।।
सिंहासनाधिरूढोऽत्र बलवानपि पापकृत्।
यस्याग्रे कम्पते त्रासात्तस्मै नमोऽन्तकाय च।। १०।।

पितृ आह्वान—पूजन

इसके पश्चात् इस संस्कार के विशेष कृत्य आरम्भ किए जायँ। कलश की प्रधान वेदी पर चावलों की एक छोटी ढेरी लगावें, उसके ऊपर दीपक रखें। इस दीपक के आस-पास पुष्पों का घेरा, गुलदस्ता आदि से शोभा बनायें। छोटे-छोटे आटे के बने ऊपर बत्ती वाले घृत दीप भी किनारों पर बॉर्डर की तरह लगा दें। उपस्थित लोग हाथ में अक्षत् लेकर मृत-आत्मा के आह्वान की भावना करें और प्रधान दीपक की लौ में उसे प्रकाशित हुआ देखें। इस आह्वान का मन्त्र **'ॐ विश्वे देवास .....** है। सामूहिक मन्त्रोच्चार के बाद हाथों में रखे चावल स्थापना की चौकी पर छोड़ दिये जायँ आह्वहित पितृ का स्वागत सम्मान षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन द्वारा किया जाय।

ॐ विश्वेदेवासऽआगत श्रृणुता म इम ꣳ हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।। —यजु. ७/३४

ॐ विश्वेदेवाः श्रृणुतेम ꣳ हवं मे ये अन्तरिक्षे यऽ उप द्यविष्ठ। ये अग्निजिह्व उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्।

तर्पण

दिशा एवं प्रेरणा—आह्वान पूजन, नमस्कार के उपरान्त तर्पण किया जाता है। जल में दूध, जौ, चावल, चन्दन, पुष्प डालकर तर्पण कार्य में प्रयुक्त करते हैं। मिल सके तो गंगाजल भी डाल देना चाहिए।

तृप्ति के लिये तर्पण किया जाता है। स्वर्गस्थ आत्माओं की तृप्ति किसी पदार्थ से, खाने-पहनने आदि की वस्तु से नहीं होती, क्योंकि स्थूल शरीर के लिये ही भौतिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। मरने के बाद स्थूल शरीर समाप्त होकर केवल सूक्ष्म शरीर रह जाता है। सूक्ष्म शरीर को भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि की आवश्यकता नहीं रहती, उसकी तृप्ति का विषय कोई खाद्य पदार्थ या हाड़-माँस वाले शरीर के लिए उपयुक्त उपकरण नहीं हो सकते। सूक्ष्म शरीर में विचारणा, चेतना और भावना की प्रधानता रहती है। इसलिए उनमें उत्कृष्ट भावनाओं से भरा अन्तकरण या वातावरण ही शान्तिदायक होता है।

इस दृश्य संसार में स्थूल शरीर वालों को जिस प्रकार इन्द्रिय भोग, वासना, तृष्णा एवं अहंकार की पूर्ति में सुख मिलता है, उसी प्रकार पितरों का सूक्ष्म शरीर शुभ कर्मों से उत्पन्न सुगन्ध रसास्वादन करते हुए तृप्ति अनुभव करता है। उसकी प्रसन्नता तथा आकांक्षा का केन्द्र बिन्दु शिक्षा है। श्रद्धा भरे वातावरण के सान्निध्य में पितर अपनी अशान्ति खोकर आनन्द का अनुभव करते हैं, श्रद्धा ही उनकी भूख है, इसी से उन्हें तृप्ति होती है। इसलिए पितरों की प्रसन्नता के लिये श्राद्ध एवं तर्पण किये जाते हैं। तर्पण में प्रधानतया जल का उपयोग होता है।

पवित्रीधारण—मंत्र

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पवित्रेण पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

तपर्ण प्रारम्भ करने से पूर्व दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों में उक्त मंत्र पढ़ते हुए पवित्रियाँ धारण कर ली जायँ। पवित्रियाँ कुशाओं में गाँठ लगाकर छल्ले की तरह बनाई जाती हैं।

कुछ कुशायें अलग से रखनी चाहिए। इनका उपयोग तर्पण करते समय किया जाता है। तर्पण करते समय दोनों हाथ अंजलि की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तरह मिले रहने चाहिए। तर्पण एक बड़े चौड़े पात्र जैसे—परात आदि का उपयोग किया जाना चाहिये। ताकि तर्पण करने में असुविधा न हो इसके अतिरिक्त अलग से चावल, जौ, तिल एवं पानी की व्यवस्था रखनी चाहिए।

तर्पण को छः भागों में विभक्त किया गया है—(१) देव-तर्पण (२) ऋषि तर्पण (३) दिव्य-मानव-तर्पण (४) दिव्य-पितृ-तर्पण (५) यम-तर्पण (६) मनुष्य-पितृ-तर्पण।

सभी तर्पण नीचे लिखे क्रम से किये जाते हैं।

देव तर्पण

पहला तर्पण देवशक्तियों के लिये है, इसमें यजमान दोनों हाथों की अनामिका उँगलियों में पवित्री धारण करे। हाथ में जल-अक्षत् लेकर नीचे लिखे मन्त्र से देव आह्वन करें।

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते॥

जल में चावल डालें। कुश मोदक सीधे ही लें। यज्ञोपवीत सव्य (बाँये कन्धे पर) सामान्य स्थिति में रखें। तर्पण के समय अञ्जलि में जल भरकर सभी उँगलियों के अग्रभाग के सहारे अर्पित करें। इसे देव तीर्थ मुद्रा कहते हैं। प्रत्येक देवशक्ति को एक-एक अञ्जलि जल डालें। पूर्वाभिमुख होकर देते चलें।

ॐ ब्रह्मादयो देवाः आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतांजलाञ्जलिम्। ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसितृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृपयन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्यतृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसितृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पततृप्यन्ताम्। ॐ ओषधस्यतृप्यन्ताम्।ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्।

ऋषि तर्पण

दूसरा तर्पण ऋषियों के लिए है। ऋषियों के तर्पण में भी मुँह पूर्व की ओर रखा जाता है तथा पूर्व की ओर ही कुशाग्र रखकर अंजलि से सामने की ओर जल छोड़कर तर्पण किया जाता है। ऋषियों को भी एक-एक अंजलि जल देना चाहिए। यज्ञोपवीत की स्थिति सामान्य अर्थात् बायें कन्धे पर ही रखना चाहिए। ऋषियों को भी देवतीर्थ मुद्रा से ही जल दिया जाता है।

निम्न मन्त्र वाक्यों से ऋषियों का तर्पण करें।

ॐ मरीच्यादि दशऋषय आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतान्जलाञ्जलीन्। ॐ मरीचितृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अंगिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतातृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

दिव्य-मनुष्य तर्पण

तीसरा तर्पण दिव्य-मानवों के लिए है। इस तर्पण में कुशाओं के मध्य भाग में जल दिया जाता है। दिव्य मनुष्य के तर्पण में मुँह उत्तर की ओर रखना चाहिए, दो-दो जलांजलि देनी चाहिए। यज्ञोपवीत को माला की तरह कण्ठ में धारण कर लेना चाहिए। दिव्य मनुष्यों का तर्पण करते समय कुशाओं के अग्रभागों की अँजुलि में दायें हाथ की कनिष्ठका अँगुलि के मूल में रखकर इसी के सहारे अर्थात् कनिष्ठका के मूल से ही जल छोड़ा जाता है। इसे प्रजापत्यतीर्थ मुद्रा कहते हैं।

निम्न मन्त्र वाक्यों को उच्चारण करते हुए दिव्य मनुष्यों का तर्पण करें।

ॐ सनकादयः सप्तर्षयः आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतान् जलाञ्जलीन्। ॐ सनकस्तृप्यताम्॥२॥ ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्॥२॥ ॐ सनातनस्तृप्यताम्॥२॥ ॐ कपिलस्तृप्यताम्॥२॥ ॐ आसुरिस्तृप्यताम्॥२॥ ॐ वोढुस्तृप्यताम्॥२॥ ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्॥२॥

दिव्य-पितृ-तर्पण

चौथे दिव्य-पितृतर्पण है। इस तर्पण में कुशाओं के मूल एवं अग्रभाग संयुक्त करके जल छोड़ा जाता है। मुँह की दिशा दक्षिण की ओर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रखनी चाहिए। पितरों को तीन-तीन अंजलि जलदान दिया जाता है। यज्ञोपवीत को वितरित स्थिति में अर्थात् दायें-स्कन्ध पर रखना चाहिए। दिव्य पितृ तर्पण करते समय कुशाओं को दोहराकर उसके मूल एवं अग्रभाग को मिलाते हुए बीच में एक गाँठ लगा लेनी चाहिए ताकि वह दोहरा स्थिर रह सके। तत्पश्चात् इस द्विगुण भुग्न कुशा के मूल एवं अग्रभाग को दक्षिण की ओर अर्थात् दायीं ओर करके उसे तर्जनी तथा अंगूठे के बीच में रखे और दाहिनी ओर ही अँजलि से अँगूठे के पास होकर जल गिरावे, इस मुद्रा को पितृतीर्थ कहते हैं। दिव्य पितृ यम अन्य पितृगुर्णो तथा प्रधान पितृ का उक्त विधि से तर्पण करना चाहिए।

निम्न मन्त्र तीन-तीन बार बोलकर दिव्य पितरों का तर्पण करें—

ॐ कव्यवाडादयो दिव्य पितरः आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतान्जलाञ्जलिम्। ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजल वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजल वा) तस्मै स्वधा नमः।।३।। ॐ अर्यमास्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजल वा) तेभ्यः स्वधा नमः।। ३।। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजल वा) तेभ्यः स्वधा नमः।। ३।। ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः।। ३।।

यम तर्पण

दिव्य पितृ तर्पण की तरह पितृतीर्थ से तीन-तीन अञ्जलि जल यर्मो को भी दिया जाता है।

ॐ यमादिचतुर्दशदेवाः आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतान्जलाञ्जलिम्। ॐ यमाय नमः।। ३।। ॐ धर्मराजाय नमः।। ३।। ॐ मृत्युवे नमः।। ३।। ॐ अन्तकाय नमः ।।। ३।। ॐ वैवस्वताय नमः।। ३।। ॐ कालाय नमः।। ३।। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः।। ३।। ॐ औदुम्बराय नमः।।३।। ॐ दध्नाय नमः।।३।। ॐ नीलाय नमः।। ३।। ॐ परमेष्ठिने नमः।। ३।। ॐ वृकोदराय नमः।। ३।। ॐ चित्राय नमः।। ३।। ॐ चित्रगुप्ताय नमः।। ३।।

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से यम देवता को नमस्कार करें—

ॐ यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च।।
औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः।।

मनुष्य पितृ तर्पण

इसके बाद अपने परिवार से सम्बन्धित दिवंगत नर-नारियों का नम्बर आता है। (१) पिता, बाबा, परबाबा, माता, दादी, परदादी। (२) नाना, परनाना, बूढ़े परनाना, नानी, परनानी, बूढ़ी परनानी। (३) पत्नी-पुत्र, पुत्री, चाचा, ताऊ, मामा, भाई, बुआ, मौसी, बहिन, सास, ससुर, गुरु-पत्नी शिष्य, मित्र। यह तीन वंशावलियाँ पारिवारिक तर्पण के लिये हैं। पहले स्वगोत्र तर्पण किया जाता है।

अब अपने पितृगर्णो का नाम गोत्र आदि उच्चारण करते हुए निम्न मन्त्र वाक्य उच्चारण करके तीन-तीन अञ्जलि जल देते हुए तर्पण करें।

..... गोत्रोत्पन्नः। अस्मत् पितराः आगच्छन्तु गृहणन्त्वेताञ्जलाञ्जलिम्। अस्मत्पिता (पिता) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरुपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जल (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्पितामहः (बाबा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्प्रपितामहः (परबाबा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मन्माता अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा गायत्रीरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा सावित्रीरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।३।। अस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा लक्ष्मीरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली माँ) अमुकी देवी अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वितीय गोत्र तर्पण

इसके बाद द्वितीय गोत्र मातामह आदि का तर्पण करें। यहाँ यह भी पहले की भाँति निम्नलिखित वाक्यों को तीन-तीन बार पढ़कर तिल सहित जल को तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थ से दें यथा—

अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो विष्णुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुशर्मा अमुकसगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़े परनाना) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो आदित्यरूपस्तृप्यताम इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा लक्ष्मीरूपा तृप्यताम इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।।

इतर तर्पण

अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्कन्या (बेटी) अमुक देवी अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मित्पितृव्यः (पिता के भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्री वसुरूपस्तृप्याताम् इदं तिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।।३।। अस्मत्पितृभगिनी (बुआ) अमुकी देवी अमुकसगोत्रा वसुरूपातृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहिन) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहिन) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत् श्वशुरः (श्वसुर) अमुकशर्मा अमुकसगोत्री - वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत् श्वसुर पत्नी (सास) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्शिष्यः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्सखा अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत् पतिः (पति) अमुकशर्मा ..... अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।।

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए उसी स्थिति में (पूर्व विधि से) प्राणिमात्र की तुष्टि की कामना करते हुए जल धार छोड़ें।

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः।।
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।।
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतद् दीयते सलिलं मया।।
ये बान्धवाऽबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकांक्षिणः।।
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।
येऽबान्धवा बान्धवा या येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा।।

वस्त्र-निष्पीडन

शुद्ध वस्त्र जल में डुबोयें और बाहर ले आकर निम्नांकित मन्त्र को पढ़ते हुए अपसव्य भाव से अपने बायें भाग में भूमि पर उस वस्त्र को निचोड़ें (यदि घर में किसी मृत पुरुष का वार्षिक श्राद्ध आदि का कर्म हो तो वस्त्र-निष्पीड़न नहीं करना चाहिए।)

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

भीष्म तर्पण

अन्त में भीष्म तर्पण किया जाता है। ऐसे परमार्थ परायण महामानव जिनने उच्च उद्देश्यों के लिए अपना वंश चलाने का मोह नहीं किया वे मनुष्य मात्र की श्रद्धा के पात्र हैं। शहीद आदि इसी कोटि में आते हैं। भीष्म उनके प्रतिनिधि माने गये हैं, उनके माध्यम से ऐसी सभी श्रेष्ठात्माओं को नीचे लिखे मन्त्र के साथ पितृतीर्थ से ही जल दान किया जाता है।

वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृतिप्रवराय च।
गंगापुत्राय भीष्माय प्रदास्येऽहं तिलोदकम्।।
अपुत्राय ददाम्येतत्सतिलं भीष्मवर्मणे।।

देवार्घ्यदान

भीष्म तर्पण के बाद सव्य होकर पूर्व दिशा को मुख करें। नीचे लिखे मन्त्रों से देवार्घ्यदान करें। अञ्जलि में जल भरकर प्रत्येक मन्त्र के साथ जलधार अँगुलियों के अग्रभाग से चढ़ावें और नमस्कार करें। भावना करें कि अपनी भावश्रद्धा को इन असीम शक्तियों में होमते हुए अन्तः विकास की भूमिका बना रहे हैं। प्रथम अर्थ सृष्टि निर्माता ब्रह्मा को—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमस तश्चविवः।। ॐ ब्रह्मणे नमः।। —यजु. १३/३

दूसरा अर्घ्य पोषणकर्त्ता भगवान विष्णु को—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाँसुरे स्वाहा।। ॐ विष्णवे नमः।।

—यजु ५/१५

तीसरा अर्घ्य अनुशासन-परिवर्तन के नियन्ता शिव-रुद्र महादेव को—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ रुद्राय नमः।।

यजु. १६/१

चौथा अर्घ्य प्रत्यक्ष देवता भूमण्डल के चेतना केन्द्र सविता देवता सूर्य को—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। ॐ सवित्रे नमः।।

—यजु ३६/३

पाँचवाँ अर्घ्य जड़-जंगम प्रकृति का संतुलन (इकॉलाजिकल वैलेन्स) रखने वाले देव-मित्र के लिए—

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्।। ॐ मित्राय नमः।।

—यजु. १९/६२

छठवाँ अर्घ्य तर्पण के माध्यम वरुण देव के लिए—

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्यु राचके। ॐ वरुणाय नमः।

नमस्कार

अब खड़े होकर पूर्व की ओर से दिग्देवताओं को क्रमशः निर्दिष्ट दिशाओं में नमस्कार करें।

'ॐ इन्द्राय नमः' प्राच्यै।। 'ॐ अग्नये नमः' आग्नेय्यै।

'ॐ यमाय नमः' दक्षिणायै।। 'ॐ निर्ऋतये नमः' नैर्ऋत्यै।।

'ॐ वरुणाय नमः' पश्चिमायै।। 'ॐ वायवे नमः' वायव्यै।।

'ॐ सोमाय नमः' उदीच्यै।। 'ॐ ईशानाय नमः' ऐशान्यै।।

'ॐ ब्रह्मणे नमः' ऊर्ध्वायै।। 'ॐ अनन्ताय नमः' अधरायै।।

इसके बाद जल में नमस्कार करें।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः।
ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः।
ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः।
ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

।। सूर्योपस्थानम् ।।

मस्तक और हाथ गीले करें। सूर्य की ओर मुख करके हथेलियाँ कंधों से ऊपर करके सूर्य की ओर करें। सूर्य नारायण का ध्यान करते हुए मन्त्र पाठ करें। अन्त में नमस्कार करें और मस्तक-मुख आदि पर हाथ फेरें।

ॐ अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनाँऽअनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा। उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय। सूर्यभ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहम्मनुष्येषु भूयासम्।। —यजु. ८/४०

मुखमार्जनं-स्वतर्पणंच

नीचे लिखे मन्त्र के साथ यजमान अपना मुख धोये, थोड़े से जल का आचमन करे। भावना करें कि अपनी काया में स्थित जीवात्मा की तुष्टि के लिए भी क्रमबद्ध प्रयास करेंगे।

ॐ संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सꣳशिवेन।

त्वष्ठा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्।। —यजु. २/२४

तर्पण के बाद पंच यज्ञ का क्रम चलाया जाता है।

ब्रह्मयज्ञ

ब्रह्मयज्ञ में गायत्री विनियोग होता है। मरणोत्तर संस्कार के संदर्भ में एकत्रित सभी कुटुम्बी-हितैषी परिजन एक साथ बैठें। मृतात्मा के स्नेह उपकारों का स्मरण करें। उसकी शान्ति-सद्गति की कामना व्यक्त करते हुए सभी लोग भावनापूर्वक पाँच मिनट गायत्री मन्त्र का मानसिक जप करें, अन्त में अपने जप का पुण्य मृतात्मा के कल्याणार्थ अर्पित करने का भाव करें—यह न्यूनतम है। यदि सम्भव हो तो शुद्धि दिवस के बाद त्रयोदशी तक भावनाशील परिजन मिल-जुलकर संयुक्त रूप से गायत्री जप का एक लघु अनुष्ठान मृतात्मा के प्रति कल्याण कामना से पूरा कर लें ब्रह्मयज्ञ को उसकी पूर्णाहुति मानें। संकल्प बोलें—

..... नामाहं ..... नाम्नः प्रेतत्वनिवृत्तिद्वारा ब्रह्मलोकावाप्तये ..... परिमाणं गायत्रीमहामन्त्रानुष्ठानपुण्यं श्रद्धापूर्वकमहं समर्पयिष्ये।

देवयज्ञ

देवयज्ञ में देववृत्तियों का पोषण किया जाय। दुष्प्रवृत्तियों के त्याग और सत्प्रवृत्तियों के अभ्यास का उपक्रम अपनानें से देवशक्तियाँ तुष्ट होती हैं, देववृत्तियाँ पुष्ट होती हैं। श्राद्ध के समय संस्कार करने वाले प्रमुख परिजन सहित उपस्थित सभी परिजनों को इस यज्ञ में यथाशक्ति भाग लेना चाहिए। अपने स्वभाव के साथ जुड़ी दुष्प्रवत्तियों को सदैव के लिए या किसी अवधि तक के लिए छोड़ने, परमार्थपरक गतिविधियों को निश्चित समय तक के लिए अपनाने का संकल्प कर लिया जाय, उसका पुण्य मृतात्मा के हितार्थ अर्पित किया जाय। संकल्प—

..... नामाहं ..... नामकमृतात्मनः देवगतिप्रदानार्थं ..... दिनानियावत्-मासपर्यन्तं-वर्षपर्यन्तं दुष्प्रवृत्युन्मूलनै सत्प्रवृत्तिसंधारणैः जायमानं पुण्यं मृतात्मनः समुत्कर्षणाय श्रद्धापूर्वकमहं समर्पयिष्ये।

पिण्डदान प्रकरण

यह कृत्य पितृ-यज्ञ के अन्तर्गत किया जाता है। जिस प्रकार तर्पण में जल के माध्यम से अपनी श्रद्धा व्यक्त की जाती है, उसी प्रकार हविष्यान्न के माध्यम से अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति की जानी चाहिए। मरणोत्तर संस्कार में ७ पिण्डदान किये जाते हैं— जौ या गेहूँ के आटे में तिल, शहद, घृत, दूध मिलाकर लगभग एक-एक छटाँक आटे के पिण्ड बनाकर एक पत्तल पर रख लेने चाहिए। संकल्प के बाद एक-एक करके यह पिण्ड जिस पर रखे जा सकें ऐसी एक पत्तल समीप ही और रख लेनी चाहिए।

छः तर्पण जिनके लिए किये गये थे, उनमें से प्रत्येक वर्ग के लिए एक-एक पिण्ड है। सातवाँ पिण्ड मृतात्मा के लिए है। यह सातों पिण्ड पक्षियों के लिए अथवा गाय के लिए किसी उपयुक्त स्थान पर रख दिये जाते हैं। मछलियों को चुगाये जा सकते हैं। पिण्ड रखने के निमित्त कुश बिछाते हुए निम्न मन्त्र बोलें।

ॐ कुशोऽसि कुश पुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा।
त्वय्यर्चितेऽर्चितः सोऽस्तु यस्याहं नाम कीर्तये।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पिण्ड समर्पण प्रार्थना

पिण्ड तैयार करके रखें, हाथ जोड़कर पिण्ड समर्पण के भाव सहित नीचे लिखे मन्त्र बोले जायें।

आब्रह्मणे ये पितृवंशजाता
मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।
वंशद्वये ये मम दासभूता
भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च।।
मित्राणि शिष्याः पशवस्तृक्षाः
दृष्टाश्च स्पृष्टाच कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम संगताश्च
तेषां स्वधा पिण्डमहं ददामि।।

पिण्डदान

क्रमशः एक-एक पिण्ड दाहिने हाथ में लिया जाय। मन्त्र बोलने की पितृतीर्थ मुद्रा से पिण्ड अर्पित करें। सभी पिण्ड किसी थाली या पत्तल पर क्रमशः स्थापित किए जायें।

प्रथम पिण्ड देवताओं के निमित्त—

१. ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।। —यजु. १९/४९

दूसरा पिण्ड ऋषियों के निमित्त—

२. ॐ अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयꣳसुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।। —यजु. १९/५०

तीसरा पिण्ड दिव्य मानवों के निमित्त—

३. ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वाता पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। —यजु. १२/५०

चौथा पिण्ड दान दिव्य पितरों के निमित्त—

४. ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्।।—यजु २/३४

पाँचवा पिण्ड यमो के निमित—

५. ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्य स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।। —यजु. १९/३६

छठवाँ पिण्ड मनुष्य पितरों के निमित्त—

६. ॐ ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ२ उ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञꣳसुकृतं जुषस्व।। —यजु. १९/६७

सातवाँ पिण्ड मृतात्मा के निमित्त—

७. ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो व पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त।।

—यजु. २/३२

आठवाँ पिण्ड पुत्रदार रहितों के निमित्त—

८. पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च।
गुरुश्वसुरबन्धूनां, ये चान्येऽबान्धवाः स्मृताः।।
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदार विवर्जिताः।
तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु।।

नौवाँ पिण्ड उच्छिन्न कुलवंश वालों के निमित्त—

९. उच्छिन्न कुलवंशानां येषां दाता कुले नहि।
धर्मपिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु।।

दसवाँ पिण्ड गर्भपात से मर जाने वालों के निमित्त—

१०. विरूप आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम।
तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु।।

ग्यारहवाँ पिण्ड अग्निदग्धों आदि के निमित्त—

११. अग्निदग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धा कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु धर्मपिण्डं ददाम्यहम्।।

बारहवाँ पिण्ड इस जन्म या अन्य जन्म के बन्धुओं के निमित्त—

१२. ये बान्धवाऽबान्धवा वा येऽयजन्मनि बान्धवाः।
तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु।।

मातृ—पिण्डदान

सर्वप्रथम मातृसत्ता का आह्वान निम्न मंत्र बोलते हुए करें—

आगर्भज्ञानपर्यन्तं पालितो यत्त्तवया ह्यहम्।
आवाहयामि त्वां मातर्दर्भपृष्ठे तिलोदकैः।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्रों का उच्चारण करते हुए सोलह बार पिण्ड दान करें—

१. माँ ने नौ माह उदर में धारण करने के समय, जो अनेकों कष्ट सहे, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

गर्भे दुर्गमने दुःखं विषमे भूमिवर्त्मनि।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥१॥

२. जब तक शिशु ने सकुशल जन्म नहीं ले लिया, तब तक माँ निरन्तर चिन्तित रही, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

यावत्पुत्रो न भवति तावन्माताथ शोचते।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥२॥

३. माता ने नौ माह तक प्रतिमास तथा प्रसव के समय जो कष्ट सहे, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

मासि मासि कृतं कष्टं वेदनाप्रसवेषु च।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥३॥

४. दशवें माह में शिशु जन्म के समय माँ को जो अत्यधिक पीड़ा का अनुभव हुआ, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

यत्पूर्णे दशमे मासि चात्यन्तं मातृ-पीडनम्।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥४॥

५. पुत्र जन्म के समय पीड़ा से छटपटाती हुई माँ ने जो रुदन किया, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

पद्भ्यां प्रजायते पुत्रो जनन्याः परिवेदनम्।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥५॥

६. प्रसव के बाद अत्यधिक कष्ट के कारण माँ को जो शिथिलता बेहोशी आई, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

शैथिल्ये प्रसवे प्राप्ते माता विन्दति दृष्कृतम्।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥६॥

७. माँ ने शिशु लाभ के लिए जो कडुवी दवायें और क्वाथ पिये, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

पिबन्ती कटुद्रव्याणि क्वाथानि विविधानि च।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥७॥

८. शिशु जन्म के तीन रात्रियों तक बिना कुछ खाये-पिये, माँ ने जो शिशु का पोषण किया, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

अग्निना शुष्कदेहा वै त्रिरात्रं पोषणेन च।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥८॥

९. माँ ने शिशु के टट्टी-पेशाब में रात-रात भर जो कष्ट सहे, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड सर्मिपत है।

रात्रौ मूत्रपुरीषाभ्यां निषन्ते मातृकर्मठाः।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥९॥

१०. रात-दिन शिशु को दूध पिलाने के समय माँ को जो कष्ट हुए, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

दिवा रात्रौ च या माता ददाति निर्भरस्तनम्।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥१०॥

११. कड़ाके की सर्दी तथा प्रचण्ड गर्मी में शिशुपालन के समय जो कष्ट सहा, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

माघे मासि निदाघे च शिशिरेऽत्यन्तदुःखिता।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥११॥

१२. स्वयं भूखी रहकर भी माँ ने बच्चे को अपने हिस्से का खाना खिलाकर जो कष्ट सहा, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

क्षुधया विह्वले पुत्रे ह्यन्नं माता प्रयच्छति।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥१२॥

१३. बच्चे बीमार पड़ने के समय माँ को जो असह्य वेदना हुई, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

पुत्रो व्याधिसमायुक्तो माता हा क्रन्दकारिणी।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥१३॥

१४. मृत्यु के बाद माँ को यमराज के यहाँ जाने तक रास्ते में जो कष्ट हुआ, उससे उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

यमद्वारे महाघोरे पथि माता च शोचति।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥१४॥

१५. बच्चे के छोटे रहने तक माँ ने थोड़ा खाकर भी काम चलाया, उस कष्ट से उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

अल्पाहारस्य करिणी यावत्पुत्रश्च बालकः।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥१५॥

१६. मृत्यु के समय माता को जो असाध्य शारीरिक कष्ट हुए, उस ऋण से उऋण होने के लिए यह पिण्ड समर्पित है।

गात्रभंगो भवेन्मातुः मृत्युरेव न संशयः।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥१६॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि तीर्थ श्राद्ध में, पितृपक्ष में से एक से अधिक पितरों की शान्ति के लिए पिण्ड अर्पित करने हों तो नीचे लिखे वाक्य में पितरों के नाम-गोत्र आदि जोड़ते हुए वांच्छित संख्या में पिण्डदान किये जा सकते हैं।

ॐ अद्य ..... गोत्रस्य अस्मद् ..... नाम्नो, अक्षयतृप्त्यर्थं इदं पिण्डं तस्मै स्वधा।

पिण्ड समर्पण के बाद पिण्डों पर क्रमशः दूध, दही और मधु चढ़ाकर पितरों से तृप्ति की प्रार्थना की जाती है।

(१) निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पिण्ड पर दूध चढ़ाये।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। —यजु. १८/३६

पिण्डदाता निम्नांकित मन्त्रांश को दुहरायें—

ॐ दुग्धम्। दुग्धम्। दुग्धम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

(२) निम्नांकित मन्त्र से पिण्ड पर दही चढ़ायें—

ॐ दधिक्राव्णो ऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयुꣳषितारिषत्।। —यजु ३३/३२

पिण्डदाता निम्नांकित मन्त्रांश दुहरायें।

ॐ दधि। दधि। दधि। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।।

(३) नीचे लिखे मन्त्रों के साथ पिण्डों पर शहद चढ़ायें।

ॐ मधुवाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। ꣳ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्य। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। —यजु १३/२७-२८-२९

पिण्डदानकर्त्ता निम्नांकित मन्त्रांश को दुहरायें।

ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।।

पंचबलिः

भूतयज्ञ के निमित्त पंचबलि प्रक्रिया की जाती है। विभिन्न योनियों में संव्याप्त जीव चेतना की तुष्टि हेतु भूतयज्ञ किया जाता है।

अलग-अलग पत्तों या एक ही बड़ी पत्तल पर, पाँच स्थानों पर भोज्य पदार्थ रखे जाते हैं। उर्द की दाल की टिकिया तथा दही इन भागों में विशेष रूप से रखने का विधान है।

पाँचों भाग रखें। क्रमशः मन्त्र बोलते हुए एक-एक भाग पर अक्षत छोड़कर बलि समर्पित करें।

(१) गोबलि

पवित्रता की प्रतीक गऊ के निमित्त—

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः।। इदं गोभ्यो इदं न मम।

(२) कुक्कुरबलि

कर्त्तव्यनिष्ठा के प्रतीक श्वान के निमित्त—

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ।। इदं श्वाभ्यां इदं न मम।।

(३) काकबलि

मलीनता निवारक काक के निमित्त—

ॐ ऐन्द्रावारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्।। इदं वायसेभ्यो इदं न मम।

(४) देवादिबलि

देवत्व संवर्धक शक्तियों के निमित्त—

ॐ देवाः मनुष्याः पशवो वयासि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसंघाः। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्।। इदमन्नं देवादिभ्यः इदं न मम।

(५) पिपीलिकादिबलि

श्रमनिष्ठा एवं सामूहिकता की प्रतीक चींटियों के निमित्त—

ॐ पिपीलिकाः कीटपतंगकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु।। इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यः इदं न मम।।

बाद में गौबलि गऊ को, कुक्कुटबलि श्वान को, कागबलि पक्षियों को, देवबलि कन्या को तथा पिपीलिकाबलि चींटी-कीटों आदि को खिलाने का विधान है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य-यज्ञ-श्राद्ध संकल्प

इसके अन्तर्गत दान का विधान है। दिवंगत आत्मा ने उत्तराधिकार में जो छोड़ा है, उसमें से उतना अंश ही स्वीकार करना चाहिए जो पीछे वाले बिना कमाऊ बालकों या स्त्रियों के निर्वाह के लिए अनिवार्य हो—कमाऊ सन्तान को उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। दिवंगत आत्मा के अन्य अहसान ही इतने हैं कि उन्हें अनेक जन्मों तक चुकाना पड़ेगा, फिर नया ऋण भारी ब्याज सहित चुकाने के लिए क्यों और सिर पर लादा जाय। असमर्थ स्थिति में अभिभावकों की सेवा स्वीकार करना उचित था, पर जब वयस्क और कमाऊ हो गये तो फिर उसे लेकर हराम-खाऊ मुफ्तखोरों में अपनी गणना क्यों कराई जाय ?

पूर्वजों के छोड़े हुए धन में कुछ अपनी ओर से श्रद्धाञ्जलि मिलाकर उनकी आत्मा के कल्याण के लिए दान कर देना चाहिए—यही सच्चा श्राद्ध है। पानी का तर्पण और आटे की गोली का पिण्डदान पर्याप्त नहीं, वह क्रिया कृत्य तो मात्र प्रतीक है। श्रद्धा की वास्तविक परीक्षा उस श्राद्ध में है कि पूर्वजों की कमाई को उन्हीं की सद्गति के लिए, सत्कर्मों के लिए दान रूप में समाज को वापिस कर दिया जाय। अपनी कमाई का जो सदुपयोग, मोह या लोभवश स्वर्गीय आत्मा नहीं कर सकी थी, उस कमी की पूर्ति उसके उत्तराधिकारियों को कर देनी चाहिए।

प्राचीनकाल में ब्राह्मण का व्यक्तित्व एक समग्र संस्था था। उन्हें जो दिया जाता था उसमें से न्यूनतम निर्वाह लेकर शेष को समाज की सत्प्रवृत्तियों में खर्च करते थे। अपना निर्वाह भी इसीलिए लेते थे कि उन्हें निरन्तर परमार्थ प्रयोजनों में ही लगा रहना पड़ता था। आज वैसे ब्राह्मण नहीं हैं, इसलिए उनका ब्रह्मभोज भी साँप के चले जाने पर लकीर पीटने की तरह है। दोस्तों—रिश्तेदारों को मृत्यु के उपलक्ष्य में दावत खिलाना मूर्खता और उनका खाना निर्लज्जता है, इसलिए मृत्युभोज की विडम्बना में न फँसकर श्राद्धधन परमार्थ प्रयोजन के लिए देना चाहिए जिससे जनमानस में सद्ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न हो और वे कल्याणकारी सत्पथ पर चलने की प्रेरणा करें—यही सच्चा श्राद्ध है।

कन्या भोजन, दीन-अपाहिज, अनाथों को जरूरत की चीजें देना—इस प्रक्रिया के प्रतीकात्मक उपचार हैं। इसके लिए तथा लोक हितकारी परमार्थिक कार्यों के लिए दिये जाने वाले दान की घोषणा श्राद्ध संकल्प के साथ की जानी चाहिए।

संकल्प

नामाहं------ नामकमृतात्मनः शान्ति-सद्गति-निमित्तं लोकोपयोगीकार्यार्थं ------- परिमाणे धनदानस्य कन्याभोजनस्य वा श्रद्धापूर्वकं संकल्पमहं करिष्ये।।

संकल्प के बाद निम्न मन्त्र बोलते हुए अक्षत् पुष्प देव वेदी पर चढ़ायें।

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि उशन्नुशतऽआ वह पितॄन्हविषेऽअत्तवे।।

—यजु. १६/७०

ॐ दक्षिणामारोह त्रिष्टुप् त्वाऽवतु बृहत्साम पंचदशस्तोमो ग्रीष्मऽऋतुः क्षत्रं द्रविणम्।।

—यजु. १०/११

पंचयज्ञ पूरे करने के बाद अग्नि स्थापना करके गायत्री यज्ञ सम्पन्न करें, फिर नीचे लिखे मन्त्र से ३ विशेष आहुतियाँ दें। मन्त्र—

ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि। तन्नो यमः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं यमाय इदन्न मम।।

—यम गायत्री

इसके बाद स्विष्टकृत-पूर्णाहुति आदि करते हुए समापन करें। विर्सजन के पूर्व पितरों तथा देव शक्तियों के लिए भोज्य पदार्थ थाली में सजाकर नैवेद्य अर्पित करें, फिर क्रमशः क्षमा प्रार्थना, पिण्ड विसर्जन, पितृ विसर्जन तथा देव विसर्जन करें।

पिण्ड विसर्जन—नीचे लिखे मन्त्र के साथ पिण्डों पर जल सिंचित करें।

ॐ देवा गातुविदोगातुं वित्त्वा गातुमित।

मनसस्पतऽइमं देवयज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः।।

—यजु. ८/२१

पितृ विसर्जन—नीचे लिखे मन्त्रों के साथ पितरों का विसर्जन तिलाक्षत् छोड़ते हुए करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यान्तु पितृगणाः सर्वे यतः स्थानादुपागताः।
सर्वे ते हृष्टमनसः सर्वान् कामान् ददन्तु मे।।
ये लोकाः दानशीलानां ये लोकाः पुण्यकर्मणाम्।
सम्पूर्णान् सर्वभोगैस्तु तान् व्रजध्वं सुपुष्कलान्।।
इहास्माकं शिवं शान्तिरायुरारोग्यसम्पदः।
वृद्धिः सन्तानवर्गस्य जायतामुत्तरोत्तरा।।

देव विसर्जन

यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम्।
इष्ट काम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

श्राद्ध का रहस्य

श्रद्धा से श्राद्ध शब्द बना है। श्रद्धापूर्वक किये हुए कार्य को श्राद्ध कहते हैं। सत्कार्यों के लिए, सत्पुरुषों के लिए, सद्भावों के लिए आदर की, कृतज्ञता की भावना रखना श्रद्धा कहलाता है। उपकारी, तत्त्वों के प्रति आदर प्रकट करना, जिन्होंने अपने को किसी प्रकार लाभ पहुँचाया है उनके लिए कृतज्ञ होना श्रद्धालु का आवश्यक कर्त्तव्य है। ऐसी श्रद्धा हिन्दू धर्म का मेरुदंड है। इस श्रद्धा को हटा दिया जाय तो हिन्दू धर्म की सारी महत्ता नष्ट हो जायगी और वह एक निःस्वत्व छूँछ मात्र रह जायगा। श्रद्धा हिन्दू धर्म का एक अंग है इसलिए श्राद्ध उसका धार्मिक कृत्य है।

माता-पिता और गुरु के प्रयत्न से बालक का विकास होता है। इन तीनों का उपकार मनुष्य के ऊपर बहुत अधिक होता है। उस उपकार के बदले में बालक को इन तीनों के प्रति अटूट श्रद्धा मन में धारण किये रहने का शास्त्रकारों ने आदेश किया है। "मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव" इन श्रुतियों में इन्हें देव-नरतन धारी देव मानने और श्रद्धा रखने का विधान किया है। स्मृतिकारों ने माता को ब्रह्मा, पिता को विष्णु और आचार्य को शिव का स्थान दिया है। यह कृतज्ञता की भावना सदैव बनी रहे, इसलिए गुरुजनों का चरण-स्पर्श, अभिवन्दन करना नित्य के धर्म कृत्यों में सम्मिलित किया गया है। यह कृतज्ञता की भावना जीवन भर धारण किये रहना आवश्यक है। यदि इन गुरुजनों का स्वर्गवास हो जाय तो भी मनुष्य की वह श्रद्धा कायम रखनी चाहिए। इस दृष्टि से मृत्यु के पश्चात् पितृ पक्षों में मृत्यु की वर्ष तिथि के दिन, पर्व समारोहों पर श्राद्ध करने का श्रुति स्मृतियों में विधान पाया जाता है। नित्य की संध्या के साथ तर्पण जुड़ा हुआ है। जल की एक अञ्जली भर कर हम स्वर्गीय पितृ देवों के चरणों में उसे अर्पित कर देते हैं। उनके नित्य चरण स्पर्श अभिनन्दन की क्रिया दूसरे रूप में इस प्रकार पूरी होती है। जीवित और मृत पितरों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का यह धर्मकृत्य किसी न किसी रूप में मनुष्य पूरा करता है और एक आत्मसंतोष का अनुभव करता है।

किन्हीं विशेष अवसरों पर श्राद्ध पर्वों में हम अपने पूर्वजों के लिए ब्राह्मणों को अन्न, वस्त्र, पात्र आदि का दान करते हैं और यह आशा करते हैं कि यह वस्तुएँ हमारे पितृ देवों को प्राप्त होंगी। इस संबन्ध में आज एक तर्क उपस्थित किया जाता है कि दान की हुई वस्तुएँ पितरों को न पहुँचेंगी। स्थूल दृष्टि से भौतिक वादी दृष्टिकोण से—यह विचार ठीक भी है। जो पदार्थ श्राद्ध में दान दिये जाते हैं वे सब उसी के पास रहते हैं जिसे दिये जाते हैं। खिलाया हुआ भोजन निमंत्रित व्यक्ति के पेट में जाता है तथा धन, वस्त्र आदि उसके घर जाते हैं। यह बात इतनी स्पष्ट है जिसके लिए कोई तर्क उपस्थित करने की आवश्यकता नहीं। जो व्यक्ति श्राद्ध करता है वह भी इस बात को भली प्रकार जानता है कि जो वस्तुएँ दान गई थीं वे कहीं उड़ नहीं गईं, वरन् जिसने दान लिया था उसी के प्रयोग में आई हैं। इस प्रत्यक्ष बात में किसी तर्क की गुंजायश नहीं है।

अब प्रश्न दान के फल के सम्बन्ध में रह जाता है। यदि यह भी कहा जाय कि दान का पुण्य फल दाता को ही मिलता है तो इसमें श्राद्ध की अनुपयोगिता सिद्ध नहीं होती। मनुष्य को लोभ वश दान आदि सत्कर्मों में प्रायः अरुचि रहती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए आचार्यों ने कुछ पर्व, उत्सव, स्थान, काल, ऐसे नियत किये हैं जिन पर दान करने के लिए विशेष रूप से प्रेरित किया गया है। उन विशिष्ट पर्वों, अवसरों पर दान करने के विविधि भेद प्रभेद और माहात्म्यों का वर्णन किया गया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। मनुष्य में विवेक का अंश कम और रूढ़ि का अंश अधिक होता है। जैसे स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी त्योहारों के दिन रूढ़िवश लोग पकवान ही बनाते और खाते हैं, उसी प्रकार नियत अवसरों पर अनिच्छा होते हुए भी दानादि सत्कर्म करने पड़ते हैं। उत्तम कर्म का फल उत्तम ही उत्तम होता है चाहे वह इच्छा से अनिच्छा से, या किसी विशेष अभिप्राय से किया जाय। श्राद्ध के बहाने जो दान धर्म किया जाता है उसका फल उस दान करने वाले व्यक्ति को अवश्य ही प्राप्त होगा। यदि वह पुण्य फल स्वर्गीय पितर को प्राप्त न होता हो तो भी दान करने वाले के लिए वह कल्याणकारक है ही। सत्कर्म कभी भी निरर्थक नहीं जाते। श्राद्ध की उपयोगिता इसलिए भी है कि इस रूढ़ि के कारण अनिच्छा पूर्वक भी धर्म करने के लिए विवश होना पड़ता है।

श्राद्ध से श्रद्धा जीवित रहती है। श्रद्धा को प्रगट करने का जो प्रदर्शन होता है वह श्राद्ध कहा जाता है। जीवित पितरों-गुरुजनों के लिए श्रद्धा प्रगट करने, श्राद्ध करने के लिए उनकी अनेक प्रकार से सेवा, पूजा तथा सन्तुष्टि की जा सकती है, परन्तु स्वर्गीय पितरों के लिए श्रद्धा प्रगट करने का अपनी कृतज्ञता को प्रगट करने का कोई निमित्त निर्माण करना पड़ता है। यह निमित्त-श्राद्ध है। स्वर्गीय गुरुजनों के कार्यों-उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने से ही छुटकारा नहीं मिल जाता। हम अपने अवतारों देवताओं, ऋषियों, महापुरुषों और पूजनीय पूर्वजों की जयन्तियाँ धूमधाम से मनाते हैं, उनके गुणों का वर्णन करते हैं, उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं और उनके चरित्रों एवं विचारों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। यदि कहा जाय कि मृत व्यक्तियों ने तो दूसरी जगह जन्म ले लिया होगा उनकी जयन्तियाँ मनाने से क्या लाभ ? तो यह तर्क बहुत अविवेक पूर्ण होगा। मनुष्य मिट्टी का खिलौना नहीं है जो फूट जाने पर कूड़े के ढेर में तिरस्कार पूर्वक फेंक दिया जाय। उसका कीर्ति शरीर युग युगान्तों तक बना रहता है और वह उतना ही काम करता रहता है जितना कि जीवित शरीर काम करता है। आज मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, दानी कर्ण, त्यागी दधीचि, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, ध्रुव, प्रहलाद, वीर हकीकत राय, वन्दावैरागी, शिवाजी, राणाप्रताप, तपस्वी तिलक, शंकराचार्य, गौतम बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर आदि जीवित नहीं हैं, पर उनका कीर्ति-शरीर उतना ही काम करता है जितना कि उनके जीवित शरीर ने किया था। करोड़ों व्यक्तियों को उनसे प्रेरणा और प्रकाश प्राप्त होता है।

मनुष्य प्राणी भावना प्रधान है। व्यापारिक दृष्टिकोण से वह हर पहलू को नहीं सोचता, वरन् अधिकांश कार्य अपनी अन्तःवृत्तियों को तृप्त करने के लिए करता है। वृद्ध पुरुषों की सेवा, बालकों के भरणपोषण की कठिनाई, पीड़ितों की सहायता, पुण्य परोपकार आदि में व्यापारिक दृष्टि से कोई फायदा नहीं। यदि केवल व्यापार बुद्धि ही प्रधान हो तो बूढ़े माता-पिता को कोई रोटी न दे ? बच्चों को पालने-पोसने, पढ़ाने, विवाह आदि करने का झंझट उठाने के लिए कोई तैयार न हो, दीन- दुखियों की सहायता में कोई समय या पैसा न दे ? ऐसी प्रवृत्ति हो जाने पर तो मानव-जाति पिशाचों की सेना बन जायगी, पर सौभाग्य से ऐसी नहीं है। मनुष्य भावनाशील प्राणी है, वह प्रत्यक्ष लाभ की अपेक्षा अप्रत्यक्ष, हृदयगत भावनाओं को प्रधानता देता है। कृतज्ञता उसकी श्रेष्ठवृत्ति है। इसे वह जीवितों के प्रति ही प्रगट करके संतुष्ट नहीं रह सकता। मृतकों के उपकारों के लिए भी उसे श्राद्ध करना पड़ता है।

संसार के सभी देशों में, सभी धर्मों में सभी जातियों में किसी न किसी रूप में मृतकों का श्राद्ध होता है। मृतकों के स्मारक, कब्र, मकबरे संसार भर में देखे जाते हैं। पूर्वजों के नाम पर नगर, मुहल्ले, संस्थाऐं, मकान, कुए-तालाब, मन्दिर, मीनार आदि बनाकर उनके नाम तथा यश को चिरस्थायी रखने का प्रयत्न किया जाता है। उनकी स्मृति में पर्वों एवं जयन्तियों का आयोजन किया जाता है। यह अपने-अपने ढंग के श्राद्ध ही हैं। "क्या फायदा ?" वाला तर्क केवल हिन्दू श्राद्ध पर ही नहीं समस्त संसार की मानवप्रवृत्ति पर लागू होता है। असल बात यह है कि प्रेम, उपकार, आत्मीयता, एवं महानता के लिए मनुष्य स्वभावतः कृतज्ञ होता है और जब तक उस कृतज्ञता के प्रकट करने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रत्युपकार स्वरूप कुछ प्रदर्शन न करले तब तक उसे आन्तरिक बेचैनी रहती है, इस बेचैनी को वह श्राद्ध द्वारा ही पूरी करता है। ताजमहल क्या है ? एक पत्नी को उसके पति द्वारा किया हुआ श्राद्ध है। इस श्राद्ध से उस पति को क्या फायदा हुआ यह नहीं कहा जा सकता, पर इतना निश्चित है कि पति की अन्तर्रात्मा को इससे बड़ी शान्ति मिली होगी।

औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को कैद करके जेल में पटक दिया और स्वयं राजा बन गया। जेल में सड़ते-सड़ते औरंगजेब जब मृत्यु के निकट पहुँचा तो उसने आँखों में आँसू भर कर कहा—"मेरे इस्लाम परस्त बेटे से तो वे काफिर (हिन्दू) अच्छे जो मृतक पितरों तक को पानी पिलाते हैं।" श्राद्ध और तर्पण का मूल आधार अपनी कृतज्ञता और आत्मीयता की सात्विक वृत्तियों को जागृत रखना है। इन प्रवृत्तियों का जीवित, जागृत रहना संसार की सुखशान्ति के लिए नितान्त आवश्यक है। उस आवश्यक वृत्ति का पोषण करने वाले श्राद्ध जैसे अनुष्ठान भी आवश्यक हैं।

मरणोत्तर—संस्कार पद्धति

वार्षिक श्राद्ध

स्वर्गीयात्मनाम् उपकारान् प्रति कृतज्ञतां प्रकटयेत्। तेषां गुणान् स्मरेत्। तेषाम् वैशिष्ट्यं प्रशंसयेत्। तेषां जीवनानाम् अनेकानेकानुभवेभ्यः शिक्षां प्राप्नुयात्। भाविसन्ततयः पूर्वजानां उपकारान् अविस्मरणाय प्रेरणाम् कुर्युः। स्वर्गीयात्मभिः सह स्वसूक्ष्मसम्बन्धं अनुभवेत्। तेषाम् अवशिष्टोत्तरदायित्वं पूर्णं कृत्वा तेषामात्मनः तृप्त्यर्थं साधु तर्पयेत्। स्वर्गीयात्मनां शान्तये एवं सद्गतये सन्निमित्तय उपासनायाः एवं पुण्यकर्मणाम् श्रेयः दानं श्रद्धया कुर्यात्। इदमेव श्राद्धमस्ति।

श्राद्ध : उद्देश्य

स्वर्गीयात्मनः शान्तये शुभ कर्म कुर्यात्। स्वर्गीयात्मनः मोहक्षोभवासनाजन्याशान्तेः साधन तप वेदानुष्ठानानि कुर्यात्। आत्मनः तुष्टये, शान्तये एवं प्रगत्यै सत्पात्रेभ्य विवेकपूर्णं दानं दद्यात्। ब्रह्मभोजः ब्रह्मतत्त्वस्य वृद्धये भवतु। अपात्रान् पोषणेन स्वर्गीयम्-आत्मानम् क्लेशो भवति। दिव्यदर्शिनः पितरः क्रियया न संतुष्यन्ति अपि तु भावपरिणामयोः श्रेष्ठतया संतुष्यन्ति। पित्रावशेषान्—उत्तरदायित्वम् पूरयेत्। तेषा माश्रितानाम् साहायतां कुर्यात्। तेषाम् वस्तुतः उत्तराधिकारिणाम् भागापहारकान् अपात्रान् अवरुद्धेत्। वयस्कायेक्षया अवयस्कानां अधिकारं चतुर्गुणमधिकम् वर्तते। वयस्कोत्तराधिकारिणः स्त्रीभ्यः एवं बालकेभ्यः स्वाधिकारम् परित्यज्य स्वर्गीयात्मानम् तर्पयेयुः। स्वर्गीयात्मानः गुणान् तथा तेषाम् सत्कर्मणाम् अनुसरेयुः, प्रशंसाम् कुर्यः विस्मृतेभ्यः शिक्षां गृहीत्वा सावधाना भवेयुः। दानमेव श्रद्धायाः प्रतीकमस्ति। विवेक-श्रद्धापूर्णानि सत्कार्याण्येव वास्तविकम् श्राद्धमस्ति। पितृणां शान्तये श्राद्धं कुर्यात्। जीवितगुरुजनानाम् वयोवृद्धानाम् समुचितम् सम्मानं परितोषम् एवं सेवापि श्राद्धमस्ति। स्वर्गीय पितृभ्यः सामायिकम् तथा जीवित-पितृभ्यः प्रतिदिवसं श्राद्धम् कुर्यात्। पूर्वजानामुपकाराणामविस्मरणम् एवं तान् प्रति कृतज्ञतायाः प्रगटनमपि श्राद्धमस्ति।

अस्ति श्राद्धस्योद्देश्यम् यत् भाविसन्ततयः स्वपितृन् प्रति कृतज्ञाः भवेयुः। यैः कर्मभिः ते तृप्तिम् लभन्ताम् तदेव तर्पणमस्ति। प्रतिवर्षम् सर्वे मिलित्वा श्राद्धम् कुर्यः। श्रद्धयैव श्राद्धम् भवति।

स्वर्गीय आत्मा की शान्ति के लिए शुभ कार्य करने चाहिए। साधन, तप, वेदपाठ, अनुष्ठान करने चाहिए इससे स्वर्गीय आत्मा को मोह, क्षोभ तथा वासनाजन्य अशान्ति मिटती है। आत्मा की तुष्टि, शान्ति तथा प्रगति के लिए सत्पात्रों को विवेकपूर्ण दान करना चाहिए। ब्रह्मभोज-ब्रह्म तत्त्व की वृद्धि करने वाला हो। अपात्रों को पुष्ट करने से स्वर्गीय आत्मा को क्लेश होता है। दिव्य दर्शी पितर क्रिया से नहीं भावना और परिणाम की श्रेष्ठता से संतुष्ट होते हैं। पितरों के छोड़े हुए उत्तरदायित्वों को पूरा करना चाहिए, उनके आश्रितों की सहायता करनी चाहिए। उनके सच्चे उत्तराधिकारियों का भाग अपहरण करने की चेष्टा करने वाले अपात्रों को रोकना चाहिए। वयस्कों से अवयस्कों का अधिकार चार गुना अधिक है। वयस्क उत्तराधिकार महिला और बालकों के पक्ष में अपने अधिकार छोड़कर स्वर्गीय आत्मा का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तर्पण करें। स्वर्गीय आत्मा के गुणों को ग्रहण करें। उनके सत्कार्यों की प्रशंसा करें। भूलों से शिक्षा ग्रहण कर स्वयं सावधान रहें। दान ही श्रद्धा का प्रतीक है। विवेक और श्रद्धा से परिपूर्ण सत्कार्य करना ही सच्चा श्राद्ध है। पितरों की शान्ति के लिए श्राद्ध करना चाहिए। जीवित गुरुजनों, वयोवृद्ध का समुचित सम्मान, पारितोष एवं सेवा भी श्राद्ध है। स्वर्गीय पितरों का सामयिक और जीवित पितरों का नित्य श्राद्ध करना चाहिए। पूर्वजों के उपकारों को न भूलना, उनके प्रति समुचित कृतज्ञ रहना, श्राद्ध है। भावी सन्ततियाँ अपने पितरों के प्रति कृतज्ञ रहें यह श्राद्ध का उद्देश्य है। जिन कार्यों से पितर तृप्त हों वह तर्पण है। प्रतिवर्ष सबको मिल-जुल कर श्राद्ध करने चाहिए। श्रद्धा से ही श्राद्ध होता है।

अथ वार्षिक श्राद्धम्

अब वार्षिक श्राद्ध को लिखते हैं यानी एकोदिष्ट प्रयोग।

'कर्ता पाकं निर्माप पुनर्भद्रासने उपविश्याऽचम्य प्राणानाम्य' अपवित्रेति मार्जनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्।"

करने वाला पिण्ड का सामान तैयार कर फिर आसन पर बैठकर आचमन प्राणायाम करके फिर मार्जन करके संकल्प करे।

देशकालौ स्मृत्वा अमुक गोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः एकोदिष्टश्राद्धाधिकार सिद्धयर्थं श्री महाविष्णोः षोडशोपचारैः पूजनमहं करिष्ये।

'पुनर्विष्णु सम्पूज्य' तत रक्षादीपं निधाय।

फिर विष्णु भगवान् का पूजन कर फिर रक्षा दीप धरे।

"प्राङ्मुखो भूत्वा पवित्रधारणं पश्चाद् ध्यानं" सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालंजरे गिरौ। चक्रवाकाः सरद्वीपे हंसाः सरसिमानसे।।

पूरब मुख बैठकर पवित्री पहिने और ध्यान करे हाथ जोड़ कर।

"तत्पश्चात् सर्षपविकिरणं"

ॐ प्राच्यै नमः। ॐ अवाच्यै नमः। ॐ प्रतीच्यै नमः। ॐ उदीच्यै नमः।।

उसके पीछे सरसों को चारों दिशाओं में बिखेरे।

"ततः श्राद्धभूमिपूजनं" 'यवपुष्पैः'

ॐ स्योना पृथिवीति पृथिव्यै नमः गन्धादिभिः सम्पूज्य।।

इसके बाद जिस स्थान पर श्राद्ध हो उस स्थान का जौ और फूलों से पृथिवी का पूजन करे।

'कुशतिलजलान्यादाय संकल्पं कुर्यात्"

कुशा, तिल और जल लेकर श्राद्ध संकल्प करे।

देशकालौसंकीर्त्य गोत्रस्य पितुः अमुक-शर्मणः सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धं करिष्ये।।

'ततो गायत्री त्रिवारं जपेत्'

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः।।

'इति त्रिवारं'

फिर गायत्री को तीन बार जपे।

'अपसव्यं' दक्षिणाभिमुखः पातित वामजानुः 'मोटकतिलजलान्यादाय'

अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धे इदमासनं ते स्वधा।।

अपसव्य होकर दक्षिण की तरफ मुख कर बायें घुटने को मोड़े और मोटक तिल जल लेकर।

ॐ अपहताअसुरारक्षाꣳ सिवेदवदः।।

'इति मंत्रेण भोजनपात्रे तिलान्विकीर्य'

इस मंत्र से भोजन के पात्र पर तिलों को बिखेरे।

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तो ऽधिब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान्।। इति पितृनावाह्य।।

इस मंत्र से पितृगणों का आवाहन करे।

'अर्घकरणम्' 'पुटके दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा'

फिर एक पात्र में अर्घ बनावे अर्थात् जल करे दक्षिण की तरफ अग्रभाग करके पवित्री धरे।

'शन्नोदेवीति जलम्'

इस मंत्र से जल करे।

ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रत्नवद्भिः पृक्तः स्वधया पितृन् लोकान् पिृणीहि नः स्वाहा।। इति तिलान्"

इस मंत्र से तिल छोड़े।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"गन्धपुष्पे तूष्णी क्षिपेत्"

अर्घपात्रे वामहस्ते कृत्वा भोजनपात्रे पवित्रमुत्तराग्रं धृत्वाआच्छाद्य"

और गन्ध पुष्प चुपचाप छोड़ें।

अर्घपात्र को बायें हाथ में रखकर भोजन पात्र पर कुशा को उत्तराग्र रख कर ढक दे। फिर चट के ऊपर इस मंत्र से अर्घ को छोड़े।

ॐ या दिव्याऽआपः पयास सम्बभूवुर्याऽअन्तरिक्षाऽउतपार्थिवीर्याः। हिरण्य वर्णा यज्ञियास्तानऽ आपः शिवाःस्योना सुहवाभवन्तु। इति अद्यामुकगोत्र पितः अमुक शर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे एष ते हस्तार्घश्चटोपरि स्वधा।

"पात्रेन्युब्जीकरणम्"

फिर पात्र को उत्तर में आधा कर दे।

"पित्रेस्थानमसि—पितृणामर्प्यत् गन्धं तर्जन्यां च सदैव हि"

इस मंत्र से पित्रों को गन्ध को अर्पण करे। हमेशा ही तर्जनी से गन्ध चढ़ावे।

'ततो गन्धादि दानम्'

फिर गन्ध इत्यादिक चट पर चढ़ावे।

अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीप ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि ते स्वधा।

'ततोमण्डलं कृत्वा भूस्वामिनेऽन्नदानम्'

'इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः। परिवेषणम्'

फिर मण्डल करके पृथिवी के स्वामी को अन्न दान दे।

'अन्नं जलं घृतं फलं पक्वान्नं शाकादिकञ्च'

अन्न जल घी फल पक्वान्न शाग आदि पित्रीश्वरों के आगे रखे।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु मधु मधु।।

इस मंत्र से मधु ३ ऐसा कहे।

'पात्रालम्भः' सव्येन हस्तेन पात्रं पश्चिमभागे स्पृशन् तदुपरि दक्षिणहस्तं दत्वा पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानम्ब्राह्मस्य मुखेऽमृतेऽमृतं जुहोमि स्वाहा।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा।।

पात्र को पास रखे दाहिने हाथ से पश्चिम की तरफ रखे हुए पात्र को स्पर्श करे। फिर उसके ऊपर दाहिने हाथ को रखकर इस मंत्र को बोले।

कृष्ण कव्यमिदंरक्ष मदीयम् 'अगुष्ठमावेश्य' इदमन्नं इदं आप इदमाज्यम् इदं हविः अपहन्ता० इति सर्वोपरि तिलान्विकीर्य

अद्यामुकगोत्र पितः अमुक शर्मन् सांवत्सरिरकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतत्तेऽन्नंसोपकरणं स्वधा।। 'ध्यानं'

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनञ्चयद्भवेत्। तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु।।

अगूँठा से स्पर्श करता हुआ यह कह यह अन्न जल यह घी यह हवि ऐसे कह कर इसे आगे के मंत्र से सबों के ऊपर तिल बिखेरे।

'गायत्री त्रि जपेत्'

गायत्री तीन दफे जपे।

ॐ कृण्णुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँऽऽइभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रुणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः।। इति पठित्वा भूमौतिलान्विकीर्य।।

इस मन्त्र को पढ़कर भूमि के ऊपर तिल बिखेरे।

नैर्ऋत्यकोणे विकर पिण्डं दद्यात्' 'अपसव्यं'

फिर नैर्ऋत्य कोण में अपसव्य होकर विकर पिण्ड को दे।

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेनतृप्यन्तु तृप्तायान्तु परांगतिम्।। विकरेभ्योनमः।।

'पवित्र त्यागः' 'हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य सव्यम्' 'आचम्य' 'पवित्रधारणम्' 'हरिं स्मृत्वा गायत्री त्रि जपेत्' 'अपसव्यं'

पवित्री को त्याग दे और हाथ पाँव धोबे और सव्य होकर आचमन कर दूसरी पवित्री पहिरे और हरि का स्मरण कर तीन गायत्री जपे। फिर अपसव्य होकर।

'वेदीनिर्माणम्' प्रोक्षणं' 'अपहतेति रेखा-करणं' ॐ येरूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽअसुराः सतः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वधया चरन्ति। परापुरोनिपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लोकान् प्रणुदात्यस्मात् इत्यंगार भ्रामणम्।।

वेदी बनावे और छींटा लगावे 'अपहतेति' इस मन्त्र से तीन रेखा करे और येरूपाणि इस आगे के मन्त्र से एक कुशा जलाकर वेदी के चारों तरफ घुमाकर ईशान में फैंक दे।

'कुशास्तरणम्' 'सव्यं' देवताभ्यः पठेत्'

फिर लकीरों पर कुशा एक-एक रखे और सव्य होकर प्रार्थना करे।

'अपसव्यं' 'पुटकेजललिल गन्धपुष्पाणि नीत्वा' अद्यामक गोत्र पितः अमुक शर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावने निक्व ते स्वधा।।

और फिर अपसव्य होकर हाथ में जल, तिंल, गन्ध, फूल लेकर रेखाओं पर नाम गोत्र उच्चारण कर जल छिड़के।

'अथ पिण्डदानम्'

अद्यामुकगोत्र अमुकशर्मन् सांवत्सरिकै-कोद्दिष्टश्राद्धे एष ते पिण्डस्वधा।। तूष्णीं पिण्डाग्रेशेषान्नं निधाय।।

इसके बाद पिण्ड दान करे हाथ में कुशा पिण्ड जल लेकर नाम गोत्र का उच्चारण कर पिण्ड को कुशाओं पर धरे और चुपचाप पिण्ड के आगे शेष अन्न को रखे।

'उत्तराभिमुखं श्वासं नियम्यः' 'दक्षिणाभिमुखंत्यजेत्'

ॐ अत्रपितरो मादयध्व यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषापिषत।। इति मंत्रेण पिण्डोपरि श्वासं त्यजेत्।।

उत्तर की तरफ मुख कर स्वांस को खींचकर दक्षिण की तरफ मुख करके पिण्डों पर श्वांस को इस आगे के मन्त्र को बोलकर छोड़े।

'प्रत्येवनेजनं' अद्यामुक गोत्र अमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवने-निक्यतेस्वधा। 'सूत्रवानम्'

फिर हाथ में जल लेकर गोत्र नाम बोलकर पिण्ड पर जल चढ़ावे।

ॐ नमस्ते पिता रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्तेपितर्जीवाय नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर्घोराय नमस्ते पितर्मन्यवे नमस्ते पितः पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्देहि नमस्ते पितदेष्म ।। 'एतत्ते पितर्वासः' छादनम्'

अद्यामुक गोत्र पितः अमुक शर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे पिण्डे एतत्ते वासः स्वधा।

फिर पिण्डों पर धोती, दुपट्टा, अँगोछा हो तो चढ़ावे नहीं तो कलावा ही इस आगे के मन्त्र से चढ़ावे—

'पिण्डे गन्धपुष्पधूपनैवेद्यताम्बूलपुंगीफलानि दक्षिणां सर्वभोगांश्च पिण्डं प्रदापयेत्'

पीछे पिण्ड पर गन्ध, फूल, धूप नैवेद्य, पान, सुपारी, दक्षिणा और जो कुछ वस्तु हो सो चढ़ावे।

'भोजनपात्रे शिवा आपःसन्तु। इति जलं। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पं। अक्षतं चारिष्टमस्तु इति तन्दुलान् क्षिपेत्।

अद्यामुक गोत्र अमुक शर्मन सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे दत्तैतदन्नपा-नादिकमक्षय्य मुपतिष्ठताम्।। 'सव्यम्'

भोजन-पात्र में जल के छींटा लगावे फूल, चामर, नाम गोत्र बोलकर चढ़ावे।

अघोरः पितास्तु इति पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्'

फिर पिण्ड के ऊपर पूर्व की तरफ जल की धारा दे।

'पूर्वाभिमुखोभूत्वा आशिष गृह्णीयात्'

गोत्रन्नो वर्धतां। दातारो नोभि वर्धतां। वेदा संतति रेवच। श्रद्धा च नो मागमयेत्। अन्नं च बहुभवेत्। अतिथिं च लभे महीं। या च तारश्च नः सन्तु मा चया च स्म कंचनः। 'एता सत्याशिष सन्तु' 'अपसव्य'

और पूरब की तफर मुख करके आशीर्वाद ग्रहण करे।

'पिण्डोपरि सपवित्र कुशानास्तीर्य'

फिर पिण्ड के ऊपर कुशा रखे।

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मेपितृन्।। इति पिंडोपरि दुग्धधारा दद्यात्।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फिर इस मन्त्र को बोलता हुआ पिण्ड के ऊपर दूध धारा दे।

अर्घ पात्रोत्तानीकरणम्' 'आचार्याय दक्षिणां दद्यात्।।

और फिर अर्घ-पात्र को ओंधा कर दे आचार्य को दक्षिणा दे।

अथपितृतर्पण

इसके बाद पितृ तर्पण को इन आगे के मन्त्रों से करे।

ॐ काव्यवाद् तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।।
ॐ नलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।।
ॐ सोमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।।
ॐ यमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।।
ॐ अर्यमा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।
ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।।
ॐ सोमपास्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।
ॐ बर्हिषद स्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।।
अद्यामुकगोत्र अस्मत्पिता वसु स्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा। 'इति तर्पण'

'अथ हवनम्'

इसके बाद हवन को करे।

'वेदिकाचतुरस्रं कृत्वा पंचभू संस्कारपूर्वक मग्निस्थापनं कृत्वा मनसा प्रजापतिं ध्यात्वा त्रिसमिध अग्नौ क्षिपेत्।। पुनः प्रजापत्यादि नवाहुतिंकृत्वा पितृ सूक्तेन जुहुयात्'।।

चौंखुटी बेदी बनाकर अग्नि के पाँच संस्कार कर फिर अग्नि स्थापन कर मन से प्रजापति का ध्यान करके तीन समिधा अग्नि में छोड़ें। फिर प्रजापत्यादि नौ आहुति होम कर पितृ सूक्त से होम करे।

'पुनः ब्राह्मणभोजनसंकल्पपूर्वकं गोग्रासादि देयाः तत्पश्चाद् तिलक रक्षाबन्धमार्शीवादं दद्यात्। तत आचार्यादि दक्षिणां दत्वा विसर्ज येत्'।

फिर ब्राह्मण भोजन का संकल्प कर गौग्रासादि दे। उसके पीछे तिलक करे, रक्षा बाँधे, आर्शीवाद दे। फिर गौदान आचार्यादि दक्षिणा देकर विसर्जन करे।

।। इतिएकोदिष्टश्राद्धम्।।

इस प्रकार एकोदिष्ट श्राद्ध समाप्त।

नान्दीमुख-श्राद्ध

नान्दीमुख श्राद्ध प्रायः हवन आदि पुण्य कर्म के पूर्व तथा देवपूजन के पश्चात् किया जाता है। श्राद्ध करने से पहले संकल्प धारण किया जाता है। प्रक्रिया इस प्रकार है—

संकल्प

(रिक्त स्थानों में वर्तमान्, मास, पक्ष, तिथि आदि का नाम उल्लेख करना चाहिए।)

ॐ अत्राद्या महामांगल्य मासोत्तमे ..... मासे, ... पक्षे, ... तिथौ, ... वासरे, ... नक्षत्रे ..... नामाहम् अद्य गायत्री हवनांगत्वेन सांकल्पिक विधिना नान्दीश्राद्धं करिष्ये।

उपरोक्त संकल्प करने के बाद किसी पात्र में जल लेकर फिर नीचे लिखे हुए श्लोक को बोलते हुए विश्वेदेवा के निमित्त रखे गए दूसरे पात्र में जल छोड़ें।

ॐ सत्य वसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

इसी तरह माता के निमित्त रखे गये पात्र में तीन बार जल छोड़ें।

(रिक्त स्थानों में अपने गोत्र का नाम उच्चारण करना चाहिए।)

ततः ..... गोत्राः अस्मन्मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दी मुख्यः ॐ भूर्भुव स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

इसी तरह पिता के पात्र में तीन बार जल छोड़ें।

(रिक्त स्थान पर श्रद्धा निज गोत्र का उच्चारण करे।)

..... गोत्रास्मत्पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

इसी तरह माता मह के पात्र में तीन बार जल छोड़े।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(रिक्त स्थान पर अपनी माता के पितृकुल का गोत्र उच्चारण करे।)

. . . . . गोत्रा अस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यपादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

अथ आसन दानम्

अब एक कुशा में कलावा लपेटकर उसे आसन माने और उस आसन और जौ हाथ में लेकर विश्वेदेवा के स्थान पर रखे।

ॐ सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः।।

इति कुशत्रयं सर्वतो दक्षिणगतं पूर्वाग्रमुत्सृजेत्।

ॐ नान्दी श्राद्धेक्षणौ क्रियेताम्।

ॐ तथाप्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव।

फिर इसी तरह माता के स्थान पर आसन के निमित्त कुशा और जौ रखे।

ॐ . . . . . गोत्राणां अस्मन्मातृपितामही प्रपितामहीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः।।

ॐ नान्दी श्राद्धेक्षणौ क्रियेताम्।। तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव।।

फिर इसी तरह पिता के स्थान पर आसन के निमित्त कुशा और जौ रखे।

ॐ . . . . . गोत्राणां अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां नान्दी मुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः।।

ॐ नान्दी श्राद्धेक्षणौ क्रियेताम्।। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तु प्राप्नुवाव।।

इसी प्रकार नाना के स्थान पर आसन के निमित्त कुशा जौ रखे।

द्वितीय गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दी मुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः।। नान्दी श्राद्धेक्षणौ क्रियेताम्।। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तु प्राप्नुवाव।।

गन्धादि दानम्

फिर इन सभी आसनों के समीप गन्ध, जौ, फूल, यज्ञोपवीत, नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणादि रखें।

ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ॐ भूर्भवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यताम् वृद्धिः।।

. . . . . गोत्रेभ्योऽस्मन्मातृ पितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यो ॐ भुर्भवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

. . . . . गोत्रेभ्योऽस्मत्पितृपितामह प्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

(द्वितीय) . . . . . गोत्रेभ्योस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यो, सपत्नीकेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः, ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यताम्वृद्धिः।।

भोजन दानम्

फिर भोजन का संकल्प करके सब स्थानों पर नैवेद्य रखे।

ॐ अद्य तत्सन्मात्रादित्रयपित्रादित्रय मातामहादित्रय नान्दी श्राद्ध सम्बन्धिनः सत्य वसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वोः युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्तंदास्यमानमन्नं अमृतरूपेण दत्तं स्वाहा संपद्यतौं वृद्धिः।।

ॐ अद्य तत्सत् . . . . . गोत्राः मातृ पितामही प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः ॐ भुर्भवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्तं दास्यमानमन्नं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

. . . . . गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भुर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दास्यमानमन्नं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

. . . . . गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्तं दास्यमानमन्नं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।।

सक्षीरमुदकदानम्।

ॐ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयंताम्।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

. . . . . गोत्रः मातृ पितामही प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दी मुखाः (द्वितीया)

. . . . . गोत्राः मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः नान्दीमुखाः सपत्नीकांश्च प्रीयन्ताम्।।

(तदुपरान्त निम्नोक्त मन्त्र पाठ करे)

ॐ स्वति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

फिर आँवले, दाख, जौ दक्षिणा सहित चारों कुशाओं पर अलग-अलग चढ़ावे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्यफल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक यवमूल दातुमहमुत्सृजे।।

ॐ . . . . . गोत्रेभ्यो मातृपितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक यवमूल दातुमहमुत्सृजे।।

ॐ . . . . . गोत्रेभ्यो पितृपितामह प्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक यवमूल दातुमहमुत्सृजे।।

ॐ . . . . . गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूल दातुमहमुत्सृजे।।

आशीषोग्रहणम्

फिर पित्रेश्वरों के आगे हाथ फैलाकर आशीर्वाद माँगें।

गोत्रनो वर्द्धताम्।। वर्द्धतां वो गोत्रो।। १।।

हमारे गोत्र की वृद्धि हो।

दातारोऽभिवर्द्धताम्। अभिवद्र्धताम्वो दातारः।।२।।

हम दाता हों।

वेदाश्च नो अभिवद्र्धताम्।। अभिवद्र्धता म्वोवेदाः।।३।।

हम वेद के मानने वाले हों।

संततिर्नो वर्द्धताम्।। वर्द्धताम्वः सन्तति।। ४।।

हमारी बहुत सी सन्तति हों।

श्रद्धा च नो मा व्यगमत्।। माव्यगमद्वः श्रद्धा।। ५।।

हमारी श्रद्धा सब में बनी रहे।

बहुदेयं च नोऽस्तु।। अस्तुबो बहुदेयम्।। ६।।

हम सबों को खूब दें।

याचितारश्च नः सन्तु।। सन्तु वो याचितारः।।७।।

हम किसी से माँगने न जायँ।

एता आशिषाः सत्यासन्तु।। सन्त्वेतास्सत्याशिषाः।।८।।

यह आशीर्वाद हमने आपसे माँगा है, ये सब आपकी कृपा से सम्पूर्ण सिद्ध हों।

ॐ माता, पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः।।१।। मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः। एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मंगलम्।। २।।

फिर इस मन्त्र को बोलकर कहे हे पित्रेश्वरो! हमारा मंगल करो और अमंगल को दूर करो।

कर्त्ता-ततो नान्दीश्राद्धसम्पन्नम्। ब्राह्मणसुसम्पन्नम्।

फिर हाथ आगे फैला करके कहे सम्पन्नम् फिर उल्टे कहे सुसंपन्नम्।।

विसर्जनम्

हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र पाठ कर विर्सजन करे।

ॐ वाजेवाजेवतवाजिनोनोधनेषु विप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः। अस्य मध्यः पिबतमादयध्वन्तृप्तायातपथिभिर्देवयानैः।।

(हाथ में जल लेकर श्रद्धा की पूर्णता के लिए निम्नलिखित मंत्र बोले और जल पृथ्वी पर छोड़ दे)

कृतानेन नान्दी श्राद्धकर्मणा श्रीनान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। मयाचरितेऽस्मिन् सांकल्पिक नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनाद्गणपतिनान्दीमुखदेवताप्रसादाच्चसर्वःपरिपूर्णोस्तु। अस्तु परिपूर्णः। ॐ।।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जन्म दिवसोत्सव-संस्कार

जन्म दिवसोत्सव—एक प्रेरक पर्व

मानवीय गरिमा के विकास का माध्यम

"मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में एवं मानव समाज में सुख-शान्ति की स्थिति किस आधार पर बनेगी ? इस प्रश्न का यदि संक्षिप्त उत्तर दिया जाय तो वह होगा 'मनुष्य में मनुष्यता के विकास से।"

मनुष्य शरीर और मनुष्यता यह दोनों स्वतन्त्र तत्व हैं। पौराणिक आख्यानों में वर्णित राक्षस, कंस, जरासंध, रावण, कुम्भकर्ण, हिरण्यकश्यप, भस्मासुर आदि सभी सुन्दर मनुष्य शरीरधारी ही थे। आज भी जिन्हें नर—पशु और निर-पिशाच की संज्ञा दी जाती है ऐसे मानव देहधारी बहुतायत से मिलते हैं। मनुष्य देहधारियों में जब पशुता-पैशाचिकता के गुण बढ़ने लगते हैं तो परिस्थितियाँ दुःखद, नारकीय होती चली जाती हैं, तथा जब मनुष्यता का अनुपात बढ़ने लगता है, तो सुखद स्वर्गीय परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं।

प्रश्न उठता है कि मनुष्य में मनुष्यता क्यों घटने लगती है पशुता क्यों बढ़ने लगती है ? इसका उत्तर व्यावहारिक जीवन के अनुभवों से सहज ही मिल सकता है। किसी बगीचे में झाड़-झंखाढ़ क्यों उगने लगते हैं—रमणीयता क्यों घट जाती है ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है कि बागवानी के सिद्धान्त और उसकी कला की उपेक्षा होने का यह परिणाम है। किसी फैक्ट्री का उत्पादन घटने एवं घाटे की स्थिति क्यों पैदा होती है ? उत्तर है उत्पादन के प्रति उदासीनता होने और व्यवस्था एवं तत्परता के अभाव में यह स्थिति बनती है। मनुष्य जीवन में मनुष्यता का ह्रास इसीलिए होने लगता है कि समुचित सम्बर्धन एवं पोषण की व्यवस्था पर से ध्यान हट जाता है। सफल बागवान एवं फैक्ट्री संचालक जैसी तत्परता मनुष्यता के विकास में भी बढ़ती जाय तो उसका अभाव रहने का कोई कारण नहीं रह जाता।

यदि किसी फैक्ट्री के लक्ष्य एवं उत्पादन का लेखा-जोखा न रखा जाय तो घाटे के कारणों को समझना ही असम्भव है, उनके निवारण का तो प्रश्न ही नहीं उठता। हम मनुष्यता के विकास की कामना तो करते हैं, किन्तु उसका लेखा-जोखा रखने, उचित चिन्तन द्वारा सही मार्ग खोजने तथा अभावों की पूर्ति करने की कोई प्रक्रिया बनाकर नहीं रखते। सामान्य कारखानों में वर्ष में कम से कम एक बार पिछले कार्यों के सर्वेक्षण तथा अगले चरणों के निर्धारण की सुनिश्चित व्यवस्था होती है। इसी आधार पर सही योजना बनाना एवं उसको कार्यान्वित करके सफलता की दिशा में क्रमशः आगे ही आगे बढ़ते चलना सम्भव होता है। मनुष्य जीवन में मनुष्यता की दिशा में सुनिश्चित प्रगति के लिए भी यही रीति नीति अपनाई जानी चाहिए। इसके लिए वर्ष में कम से कम एक दिन निश्चित करके रखा जाना चाहिए।

यह सुनिश्चित प्रयास हर क्षेत्र में किया जाता है। राष्ट्र में गणतन्त्र-दिवस, स्वतन्त्रता दिवस आदि के रूप में, संस्थाओं में वार्षिकोत्सव, राजकीय संस्थानों में वार्षिक ऑडिट आदि की सुनिश्चित तिथियाँ रहती हैं। मनुष्य जीवन में मानवोचित मूल्यों की स्थापना, मानवीय गरिमा की वृद्धि करने वाले सद्गुणों, सत्प्रवृत्तियों का लेखा-जोखा लेने, उनके विकास और पुष्टि के लिए निश्चित योजना बनाकर उस पर दृढ़ संकल्प एवं तत्परता पूर्वक चल पड़ने के लिए वर्ष में एक दिन निश्चित किया ही जाना चाहिए।

मनुष्य की आत्मिक शान्ति आत्मोत्कर्ष से लेकर सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए मनुष्य के अन्दर मानवीयता का विकास और पुष्टि अनिवार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। इसीलिए युग निर्माण अभियान के अन्तर्गत व्यक्तित्व के समुचित विकास की सुव्यवस्थित रूपरेखा बनायी गयी है। इस विचारधारा को स्वीकार करने वाले हर विचारशील व्यक्ति से यह अनुरोध आग्रह किया गया है कि वह स्वहित और लोकहित, दोनों उद्देश्यों के लिए वर्ष में कम से कम एक दिन उपयुक्त सर्वेक्षण निर्धारण के लिए निश्चित रखें। इसके लिए सबसे उपयुक्त दिन मनुष्य का अपना जन्म-दिन ही समझा गया है। उस दिन के लिए गहन चिन्तन एवं विशद् प्रयोगों के बाद बड़ी प्रभावशाली किन्तु सुगम समारोह की रूपरेखा भी बनायी गयी है। युग निर्माण परिवार में लगभग सभी सदस्य उसे व्यवहार में लाकर उसका लाभ भी उठाने लगे हैं। थोड़े से समय में ही प्राप्त सत्परिणामों के आधार पर यह विश्वास किया जाने लगा है कि जैसे-जैसे इस प्रक्रिया को जन-जीवन में स्थान मिलता जायगा, वैसे ही वैसे व्यक्तित्वों में मानवोचित सदाशयता की वृद्धि होती चलेगी और उसके सुपरिणाम हर क्षेत्र में प्रकट होने लगेंगे।

जीवन में मानवीय गरिमा के जागरण का लेखा-जोखा करने के लिए जन्म-दिवस को ही क्यों चुना गया, इसके पीछे भी महत्वपूर्ण तथ्य हैं। मान लें कि किसी योग्य व्यक्ति को किसी कारखाने या संस्थान का संचालक नियुक्त किया जाय। निश्चित रूप से उस संस्थान के उद्देश्य एवं लक्ष्य पूरा करने की आशा से ही उसे वह पद दिया जायगा। योग्य व्यक्ति के हाथ में देने पर भी उस कारखाने का उत्पादन पूरा न हो, तो यही माना जायगा कि संचालक लक्ष्य को भूल गया है, उदासीन हो गया है। उस अवांछनीय स्थिति को दूर करने के लिए उस संचालक को निश्चित रूप से उसकी नियुक्ति का स्मरण दिलाया जायेगा कि उसे कारखाने का लक्ष्य पूरा करने के योग्य समझा गया था तथा उसी आशा से उसे वह कार्य सौंपा गया था। जीव को मनुष्य जन्म में प्रवेश कराते समय उसके नियन्ता से उससे मानवीय लक्ष्यों की पूर्ति की आशा अवश्य की होगी। उसे इस योग्य समझा होगा। उस गौरव को स्मरण रखने—उसे खो न देने की प्रेरणा उस दिन के साथ सहज ही जुड़ी होती है।

मनुष्य के रूप में अपना जन्म वस्तुतः एक महत्वपूर्ण अवसर है और एक ऐसी घटना है जिसकी तुलना और अन्य किसी घटना से नहीं की जा सकती। इसे आत्मिक स्तर पर एक महान् सफलता भी कहा जा सकता है। सर्वविदित है कि मनुष्य जन्म प्राप्त करने का अवसर जीवात्मा को अनेक योनियों के बाद प्राप्त होता है। जिस दिन हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ, वह व्यक्तिगत स्तर पर आत्मिक जीवन का एक अति महत्वपूर्ण पर्व माना ही जाना चाहिए। लम्बी अवधि के बाद जीवात्मा को मनुष्य जीवन धारण करने का अवसर मिलना ठीक उसी प्रकार है जैसे कि वर्षों तक अध्ययन करने के बाद सामान्य कक्षाओं से उच्च कक्षाओं तक क्रमशः उत्तीर्ण होते जाने के बाद छात्र को डिग्री मिलती है और वह आगे और अच्छे अवसर प्राप्त करने की स्थिति में जा पहुँचता है।

जीवात्मा अन्य योनियों के अभाव, कष्ट, असुविधा और कुण्ठाओं से ग्रस्त क्रम को परास्त कर अज्ञान और परवशता की बेड़ियों को काटकर जिस दिन अपना भाग्य भविष्य स्वयं बनाने का अधिकार प्राप्त करता है, सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहलाने का गौरव प्राप्त करता है, वह घड़ी निश्चित रूप से अभूतपूर्व कही जानी चाहिए। उससे सम्बद्ध उत्तरदायित्वों को पूरा करके, गौरव का अधिकार बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

मानदीय मनोविज्ञान के अनुसार, किसी प्रसंग विशेष-घटना या दिन विशेष से प्रेरणा एवं उत्साह संचार में सुविधा रहती है। इसीलिए हर देश एवं समाज में विशेष पर्वों के आयोजन की परम्परा है। महापुरुषों की जन्म जयन्तियाँ इसी दृष्टि से मनायी जाती हैं। राम का जन्म चैत्र शुक्ल नवमी को हुआ था सो उस दिन रामनवमी मनाते हैं। भाद्र कृष्ण अष्टमी को श्री कृष्ण की जन्म जयन्ती—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाते हैं। इसी प्रकार गंगा-गायत्री का जन्म गंगा-दशहरा, गायत्री-जयन्ती भगवती सरस्वती का जन्म बसंत-पंचमी आदि हैं। व्यासपूर्णिमा, ऋषि पंचमी, नानक जयन्ती, तुलसी जयन्ती आदि अनेकों पर्व आते हैं, जो ऋषि महर्षियों के जन्म अवसर पर मनाये जाते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामाजिक रूप से इन महापुरुषों की जयन्ती मनाने का इतना ही अर्थ है कि इनका जीवन समाज के लिए—मानव जाति के उत्कर्ष के लिए समर्पित रहा। लोग उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए ही प्रायः उनकी जयन्तियाँ मनाते हैं। उन अवसरों पर सम्बन्धित महापुरुषों के कर्तृत्व और चरित्र का स्मरण किया जाता है ताकि सर्वसाधारण भी उनसे आवश्यक प्रेरणायें ग्रहण कर सकें। निस्सन्देह इस प्रकार की महान् आत्माओं का अवतरण मानव जाति के लिए एक बड़े सौभाग्य का आधार सिद्ध होता रहा है। उस सौभाग्य को स्मरण रखने के लिए भी उनकी जन्म जयन्तियाँ मनायी जाती हैं।

जन्म जयन्तियों के अतिरिक्त भी अन्य प्रेरक प्रसंगों को पर्व रूप में मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के आधार पर भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन की गीता उपदेश के सन्दर्भ में गीता जयन्ती मनायी जाती है। दीपावली के साथ भगवान राम द्वारा लोक विजय के बाद अयोध्या लौटने का प्रसंग जुड़ा है। प्रहलाद के अग्नि परीक्षा में सफल होने, असुर हिरण्यकश्यप के पराभव की धर्म विजय का उल्लास भरा पर्व होली है। शुम्भ-निशुम्भ, मधुकैटभ, महिषासुर आदि असुरों को नष्ट कर भगवती दुर्गा ने जब विजय-ध्वजा फहरायी थी उसी घटना की स्मृति में, उसी तिथि को विजयादशमी मनायी जाती है।

इस प्रकार किन्हीं ऐतिहासिक घटनाओं, महत्वपूर्ण सफलताओं की स्मृति में बहुत से पर्व मनाये जाते हैं। ये पर्व त्यौहार सम्बन्धित घटनाओं की महत्ता को भी स्मरण कराते हैं और सर्व साधारण उनमें निहित तथ्यों को समझकर आवश्यक प्रेरणायें भी प्राप्त करते रह सकते हैं। प्रचलित पर्व त्यौहारों को सामाजिक मान्यता मिलती है और उन्हें इसलिए उल्लासपूर्वक मनाया जाता है कि वे हमारे इतिहास से जुड़े हुए हैं। समाज का इतिहास अपनी संस्कृति की घटनायें आदि इसी कारण प्रिय और महत्वपूर्ण लगती हैं कि उनके साथ अपनापन जुड़ा हुआ है। समाजगत अपनापन इतना प्रिय लग सकता है तो फिर जो अपना है वह कितना प्रिय लग सकता है ? व्यक्तिगत रूप से अपनी चीज अन्य वस्तुओं की अपेक्षा श्रेष्ठ और अधिक प्यारी लगती है, भले ही वह कोई वस्तु हो या अपने व्यक्तिगत जीवन की कोई महत्वपूर्ण घटना, उसकी स्मृति मात्र ही हृदय को पुलकित कर देती है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसी कोई असामान्य घटना घटित होना आवश्यक नहीं है, जिसे समय-समय पर याद किया जाता रहे। अधिकांश व्यक्तियों का जीवन सामान्य और सहज क्रम से चलता रहता है। पर एक घटना ऐसी है, जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक बार घटती है, अनिवार्य रूप से घटती है और अभूतपूर्व होती है—वह है स्वयं उसका अपना जन्म पर्व त्यौहारों के रूप में जिस प्रकार हम किन्हीं ऐतिहासिक घटनाओं का स्मरण करते हैं और उल्लास प्रकट करते हैं, विचार किया जाय तो अपना जन्मदिन उन सभी त्यौहारों से अपने स्वयं के सन्दर्भ में तो सर्वाधिक महत्वपूर्ण ही होता है क्योंकि उसके साथ नितान्त वैयक्तिकता जुड़ी होती है।

जन्मदिन के साथ तो अपनापन ही नहीं नितांत अपना ही होने की बात लागू होती है। सो उस अवसर पर भावनाओं का आवेग सर्वाधिक प्रगाढ़ होता है और उस स्थिति में जो बातें, विचार या प्रेरणायें जितना अधिक प्रभावित कर सकती हैं, वे अन्य किन्हीं अवसरों पर सामान्य स्थिति में शायद ही प्रभावित कर सकें। इस अवसर पर मनाये जाने वाला उल्लास और हर्ष भावनात्मक दृष्टि से उतना ही गहरा होता है। इस घड़ी में आत्मनिर्माण की—जीवन लक्ष्य की बात भी यदि सोची जा सके तो प्रत्येक जन्म दिन आत्मिक विकास की एक नयी सीढ़ी बन सकता है। परीक्षाफल घोषित होने के बाद नया सत्र आरम्भ होने पर विद्यार्थी जिस प्रकार अगली कक्षा में उत्साह के साथ बैठते हैं, उसी प्रकार एक जन्मदिन के बाद—आयु का नया वर्ष आरम्भ करते हुए नयी मंजिल की ओर बढ़ने का उल्लास अनुभव किया जा सकता है।

ऐसे अवसर पर कोई भावनात्मक प्रयोग किया जाता है तो वह व्यक्ति की अन्तरंग चेतना को इतना आर्द्र बना देता है, जिसमें बोये गये बीज अनुकूल ऋतु में बोई जाने वाली फसल की तरह सफलता से अंकुरित होने लगते हैं।

मनुष्य जीवन की गौरव गरिमा समझने, अनुभव करने और उसके अनुरूप अपना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन-क्रम व्यतीत करने में कित्तनी सफलता मिल रही है इसका निरीक्षण करने के लिए प्राचीन काल में प्रायः सभी व्यक्ति अपना जन्म-दिन मनाते थे। समाज में उत्तरदायी पदों पर आसीन व्यक्ति तो सार्वजनिक रूप से इस निरीक्षण के लिए आमन्त्रण देते थे कि औरों की दृष्टि में हमने क्या त्रुटि की है ? आज तो आमतौर पर दूसरों के द्वारा अपने कार्यों की मीनमेख निकाली जाती देखकर कटुता और बैर के भाव उत्पन्न होते देखें जाते हैं। परन्तु उन दिनों ऐसे प्रत्येक संकेत को समझने की परम्परा थी। अपनी कार्यपद्धति में कोई त्रुटि दिखाई देती थी तो उसे तत्परतापूर्वक सुधारने के प्रयास भी चलाते थे। आजकल जन्मदिनों का प्रचलन वैसा नहीं रहा, जिसमें कि अपने अवतरण की गरिमा और मनुष्य जीवन का उद्देश्य व उसे सार्थक बनाने का विचार चिन्तन किया जाय। अधिकांश परिवारों में तो जन्मदिन मनाने की कोई परम्परा नहीं है, कहीं मनाये भी जाते हैं तो वह बच्चों की वर्षगाँठ मनाने तक ही सीमित रखे जाते हैं। सामान्य श्रेणी के परिवारों में जन्मदिन का यह स्वरूप है, तो शिक्षित और उच्च वर्ग के परिवारों में जन्म दिन का यह स्वरूप है, तो शिक्षित और उच्च वर्ग के परिवारों में जन्म दिन के अवसर पर आमोद-प्रमोद के कार्यक्रम भर कर लेने की परम्परा प्रचलित है।

इन दोनों ही परम्पराओं से जन्मदिन मनाने का उद्देश्य पूरा नहीं होता। बच्चों के भी जन्म दिन मनाये जाय यह ठीक है, इस अवसर पर उल्लास व्यक्त किया जाय यह भी उचित है, पर जन्मदिन का मुख्य उद्देश्य उल्लास के साथ-साथ अपने स्वरूप और उद्देश्य को समझना व मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए उपयुक्त कार्यपद्धति अपनाना ही है।

जीवन के गौरव का उद्‌बोधन पर्व

जन्म दिन पर मनुष्य जीवन के लक्ष्य, उद्देश्य एवं उसके गौरव का बोध किया और कराया जाना चाहिए। उसमें हर्षोत्सव के साथ-साथ गहन आत्म-चिन्तन को भी जोड़कर रखा जाना चाहिए। उस दिन विशेष रूप से अपने अतीत का लेखा-जोखा और भविष्य के निर्धारण पर पूरा ध्यान केन्द्रित किया जाना आवश्यक है। संस्थाएँ अपने वार्षिक अधिवेशनों में यही सब करती हैं। उसी आधार पर पिछली पृष्ठ भूमि पर अगले विकास क्रम का ढाँचा खड़ा किया जाता है। अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहने का यही क्रम है। जन्मदिन मनुष्य का व्यक्तिगत वार्षिक पर्व है। इस अवसर पर लोगों को अपने जीवन लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए अथवा उस अवसर पर वैसा परिवेश बनाया जाना चाहिए, जिससे इस स्तर की प्रेरणायें स्फुरित हों। इतिहास साक्षी है कि एक समय में नितान्त पतित, पथभ्रष्ट और अनुचित दिशा में गतिशील व्यक्ति भी जब इस प्रकार की अन्तः प्रेरणाओं से अप्यायित हुए तो कालान्तर में वही गिरे हुए, पतन पंक में फँसे व्यक्ति अपने स्तर से ऊँचे उठकर महामानव बन गये। वल्मीकि, अंगुलिमाल, अम्बपाली, सूरदास, तुलसीदास आदि के जीवन न तो पहले अच्छे थे और न ही उनके पूर्व जीवन को देखकर यह आशा की जा सकती थी कि वे आगे चल कर पूरे समाज का पथ प्रदर्शन करने वाले महामानव बन सकेंगे। जिस दिन उनमें अन्तः स्फुरणा जगी उसी दिन उनकी जीवन दिशा बदल गयी। यह परिवर्तन इतना महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ कि वे नर से नारायण बन गये। जन्म-दिन के साथ जुड़े हुए प्रेरणा प्रसार के साथ व्यक्ति का चेतना प्रवाह जुड़कर ऐसे ही सद्‌परिणाम प्रस्तुत कर सकता है। अन्तः प्रेरणा ने जब विपरीत दिशा में फँसे हुए व्यक्तियों को भी झटके से बाहर निकालकर दिव्य जीवन की ओर अग्रसर करा दिया तो सामान्य जीवन क्रम में वांछित मोड़ न आ सकने का कोई कारण नहीं रह जाता। जन्मदिन के माध्यम प्रसंग में ऐसे ही प्रयास किये जाने चाहिए।

जन्म दिन व्यक्तिगत जीवन का एक महत्वपूर्ण पर्व है। परन्तु स्मरण रखा जाना चाहिए कि पर्व त्यौहार केवल मोद मनाने और हा-हा, ही-ही करने के लिए ही आयोजित नहीं किये जाते। प्रत्येक पर्व त्यौहार में एक प्रेरणा छिपी होती है, जिसे सुनना, समझना और कार्यान्वित करना ही उसका वास्तविक उद्देश्य होता है। बाहरी क्रियाकृत्य तो उस आयोजन को कलात्मक आकर्षक, मनोरंजक एवं हृदयग्राही बनाने के लिए किये जाते हैं। प्रेरणाओं को अन्तरतम के गहन प्रदेश में प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने के लिए ही बाहरी क्रियाकृत्यों का ढाँचा खड़ा किया जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। उस समय का वातावरण ही इस प्रकार का रहता है कि उनमें पर्व सम्बन्धी प्रेरणायें अधिक प्रभावशाली ढंग से व्यक्ति की आस्थाओं और मान्यताओं को स्पर्श कर सकें।

जिसका जन्मदिन मनाया जा रहा है, उसके लिए आवश्यक है कि वह दिन एकान्त में बैठकर आत्म चिन्तन करे और अपने आप से यह प्रश्न पूछे कि (१) उसके जीवन का उद्देश्य क्या है और क्या वह उसे पूरा करने के लिए उचित प्रयत्न कर रहा है ? (२) इस प्रश्न का उत्तर 'न' में मिले तो विचार किया जाना चाहिए कि त्रुटि कहाँ हो रही है और उस त्रुटि को कैसे सुधारा जा सकता है ? (३) अपने व्यक्तित्व में कौन-कौन से दोष दुर्गुण भरे पड़े हैं और उन्हें किस प्रकार हटाया जा सकता है ? तथा (४) अपने स्वभाव में किन सद्गुणों का अभाव है और उस अभाव की पूर्ति के लिए क्या प्रयास किये जाने चाहिए ?

इस अवसर पर पहला विचार किया जाना चाहिए कि भगवान ने हमें यह मनुष्य जीवन क्यों दिया ? आत्मचिन्तन का अपनी गरिमा के स्मरण का आधार यह होना चाहिए कि भगवान न्यायकारी, समदर्शी, निष्पक्ष और तटस्थ है। उसकी सृष्टि का प्रत्येक क्रियाकलाप सुव्यवस्थित और नियमबद्ध ढंग से चलता है। उनकी दृष्टि में न कोई छोटा है और न बड़ा। फिर उसने मनुष्य को ये विशेष सुविधायें और विभूतियाँ क्यों दीं ?

क्या खाने कमाने और जीने मर जाने भरके लिए ? नहीं ! यह पद्धति तो पशु-पक्षियों और मनुष्यतर अन्य प्राणियों की भी होती है। उनके पास न मनुष्य जैसा विकसित मस्तिष्क है और न ही उसके समान कर्म करने की स्वतन्त्रता उन प्राणियों को प्राप्त है। फिर भी वे भोजन और निर्वाह की आवश्यकतायें आसानी से पूरी करते रहते हैं। मनुष्य की अपेक्षा और अधिक सहजता से वे अपना निर्वाह चला लेते हैं। मानव जीवन की भी इतनी मात्र ही आवश्यकता होती तो न उसे बुद्धि दी जाती और न ही स्वतन्त्र विवेक प्रगति उन्नति व विकास की भावनाओं से वह शून्य रहा होता। ज्ञान गौरव व आत्मसत्ता की जिज्ञासा उसे न मिली होती।

फिर मनुष्य की व्यक्तिगत आवश्यकतायें इतनी अधिक भी नहीं हैं कि इन्हें पूरा करने के लिए कोई भारी उद्योग करना पड़े। वस्तुतः मनुष्य की निर्वाहोपयोगी जीवन आवश्यकतायें इतनी सीमित रखी गयी हैं कि वे चलते-फिरते बड़ी आसानी से थोड़े ही समय में थोड़ा-सा श्रम करने से पूरी की जा सकती हैं। अन्य प्राणियों को अपनी निर्वाह आवश्यकतायें पूरी करने के लिए जहाँ रात-दिन भटकना पड़ता है, वहाँ मनुष्य उन आवश्यकताओं की पूर्ति साधारण से श्रम के द्वारा ही पूरी कर सकता है। मनुष्येतर जीव-जन्तु निर्वाह की एक आवश्यकता पूरी करने के लिए ही अपना सारा समय और श्रम लगाते रहते हैं, जबकि मनुष्य के इतने साधन और इतनी सुविधायें एक ही स्थान पर उपलब्ध हैं कि यह इन आवश्यकताओं को बिना किसी कठिनाई के पूरा कर सके।

आवश्यकताओं की पूर्ति का जहाँ तक प्रश्न है, उनमें जरा भी कठिनाई या परेशानी की स्थिति नहीं आती। यह बात और है कि आवश्यकताओं को चाहे जितना बढ़ा लिया जाय और फिर साधन सुविधाओं के अभाव का रोना रोते रहा जाय। विलासिता दिखावे और आडम्बर के लिए बढ़ायी गयी आवश्यकतायें ही इस श्रेणी में आती हैं, जिनके लिए साधनों का अभाव आड़े आता है। निर्वाह के लिए उचित आवश्यकताओं की गणना की जाय तो वे बहुत ही सीमित लगती हैं और यह भी अनुभव सिद्ध होने लगता है कि उन्हें पूरा करना कोई जटिल या दुःसाध्य कार्य नहीं है। घने जंगलों में रहने वाले साधन विहीन लोग—कोल, किरात, भील आदि अपने निर्वाह की व्यवस्था बड़ी सरलता-पूर्वक जुटा लेते हैं। फिर शिक्षित व साधन सम्पन्न परिस्थितियों में रहने वाले लोगों के लिए तो स्वाभाविक निर्वाह की आवश्यकतायें जुटाने में क्या कठिनाई हो सकती है ? कहने का अर्थ यह है कि आवश्यकतायें बढ़ाने और उन्हें पूरा करने के लिए मरते खपते रहने में मनुष्य जीवन की सार्थकता नहीं है।

निस्सन्देह हमें यह जीवन किसी महान उद्देश्य के लिए मिला है। उसमें पहला तो यह कि हम इस महान् अवसर का सदुपयोग करें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और अपनी वर्तमान स्थिति से ऊँचे उठते जायें। इसे आत्मकल्याण भी कहा जा सकता है। शास्त्रकारों और मनीषियों ने बताया है कि मानव जीवन का वास्तविक प्रयोजन पूर्णता को प्राप्त करना है। उस पूर्णता को जिसे पाने के बाद कुछ भी पाना शेष न रह जाय। यदि गम्भीरता से अपनी वर्तमान स्थिति और सामान्य स्तर की अपनायी जा रही नीति को देखा जाय तो विदित होगा कि जिन बातों को हम लक्ष्य मानकर चल रहे हैं, उनमें भी तो पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाते। एक ओर धन के उपार्जन का प्रयास चल रहा है तो दूसरी ओर उसके व्यय की तैयारी चल रही है। एक ओर जीवन उपलब्ध है तो दूसरी ओर मृत्यु की तैयारी शुरू हो रही है। एक ओर मनुष्य मोद मनाता है तो दूसरी ओर खेद और शोक की परिस्थितियाँ खड़ी रहती हैं। मनुष्य किसी बात के लिए कितना ही प्रयत्न करता रहे तो भी उसे पूर्णता नहीं ही मिलेगी।

इस अपूर्णता का कारण यही है कि हम जिन-जिन उपलब्धियों के लिए प्रयास करते हैं और उनमें पूर्णता प्राप्त करना चाहते हैं, वे सब स्वरूपतः ही अपूर्ण, अनश्वर और असत्य हैं। अपूर्णता ही उनका स्वरूप है। कभी भी वे पूर्णता की दिशा में नहीं आ सकतीं। अपने आत्मिक स्तर को, आन्तरिक स्थिति को ऊँचा उठाये बिना पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता, भले ही अन्य दिशाओं में कितना ही पुरुषार्थ किया जाय, कितना ही परिश्रम क्यों न किया जाय ?

हमें अपने जीवन उद्देश्य को समझना चाहिए और उसे पूरा करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। यह तो स्पष्ट है कि यह मनुष्य जीवन केवल खाने-पीने और जीने कमाने भर के लिए नहीं मिला है। मनुष्य को उसके जन्म के साथ ही मिलने वाली विभूतियाँ और विशेषतायें इस बात का प्रतीक हैं कि उसे कोई बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गयी है। एक ओर जहाँ उसके जीवन की सार्थकता अपनी क्षमता और प्रतिभा का निरन्तर विकास करते रहने में है, वहीं उसे सौंपी गयी जिम्मेदारियों को कुशलतापूर्वक निभाते चलने में भी है। क्या हैं वे जिम्मेदारियाँ ? निस्सन्देह मनुष्य को ये विशेष विभूतियाँ और विशिष्ट क्षमतायें परमात्मा ने इसलिए प्रदान की हैं कि वह उसका सहायक बन सके। परमात्मा ने मनुष्य को अपनी सृष्टि व्यवस्था में एक सहायक के रूप में निर्मित किया है और उस पर यह जिम्मेदारी सौंपी है कि वह सृष्टि को अधिक सुरभ्य अधिक विकसित बनाने के लिए प्रयत्न करता रहे।

सामान्य जीवन में भी हम देखते हैं कि कुछ व्यक्तियों को बहुत ज्यादा सुविधायें और बहुत अधिक अधिकार मिले होते हैं तथा कुछ के हिस्से में साधारण सुविधायें ही आती हैं। देखने में यह प्रत्यक्ष रूप से अन्याय पूर्ण लगेगा। किन्तु व्यवस्था की दृष्टि से वह आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। बैंक मैनेजर, कलेक्टर, कप्तान आदि बड़े अफसरों को जो सुविधायें मिली होती हैं, उनके पीछे लोक व्यवस्था का प्रयोजन ही छुपा रहता है। यही इन अधिकारियों की जिम्मेदारी है और यही उनका धर्म कर्त्तव्य। इसे वे ठीक तरह पालन करते हैं तो सूत्र संचालकों की सहानुभूति एवं प्रशंसा के भागी बनते हैं और यदि वे इन जिम्मेदारियों का व्यतिक्रम करें, कर्त्तव्य को भूलकर प्राप्त सुविधाओं से लोकहित की उपेक्षा कर स्वार्थ साधन के लिए उतर पड़ें तो यह बहुत ही बुरी बात होगी। उनकी आत्मा धिक्कारेगी, लोकनिन्दा होगी और सूत्र संचालकों की घृणा, अप्रसन्नता एवं दण्ड का भागी बनना पड़ेगा।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य और अपनी जीवन नीति, कार्यपद्धति का निरीक्षण करते हुए विचार करना चाहिए कि कहीं हम भी तो ऐसा ही अनुचित नहीं कर रहे हैं। निर्वाह की छोटी-सी और सीधी सरल आवश्यकताओं को हमने कहीं कृत्रिम रूप से तो नहीं बढ़ा लिया है ? विलासिता और अहंकार की दुर्बुद्धि से प्रेरित होकर कहीं हम अपने जीवन को इतना खोखला तथा ढोंगी तो नहीं बना बैठे हैं, जिसकी पूर्ति के लिए हमें दिन-रात चिन्तित रहना पड़ता है तथा अपनी अमूल्य जीवन सम्पदा को उसी के लिए लगाते रहना पड़ता है। दूसरों की देखा-देखी हम भी तो अपना जीवन इतना आडम्बरपूर्ण नहीं बना बैठे हैं कि उसी के लिए सारा समय, सारा श्रम और सारा मस्तिष्क खर्च हो जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्मदिन के अवसर पर मानव जीवन के उस महान् उद्देश्य को समझने के लिए प्रयास करना चाहिए, जिसके लिए परमात्मा ने इतना परिश्रम किया और हमारे प्रति इतनी उदारता बरती। सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी होने के साथ-साथ हमें अपने जीवन स्तर की सर्वोत्कृष्टता का भी परिचय देना चाहिए और अपनी वर्तमान रीति-नीति में अपनायी जा रही जीवन पद्धति में इस प्रकार का परिवर्तन करना चाहिए कि उससे मनुष्य जीवन के महान प्रयोजन की पूर्ति हो सके। शरीर-यात्रा की सामान्य क्रिया में ही यह स्वर्णिम अवसर पूरा न हो जाय इसके लिए सावधानी बरतने की बात सोचनी चाहिए यह ठीक है कि उदर पोषण और सन्तानोत्पादन की अदम्य क्षुधाओं की तृप्ति के लिए अनेक चिन्तायें करनी पड़ती हैं और बहुत-सी जिम्मेदारियाँ लेनी पड़ती हैं, जिन्हें पूरा करने में ही बहुत समय लगाना पड़ता है। आये दिनों जो सामाजिक उलझनें सामने आती रहती हैं, उन सब कार्यों में बहुत-सा समय चला जाता है, इतना सब होते हुए भी यह एक तथ्य है कि यदि अपनी आन्तरिक इच्छा कुछ भी श्रेय साधना की हो तो उसके लिए समय मिल सकता है और सुविधा भी।

संसार में ऐसे अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं, जिनसे यह प्रमाणित होता है कि अभाव ग्रस्त, कठिनाइयों में फँसे हुए, अनेक उत्तरदायित्वों के बोझ से दबे हुए व्यक्तियों ने भी अवकाश का समय निकालकर अपनी लौकिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के लिए कठोर प्रयत्न किये और उनमें सफलता प्राप्त की। आन्तरिक अभिलाषा यदि तीव्र हो तो उसके लिए आवश्यक दृढ़ता तथा प्रयत्नशीलता विद्यमान रहे तो रास्ता मिल जाता है।

स्मरण रखा जाना चाहिए कि मनुष्य जीवन का सदुपयोग अपनी प्रतिभा और क्षमता का निरन्तर विकास करते रहने में तो है ही उसकी गरिमा इस बात में है कि अर्जित साधनों और विकसित क्षमताओं का उपयोग अपने लिए न्यूनतम और दूसरों के लिए अधिक से अधिक किया जाय। पुरुषार्थी और परिश्रमी व्यक्ति इस संसार में कम नहीं हैं, प्रतिभाशाली और बुद्धिमान भी बहुत हैं पर उनमें ऐसे व्यक्तियों की संख्या कम ही है, जो अपनी प्रतिभा और क्षमता का उपयोग स्वयं अपने लिए न्यूनतम और दूसरों के लिए अधिकाधिक करते हैं। अधिकांश व्यक्ति इन विशेषताओं का उपयोग केवल अपनी भौतिक सुख समृद्धि बढ़ाने तथा वासना और तृष्णा की पूर्ति में ही करते हैं। धनी विद्वान और बलवान इस संसार में कम नहीं। किन्तु इन विभूतियों का उपयोग केवल अपने ऐश आराम और सुख-विकास के लिए ही करने की परम्परा है। इस प्रवृत्ति को पाशविक स्तर की ही कहा जाना चाहिए क्योंकि पशु भी अपनी बात सोचते और अपने सुख-दुःख की चिन्ता करते हैं। यही भावनास्तर यदि मनुष्य का भी रहता हो, तो फिर उसमें और पशु में क्या अन्तर रहा ?

सौभाग्य का लाभ उठाएँ

आध्यात्मिक मान्यता है कि जीवात्मा जब विभिन्न योनियों में जन्म ले चुकी होती है, तब उसे मनुष्य योनि प्राप्त होती है। अन्य योनियों की यात्रा कर लेने के बाद जीवात्मा मनुष्य जन्म ग्रहण करती है। यह उसकी परीक्षा का समय होता है। ऊँचा उठने आगे बढ़ने और अधिक ऊँची स्थिति में पहुँच सकने लायक है या नहीं, इसी बात की परीक्षा देने के लिए जीवात्मा मनुष्य शरीर में आता है। यदि इस परीक्षा में वह सफल हुआ तो उसे आगे की उच्च स्थिति स्वर्गादि देवयोनि प्राप्त करने का अवसर मिलता है अन्यथा वह पुरानी कक्षा में वापस लौटा दिया जाता है।

मनुष्य जन्म को संसार के अन्य सभी प्राणियों के जीवन से श्रेष्ठ कहा गया है, क्योंकि इसमें जीवात्मा को कर्म करने की जो स्वतन्त्रता प्राप्त है वह अन्य किसी भी प्राणी को नहीं मिली है। मनुष्येतर सभी जीव-जन्तु प्रकृति की प्रेरणाओं से प्रेरित होकर अपनी नैसर्गिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही क्रियाशील होते हैं। इससे अधिक की न उन्हें सूझती है और न ही वे इसके अतिरिक्त कुछ कर ही पाते हैं।

मनुष्य के लिए ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। उसे कर्म करने की स्वतन्त्रता मिली है। इस स्वतन्त्रता के कारण ही उसके उत्थान और पतन की कुंजियाँ उसके अपने हाथ में हैं। इसीलिए मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

और परमात्मा का सबसे लाड़ला बेटा कहा जाता है। इस तरह की स्वतन्त्रता देवताओं को भी उपलब्ध नहीं है, वे मनुष्य से उन्नत स्थिति में रहते हुए भी अपने उत्थान के लिए वैसे स्वतन्त्र नहीं हैं जैसा कि मनुष्य। इसलिए कहा जाता है कि देवता भी मनुष्य का जन्म और जीवन प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहते है तथा कदचित् ऐसा अवसर प्राप्त हो जाय तो उसे अपना सौभाग्य समझते हैं क्योंकि उन्हें मनुष्य के रूप में जन्म लेने के बाद नये कर्म करने का अधिकार प्राप्त होता है और उस अधिकार का उपयोग करके अपनी स्थिति तथा स्तर को और भी उन्नत कर सकते हैं।

मनुष्य का भावनास्तर उसके गौरव के अनुरूप होना चाहिए। उस महान उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्मुख रहना चाहिए, जिसके लिए कि यह जीवन मिला है। इसका शुभारम्भ आत्मकल्याण-आत्म निर्माण की प्रथम सीढ़ी से किया जाना चाहिए। जब तक जीवन लक्ष्य का ही बोध न था तब तक उस दिशा में चलने से अपने मनुष्य जन्म को सार्थक बनाने की बात ही कहाँ से आती है। अतः जीवन लक्ष्य का बोध होते ही—आत्मकल्याण को अपना साधन लक्ष्य अनुभव करते ही अपने व्यक्तित्व की उन त्रुटियों और कमियों को खोजने तथा उन्हें दूर करने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए, जो लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में बाधक हो सकती है। इसी का नाम आत्म शोधन है।

आत्म शोधन का अर्थ है व्यक्तित्व की त्रुटियों, कमजोरियों का परिष्कार और अभावों की पूर्ति। सामान्य जीवन-क्रम में अपनी गल्तियाँ प्रायः दिखाई ही नहीं देती। दूसरों के दोष तो खूब सूझ पड़ते हैं और उसमें अक्ल भी खूब दौड़ती है, पर अपनी दुर्बलताओं पर दृष्टि ही नहीं जाती। न अपनी त्रुटियाँ सूझती हैं और न अपनी समझ में कोई दोष दिखलाई पड़ता है। इस विभ्रम को ही मोहक माया जाल कहा गया है। अपनी निर्दोषिता के सम्बन्ध में फैले हुए इस व्यापक भ्रम को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस एक दुर्बलता ने मनुष्य जाति की प्रगति में जितनी बाधा पहुँचायी है उतनी संसार की समस्त अड़चनों ने मिलकर भी नहीं पहुँचायी है।

सृष्टि के सभी प्राणियों से अधिक बुद्धिमान और चतुर से चतुर व्यक्ति इस मान्यता से ग्रस्त होते हैं कि "दोष तो दूसरों में ही हैं, उन्हीं की निन्दा करनी है और उन्हें ही सुधारना भी चाहिए। हम स्वयं तो पूर्णतः निर्दोष और निष्कलुष हैं। हमें सुधरने की कोई जरूरत नहीं।" इस सर्वव्यापी आग्रह को देखते हुए ही कहना पड़ता है कि मनुष्य की तथाकथित बुद्धिमत्ता अवास्तविक है।

विभिन्न योनियों में, पशु और कीट-पतंगों के कलेवर में जन्म लेने और जीवन जीने के कारण जीव पर अनेकों कषाय कल्मष चढ़े हुए होते हैं। मनुष्य योनि में ही उसे उन पिछली त्रुटियों को सुधारने और कषाय कल्मषों का परिष्कार करने का अवसर मिलता है लेकिन होता विपरीत है कि वह उन गंदगियों का परिष्कार करने के स्थान पर अपने मल आवरण को ढँकने लगता है। जन्मदिन के अवसर पर पैनी दृष्टि से यह विचार करना चाहिए कि कहीं हम भी तो वैसी ही भूल नहीं कर रहे हैं और पिछले जन्म की दुरव्यवस्थाओं को गले बाँधते चल रहे हैं। इस आत्म निरीक्षण के बाद यह विचार किया जाना चाहिए कि इन कुसंस्कारों को किस प्रकार हटाकर अपने को स्वच्छ, निर्मल तथा प्रगतिशील बनाया जाय।

प्रगति की दिशा में अग्रसर होने के लिए सबसे बड़ा व्यवधान यह है कि मार्ग को रोकने वाली बाधा का स्वरूप समझ में नहीं आता। पेट में दर्द है और सिर पर दवा मली जाय तो पेट का कष्ट कैसे दूर होगा ? अपने दोष दुर्गुणों के कारण स्वयं का जीवनक्रम अस्त-व्यस्त बना रहता है पर उसका दोष दूसरों के मत्थे मढ़कर झूठा आत्म सन्तोष भले ही कर लिया जाय पर समस्या का समाधान कहाँ से और कैसे हो सकता है ? अपने को सर्वथा निर्दोष और पूर्ण मानने तथा सारे संसार में गल्तियाँ, त्रुटियाँ खोजने के गलत दृष्टिकोण के कारण ही अपना सुधार कर पाना सम्भव नहीं होता। उल्टे जब कोई उस ओर इशारा करता है तो हमें उसमें अपना अपमान लगने लगता है। दोष बताने वाले को अपना शुभ चिन्तक मानने की अपेक्षा मनुष्य जब उसे अपना अपमान समझता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, खीझ उठता है, क्रोध करने लगता है तो समझना चाहिए कि सच्ची प्रगति की ओर चलने का एक कदम भी उठा पाना अभी नहीं सीखा गया है।

स्कूली शिक्षा के मूल्य पर कई व्यक्तियों को ऊँची नौकरी मिल जाती है। पूँजी होने पर ब्याज भाड़े से या किसी ढर्रे के व्यापार को अपनाये रहने से धन कमाते रहना भी सरल हो जाता है। शरीर और मस्तिष्क की अच्छी बनावट होने से सुन्दरता, चतुरता एवं कला-कौशल में निपुणता मिल जाती है, संयोग एवं परिस्थितियाँ भी किसी को सम्मानस्पद स्थिति पर ले जाकर बिठा देती हैं। इन माध्यमों से कितने ही लोग बड़े बन जाते हैं और सफलता का गर्व-गौरव अनुभव करते हैं। पर यह सारे आधार बाहरी दिखावा मात्र हैं। संयोगवश या दुर्भाग्य से किसी कारण यह परिस्थितियाँ बदल जायें और सम्मान सौभाग्य छिन जाय तो ऐसे व्यक्ति सर्वथा निस्तेज और दीन-हीन दिखाई पड़ते हैं। अपने निज के सद्गुण न होने के कारण परिस्थितियों के आधार पर बड़े बने रहने वाले व्यक्तियों को ही राजा से रंक और अमीर से भिखारी होते देखा जाता है। जिसमें अपने गुण होंगे वह गई-गुजरी परिस्थिति में भी अपने लिये रास्ता निकालेगा और नरक जायेगा तो वहाँ भी जमादार बनकर रहेगा।

सरकारी ऊँचे पदों पर काम करने वाले व्यक्ति जब सेवा-निवृत्त होते हैं तो उनमें से कितने ही मौत के दिन पूरे करते हुए शेष जीवन नीरस, निस्तेज और निकम्मा ही व्यतीत करते हैं। पद ने इन्हें जो गौरव दिया था वह पद छिनते ही चला गया। व्यक्तिगत सद्गुणों के अभाव में अब ये एक निकम्मे, निरर्थक मनुष्य की तरह ही बने हुए रहते हैं, जिनकी कहीं कोई पूछ नहीं। किन्तु यदि उनमें वैयक्तिक सद्गुण रहे होते हैं तो सेवा-निवृत्त होकर अपनी स्वतन्त्र प्रतिभा के आधार पर जहाँ भी रहते हैं, वहीं नवीन चेतना उत्पन्न करते हैं।

प्रगति की जड़ व्यक्तित्व को विकसित करने वाले सद्गुणों की मात्रा पर निर्भर रहती है। वह जितनी अधिक हो गई उतना ही व्यक्ति सुदृढ़ या उपयोगी हो सकेगा। ऐसे व्यक्ति जहाँ भी, जिस परिस्थिति में रहते हैं, वहीं अपनी उपयोगिता और आवश्यकता देखते हैं। हर स्थिति में उनका स्वागत और सम्मान होता है। अन्धे, अपाहिज और दरिद्रों में भी कितने लोग ऐसे होते हैं, जिनकी समीपता को लोग अपना सौभाग्य समझते हैं। इसके विपरीत कितने ही साधन सम्पन्न लोगों से वे भी मन ही मन घोर घृणा करते हैं, जो उनसे निरन्तर लाभ उठाते रहते हैं। सद्गुण ही वह जादू है जिसकी प्रशंसा शत्रु को भी करनी पड़ती है।

किसने कितनी उन्नति की इसकी सच्ची कसौटी यह है कि उस मनुष्य के दृष्टिकोण और स्वभाव में कितना परिष्कार हुआ ? जन्म दिन पर अपने आपको इस कसौटी पर कसने और इसे न्याय की तुला पर तौलने के लिए एकान्त चिन्तन करना चाहिए। वस्तुतः किसी की बाह्य स्थिति को देखते हुए उसकी उन्नति अवनति का अन्दाज नहीं किया जा सकता है। कितने ही अयोग्य व्यक्ति परिस्थितियों के संयोग और अपनी चालाकियों से बड़े बन जाते हैं और कितने ही धूर्त व्यक्ति छल बल से, अपनी धूर्तताओं से सम्मान के स्थानों पर अपना अधिकार जमाये रहते हैं। कितने ही व्यक्ति अनुचित रीति से सफलता प्राप्त करते हैं और अयोग्य व्यक्ति सुयोग्यों पर शासन चलाते हैं। इस विडम्बना के रहते हुए भी व्यक्ति के विकास का, सुसंस्कारिता और श्रेष्ठता का मूल्य किसी प्रकार भी कम नहीं होता। वह जहाँ कहीं भी रहेगा अपना प्रकाश फैलाता दिखाई देगा। गयी-गुजरी परिस्थितियों में रहते हुए भी वह अपने उत्कृष्ट दृष्टिकोण के कारण उस छोटे से क्षेत्र में भी एक नये स्वर्ग का निर्माण कर रहा होगा। उसके स्वभाव की श्रेष्ठता गुलाब के फूल की तरह महक रही होगी।

बाहरी उन्नति की जितनी चिन्ता की जाती है आन्तरिक उत्कर्ष के लिए भी यदि वैसे ही प्रयास किये जायें तो मनुष्य दोहरा लाभ उठा सकता है। आध्यात्मिक प्रगति के आधार तो इससे बनेंगे ही, लौकिक सम्मान एवं भौतिक सफलताओं की दृष्टि से भी वह पीछे नहीं रहेगा। किन्तु यदि आन्तरिक उन्नति को गया बीता रखा गया, और बाहरी उन्नति के लिए ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

निरन्तर दौड़-धूप की जाती रही तो कुछ साधन सामग्री भले ही हाथ लग जाय, शान्ति और सन्तोष उससे भी नहीं मिलने वाला है। कई धनी मानी और बड़े कारोबारी व्यक्ति सामान्य स्तर के लोगों की अपेक्षा अधिक चिंतित और दुःखी देखे जाते हैं। कारण यही है कि कार्य विस्तार के साथ उनकी उलझनें तो बढ़ती जाती हैं परन्तु उन्हें सुलझाने का उचित दृष्टिकोण न होने से उन्हें अधिक उद्विग्न रहना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति निरन्तर उद्विग्न रहते, कुढ़ते और झुँझलाते रहते हैं। सम्पन्नता का सुख भी केवल उन्हीं को मिलता है, जिन्होंने अपना आन्तरिक परिष्कार कर लिया होता है। धन का सदुपयोग करके तथा पद एवं मान द्वारा उपलब्ध प्रभाव को परमार्थ प्रयोजनों में लगाकर ऐसे व्यक्ति ही ईश्वर प्रदत्त सुविधाओं का समुचित लाभ उठा पाते हैं।

बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का प्रथम चरण है कि आन्तरिक परिष्कार के लिए उद्यत हुआ जाय। जीवन अनेक समस्याओं और उलझनों से भरा रहता है। कई का तात्कालिक समाधान भी हो जाता है। दवा देने पर बीमारी दब जाती है उससे रोग का पूर्ण उपचार नहीं होता। स्थायी निदान तो तभी सम्भव है, जब शरीर को स्वस्थ और रोग-प्रतिरोधी क्षमता से सम्पन्न बनाया जाय। समस्याओं के स्थायी समाधान का भी यही रास्ता है कि अपनी विकृतियों को दूर किया जाय और अपने व्यक्तित्व को इतना सशक्त सबल बनाया जाय कि फिर उत्पन्न होने वाली समस्याओं का स्वतः ही समाधान होता चले।

व्यापक कर्त्तव्यों को अपनायें

आत्म कल्याण की, आन्तरिक परिष्कार की बात सोचने और उसकी सुनिश्चित योजना बनाने के बाद अगला प्रश्न अपने आप से यह करना चाहिए कि क्या हम सौंपे गये उत्तरदायित्वों को भलीभाँति पूरा कर रहे हैं ? परमात्मा ने मनुष्य को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है और उसे वे विभूतियाँ भी सौंपी हैं जो अन्य किसी जीव को प्राप्त नहीं हैं। प्रकृति ने अनेक साधनों को उसके लिए प्रस्तुत किया है। इन विभूतियों, साधनों और सुविधाओं के साथ उसके ऊपर साधारण और बड़े उत्तरदायित्व भी सौंपे हैं। इन साधनों और सुविधाओं को समस्त सृष्टि का स्वस्थ संचालन करने के लिए सौंपा गया कोष ही मानना चाहिए।

किसी बड़े व्यापार, उद्योग व्यवसाय का कारोबार बहुत विस्तृत क्षेत्र में फैला होता है पर उसका संचालन एक ही स्थान से किया जाता है और सम्पूर्ण हिसाब-किताब भी एक ही कार्यालय में रखा जाता है। संचित कोष में आते रहने वाला धन एक ही जगह जमा होता है और उसका विनियोग भी निश्चित केन्द्र से ही किया जाता है। उसकी देखभाल करने के लिए एक ही अधिकारी नियुक्त किया जाता है। अर्थात् सम्मिलित उत्तरदायित्व कुछेक व्यक्तियों के ही जिम्मे रहते हैं। मनुष्य के पास जो क्षमतायें और साधन उपलब्ध हैं, वे निश्चित रूप से सारी सृष्टि के जीवों की सम्मिलित शक्तियाँ हैं। मनुष्य को उनका संरक्षक, अधिकारी या नियोजन कर्त्ता बनाया गया है।

परिवार में उपार्जन और व्यवस्था का कार्य कुछ बड़े वयस्क व्यक्ति ही करते हैं। वे सबकी सुख-सुविधा और निर्वाह-व्यवस्था का प्रबन्ध करते हैं। इसके लिए उन्हें विशेष अधिकार भी दिये जाते हैं और परिवार में उनका स्थान भी अन्य सदस्यों से बड़ा होता है, वह केवल इसलिए कि वे जिम्मेदार सदस्य अपना कार्य सुचारु रूप से करते रह सकें। इसलिए नहीं कि प्राप्त विशिष्ट स्थिति का सारा लाभ वही उठा लें और अन्य सदस्यों को उपयुक्त, वांछनीय हितों से भी वंचित रह जाना पड़े। परमात्मा ने मनुष्य को भी इसी प्रकार विशेष क्षमतायें और अधिकार दिये हैं।

जिस प्रकार सार्वजनिक सम्पत्ति के ट्रस्टी को उसका संरक्षक नियुक्त किया जाता है और उससे यह आशा की जाती है कि वह उस धन को किसी के व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं सार्वजनिक हित में काम लायेगा और उसका सदुपयोग करेगा। मनुष्य को भी ऐसा ही ट्रस्टी बनाया गया है और उसे बुद्धिबल के रूप में एक-एक सार्वजनिक ट्रस्ट का अधिकारी, ट्रस्टी नियुक्त किया गया है और उससे आशा की गयी है कि वह अपनी साधन क्षमताओं का उपयोग जनहित के लिए ही करेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

छोटे बच्चों की सम्पत्ति के लिए संरक्षक को इसलिए नियुक्त किया जाता है कि छोटे बालक समझदार नहीं होते। उनमें इतनी सूझ-बूझ नहीं होती कि वे अपनी संपदा का उपयोग कर सकें। मनुष्य को भी अन्य जीव-जन्तुओं का संरक्षक नियुक्त किया गया है और इसे इतने सारे साधन व अधिकार इसलिए दिये गये हैं कि वह उनसे अपने से छोटों का भी मंगल करता रहे, उनका हित भी साधता रहे। बड़े पदों पर काम करने वाले उच्च अधिकारी और उत्तरदायी व्यक्ति अपने पद और प्रभाव का दुरुपयोग अपने लाभ के लिए ही करने लगें तो उसे बेईमानी और भ्रष्टाचार कहा जाता है। इस अनुचित कर्म के कारण उसे न केवल उसके पद से वंचित कर दिया जाता है वरन् उसे राजदण्ड भी मिलता है। ठीक उसी प्रकार अपने से निम्न स्थिति के मनुष्यों, प्राणियों की सेवा सहयोग के लिए मिली सुविधाओं और शक्तियों का लाभ जब केवल अपने और अपने परिवार के लिए ही उठाया जाने लगता है तो ईश्वरीय संविधान में, आध्यात्मिक जीवन पद्धति में वह अपराध सिद्ध होता है और उसके लिए अपने ढंग की कड़ी दण्ड व्यवस्था है जो व्यक्ति इस तरह की अवांछनीय रीति-नीति अपनाते हैं, वे आत्म प्रताड़ना से लेकर अगले जन्मों में पिछली योनियों में जा पड़ने जैसी अधोस्थिति का दण्ड भोगते हैं।

जन्मदिन पर, अपनी जीवन गतिविधियों का निरीक्षण करते समय, आत्मचिन्तन की बेड़ियों में अपनी रीति-नीति में इस प्रकार फेर-बदल करने की योजना बनानी चाहिए जिससे अपना जीवन शौक-मौज की, वासना तृष्णा की गंदगी में बिलबिलाते हुए न बीते। जो समय अपने हाथ में है, भविष्य के जो दिन बचे हैं, उनका उपयोग अपने उत्तरदायित्वों की पूर्ति करते हुए बीते। भगवान के भजन-पूजन का भी यही उद्देश्य होता है कि हम उन उत्तरदायित्वों को स्मरण में रखे रहें, उनकी अपेक्षा न करें। ईश्वरीय दण्ड से डरें और यह जानें कि वह केवल उन्हीं से संतुष्ट एवं प्रसन्न होता है जो ठीक प्रकार अपना कर्त्तव्य-पालन करते हैं। जो लोग ऐसा सोचते हैं कि कर्त्तव्यों की मनमानी उपेक्षा करते रहें और केवल भजन से ही ईश्वर को प्रसन्न कर लेंगे वे भारी भूल करते हैं।

राजा, महाराजा और कर्त्तव्यपरायण अधिकारी तक जब इतनी बुद्धि रखते हैं कि चापलूस प्रशंसकों की अपेक्षा कर्त्तव्यपरायण सेनापति का अपने दायित्वों के प्रति सजग कर्मचारी अधिक मूल्यवान हैं तो सृष्टि का स्वामी ही क्या इतना कम समझदार और मूर्ख है, जो केवल स्तुति पाठ करने वालों से प्रसन्न हो जायेगा। वस्तुतः ईश्वर को अपने पूजा-पाठ और नाम लेने से अधिक उसके आदेशों का पालन करने से अधिक प्रसन्नता होती है।

जीवन उद्देश्य की पूर्ति के लिए, अन्तरात्मा के संतोष के लिए, लोक कल्याण के लिए और ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए सेवा मार्ग ही एकमेव मार्ग है, जिस पर चलते हुए उपयुक्त सभी प्रयोजनों को पूरा किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में इसे यों भी कहा जा सकता है कि अपनी प्रतिभा योग्यता और क्षमता का एक अंश मानव कल्याण के लिए, समाज सेवा के लिए लगाते रहकर ही हम प्राप्त ईश्वरीय अनुदानों की पात्रता, सिद्ध कर सकते हैं। यह उत्तरदायित्व पूरा करने के लिए, मानवीय जीवन की सार्थकता सिद्ध करने के लिए सेवा को भी अपने जीवन में स्थान देना चाहिए। सेवा का अर्थ है ऐसे कार्य जिनसे औरों को सुख और आत्म-सन्तोष मिलता है। व्यापक अर्थों में समाज सेवा का अर्थ मनुष्य की जीवन दिशा को समुन्नत एवं ऊर्ध्वगामी बनाना है, फिर यह कार्य व्यक्ति विशेष के लिए हो अथवा पूरे समाज के लिए। व्यक्ति विशेष के प्रति किये गये इस स्तर के कार्य व्यक्ति की सेवा कहलाती है तो पूरे समाज में इस तरह की प्रवृत्तियों के लिए किये गये प्रयास समाज सेवा। समाज सेवा की सामान्य परिभाषा यही हो सकती है कि व्यक्ति और राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों का विकास करने के लिए समुचित प्रयास किये जायें। कष्ट मिटने चाहिए, प्रसन्नता बढ़नी चाहिए, सदाचार और सत्प्रवृत्तियाँ बढ़नी चाहिए, समाज में निर्बलता, अशक्ति और अज्ञान का निवारण करने के लिए स्वास्थ्य, शक्ति तथा सद्ज्ञान बढ़ाने के प्रयास चलने चाहिए। सेवा साधना के ये नीति निर्देशक सिद्धान्त हो सकते हैं। जिनकी व्यवहार क्षेत्र में कई शाखा-प्रशाखायें बढ़ सकती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन और सद्ज्ञान का विकास शाश्वत ढंग की और समयानुकूल समग्र सेवा साधना हो सकती है। आज आवश्यकता भी इस स्तर की सेवा की ही है। सामाजिक जीवन में जीवन मूल्यों का घटता हुआ स्वरूप सच्चाई और ईमानदारी का तिरोहित होता जा रहा भाव आज के समाज की सर्वोपरि समस्या है। हम जिस समाज में रहते हैं, उसमें ऐसी अनेकों दुष्प्रवृत्तियाँ और मूढ़ मान्यतायें जड़ जमा चुकी हैं, जिनके कारण व्यक्ति के जीवन में आन्तरिक सुख सन्तोष की अनुभूति ही नहीं होती। रहन-सहन तथा शारीरिक स्वच्छता से लेकर शिक्षा और व्यापार जैसे बड़े-बड़े क्षेत्रों तक विकृति ही विकृति दिखाई देती है। चरित्रभ्रष्टता, अनैतिकता तथा भ्रष्टाचार इस सीमा तक बढ़ा है कि जीवन व्यवहार के सभी क्षेत्रों में जटिलता भरी पड़ी है इस आचार, अपवित्रता और विचार विकृति का निवारण करने के लिए प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को कुछ न कुछ प्रयास करते रहने चाहिए।

इस सम्बन्ध में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सोचने-विचारने और सुनने-समझने मात्र से ही सेवा साधना का प्रयोजन पूरा नहीं हो जाता। ठोस परिणाम और अर्थवत्ता की उपलब्धि तो काम करने से ही होती है और उसके लिए अपने प्रयास जनमानस की दिशा मोड़ने का लक्ष्य रखकर निर्धारित करने चाहिए। जनमानस का परिष्कार—लोक मानस का पुनर्निर्माण किये बिना, गलत मान्यताओं और विचारणाओं को बदले बिना और किसी भी उपाय से व्याप्त समस्याओं, कठिनाइयों तथा उलझनों का समाधान नहीं किया जा सकता। यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि मनुष्य का बाहरी व्यक्तित्व उसके आन्तरिक स्तर और उसका संसार, उसकी मान्यताओं, आस्थाओं के अनुसार ही बनता है। आस्थायें और मान्यतायें जिस स्तर की होंगी बाहर की अभिव्यक्ति भी उसी स्तर की बनेगी। इसलिए समाज को बदलना हो तो व्यक्ति को बदलना पड़ेगा। व्यक्तियों को बदलना हो तो उनकी आस्थायें और विचारणायें उलटनी पड़ेंगी।

उल्टे को उल्टा कर देने से सीधा हो जाता है। उलझे हुए लोकमानस को, व्यक्ति के दृष्टिकोण और चिन्तन को विपरीत दिशा में अग्रसर कर दिया जाय तो व्यापक विकृतियों को सुखद परिस्थितियों और व्याप्त नारकीय वातावरण को स्वर्गिक सुख-शान्ति में बदला जा सकता है। असुर को मनुष्य और मनुष्य को देवता बनाने का जादू विचार परिवर्तन के गर्भ में छिपा हुआ है। इसी को कायाकल्प भी कहा गया है। शरीरों का कल्प कठिन और दुःसाध्य है पर अन्तःकरण का कल्प पूर्णतया सम्भव है।

अपनी सेवा साधना का स्वरूप भी इसी स्तर का होना चाहिए। घुटन भरे वातावरण का—अन्याय, अविवेक एवं असन्तोष भरे लोक मानस का परिवर्तन, पुनर्निर्माण आज की महती आवश्यकता है। आत्म-कल्याण के साथ इस महती आवश्यकता को पूरा करने के लिए भी समुचित ध्यान देना चाहिए और ऐसे उपाय सोचने चाहिए, जिनसे कि जनमानस में आदर्शवादिता की प्रतिष्ठापना हो सके। ऐसे प्रयास करना चाहिए जिनसे कि लोग वर्तमान की सड़ी-गली मान्यताओं से घृणा करने लगें और उनका परित्याग करने संकोच व झिझक अनुभव न करें, प्रत्युत् आदर्शवादी आस्थाओं को अपनाने में साहस का परिचय दे सकें। यह विचार शुद्धि—व्यक्ति के नव निर्माण को पूरा करेंगी। आत्मभाव का विकास कितना हुआ यह परीक्षा सेवा साधना में ही होती है। देखा गया है कि अकिंचन और असह्य स्थिति में रहने वाले भावनाशील व्यक्तियों ने भी परमार्थ प्रयोजनों के लिए बढ़-चढ़ कर अनुदान प्रस्तुत किये हैं जबकि साधन और सुविधा सम्पन्न व्यक्ति भी सेवा कार्यों के लिए कुछ करने से जी चुरा जाते हैं। अपने भीतर विश्व मानव के लिए करुणा उमड़ने लगे तो सेवा मार्ग पर सहज गति हो सकती है और यह भाव-विश्व मानव के प्रति दायित्व बोध भाव उस दिशा में गम्भीरतापूर्वक किये गये चिन्तन से ही उत्पन्न होता है।

जन्मदिन के अवसर पर इस चिन्तन के लिए अलग से समय निकालना चाहिए और प्रस्तुत प्रतिपादनों के आधार पर रीति-नीति तय करनी चाहिए। आत्मकल्याण और ईश्वरीय प्रयोजन की पूर्ति के लिए उस अवसर पर दृढ़तापूर्वक जो भी संकल्प किये जा सकें—जो भी योजना बनाई जा सके बनानी चाहिए और जन्मदिन की प्रेरणाओं को सार्थक रूप से ग्रहण करना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मभावना युक्त समारोह आवश्यक

जन्म दिवसोत्सवों के साथ हर्षोल्लास का वातावरण बनाने एवं उन्हें धार्मिकता के आधार पर मनाने की व्यवस्था बनाई गई है। इसके पीछे कोई पूर्वाग्रह अथवा मोहग्रस्तता नहीं, विवेक एवं अनुभव युक्त सशक्त लक्ष्य है।

जन्मदिन मनाने का उद्देश्य मनुष्य की चेतना को मानवीय उच्च लक्ष्यों की ओर मोड़ देना, उस दिशा में सक्रिय बना देना है। वह कार्य इतना आसान नहीं है कि मात्र थोड़ी-सी जानकारी अथवा सामान्य उपचार से हो जाय। उसके लिए सिद्धान्तों को, प्रेरणाओं को अन्तःचेतना की गहरी पर्तों तक पहुँचाना होता है। यदि केवल जानकारी देने से काम चल जाता होता, तो किन्हीं भी सिद्धान्तों की एक पुस्तिका पढ़ा देने, चुने हुए सिद्धान्त उसे किसी प्रकार सुना देने भर से काम चल जाता। किन्तु ऐसा होता नहीं है। मनुष्य अनेक बातों को जानते हुए, चाहते हुए भी पूरी करने योग्य प्रखरता अपने अन्दर अनुभव नहीं कर पाता, और उस दिशा में निष्क्रिय जैसा ही बना रह जाता है। अस्तु यदि वास्तव में कुछ उल्लेखनीय परिवर्तन व्यक्ति में लाना है, तो उसके लिए चेतना की गहराइयों को छूने की विधि व्यवस्था बनानी ही पड़ेगी।

चेतना को प्रभावित करने से धार्मिक संवेदना तथा उल्लास उमंग भरे वातावरण को सर्वाधिक सक्षम पाया गया है। एक और भी तथ्य इस प्रसंग में स्मरण रखने योग्य है, वह यह है कि मनुष्य को जहाँ अपनी महत्ता प्रतिष्ठा बढ़ती दिखती है, वहाँ भी वह अपने कर्त्तव्यों को गम्भीरता से लेने तथा तत्परता से पूरा करने के लिए कमर कस लेता है। जन्म दिवसोत्सव की निर्धारित पद्धति में इन तीनों ही विशेषताओं का संयोग सूझ-बूझ के साथ किया गया है तथा उसके सुनिश्चित परिणाम भी सामने आये हैं।

उस अवसर पर महत्वपूर्ण प्रेरणायें उभारी जाती हैं, साथ ही समुचित वातावरण बनाने का भी उतना ही ध्यान रखा जाता है। क्या कहा गया यह भी कम महत्व नहीं रखता, किन्तु किस मनोभूमि में कहा गया है यह बात भी अपनी जगह है। उपयुक्त मनोभूमि में कही हुई बात अन्तःकरण की गइराई में उतर जाती है तथा पुष्ट बीज की तरह फलित होकर अनेक सुपरिणाम प्रस्तुत करती है।

देखा जाता है कि सामान्य स्थिति में पिता अपने बड़े लड़के को छोटे भाई बहिनों के उत्तरदायित्व सँभालने के लिए कहते-कहते मर भी जाता है, पर प्रभाव नहीं के बराबर ही होता है किन्तु यदि पिता संवेदनाएँ जगाने का महत्व समझता है, तो स्थिति भिन्न होती है। जीवन में संघर्षरत पिता अपनी चारपाई के पास परिवार को बुलाकर, भरे गले से बड़े बेटे को अपनी जगह शेष परिवार का अभिभावक बनने का उत्तरदायित्व सौंपता है तो वही शब्द अद्भुत असर दिखा जाते हैं। उस प्रभाव से अभिभूत ज्येष्ठ पुत्र भारी कष्ट उठाकर मिल-जुलकर भी परिवार के उत्तरदायित्वों को स्वेच्छा से जीवन भर उठाये रहता है।

ऐसा ही प्रभाव तब भी प्रकट होता देखा जाता है, जब किसी व्यक्ति को उसके महत्व का आभास कराकर उत्तरदायित्व सौंपे जाते हैं। किसी प्रसंग विशेष में जब किसी व्यक्ति की प्रधानता मिलती है तो उसका उत्साह उल्लास कुछ और ही हो जाता है। अनेक सभा सम्मेलन होते रहते हैं, लोग उनमें सामान्य ढंग से भाग भी लेते रहते हैं, किन्तु जिस व्यक्ति को उस सम्मेलन में संयोजक अथवा मुख्य अतिथि बनाया जाता है तो उसकी मनोभूमि कुछ और ही होती है। वह उस समारोह की छोटी से छोटी बात को बड़ी सावधानी और गम्भीरता से लेता है।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर राज्य कर्मचारियों को महत्वपूर्ण पद देते समय, राजनेताओं के पद ग्रहण के समय एवं धर्माचार्यों को गद्दी सौंपते समय, शपथ ग्रहण समारोहों का आयोजन किया जाता है। समारोह का हर्षोल्लास भरा वातावरण एक बार उदासीन व्यक्तियों में भी उत्साह का संचार कर देता है।

इसी कारण जन्म दिवसोत्सव को सामान्य आत्मचिन्तन तक सीमित न रखकर उसे एक छोटे पारिवारिक हर्षोल्लास का रूप देने का क्रम अपनाया जाता है। जिस व्यक्ति का जन्मदिन है—वह जब अपने मित्रों, कुटुम्बियों को उत्साहित, सक्रिय देखता है तो उसके अन्दर भी विशेष प्रकार की हलचल पैदा होने लगती है। साथ ही उस सबका केन्द्र बिन्दु वह स्वयं को पाता है। आयोजन का हीरो स्वयं को देखकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मगौरव की अनुभूति होना, उसके लिए ठोस प्रयास करना, संकल्प करना तथा उनका निर्वाह करना स्वाभाविक सा है। उस भाव भरी मनःस्थिति में इस बात की बड़ी सम्भावना हो जाती है कि वह अपने जीवन अवतरण का उद्देश्य चिन्तन करने लगे और बहुत सम्भव है कि उस दिशा में कोई सार्थक और उपयोगी कदम भी उठा सके।

समारोह में व्यक्ति अपनी उभरी हुई भावनाओं के आधार पर आत्मविकास के अगले चरण घोषित भी करता है। उन घोषणाओं को पूरा करना उसकी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है, तो तत्परता में कमी नहीं आने पाती। साथ हीं उपस्थित व्यक्तियों की सद्भावना, मार्गदर्शन एवं सहयोग का लाभ भी उसे मिलने लगता है। यह सब मिलकर जन्मदिन समारोह को उसके उद्देश्य पूर्ति के योग्य प्रभावपूर्ण बना देते हैं।

धार्मिक भावना का संचार भी व्यक्ति को आदर्शवादिता की ओर स्वचालित बनाने तथा उसके प्रयासों को स्थायित्व प्रदान करने में अत्यधिक उपयोगी होता है। मात्र नैतिकता की दुहाई देकर बौद्धिक स्तर पर व्यक्ति को किसी सिद्धान्त पर आरूढ़ रखना कठिन हो जाता है। कानूनी ढंग से किये गये विवाहों में दाम्पत्य के निर्वाह की शर्तें भी दोहराई जाती हैं, किन्तु उनका प्रभाव कितना होता है यह सभी जानते हैं। इसके विपरीत अग्नि की साक्षी में भावनात्मक मनोभूमि उभारकर भाँवर डालने का प्रभाव अनेक गुना स्थाई होता है। कानूनी विवाहों में नगण्य-सी बातों पर तलाक की तैयारी हो जाती है, जबकि धार्मिक पद्धति से हुए विवाहों में दम्पत्ति कष्ट उठाकर भी जन्म-जन्मान्तर तक एक रहने का नैतिक साहस अनुभव करते हैं।

रास्ते चलते कसम खाने का कोई महत्व नहीं होता। लोग उसे मखौल ही समझते हैं। यंत्र की तरह कोर्ट में गंगा या गीता की साक्षी देकर झूठी कसम भी खा ली जाती है। किन्तु जब मनुष्य धर्म भावना से प्रेरित गंगा किनारे जाकर खड़ा होता है, पंच परमेश्वर को या देव प्रतिमा को साक्षी करता है तो परिहास में भी गलत बात मुख से नहीं निकालना चाहता है। उस स्थिति में मनुष्य नैतिक मूल्यों के निर्वाह के लिए बड़े से बड़ा कष्ट उठाने को सहर्ष तैयार हो जाता है। सरकार नैतिकता की दुहाई देकर टैक्स लगाती है, टैक्स चोरों को दण्ड का भय भी रहता है, फिर भी टैक्स चोरी रुकती नहीं। किन्तु जिन कार्यों के लिए सरकार टैक्स नहीं लगाती है, उन्हीं कार्यों के लिए धर्म भावना से प्रेरित व्यक्ति स्वेच्छा से अपना पेट काटकर भी अधिक से अधिक अनुष्ठान देने का सत्साहस संजो लेता है। निश्चित रूप से धर्मभावना का सही अर्थों में समावेश किया जा सके तो मानवोचित उच्च आदर्शों को जीवन में सहज स्वाभाविक स्थान मिल सकता है।

जन्मदिन आयोजन के साथ इस प्रकार के सभी तत्वों को जोड़ा गया है। यज्ञ एवं देव पूजन जैसे कर्मकाण्डों में वातावरण को प्रभावित, संस्कारित करने की अनुपम क्षमता होती है। देव पूजन, यज्ञ, व्रत, धारण आदि कार्यों के समय यजमान अपने आपको देव शक्तियों से जुड़ा, घिरा अनुभव करता है। उसकी भाव संवेदनाएँ जाग जाती हैं। फलतः अन्तःकरण में वह ग्रहणशीलता उभर आती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति दिव्य क्षमताओं को धारण कर पाता है, उनका प्रयोग जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए कर पाता है।

आयोजन का स्वरूप

जन्म दिवसोत्सव के कर्मकाण्ड में देवपूजन एवं गायत्री यज्ञ जोड़कर रखा गया है। यज्ञ भारतीय धर्म का पिता कहा जाता है। यज्ञ सामूहिकता, सहकारिता, परमार्थ, त्याग, बलिदान जैसी दिव्य प्रवृत्तियों का प्रतीक है। हर महापुरुष ने अपने जीवन को यज्ञमय बनाने के साथ-साथ उसके लिए जन-साधारण को भी उसकी प्रेरणा दी है। गीता में उल्लेख है कि प्रजापति ने यज्ञ सहित प्रजा की सृष्टि की तथा कहा कि तुम यज्ञ का उत्कर्ष करना और यज्ञ तुम्हारे उत्कर्ष का कारण बनेगा। अस्तु यज्ञीय जीवन क्रम अपना कर जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देने के लिए जन्मदिन के कर्मकाण्ड में यज्ञ को आवश्यक माना गया।

यज्ञ से उपयुक्त सद्प्रवृत्तियों के विकास में सहयोग तो मिलता ही है, साथ ही एक दिव्य वातावरण का सृजन भी होता है। श्रद्धायुक्त देव आह्वान, मन्त्रोच्चारण एवं भावनायुक्त आहुतियों के संयोग से वातावरण में कुछ ऐसा प्रभाव पैदा हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जाता है, जो अन्तःकरण की आस्थाओं में वांछित परिवर्तन लाने में समर्थ होता है। जन्मदिन समारोह में जबकि मनुष्य में उच्चस्तरीय आस्थाओं का जागरण तथा श्रेष्ठ आदर्शों के स्थापन का प्रयोग किया जाता है, तब ऐसे प्रभावपूर्ण कर्मकाण्ड को प्राथमिकता देना ही उचित है।

यज्ञ ईंट या मिट्टी की वेदी कहीं भी बनाकर किया जा सकता है। खुले आँगन में, बरामदे में, कमरे में अथवा छत पर कहीं भी जहाँ अभ्यागतों के बैठने की सुविधा हो वहीं उसकी व्यवस्था बना ली जाती है। संक्षिप्त विधि से देव पूजन एवं हवन करने में लगभग ४५ मिनट का समय लगता है। सधे हुए ढंग से कर्मकाण्ड को संक्षिप्त विवेचना सहित यज्ञक्रम बड़ा रोचक एवं प्रभावपूर्ण बन जाता है।

यज्ञ के अतिरिक्त जन्मदिन के कर्मकाण्ड में तीन और विशेष उपचार होते हैं। वे हैं— (१) पंचतत्व पूजन (२) दीप प्रज्ज्वलन (३) व्रतधारण।

पंच तत्व पूजन के लिए देव चौकी पर सादा चावल की पाँच छोटी-छोटी ढेरियाँ लगा दी जाती है। अधिक तत्परता बरती जा सके तो तत्वों के निर्धारित रंगों के अनुसार रंगीन ढेरियाँ लगायी जा सकती हैं। पृथ्वी तत्व के लिए हरा, जल (वरुण) का नीला, अग्नि का लाल, वायु का पीला तथा आकाश का सफेद रंग निर्धारित है। हर तत्व से सम्बन्धित प्रेरणाओं का उल्लेख करते हुए मंत्र के साथ अक्षत, पुष्प, जल चढ़ाकर पूजन किया जाता है।

शरीर पंचतत्व से बना है इस संसार का प्रत्येक पदार्थ मिट्टी, जल, गर्मी, वायु, आकाश इन पाँच पदार्थों से बना है। इसलिए इस सृष्टि के आधारभूत—वह पाँच ही दिव्य तत्व देवता हैं। उपकारी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मानवोचित धर्म-कर्त्तव्य है। कृतज्ञता की भावनाओं से अन्तःकरण ओत-प्रोत रखना भारतीय संस्कृति का अविच्छिन्न अंग है। हम जड़ और चेतन सभी उपकारियों के प्रति कृतज्ञता भावना की अभिव्यक्ति के लिए पूजा-प्रक्रिया का अवलम्बन लेते हैं। पूजा से इन जड़-पदार्थों, अदृश्य शक्तियों, स्वर्गीय आत्माओं का भले ही कोई लाभ न होता हो, पर हमारी कृतज्ञता का प्रसुप्त भाव जाग्रत होने से हमारी आन्तरिक उत्कृष्टता तो बढ़ती ही है। पंचतत्व का पूजन इनके विश्व के आधार स्तम्भ होने की महत्ता के निमित्त किया जाता है।

इस पूजन का दूसरा उद्देश्य यह है कि इन पाँचों के सदुपयोग का ध्यान रखा जाय। शरीर जिन तत्वों से बना है, उनका यदि सही रीति-नीति से उपयोग करते रहा जाय तो कभी भी अस्वस्थ होने का अवसर न आवे। पृथ्वी से उत्पन्न अन्न का कितना, कब और कैसे उपयोग किया जाय इसका ध्यान रखें तो पेट खराब न हो, पेट की खराबी ही तो समस्त रोगों की जड़ है। यदि आहार में सात्विकता, मात्रा एवं व्यवस्था का ध्यान रखा जाय तो न अपच हो और न किसी रोग की सम्भावना बने। जल की स्वच्छता एवं उचित मात्रा को सेवन करने का, विधिवत् स्नान का, बर्तन घर आदि की सफाई में जल के उचित प्रयोग का ध्यान रखा जाय तो समग्र स्वच्छता बनी रहे, शरीर मन तथा वातावरण सभी कुछ स्वस्थ रहे। अग्नि की उपयोगिता, सूर्य ताप का शरीर, वस्त्र, घर आदि में पूरी तरह प्रयोग करने में है। भोजन में अग्नि का सदुपयोग भाप द्वारा पकाये जाने में है। शरीर के भीतर अग्नि ब्रह्मचर्य द्वारा सुरक्षित रहती एवं बढ़ती है। उपनिषदों में पंचाग्नि विद्या का आत्मोत्कर्ष में किस प्रकार उपयोग किया जाय उसका विस्तृत वर्णन है। अग्निपुराण में १३५ अग्नियों की चर्चा और उनका मानव जीवन में किस तरह उपयोग हो सकता है, उसका वर्णन है। यज्ञ स्वयं एक अग्नि-विज्ञान है। स्वच्छ वायु का सेवन, खुली जगहों में निवास, प्रातः टहलने जाना, प्राणायाम, गन्दगी से वायु का दूषित न होने देना आदि वायु देवता की प्रतिष्ठा है। आकाश की पोल में ईश्वर विचार, शब्द आदि अनेक तत्व भरे पड़े हैं, उनका मानसिक एवं भावना क्षेत्र में किस प्रकार क्या उपयोग किया जाय कि हमारी अन्तः चेतना उत्कृष्ट स्तर की बने, यह जानना, समझना आकाश तत्व का उपयोग है। इस सदुपयोग के द्वारा हम अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को दिन-दिन बढ़ा सकते हैं। सुख शान्ति और समृद्धि का पथ-प्रशस्त कर सकते हैं। पंचतत्वों का पूजन-हमारा ध्यान इन सबके सदुपयोग की ओर आकर्षित करता है।

तीसरी प्रेरणा यह है कि शरीर पंचतत्वों का बना होने के कारण जरा, मृत्यु से बँधा हुआ है। यह एक वाहन और माध्यम है। जड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होने के कारण कम महत्व का है। इसे एक उपकरण औजार मात्र माना जाय। शरीर की सुख-सुविधा, तृष्णा-वासना को इतना महत्व न दिया जाय कि आत्मा के स्वार्थ पिछड़ जावें। आत्मा की उन्नति के लिए पंचतत्वों से बना यह शरीर मिला है, इसलिए उसका सदुपयोग निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति के लिए ही किया जाय। न कि शारीरिक वासनाओं में आत्मिक उद्देश्यों को समाप्त करके भविष्य को अन्धकारमय बना लें। पंचतत्व पूजन के समय शरीर और संसार का यथार्थ स्वरूप और प्रयोजन समझने की भावना यदि जाग पड़े तो हमें नर से नारायण बनने में देर न लगे।

व्यक्तित्व में मानव से महामानव के गुणों का विकास करने के लिए, आत्मा को महात्मा देवात्मा के स्तर तक विकसित करने के लिए उन तत्वों से भी प्रेरणा ली जा सकती है। हर तत्व को सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो उनमें अपने विशिष्ट दिव्य गुण परिलक्षित होते हैं। उन गुणों के विकास की प्रेरणा उन पाँचों तत्वों से प्राप्त करनी चाहिए।

पृथ्वी तत्व—यह पृथ्वी के साथ सभी ठोस पदार्थों का प्रतिनिधि है। पृथ्वी को माता कहा गया है। हिन्दी में धरती माता मातृभूमि, अंग्रेजी में मदर लैण्ड, उर्दू में मादरे वतन आदि श्रद्धान्वित सम्बोधन, इसके लिए किये जाते हैं। चर-अचर, प्राणी, वनस्पति, पर्वत, नदी, वन सभी को यह अपनी गोद में स्थान एवं पोषण देती है। स्थिरता, दृढ़ता सहनशीलता, उर्वरता आदि इसके विशेष गुण हैं। पृथ्वी तत्व पूजन के साथ इन सभी गुणों को हृदयंगम किया जाना चाहिए।

जल तत्व—यह पानी ही नहीं सभी तरल पदार्थों का प्रतीक है। स्थूल दृष्टि से तरलता, प्रवाह, शीतलता, शान्ति आदि का प्रतीक है। शुष्कता का निवारण, रूखापन हटाकर स्निग्धता प्रदान करना भी इसी का गुण है। स्वच्छता, निर्मलता का प्रधान माध्यम है, रस तत्व भी यही है। नीरसता हटाकर सरसता लाना, तृप्ति तुष्टि देना भी इसका गुण है। यह गुण जहाँ भी रहेंगे सराहे जायेंगे और वातावरण का सृजन करेंगे।

अग्नि तत्व—यह ऊर्जा (एनर्जी) का प्रतीक है। स्थूल अग्नि भी ऊष्मा एवं प्रकाश देने वाला है। प्रकारान्तर से इसे जीवन्तता एवं ज्ञान से जोड़ा जाता है। अग्नि शिखा हमेशा ऊर्ध्वगामी रहती है, निकृष्टता की ओर वह नहीं झुकती। अपने संसर्ग में आने वाले हर पदार्थ को अपना रूप प्रदान करने में सक्षम है। विकारों को जला डालना तथा स्वर्ण जैसे मूल्यवान पदार्थों की प्रामाणिकता सिद्ध करना अग्नि का सहज गुण है। उपयोगी पदार्थों का अपने लिए संचय न करके उन्हें वातावरण में फैला देने जैसी आदर्श परमार्थ वृत्ति की प्रेरणा भी इससे मिलती है।

स्थूल अग्नि के अतिरिक्त विद्युत, ताप, प्रकाश आदि ऊर्जा (एनर्जी) के विविध रूपों में भी अग्नि तत्व की विशेषताओं को समझा, अपनाया जा सकता है। हर क्रिया-कार्यप्रणाली को संचालित रखना ऊर्जा के ही सहारे संभव होता है। मानव जीवन अग्नि तत्व से प्रेरणा लेकर ऐसा ही तेजस्वी, प्रामाणिक, समर्थ एवं परमार्थ परायण बनकर ही धन्य हो सकता है।

वायु तत्व—यह वाष्पीय (गैस रूप) पदार्थों के साथ-साथ प्राण तत्व का भी प्रतिनिधि है। चर-अचर सभी प्राणियों का प्राणाधार। अति महत्वपूर्ण होकर भी स्वतः सबके पास संचार करने वाला। तीव्रगामी, सूक्ष्म होकर भी स्थूल का सहयोगी एवं अतिशय शक्ति सम्पन्न। तेजस-अग्नि का प्रमुख सहायक सदा गतिशील—चरैवेति—चलते रहो का व्यावहारिक प्रतीक। यह विशेषताएँ जिस व्यक्तित्व में बढ़ेगी वही असाधारण ख्याति एवं सफलता का अधिकारी बन जायेगा।

आकाश तत्व—यह ब्राह्मण का अदृश्य माध्यमों और शक्तियों का प्रतीक है। विशालता, सबको अपने में समाविष्ट रखना, सूक्ष्म हलचलों को व्यवस्थित रूप में संचरित करने, संतुलित रखने की क्षमता। ऐसे उदात्त एवं समग्र व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति, देवत्व के अधिकारी निश्चित रूप से बन सकते हैं।

पंचतत्व पूजन के साथ, आगे-पीछे चर्चा एवं चिन्तन में यह प्रेरणाएँ अन्तःकरण की गहराइयों में प्रविष्ट कराने का प्रयास किया जाना, इस कर्मकाण्ड को सार्थकता है।

(२) जन्मोत्सव का दूसरा विशेष कर्मकाण्ड दीप-दान है। जितने वर्ष की आयु हो उतने दीपक को सुसज्जित चौकी पर बनाकर सजाये जाते हैं। नये वर्ष में प्रवेश का प्रतीक एक दीपक बड़ा बना लिया जाता है। आटे के बने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ऊपर बत्ती वाले घृत दीप एक थाली में इस प्रकार सजा कर रखे जा सकते हैं कि उनका 'ॐ' या 'स्वास्तिक' (卐) अथवा कोई और सुन्दर रूप बन जाय। इन दीपकों के आस-पास पुष्प, फल, धूपबत्तियाँ, गुलदस्ते या कोई दूसरी चीजें सुन्दरता बढ़ाने के लिए रखी जा सकती हैं। कलात्मक सुरुचि भीतर हो तो सुसज्जा के अनेक प्रकार बन सकते हैं। इन दीपकों का पूजन किया जाता है।

जीवन का प्रत्येक वर्ष दीपक के समान प्रकाशवान् रहे, तभी उसकी सार्थकता है। दीपक स्वयं तिलतिल करके जलता है और अन्धकार में प्रकाश उत्पन्न करता है। इस रीति-नीति का प्रतीक होने के कारण ही दीपक को प्रत्येक मांगलिक कार्य में पूजा एवं प्रधानता मिलती है। हमारे जीवन की रीति-नीति भी ऐसी ही होनी चाहिए।

दीपक को ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। अज्ञान को अन्धकार व ज्ञान को प्रकाश की उपमा दी जाती है। जिस सीमा तक हमारा मस्तिष्क एवं हृदय अज्ञान ग्रस्त है उतना ही हम अँधेरे में भटक रहे हैं। मस्तिष्क का अन्धकार दूर करने के लिए हमें शिक्षा और हृदय का अज्ञान, अन्धकार दूर करने के लिए विद्या-ऋतम्भरा ज्ञान को अधिकाधिक मात्रा में संग्रह करना चाहिए।

दीपक आदर्श जीवनचर्या का बड़ा अच्छा प्रतीक है। दीपक का छोटा-सा व्यक्तित्व भी इतना गौरवमय तथा लोकोपयोगी होता है कि बड़ों-बड़ों की तुलना में उसे प्राथमिकता दी जाती है। छोटे-छोटे व्यक्तित्वों के थोड़े-थोड़े साधनों को भी दीपक की तरह संजोकर गौरवमय जीवन जिया जा सकता है।

दीप में पवित्रता, वर्तिका (लगन) और स्नेह (चिकनाई) का समन्वय होता है। थोड़ी मात्रा में भी यह तीनों गुण किसी व्यक्तित्व में संजो लिए जावें तो वह ज्योति होने का अधिकारी बन जाता है। उसे सँभालकर रखने, बुझने न देने, उसका स्नेह चुकने न देने के लिए सभी तत्पर रहते हैं। मनुष्य जीवन का प्रत्येक वर्ष एक दीपक की तरह बने, नया वर्ष पिछलों की तुलना में अधिक गौरवमय हो, इस भावना के साथ दीप-पूजन किया जाता है। आत्मा एवं परमात्मा को ज्योति रूप ही कहा गया है। मनुष्य जीवन आत्म ज्योति एवं परमात्म ज्योति से युक्त हो तो अज्ञानान्धकार से मुक्त होकर अपने महान् लक्ष्य की ओर स्वयं भी बढ़ता रह सकता है तथा औरों का भी पथ प्रशस्त करता रह सकता है। वही दिव्य ज्योति जीवन में अवतरित हो, इस भावना के साथ दीप पूजन किया जाता है।

जन्मदिन की शृंखला में अगला कर्मकाण्ड व्रत धारण का है मनुष्य व्रतशील बनकर ही वाञ्छित प्रगति कर सकता है। उक्ति है कि मनुष्य चाहे तो कुछ भी कर सकता है, कुछ भी पा सकता है, कुछ भी बन सकता है किन्तु यह तभी सम्भव होता है जब वह उसके लिए कृतसंकल्प होकर, कमर कसकर तैयार हो जाय। बड़े लक्ष्य एकाएक नहीं पाये जा सकते। अपनी क्षमता के अनुरूप उसके छोटे-छोटे चरण निश्चित करके, एक-एक करके उन्हें पूरा करते हुए आगे बढ़ा जाता है। दृढ़ता-पूर्वक एक-एक चरण पूरा करते हुए आगे बढ़ने को व्रतशील जीवन-क्रम कहते हैं। किसी भी व्यक्ति ने कभी भी उच्चस्तरीय सफलताएँ पायी होंगी तो किसी न किसी रूप में यह क्रम अपनाना ही पड़ा होगा।

जिसका जन्मदिन है उसे अपने जीवन में अधिक प्रखरता तथा श्रेष्ठता का समावेश करने के लिए व्रतशील जीवन अपनाने का प्रयास करना चाहिए। इसके प्रमाण-स्वरूप कोई व्रत उस दिन घोषणापूर्वक लेना चाहिए। व्रत-दोष दुष्प्रवृत्तियों के त्याग के रूप में भी हो सकता है तथा सद्गुण-सद्प्रवृत्तियों को ग्रहण करने के रूप में भी।

व्रत धारण सबके सामने घोषणापूर्वक करने से उसका दुहरा लाभ होता है। जीवन में व्रतशीलता का महत्व उपस्थित व्यक्तियों की दृष्टि में आता है, उन्हें भी इस मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा मिलती है। दूसरा लाभ व्रत लेने वाले का होता है। उसे व्रत पालन में इससे अत्यधिक बल मिलता है। सबके सामने की गयी घोषणा को मनुष्य अपने स्वाभिमान का प्रश्न बना लेता है। मन का सामान्य कच्चापन प्रतिष्ठा के सामने सहज ही हट जाता है। दूसरा लाभ यह होता है कि अपने व्रत का स्वरूप अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हितैषियों, मित्रों को पता रहने से उनसे भी सहयोग मिलने लगता है। भूल-चूक होने पर निरीक्षण एवं टोक टाक से लेकर उपयुक्त मार्ग दर्शन एवं सहयोग की सुविधा परिजनों से मिलने लगना-व्रतशील बनने के इच्छुक व्यक्ति के लिए वरदान ही सिद्ध होती है।

यह तो हुए लौकिक दृष्टि के लाभ, उससे आगे भी बहुत कुछ लाभ होते हैं। हितचिन्तकों की सद्भावना, भावनात्मक सहयोग, सफलता के लिए प्रार्थना आदि कितना महत्व रखते हैं, इसे अनुभवी व्यक्ति या सिद्ध पुरुष ही समझते हैं। व्रतपालन स्थूल दिखता भले है किन्तु वास्तव में वह सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक और उससे भी बढ़कर आध्यात्मिक प्रक्रिया है। मानसिक एवं आध्यात्मिक प्रगति में सामूहिक सद्भाव एवं प्रार्थना को सर्वोपरि उपयोगी माना गया है। पूर्वीय एवं पाश्चात्य दोनों ही धर्म दर्शनों में इसको प्रथम स्थान दिया गया है। अस्तु घोषणापूर्वक व्रत लेकर सबकी सद्भावना का लाभ लेना हर दृष्टि से उपयोगी है।

व्रतधारण में हितैषी परिजनों को ही नहीं देव शक्तियों को भी साक्षी बनाया जाता है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह सिद्धान्त को मूर्तरूप देकर उदाहरण के रूप में सामने रखकर अधिक अच्छे ढंग से अपना पाता है। किसी भी सद्गुण सत्कार्य के लिए मनुष्य अपने लिए किसी को आदर्श रूप में चुनता है। उससे प्रेरणा प्राप्त करता हुआ वह अबाधगति से आगे बढ़ता जाता है। हर व्यक्ति को व्रतशीलता के आदर्श के रूप में कोई शरीरधारी व्यक्ति मिल ही जाय यह आवश्यक नहीं। फिर उसका सतत् सान्निध्य कैसे प्राप्त हो ? कोई मिल भी जाय तो इसके प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा बनी ही रहे यह भी कठिन है। इसीलिए व्रतशीलता के लिए देव शक्तियों को आदर्श मानकर चलना अधिक युक्ति संगत होता है।

देवशक्तियों को साक्षी बनाने से उसे आदर्श रूप में सामने रखना भी सम्भव है तथा अपने ऊपर निरीक्षक तथा सशक्त सहयोग संरक्षण का बोध भी होता रहता है। जन्मदिन के कर्म काण्ड में व्रतधारण के समय पाँच देव शक्तियों को चुना गया है, उन्हें अपना निरीक्षक, मार्ग दर्शक, प्रेरणा केन्द्र एवं सहयोगी मानकर चला जाता है। वे हैं—अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र एवं इन्द्र। इन देव शक्तियों को व्रतशीलता का आदर्श माना जाता है। अनादिकाल से अपने व्रतों के अचूक पालन का श्रेय इन्हें प्राप्त है। इनके व्रत तथा उन्हें पालन करने की इनकी तत्परता दोनों ही आदर्श है।

अग्नि ने ऊष्मा एवं प्रकाश देने का जो श्रम अपनाया है उसे पूरी तत्परता से एवं प्रामाणिकता से पाला है। गर्मी एवं प्रकाश देने का कार्य किसी भी प्रकार गरीब-अमीर, धर्म, वर्ण, लिंग आदि का भेद माने बिना सबके लिए समान रूप से चलता है। तत्व पूजन की व्याख्या अथवा अग्नि पुरोहित के विवेचन में अग्नि के अनेक गुणों का उल्लेख है। वे सभी एक से एक हितकारी व्रत है, जिसका पालन पूर्ण तत्परता से अग्नि देव करते हैं।

वायु भी जन-जन चर-अचर को प्राण दान देते हुए विचरने के व्रत पर आरूढ़ है। अहितकर पदार्थ धुआँ दुर्गन्ध आदि को एक स्थान पर एकत्रित न होने देने से लेकर, हितकारी पदार्थ सुगन्धि-शीतलता, नमी आदि को सब जगह पहुँचाने के उत्तरदायित्व अबाधगति से पाले जा रहे हैं।

सूर्य-स्वप्रकाशित होकर अपनी शक्ति-ऊर्जा का वितरण सबके लिए समान रूप से करता है। अपने परिवार सौर मण्डल, ग्रह, उपग्रहों में से एक को भी अपने निर्धारित क्रम से न भटकने देने का श्रेय सूर्य को है। एक आदर्श ग्रह पति जो सबको सन्तुलित रखता है और सबको अनुदान देता रहता है ऐसा व्रतशील देव हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत होना ही चाहिए।

चन्द्र की व्रतशीलता अपने आप में अनौखी है। यह स्वप्रकाशित नहीं—पृथ्वी से छोटा भी है, फिर भी रात्रि में पृथ्वी के अन्धकार युक्त क्षेत्र में प्रकाश पहुँचाता है। प्रकाश सूर्य का ही है किन्तु चन्द्र के माध्यम से आता है तो उसमें ताप नहीं होती। ताप स्वयं चन्द्र सह लेता है और स्निग्ध शीतल निर्मल प्रकाश, पृथ्वी को देता है, अपने अन्दर मौलिक विशेषताएँ न होने पर भी, मूल स्रोतों से उन्हें ग्रहण करके आवश्यक क्षेत्रों में पहुँचाना, उसमें जो कष्ट सहना पड़े-तप करना पड़े उसे सहर्ष स्वीकार करके, अबाध गति से कर्त्तव्यपालन करते रहना निश्चित रूप से आदर्श व्रतशीलता है। इस दिव्य प्रवृत्ति की प्रवर्तक देव सत्ता को आदर्श के रूप में स्वीकार करना ही चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन्द्र देवराज कहे जाते हैं। देव शक्तियाँ विश्व के सन्तुलन एवं प्रगति के लिए संयुक्तरूप से उत्तरदायी हैं। जब कभी वे विश्रृंखलित हो जाती हैं तो सन्तुलन बिगड़ता है और आसुरी प्रवृत्तियाँ पनपने लगती हैं। देवशक्तियों को संगठित-सूत्र में रखना विश्वव्यापी संतुलन, अनुशासन एवं प्रगतिक्रम को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। इन्द्र ने इसी व्रत को धारण किया है। मनुष्य के अन्तःकरण से लेकर समाज तक में देव प्रवृत्तियों का विश्रृंखलन ही दुर्गति का कारण बनता है। देवप्रवृत्तियों को सूत्रबद्ध—सशक्त बनाकर रखने की प्रेरणा 'इन्द्रदेव' से लेना हर दृष्टि से हितकारक एवं उचित है।

जिसका जन्मदिन है उसे पहले से अपने लिए कोई नियम व्रत निश्चित कर लेना चाहिए। उसकी घोषणा करके, उपस्थित हितैषी व्यक्तियों एवं देव शक्तियों को साक्षी बनाकर, उनसे निरीक्षण मार्गदर्शन एवं सहयोग की अपेक्षा करते हुए भावनापूर्वक व्रतधारण मन्त्र बोले जाते हैं।

व्रतधारण के बाद अभिनन्दन आशीर्वाद का क्रम चलता है। देवपीठ के पास ही अथवा सुविधा की दृष्टि से किसी अन्य आसन पर यजमान को बिठाकर सभी अभ्यागत अपनी सद्भावना आशीर्वाद की अभिव्यक्ति करते हैं। इसके लिए पुष्प, पुष्पमाला आदि जो अपने साथ लाए हों वे उनका उपयोग करते हैं, अन्यथा अक्षत पुष्प सबको देने की व्यवस्था आयोजन स्थल पर भी रखी जाती है। सब लोग हाथ में पुष्प अक्षत लेकर स्वस्तिवाचन मन्त्र बोलें और मंगल कामना व्यक्त करते हुए उसके ऊपर पुष्पाक्षतों की वर्षा, पुष्प, हार, तिलक, अभिवादन, आशीर्वाद, अभिनन्दन का क्रम चलाया जाय।

व्यवस्था के सूत्र

इन उत्सवों को कम से कम खर्चीला रखना चाहिए, ताकि हर कोई उसका आयोजन बिना किसी कठिनाई के कर सके। एक के यहाँ मँहगा खर्चीला तरीका अपनाया जाय तो दूसरों को वैसा अनुकरण न करने में अपनी बेइज्जती अनुभव होती है। इसलिए वे अधिक बचत का ध्यान रखकर उस आयोजन से कतराने लगते हैं। षोडश संस्कारों की पुनीत परम्परा का नाश इसी प्रकार हुआ। पण्डितों ने उन्हें बहुत महँगा और खर्चीला बना दिया, फलतः लोग उनकी उपेक्षा करने लगे। जो लकीर पीटने के लिए करते भी हैं, वे मन ही मन कुड़कुड़ाते जाते हैं। यज्ञोपवीत संस्कार की प्रथा महँगेपन के कारण ही समाप्त हो चली है, उसे कुछ क्षेत्रों में कुछ सम्पन्न ब्राह्मण ही विधिवत् करा सकते हैं। यह भूल हमें नहीं करनी चाहिए और आरम्भ से ही ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें जितना अधिक सस्ता एवं सुलभ बनाया जा सकता हो बनाया जाय। कोई आन्दोलन लोकप्रिय तभी हो सकता है, जब यह उपयोगिता के साथ-साथ सस्ता भी हो।

साप्ताहिक या सामूहिक यज्ञों में यह प्रथा चलती है कि जितने भी व्यक्ति उपस्थित होते हैं, वे सभी आहुतियाँ देने बैठते हैं। उनमें समय बहुत लगता है और पैसा भी बहुत खर्च होता है। होना यह चाहिए कि यजमान और उनकी पत्नी ही आहुतियाँ देने बैठें। एक घी ले ले दूसरा सामिग्री। पति या पत्नी न हों तो दूसरा कोई कुटुम्बी बिठाया जा सकता है। दो व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला हवन काफी सस्ता रहता है। एक रुपये के लगभग में काम चल जाता है। पूर्णाहुति में थोड़ी-थोड़ी सामिग्री सभी लोग चढ़ा दें। इससे उस यज्ञ में उनका भी सम्मिलित होना मान लिया जायेगा। मन्त्रोच्चारण सभी लोग करें, तथा घृत-अवघ्राण, भस्म-धारण, क्षमा-प्रार्थना, प्रदक्षिणा आदि में सभी लोग भाग लें। इस प्रकार हवन के सम्बन्ध में जो महँगेपन की शिकायत है, वह दूर हो जायेगी और आयोजन की महत्ता, लोकप्रियता एवं व्यापकता बढ़ेगी।

दूसरा खर्च इन उत्सवों के समय अतिथि सत्कार का होता है। इसके लिए सुपाड़ी, इलायची, सौंफ जैसी चीजों को पर्याप्त मानना चाहिए। अधिक से अधिक गर्मियों में शरबत और जाड़ों में तुलसी की चाय जैसा कोई उष्ण पेय रखा जा सकता है। मिठाई, पकवान, फल आदि महँगी चीजें कड़ाई के साथ अस्वीकार की जायें। यज्ञ-प्रसाद में पञ्चामृत, पंजीरी या यज्ञाविशिष्ट खीर, एक पत्ते पर रख दी जा सकती है। ध्यान यही रखा जाय कि अधिक संख्या में उपस्थिति हो जाने पर किसी निर्धन को भी आर्थिक भार अनुभव न हो। गरीब, अमीर सभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के यहाँ एक जैसी परम्परा अपनाई जानी चाहिए, ताकि किसी को अनावश्यक गर्व एवं हीनता का अनुभव न होने पावे।

आगन्तुकों में से प्रत्येक को पुष्पाहार, गुलदस्ता या कुछ फूल लेकर आना चाहिए। जो न ला सके उनके लिए उत्सव स्थल पर ही वह मिल सकने की व्यवस्था रहनी चाहिए। शुभ-कामना का प्रतीक पुष्प ही माना गया है। जिसका जन्मदिन है, उसे सभी शुभ चिन्तकों द्वारा उस अवसर पर पुष्प समर्पित किये जाना चाहिए। महँगे उपहार देने की परम्परा किसी भी हालत में न पड़ने दी जाय। हार्दिक सद्भावना एवं शुभकामना से बड़ा कोई उपहार नहीं हो सकता। उसे प्रकट करने के लिए फूल, पुष्पहार या गुलदस्ता मात्र पर्याप्त है। स्वागत हो अथवा भेंट उपहार, दोनों को ही खर्चीला न होने का ध्यान रखा जाना चाहिए। इस प्रकरण में हर सम्बद्ध व्यक्ति को भली प्रकार समझा दिया जाय कि यह आध्यात्मिक पर्व है, अतः इसे उसी गरिमा के साथ मनाया जायेगा। कोई परिजन सम्पन्नता के नाते अधिक करना चाहे तो भी उन्हें परम्परा का, मर्यादा का ध्यान दिलाते हुए नम्रतापूर्वक रोक दिया जाय। खर्चीलेपन के साथ यदि बड़प्पन जुड़ने लगा तो सामान्य व्यक्ति या तो भार में पिसने लगेगा अथवा जन्मदिन मनाने से कतराने लगेगा। यह दोनों ही स्थितियाँ दुर्भाग्यपूर्ण कही जावेंगी। इन्हें पैदा न होने देने के लिए आयोजन आर्थिक दृष्टि से कम से कम खर्चीला ही रखा जाय। जब यह स्वस्थ प्रचलन चल पड़े तब तो फिर कठिनाई नहीं होगी, किन्तु प्रारम्भ में थोड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है। हर नये क्षेत्र में नये व्यक्तियों के बीच जन्मदिन मनाने के पूर्व निमन्त्रण एवं व्यवस्था के दौरान उन्हें यह मर्यादायें समझा देने से काम चल जाता है।

खर्चीलापन वैसे भी किसी को अच्छा नहीं लगता। लोग उसे दो ही कारणों से पकड़े रहते हैं। एक तो चलती आ रही परम्परा का सूत्र उन पर हावी रहता है। खर्चीली परिपाटी से परेशान व्यक्ति भी अपने को लाचार अनुभव करता हुआ उससे बँधा रहता है। इस स्थिति को तो साहसपूर्वक समाप्त कर ही देना चाहिए। जन्मदिन जैसे आत्मोत्कर्ष के कार्यक्रम के साथ इस प्रकार की कायरता भरी लाचारी को नहीं ही जुड़ने देना चाहिए।

खर्चीलेपन का दूसरा कारण है आकर्षण पैदा करना। लोगों की मान्यता बन गई है कि अधिक खर्च करके किसी कार्यक्रम में आकर्षण पैदा किया जा सकता है। यह मान्यता भी भ्रमपूर्ण है। किसी कार्यक्रम में सबसे बड़ा आकर्षण उसकी सजीवता होती है। आयोजकों के उत्साह परस्पर आत्मीयता, सहयोग एवं सुरुचि किसी भी कार्यक्रम को सजीव बनाते हैं। वह अपने इष्ट उद्देश्य में कितना सफल हुआ यह उसकी सजीवता का प्रमाण होता है। जन्मदिन आयोजन का उद्देश्य जीवन के उच्च आदर्शों के प्रति जागरूकता एवं आस्था पैदा करना और जीवन में उन्हें धारण करने की व्यवस्था को बल देना है। आयोजनों में यह स्वर प्रखरता से उभारा जाना ही उसका सबसे बड़ा आकर्षण बनता है। खर्चीलापन से आकर्षण पैदा करने का आग्रह अपने आत्मिक दिवालिएपन की घोषणा करता है। अन्दर से प्राणहीन—बाहर से सजीवता का कार्यक्रम अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते। अस्तु जन्मदिन आयोजनों को अधिक खर्चीलेपन से नहीं—अन्तरंग से उमंग उल्लास से आकर्षक बनाना चाहिए।

व्यक्ति स्वयं अपने जीवन के नये वर्ष में उसी उमंग के साथ प्रवेश करे जैसा किसी नये अति महत्त्वपूर्ण-पद के उत्तरदायित्व सम्भालने के समय अनुभव होता है। उसके इष्ट मित्रों परिजनों में भी अपने प्रियजन के जीवन में अपनी सद्भावना-आत्मीयता के सहारे श्रेष्ठ हितकारी तत्वों को प्रवेश कराने का उल्लास उभरना चाहिए। यह भाव जितने सशक्त होंगे—आयोजन उतना ही प्राणवान एवं आकर्षक बन सकेगा।

इस उल्लास के प्रमाण साज-सज्जा के रूप में भी दृष्टिगत होने चाहिए। पूजा की चौकी सजाना, चौक रांगोली निकालना, दीपकों में कलाकारिता दिखाना, यजमान को बिठाने के लिए चौकी मण्डप की सज्जा आदि में उमंग के साथ थोड़ी सुरुचि जोड़ने से आयोजन का बाह्य आकर्षण बिना खर्च के ही इतना प्रभावशाली बन सकता है कि देखते ही आँख चमकने लगे।

इन आयोजनों को आर्थिक दृष्टि से ही नहीं समय एवं श्रम की दृष्टि से भी सर्व सुलभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनाया जाना चाहिए। आज के जीवन के अधिकांश व्यक्तियों का लगभग सारा समय एवं श्रम विवाह व्यवस्था जुटाने में ही लग जाता है। रचनात्मक एवं आदर्शवादी आस्थाएँ इतनी कमजोर पड़ गयी हैं कि आत्मोन्नति से लेकर जनहित तक के कार्यों के लिए समय निकालना निरर्थक-सा लगता है। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है, किन्तु जो है, उसे स्वीकार करना तथा उसी स्थिति के अनुरूप अगले चरण निर्धारित करना ही बुद्धिमानी है। अस्तु जन्म-दिन आयोजनों की व्यवस्था इस ढंग से की जानी चाहिए कि उसमें समय और श्रम इतना ही खर्च हो जितना सामान्य मनोभूमि का व्यक्ति भी आसानी से निकाल सके।

निर्धारित विधि में जन्मदिन मनाने का सारा कर्मकाण्ड लगभग दो घण्टे में समाप्त हो जाता है। कुशल व्यक्ति द्वारा संचालित होने पर वह इतना रोचक एवं प्रेरक बन जाता है कि उपस्थित व्यक्तियों में से कोई भी उठना नहीं चाहता। किन्तु उस आयोजन की पूर्व व्यवस्था एवं बाद में फैलाव को समेटना भी तो एक काम है। उसे यदि व्यवस्थित ढंग से किया जाय तो वह बहुत समय और श्रम खा जाता है। जिसका जन्मदिन है उस पर और उसके परिवार पर इस व्यवस्था का अधिक दबाव नहीं पड़ने दिया जाना चाहिए। अन्यथा एक बार ही में उनका उत्साह ठण्डा पड़ जायगा तथा आगे उस क्रम को चलाना कठिन हो जायेगा।

जन्मदिन आयोजन के लिए ही हर व्यक्ति या एक परिवार हवन के उपकरणों से लेकर पूजन सामग्री तक की व्यवस्था अलग-अलग जुटाता फिरे तो निश्चित रूप से धन, समय एवं श्रम बहुत खर्च होगा। यदि इसकी सामूहिक व्यवस्था बना ली जाय तो नाममात्र के सहयोग से ही सारा कार्य चुटकी बजाते पूरा हो सकता है। समीप रहने वाले कुछ उत्साही व्यक्ति यदि संयुक्त व्यवस्था बना लें अपनी एक टोली गठित कर लें तो बड़ी आसानी से सारा कार्य चल सकता है। युग निर्माण योजना के अन्तर्गत इसी प्रकार टोलियाँ बनाकर कार्य किया जाता है। टोली में हर सदस्य का जन्मदिन नोट कर लिया जाता है। टोली के सभी सदस्य एक संयुक्त परिवार की तरह एक-दूसरे में रुचि लेते हैं। किसी का जन्मदिन आता है तो उसकी सूचना सबको पहले ही कर दी जाती है। एक टोली में जन्मदिन मनाने वाले सदस्यों की संख्या १०—१२ से लेकर ५०—६० तक रहती है। इससे कम से कम माह में एक बार तथा अधिक प्रति सप्ताह जन्म दिन मनाने का औसत आता है। इससे परस्पर मिलने-जुलने, प्रेरणा प्रोत्साहन देने का एक नियमित क्रम बन जाता है। मिल-जुलकर की गयी व्यवस्था में किसी पर भी अधिक भार नहीं पड़ता। जहाँ कहीं भी जन्म दिनों के माध्यम से व्यक्ति एवं समाज के उत्कर्ष की दिशा में बढ़ना उचित समझा जाय वहाँ टोलियाँ बनाकर सामूहिक व्यवस्था बनाने का प्रयास किया जाना लाभप्रद सिद्ध होगा।

यज्ञ के पात्र, पूजा उपकरण आदि हर टोली के पास होने चाहिए। कुछ वस्तुयें तो परिवारों में मिल जाती हैं, किन्तु कुछ की तो सामूहिक व्यवस्था रहनी ही चाहिए। प्रयास यह किया जाना चाहिए कि जिसके यहाँ जन्म दिन है, उसे सामान जुटाने में कम से कम मेहनत करनी पड़े। टोली की ओर से एक थैले में सभी आवश्यक उपकरण रहें, जिन्हें सुविधा से हर स्थान पहुँचाया और उपयोग में लाया जा सके। जैसे—हवन के काष्ठ पात्र एक सैट, आचमनी, पंच पात्र ५ सैट, हवन सामग्री तश्तरियाँ ५ पूजा पीठ के लिए चित्र दीपक एवं कलश, चौकी पर बिछाने का पीत वस्त्र, रंगे हुए चावल (पंच तत्व के प्रतीक स्थापित करने के लिए) कलावा, रुई जैसी वस्तुयें आसानी से जुटाई जा सकती हैं। ठीक साइज की कटी हुई समिधाओं को भी केन्द्रीय व्यवस्था की जा सके तो अच्छा है।

आयोजन की व्यवस्था की दृष्टि से सुगम, कम खर्चीला रखने के साथ-साथ एकरूपता बनाये रखने के लिए उसकी पूरी की पूरी व्यवस्था सामूहिक बनायी जा सकती है। पूजन सामग्री, हवन सामग्री, समिधा, घी, प्रसाद आदि का न्यूनतम मूल्य फैला लिया जाय। तदनुसार वह पैसा जन्म दिन मनाने वाले व्यक्ति से लेकर टोली स्तर पर ही सारी व्यवस्था बना ली जाय। इससे न तो कोई संकोच अनुभव करेगा और न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्साह में अधिक खर्च करके परिपाटी बिगड़ने का भय रहेगा। श्रम और समय की तो बचत काफी हो जायेगी। जहाँ हो सके वहाँ ऐसी व्यवस्था भी बनायी जानी चाहिए।

इस प्रकार समय, श्रम एवं धन की औसत सीमा के अन्दर सम्पन्न किये जाने योग्य—हर्षोल्लासयुक्त, जन्मदिन आयोजनों का सिलसिला जहाँ भी चल पड़ेगा, वहाँ वह टिकाऊ बन जायेगा और उसके एक से एक बढ़कर लाभ जन-जीवन में दृष्टिगोचर होने लगेंगे।

जिसके यहाँ जन्मदिन रखा जाय वहाँ पूर्व तैयारी पहले से ही रखनी चाहिए। जिसका जन्मदिन मनाया जाना है वह अपने मित्रों और परिचितों की इसकी सूचना पहले से ही दे दें और समय का निर्धारण इस प्रकार करें कि आयोजन में सभी व्यक्ति सुविधापूर्वक भाग ले सकें। प्रातःकाल या रात्रि का समय इस दृष्टि से पर्याप्त सुविधा का हो सकता है। प्रातःकाल लोगों को काम पर जाने की जल्दी होती है, यदि मित्र वर्ग के व्यक्ति कोई असुविधा अनुभव न करें तो आयोजन का समय प्रातःकाल का भी रखा जा सकता है अन्यथा रात्रि के समय तो अधिकांश व्यक्ति फुरसत में रहते हैं। आयोजन की व्यवस्था उस समय भी की जा सकती है। प्रायः यह समय सभी के लिए सुविधा का हो सकता है। सब लोगों के इकट्ठे हो जाने पर कार्यक्रम आरम्भ किये जा सकते हैं। परन्तु कार्यक्रमों का विस्तार इतना अधिक नहीं रखना चाहिए कि वह भाग लेने वालों का असहज या असुविधाजनक लगे। एक घण्टे में यज्ञादि का धर्मानुष्ठान, एक घण्टे में संगीत प्रवचन प्रतिज्ञा आदि, इस प्रकार दो-ढाई घण्टे में कार्यक्रम समाप्त कर लिया जाय ताकि उपस्थित रहने वाले व्यक्तियों को अपने काम पर जाने, घर लौटने और सोने आदि में अनावश्यक रूप से विलम्ब न हो।

युग निर्माण परिवार द्वारा इस प्रकार के जन्मदिन आयोजनों को संगठित और सुव्यवस्थित अभियान का रूप दिया गया है। जहाँ कहीं भी जीवन्त शाखा है, वहाँ प्रायः सभी सदस्यों के जन्मदिन की लिस्ट रहती है और उसकी एक-एक प्रति प्रत्येक सदस्य के पास रहती है। इससे सभी सदस्यों को यह ध्यान रहता है कि अमुक दिन अपने किसी परिजन का जन्मदिन है। उस दिन कोई ऐसी व्यस्तता नहीं रखी जाती, जिसके कारण उस आयोजन में सम्मिलित होने से वंचित रहना पड़े।

यदि सामूहिक व्यवस्था बनायी जा सके तो तैयारी में कोई कठिनाई नहीं होती। आवश्यक उपकरण आदि केन्द्रीय व्यवस्था के अन्तर्गत पहुँच ही जाते हैं। सभी सदस्य जब एक-दूसरे को आयोजन का स्मरण दिलाते हैं तो आत्मीयता युक्त उत्साह का वातावरण सहज ही बन जाता है। जिसका जन्मदिन है उसके इष्ट मित्रों को निमन्त्रण देने—आग्रह पूर्वक बुलाने का कार्य उसी पर छोड़ दिया जाना उचित है। वैसे कोई सहयोगी उसके साथ-साथ जावे, स्वयं भी आग्रह करे, तो प्रभाव अधिक अनुकूल पड़ता है। नये व्यक्तियों को निमन्त्रण देने के साथ-साथ उन्हें फूलों के अतिरिक्त कुछ भी भेंट न देने की कठोर मर्यादा का ज्ञान नम्रतापूर्वक करा देना चाहिए। अन्यथा बाद में असमंजस की स्थिति आ जाती है तथा मर्यादा टूटने से अनेक प्रतिक्रियाओं का खतरा पैदा हो जाता है।

नये घरों में जन्मदिन मनाना हो तो आयोजकों को अधिक सावधानी बरतनी पड़ती है। नये व्यक्तियों को वेदी बनाने देव चौकी स्थापित करने आदि का अनुभव नहीं होता। उनके ऊपर वह कार्य छोड़ने से बाद में असुविधा भी होती है, समय भी नष्ट होता है तथा कार्यक्रम के स्तर में भी गिरावट आ सकती है। ऐसी स्थिति में उत्साही अनुभवी व्यक्तियों द्वारा कुछ समय पूर्व वहाँ पहुँचकर व्यवस्था अपने हाथ में ले लेने से सब कार्य ठीक हो जाता है।

अनुभवी व्यक्तियों को पहले से जाकर सभी आवश्यक उपकरणों से लेकर पूजन सामग्री तक की जाँच कर लेनी चाहिए। जो कमी हो उसे समय रहते पूरा करा लेना अथवा कर्मकाण्ड के समय उसका उल्लेख ही न करने का निश्चय कर लेना उचित है।

मनाये जाने वाले जन्मदिन पर जितने वर्ष पूरे हुए हैं उतने दीपक तथा नये वर्ष के उपलक्ष में एक बड़ा दीपक बनाकर रख लिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है। दीपकों पर कलाकारिता दिखाने से आयोजन की रोचकता बढ़ जाती है। मित्र स्नेहियों के घरों की महिलायें पहले से पहुँचकर चौक—रांगोली द्वारा उस स्थल को सजाने लग जाती हैं तो कार्यक्रम में रोचकता तो बढ़ती ही है—परस्पर गहन आत्मीय भाव एवं सहकारिता के संस्कार भी अधिक दृढ़ होते हैं। इसका लाभ दोनों ही पक्षों को मिलता है।

यदि कहीं पर जन्मदिन मनाने की कोई सामूहिक परम्परा नहीं है और कोई व्यक्ति उसे मनाना चाहे तो पारिवारिक स्तर पर भी उसे मना लिया जाता है। उस स्थिति में आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था से लेकर कर्मकाण्ड सही ढंग से कराने योग्य व्यक्ति की पूर्ति उन्हें स्वयं ही करनी पड़ती है। किसी निकटस्थ युग निर्माण परिवार के सदस्यों का पता हो तो उनका सहयोग सहज ही मिल जाता है। यों इस प्रकरण को जन साधारण के लिए सुलभ बनाने की दृष्टि से उसे हर दृष्टि से आसान ही रखा गया है। कोई थोड़ी तीव्र बुद्धि वाला व्यक्ति उसकी विधि समझकर उसे बड़ी अच्छी तरह सम्पन्न करा सकता है।

हर स्थिति में आयोजक को अपने घर में आगन्तुकों के बैठने की व्यवस्था बनाना, उनके स्वागत सत्कार की मर्यादित किन्तु भावभरी प्रक्रिया अपनाना तो आवश्यक होता ही है।

आयोजन में कर्मकाण्ड का संचालन, उतने सीमित समय में प्रखर प्रेरणा का उभारना किसी कुशल व्यक्ति को सौंपना चाहिए। हर कर्मकाण्ड की लम्बी व्याख्या न की जाय। सबके संकेत देते हुए किन्हीं एक दो प्रसंगों की थोड़ी विस्तृत व्याख्या भी की जा सकती है। हर आयोजन में विस्तृत व्याख्या के प्रसंग बदलते रहने से रोचकता भी बनी रहती है तथा समय की मर्यादा में ही नयी-नयी प्रेरणाओं का लाभ उपस्थित व्यक्तियों को मिल जाता है।

कर्मकाण्ड के बाद व्रत धारण के पूर्व एक उद्बोधक संक्षिप्त भाषण अवश्य रखा जाना चाहिए। यजमान के जीवन में जो मोड़ लाया जाना आवश्यक है, उसी सन्दर्भ में प्रवचन दिया जाय। यजमान से पहले ही यह परामर्श कर लिया जाय कि वह कौन-सा नया व्रत लेने वाला है, उसी के अनुरूप उद्बोधन का विषय चुना जाना ठीक रहता है। कर्मकाण्ड एवं उद्बोधन को समुचित ढंग से पूरा करने की बात को भी पूर्व तैयारी का ही अंग मानकर चलना चाहिए।

प्रेरणाओं का सशक्त प्रवाह पैदा किया जाय

जन्मदिन आयोजन की सफलता इस बात पर टिकी रहती है कि उसमें आदर्शवादी प्रेरणाओं को जन चेतना में उतारा जा सका या नहीं। अस्तु आयोजन के हर चरण के साथ उपयुक्त प्रेरणाओं को जोड़ा जाना चाहिए।

यहाँ एक बात यह भी ध्यान में रखने की है, कि प्रेरणा का अर्थ शुष्क जानकारी देना भर नहीं है। यदि ऐसा होता तब तो प्रेरणा देना किसी के लिए भी कठिन न होता। जानकारियाँ तो लोग कदम-कदम पर देते हैं किन्तु प्रेरणा का संचार विरले ही कर पाते हैं। प्रेरणा का सम्बन्ध आदर्शवादी आस्थाओं से भी है तथा रुचि एवं उत्साह से भी। जन्मदिन आयोजन में धार्मिक कर्मकाण्ड के माध्यम से आस्थाओं को प्रभावित करने की व्यवस्था बनायी जाती है। कार्यक्रम में परिजनों का उत्साह एक उल्लास का संचार करता है। व्यवस्था प्रकरण में सूझ-बूझ के सहारे रोचकता बढ़ाई जाती है। अपने स्नेहियों की उपस्थिति भी व्यक्ति की रुचि को प्रभावित करती है। इन सबके साथ जीवन को आदर्शवादी दिशा देने के क्रम का समावेश भी सूझ-बूझ के साथ किया जा सके तो प्रेरणा प्रवाह में वह सशक्तता पैदा की जा सकती है जिसके द्वारा जड़ एवं अधोमुखी जीवन को भी सक्रिय एवं ऊर्ध्वगामी बनाया जा सके।

दिशायें देने का काम कर्मकाण्ड की व्याख्याओं एवं स्वतन्त्र प्रवचनों के माध्यम से भली प्रकार किया जा सकता है किन्तु इस प्रसंग में यह ध्यान रहे कि उनमें नवीनता एवं ताजगी पैदा की जाती रहे। पहले कही हुई बातों को ही ज्यों का त्यों दोहराया जाता रहे तो न उस व्यक्ति को सुनने में कोई रुचि होगी, जिसका जन्मदिन मनाया जा रहा है और न ही अन्य व्यक्ति उन प्रतिपादनों पर ध्यान देंगे क्योंकि वही बातें पहले भी अन्य किसी के जन्मदिन आयोजन में सुनी जा चुकी हैं। इसलिए वक्ता को अपने प्रवचन में नवीनता बनाये रखने के लिए पूरी सतर्कता और जागरूकता बरतना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्मदिन के मोटे सिद्धान्त थोड़े से हैं और उन्हें भिन्न-भिन्न ढंग से कहना जरा कठिन लग सकता है लेकिन कुछ सूक्ष्म बातों का स्थान रखा जाय तो यह कठिनाई दूर हो सकती है और नये-नये ढंग से कहने की शैली विकसित की जा सकती है। पहली सावधानी तो यह कि परिवेश का ध्यान रखा जाय। सभी परिवारों का वातावरण एक-सा नहीं होता और किसी परिवार का वातावरण सदैव भी एक-सा नहीं रहता। अलग-अलग परिवारों का भावनात्मक और चिन्तनगत स्तर भिन्न-भिन्न होता है। यदि उसे ध्यान में रखकर अनुकूल शैली अपनायी जाय तो नवीनता और सत्य रोचकता बनाये रहने की शर्त पूरी की जा सकती है।

कर्मकाण्ड की टिप्पणियों में ध्यान रखा जाय कि वे बुद्धि प्रधान नहीं भाव प्रधान रहें। उनमें नवीनता बनाये रखने के लिए पर्याप्त सम्भावनाएँ रहती हैं। आत्मशोधन के षटकर्म से लेकर देव पूजन, यज्ञ एवं जन्मदिन के विशिष्ट कर्मकाण्डों तक में प्रेरणा उभारने के हर तरह के प्रसंग बड़ी संख्या में हैं। उनमें हर एक के साथ व्याख्याएँ जोड़ी जावें तो सिर्फ कर्मकाण्ड ही कई घण्टे का समय ले लेगा। यह न तो उचित है न अपेक्षित अधिकांश कर्मकाण्डों को संक्षिप्त निर्देश के साथ आगे बढ़ाते रहा जाय तथा कुछ की व्याख्या की जाय तो ही निर्धारित समय में कार्य पूरा किया जा सकता है। संचालक इसी कार्य को विचारपूर्वक करे तो हर बार नया आकर्षण अपनी टिप्पणियों—व्याख्याओं में पैदा कर सकते हैं। उपस्थित व्यक्तियों को कौन-सी दिशा देना उपयुक्त होगा इसका अध्ययन एवं निर्धारण पहले से कर लेना चाहिए। उसी के अनुरूप थोड़े से प्रसंग चुनकर उन्हीं की व्याख्या थोड़े विस्तार से की जाय। इस विधि से हर आयोजन में नये-नये प्रसंगों की व्याख्या के लिए चुना जा सकता है। इससे आयोजन में पहुँचने वालों को नयी-नयी प्रेरणायें भी मिलेंगी तथा सब मिलकर समग्र जीवन दर्शन पर उनका ध्यानाकर्षित होता रहेगा।

कर्मकाण्ड की व्याख्याओं के अतिरिक्त स्वतन्त्र उद्‌बोधन—भाषण को भी प्रेरणा का माध्यम बनाया जाना चाहिए। उद्‌बोधन भाषण आयोजन में उचित स्थल पर समय की मर्यादा का ध्यान रखकर किया जाय। उसके लिए लगभग आधा घण्टा समय बचाकर ही रखना चाहिए। उसे व्रत घोषणा के पूर्व या पश्चात् रखना ठीक रहता है। यदि पहले रखा जाय तो यजमान क्या व्रत लेना चाहता है, इस पर पूर्व चर्चा आवश्यक है। उसी विषय को उभारते हुए, उसके महत्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए उद्‌बोधन दिया जाय। यदि घोषणा के बाद प्रवचन किया जाय तो किये गये संकल्प की सराहना एवं उसके निर्वाह की विभिन्न बारीकियों पर ध्यान दिलाना चाहिए। उपस्थित व्यक्तियों एवं देव शक्तियों से संकल्पकर्त्ता को सहयोग देने की भावभरी, अपील-प्रार्थना भी उसके साथ जुड़ी रहनी चाहिए।

उद्‌बोधन भाषण में भी नवीनता बनाये रखने का क्षेत्र व्यापक है। जीवनोद्देश्य की महत्ता से लेकर जीवन में अपनाये जाने योग्य सद्‌गुणों सत्प्रवृत्तियों की सूची बहुत लम्बी है। उनमें से किसी को भी आधार बनाया जा सकता है। इसी पुस्तक के पिछले अध्यायों में जन्मदिन की महत्ता, मानव जीवन की गरिमा आदि में ढेरों प्रसंग ऐसे हैं, जिन्हें प्रवचन में उभारा जा सकता है। आत्मसमीक्षा, आत्मशोधन, आत्मनिर्माण एवं आत्मविकास के सूत्रों की व्याख्या करना हर दृष्टि से उपयुक्त रहता है। जीवन में साधना, स्वाध्याय, संयम एवं सेवा के समुचित समावेश का कल्याणकारी प्रभाव दर्शाया जा सकता है। इनमें से किसी एक धारा पर ही पूरा भाषण दिया जा सकता है। जीवन की सफलता में सहायक व्यावहारिक गुणों को आधार बनाया जाना भी समीचीन रहता है। किसे किसके जन्मदिन पर किस प्रसंग पर बोलना है इसका निर्धारण पहले से कर लिया जाय तो पहले से तैयार किया गया भाषण—भाषणकर्त्ता के ज्ञान का भी परिष्कार करता है तथा श्रोताओं पर भी अनूठा प्रभाव छोड़ सकता है।

प्रवचन में जिसका जन्मदिन है उसके उपयुक्त उद्‌बोधन तो रखा जाता है किन्तु वहीं तक उसकी सीमा नहीं मान लेनी चाहिए। यदि किसी को व्यक्तिगत शिक्षण करना ही अभीष्ट रहा होता, तो उसके लिए कोई पुस्तक पढ़ लेना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी पर्याप्त होता अथवा कभी किसी मन्त्रणा के समय परामर्श दे देना भी काफी रहता। वस्तुतः आयोजन का उद्देश्य एक मुख्य व्यक्ति के साथ अन्य लोगों का शिक्षण भी करना है। सामूहिक स्तर पर कही जाने वाली बातों का ढंग यह भी है कि किसी एक व्यक्ति को सम्बोधित कर जो कहना हो वह कहा जाय और उसे बाकी लोग सुनते रहें। वस्तुतः वह कहने की एक शैली भर है अन्यथा कहा सभी उपस्थित व्यक्तियों से जाता है। वादविवाद प्रतियोगिता में भाग लेने वाले व्यक्ति प्रतियोगिता के निर्णायक अध्यक्ष को सम्बोधित कर अपना पक्ष प्रस्तुत करते हैं। परन्तु उसे सुनते सभी व्यक्ति हैं और प्रतिपादन भी सभी के सामने किया जाता है। गोष्ठियों में प्रायः गोष्ठी के संचालक को इंगित कर अपनी बात कही जाती है परन्तु उसे गोष्ठी में उपस्थित सभी व्यक्ति सुनते हैं और आवश्यकता होने पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। कई स्थानों पर सत्य नारायण तथा अन्य व्रत कथाओं की यह शैली प्रचलित है कि उनमें किसी व्यक्ति को मुख्य यजमान बनाकर बिठा दिया जाता है और कथा कही जाती है। यद्यपि वहाँ और भी सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित रहते हैं, कथा आयोजन का उद्देश्य उन्हें भी कथा सुनाना होता है, परन्तु सम्बोधित मुख्य व्यक्ति को ही किया जाता है। संस्कार आयोजन में भी यह शैली प्रधानतः अपनायी जाती है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि जन्मदिन आयोजन में भी अन्य आयोजनों की भाँति व्यक्ति गौण हो जाता है और सारे परिवार का प्रशिक्षण ही मुख्य उद्देश्य रहता है। जन्मदिन में व्यक्ति तो मुख्य है ही पर परिवार की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। परिवार के व्यक्तियों का भी समुचित शिक्षण होना चाहिए। अन्य दूसरे संस्कारों की अपेक्षा इसमें सम्बन्धित व्यक्ति शिक्षण का अधिक मुख्य केन्द्र रहता है, उसके व्यक्तित्व को लक्ष्य कर प्रेरणायें दी जाती हैं और प्रतिपादन किये जाते हैं, पर उसके बाद परिवार का शिक्षण भी जुड़ा रखना चाहिए।

प्रेरणायें उभारते हुए वक्ता का दृष्टिकोण एक परामर्शदाता के स्तर का ही होना चाहिए। उसमें आज्ञा सूचक—निर्देशात्मक स्तर नहीं उभरने देना चाहिए। सम्बद्ध व्यक्ति के अनुरूप नियम एवं गुण विशेष पर प्रकाश भी इसी ढंग से डाला जाना चाहिए। सद्भावना के सहारे ही वह उमंग पैदा करनी चाहिए जिसके आधार पर उच्च आस्थाओं का अधिकाधिक पोषण करने के लिए कटिबद्ध हुआ जा सके। यह रीति-नीति यदि किसी छोटे से प्रसंग में भी अपना ली जाय तो लोगों की दृष्टि में भले ही यह कोई बड़ा काम न लगे पर जीवन की दिशा उच्च कोटि के परमार्थ, आराधन की ओर मुड़ने लगेगी।

इस अवसर पर शालीन और सौम्य भाषा में जिसका जन्मदिन मनाया जा रहा है, उसके व्यक्तित्व की त्रुटियों का भी ध्यान दिया जाय तो उसे आत्म-परिष्कार की प्रेरणा भी मिल सकती है। पर इस तरह का संकेत हर किसी के लिए सम्भव भी नहीं होता कि जिसकी कमियाँ बतायी जा रही हों, उसे बात चुभे भी नहीं, सुनने वाले उसे एक सिद्धान्त के रूप में समझ लें और उसकी हानियों, सम्भावित दुष्परिणामों से भी अवगत हो जायें। आमतौर पर कोई व्यक्ति किसी दूसरे के मुँह से अपनी गल्ती सुनना सहन ही नहीं करता। अन्य लोगों की उपस्थिति में तो और भी नहीं क्योंकि हर आदमी अपने को सही समझता है और गल्ती कहने वाले को अपना अपमान कर्त्ता मानने लगता है। उसे अपने लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर उसी का समर्थन करने में अपनी मान रक्षा समझता है। आम लोगों की इस स्वाभाविक दुर्बलता को ध्यान में रखना चाहिए और उसे सीधी गल्ती बताने के स्थान पर सिद्धान्त के रूप में प्रतिपादित करना चाहिए। जो कहना हो उसे पूर्व की बातों से संगति जोड़ते हुए कहा जाय और किसी दूसरे का विवरण सुनाते हुए कहा जाय तो इतनी कुशलता सीखने के बाद बिना विरोध या बिना किसी प्रतिक्रिया के अपना परामर्श स्वीकार करने के आसार उत्पन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए किसी को नशा न पीने का परामर्श देना हो तो सीधी बात कहने से नशा करने वाला व्यक्ति रुष्ट होगा, झुँझलायेगा और प्रत्यक्ष कोई प्रतिक्रिया न करेगा तो भी उसे प्रतिष्ठा पर आघात समझेगा। इसके विपरीत यदि किसी ऐसे नशेबाज का वर्णन किया जाय जिसे अपने इस व्यसन के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण हानि उठानी पड़ी है तो वह व्यक्ति परोक्ष रूप से कही गई बात का प्रभाव अच्छी तरह ग्रहण कर सकता है।

इस अवसर पर जो सत्परामर्श दिये जायें उनमें भी शालीनता, आत्मीयता और सद्भावना का पुट जुड़ा रहना चाहिए। कई बार यह होता है कि जिन बातों से हमारी असहमति-सी होती है, उनके प्रति आक्रोश भी रहता है। मन का उथलापन उस आक्रोश को ही पहले उभार लाता है और कहा जाना चाहिए कि उसकी उपेक्षा आक्रोश ही अधिक व्यक्त कर दिया जाता है। सामान्य अवसरों पर तो यह पद्धति विरोध का कारण भी बन जाती है लेकिन जन्मदिन जैसे विशिष्ट अवसर पर विरोध की प्रतिक्रिया न भी आये तो भी अपनी बात हल्की और बहुधा विपरीत प्रभाव छोड़ने वाली भी सिद्ध हो जाती है। इसलिए जन्मदिन के अवसर पर दिये जाने वाले सत्परामर्श, किये जाने वाले पारिवारिक प्रवचन में सहज आत्मीयता, हितकामना और सहानुभूति का पुट भी लगाते चला जाय तो ऐसे सन्दर्भों को भी भलीभाँति व्यक्त किया जा सकता है और उनके सत्परिणाम देखे जा सकते हैं।

उद्बोधन भाषण के लिए किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जाना चाहिए जिसे भाषण देने का अभ्यास है। अध्यापक, वकील पेशेवाले अथवा सामाजिक जीवन में रुचि रखने वाले परिजन इस कार्य को भली प्रकार कर सकते हैं। उन्हें विषय पहले से ही दे दिया जाय। आवश्यक समझा जाय तो मिशन का तत्सम्बन्धी साहित्य भी दिया जा सकता है। थोड़े से अध्ययन एवं चिन्तन के द्वारा इस प्रक्रिया को इतना जीवन्त बनाया जा सकता है कि वह सारे आयोजन का सबसे प्रधान अंग समझा जाने लगे।

आदर्श पारिवारिकता का विकास

जन्मदिन यों व्यक्तिगत पर्व और निजी उल्लास का दिन है परन्तु नितान्त निपट एकाकी रहना शायद ही कोई पसन्द करता है। यह मनुष्य की नियति के अनुरूप ही नहीं है कि वह एकाकी जीवन व्यतीत कर सके। परमात्मा ने उनकी प्रकृति में कुछ ऐसी विलक्षणतायें भर दी हैं, जिनके कारण न वह अकेला रहना पसन्द करता है और न अकेला रह सकता है। समाज के साथ उसके सम्बन्ध उसी स्तर के होते हैं जैसे कि जल के साथ मीन का। मछली जल के बिना नहीं रह सकती, उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी समाज से कट कर व्यतीत नहीं हो पाता।

यद्यपि कई वीतरागी, त्यागी, सन्त-महात्मा समाज से विरत होकर दूर एकान्त में अपना जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु हर कोई वीतरागी और त्यागी तपस्वी नहीं हो सकता। कम से कम उस स्थिति में जा पहुँचना तो सामान्य लोगों के बस में है ही नहीं जिसमें कि समाज से कोई सम्बन्ध न रखते हुए जीया जा सके। समाज पर इस तरह निर्भर रहने अथवा समाज में रहने के कारण ही व्यक्ति का विकास हो पाता है। समाज में रहकर वह अन्य लोगों के सहयोग से अपनी निर्वाह व्यवस्था जुटाता है, रोजी रोजगार कमाता है। यहाँ तक कि शिक्षा प्राप्त करने और आत्म निर्भर बनने तक में उसें समाज का सहयोग किसी न किसी रूप में लेना ही पड़ता है। यह परोक्ष निर्भरता क्रमशः प्रत्यक्ष निर्भरता होती चली जाती है और व्यक्ति के अपने समुदाय, मित्रों, परिचितों, स्वजन सम्बन्धियों तथा परिवारीजनों तक घनिष्ठ हो जाती है।

सम्पूर्ण समाज पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर नहीं रहना पड़ता पर परोक्ष सम्बन्ध तो बना ही हुआ है। चर्चा यहाँ सामाजिक निर्भरता की नहीं चल रही है। कहने का अर्थ इतना ही है कि व्यक्ति का सुख-दुःख उसका अपना ही सुख-दुःख नहीं होता बल्कि उसे अपने सुख-दुःख के लिए परोक्ष रूप से समाज पर निर्भर रहना पड़ता है। परिवार पर तो निर्भरता आत्यन्तिक घनिष्ठ और पूर्णतः प्रत्यक्ष हो जाती है क्योंकि वहाँ उसके और सम्बन्धित परिवारीजनों के सुख-दुःख हित-अहित एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं, एकाकार हो जाते हैं। घर का कोई सदस्य बीमार रुग्ण है तो अन्य सदस्यों को भी उसका दुःख और क्लेश होता है। एक व्यक्ति की परेशानियों से सारा परिवार दुःखी और क्लान्त हो उठता है। परिवार में रहने वाले व्यक्तियों के सम्बन्ध परस्पर इतने घनिष्ठ और प्रगाढ़ होते हैं कि उन्हें भावनात्मक दृष्टि से एक समूची इकाई कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उदाहरण के लिए माता-पिता के चरित्र और रहन-सहन का प्रभाव बच्चों पर अनिवार्य रूप से पड़ता है। बच्चों के लिए तो फिर भी माना जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व कोरे कागज की तरह होता है जिन पर सम्पर्क और सान्निध्य का लेख लिखा जाता है या वह फोटो प्लेट की तरह होता है, जिस पर वातावरण का प्रभाव तुरन्त अंकित हो जाता है। बड़ों के लिए यह नहीं कहा जा सकता कि उनका कोई व्यक्तित्व नहीं होता, फिर भी वे एक-दूसरे के स्वभाव, चरित्र और गुण से प्रभावित होते हैं। माता-पिता और सन्तान को एक-दूसरे की अनुकृति प्रतिच्छाया माने तो भी परिवार में आने वाले नये सदस्य का प्रभाव तत्काल पड़ते हुए देखा जा सकता है। घर में किसी लड़के का ब्याह होकर बहू आती है तो वह भी अपने संस्कारों और गुणों से पति तथा परिवार के सदस्यों में कुछ न कुछ परिवर्तन तो कर ही देती है, या स्वाभाविक ही उसके कारण परिवर्तन आ जाती है।

किसी घटना, प्रखर प्रेरणा और आदर्श विचार से प्रभावित होकर परिवार का कोई सदस्य अपने स्वभाव में—अपनी रीति-नीति में परिवर्तन करना चाहता है, तो घर के अन्य सदस्य आदि चाहें तो उसे व्यक्तित्व की क्रान्ति को रोक सकते हैं। ऐसे कई व्यक्ति देखने में आते हैं, जिन्होंने किसी पुस्तक से प्रभावित होकर या किसी सत्पुरुष से प्रेरणा ग्रहण कर ईमानदारी का जीवन बिताने का दृढ़ संकल्प लिया। तत्काल तो यह लगा कि इस व्यक्ति को अपने संकल्प से कोई डिगा नहीं सकता पर परिवार के अन्य सदस्यों की माँग, दबाव और संसर्ग से प्रभावित होकर, उन्हें अपने पथ से विचलित होना पड़ा।

व्यक्ति की निष्ठायें सबल और आस्थायें सशक्त बन जायें तो परिवार का प्रतिकूल रवैया अड़चनें खड़ी कर देता है और व्यक्ति की सुख शान्ति को जड़ से झिंझोड़ कर रख देता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि व्यक्ति को बदलने के लिए जो प्रयास किया जाय, उनके साथ परिवार के शिक्षण का भी क्रम चले, व्यक्ति के निकटवर्ती परिवेश में भी अभीष्ट परिवर्तन लाने के लिए प्रयास किये जायें। यह प्रशिक्षण जन्मदिन के अवसर पर बड़ी सरलता और बड़े प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है।

एक सरलता तो यह है कि जन्मदिन पर सम्बन्धित परिवार के व्यक्ति भी अनिवार्य रूप से शामिल होते हैं। घर में कोई उत्सव अनुष्ठान होता हो तो परिवार के लगभग सभी व्यक्ति अनिवार्यतः उपस्थित होते हैं। मित्र, परिचित व्यस्त रहने के कारण उस आयोजन में सम्मिलित न भी हों पर परिवार के सदस्यों के लिए यह नहीं सोचा जा सकता। पर्व, त्यौहारों के अतिरिक्त होने वाले व्रत-कथा और संस्कार आयोजनों जैसे कार्यक्रमों में भी बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी अपने सामान्य काम-काजी जीवन से अवकाश ले लेते हैं और उनमें सम्मिलित होते हैं। इसलिए जन्मदिन के समय परिवार के अन्य सदस्य भी इस आयोजन में प्रमुख भाग लेते हैं।

शिक्षण की दूसरी सुविधा यह होती है कि अपने आत्मीय जन का जन्मदिन मनाया जा रहा है। जिसका जन्मदिन मनाया जा रहा है वह आयोजन का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है। उसके बाद दूसरे कोई महत्वपूर्ण होते हैं तो वह परिवार के लोग ही हो सकते हैं। इसकी उन्हें प्रसन्नता भी होती है। पति को यदि तरक्की मिल रही हो तो पत्नी को स्वाभाविक ही खुशी होती है। बेटा कोई पुरस्कार जीतकर आता है तो माँ की छाती गर्व से फूल उठती है। पुत्र यदि परीक्षा में पास हुआ है तो पिता मुदित हो उठता है और अपने लाड़ले को सफलता से आह्लाद अनुभव करने लगता है। प्रसन्नता और आमोद की यह अनुभूतियाँ आत्मीयता तथा घनिष्ठता के कारण ही होती हैं। अन्यथा रोज कितने ही व्यक्ति तरक्की पाते हैं, कितनों को ही राष्ट्रपति पुरस्कार मिलता है और कितने ही छात्र परीक्षाओं में अच्छे नम्बरों से पास होते हैं।

जन्मदिन का आनन्द और उल्लास तब केवल उनका अपना ही आनन्द उल्लास नहीं रह जाता वरन् पूरे घर-भर का आनन्द उल्लास बन जाता है। उस स्थिति में जिनका जन्मदिन मनाया जा रहा है, उसके स्वजन सम्बन्धी भी भावविभोर और प्रमुदित मन रहते हैं तथा परिवार में हो रहे इस आयोजन का उल्लास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अनुभव करते हैं। उनके शिक्षण परिवेश को सुधारने के लिए आवश्यक हो तो एक ही परिवार में रहने के कारण, एक ही स्थान पर रहने के कारण और स्नेह सूत्रों के कारण प्रगाढ़ बन्धन में बँधे होने के कारण यह कार्य सहज और सरल भी होता है।

इस प्रकार जन्मदिन के माध्यम से पूरे परिवार का शिक्षण करने की पद्धति उपयोगी भी है। प्रत्येक परिवार में कम से कम चार पाँच सदस्य तो होते ही हैं। सबका जन्मदिन मनाया जाता रहे तो वर्ष में उतने ही बार पूरे परिवार को आदर्शवादिता की प्रेरणायें और जीवन सार्थकता के सूत्र सीखने का अवसर प्राप्त होता रह सकता है। वर्ष में चार-पाँच बार यदि यह शिक्षण प्रक्रिया सही ढंग से दोहरायी जाती रहे तो उसका कुछ न कुछ प्रभाव तो होना निश्चित ही है। परिवार का शिक्षण करने के लिए, परिवार की विभिन्न समस्याओं का विवेचन करने के साथ घर का वातावरण सुन्दर और स्वर्गिक बनाने के कई व्यावहारिक उपाय सुझाये जा सकते हैं।

परिवार में रहने वाले व्यक्तियों के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न होते हैं। उनमें से प्रत्येक का अपना अलग-अलग स्थान और अलग-अलग महत्व होता है। पिता और पुत्र का, माँ बेटे का, भाई और भाई का सम्बन्ध भिन्न-भिन्न स्तरों का होता है। सम्मान, स्नेह, हित, सेवा और शिष्टाचार श्रद्धा आदि लगभग सभी तत्वों का समावेश इन सम्बन्धों को पूर्ण बनाता है। इस विशेषता में ही परिवार की गरिमा सार्थक होती है। किन्तु यह भी एक तथ्य है कि ऐसे परिवार कम ही देखने को मिलेंगे। जिनमें आपसी सम्बन्ध आदर्श स्तर के हों। सम्बन्धों में सौहार्द लोकाचार से लेकर आत्मीयता, सेवा, सद्भाव की सत्प्रवृत्तियाँ कैसे विकसित की जायें ? इसका मार्गदर्शन जन्मदिन के अवसर पर अच्छी तरह किया जा सकता है। इस तरह का उद्बोधन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे जन्म-दिन से अलग के विषय न लगें। जिसका जन्म दिन मनाया जा रहा है, उद्बोधन का लक्ष्य उससे हटकर अन्य ओर न चला जाय। अर्थात् जो भी प्रतिपादन किये जायें, जो भी प्रेरणायें दी जायें उनमें ऐसा पुट रखा जाय, जैसे वे मनुष्य के व्यक्तिगत और आत्मिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कही जा रही हैं। उदाहरण के लिए पिता पुत्र के सम्बन्धों पर चर्चा की जाती है तो उनका स्वरूप बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह, एक-दूसरे के प्रति कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों का विवेचन जैसा हो सकता। उस सद्गुण के सत्परिणाम पूरे वातावरण में सत्तत्वों के अभिवर्धन रूप में विश्लेषित किया जा सकता है।

परिवार प्रकरण की ऐसी कोई भी बात नहीं है, जिसकी संगति व्यक्ति के आत्मिक उत्कर्ष से न जमती हो और न ही कोई ऐसी व्यक्तिगत समस्या है जिसका प्रभाव परिवार पर न पड़ता हो। इस प्रकार जन्मदिन की जीवन उत्कर्ष की प्रेरणायें पारिवारिक शिक्षण के ढाँचे में बड़े मजे से दी जा सकती हैं।

सुविदित है कि जिस स्थान पर, जिन व्यक्तियों के साथ चौबीसों घण्टे रहना पड़ता है, उस स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों की रीति-नीति का प्रभाव व्यक्ति पर अनिवार्य रूप से पड़ता है। इस प्रभाव को पारस्परिक सम्बन्धों में तनाव से लेकर दूसरे सदस्यों की समस्याओं से परेशान होने तक विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है। परिवार का वातावरण किस स्तर का रहे ताकि व्यक्ति को अपने उत्कर्ष में सहयोग मिल सके और व्यक्ति की क्या रीति-नीति रहे जिससे परिवार में सुख शान्ति की सृष्टि हो सके। इस विषय पर भी व्यावहारिक और सिद्धान्तपरक परामर्श दिये जा सकते हैं।

आमतौर पर पारिवारिक समस्यायें आर्थिक और सम्बन्धों के केन्द्र पर उनके इर्दगिर्द घूमती रहती हैं। दूसरे सदस्यों की रीति-नीति से भी तभी विरोध उत्पन्न होता है, जबकि उससे अपने स्वार्थ या अहं पर चोट आती है। परिवार का कोई सदस्य जब इतना स्वार्थी हो जाता है कि उसे अपने सन्तोष के आगे दूसरों की सुविधा-असुविधा का ध्यान ही नहीं रहता तो परिवार में विसंगतियाँ और तनाव उत्पन्न होने लगते हैं। इसलिए परिवार निर्माण के प्रसंग में ऐसी और इस तरह की अन्य कठिनाइयों और समस्याओं को भी अपने विषय में सम्मिलित कर लेना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पारिवारिक जीवन को उन्नत बनाने के लिए ढेरों विषय खोजे जा सकते हैं। अनेकों सम्भावित समस्याओं पर चर्चा की जा सकती है जिससे कि परिवार में सुख-सृष्टि की जा सके। जिन आदर्शों और सिद्धान्तों को अपनाकर व्यक्तिगत तथा पारिवारिक जीवन में सुख शान्ति का वातावरण निर्मित किया जा सकता वे मोटे रूप में पाँच-वर्गों में आ सकते हैं—श्रमशीलता, मितव्ययिता, सादगी, सुव्यवस्था, शिष्टता और सहयोग। इन्हें पारिवारिक पंचशील भी कहा जा सकता है। इन पंचशीलों को अपनाकर व्यक्ति अपना हित तो करता है, परिवार के निर्माण और विकास के लिए भी समुचित सहयोग प्रस्तुत कर सकता है। श्रमशीलता, सादगी—मितव्ययिता, सुव्यवस्था, शिष्टता, सज्जनता और उदार सहयोग ऐसे सद्गुण हैं, जिनसे व्यक्ति का निज का व्यक्तित्व तो प्रभावशाली और प्रखर बनता ही है, परिवार में सुख स्वर्ग का सर्जन होता चलता है।

जन्मदिन पर किये जाने वाले उद्बोधन में इन पाँच आदर्शों के विविध पक्षों, पहलुओं को उभारते हुए ढेरों प्रकार के नये-नये विषय प्रतिपादित किये जा सकते हैं और हर बार के प्रवचन में नवीनता व रोचकता का समावेश किया जा सकता है। उदाहरण के लिए श्रमशीलता को ही लें। यह एक सद्गुण ही इतना व्यापक और महत्वपूर्ण है कि इस पर हर बार नई शैली में प्रतिपादन किया जा सकता है। ऐसे ढेरों उदाहरण खोजे जा सकते हैं, जिनसे इस सद्गुण की शक्ति सामर्थ्य सिद्ध होती है। संसार में जिन किन्हीं भी व्यक्तियों ने असाधारण सफलतायें प्राप्त की है, उनकी सफलता का मूल आधार श्रमशीलता ही रहा है। श्रमशीलता को अपनाकर ही कोई व्यक्ति सफल हो सका है—यह भी कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा। अपने दायित्वों और कर्त्तव्यों को मनोयोगपूर्वक लगन और कुशलता के साथ करने की विशेषता भी श्रमशीलता का ही अंग है। वक्ता को यदि अपने विषय का थोड़ा भी अध्ययन रहा हो, थोड़ा भी चिन्तन रहा हो, तो श्रमशीलता के अनेकानेक पक्ष पहलू उभारे जा सकते हैं और उनके आधार पर व्यक्ति के उत्कर्ष के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों के लिए भी निर्माण की प्रेरणायें दी जा सकती हैं। परिवार के सभी व्यक्तियों में श्रमशीलता के गुण पैदा हों, घर का कोई व्यक्ति किसी काम को करने में अपना छोटापन न समझे, यह वृत्ति यदि विकसित की जा सके तो परिवार में सुव्यवस्था और सुघड़ता का वातावरण निर्मित किया जा सकता है।

इस मान्यता को गलत और अवांछनीय ही कहा जाना चाहिए कि हम किसी काम को छोटा और किसी को बड़ा मानते हैं। वस्तुतः न कोई काम छोटा होता है और न बड़ा, सभी काम एक समान होते हैं। यदि प्रत्येक काम को कुशलता और मनोयोगपूर्वक करने लगा जाय तो व्यक्तित्व में कई उच्च गुणों का विकास होने लगता है और अभीष्ट दिशा में सफलतापूर्वक आगे बढ़ा जा सकता है।

सादगी—मितव्ययिता पारिवारिक पंचशील का दूसरा सिद्धान्त है। इन ओछी मान्यताओं ने कितने ही परिवारों को तबाह कर रखा है कि शान-शौकत और ठाट-बाट से रहा जाय तो उससे ही हमारा गौरव बढ़ेगा। इस कारण परिवार के सदस्य अपने लिए फैशन, विलासिता और अनावश्यक साधनों की माँग करते हैं। यदि उन्हें पूरा किया जाय तो परिवार का अर्थ सन्तुलन बिगड़ता है और पूरा न किया जाय तो घर में अशान्ति और असन्तोष का वातावरण बनता है। इसलिए परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपनी तुष्टि नहीं, परिवार की स्थिति और अपनी आवश्यकताओं का तालमेल बिठाकर चलने की नीति अपनानी चाहिए। जन्मदिन के शिक्षण में सादगी को मनुष्य की गरिमा और गौरव मानने की प्रेरणा दी जानी चाहिए तथा बताया जाना चाहिए कि ठाट-बाट से रहकर, अपनी स्थिति सामर्थ्य से अधिक प्रदर्शन कर संगी-साथियों को थोड़ी देर के लिए प्रभावित भले ही कर लिया जाय पर उसका दुष्प्रभाव परिवार की जड़ों को खोखला करने के रूप में ही होता है। अपनी माँग, विलासी आवश्यकताओं के स्थान पर परिवार के सदस्यों में यदि सादगी के संस्कार डाले जा सकें—मितव्ययिता की आदत उत्पन्न की जा सके तो वह उनके लिए अधिक हितकर होगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विलासिता की नहीं—उचित आवश्यकताओं की पूर्ति करने के रीति-नीति अपना ली जाय तो ईमानदारी, सिद्धान्त निष्ठा और नीति परायणता के आदर्शों का पालन भी किया जा सकता है। ईमानदारी का परित्याग करने की विवशता इसलिए नहीं होती कि व्यक्ति को बेईमानी में कोई रस आता है। वस्तुतः बेईमानी करते समय अपनी आत्मा भी कचोटती है और अप्रतिष्ठा का भय भी सताता है। पर वे माँगें जो अनुचित हैं, वे आवश्यकतायें जिनकी पूर्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर की बात है, अतिरिक्त व्यवस्था को भी आवश्यक बना देती है। न्यायनीति से किये जाने वाले उपार्जन में वह तो सम्भव नहीं रहता, इसलिए अनीति का मार्ग ही अपनाना पड़ता है। इसलिए सादगी में गौरव, मितव्ययिता में व्यावहारिक गरिमा अनुभव की जाय तो व्यक्ति, परिवार और समाज में सुख, सन्तोष तथा सुव्यवस्था की एक आधार स्थिति विनिर्मित होती है।

श्रमशीलता, सादगी और मितव्ययिता के बाद परिवार में स्वच्छता सुव्यवस्था का वातावरण विनिर्मित करने के लिए आवश्यक प्रयास किये जाने चाहिए। परिवार शिक्षण का यह एक अनिवार्य पहलू है कि किसी एक व्यक्ति के द्वारा किसी सिद्धान्त का परिपालन करने से परिवार निर्माण की आवश्यकता पूरी नहीं हो जाती। घर के सभी लोग उसमें यथेष्ट सहयोग दें और अभीष्ट स्थिति के लिए सुनिश्चित प्रयास करें तो ही स्वच्छता, सुव्यवस्था का वातावरण बनाया जा सकता है। अन्यथा एक व्यक्ति सफाई करता रहे, घर के सामानों को यथास्थान व्यवस्थित रखता रहे और अन्य सदस्य उस ओर से उपेक्षा ही बरतते रहें तो किये गये सारे प्रयास व्यर्थ ही हो जायेंगे। इसलिए परिवार प्रकरण में जो भी बात कही जाय उस सन्दर्भ में यह पुट अनिवार्य रूप से रखना चाहिए कि परिवार के सभी व्यक्ति उसमें समुचित योगदान दें। स्वच्छता का ध्यान रखना है तो गन्दगी फैलाने से रोकने और उसे साफ करने की बात हर सदस्य के लिए आवश्यक हो जाती है। घर में व्यवस्थाक्रम बनाना है तो प्रत्येक सदस्य को यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई वस्तु अस्तव्यस्ततापूर्वक उपेक्षित ढंग से यहाँ-वहाँ न फेंकी जाती रहे। स्वच्छता सुव्यवस्था के सन्दर्भ में ऐसी अनेकों सैद्धान्तिक और व्यावहारिक प्रेरणायें अपने अनुभव, अध्ययन के आधार पर दी जाती रहें।

परिवार को एक व्यवस्थित और छोटे गणतन्त्र की संज्ञा दी जा सकती है। उसमें छोटे से छोटे बच्चे का अपना स्थान है तो छोटे से छोटे सदस्य का योगदान अपेक्षित रहता है। इसलिए अन्तिम दो सूत्र शिष्टता-सम्मान और उदार-सहकर पारिवारिक स्वराज्य की आधारभूत आवश्यक और उपयोगी प्रवृत्तियाँ हैं। परिवार का प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे का सम्मान करे, एक-दूसरे को आदर दें, एक दूसरे के प्रति शिष्टता और सज्जनता पूर्ण व्यवहार करे, इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए और परिवार के उत्तरदायी सदस्यों को यह समझाना चाहिए कि अन्य सदस्यों में से संस्कार पैदा करने के लिए वे क्या कर सकते हैं ? कहना नहीं होगा कि दूसरों को जो कुछ सिखाना समझाना है उसका आचरण पहले स्वयं करना चाहिए। इसलिए जिन बड़े सदस्यों से ये बातें कही जायें या जिन पर यह जिम्मेदारी डाली जाय उनको स्वयं भी पहले वैसा आचरण करने की बात समझा दी जाय।

इसी प्रकार परिवार में उदार-साहूकार की प्रवृत्तियाँ विकसित करने के लिए भी आवश्यक विवेचन किया जाना चाहिए। घर में कुछ सदस्य ही बड़े होते हैं और उन पर परिवार की सारी व्यवस्था करने की जिम्मेदारी रहती है। कई बार उनमें आपस में ही सामंजस्य नहीं बन पाता। उदार-सहकार के द्वारा आपसी सामंजस्य स्थापित करने से लेकर एक-दूसरे के कार्यों में हाथ बँटाने, दूसरे सदस्यों में रुचि लेने और उनके लिए सहयोग प्रस्तुत करने की प्रेरणायें दी जानी चाहिए। सामाजिकता और परिवार के बाहर सहयोग सहकार की स्थिति भी परिवार में किये गये अभ्यास से ही बनती है।

परिवार एक पाठशाला है, कहाँ जाना चाहिए एक प्रयोगशाला है, जहाँ रहकर व्यक्ति आत्म विकास और समाजनिष्ठा का अभ्यास करता है। इस तथ्य को बराबर स्मरण में रखते हुए जन्मदिन आयोजन के समय विभिन्न प्रेरणायें दी जा सकती हैं और पूरे परिवार का उपयोगी शिक्षण किया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदश समाज की रचना व्यक्तित्व के परिष्कार एवं पारिवारिक-सद्भाव के विस्तार से ही सम्भव है। जन्म दिवसोत्सवों के माध्यम से इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति बड़ी कुशलता से की जा सकती है। यह अनुभवजन्य तथ्य है कि जहाँ इस माध्यम को ठीक प्रकार प्रयुक्त किया गया, वहाँ अति उत्साहवर्धक परिणाम सामने आये हैं। व्यक्ति के अन्दर आदर्शवादिता एवं परिवार में सुसंस्कारों की वृद्धि इतनी तीव्रगति से होती पाई गई है कि हर्ष से आँखें चमकने लगती हैं। युग निर्माण परिवार के अन्दर इस माध्यम से गहन आत्मीय भाव बढ़ा है और उससे अनेकों विकृतियों प्रतिक्रियाओं का शमन हो जाता है। संयुक्त उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूकता का भाव भी इस सीमा तक बढ़ा है कि किसी भी बड़े से बड़े कार्य में हाथ डालने में झिझक नहीं होती।

अपनाने की दृष्टि से अति सुगम और लाभ की दृष्टि से अद्भुत क्षमता सम्पन्न इस प्रक्रिया को जितनी अधिक लोकप्रिय बनाया जा सके, बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। उसके सद्परिणाम अनेक रूप में सामने आवेंगे। युग निर्माण परिवार के सदस्यों के लिए तो यह अनिवार्य है ही। जब साधारण के स्तर तक उसे पहुँचाने का प्रयास हर लोकहितैषी, विचारशील एवं जीवन्त व्यक्ति करें तो समाज में सद्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन अपेक्षित गति से किया जाना सुनिश्चित है।

जन्म दिवसोत्सव इस तरह मनावें

जीव के लिये सबसे बड़ा ईश्वरीय उपहार मनुष्य जन्म है। सृष्टि के समस्त जीवधारियों को उपलब्ध शरीरों की तुलना में इस शरीर की महत्ता असंख्य गुनी अधिक है। मनुष्य के अतिरिक्त अन्य किसी जीव के पास न भाषा है न वाणी, न साहित्य, न समाज, न परिवार, न उद्योग-उत्पादन, न चिकित्सा, न शासन। कुछ भी तो नहीं है उन बेचारों के पास। प्रकृति की दया पर उनका जीवन बनता, चलता और नष्ट होता रहता है। आहार और निवास जैसी शरीर की सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करने मात्र में वे निरन्तर भटकते रहते हैं, अन्य जीवों के आक्रमण तथा प्रकृति की उथल-पुथल के छोटे से धक्के में उनका जीवन समाप्त हो जाता है। बेचारे एक-दूसरे की सहायता भी नहीं कर सकते, अपनी मौत मरते और अपनी जिन्दगी जीते हैं। यदि उनकी तुलना में मनुष्य की उपलब्ध सुविधाओं पर विचार किया जाय तो प्रतीत होता है कि उसे उतनी ही सुविधाएँ प्राप्त हैं, जितनी मनुष्य की तुलना में देवताओं को प्राप्त होने की कल्पना की जाती है।

आहार की समस्या हमारे लिए नहीं के बराबर है। बोलकर, लिखकर अपने विचार दूसरों पर व्यक्त कर सकते हैं। कुटुम्बियों और मित्रों का सहयोग मिलते रहने से बड़ा काम चलता है। चिकित्सा, शासन, वाहन, साहित्य, मनोरंजन, उपार्जन आदि के इतने अधिक साधन हमें उपलब्ध हैं कि उनकी महत्ता यदि अन्य जीव-जन्तुओं की आँखों से देखें तो पता चले कि ईश्वर का कितना बड़ा अनुदान और वरदान हमें प्राप्त है। आज तो हम अपनी उपलब्धियों का मूल्यांकन नहीं कर पाते पर यदि कल अन्य योनियों में जन्मना पड़े तब हम यह अनुभव कर सकेंगे कि जिन दिनों हमें मनुष्य शरीर मिला था तब आज की तुलना में कितनी अद्भुत विभूतियाँ हमें प्राप्त थीं।

अनुपम अवसर का सदुपयोग

इस अनुपम अवसर का कितने व्यक्ति ठीक तरह लाभ उठा पाते हैं ? अधिकांश को दुर्भाग्य, कष्ट, अभाव, क्लेश एवं उद्वेग की जिन्दगी जीते देखते हैं। इस अवसर से लाभ उठाकर लौकिक एवं पारलौकिक भविष्य को उज्ज्वल बनाने की बात को कोई विरले ही सोच पाते हैं, अधिकांश को तो जिन्दगी भार की तरह काटनी पड़ती है, वे निरन्तर क्षुब्ध और अशान्त रहते दीखते हैं। कितना स्वर्णिम अवसर और उससे कितना अधिक रोष, असन्तोष—यह विलक्षण गोरख धन्धा समझ में आता नहीं है। हुआ यह है कि हम मानव-जीवन का महत्व, विज्ञान, मूल्य, उपयोग सभी कुछ भूले हुए हैं। हीरे का मूल्य न जानने वाले व्यक्ति के पास यदि उन रत्नों की पोटली भी हो तो भी उसके लिए उसका न कोई महत्व है न उपयोग। इसी प्रकार जिसने मनुष्य-जन्म का स्वरूप एवं उपयोग समझा ही नहीं, उनके लिए वह एक भार मात्र है। वह सोचता है मौत का दिन जल्दी आ जाय तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अच्छा। सुरदुर्लभ मानव शरीर इस प्रकार भार बनकर रहे तो समझना चाहिए कि उसे धारण करने वाला जीव इस बहुमूल्य रत्नराशि की महत्ता समझ ही न सका।

मानव शरीर एक कीमती मोटर की तरह है। पर इसका लाभ तभी है जब उसका ठीक तरह चलाना भी आता हो। अनाड़ी ड्राइवर तो उसे तोड़-फोड़ कर ही रख देगा। जीवन जीने की कला से अपरिचित होने के कारण, पग-पग पर दुर्घटनाएँ होती हैं। रोग से घिरा शरीर, उद्विग्न मन, अस्त व्यस्त परिवार, आर्थिक संकट, दाम्पत्य क्षेत्र में मनमुटाव कुपात्र सन्तान, परिचितों का द्वेष दुर्भाव आदि अनेक कारण हमें क्षुब्ध और उद्विग्न किये रहते हैं। यह सभी दुर्घटना के चिन्ह हैं। अनाड़ी ड्राइवर जिस तरह अपनी गाड़ी के टायर, मडगार्ड, ब्रेक, छत आदि सभी कुछ तोड़-फोड़ लेता है वैसे ही हमारे जीवन का हर पहलू क्षतिग्रस्त बना होता है। जीवनरूपी गाड़ी एक्सीडेण्टों की करुण कथा सुनाती हुई कराहती रहती है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति न तो ईश्वर के कोप का कारण है और न परिस्थितियों की देन। मनुष्य का अपना दृष्टिकोण और कार्यक्रम जब विकृत हो जाता है तो उसकी गतिविधियों में अस्त-व्यस्तता भर जाती है। गुण, कर्म, स्वभाव का ढर्रा छितरा जाता है, ओछे व्यक्तित्व को लेकर अच्छी परिस्थितियाँ प्राप्त कर सकना सम्भव नहीं रहता। पात्रता के अनुरूप ही इस संसार में किसी को कुछ मिलता है। कुपात्रों के हिस्से में दुर्भाग्य ही आता है। इस संसार में वह सब कुछ मौजूद है, जिसके आधार पर कोई भी सन्तुलित व्यक्ति अपनी प्रगति एवं प्रसन्नता के भरपूर साधन जुटा सके। पर साधनों की सहयोग की कहीं कमी नहीं। कमी है ऐसे व्यक्तियों की जो अपनी पात्रता के अनुरूप उन साधनों का उपयोग सही से कर सकें।

पात्रता सिद्ध करें

ईश्वर ने मनुष्य शरीर देकर जीव के ऊपर असाधारण अनुकम्पा की है, अब उसका काम है कि इस सुविधा का स्वरूप समझे और उसका सदुपयोग कर सकने की अपनी पात्रता सिद्ध करे। यदि हमें जीवन प्राप्त है तो उसे जीने की कला भी आनी चाहिए। खेद इसी बात का है कि इस धरती पर तीन सौ करोड़ मनुष्य रहते हैं, पर उनमें से उसका सदुपयोग कर सकने वाले तीन करोड़ भी न होंगे। यही कमी है जिसने व्यक्ति और समाज की सुख-शान्ति का अपहरण कर दुःख दुर्भाग्य की विभीषिका खड़ी कर दी है।

व्यक्तियों के सुव्यवस्थित न होने के फलस्वरूप समाज में अगणित प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं और उनके फलस्वरूप विविध-विध उलझनें, समस्यायें, आपत्तियाँ एवं विभीषिकायें बढ़ती हैं। संसार के हर क्षेत्र में आज विषम परिस्थितियाँ प्रस्तुत हैं और इतनी भयानक उलझनें खड़ी हैं, जो सुलझाने में नहीं आतीं। इसका एकमात्र कारण व्यक्तियों का सुसन्तुलित एवं सुविकसित न होना ही है। लोग न तो मानव-जीवन का महत्व एवं गौरव जानते हैं और न उसका सदुपयोग करने की कला से परिचित हैं, यह कमी जब तक बनी रहेगी, तब तक व्यक्ति और समाज के सम्मुख उपस्थित वर्तमान कठिनाइयों में कमी होना दूर उलटे वे बढ़ती ही रहेंगी।

आज की सबसे बड़ी युग-आवश्यकता यह है कि मनुष्य को उसके स्वरूप एवं कर्त्तव्यों का बोध कराया जाय तथा जिन्दगी जीने की कला का वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षण किया जाय। यही तत्वज्ञान अध्यात्म एवं धर्म के नाम से पुकारा जाता है। आज इस तत्वज्ञान ने भी विकृत रूप धारण कर लिया है और उसका क्षेत्र धर्मध्वजी वर्ग की आजीविका एवं प्रतिष्ठा बनाये रखना मात्र रह गया है। यह स्वरूप बदला जाना चाहिए। जनसाधारण को जिन्दगी जीने की कला के रूप में, अध्यात्म तत्व-ज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए। इस आवश्यकता की जितने अंशों में पूर्ति हो सकेगी, उतनी ही व्यक्तिगत प्रगति, समृद्धि तथा सामाजिक सुख-शान्ति का प्रयोजन पूर्ण होगा।

लोक-शिक्षण के लिए यह करें

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लोक-शिक्षण का साहित्य बड़े परिमाण में बने और फैले उसकी आवश्यकता तो है ही। साथ ही यह भी अपेक्षित है कि जन-जन को प्रेरणाप्रद, उत्साह भरे वातावरण में ऐसा कुछ सिखाया-समझाया जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सके, जिससे वह आत्म-चिन्ह, आत्म-शोधन, आत्म-निर्माण एवं आत्म-विकास के लिए अधिकाधिक सोचे, विचारे और जो करना चाहिए, जो अपनाया जाना चाहिए उसके लिए तत्परतापूर्वक अग्रसर हो सके।

यह कार्य जन्मदिवस समारोह मनाने की प्रक्रिया के साथ जितने अच्छे ढंग से हो सकता है उतना और किसी प्रकार से नहीं। संसार के सभी सभ्य देशों में व्यक्तियों के जन्मदिन मनाये जाते हैं, उस दिन मित्रगण पुष्प आदि के उपहार भेंट करने आते हैं। मनोरंजन के, जलपान के छोटे-छोटे कार्यक्रम रहते हैं, एक-दूसरे को बधाई देते हैं और प्रेम प्रदर्शित करते हैं। अपने यहाँ इनका प्रचलन कुछ अधिक गम्भीरतापूर्वक होना चाहिए और उसमें जीवन के सदुपयोग की प्रेरणा देने वाला आध्यात्मिक पुट जुड़ा रहना चाहिए। मनोरंजन एवं प्रोत्साहन मात्र पर्याप्त नहीं, उसके साथ-साथ उत्कर्ष की प्रेरणा का जुड़ा रहना भी आवश्यक है। जन्म-दिन समारोहों का प्रचलन इसी दृष्टि से किया जाना चाहिए।

यों प्रचलित अनेक पर्व-त्यौहार आते और मनाये जाते हैं, पर व्यक्तिगत दृष्टि से मनुष्य का अपना जन्मदिन ही उसके लिए सबसे बड़े हर्ष, गौरव एवं सौभाग्य का दिन हो सकता है। राम के जन्मदिन की तिथि रामनवमी और कृष्ण के जन्मदिन की जन्माष्टमी जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही किसी सामान्य व्यक्ति के जीवन में उसके लिए उसकी जन्मतिथि हो सकती है। अपने अवतरण का दिन अपने लिए किसी प्रकार कम आनन्द एवं उल्लास का नहीं है। उसे ठीक तरह मनाया जाय तो अपना प्रसुप्त आनन्द और उल्लास जगेगा। इसी अवसर पर यदि थोड़ा अधिक गम्भीर आत्म-निरीक्षण कर लिया जाय और आगे के लिए कुछ ठोस सदुपयोग की बात सोच ली जाय तो वह दिन एक नये सूर्योदय जैसा प्रकाशवान् हो सकता है। बुद्ध, वाल्मीकि, सूरदास, तुलसी, शंकराचार्य, गाँधी, रामदास अंगुलिमाल आदि के पूर्व जीवन बहुत अच्छे न थे पर एक दिन उनकी अन्तःस्फुरणा जग पड़ी तो उनने अपनी दिशा ही बदल दी यह बदलना इतना महत्वपूर्ण हुआ कि वे नर से नारायण बन गये। जन्मदिन की उल्लास भरी घड़ी में यदि मनुष्य यत्किंचित भी आत्म-निर्माण की बात सोचने लगे तो वह उसी अनुपात में उसके सौभाग्य की घड़ी सिद्ध हो सकती है।

उपयुक्त वातावरण में उपयुक्त प्रेरणा

यह ठीक है कि सब लोग उतने भावनाशील नहीं होते कि प्रेरणाओं को दृढ़तापूर्वक ग्रहण कर सकने एवं अपने को बदल डालने में सफल हो सकें। फिर भी इतना तो निश्चित है कि उपयुक्त वातावरण प्रस्तुत करने का प्रभाव किसी न किसी सीमा तक उपयुक्त ही होता है। जिसका जन्मोत्सव मनाया जायेगा वह अपने महत्व एवं गौरव को समझे, मित्रों से प्रोत्साहन प्राप्त करे और उस उल्लास की घड़ी में मानवोचित रीति से जिन्दगी जीने के कुछ बड़े कदम उठावे तो उसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। व्यक्ति को उल्लसित और प्रोत्साहित करने को जन्मदिन मनाया जाना निश्चित रूप से बहुत प्रेरणाप्रद हो सकता है। अतएव हमें जन्मदिन मनाने की प्रथा का प्रचलन बड़े उत्साह एवं मनोयोगपूर्वक करना चाहिए।

समितियाँ यह कार्य हाथ में लें

कुछ दिन बाद यह प्रथा देशव्यापी हो जायेगी तब तो उसका प्रचलन अपने आप हो जायेगा और सारी व्यवस्था अपने ढर्रे पर घूमने लगेगी। पर अभी उसको एक संगठित प्रयास के रूप में ही आरम्भ किया जाना चाहिए। युग निर्माण आन्दोलन के अन्तर्गत जहाँ भी छोटे-छोटे संगठन हैं, वहाँ सर्वत्र एक, तीन या पाँच व्यक्तियों की छोटी समिति गठित कर ली जाय। उसका एक संचालक नियुक्त कर लिया जाय। यह समिति अपने परिवार एवं संगठन के सदस्यों के जन्मदिन मनाने की व्यवस्था बनाने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर उठावे।

संगठन के अन्तर्गत जितने वयस्क एवं प्रबुद्ध लोग आते हों, उनकी जन्म तिथियाँ, तारीख या तिथि के हिसाब में नोट कर ली जायें और चालू वर्ष का एक कार्यक्रम बना लिया जाय कि किस महीने में किस तारीख को किसका जन्मदिन होगा ? तिथियों का हर साल तारीखों के हिसाब से अन्तर हो जाता है, इसलिए यह लिस्ट हर साल नई ही बनानी पड़ा करेगी। यह लिस्ट संगठन के हर सदस्य के पास पहुँचा दी जाय ताकि उसे पहले से ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पता रहे कि किसके यहाँ उत्सव कब मनाया जायेगा ? पूर्व सूचना रहने से उपस्थित होने के लिए अवकाश निकाल सकना सुगम पड़ता है।

जिनका जन्मोत्सव है वह अपने मित्रों, सम्बन्धियों, कुटुम्बियों, सुहृदों को भी सूचना और निमन्त्रण दें। इस प्रकार शाखा सदस्यों के अतिरिक्त निजी सम्बन्ध के व्यक्ति भी उस अवसर पर उपस्थित होंगे। यह उपस्थिति जितनी अधिक होगी आयोजन उतना ही आकर्षक, प्रभावशाली एवं प्रेरणाप्रद बन जायेगा। उपस्थित लोग भी प्रेरणा ग्रहण करेंगे। इस प्रकार यह उत्सव एक व्यक्ति के लिए ही नहीं वरन् उपस्थित सभी लोगों के लिए प्रेरणा एवं प्रकाश देने वाला बन जायगा। किसी शाखा संगठन में २० सदस्य हों, हर एक के जन्मदिन पर ५०-५० की औसत उपस्थिति हो तो वर्ष भर में एक हजार व्यक्तियों तक जीवन-निर्माण की कला एवं शिक्षा को इन उत्सवों के माध्यम से पहुँचाया जाना सम्भव हो सकेगा। संगठन का भी विस्तार होगा क्योंकि जो नये लोग उपस्थित होंगे उनमें से बहुत-से प्रभावित होकर संगठन में सम्मिलित होंगे। उनके भी जन्मदिन मनाये जायेंगे, तो फिर और आदमी उसमें आयेंगे। इस प्रकार से हर आयोजन कुछ नये लोगों को नव-निर्माण की योजना से आकर्षित प्रोत्साहित एवं सम्मिलित करता चलेगा। मिशन दिन-दिन व्यापक एवं परिपुष्ट होता चलेगा। संगठन ही तो इस युग की सबसे बड़ी शक्ति है। युग परिवर्तन जैसे महान अभियान के लिए तो प्रबुद्ध व्यक्तियों का व्यापक संगठन बनाना ही पड़ेगा। इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए भी इन उत्सवों का बहुत बड़ा उपयोग है।

तैयारी और व्यवस्था

आयोजन का समय दो या तीन घण्टे का रखा जाय। इसमें आधा समय धार्मिक कर्मकाण्ड के लिए और आधा प्रेरणाप्रद प्रवचनों के लिए सुनिश्चित रहे। इस कार्य में घड़ी का सही उपयोग किया जाय। दोनों में से किसी विभाग में इतना अधिक समय न लगे कि दूसरी बात को अधूरा छोड़ना पड़े। प्रातः ६ बजे से पूर्व अथवा सायंकाल सूर्य अस्त के बाद का समय सबके लिए सुविधा का रहता है। नौकरी, व्यवसाय या अन्य काम करने वाले प्रायः नौ बजे बाद ही अपने कामों पर जाते हैं और दिन छिपे तक घर आ जाते हैं। सुविधा के समय आयोजन रहे तो अधिक लोग आसानी से उपस्थित हो सकते हैं।

जन्मोत्सव के धार्मिक कर्मकाण्ड में गायत्री हवन, सामूहिक प्रार्थना, गायन, युग निर्माण के सत्संकल्प का सामूहिक पाठ आदि प्रमुख हैं। उसके लिए हवन् वेदी को रंग-बिरंगे चौक पूर कर सजाया जाय। हो सके तो बाँस गाड़कर रंगीन कपड़े का झल्लर लगा हुआ मण्डप बना लिया जाय। बन्दनवार, पल्लव, पुष्प, झण्डियाँ, महापुरुषों के चित्र, आदर्श वाक्य आदि से यह स्थान सुसज्जित कर दिया जाय। वातावरण जितना आकर्षक होगा उतना ही प्रभावशाली भी रहेगा। बैठने वालों के लिए बिछौने आदि यथोचित साधन रहें।

पूजा कर्मकाण्ड में आने वाली सभी वस्तुयें शाखा संगठन को खरीद कर रख लेनी चाहिए। कलश, चौकियाँ, यज्ञ के काष्ठ-पात्र, पंच-पात्र, आचमनी, हवन की थालियाँ, घृत-पात्र, दीपक, आरती, आदर्श वाक्य, शंख-घड़ियाल, आरती आदि सभी चीजें संगठन के पास हों, जिनका टूट-फूट के लिए उचित किराया लेकर हर आयोजनकर्त्ता को देते रहा जाय। ले जाने और वापिस करने की जिम्मेदारी भी उसी की रहे। हवन के उपयुक्त सूखी समिधायें तथा हवन सामग्री विक्रय के लिए प्रस्तुत रहे। रोली, चावल, कलावा, गन्ध, अक्षत, अगरबत्ती, पुष्प, यज्ञोपवीत, चन्दन आदि जो चीजें बार-बार काम में आती हैं, वह भी शाखा में उपलब्ध रहें। उत्सव मनाने वाले को तो पंचामृत के लिए दूध-दही, पुष्प, घी आदि तत्काल मिल सकने वाली वस्तुओं को ही मँगाने के लिए कहा जाय, जिससे उसे दौड़-धूप की परेशानी न उठानी पड़े।

नये कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण

मन्त्रोच्चारण के कार्य में जहाँ जितने भी सुशिक्षित व्यक्ति उपस्थित हों, सभी को सम्मिलित करना चाहिए। विधि-विधान की इतनी पुस्तकें शाखा के पास रहनी चाहिए कि उन्हें सभी शिक्षित लोगों में वितरित किया जा सके। सब लोग एक स्वर से, एक लय से, साथ-साथ मन्त्रोच्चारण करें, तो उससे प्रभावशाली वातावरण बनता है और जिन लोगों ने भी उच्चारण किया, पुस्तक को समझा एवं विधि-विधान को होते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

देखा है, वे दो-चार आयोजनों में सम्मिलित होने के बाद उस क्रिया-कृत्य को करा सकने में स्वयं समर्थ हो सकते हैं। आगे चलकर कुछ दिन बाद जब सांस्कृतिक पुनरुत्थान की आवश्यकता अनुभव की जायगी और समाज को सुसंस्कृत बनाने के लिए संस्कारों का व्यापक प्रचलन होगा, तब सबसे अधिक प्रचलित जन्म दिवसोत्सव ही होगा। अन्य संस्कार तो यदा-कदा ही होते हैं, पर जब हर घर में, हर व्यक्ति का, हर साल उत्सव मनाया जायगा तब उसके विधान कराने वालों की भी बड़ी संख्या में आवश्यकता होगी। इसकी अभावपूर्ति वे ही लोग करेंगे, जो आज मन्त्रोच्चारण में सहायक के रूप में पुस्तकें हाथ में पकड़ने से अपना प्रशिक्षण आरम्भ कर रहे हैं। उत्सव के साथ-साथ, नये प्रशिक्षित कार्यकर्त्ता तैयार करने का क्रम भी साथ-साथ, चलते रहना चाहिए। ऐसा न हो कि एक पण्डित ही सारा विधि-विधान कराता रहे और बाकी लोग बुत की तरह उसके मुँह को देखते रहें।

मन्त्रोच्चारण की भाँति प्रवचन, उद्‌बोधन भी आवश्यक है। जन-जागरण के लिए जन्मोत्सवों के दिन जितने प्रभावशाली ढंग से कहा सुना जा सकता है, उतना अन्य किसी अवसर पर नहीं। जीवन को सफल, सार्थक, समृद्ध-सुसंस्कृत, सुखी-समुन्नत कैसे बनाया जाय इस समस्या के अगणित पहलू हैं और उन सभी पर प्रकाश डाला जाना चाहिए। अब तक लोग भजन, तीर्थयात्रा आदि में जीवन की सार्थकता मानते रहे हैं, पर यथार्थ बात इससे सर्वथा भिन्न है। भजन भी जीवन-साधना का एक महत्वपूर्ण अंग है, पर उसे समग्र-सर्वांगपूर्ण नहीं कहा जा सकता। गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार, दृष्टिकोण में आदर्शवादिता एवं दूरदर्शिता का समन्वय, उदारता, सहृदयता एवं सेवा-भावना का अभ्यास, श्रमशीलता, नियमितता एवं व्यवस्था, नम्रता, मधुरता एवं प्रसन्नता, धैर्य, साहस एवं सन्तुलन, आशा एवं उत्साह आदि अनेक विशेषताओं से समन्वित जीवन ही सार्थक एवं अनुकरणीय कहा जा सकता है। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को ही जीवन-साधना कहना चाहिए और उसी के फलस्वरूप मनुष्य भौतिक एवं आध्यात्मिक विभूतियों को प्राप्त कर सकने का अधिकारी बनता है। यह तथ्य हमें भली प्रकार समझना और समझाना चाहिए। जन-जागरण का यही लक्ष्य है।

प्रवचनों का अत्यधिक महत्व

मन्त्रोच्चारण करने वाले सुशिक्षित व्यक्ति यदि इन प्रवचनों के तथ्यों को भी नोट करते रहें और उन्हें प्रभावशाली ढंग से समझाने की तैयारी कर लें तो वे आगे चलकर इन उत्सवों का संचालन-कार्य कर सकते हैं। ऐसे प्रशिक्षित व्यक्ति यदि दस-पाँच लाख भी तैयार हो जायें तो भी कम हैं। जन-जागरण के नव-निर्माण के विभिन्न पहलुओं को धर्म-तन्त्र की वेदी पर बैठकर ठीक तरह समझा सकें ऐसे प्रवक्ता ही तो युग-निर्माताओं की भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं। इतना उत्पादन, अभिवर्द्धन एवं प्रशिक्षण इन उत्सवों के समय ही होगा। इसलिए प्रत्यक्ष में यह होना चाहिए कि जिसके यहाँ भी जन्मोत्सव मनाया जाय वहाँ ऐसे सुशिक्षित लोग बड़ी संख्या में पहुँचें, जो आगे चलकर एक कुशल पथ-प्रदर्शक की भूमिका प्रस्तुत कर सकें। निमन्त्रण देने को जाते समय उस क्षेत्र में जो भी ऐसे लोग दिखाई पड़ें, उन्हें अनुरोधपूर्वक बुलाना चाहिए, चाहे उनसे व्यक्तिगत परिचय अथवा सम्पर्क कम ही क्यों न हो ? प्रवचन करने वालों को यों ही कोरी जवान की लपालपी नहीं करनी चाहिए, वरन् जीवन-विधि के किसी एक विषय पर पूरी तैयारी के साथ उसी तरह आना चाहिए जैसे कॉलेज का प्रोफेसर अपने नियत घण्टे में नियत विषय की तथ्यपूर्ण जानकारी छात्रों के सम्मुख उपस्थित करता है। ऐसे व्यवस्थित प्रवचन की महान उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हो सकते हैं अन्यथा बेसिर-पैर की औंधी-सीधी बेतुकी बातों को लेकर प्रवचन करने का आज के धार्मिक लोगों का जो तरीका है, उसे एक भौंड़ा मनोरंजन मात्र ही कह सकते हैं। आज धर्म-मंच से हमें ऐसी ही मसखरी सुनने को मिलती हैं, उसे जनता के समय और धन का अपव्यय ही कहना चाहिए। प्रवचन निर्धारित लक्ष्य को लेकर सुनने वालों को प्रेरणा देने वाले तथ्यपूर्ण एवं सारगर्भित होने चाहिए। वक्ता की प्रतिभा एवं महत्ता इसी कसौटी पर कसी जानी चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन बातों का ध्यान रखें

छोटे बच्चों के जन्मदिन घरों पर महिलायें अपने निजी प्रबन्ध में मना लिया करें। उसके लिए पास-पड़ौस की महिलाओं को एकत्रित करके वे शिशु-निर्माण एवं महिला-जीवन के विकास का प्रकाश डाल सकती हैं। युग निर्माण आन्दोलन के अन्तर्गत जन्म-दिवसोत्सवों का जो क्रम अभी चलाया जा रहा है, वह प्रारम्भ में शाखा सदस्यों तथा प्रबुद्ध व्यक्तियों में प्रचलित किया जाना चाहिए, जिनके व्यक्तिगत प्रभाव परिचय से अनेक, नये एवं विचारशील लोग एकत्रित हो सकें और वे स्वयं भी अपने जन्मदिन के अवसर पर जीवन निर्माण की दिशा में कुछ साहसपूर्ण कदम उठाने-कुछ नया व्रत लेने में समर्थ हो सकें। ऐसे सजीव आयोजन ही दूसरे नर्यो पर प्रभाव डालेंगे। केवल निर्जीव उत्सव मात्र उसे बना दिया जाय तो आज अनेक प्रकार की जो धार्मिक लकीरें आये दिन मिटती रहती हैं, उन्हीं में से यह भी बन जायगी। इसलिए जहाँ तक आन्दोलन का सम्बन्ध है, उसे प्रबुद्ध लोगों तक ही सीमित रखा जाय, तभी इतने लोगों की शक्ति एवं बहुमूल्य समय का कुछ उपयोग हो सकता है। हमारा हर प्रयत्न पूरी उपयोगिता का ध्यान रखकर ही क्रियान्वित होना चाहिए।

उत्सव अधिक खर्चीले न हों

आगन्तुकों में से प्रत्येक को पुष्पाहार, गुलदस्ता या कुछ फूल लेकर आना चाहिए। जो न ला सके उनके लिए उत्सव स्थल पर भी वह मिल सकने की व्यवस्था रहनी चाहिए। शुभकामना का प्रतीक पुष्प ही माना गया है। जिसका जन्मदिन है, उसे सभी शुभचिन्तकों द्वारा उस अवसर पर पुष्प समर्पित किये जाने चाहिए।

उपर्युक्त आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए यदि युग निर्माण शाखाओं की संस्कार समिति अपना कार्य उत्साह एवं उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से करने लगे, तब उस क्षेत्र में इस पुण्य-प्रथा का प्रचलन बड़ी तेजी से हो सकता है। थोड़े ही दिनों में इस प्रयास का आशाजनक परिणाम भी देखा जा सकता है। संगठन की अभिवृद्धि और पुष्टि निश्चित है। जहाँ इतना आधार बना, वहाँ अनेक रचनात्मक कार्यक्रम भी चल पड़ते हैं और उत्साह के वातावरण में नव-निर्माण की गतिविधियाँ आशाजनक परिमाण में बढ़ने लगती हैं। देखने में यह कार्य छोटा-सा है, पर अनुभव ने यह बताया है कि जहाँ के उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने अपने यहाँ जन्मोत्सव मनाने की परिपाटी का प्रचलन किया वहाँ जन साधारण की नव-निर्माण की मजबूत आधारशिला जम गई और वहाँ बहुत कुछ उत्साह भरी प्रगति परिलक्षित होने लगी। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर युग निर्माण आन्दोलन से सहानुभूति, प्रेम एवं अभिरुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को बहुत जोर देकर यह कहा जा रहा है कि वह जन्मोत्सव मनाने की परिपाटी को अपने क्षेत्र में प्रचलित करने का प्रयत्न करें और देखें कि कुछ ही दिनों में इसके उत्साहवर्धक परिणाम उपलब्ध होते हैं।

चार विशिष्ट कर्मकाण्ड

जन्मोत्सव के कर्मकाण्ड में सामान्य गायत्री हवन के अतिरिक्त (१) पंच-तत्व पूजन, (२) दीपदान, (३) व्रत धारण, (४) महा मृत्युञ्जय, हवन। यह चार अतिरिक्त क्रिया की जाती हैं। इन्हें कराते समय उनका उद्देश्य उपस्थित लोगों को बताना चाहिए।

(३) पंचतत्व एवं दीपदान के विषय में पूर्व में ही लिखा जा चुका है। अब तीसरी विशेष क्रिया जन्मोत्सव का व्रत धारण है। व्रतों के बन्धन में बँधा हुआ व्यक्ति ही किसी उच्च लक्ष्य की ओर दूर तक अग्रसर हो सकने में समर्थ होता है। जिनका निश्चय संकल्प ढीला है, अभी सोचा, एक कदम बढ़ाया कि दूसरे ही दिन ढीलेपन ने, आलस ने आ घेरा और वह कार्य छूट गया। ढीली-पोली मनोभूमि के लोगों की मनोभूमि ऐसे ही अनेक शुभ-संकल्प और सत्प्रयत्नों की मरघट बनी रहती है। यदि किसी समय के वे मन्सूबे नियमित रूप से कार्यान्वित होते रहे तो सम्भवतः आज अपना जीवन कुछ से कुछ हो गया होता। उच्च आकांक्षायें समय-समय पर सभी के मन में उठती हैं पर मनस्वी लोग व्रतशील होकर अपने निश्चय पर आरूढ़ रहते हैं, आलस्य और प्रमाद से लड़कर उन्हें परास्त करते हैं और महान् सफलतायें पाते हैं। इसके विपरीत दुर्बल मन वाले आलस्य एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अवसाद में ग्रस्त होकर अपना प्रयत्न छोड़ देते हैं। असफल और सफल व्यक्तियों की मनोभूमि में यह एक ही अन्तर होता है। इस मानसिक दुर्बलता को व्रत-बन्ध द्वारा दूर किया जा सकता है। मनुष्य को शुभ अवसरों पर भावनात्मक वातावरण में देवताओं की उपस्थिति में अग्नि की साक्षी में व्रत धारण करने चाहिए और उनका पालन करने के लिए प्राणों की भी बाजी लगानी चाहिए। व्रतशील लोगों के लिए यह चौपाई पथ-प्रदर्शक होगी—

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाय पर वचन न जाई।।

दुष्प्रवृत्तियों का त्याग व्रतशीलता का आरम्भिक चरण है। मांसाहार, तमाखू, बेईमानी, जुआ, फैशनपरस्ती, आलस, गन्दगी, क्रोध, चटोरपन, कामुकता, शेखीखोरी, कटुभाषण, ईर्ष्या, द्वेष, कृतघ्नता आदि बुराइयों में से जो अपने में विद्यमान हों उन्हें छोड़ना चाहिए। कितनी ही भयानक कुरीतियाँ हमारे समाज में ऐसी हैं, जो अतीव हेय होते हुए भी धर्म के नाम पर प्रचलित हैं। किसी वंश में जन्मने के कारण किसी को नीच मानना, स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा अनाधिकारिणी समझना, विवाहों में उन्मादी की तरह पैसे की होली फूँकना, दहेज, मृत्युभोज, देवताओं के नाम पर पशु-बलि, भूत-पलीत, टोना-टोटका का अन्धविश्वास, शरीर को छेदना या गोदना, जेवरों का शौक, अश्लील, गायन, भिक्षा-जीविका, थाली में जूठन छोड़ना, गाली-गलौज की असभ्यता, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, श्रम का तिरस्कार आदि अनेक सामाजिक कुरीतियाँ हमारे समाज में प्रचलित हैं। इन मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह करने की आवश्यकता है। इन्हें तो स्वयं हमें ही त्यागना चाहिए। इसी प्रकार अन्य अनेक बुराइयाँ हो सकती हैं। उनमें से जो अपने में हों उन्हें संकल्पपूर्वक त्यागने के लिए जन्मदिन का शुभ अवसर बहुत ही उत्तम है।

यदि इस प्रकार की बुराइयाँ न हों, उन्हें पहले ही छोड़ा जा चुका हो तो अपने में सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन के व्रत इस अवसर पर ग्रहण करने चाहिए। रात को जल्दी सोना, प्रातः जल्दी उठना, व्यायाम, नियमित उपासना, स्वाध्याय, गुरुजनों का चरणस्पर्श पूर्वक अभिवादन, सादगी, मितव्ययता, प्रसन्न रहने की आदत, मधुर भाषण दिनचर्या बनाकर समयक्षेप, निरालस्यता, परिवार निर्माण के लिए नियमित समय देना, लोक-सेवा के लिए समय दान आदि अनेक सत्कार्य ऐसे हो सकते हैं, जो अपने गुण, कर्म, स्वभाव में सम्मिलित किये जाने चाहिए। इस प्रकार की कम से कम एक-एक अच्छी आदत अपनाने का उस दिन संकल्प लेना चाहिए और कम से कम एक बुराई भी उस अवसर पर छोड़ देनी चाहिए। यह दुष्प्रवृत्तियाँ छोड़ने और सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने का क्रम यदि हर जन्म-दिन पर चलता रहे तो कुछ ही वर्षों में उसका परिणाम व्यक्तित्व में हुए कायाकल्प की तरह दृष्टिगोचर होने लगेगा और वह जन्मोत्सवों का क्रम जीवन में देवी वरदान की तरह मंगलमय परिणाम प्रस्तुत कर सकेगा।

(४) चौथी क्रिया मृत्युञ्जय हवन की है। कुछ आहुतियाँ मृत्युञ्जय मन्त्र से दी जाती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि हम मृत्यु पर विजय प्राप्त करें। शरीर से तो एक दिन सभी को मरना पड़ता है, पर जिनने जीवन को यशस्वी बना लिया, जीवन मुक्ति का लाभ ले लिया अथवा जीवन और मृत्यु को एक ही स्तर पर अनुभव कराने वाले आत्म-ज्ञान का अभ्यास कर लिया उन्हें मृत्युञ्जय की सिद्धि हो गई, ऐसा मानना चाहिए। हम दीर्घजीवन के लिए शक्ति भर प्रयत्न करें और एक-एक पल का सदुपयोग कर सार्थक बनायें, साथ ही मरने से डरना भी छोड़ें। अनीति के आगे सिर झुकाकर चिरकाल तक जीने की अपेक्षा न्याय, धर्म और कर्त्तव्य के मार्ग पर चलते हुए आज ही मर जाना अच्छा। वह जिन्दगी क्या जो धुएँ की तरह घुटन भरी धुँदकती रहे। दीप्तिमान प्रज्ज्वलित होकर जलना अच्छा। जो मृत्यु को जीवन की सहचरी बना सकता है, वह मृत्युञ्जय है। हमें जीवित मृत होकर नहीं, मृत्युञ्जय होकर जीना चाहिए। इन आहुतियों को देते हुए जन्मदिन के अवसर पर इन्हीं भावनाओं से भावान्वित होने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयोजन प्रकट करने वाले श्लोक

कर्मकाण्ड कराते समय, इन चारों क्रियाओं के कराते हुए उपर्युक्त विवेचना भी करते चलना चाहिए, ताकि उपस्थित लोग उनका प्रयोजन समझ सकें। संस्कार के उद्देश्य की विवेचना करने वाले १३ श्लोक विधान पद्धति में दिये गये हैं, जिनमें निम्न सन्देश सन्निहित हैं—(१) मनुष्य शरीर को सुरदुर्लभ चौरासी लक्ष्य-योनियों में भ्रमण करने के बाद उपलब्ध हुआ अनुपम अवसर मानकर उसके श्रेष्ठतम सदुपयोग के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। (२) जन्म और मरण की शृंखला से मुक्त होने के लिए सन्मार्ग पर चलते हुए ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने में जीवन की सार्थकता माननी चाहिए। (३-४) जीवन को शुभचिन्तन, शुभ कर्म और शुभ प्रवृत्तियों में बिताने की बुद्धिमत्ता का शुभारम्भ करना चाहिए। (५) विगत जीवन में विशिष्ट आध्यात्मिक प्रगति न कर सकने की भूल को ध्यान में रखते हुए शेष दिनों का अधिक उपयुक्त प्रयोग होने की सावधानी रखी जाय। (६) विगत जीवन की भूलों के लिए पश्चाताप और प्रायश्चित करें। (७-८) दुष्प्रवृत्तियों के शमन और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन के लिए तत्पर होना चाहिए। (९-१०) दूसरों के द्वारा किये हुए अपराधों को भुलाना चाहिए और उपकारों को स्मरण रखना चाहिए। (११-१२-१३) ज्ञान, चेतना, उत्साह, बल एवं साहस बढ़ाना चाहिए ताकि जीवन का वास्तविक उत्कर्ष सम्भव हो सके।

प्रशिक्षण आवश्यक

इन सन्देशों में से किसी भी तथ्य पर या कई तथ्यों पर कुशल वक्ता उपयोगी व्याख्या कर सकते हैं। इसी प्रकार जो दुष्प्रवृत्तियाँ मानव-जीवन को पतन एवं दुःख दारिद्र के गर्त में धकेलती हैं, अथवा जो सत्प्रवृत्तियाँ सुख-शान्ति का सृजन करती हैं, उनके स्वरूप, कार्य एवं परिणाम को लेकर बहुत कुछ कहा जा सकता है। क्या सोचने और क्या करने से यह अलभ्य अवसर निरर्थक बनता है और किस रीति-नीति को अपनाने से वैयक्तिक एवं सामाजिक प्रगति का पथ प्रशस्त होता है, इस सन्दर्भ में किसी भी वक्ता के लिए बहुत विस्तृत क्षेत्र कहने और समझाने के लिए पड़ा है। संगीत, गायन, कथायें, उद्धरण, उक्तियाँ, समाचार आदि का पुट बीच-बीच में लगाते चलने से उस प्रकार के भाषण और भी अधिक रोचक, आकर्षक, हृदयग्राही एवं प्रभावोत्पादक बन जाते हैं। विषय सारगर्भित और शैली रोचक, हो तो उपस्थित लोगों पर यह छाप छोड़ी जा सकती है, जिससे वे मानव-जीवन के महत्व एवं सदुपयोग के सम्बन्ध में बहुत कुछ समझ-सीख सकें। इसी प्रकार उपयोगी वक्तृता कर सकने वाले प्रभावशाली लोग हमें ढूँढ़ने चाहिए। उनसे तैयारी के साथ निर्धारित प्रयोजन की पूर्ति कर सकने वाला प्रवचन करने का अनुरोध करना चाहिए। हमें स्वयं इस प्रकार का अभ्यास करना चाहिए। स्मरण रहे, प्रवचन का समय और विषय निर्धारित बना रहे, उसमें व्यतिक्रम न होने पाये। जिस प्रकार विधान का सही और प्रभावोत्पादक होना आवश्यक है, उसी प्रकार प्रवचनों की उत्कृष्टता एवं व्यवस्था का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जाय। उत्सवों के दोनों ही अंग समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, इसलिए किसी भी भी घटिया दर्जे का नहीं रहने देना चाहिए।

लोकप्रिय परम्परा

मनुष्य को अपना काम सबसे प्रिय है, वह उसे स्थान-स्थान पर लिखा, छपा, खुदा और पुकारा जाना पसन्द करता है, अखबारों में, पुस्तकों में, पत्रों में, शिलालेखों में अपना नाम लिखा-छपा हो तो उसे देखकर अपने को बड़ी प्रसन्नता होती है। इसके लिए लोग पैसा भी खर्च करते हैं। अपनी शकल संसार में सबसे अधिक सुन्दर लगती है। इसी से तो लोग बार-बार अपना मुख शीशे में देखते हैं और फोटो खिंचाते हैं। पर्व और उत्सवों में मनुष्य की सबसे अधिक आनन्ददायक और उत्साहवर्धक अपना जन्मदिवसोत्सव ही हो सकता है। उस दिन को यदि भावनात्मक बना दिया जाय तो मनोदशा ऐसी लचीली हो सकती है कि उस पर कोई उपयोगी छाप सरलतापूर्वक डाली जा सके। इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को ध्यान में रखते हुए यदि जन-मानस में उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता की छाप छोड़ने का व्यवस्थित रीति से प्रयत्न किया जाय तो वह निरर्थक नहीं जायेगा, निश्चय ही वह श्रम सार्थक होगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रबुद्ध लोगों से आरम्भ करें

युग निर्माण योजना के लिए विचारशील, सेवाभावी एवं धार्मिक प्रकृति के लोगों का संगठन आवश्यक है। संगठन के बिना महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हो सकते। एकांकी व्यक्ति चाहे कितना ही महत्वपूर्ण, प्रतिभाशाली एवं समर्थ क्यों न हो, अपने निज के बलबूते पर सीमित कार्य ही कर सकता है। संगठन के बल पर छोटे-छोटे स्वल्प सामर्थ्य एवं स्वल्प योग्यता के व्यक्ति भी एकत्रित होकर बहुत कुछ कर सकते हैं। विशेषतया समाज के निर्माण, युग परिवर्तन एवं विचार क्रान्ति जैसे कार्य तो प्रबुद्ध व्यक्तियों के संगठन के बिना हो ही नहीं सकते। इसलिए युग निर्माण शाखाओं को अपने महान अभियान को व्यापक एवं सफल बनाने के लिए इस सबसे आवश्यक कार्य को प्रमुखता देनी पड़ेगी कि व्यक्ति एवं समाज के निर्माण में जो लोग रुचि लेते हैं, उन्हें परस्पर स्नेह सूत्र में बाँधा जाय और बार-बार मिलने का अवसर दिया जाय। इस प्रकार का मिलन स्वतः ही कुछ इस रूप में विकसित होता है कि अभीष्ट प्रगति की सम्भावना बढ़े।

यह मान्य सिद्धान्त है कि निर्जीव चीजें एक और एक मिलकर दो होती हैं, पर दो सजीव मनुष्य एक और एक मिलकर ग्यारह हो जाते हैं। बुरे कार्य इसलिए पनपते हैं कि उनके कर्त्ता प्रायः संगठित होकर कार्य करते रहते हैं। चोर, डाकू, जुआरी, शराबी, दुर्व्यसनी अपने-अपने गिरोह बनाते हैं, फलस्वरूप उनके सम्मिलित षड्यन्त्र में अनेक नये लोग भी फँसते हैं और वे अपने सम्मिलित प्रयत्नों में बहुत कुछ सफलतायें भी प्राप्त कर लेते हैं। प्रबुद्ध लोगों में यह एक बड़ा दोष है कि वे व्यक्तिगत प्रगति की बात तो बहुत सोचते हैं, योजनायें तो बहुत बड़ी-बड़ी बनाते हैं, पर चिल्ला-चिल्लाकर कार्य करने का अवसर उत्पन्न नहीं करते। फलस्वरूप बुरे लक्ष्यों की उपेक्षा उनका लक्ष्य और व्यक्तित्व बहुत ही उज्ज्वल एवं प्रखर होते हुए भी काम कुछ भी नहीं हो पाता। हमें इस कमी की पूर्ति करनी चाहिए।

जन्मदिन का संदेश

मनुष्य का जन्म भगवान का सबसे बड़ा उपहार है। सृष्टि में लाखों, करोड़ों योनियाँ हैं, धरती पर रहने वाले, आकाश में उड़ने वाले और जल में निवास करने वाले अगणित प्रकार के पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, जीव-जन्तु इस संसार में रहते हैं। उनमें से किसी को भी वे सुविधायें नहीं मिलीं जो मानव प्राणी को प्राप्त हैं। व्यवस्थित रीति से बोलने और सुसंगत रूप से सोचने की क्षमता मनुष्य के अतिरिक्त और किसी को नहीं मिली है। शरीर यात्रा की समस्या को सुलझाने में ही अन्य प्राणी अपना समस्त जीवन व्यतीत करते हैं, फिर भी आहार निवास एवं सुरक्षा की उलझनें बनी ही रहती हैं। समाज में पारस्परिक सहयोग से भी उन्हें वंचित रहना पड़ता है। चिकित्सा, वाहन, मनोरंजन, न्याय, गृहस्थ, वस्त्र, उपार्जन आदि की सुविधायें उन्हें उपलब्ध कहाँ हैं ? अनेकों प्रकार की जो सुविधा सामग्री मनुष्य को प्राप्त हैं वे उन बेचारों के भाग्य में कहाँ हैं ? बुद्धि का विकास न होने से विचारणा एवं भावना क्षेत्र में मिल सकने वाले उल्लास-आनन्दों से तो एक प्रकार से वंचित ही हैं। उनकी तुलना में मनुष्य कितना अधिक सुखी और साधन सम्पन्न है, इस पर बारीकी से विचार किया जाय तो यही प्रतीत होता है कि भगवान ने हमें सृष्टि का सर्वोच्च प्राणी बनाया है और सर्वोपरि साधन-सुविधायें प्रदान की हैं।

मनुष्य की तुलना में देवताओं की क्षमता और सुविधा बढ़ी-चढ़ी मानी जाती है। धरती की तुलना में स्वर्ग में आनन्द-उल्लास के साधन अधिक हैं। इस मान्यता के कारण मनुष्य की लालसा यही बनी रहती है कि उसे इस जन्म के बाद देवयोनि प्राप्त हो, स्वर्ग में जाने का अवसर मिले। देवताओं जैसा, स्वर्ग जैसा आनन्द इस धरती के मनुष्यों को प्राप्त नहीं, इसलिये अधिक सुखी बनने की स्वाभाविक इच्छा के अनुरूप यह सोचना उचित ही है कि हमें स्वर्गीय जीवन जीने का अवसर मिले। जिस प्रकार स्वर्ग-सुख की बात सोचकर हमारे मुँह में पानी भर आता है, उसी प्रकार सृष्टि के अन्य समस्त प्राणी यदि सोच सकते होंगे तो यही सोचते होंगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि अभी हमें भी मनुष्य बनने का और उसे जो सुविधायें प्राप्त हैं, उन्हें उपभोग करने का अवसर मिले। सचमुच सृष्टि के अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य जीवन के सुख का मूल्यांकन किया जाय तो उससे कहीं अधिक अन्तर मिलेगा, जितना मनुष्य और देवताओं के बीच है। देवता तो शरीर की दृष्टि के लगभग मनुष्यों के स्तर के ही माने जाते हैं, उन्हें केवल कुछ सुविधा-साधन अधिक प्राप्त हैं। परन्तु कीट-पतंगों और तुच्छ जीवों की तुलना में मनुष्य जीवन का अन्तर बहुत अधिक है। इसलिए किसी अन्य योनि के प्राणी को यदि मनुष्य योनि मिले तो उसे जो अधिक आनन्द मिलेगा वह मनुष्य के स्वर्ग पहुँचने और देवता बनने के आनन्द से लाखों-करोड़ों गुना अधिक होगा। वह जीव मनुष्य योनि में प्रवेश करते ही अपने सौभाग्य की इतनी अधिक सराहना करेगा, जो हमें स्वर्ग मिलने की तुलना में निश्चय ही अप्रत्याशित रूप से अधिक होगी।

यों छुट-पुट अभाव, असुविधायें और कठिनाइयाँ मनुष्य जीवन में भी बनी रहती हैं और कितने ही मनुष्य उस तिल को ताड़ बनाकर निरन्तर दुःखी भी बने रहते हैं। इतने पर भी यदि विशाल दृष्टि से सोचा-देखा जाय तो प्रतीत होगा कि दुःखी-दरिद्री समझा जाने वाला व्यक्ति भी अन्य जीव-जन्तुओं की तुलना में अधिक सुखी है। यही कारण है कि हमें मरने से डर लगता है। मरने के बाद पथ-भ्रष्ट मनुष्य को जिन योनियों में जाना पड़ता है, उसकी तुलना में दुःखी से दुःखी मनुष्य भी कहीं अधिक सुखी है। इसी से हम अपने को अत्यधिक प्यार करते हैं और वयोवृद्ध, अशक्त एवं रुग्ण होने पर भी मरने की बात नहीं सोचते।

आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार मनुष्य जन्म चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद एक बार मिलता है। यह उसकी परीक्षा का समय होता है। वह ऊँचा उठने, आगे बढ़ने और अधिक ऊँची स्थिति में पहुँच सकने लायक है या नहीं, इसी बात की परीक्षा देने के लिए जीव मनुष्य शरीर में आता है। यदि इस परीक्षा में सफल हुआ तो उसे आगे की उच्च स्थिति-स्वर्गादपि देव योनिप्राप्त करने का अवसर मिलता है अन्यथा वह फिर पुरानी कक्षा में वापिस लौटा दिया जाता है।

हवाई जहाज चलाने की 'पायलेट' परीक्षा के समय किसी उड़ाके के हाथ में जहाज सौंपा जाता है, वह उड़ान करके दिखाता है। यदि सही काम कर सका तो उसे आगे भी जहाज उड़ाने की नौकरी मिल जाती है। अनुत्तीर्ण होने पर, वह जहाज छीन लिया जाता है, जो उड़ान करने के समय मिला था, फिर उसे उसी कक्षा में वापस चला जाना पड़ता है, जिसमें पायलेट बनने की शिक्षा दी जाती है। ठीक इसी प्रकार अन्य योनियों की कक्षायें हैं, जिनमें लम्बी अवधि तक जीव को पढ़ना पड़ता है। परीक्षा काल की तरह-चन्द वर्षों का मानव जीवन मिलता है। भगवान उसकी प्रत्येक गतिविधि को बड़े ध्यान से देखता है, उसकी विचारणा और क्रिया पद्धति को परखता है। इसी आधार पर वह नम्बर देता चलता है। यह नम्बर यदि उत्तीर्ण होने योग्य होते हैं तो उसे आगे बढ़ने की, अधिक ऊँची स्थिति प्राप्त करने की सुविधा मिलती है अन्यथा अनुत्तीर्ण होने पर उसे उसी पिछली कक्षा में अधिक अभ्यास करने के लिए वापस भेज देता है। नीच योनियों में धकेल देता है।

संसार का एक निश्चित नियम यह है कि जैसे-जैसे स्तर उठता है, पदोन्नति होती है, वैसे-वैसे ही उसके कन्धों पर जिम्मेदारी अधिक आती है। चपरासी की तुलना में अफसर की, सैनिक की तुलना में कप्तान की, बच्चे की तुलना में प्रौढ़ की, नागरिक की तुलना में नेता की और पशु की तुलना में मनुष्य की जिम्मेदारी अधिक है। पदोन्नति का आधार ही अधिक उत्तरदायित्व वहन कर सकने की क्षमता है। पशु कोई नैतिक एवं सामाजिक मर्यादा पालन करने के लिए बाध्य नहीं, वे नंग-धड़ंग फिरते रहते हैं, अश्लील चेष्टायें खुले आम करते हैं, पराई वस्तु को खाने में संकोच नहीं करते, पर मनुष्य को इस प्रकार का व्यवहार करने की छूट नहीं है। विद्यार्थी की उच्छृंखलता उपेक्षणीय हो सकती है, पर यदि प्राध्यापक लोग वैसी अनुशासनहीनता बरतें तो यह बहुत बुरी बात होगी। मनुष्य जिस प्रकार की संकीर्णता और स्वार्थपरता बरतते हैं वैसे ही यदि इन्द्र, वरुण, वायु, अग्नि, सूर्य, चन्द्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आदि बरतने लगें तो इस सृष्टि का क्रम क्षण भर में अस्त-व्यस्त हो जाय। बड़प्पन निश्चय ही एक बड़ी जिम्मेदारी लेकर आता है और उसमें थोड़ी-सी भी भूल बड़ी घातक सिद्ध होती है। नेताओं की भूलें उसके अपने सीमित क्षेत्र में ही दुष्परिणाम उत्पन्न करती हैं। इसीलिए बड़ों की छोटी गलतियाँ भी उन्हें भारी दण्ड भोगने की स्थिति में पहुँचा देती हैं। फौजी कप्तान छोटी-सी लापरवाही करने पर गोली से उड़ा दिया जाता है। गलती करने वाले शासक दुष्टाओं की भी ऐसी दुर्गति होती है।

हमें अपनी वास्तविक स्थिति समझनी चाहिए। बुद्धिमान समझे जाने वाले मनुष्य की सबसे बड़ी मूर्खता यही एक है कि वह अपनी वस्तुस्थिति समझने में भूल करता रहता है। विचारने की बात है कि जब सभी प्राणी भगवान् के पुत्र हैं, वह सबका पिता है-सबको समान प्यार करता है-न्यायकारी, निष्पक्ष और समदर्शी है, तो फिर मनुष्य को अधिक सुविधायें क्यों दीं ? जबकि सृष्टि के अन्य समस्त प्राणी उससे वंचित हैं। कोई मनुष्य पिता जब अपने बच्चों को लगभग समान सुविधा देता है, तब भगवान अपनी सन्तान को ऐसी स्थितियों में क्यों रखता, जिसमें जमीन-आसमान का अन्तर है ? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए बैंक चपरासी तथा बैंक मैनेजर की स्थिति को समझना होगा। मैनेजर को बैंक अधिक वेतन और अधिक सुविधायें इसलिए देती है ताकि वह अधिक बड़ी जिम्मेदारी को ठीक तरह निवाह सके। लाखों रुपया बैंक मैनेजर के दस्तखतों से क्षण भर में इधर-उधर हो सकता है, पर वह अपनी जिम्मेदारी ठीक तरह निवाहने की योग्यता सिद्ध करता है, इसी से ऊँचा पद एवं ऊँचा वेतन प्राप्त करता है। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, कलक्टर आदि अफसरों के हाथ में बड़े अधिकार रहते हैं। वे उन अधिकारों को स्वार्थपरता की पूर्ति के लिए स्वच्छन्दतापूर्ण उपयोग करने लगें तो संकट उत्पन्न हो जाय। बैंक मैनेजर सारे खजाने को अपनी निज की सम्पत्ति मान ले और उसे स्वच्छन्दतापूर्वक खर्च कर डालें तो मुसीबत खड़ी हो जाय।

मोटी दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि बैंक संचालकों ने चपरासी के हाथ में एक छोटा-सा हथियार थमा दिया और मैनेजर के हाथ में लाखों रुपयों से भरे खजाने की चाबी दे दी। यह अन्याय और पक्षपात हुआ, पर बारीकी से सोचने पर स्पष्ट हो जाता है कि इसमें अन्याय जैसी कोई बात नहीं है। जो जिम्मेदारियाँ उनके कन्धों पर हैं, उन्हीं की पूर्ति के लिए अधिकार मिले हैं। इन अधिकारों को अपने निज के लिए उपयोग करने की छूट उन्हें नहीं है। अपने लिए तो वे अपने निर्वाह के लिए आवश्यक मात्रा में सीमित वेतन ही प्राप्त कर सकते हैं। अपरिमित साधन एवं अधिकार जो उन्हें मिले हैं, वे विशुद्ध रूप से जनहित के लिए ही हैं। निर्धारित वेतन से अधिक मात्रा में कोई बैंक मैनेजर अपने अधिकार के खजाने में से खर्च करने लगे तो उसे न्यायालय द्वारा कठोर दण्ड का भागी बनना पड़ेगा।

हम मानव प्राणी कहने को तो मनुष्य हैं पर जीवन की वस्तुस्थिति को समझने में भारी भूल करते रहते हैं। हम समझते हैं कि "जो कुछ सुविधायें प्राप्त हैं, वे विशुद्ध रूप से हमारे निज के उपयोग के लिए हैं। सृष्टि के अन्य प्राणियों की तुलना में हमें जो अधिक सुविधापूर्ण स्थिति मिली हुई है, उसका उपयोग हमें अपनी निज की वासनाओं एवं इच्छाओं की पूर्ति में ही करना चाहिए। किया भी यही जाता है। औसत मनुष्य की आकांक्षाओं और गतिविधियों का लेखा-जोखा लिया जाय तो यही दृष्टिगोचर होगा कि वह अपने सीमित स्वार्थ की परिधि में ही सोचता है, उसकी आकांक्षायें इन्द्रिय-सुखों अथवा लोभ, मोह एवं अहंकार से भी तृष्णाओं की पूर्ति तक सीमित है। वह जो कुछ सोचता है, जो कुछ चाहता है, जो कुछ करता है, वह इसी धुरी पर घूमता है। यह अपना स्वार्थ, एक छोटी परिधि तक और आगे बढ़ सका तो वह स्त्री, इसके बाद बच्चों तक बढ़ जाता है। पूरे परिवार तक भी वह नहीं फैल पाता। माता-पिता, भाई-बहिन, चाचा-ताऊ, भाभी-भतीजे, बुआ दादी आदि घनिष्ठ कुटुम्बियों तक भी वह स्वार्थ बढ़ नहीं पाता। स्त्री-बच्चों जैसी अधिक सुविधा प्राप्त करने वाले एवं शरीर से अधिक सम्बन्धित

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वजनों तक से बहुत बार हद तक स्वार्थपूर्ण व्यवहार करता है।

क्या यही मनुष्य का उत्तरदायित्व है ? क्या इसी घृणित स्थिति का परिचय देने के लिए भगवान ने उसे अन्य प्राणियों की तुलना में इतनी अधिक सुविधाजनक स्थिति प्रदान की है ? यह एक महत्वपूर्ण एवं विचारणीय प्रश्न है। इस प्रश्न को हल करने, न करने पर ही मानव-जीवन की सफलता-असफलता निर्भर है। जन्मदिन का सबसे बढ़िया और सबसे उत्तम उपयोग यही हो सकता है कि उस दिन हम अपनी सारी बुद्धिमत्ता, सारी दूरदर्शिता, सारी प्रतिभा और सारी मनोभावना इसी समस्या को हल करने में लगावें।

दैनिक जीवन में आने वाली छुटपुट समस्याओं के उचित समाधान में हम कितनी तत्परता एवं बुद्धिमत्ता का परिचय देते हैं। बड़ी-बड़ी उलझनों को हम जिस चतुरता के आधार पर हल कर लेते हैं, उसी प्रकार क्या हम 'जीवनोद्देश्य और उसकी सफलता' के प्रश्न को हल नहीं कर सकते ? निश्चय ही कर सकते हैं। हुआ यह है कि कभी इस सम्बन्ध में विचार ही नहीं किया गया। बाहरी बातों पर बहुत सोचा-विचारा गया, पर आत्मोद्देश्य की ओर आत्म-लाभ की ओर, कभी दृष्टि ही नहीं डाली गई। यदि थोड़ा ध्यान इस ओर भी दिया गया होता तो स्थिति दूसरी होती। तब आज की अपेक्षा हम बहुत आगे बढ़े हुए और ऊँचे उठे हुए स्तर पर होते।

हमारे समाज में हँसी-खुशी के अनक त्यौहार प्रचलित हैं। होली, दिवाली, दशहरा आदि अवसरों पर बहुत खुशी मनाई जाती है, घरों में सजावट, नये कपड़े, बढ़िया भोज, मेला, ठेला, दीपदान, रंग, गुलाल, मित्र-मिलन, उपहारों का आदान-प्रदान आदि अनेकों हर्षोल्लास भरे क्रिया-कलाप होते हैं। यह त्यौहार किसी बड़ी सफलता की स्मृति में मनाये जाते हैं। लंका विजय करके रामचन्द्र जी सफलतापूर्वक अयोध्या वापिस आये थे, तब जनता ने खुशी के दीपक जलाये थे और दिवाली आरम्भ हुई थी। प्रहलाद ने अग्नि परीक्षा में सफलता पाई और नृशंस असुर हिरण्यकश्यप को नृसिंह भगवान ने परास्त किया था, उसी धर्म-विजय का उल्लास भरा पर्व होली है। शुम्भ-निशुम्भ, मधु कैटभ, महिषासुर आदि असुरों को नष्ट कर भगवती दुर्गा ने जब विजय ध्वजा फहराई थी, तब विजयादशमी आरम्भ हुई थी। राम का जन्म रामनवमी, गंगा गायत्री का जन्म गंगा दशहरा, कृष्ण-जन्म जन्माष्टमी, गीता-जन्म गीता जयन्ती, सरस्वती-जन्म बसन्त पंचमी, शिवजन्म शिवरात्रि के नाम से प्रख्यात हैं। अन्य देवताओं ऋषियों और महापुरुषों की जयन्तियाँ भी इसी प्रकार मनाई जाती हैं। इस प्रकार की महान् आत्माओं का अवतरण मानव-जाति के लिए एक बड़े सौभाग्य का आधार सिद्ध होता रहा है। अतएव उस सफलता का स्मरण रखने के लिए यह पर्व, त्यौहार प्रचलित है।

हमारा अपना अवतरण मानव-जीवन भी एक ऐसी ही बड़ी सफलता है। चौरासी लाख योनियों के अभाव, असुविधा, कुण्ठा एवं कष्टसाध्य क्रम से भरे अन्धकार को परास्त कर जिस दिन मनुष्य शरीर जैसे अनुपम सौभाग्य को प्राप्त किया गया वह दिन अपने लिये निश्चित रूप से भारी सफलता का असाधारण विजय का महान् पर्व है। समष्टि की दृष्टि से—देवताओं एवं महापुरुषों की—जयन्तियाँ उनकी विजय विभूतियाँ जितनी महत्वपूर्ण हैं अपनी व्यक्तिगत दृष्टि से अपना छोटा-सा अवतरण भी उतना ही अधिक मंगलमय है। हमारी निज की सफलता का—निज की विजय का—इससे बड़ा महान पर्व दूसरा नहीं हो सकता। निस्सन्देह अपना जन्म-दिन अपने लिये सबसे बड़ी खुशी का दिन सबसे बड़े गर्व-गौरव का दिन है और जिस प्रकार हर वर्ष सामाजिक त्यौहार मनाये जाते हैं, उसी प्रकार हमें अपना—अपने प्रियजनों का—जन्म दिन मनाना चाहिये। संसार भर के सभ्य देशों में यह प्रथा प्रचलित है। जन्म-दिन के लिये सभ्य समाज का हर सदस्य सालभर तक से तैयारी करता रहता है और उस दिन अपने समाज से प्रचलित परिवारों के अनुसार—अपनी स्थिति के अनुरूप—उसे एक हर्षोत्सव के रूप में मनाता है। अपने देश में भी यह प्रचलन सदा से था। मध्यकालीन अन्धकार भरी अव्यवस्था में जहाँ हमने अपनी अनेकों विशेषतायें खोईं, वहाँ इस प्रेरणा पर्व का स्वरूप भी भूल गये। अब समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आ गया कि उस महत्वपूर्ण परम्परा का पुनः प्रचलन किया जाय।

जन्म दिन के अवसर पर मित्र-मिलन, दीपदान, जलपान, पुष्पोपहार, गायन वादन, परिभ्रमण, गृह-सज्जा, हवन, पूजन, जैसी विधि व्यवस्था अपनी परिस्थिति के अनुरूप बनाई जा सकती है। जन्म दिन का एक धार्मिक कर्मकाण्ड भी है। अतः उसे बड़े आकर्षक एवं प्रेरणाप्रद ढंग से मनाया जा सकता है। इस प्रकार के आयोजन जन्म दिन वाले व्यक्ति के जीवन में प्रेरणा भरने और उस उत्सव में सम्मिलित व्यक्तियों को प्रकाश देने वाले सिद्ध होते हैं। व्यक्ति और समाज के भव्य नव-निर्माण में इन आयोजनों से बड़ी प्रगति हो सकती है। इसलिये हममें से हर एक का प्रयत्न यह होना चाहिए कि अपना जन्म दिन तो उल्लासपूर्ण वातावरण में मनायें ही—साथ ही अपने अन्यान्य मित्रों को भी उसके लिए अवश्य उत्साह एवं प्रेरणा प्रदान करें।

जन्म दिन के अवसर पर हँसी-खुशी के—पूजा उपासना के आयोजन होने चाहिए ? आयोजन के अवसर पर प्रबुद्ध व्यक्तियों के "मानव-जीवन का उद्देश्य और उसकी सफलता का मार्ग" विषय और प्रेरणाप्रद प्रबन्ध कराने की व्यवस्था बनानी चाहिए, इन आयोजन से जीवन का स्वरूप, जीवन का उद्देश्य, जीवन का सदुपयोग और उसकी सफलता का मार्ग जानने में भारी सहायता मिलेगी और यदि भूला हुआ मनुष्य अपने लक्ष्य की दिशा में सुव्यवस्थित रीति से चल पड़ा तो इस संसार का—समाज का—संस्कृति का—स्वरूप ही बदल जायगा और धरती पर स्वर्ग के अवतरण की—युगनिर्माण की—सम्भावना साकार होने की सम्भावना बढ़ेगी।

जिसका जन्म दिन मनाया जाय उसके लिये यह आवश्यक है कि एकान्त में बैठकर आत्म-चिन्तन करें। अपने आपसे यह प्रश्न पूछें कि (१) उसके जीवन का उद्देश्य क्या है ? (२) क्या वह उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित प्रयत्न कर रहा है ? (३) यदि नहीं तो उस भूल को कैसे सुधारा जाय ? इन तीन प्रश्नों पर जितनी ही गहराई के साथ सोचा जायेगा, जितना ही सही उत्तर ढूँढ़ निकाला जायेगा, जितना ही साहस भूलों को सुधारने के लिये एकत्रित किया जा सकेगा, उतना ही जन्म दिन मनाने का वास्तविक उद्देश्य पूरा होता चलेगा। त्यौहार खाली हा-हा ही-ही करने के लिये—धमा चौकड़ी के लिये नहीं मनाये जाते, वरन् उनके पीछे एक प्रेरणा छिपी रहती है उस सन्देश को सुनना, समझना, हृदयंगम और कार्यान्वित करना ही इन आयोजनों का वास्तविक उद्देश्य होता है। बाह्याचार तो उस प्रयोजन की कलात्मक, आकर्षक, मनोरंजन एवं हृदयग्राही बनाने के लिए होता है। हमारा यह जन्म दिन हर्षोत्सव भी सोद्देश्य हो। आयोजन को कलात्मक बनाया जाय पर यह ध्यान में रखा जाय कि एकान्त में बैठकर आत्म-चिन्तन, एवं आत्म-निरीक्षण करना और आत्म-निर्माण एवं आत्म-विकास के लिए योजनाबद्ध भावी कार्यक्रम बनाना ही इस आयोजन का वास्तविक प्रयोजन है। यह प्रयोजन जितना पूरा हो सके समझना चाहिए कि जन्म दिन मनाना उतना ही सार्थक हो गया है।

उपर्युक्त तीन प्रश्नों का हल हमें इस आधार पर निकालना चाहिए कि न्यायकारी, समदर्शी, निष्पक्ष, नियमबद्ध परमात्मा ने सृष्टि के अन्य समस्त प्राणियों की तुलना में मनुष्य को भगवान् ने इतनी विशेषतायें, इतनी विभूतियाँ, इतनी सुविधायें क्यों प्रदान कीं ? इसकी सृष्टि का सारा क्रियाकलाप परिपूर्ण, नियमबद्धता और विवेकशीलता के आधार पर—नीति और धर्म के आधार पर—चल रहा है। मनुष्य को निरुद्देश्य वे सुविधायें नहीं मिल सकती हैं, जो आज उपलब्ध हैं। मनुष्य को मिली हुई विशेष सुविधाओं के पीछे उसका कुछ विशेष प्रयोजन होना चाहिए। भगवान् ने अपनी सृष्टि को सुन्दर, सुखी, सुव्यवस्थित एवं सुविकसित बनाने के लिए अपने एक विशेष सहायक के रूप में—कारगर औजार के रूप में मनुष्य का सृजन किया और उसके ऊपर यह उत्तरदायित्व सौंपा कि वह संसार को अधिक सुरम्य अधिक सरस बनाने के लिए अपनी प्रतिभा का उपयोग करें। यही मानव की अनेक विशेषताओं से भरे-पूरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है।

मनुष्य की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को जीवननिर्वाह की सामग्रियों को—इतना सीमित रखा है कि वे चलते-फिरते, बड़ी आसानी से थोड़े ही समय और श्रम में उपार्जित की जा सकती है। अन्य प्राणियों को वहाँ भटकना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ता है, जहाँ उनको आहार जल एवं निवास उपलब्ध हो सके। बेचारे इसी एक आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपना सारा समय और श्रम खर्च करते रहते हैं। किन्तु मनुष्य को इसके लिये भटकना नहीं पड़ता। सभी सुविधा सामग्री सहज ही सस्ते में—एक स्थान पर मिल जाती है इसके लिए यत्र-तत्र भटकना नहीं पड़ता। मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक परिश्रम का मूल्य भी इतना अधिक है कि हर कोई अपने निर्वाह का प्रश्न बड़ी आसानी से हल कर सकता है। आधा सेर अनाज, दस गज कपड़ा, एक बिस्तर, सिर ढकने को छाया इतनी मात्र ही तो स्वाभाविक आवश्यकतायें हैं। गृहस्थ बसाया जाय तो स्त्री को भी वह क्षमता प्राप्त है कि अपना पेट स्वावलम्बनपूर्वक पाल ले। छोटे बच्चों की थोड़ी-सी आवश्यकतायें माता-पिता मिलकर बड़ी आसानी से पूरी कर सकते हैं। घने जंगलों की साधन-विहीन परिस्थितियों में भी कोल भील आसानी से जीवन-निर्वाह की सुविधा इकट्ठी कर लेते हैं फिर शिक्षित एवं साधन सम्पन्न परिस्थितियों में रहने वाले लोगों के लिए तो स्वाभाविक निर्वाह की आवश्यकतायें जुटाने में कठिनाई ही क्या हो सकती है ? ऐसी अनुकूलता भगवान् ने इसलिये पैदा की है कि मनुष्य थोड़ा समय थोड़ा श्रम अपने निर्वाह कार्यों में खर्च करने के उपरान्त अपनी शेष सारी प्रतिभा लोक-मंगल के लिए ईश्वरीय प्रयोजन की पूर्ति के लिए लगा सके।

यही ईश्वरीय इच्छा मानव-जीवन की जिम्मेदारी है। बैंक मैनेजर, कलक्टर, कप्तान आदि बड़े आफीसरों की जो सुविधायें मिली होती हैं, उनके पीछे लोक व्यवस्था का प्रयोजन ही छिपा रहता है। यही इन आफीसरों की जिम्मेदारी है, यही उनका धर्म कर्त्तव्य है। इसे वे ठीक तरह पालन करते हैं तो सूत्र संचालकों की सहानुभूति एवं प्रशंसा के भागी बनते हैं और यदि वे इन जिम्मेदारियों का व्यतिक्रम करें, कर्त्तव्य को भूलकर प्राप्त सुविधाओं से लोकहित की उपेक्षा कर अपना व्यक्तिगत स्वार्थ साधन करने पर उतर पड़ें तो यह बहुत ही बुरी बात होगी। उनकी आत्मा धिक्कारेगी, लोक निन्दा होगी और सूत्र संचालकों की घृणा, नाराजी एवं दण्ड नीति का भागी अवश्य बनना पड़ेगा।

देखना होगा कि कहीं हम ऐसा ही अनुचित तो नहीं कर रहे हैं ? निर्वाह की छोटी-सी सीधी-साधी और सरल आवश्यकताओं को कहीं कृत्रिम रूप से हमने बढ़ा-चढ़ा तो नहीं लिया है ? विलासिता और अहंकार की दुर्बुद्धि से प्रेरित होकर हम ऐसा खर्चीला और ढोंगी आवरण तो नहीं बना बैठे हैं, जिसकी पूर्ति के लिए दिन-रात चिन्तित रहना पड़ता हो। दूसरों को बेवकूफी, की देखादेखी हमने अपना जीवन ऐसा आडम्बरी और अस्वाभाविक तो नहीं बना लिया है, जिसको पूरा करने में सारा समय, सारा श्रम और सारा मस्तिष्क खर्च हो जाय ? लोभ मोह और तृष्णा के पिशाचों ने कहीं हमें इतना अधिक तो नहीं जकड़ लिया है कि अधिक भोग और अधिक संग्रह का पागलपन निरन्तर सिर पर सवार रहता हो ? गुजारे की सुविधा होते हुए भी क्या हम तृष्णा की सुरक्षा के मुख-ग्रास बने रहते हैं ? यदि हाँ, तो समझना चाहिए कि हम मानव जीवन के महान् उत्तरदायित्वों का राजमार्ग छोड़कर किसी भयानक भूल के कंटकाकीर्ण बीहड़ वन में भटक पड़े हैं।

जिस देश समाज में हम पैदा हुए हैं उसके औसत जीवनस्तर की ही जिन्दगी हमें जीनी चाहिए। यही नैतिकता एवं मनुष्यता का तकाजा है, जो प्रतिभा हमें मिली है, उसके बलबूते पर जो उपार्जित किया जा सकता है उसे पूरी तरह अपने लिये ही खर्च करने की छूट हमें नहीं है। ऐसे तो बैल खेती करके अन्न उगाता है फिर वही उसे खाया भी करे। गाये भैंसें अपना दूध आप ही पिया करें, भेड़ें अपने कम्बल आप ही ओढ़ा करें, पेड़ अपने फल आप ही खाया करें, बादल अपना पानी अपने घर में ही जमा करें। ऐसी अव्यवस्था चल पड़े तो संसार का सर्वनाश ही हो जाय जो मनुष्य अपनी कमाई को अपने लिये ही प्रयुक्त करना चाहते हैं। उसे अनावश्यक मात्रा में जमा करना चाहते हैं। वे ईश्वर का कानून तोड़ते हैं। परिग्रह और अपव्यय निश्चित रूप से दो बड़े पाप हैं, भले ही उन्हें कानून ने दण्डनीय न माना हो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हमें जीवनोद्देश्य की सफलता के लिए सबसे पहला--सबसे महत्त्वपूर्ण कदम यह उठाना चाहिए कि तृष्णा और वासना की पिशाचियों से छुटकारा पाने के लिए साहसपूर्ण प्रयत्न आरम्भ करें। सादा जीवन जियें। उस स्तर का जैसा कि औसत भारतीय को जीना पड़ता है। ठाट-बाट को, अमीरी के ढोंग को बचकाने लोगों की बाल-बुद्धि समझें। जो संग्रह हो चुका है उसे सत्कर्मों में लगायें और उतना ही कमाने की बात सोचें जितना निर्वाह के लिए आवश्यक है। उद्देश्य एक ही प्रधान रहता है। यदि भौतिक, वैभव को लक्ष्य माना जायेगा, तो परमार्थ के लिए न फुरसत मिलेगी न इच्छा उठेगी और न सुविधा मिलेगी। पर यदि लक्ष्य आत्म-कल्याण का—ईश्वरीय प्रयोजन की पूर्ति को बना लिया जाय तो तृष्णा घट जायेगी और उतना ही उपार्जन पर्याप्त प्रतीत होने लगेगा, जितना निर्वाह के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है। धन-प्रधान जीवन लक्ष्य को बदलकर यदि उसे परमार्थ-प्रधान बनाया जा सके तो जीवन-क्रम शेष सारा परिवर्तन सहज ही हो जायेगा। जन्मदिन के अवसर पर हमें अपने दृष्टिकोण को शरीर-प्रधान, भोगवादी, लोभ और मोह से ग्रस्त न रहने देने का निश्चय करना चाहिए और जीवनोद्देश्य के अनुरूप विचारणा एवं क्रिया-पद्धति अपनाने का व्रत धारण करना चाहिए।

हमारे लिये सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता का—सबसे बड़ी दूरदर्शिता का मार्ग यही है कि हम मानव-जीवन जैसे अनुपम सौभाग्य का सदुपयोग करें और भगवान् के उस पुण्य प्रयोजन को पूर्ण करें, जिसके लिए यह प्राणियों में सर्वोच्च स्थिति हमें प्रदान की गई है। यदि इस लक्ष्य की उपेक्षा की जाती है और बेवकूफ पड़ौसियों का अनुसरण करके तृष्णा और वासना से भरी गन्दी और रद्दी जीवन-पद्धति अपनाई जाती है तो यही कहा जायेगा कि संसार की दृष्टि में भले ही सफल या चतुर कहे जायें, आत्मा की दृष्टि से असफल एवं अविवेकी ही कहे जायेंगे।

जिसके अन्तःकरण में यह निष्ठा गहराई तक जम गई कि "मेरा जीवन किसी महान् प्रयोजन के लिए है और उपार्जन शरीर-रक्षा भर की एक छोटी-सी आवश्यकता है।" वही व्यक्ति जीवन को सार्थक बनाने के लिए कुछ सोच और कुछ कर सकेगा। यह निष्ठा उथली हुई, केवल जवान से ही इस प्रकार के विचार दुहराये जाते रहें तो ढोंग या यश के लिए ही यदाकदा हुए तथाकथित परमार्थ विज्ञापित होगा। आस्था के अभाव में वास्तविकता का उदय न होगा। उतने मात्र ढोंग से न आत्मा को सन्तोष होगा और न घटघटवासी परमात्मा प्रसन्न होगा। जब दृष्टिकोण भौतिकवादी न रहकर अध्यात्मवादी बन जाता है तो हर इच्छा, हर कामना, हर भावना और हर प्रक्रिया उसी ढाँचे में ढलने लगती है। तब बिना किसी योजना के सहज स्वाभाविक रीति से जीवन-क्रम में अधिकाधिक आध्यात्मिकता का समावेश होता चलता है और स्वतः इस बात की अनुभूति होती है कि अपना प्रत्येक क्षण—प्रत्येक पग—जीवनोद्देश्य की पूर्ति के पथ पर तेजी से अग्रसर हो रहा है। ऐसी दशा में वही हम बनते हैं, जो बनना चाहिए, वही करते हैं, जो करना चाहिए। जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ ठोस काम इसी स्थिति की मनोभूमि में सम्भव हो सकता है। जन्म दिन के अवसर पर हमें अपने में ऐसा ही भावनात्मक परिवर्तन लाने का प्रयत्न करना चाहिए।

दूसरा कदम इस विचारणा को कार्य रूप में परिणत करने के लिए एक व्यवस्थित कार्य-पद्धति निर्धारित करने का है। हमें अपना सामान्य जीवन-क्रम असामान्य दृष्टिकोण के साथ जीने की तैयारी करनी चाहिए। मामूली काम धंधा, बिक्री, दुकानदारी, नौकरी आदि करते हुए उत्कृष्ट जीवन जिया जा सकता है। यदि हम आदर्शवादिता की भावना से भरे हों तो हमारे सामान्य कार्य भी सृष्टि को सुन्दर, समुन्नत और सुखी बनाने वाले परमार्थ सिद्ध हो सकते हैं। कार्य का फल भावना के अनुरूप होता है। यदि हम अपने साधारण जीवन क्रम में महान् आदर्श एवं उद्देश्य का समन्वय कर लें तो वे सामान्य कार्य ही अपने उत्कृष्ट स्वरूप के कारण हमारे लिए पुण्य-परमार्थ की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधना जैसे और संसार के लिए कल्याणकारक हो जायेंगे। इसलिये दूसरा कार्य हमें अपने हर कार्य में उत्कृष्टता का दृष्टिकोण समन्वित करना चाहिए। जो करें यह सोच कर करें यह सब हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए नहीं वरन् इस विश्व-वसुधा को अधिक सुन्दर, अधिक समुन्नत, अधिक सुखी बनाने के लिए कर रहे हैं। यह भावना निश्चय ही हमारे हर क्रिया-कलाप को आदर्श बना देगी।

'पारमार्थिक जीवन जीने' का शुभारम्भ अपने व्यक्तित्व को उज्ज्वल, सुसंस्कृत, पवित्र एवं प्रखर बनाने से ही सम्भव हो सकता है। संसार को अच्छा बनाने के लिए हमें अपने आपको अच्छा बनाना चाहिए। अपने आपको हम जितना अच्छा बना लेते हैं, उतना ही संसार का एक अंश उत्तम बन जाता है और वह शृंखला आगे बढ़कर एक से दूसरे में, दूसरे से तीसरे में बढ़ती हुई संसार को अधिकाधिक सुन्दर बनाती चलती है। अपनी आन्तरिक स्थिति को ऊँचा उठाकर हम वस्तुतः संसार की महानतम् सेवा करने का श्रेय प्राप्त करते हैं।

हमारा व्यक्तित्व शरीर, मन और आत्मा इन तीन आधारों पर खड़ा है। इन दोनों को पवित्र एवं प्रकाशपूर्ण बनाने के लिये कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग की तीन साधनाओं का क्रम अपनाना पड़ता है। जीवन-साधना का अर्थ है—अपनी प्रत्येक गतिविधि को आदर्शवादिता से परिपूर्ण रखना। कर्मयोगी बनकर शरीर को, ज्ञान योगी बनकर मन को और भक्ति योगी बन कर आत्मा को परिष्कृत किया जाता है। हमारी हर शारीरिक क्रिया कर्त्तव्यपालन के लिए हर विचारणा सत्य और विवेक की प्रतिपादना के लिए और हर भावना आत्मीयता एवं प्रेम प्रतीति का अभिवर्धन करने के लिए हो तो समझना चाहिए कि शरीर, मन और आत्मा के तीनों ही आधार उस दिशा में अग्रसर हो रहे हैं, जिसके लिए ईश्वर की इच्छा एवं प्रेरणा है। इसी मार्ग पर चलकर हम जीवनोद्देश्य की परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकते हैं।

इन तीनों योगाभ्यासों को यों तो हर घड़ी अपने विचार और कार्यों में उत्कृष्टता का समावेश करके ही पूरी तरह सम्पन्न किया जा सकता है, पर उनके लिये कुछ विशेष क्रिया-विधान भी निर्धारित है। इन्हें एक अभ्यास के रूप में प्रतिदिन कार्यान्वित किया जाय तो साधनामय जीवन जीने का उद्देश्य बहुत अंशों में पूरा हो सकता है।

(१) भक्तियोग के अभ्यास करने के लिये हमें प्रतिदिन नियमित रूप से भगवान् की उपासना करनी चाहिये और नाम, रूप—जप, ध्यान के अतिरिक्त प्रेम-भावना का भी अधिकाधिक समावेश करना चाहिये। फरवरी ६७ की अखण्ड-ज्योति में यह उपासना क्रम विस्तारपूर्वक समझाया गया है। प्रेम ही भाव-भूमिका में परमेश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति है, जिसके अन्तःकरण में जितना निःस्वार्थ, जितना उत्कृष्ट प्रेम उमड़ता है, वह परमेश्वर के उतना ही निकट है। परमात्मा का गायत्री माता के रूप में ध्यान करके उनके साथ परस्पर प्रेम-क्रीड़ा का आदान-प्रदान करके हम उस प्रीति मूल अनुभूति का रसास्वादन करते हैं। यह एक व्यायाम अभ्यास है। यही प्रेम-भावना अन्तःकरण में अमृत निर्झर की तरह जब अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होती है तो उसके सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्ति, सभी पदार्थ—स्नेहासिक्त, आत्मीयता तथा प्रेम-प्रतीति से भरे परम मंगलमय दृष्टिगोचर होने लगते हैं। यही भक्तियोग है। प्राणिमात्र में समाये हुए परमेश्वर से जो परिपूर्ण प्रेम कर सकता है, उनके साथ उदारता और आत्मीयता से भरा व्यवहार कर सकता है वही सच्चा भक्त है। इस भक्तियोग को रोम-रोम में ओत-प्रोत करने के लिए आरम्भिक अभ्यास के रूप में जो भक्त-भगवान् के बीच प्रेमवाद की साधना बताई गई है उसे हमें तत्काल आरम्भ कर देना चाहिए। इसी मार्ग पर चलते हुए मीरा ने, शबरी ने, सूरदास ने, तुलसी ने, केवट ने, हनुमान् ने, सुदामा ने, अर्जुन ने, गोपियों ने, ग्वाल-बालों ने, रीछ-बानरों ने भगवान् को अपना साथी, सहचर बनाने की सफलता प्राप्त की थी। व्यक्ति की महानता उसकी इस प्रेम-भावना में ही है। वह अपने आप में अपनी इस दिव्य अनुभूति के कारण हर घड़ी आनन्द-विभोर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहता है, दूसरे लोग भले ही उससे प्रेम न करें। यह प्रेम-भावना ही व्यावहारिक जीवन में दया, करुणा, आत्मीयता, उदारता, सेवा, सज्जनता, परमार्थ परायणता के रूप में परिलक्षित होती है। इसी सत्प्रवृत्ति के विकास से समाज तथा संसार की समस्त समस्याओं का समाधान होकर चिरस्थायी शान्ति, समृद्धि और प्रगति का पथ प्रशस्त हो सकता है। धरती पर स्वर्ग के अवतरण का—राम राज्य का लक्ष्य इस प्रेम-भावना के विकास द्वारा ही सम्भव होगा। जन्मदिन के अवसर पर इस भक्तियोग का शुभारम्भ हमें करना चाहिये। यदि अब तक हमारी उपासना नियमित रूप से नहीं चलती रही है तो अब जन्म दिन की शुभ घड़ी से उसे आरम्भ कर ही देना चाहिए। जिस परमात्मा के हमारे ऊपर अपार उपकार हैं, उसका पन्द्रह मिनट स्मरण भी न करें, धन्यवाद भी न दें, उसके पास बैठकर अपनी कहने और उसकी सुनने के लिये जरा-सा समय भी न निकालें तो एक बड़ी कृतघ्नता होगी। हमें इस पाप से बचना ही चाहिये। किसी प्रकार थोड़ा समय उपासना के लिये निकाल ही लेना चाहिए। यदि इच्छा सच्ची होगी तो अवसर भी मिलेगा और मन भी लगेगा। ईश्वर की समीपता—उपासना—जीवन को सुविकसित एवं सार्थक बनाने में निश्चित रूप से बड़ी सहायक सिद्ध होती है। यदि अब तक इस सन्दर्भ में नियमितता नहीं बरती गई है तो अब इस भूल को सुधार लेना चाहिये।

(२) कर्मयोग का जीवन-क्रम में समावेश इस प्रकार होता है कि हम अपनी प्रत्येक विचारणा और क्रिया-पद्धति पर कड़ी निगाह रखें और उसके जो दोष हों, उनका निवारण और जिन सद्गुणों की कमी है उनका सम्वर्धन करने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहा करें। अध्यात्म का जीवन के कण-कण में—क्षण-क्षण में समावेश होना चाहिये। पूजा की कोठरी में महन्त बन जायें और बाजार में आते ही दुष्टता बरतने लगें यह दुमुँही नीति हमारी आत्मिक प्रगति में तनिक भी सहायक सिद्ध नहीं हो सकती। उपासना एक आत्मिक व्यायाम की तरह थोड़ी देर की जा सकती है, पर साधना तो हर घड़ी करते रहने की चीज है। आत्म कल्याण के लिये साधना का मार्ग अपनाना पड़ता है। उपासना तो साधना का बहुत छोटा-सा अंग है। जीवन की सार्थकता का लक्ष्य अकेली उपासना के बल पर नहीं हो सकता, उसमें साधना का समावेश होना ही चाहिये। इस जीवन-साधना का नाम ही कर्मयोग है। हमारी प्रत्येक क्रिया यदि आदर्शवादिता के अनुरूप ढलने लगे तो समझना चाहिए कि हम कर्मयोग की साधना कर रहे हैं।

कर्मयोग की एक महत्वपूर्ण साधन प्रक्रिया यह है कि—"हर दिन को एक नया जन्म और हर रात को एक नई मृत्यु" समझने की निष्ठा को अन्तःकरण में गहराई तक समाविष्ट किया जाय। प्रातःकाल जैसे ही आँख खुले, चारपाई पर पड़े-पड़े ही यह भावना की जाय कि आज का दिन एक नया जन्म है, इसे अच्छे से अच्छे ढंग से व्यतीत करेंगे। इस सन्दर्भ में दिन भर की योजना बना लेनी चाहिए कि आज अपने समय और धन का व्यय किस प्रकार करेंगे ? एक क्षण भी व्यर्थ बर्बाद न होने देंगे। सारा समय उपयुक्त कार्यों में सदुपयोग करने की दिनचर्या बनाई जाय, साथ ही यह भी ध्यान रखा जाय कि न तो अनावश्यक कार्यों में एक पाई खर्च होने दें और न उपयोगी कार्यों में रत्ती भर भी कंजूसी बरतें। धन और समय यह दो ही शक्तियाँ मनुष्य के पास सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। उन्हें अनुपयुक्त रीति से खर्च न होने देकर उपयुक्त में लगाया जा सके तो जीवन की सार्थकता का पथ सहज ही प्रशस्त हो सकता है। अस्तु, प्रातः उठते ही दिन भर की ऐसी योजना, दिनचर्या बना लेनी चाहिये जिसमें आदर्शवादिता का—उत्कृष्टता का—पूरा-पूरा समावेश हो। इस दिनचर्या का कड़ाई के साथ पालन करने का निश्चय भी उसी समय कर लेना चाहिये। वर्तमान स्थिति में आदर्शवादिता का जितना समावेश जीवन-क्रम में हो सके आरम्भ में उतना ही रखें। उच्च स्तर पर आज ही पहुँच सकना सम्भव न हो तो धीरे-धीरे चलें। धीरे-धीरे कदम बढ़ावें, दिनचर्या में उतनी आदर्शवादिता समन्वित करें जितनी आज की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थिति में सम्भव हो। किन्तु जो निश्चय कर लिया जाय उसे कड़ाई से पालन अवश्य करें। संकल्पों को पूरा करना—यही तो आत्मबल बढ़ाने का एकमात्र अभ्यास है। 'निश्चय करना और उन्हें अधूरे छोड़ना' यह दुर्बलता ही मनोबल को दिन-दिन गिराती चली जाती है। इसलिये आत्मबल बढ़ाने के अभ्यास के रूप में प्रातःकाल किये हुए निश्चयों को दिन भर कठोरतापूर्वक पालन करते रहने के लिए तत्पर तो होना ही है।

मनुष्य में अनेक दोष भरे रहते हैं और अनेक गुणों का अभाव रहता है। हमें निरन्तर इन्हीं दोनों समस्याओं को हल करते रहना है। जो दोष हैं उन्हें हटाया जाय और जिन गुणों की कमी है उन्हें बढ़ाया जाय। यह उभय पक्षीय चेष्टायें यदि नियमित और व्यवस्थित रीति से चलती रहें तो हमारी कर्मयोग साधना द्रुतगति से सफलता की ओर अग्रसर होती रहेगी।

आमतौर से लोग कानूनी अपराधों को ही पाप समझते हैं। चोरी, डकैती, हत्या, व्यभिचार, बेईमानी आदि पुलिस की पकड़ में आने वाले अपराध ही पाप माने जाते हैं और नशेबाजी, जुआ, झूँठ आदि बुराइयों को ही बुराई समझते हैं और यदि यह दोष नहीं है तो अपने आपको निष्पाप मान लेते हैं। आत्म-कल्याण का उद्देश्य उतनी मोटी परिभाषा की परिधि में रहने से पूर्ण नहीं हो सकता। आध्यात्मिक दृष्टि से वे दुर्गुण भी पाप हैं जो हमारे व्यक्तित्व के विकास में बाधा बनकर अड़े हुए हैं। हमें इनका भी निवारण करना होगा। आलस्य, प्रमाद, गन्दगी, कटुभाषण, आवेश, छिद्रान्वेषण, ईर्ष्या, चुगली, निन्दा, हरामखोरी, पक्षपात, स्वार्थपरता अनुदारता, लोभ, परिग्रह, तृष्णा, वासना, असंयम, लापरवाही, भीरुता, कायरता, आशंका, अविश्वास, उच्छृङ्खलता कृतघ्नता जैसे अनेक मानसिक दोष दुर्गुणों से जो भले ही छुपे रहे, भले ही उपेक्षणीय समझे, जायें पर अपने व्यक्तित्व के विकास में यही सबसे बड़े बाधक हैं। हजार शत्रु मिलकर उतना अहित नहीं कर सकते जितना यह मनकी गुफा में छिपकर बैठे हुए अविज्ञात अदृश्य शत्रु अपना अहित करते हैं। इसलिये अपने दोष दुर्गुणों का निवारण करने का अभियान चलाते हुए हर कर्मयोगी को बारीक दृष्टि से अपने क्रिया कलाप पर दृष्टि रखनी चाहिये कि उन आन्तरिक शत्रुओं का कितना प्रभाव अपने ऊपर है, वे जब कभी अपना आधिपत्य जमाने का प्रयत्न करें उन्हें तुरन्त ही झिड़क देना चाहिये लात मारकर भगा देना चाहिए। आन्तरिक दोष दुर्गुणों से निरन्तर संघर्ष करते रहना ही वास्तविक महाभारत है। भगवान् ने गीता में अर्जुन को इसी संग्राम में कटिबद्ध रहने के लिए प्रोत्साहित किया है। यही कर्मयोग की आत्मा है। इसे गीता का सन्देश भगवान् द्वारा अपने लिये भी किया गया निर्देश मानना चाहिये और आत्म-शोधन और आत्म-सुधार के धर्मयुद्ध में निरन्तर जुटे रहना चाहिये।

इन दुर्गुणों की अभावपूर्ति स्वभाव में—जीवनक्रम में सद्गुणों के समावेश से ही हो सकती है। प्रयत्न यह किया जाना चाहिये कि हमारा दैनिक गतिविधियों में सद्गुणों की मात्रा निरन्तर बढ़ती रहे। पुरुषार्थ, परिश्रम, नियमितता, स्वच्छता, मधुर भाषण, मानसिक सन्तुलन, धैर्य, नम्रता, गुणग्राहकता, आत्मीयता, निष्पक्षता, न्यायप्रियता, उदारता, संयम, सज्जनता, सच्चरित्रता, शिष्टता सतर्कता, शौर्य, साहस, श्रद्धा, कृतज्ञता आदि सद्गुणों को अपनी विचारणा एवं क्रियापद्धति में जितना अधिक समावेश होता चलेगा, उतनी ही आन्तरिक महानता बढ़ेगी और जीवन-लक्ष्य की पूर्णता सरल होती चली जायेगी। इस अभिवर्धन का प्रयास भी हमें अहर्निश करना चाहिये। इस सन्दर्भ में जितनी-जितनी तत्परता बरती जाय समझना चाहिये कि उतनी ही कर्मयोग की साधना का योगाभ्यास सफलतापूर्वक चल रहा है—

जीवन-निर्वाह के लिये हमें अनेक प्रकार के छुटपुट काम करने पड़ते हैं। उन्हें प्रसन्नतापूर्वक करें पर उनके पीछे दृष्टिकोण ऊँचा रखें। यही सोचते रहे इन कार्यों को पवित्र धर्म कर्त्तव्य की पूर्ति के लिये—लोक मंगल के लिये—भगवान् की सभी जिम्मेदारियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को पूरा करने के लिये किया जा रहा है, लोभ, मोह और तृष्णा वासना से प्रेरित होकर नहीं। स्वार्थपरता की संकीर्णता यदि दृष्टिकोण में से निकाल दी जाय और उसमें कर्त्तव्यपालन की भावना जोड़ दी जाय तो सामान्य से दीखने वाले छुटपुट काम ही उच्चकोटि के पुण्य परमार्थ बन सकते हैं। दृष्टिकोण ही सब कुछ है। मान्यतायें बदली कि सब कुछ बदल जाता है। नरक को स्वर्ग में और पतन को उत्थान में परिणत कर देने का पूरा-पूरा श्रेय अपने दृष्टिकोण को ही है। अस्तु, हमें हर घड़ी यह प्रयत्न करना चाहिए कि हमारा प्रत्येक विचार और प्रत्येक कार्य उच्च आदर्शों से पुनीत-भावना से ओत-प्रोत हो। कर्म-योगी का भी आहार-विहार, रहन-सहन सामान्य लोगों जैसा होता है पर उसकी विचारणा, मान्यता एवं दृष्टि उच्चस्तर की होती है। हमें अपनी मनोभूमि को इसी प्रकार की बनाने के लिये जुट जाना चाहिये। अपने हर क्रिया-कलाप के पीछे ऐसा ही दृष्टिकोण जोड़ने का प्रयत्न करना चाहिये। यह दिशा में जितनी प्रगति होती चलेगी हम जीवन लक्ष्य के उतने ही निकट पहुँचते चले जायेंगे।

रात्रि को सोते समय हमें एक जीवन की समाप्ति का अनुभव करना चाहिये। आत्मिक प्रगति की दिशा में प्राप्त हुई सफलता के लिये भगवान् को धन्यवाद देते हुए—भूलों के लिये पश्चात्ताप करते हुए, निद्रा माता की गोद में शान्तिपूर्वक सन्तोष और आनन्द अनुभव करते हुए निमग्न हो जाना चाहिए। हर दिन का जीवनक्रम इसी ढर्रे पर चलने लगे तो समझना चाहिये कि कर्मयोग की साधना ठीक तरह होती चली जा रही है और इस मार्ग पर चलते हुए हम निश्चित रूप से मनुष्य जीवन के ईश्वरीय प्रयोजन को पूर्ण कर लेंगे।

ज्ञानयोग तीसरी जीवन साधना है। विचारों में उत्कृष्टता आदर्शवाद की ओर चलने की प्रेरणा, सत्य और असत्य की गुत्थी, सुलझाने वाली—विवेकशीलता जो साहित्य हमें प्रदान कर सके उसे पढ़ना स्वाध्याय है। ऐसे ही विचारों को सुनना सत्संग है। हमारे दैनिक क्रम में इस प्रकार में स्वाध्याय सत्संग के लिये आवश्यक स्थान होना चाहिये। शरीर पर नित्य मैल जमता है उसकी सफाई के लिए कुल्ला, दतौन, स्नान आदि की रोज व्यवस्था करनी पड़ती है। घर, बर्तन, कपड़े फर्नीचर आदि को रोज साफ करना पड़ता है। इसी प्रकार संसार से दूषित वातावरण को जो दुष्प्रभाव हमारे मन पर जमता है उसका परिष्कार करने के लिये प्रतिदिन स्वाध्याय की आवश्यकता पड़ती है। जिस प्रकार शरीर को आहार की जरूरत रहती है उसी प्रकार प्रतिदिन मस्तिष्क को भी भावनात्मक उत्कृष्टता का पोषण आहार देना होता है। यदि आत्मा को मलीन, बुभुक्षित और दुर्बल नहीं रखता है तो स्वाध्याय का साधन हमें अनिवार्य रूप से जुटाना होगा। विवेक की स्थिरता और उत्कृष्टता की अभिवृद्धि के लिये ज्ञानयोग की साधना को अपनाये बिना किसी प्रकार काम नहीं चल सकता।

स्वाध्याय के नाम पर कई व्यक्ति हजारों वर्ष पूर्व की स्थिति में लिखी गई कथा कहानियाँ हर रोज रटते-दुहराते रहते हैं। यह तथाकथित स्वाध्यायशील बेकार का कूड़ा-करकट ही उलटते-पलटते रहते हैं। इससे किसी का कोई भला नहीं हो सकता। आज की परिस्थितियों के अनुरूप जो उत्कृष्टता का पथ-प्रदर्शन कर सके ऐसा विवेक संगत—प्रकाश एवं प्रेरणा से परिपूर्ण साहित्य ही इस आवश्यकता को पूरा करेगा। इसलिये स्वाध्याय के लिये जो कुछ अपनाया जाय उसे भली प्रकार परख लेना चाहिये कि जो पढ़ा सुना जा रहा है, वह उपर्युक्त प्रयोजनों को पूरा करता है या नहीं। भ्रान्तियों में उलटे उलझा देने वाले विचारों को तो अभक्ष्य विषैले आहार की तरह त्याज्य ही समझना चाहिए।

दैनिक नित्यकर्म से स्वाध्याय का समावेश करके हमें ज्ञानयोग की महती आवश्यकता पूर्ण करनी चाहिये, पर काम इतने से ही न चलेगा। व्यक्ति और समाज की दुर्गति का एकमात्र कारण सद्भावनाओं एवं सद्विचारणों का अभाव ही है। आज इसी दुर्भिक्ष के कारण संसार में सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची हुई है। हमें इस अभाव की पूर्ति करनी चाहिये और जन-मानस में सद्विचारणा का बीजारोपण करने के लिये सद्ज्ञान के प्रकाश को अधिकाधिक व्यापक बनाना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना द्वारा इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिये इस युग का सर्वोपरि ज्ञानयज्ञ आरम्भ किया गया है उसमें सम्मिलित होकर हम मानव जाति सबसे बड़ी कठिनाई की—सद्भावना के अकाल को—दूर करने का पुण्य परमार्थ कर सकते हैं। शहद की मक्खियाँ जिस प्रकार फूलों का सार भाग अपने छत्ते में एकत्रित कर लेती हैं और उस मधु का सेवन करने वाला सहज ही लाभान्वित हो सकता है, उसी प्रकार की पुण्य प्रक्रिया युगनिर्माण योजना के अन्तर्गत चल रही है। अत्यन्त सस्ता, सर्वांग सुन्दर और प्रखर प्रकाश से परिपूर्ण साहित्य इसी प्रयोजन के लिये विनिर्मित किया गया है और किया जा रहा है। 'अखण्ड-ज्योति' और 'युग-निर्माण', प्रज्ञा-अभियान, युगशक्ति गायत्री आदि पत्रिकायें, पुस्तकें तथा ट्रेक्ट इस प्रयोजन को बड़ी खूबसूरती से पूरा कर रहे हैं। प्रतिदिन बीस पैसा रोज ज्ञान-यज्ञ के लिये जमा करने चाहिये। उस पैसे से घर में एक ज्ञान मन्दिर बनाना चाहिये। अपने परिवार एक भी व्यक्ति ऐसा न बचे जो इस ज्ञान-गरिमा का लाभ नहीं उठाता है। घर में जो शिक्षित हो उन्हें अनुरोधपूर्वक यह साहित्य पढ़ाना चाहिये और जो बिना पढ़े हो उन्हें सुनाना चाहिये। इस प्रकार घर में सद्ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न कर हम अपने परिवार की अत्यन्त महत्वपूर्ण नितान्त आवश्यक सेवा कर सकते हैं।

घर में जो ज्ञान मन्दिर स्थापित किया गया है। दस पैसे रोज जमा करके जो पत्रिकायें तथा ट्रेक्ट मँगाये जा रहे हैं, उन्हें अपने मित्रों, परिचित, पड़ौसियों, परिचित साथियों, को पढ़ाने के लिए—उनके घर जाकर साहित्य देने और वापिस लाने के लिए एक घण्टा समय सुरक्षित रख लेना चाहिए। इस प्रकार अपने प्रभाव क्षेत्र के दस बीस व्यक्तियों तक सद्ज्ञान का यह प्रकाश पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिये। ज्ञान-यज्ञ का यही स्वरूप है। "प्रतिदिन खर्च करते रहना कोई इतना बड़ा भार नहीं है, जिसे उठाया न जा सके। पर इतने मात्र छोटे से त्याग से हम—व्यक्ति और समाज के नव-निर्माण में—युग निर्माण में—महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यह युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसकी पूर्ति में हमें लापरवाही, उपेक्षा या अनिष्ठा नहीं, दिखानी चाहिये। ज्ञानयोग की साधना के लिये स्वयं का नियमित स्वाध्याय और दूसरों तक सद्ज्ञान का प्रकाश पहुँचाते रहने का क्रम बनाकर इस सहज ही संसार का श्रेष्ठतम उपकार कर सकने में समर्थ हो सकते हैं।

ज्ञानयोग के द्वारा ही अन्तर्ग्रस्त होकर दुःख दारिद्रय से शोक सन्ताप में डूबे हुए समाज को उबारा जा सकेगा। संसार के समस्त कष्टों का एक ही कारण है—अज्ञान्! अन्यथा मनुष्य के पास स्वयं इतनी सामर्थ्य है कि वह अपना ही नहीं, अपने सम्पर्क में आने वाले अन्य सभी का जीवन श्री-समृद्धि, सुख-शान्ति और आनन्द उल्लास से परिपूर्ण कर सकता है। पथ-भ्रष्ट मानव को सन्मार्ग पर चलाया जा सके तो उससे बड़ा उपकार और कोई नहीं हो सकता। दूसरों की आर्थिक सहायता से नहीं वरन् अपनी प्रसुप्त शक्तियों को जाग्रत करने से ही मनुष्य की समस्यायें हल होती हैं। अतएव दान का सर्वश्रेष्ठ तरीका ज्ञानदान है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। आज मानव-जाति को सद्ज्ञान की ही सबसे बड़ी आवश्यकता है। विघटनात्मक विचारधारा को सृजनात्मक दिशा में भेजा जा सके तो देखते-देखते सारी परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। क्रान्तियों में सर्व प्रधान विचार क्रान्ति है। विचार बदल जाने से हाँड-माँस का पुतला मनुष्य ही देवता बन सकता है और यह पाँच जड़तत्वों से बनी दुनियाँ स्वर्गीय आनन्द उल्लास से ओत-प्रोत हो सकती है। युग परिवर्तन विचार क्रान्ति से ही सम्भव होगा।

इस महान् प्रयोजन की पूर्ति के लिये युग निर्माण योजना द्वारा ज्ञानयज्ञ का ऐतिहासिक अभियान आरम्भ किया गया है। इसे सफल बनाने के लिये अपनी सामर्थ्यानुसार जितना भी योगदान किया जा सके, उसे सच्चे अर्थों में सार्थक परमार्थ कहा जायेगा। हम यह प्रयत्न करें कि अपनी क्षमता, प्रतिभा और सुविधा में से एक अंश इसके लिये देते रहने की उदारता अपनायें। यों अलग-अलग भी सब कार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने ढंग से अपने क्षेत्र में करने चाहिये पर साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विश्वव्यापी महान् प्रयोजनों की पूर्ति सामूहिक, संगठित एवं केन्द्रित प्रक्रिया द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है। रीछ-वानरों ने श्री राम के असुर विजय अभियान में अपना योगदान देकर उसे सफल बनाया था। गोवर्धन उठाने में ग्वाल-बाल श्रीकृष्ण के सहयोगी बने थे। इन ग्वाल-बालों ने संगठित प्रयत्न की उपेक्षा कर अपनी-अपनी अलग खिचड़ी पकाई होती तो उससे अभीष्ट प्रयोजन पूरा न हो सका होता। हनुमान् बड़े शक्तिशाली थे पर उनकी शक्ति तभी सार्थक हुई जब वे राम अभियान के एक अंग बन गये। यदि वे अपनी गदा अलग ही फटकारते फिरते और सोचते मेरा यश, मेरा श्रेय उन्हें अकेले ही मिले तो उनकी यह क्षुद्रता न उनके लिये लाभदायक सिद्ध होती और न उस महा अभियान को सफल होने देती। इसलिये हम अपनी परमार्थ भावनाओं को इस युग के महानतम् ऐतिहासिक अभियान में—केन्द्रीय ज्ञान-यज्ञ में—समर्पित करें तो बूँद जिस तरह अपना अस्तित्व समुद्र को समर्पित कर समुद्र बन जाती है उसी प्रकार हमारा समर्पण भी विश्व-मानव के पुनरुत्थान का श्रेय भाजन बन सकता है। युग निर्माण की महान् भूमिका प्रस्तुत कर सकता है।

युग निर्माण योजना के शत सूत्री कार्यक्रमों में ऐसी अनेक योजनायें हैं, जिन्हें विभिन्न स्तर के व्यक्ति अपनी कार्यक्षमता और स्थिति के अनुसार अपने क्षेत्र में कार्यान्वित करके अपनी परमार्थ वृत्ति को परिपुष्ट करने का अभ्यास कर सकते हैं। महान् गुणों का अभिवर्धन महान् कार्य करने से ही होता है। सद्भावनाओं की परिपुष्टि सत्कर्मों से ही होती है। उत्तम विचार और उत्तम कार्य मिलने पर ही सुसंस्कार बनते हैं और उन सुसंस्कारों की मात्रा के अनुसार ही आत्मबल की वृद्धि होती है। इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर हमें कुछ न कुछ श्रम—कुछ न कुछ मनन—कुछ न कुछ धन परमार्थ कार्यों के लिये लगाना ही चाहिये। पानी में घुसने पर ही तैरना आता है। परमार्थपूर्ण—लोक-मंगल के सत्कर्म करने से ही वह प्रयोजन पूरा होता है जिसके लिये हमें मनुष्य शरीर मिला है। इस प्रकार के पुण्य प्रयोजनों की उपेक्षा कर यदि हम थोड़ा-सा पूजा पाठ कर लेना मात्र यदि आत्म-कल्याण की पूर्ति के लिये पर्याप्त मानते रहे हों, कोई छुट-पुट धार्मिक कर्मकाण्ड या तीर्थ-स्थान आदि करके अपने को ईश्वर-भक्त या धर्मात्मा मान लेते हैं तो इस भ्रम को तुरन्त निकाल देना चाहिये। उस आत्म-प्रवंचना में रत्ती भर भी सार्थकता नहीं है। पूजा-पाठ, कथा-कीर्तन, तीर्थ-स्थान या अमुक कर्मकाण्ड का प्रयोजन सिर्फ इतना मात्र है कि वे हमारी परमार्थ भावना को—आन्तरिक उत्कृष्टता को जगावें। वे जगीं या नहीं इसकी कसौटी यही है कि हम स्वार्थ प्रयोजनों में ही दिन-रात लगे रहने की संकीर्णता से ऊँचे उठकर लोक-मंगल के परमार्थ प्रयोजन में तत्पर होने की ईश्वर-इच्छा को पूर्ण करने में संलग्न हुए या नहीं। जिसकी पूजा किसी इस प्रयोजन को पूरा कर सकी उसी को सार्थक समझना चाहिये। अन्यथा ईश्वर को खुशामद पसन्द समझकर उसकी मनुहार करते रहने के पीछे हमारा वह अज्ञान ही काम कर रहा होगा, जो चापलूसी द्वारा मतलब निकाल लेने पर भरोसा करता है। ईश्वर की प्रसन्नता का आधार है उत्कृष्ट व्यक्तित्व और उसके द्वारा किये हुए पारमार्थिक सत्कर्म। हम इस यथार्थता को जितनी जरूरी समझें उतना ही अच्छा है। अध्यात्म का वास्तविक स्वरूप ही हमारे आत्म-कल्याण का आधार बन सकता है। अतएव जन्मदिन के अवसर पर हमें सच्चा अध्यात्मवादी, सच्चा ईश्वर भक्त और मनुष्य बनने का प्रयत्न करना चाहिये और इसके लिये आदर्शवादिता एवं उत्कृष्टता का अधिकाधिक समावेश अपनी विचारणा एवं क्रिया पद्धति में करने का प्रयत्न करना चाहिये।

जन्मदिन का अवसर पर आपको क्या विचारना चाहिये इसका आधार इस अध्याय में संकेत रूप से दिया गया है। यह आपका काम है कि उन्हें अपनी स्थिति के अनुरूप व्यावहारिक जीवन में समाविष्ट करने की योजना बनायें और उस पर दृढ़तापूर्वक चलने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का निश्चय करें। जीवन का उद्देश्य, स्वरूप और उसका सदुपयोग किस प्रकार सम्भव है ? इस पर हमें बार-बार विचार करना चाहिये और यह सोचना चाहिये कि जो बहुमूल्य समय शेष है उसे किस रीति-नीति के साथ व्यतीत किया जाय ताकि जीवन समाप्त होने पर पश्चात्ताप का भागी न बनना पड़े। इस दिशा में यदि हम गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि जीवन के सम्बन्ध में अपनी वर्तमान भौतिकवादी मान्यता को बदलना और साधनात्मक जीवन जीने के लिए भक्तियोग, कर्मयोग तथा ज्ञानयोग की साधना करना आवश्यक है। आप जितना ही प्रस्तुत तथ्यों पर विचार करेंगे उतना ही जीवन को सफल एवं सार्थक बनाने के लिये आवश्यक उत्साह एवं साहस प्राप्त करेंगे।

जन्म-दिवस इस प्रकार मनाया करें

संसार में चौरासी लाख योनियाँ हैं, इनमें मनुष्य योनि ही कर्मयोनि है। शेष सभी भोग योनियाँ हैं। यह मानव देह परमपिता परमात्मा का अनुपम प्रसाद है। इससे दैविक गुणों की अभिवृद्धि करना चाहिए। मनुष्य शुभ कर्म करके इन दैविक तत्वों को आत्मा में धारण कर सकता है।

मानव जीवन के महत्व को समझना चाहिए और प्रतिवर्ष अपने जन्म दिवस को भली प्रकार मनाना चाहिए। इस दिन पिछले वर्ष की भूलों का प्रायश्चित करें और आगामी वर्ष के लिए नवीन शुभ विचार धारण करें। इस दिन जीवन में शुभ कर्म करने की शक्ति व चेतना परमात्मा से माँगें।

यह जन्म दिवस बालकों का ही नहीं वरन् किशोर तरुण वृद्ध, कन्या, युवती, वृद्धा सभी का मनाया जाना चाहिए और उस दिन जिसका जन्मदिन हो उसे अपने पिछले वर्ष के कार्यों का निरीक्षण करना चाहिए। भले कार्यों के लिए भगवान को धन्यवाद देना चाहिए और बुरे कार्यों का उस दिन प्रायश्चित करके भविष्य में न करने का व्रत लेना चाहिए। इस दिन घर पर ऐसे धार्मिक कार्य किये जावें, जिससे वर्ष भर तक उत्तम कर्म करने का आत्मबल प्राप्त हो।

गायत्री परिवार में यह प्रथा, परम्परा आरम्भ की जानी चाहिए कि उसके प्रत्येक सदस्य का जन्मदिन मनाया जाया करे। सब सदस्यों के जन्म-दिन एक रजिस्टर में नोट रहें। और जन्मदिन की तिथि आने से एक सप्ताह पूर्व ही तैयारी आरम्भ कर दी जाय। गायत्री परिवार के सभी सदस्य तथा अन्य सम्भ्रान्त नागरिक उसमें आमंत्रित किये जायें विशेषतया उस व्यक्ति के कुटुम्बी तथा सम्बन्धी अवश्य बुलाये जायें। इन आमंत्रित व्यक्तियों की उपस्थिति में जन्मदिन का उत्सव ऐसे प्रभावशाली ढंग से मनाया जाय कि जीवन की महत्ता समझने तथा उसका सदुपयोग करने की प्रेरणा सभी को मिले।

उत्सव मनाने का कार्यक्रम निम्न प्रकार रखा जावे—

(१) जिसका जन्म दिवस है उसे पहले दस स्नान करावे। वह व्यक्ति यदि दुर्बल हो और सर्दी का मौसम हो तो गर्म पानी का प्रयोग किया जा सकता है। यह कार्य घर पर ही सबके समक्ष कराना चाहिए। यदि महिला या सयानी कन्या हो तो घर के स्नानागार में या पर्दे की ओट में दस स्नान कराया जाय। यदि कोई महिला मन्त्रों को उच्चारण करने वाली हो तो वह स्वयं दस स्नान करादे या वह स्वयं ही यह कृत्य करले।

(२) **प्रायश्चित संकल्प**—स्नान करने के पश्चात् यज्ञोपवीत धारी का यज्ञोपवीत बदलवाकर प्रायश्चित संकल्प कराया जाय। पिछले वर्ष में जो भूलें हुई हैं, उनका स्मरण करके भविष्य में वैसा न करने का व्रत धारण करना चाहिए। मन ही मन प्रभु से प्रार्थना करे कि आगामी वर्ष में उससे यह भूलें न हों और नवीनतम व्रतों का पालन करता रहे। प्रायश्चित संकल्प के पश्चात् पंचगव्य पिलावे। गाय का, दूध, दही, घी, गोबर गौ मूत्र। (यह कृत्य गायत्री यज्ञ विज्ञान द्वितीय भाग से करावें)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

(३) **हवन**—जन्म दिवस पर हवन अवश्य करना चाहिए। इससे देवता व पितृ प्रसन्न होकर उसके लिए आशीर्वाद देते हैं। जिसका जन्मदिन हो यजमान के स्थान पर उसे बिठावे। यदि बालक समझदार नहीं हो तो माता या पिता स्वयं उसे पास बिठा लें परन्तु ध्यान रहे कि बालक टट्टी-पेशाब से हवन वेदी अपवित्र न कर दे। इसके लिए यदि बालक नासमझ है तो गोदी में रबर क्लोथ या अन्य ऐसा वस्त्र हो कि वह गन्दगी बाहर न गिरने पावे और यदि समझदार बालक हो तो माता उसे टट्टी पेशाब से निवृत्त करा करके पास बिठा ले और बीच-बीच में उससे पूछती रहे या बालक को संस्कार के समय ही वहाँ ले आवें शेष समय अलग बिठा रखें।

(४) **भेंट, उपहार**—जिसका जन्म दिवस हो उसे आसन या चौकी पर बिठाना चाहिए और सभी आगन्तुक सज्जन उसे तिलक करके अपना उपहार भेंट करें। यह उपहार फल-फूल, मिठाई, खिलौने, वस्त्र, पुस्तक, धन आदि के रूप में हो सकता है।

(५) **आरती, प्रणाम व आशीर्वाद**—बहिन, कन्या या पत्नी कपूर या घृत दीपक से आरती करें। जो छोटे होंवे उसके चरण स्पर्श करें। बराबर वाले गले मिलकर स्नेह प्रदर्शन करें तथा जो बड़े हैं, उनके वह व्यक्ति स्वयं चरण स्पर्श करे और बड़े उसे आशीर्वाद दें।

(६) **दान**—इस दिन तुलादान का बड़ा महत्व है, जिसका जन्मदिन हो उसके बराबर अन्न तोल कर सत्कार्य में दान करना चाहिए। वर्ष में एक बार यह पवित्र दिवस आता है इस दिन यह तुलादान करके सत्कर्मों के प्रति अपनी निष्ठा तथा कार्यों के प्रायश्चित्य की भावना का परिचय दिया जा सकता है। जिनकी स्थिति तुलादान की न होवे अपने वजन या उम्र का एक अंश का तोल ही अन्न दान करें। परन्तु इस अवसर पर अन्न दान अवश्य हो। इस दान का उपयोग सत्पात्रों के अभाव में सद्ज्ञान प्रसार व सद्साहित्य वितरण में किया जा सकता है। इस अन्न दान के साथ मन में अपनी पिछली बुराइयों के त्याग की प्रतिज्ञा भी उसको करनी चाहिए।

(७) **प्रवचन**—इन सब पवित्र कृत्यों के पश्चात् उपस्थित सज्जनों में से किसी विद्वान का जीवन के महत्व पर प्रवचन कराया जाय। वे अपने प्रवचन में शेष जीवन के सदुपयोग का मार्ग बतावें। इस समय उसके पिछले शुभ कार्यों की चर्चा करके उसे उत्साहित भी किया जाना चाहिए तथा इसके लिए उसकी प्रशंसा में दो शब्द कहे जाना भी हितकर है। साथ ही अपने शेष जीवन का सदुपयोग कैसे करे यह मार्ग दर्शन अवश्य कराया जावे।

(८) **प्रसाद व सत्साहित्य वितरण**—अन्त में सबको प्रसाद व सत्साहित्य सामर्थ्यानुसार वितरण करना चाहिए।

इस प्रकार जन्मदिवस का धर्मकृत्य सम्पन्न करके बड़ों का आशीर्वाद और छोटों के सद्भाव प्राप्त किये जायें। इससे सद्गुणों के साथ आपकी भी वृद्धि होती है। घर के प्रत्येक सदस्य के जन्म दिन मनाने की परम्परा गायत्री परिवार के परिजन कायम करें और इस मानव निर्माण की पवित्र एवं धार्मिक योजना में योग देकर अपना कर्त्तव्य पूरा करें।

शाखा संस्थाओं में तो सदस्यों के जन्म दिन मनाये ही जायें इसके अतिरिक्त यह उत्सव घर पर इसी प्रकार मनाया जाने लगे इसका प्रयत्न करना चाहिए। इससे जीवन समस्याओं को समझने और मानव जन्म का सदुपयोग करने की भारी प्रेरणा मिलती है।

जन्म-दिवसोत्सवों की नितान्त सरल किन्तु चमत्कारी प्रक्रिया

स्वाध्याय मण्डल के सभी परिजनों के जन्म दिवसोत्सव मनाये जाने की एक योजना निश्चित रहनी चाहिए। जहाँ अधिक उत्साह हो वहाँ इन सदस्यों की धर्म यात्राओं के जन्म दिवसोत्सव भी मना सकते हैं। केवल पुरुषों के ही नहीं महिलाओं के आयोजन भी इसी छोटे परिकर के अन्तर्गत हो सकते हैं। पुरुषों के आयोजनों को पुरुष प्रधान और महिलाओं के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आयोजनों को महिला प्रधान बनाया जा सकता है। इन सम्मेलनों में व्यक्ति निर्माण के उद्देश्य की प्रधानता रहती है क्योंकि जन्म दिवस व्यक्ति विशेष का है। उसका जीवन सुयोग अधिकाधिक सफल समुन्नत पवित्र एवं प्रखर हो, इस समारोह की प्रमुख प्रेरणा यही है। इतने पर भी उनमें परिवार निर्माण और समाज निर्माण के तत्व भी पूरी तरह गुँथे हुए हैं। किसी को प्रधान, किसी को गौण रखने में कुछ हर्ज नहीं, पर विषय सभी एक से एक उपयोगी हैं। तीनों ही परस्पर पूरक हैं और एक-दूसरे के साथ पूरी तरह गुँथे हुए हैं।

जन्म दिवसोत्सव आयोजन का स्वरूप सीधासादा है। नियत तिथि पर मित्र-पड़ौसियों-स्वजन सम्बन्धियों को उपस्थित होने के लिए आमन्त्रित किया जाय तो वे सद्भावना सज्जनता एवं लोकाचार के नाते उपस्थित सम्मिलित होने का प्रयत्न करते ही हैं। समय ऐसा रखा जाय, कि जाने से पूर्व ही काम समाप्त कर लिया जाय अथवा सायंकाल को काम से छूटने के बाद का समय रखा जाय। प्रातः ७ से ६ अथवा सायं ७ से ६ वाला समय आमतौर से सभी के लिए सुविधाजनक पड़ता है। महिलाओं को अवकाश १ से ४ के बीच रहता है, इसलिए उनके जन्म दिवसोत्वस १।। से ३।। के बीच रहें तो ठीक रहेगा। सुविधानुसार इसे आगे-पीछे भी किया जा सकता है। छुट्टी का दिन पड़ता हो, तो भी समय में हेर-फेर करने की गुँजायश रहती है।

चौबीस बार गायत्री मन्त्र का सामूहिक सस्वर पाठ, २४ आहुतियों को गायत्री यज्ञ देव पूजन, पंच तत्वों और पंच-प्राणों की अभ्यर्थना। जितने वर्ष का जन्म दिवसोत्सव हो उतने दीपक जलाना। सबकी ओर से आशीर्वाद अभिनन्दन की पुष्प वर्षा। नमस्कार अभिनन्दन। बस इतना-सा छोटा कर्मकाण्ड सम्पन्न किया जाता है। इसके लिए एक घण्टे का समय पर्याप्त होना चाहिए। शेष एक घण्टे में संगीत, प्रवचन चलने चाहिए तथा जिनका जन्म दिन है, उनसे एक दुर्गुण छोड़ने एवं एक सद्गुण अपनाने का संकल्प कराना चाहिए। दो घण्टे इसी प्रक्रिया में पूर्ण हो जाते हैं।

उत्सव-आयोजन का किसी पर आर्थिक भार न पड़े इसके लिए पहले से ही यह प्रतिबन्ध लगाया गया है कि खर्चीले आतिथ्य की कोई व्यवस्था न करें। न उसे किया ही जाय न स्वीकारा ही जाय। चाय पार्टी, जल-पान आदि का सस्ते से सस्ता उपक्रम बनाने पर भी पचास पैसा या एक रुपया ठण्डा होता है। सौ व्यक्ति एकत्रित हो गये तो समझना चाहिए, सौ रुपये की चपत पड़ी। इसे सम्पन्न व्यक्ति तो सहन भी कर सकते हैं, किन्तु रोज कुँआ खोदने रोज पानी पीने वालों के लिए पैसा उतना सहन कर सकना कठिन है। एक करे दूसरा न करे तो प्रतिष्ठा का प्रश्न बनता है। इसलिए नियम बना दिया गया है कि पानी का गिलास ही पेट है और सौंफ सुपाड़ी ही आहार। इस प्रकार प्रायः एक रुपये में आगन्तुकों का सत्कार हो जाने का नियम बनाया गया है। पूजा उपचार, हवन आदि में भी एक दो रुपये का खर्च ही पर्याप्त होना चाहिए। हमारे प्रचलन ऐसे हों, जिन्हें करने के लिए किसी निर्धन एवं व्यस्त व्यक्ति को भी किसी अड़चन असमंजस का अनुभव न करना पड़े।

संगीत प्रवचन में जीवन सौभाग्य के सदुपयोग पर प्रकाश डाला जाय। ऐसा वातावरण बनाया जाय, जिससे हर व्यक्ति की जीवनचर्या में पवित्रता एवं प्रखरता का अधिकाधिक समावेश करने का उत्साह उपलब्ध हो। वस्तुतः यह आयोजन परिवार गोष्ठियों का उद्देश्य पूरा करते हैं, उनमें ऐसा लोक शिक्षण चलना चाहिए, जिसमें व्यक्तित्व के परिष्कार का अभ्यास परिवार की प्रयोगशाला में करने का प्रयास चल पड़े और व्यक्ति के द्वारा परिवार को और परिवार के द्वारा व्यक्ति को आदर्शवादी उत्कृष्टता अपनाने की प्रेरणा मिले। प्रज्ञा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अभियान के तीन लक्ष्य हैं व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण। ये तीनों ही विषय उपस्थित लोगों के सामने इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं, कि उन्हें भ्रान्तियों और विकृतियों से पीछा छुड़ाने सत्प्रवृत्तियों को अपनाकर सुख-शान्ति की दिशा में बढ़ चलने का सुयोग उपलब्ध हो सके। स्थानीय सामयिक वैयक्तिक क्षेत्र की जिन समस्याओं ने वातावरण विषाक्त कर रखा हो, उनके आदर्शवादी एवं व्यावहारिक समाधान भी इसी चर्चा में सम्मिलित किये जा सकते हैं। इस प्रकार यह छोटा आयोजन सर्वथा व्यक्तिगत होते हुए भी अपनी लपेट में ऐसे प्रसंग भी सम्मिलित कर सकता है, जिससे उपस्थित वर्ग अभीष्ट मार्ग दर्शन उपलब्ध हो सके।

एक बुराई छोड़ना, एक अच्छाई अपनाना यही है देव दक्षिणा की परम्परा। अनौचित्य का पिछला पग हटाते और औचित्य का अगला कदम बढ़ाते चलने से ही आत्मिक प्रगति का व्यक्तित्व को प्रखरता के लक्ष्य तक पहुँचने का सुयोग बनता है। अस्तु, देव दक्षिणा का उपक्रम अपने सभी धर्मानुष्ठानों का अविछिन्न अंग बनाकर रखा गया है। उसका निर्वाह इस अवसर पर भी होना चाहिए। हर वर्ष एक बुराई छोड़ते चलने से अभ्यस्त दुर्गुणों में से एक-एक घटता है और पतन-पराभव के गर्त में गिराते रहने वाली खाई पटती है। इसी प्रकार एक-एक सद्गुण हर वर्ष नये जन्म दिन पर ग्रहण किया जाता रहे तो उस दिव्य वैभव का इतना बड़ा भण्डार जमा होता है, जिसके बल-बूते पर सामान्य स्तर के व्यक्ति को भी महामानवों की पंक्ति में बैठ सकने का सुयोग्य हस्तगत हो सके।

महिलाओं के जन्म दिवसोत्सवों का अपना महत्व है। उसे महिला जागरण अभियान की एक महत्वपूर्ण शृंखला कहनी चाहिए नारी जागरण अपने देश समाज, समय एवं विश्व की अत्यधिक महत्वपूर्ण समस्या है।

कुछ समय पूर्व युग निर्माण योजना के अन्तर्गत महिला जागृति अभियान का उत्साह वर्धक आन्दोलन चला था। उसमें नारी को अपना व्यक्तित्व निखारने और परिवार की जिम्मेदारी अधिक कारगर ढंग से निभाने के लिए अनेकों उपाय सुझाये एवं कार्यक्रम बनाये गये थे। स्वास्थ्य शिक्षा स्वावलम्बन गृह व्यवस्था शिशु निर्माण कुरीति उन्मूलन जैसे अनेक प्रयोजन उपचार जाग्रत नारी द्वारा अपनाये जाने के लिए प्रस्तुत किये गये थे। उस दिशा में इन दिनों जो शिथिलता बढ़ती जा रही है, उसे अब समान होना चाहिए।

साप्ताहिक सत्संगों का उपक्रम भी अच्छा है, वह चल सके, तो जन जागरण का बहुत बड़ा प्रयोजन पूरा होता रहा सकता है, पर यदि वह न बन पड़े, तो जन्म दिवसोत्सवों की प्रक्रिया भी कम प्रेरणाप्रद नहीं है। साप्ताहिक सत्संग एक नियत दिन एक नियत स्थान पर चलते हैं, उन्हें प्रज्ञा पीठों या स्वाध्याय मण्डल के संस्थान में किया जाना सुविधाजनक रहता है। उसकी तुलना में जन्म दिवसोत्सव में व्यक्तिगत उत्साह का समावेश रहने से सफलता अधिक मिलती है। कमी इतनी ही है कि दिन एवं स्थान नियत न रहकर अदलता-बदलता रहता है, जो हो स्थानीय सम्मेलनों की प्रक्रिया दोनों में से किसी न किसी माध्यम से चलती रहनी चाहिए एक विचार के, एक स्तर के लोग एक उद्देश्य के लिए एक स्थान पर एकत्रित होते हैं, तो उस एकता एकाग्रता का चमत्कारी प्रभाव परिलक्षित हुए बिना रहेगा नहीं।

सदुदेश्य के लिए सज्जनों का मिलते-जुलते रहना, विचारों का आदान-प्रदान चलते रहना, किसी निर्धारित लक्ष्य की दिशा में प्रगति करने के लिए सुझाव देने या योजना कार्यान्वित करने वाली पृष्ठभूमि का बनना ऐसे ही मिलन प्रसंगों द्वारा सम्भव होता है। इस हेतु जन्म दिवसोत्सवों के मनाने की योजना इतनी सरल एवं इतनी उपयोगी है कि यदि उसे योजनाबद्ध रूप से व्यवस्थापूर्वक चलाया जा सके तो प्रज्ञा संस्थान-स्वाध्याय मण्डल निर्धारित लक्ष्य पूरा करने में असाधारण सफलता प्राप्त कर सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्म-दिवसोत्सव, देखने में छोटा किन्तु परिणाम में महान

मनुष्य का सबसे बड़े सौभाग्य का दिन वह है, जिसमें कि उसे यह सुरदुर्लभ मानव जीवन प्राप्त हुआ। यह भगवान का सबसे बड़ा उपहार है। इससे बड़ा अनुदान उसके भण्डार में और कोई है भी नहीं इसे कल्पवृक्ष कहा गया है। आत्मा को मनुष्य जन्म के सहारे हर क्षेत्र की भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक क्षेत्र की स्वर्गमुक्ति सरलतापूर्वक उपलब्ध हो सकती है। इसे सुरदुर्लभ कहा गया है। सृष्टि के अन्य किसी प्राणी को ऐसी विशिष्ट सम्पदा हस्तगत नहीं हुई है। इस सुयोग सौभाग्य पर मोद मनाने और गौरव अनुभव करने का हर किसी को अधिकार है। इसलिए सभ्य समाज में सभी अपना, अपने कुटुम्बी हितैषियों का जन्मदिन उत्साहपूर्वक मनाते हैं।

इस प्रचलन का बहुत बड़ा लाभ यह है कि जन्मदिन का ही नहीं, उस सुयोग के साथ जुड़ी हुई महान सम्भावनाओं और सघन जिम्मेदारियों का भी स्मरण हो आता है। ईश्वर ने यह अनुपम अनुदान किस लिए दिया ? उसका किस प्रकार सदुपयोग कर किस स्तर की सफलता अर्जित की जा सकती है ? कैसे इस सौभाग्य को सार्थक बनाया जा सकता है ? आदि प्रश्नों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने का अवसर मिलता है। जीवन सौभाग्य की गरिमा एवं सम्भावना अनुभव करने का यह एक विशिष्ट अवसर है। उस दिन हर्षोत्सव मनाया जाय तो सहज ही उन तथ्यों की ओर ध्यान जाता है, जिन्हें यदि गम्भीरतापूर्वक मनाया जा सके तो उसकी परिणति उज्ज्वल भविष्य का पथ प्रशस्त कर सकती है। जन्म दिवसोत्सव यों एक अवसर विशेष का मनोरंजन लगता है किन्तु उसको यदि थोड़ी गम्भीरता धार्मिक वातावरण के साथ जुड़ी रहने वाली भावना उमड़ सके और प्रेरणाप्रद मार्गदर्शन आत्मचिन्तन का सुयोग बैठ सके तो निश्चय ही उस मुहूर्त में मनुष्य को अपनी गतिविधियों एवं परिस्थितियों में कायाकल्प जैसे उच्चस्तरीय परिवर्तन का द्वार खुल सकता है।

युग निमाण योजना द्वारा सभी प्रज्ञा परिजनों के जन्म दिवसोत्सव मनाने के अभियान को अत्यधिक महत्व दिया गया है और उसकी व्यापक व्यवस्था बनाने के लिए अपने समूचे प्रभाव क्षेत्र पर पूरा दबाव डाला है। इसके पीछे कितने ही ऐसे प्रयोजन छिपे हुए हैं, जिससे न केवल उस व्यक्ति के उज्ज्वल भविष्य का पथ प्रशस्त हो वरन् युग सृजन की सम्भावना में भी महत्वपूर्ण योगदान मिले। इन लाभों में प्रथम व्यक्ति निर्माण की चर्चा व्यक्ति निर्माण के रूप में ऊपर की जा चुकी है। दूसरा है परिवार निर्माण। जिस घर में यह आयोजन होगा उसके परिजनों को एक नई चेतना से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा। परिवार सुसंस्कृत एवं समुन्नत बनाने के लिए जिन उपायों का अवलम्बन करना होता है वे सभी इन आयोजनों के सहारे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से उभरते हैं। उनमें यदि थोड़े से भी कार्यान्वित किये जा सकें तो समझना चाहिए कि न केवल जन्मदिन मनाने वाले का वरन् उसके परिवार का भी भाग्योदय बन पड़ा। यह आयोजन मात्र हर्षोत्सव नहीं है, उनके साथ ऐसी परोक्ष प्रेरणाओं का समन्वय है जिनके कारण उस घर के निवासियों को ही नहीं पास-पड़ौस से एकत्रित होने वाली मित्र मण्डली को भी आत्म निर्माण एवं परिवार निर्माण की नई दिशा, नई चेतना एवं नई हिम्मत उपलब्ध होती है।

व्यक्ति और परिवार में उपयोगी परिष्कार होने का नाम ही समाज की अभिनव संरचना है। दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन एवं सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन क्रम जब सामूहिक रूप से चल पड़ता है, तो उसी को समाज संरचना कहा जायेगा। इन आयोजनों में जन्म दिन मनाने वाले तथा उनके कुटुम्बियों को कुछ न कुछ दुर्गुण छोड़ने, कोई सामाजिक सत्प्रवृत्ति अपनाने के लिए सहमत किया जाता है। यह नव निर्धारण समाज की अभिनव संरचना में निश्चित रूप से सहायक होता है। इस प्रकार प्रज्ञा अभियान को व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज की तीनों प्रतिज्ञाओं में, किसी न किसी प्रकार जन्म दिवसोत्सवों में योगदान मिलता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्म दिवसोत्सवों की प्रक्रिया अति सरल है। न उनमें खर्च पड़ता है और न किसी दौड़-धूप का सिर-दर्द उठाने की आवश्यकता होती है। जिस दिन वह सुयोग हो उस दिन प्रातः या रात्रि का सुविधाजनक समय नियत करा लेते हैं। महिला मण्डली के लिए तीसरे पहर सुविधा होती है। उस आयोजन में उपस्थित होने के लिए पड़ोसियों को आमन्त्रित किया जाता है। ऐसे अवसर पर वे उपस्थित होने में चूकते भी नहीं। खर्चीले आतिथ्य की रोक है। सौंफ, सुपाड़ी के अतिरिक्त और कुछ खर्चीला स्वागत-सत्कार करने पर प्रतिबन्ध लगाया है, जिससे गरीबों को भी संकोच न पड़े।

गायत्री यज्ञ, विशिष्ट देव पूजन, पुष्प वर्षा, दीप प्रज्वलन, अभिवादन आशीर्वाद, संगीत, प्रवचन तथा नये जन्म पर किसी नई सत्प्रवृत्ति का व्रत धारण संक्षेप में यही हैं वे विधि-विधान को प्रज्ञा परिवार के सभी वरिष्ठ सदस्यों को पहले से विदित अभ्यस्त हैं, पूजा उपचार की सज्जा की सभी वस्तुएँ शाखा कार्यालय में उपलब्ध हो सकती हैं। पूर्व सूचना होने पर वे लोग भी व्यवस्था यथासम्भव कर देते हैं।

जन्म दिवसोत्सव ऐसे प्रेरक आकर्षक एवं श्रद्धासिक्त होते हैं कि उपस्थित लोगों में से हर किसी का मन उसी प्रकार का आयोजन अपने यहाँ भी करने का होता है। छोटे बच्चों का या मिशन से बाहर के व्यक्तियों के लिए व्यवस्था बना सकना तो शाखाओं के लिए कठिन होगा किन्तु जो मिशन के सहयोगी समर्थक हैं, उनके यहाँ आयोजन किये जाने का प्रबन्ध तो हो ही सकता है।

जिस घर में यह आयोजन होते हैं उसमें पुरुष ज्ञानघट और स्त्रियाँ धर्मघट स्थापित करती हैं। यही आयोजन की दक्षिणा है, जिसे वे प्रसन्नतापूर्वक प्रस्तुत करते हैं। दस पैसा नित्य एवं एक मुट्ठी अन्न नियमित रूप से मिलते रहने पर स्थानीय प्रज्ञा संगठन को आर्थिक सहायता भी प्राप्त होती है इस आधार पर संगठन को पोषण मिलने से उसके कार्य विस्तार में महत्त्वपूर्ण सहायता भी मिलती है।

जन्म-दिवस को इस प्रकार सरल बनायें

प्रज्ञा परिजन मात्र पत्रिकाओं के पाठक नहीं हैं, उन्हें अपने को नव सृजन की सैनानी भी मानते रहना चाहिए। युग धर्म के निर्वाह के लिए उन्हें बहुत कुछ करना है। इसलिए समयदान, अंशदान नियमित रूप से निकालना है ताकि युग चेतना को व्यापक बनाने के लिए जो प्रयत्न किये जाने हैं, जो साधन जुटाये जाने हैं, उनकी पूर्ति का आवश्यक सरंजाम बिना अड़चन के जुटते रह सकें।

समयानुसार करने को तो अनेक काम सामने पड़े हैं, जिनमें से अपनी शक्ति रुचि और स्थिति के अनुसार चुने जा सकते हैं। पर कुछ कार्य तो हर सृजन-शिल्पी के लिए अनिवार्य बना दिये गये हैं। उन्हें तो व्यस्तता के बीच भी करते रहना चाहिए। (१) अपना युग साहित्य दूसरों को पढ़ाने और वापिस लेते रहना (२) दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखना उनमें से प्रमुख हैं। यह दोनों उत्साहपूर्वक चल भी रहे हैं। तीसरा कार्य परिजनों के जन्म दिन मनाना है। खेद की बात है कि यह तीसरी प्रक्रिया उतने उत्साहपूर्वक नहीं चल रही है, जितनी कि चलनी चाहिए। इसमें यज्ञ प्रक्रिया का उपक्रम जुड़ा रहने से उसकी व्यवस्था नहीं बन पाती, सरंजाम नहीं जुट पाता। इसलिए इच्छा होते हुए भी उसे उपेक्षा में डाल दिया जाता है। सूचनाएँ वही बताती हैं कि झोला पुस्तकालय और वाक्य लेखन जिस उत्साह से चल पड़े हैं। वह उत्साह जन्म दिन मनाने के सन्दर्भ में नहीं बरता जा रहा है। अब हम सबका प्रयत्न यह होना चाहिए कि इस प्रक्रिया को उपेक्षित न रहने दें। उसे भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण मानकर चलें।

जन्मदिन के अवसर पर जीवन सम्पदा के सदुपयोग के प्रश्न पर नये सिरे से विचार करने का अवसर मिलता है। भावी-जीवन की रूपरेखा बनाने के लिए चिन्तन मग्न करना पड़ता है। दुष्प्रवृत्तियों में से एक को छोड़ने और सत्प्रवृत्तियों में से एक को बढ़ाने का संकल्प इसी दिन लिया जाता है। अनौचित्य घटना औचित्य बढ़ता चले तो व्यक्तित्व को क्रमशः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिकाधिक परिष्कृत करने का अवसर मिलता है। सर्वतोमुखी प्रगति का आधार इन दो चरणों को उठाते चलने से ही बनता है। इस प्रकार जन्म दिवसोत्सव उत्कर्ष का द्वार खोलता है। कुसंस्कारों का दमन करता है। इसी आधार पर प्रामाणिकता और प्रखरता हस्तगत होती है, जो समग्र अभ्युदय का प्रथ प्रशस्त करती है।

जन्म दिवसोत्सव मनाने में यदि यज्ञीय कर्मकाण्ड सम्बन्धी व्यवस्था बाधक बनती है। तो उसे सरल बनाया जा सकता है। पूजन विधि को संक्षिप्त किया जा सकता है तथा यज्ञ के स्थान पर दीप यज्ञ से काम चलाया जा सकता है। जन अभियान का रूप देना है तो इसे हर परिस्थिति में किये जाने योग्य भी बनाना उचित है।

प्रज्ञा अभियान भारत के बाहर भी सतत फैल रहा है। जन्मदिन भी सभी जगह मनाये जाने का क्रम बन रहा है। जन्मदिन मनाने की ऐसी सारगर्भित प्रेरणाप्रद और समयानुकूल अन्य कोई पद्धति नहीं है। मनुष्य को मनुष्यता के प्रति जागरूक बनाने के लिए यह अनुपम प्रभावपूर्ण प्रक्रिया है।

कई देशों में यज्ञ के प्रचलित स्वरूप पर प्रतिबन्ध भी है। इसलिए अरब-अफ्रीका यहाँ तक कि यू० के० जैसे देशों में भी दीप यज्ञ से ही काम चलाना होता है। भावनायें किसी प्रकार जीवित रखना, सुसंस्कारी परम्पराओं को किसी न किसी रूप में गतिशील बनाये रहना आवश्यक है। इसलिए यदि परिस्थितियाँ संक्षिप्तीकरण चाहती हैं, तो अपनी गतिविधियों को उसके अनुरूप डाल लेना चाहिए।

भारत में तथा अन्य देशों में जहाँ यज्ञ प्रतिबन्धित नहीं है, वहाँ भी यज्ञ को लेकर अड़चनें आ जाती हैं। जिसके पास एक ही साफ सुथरा कमरा है वह उसका सामान हटाकर यज्ञ व्यवस्था कैसे करे ? सजे हुए ड्राइंगरूम में अग्नि जलाना और उसमें धुआँ भरना अधिकांश व्यक्तियों को क्यों रुचेगा ? फिर यज्ञ की व्यवस्था उसके अनेक उपकरण विविध पूजा सामग्री, लगने वाले समय आदि की भी समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं। यही सब कारण है जिनसे जन्म दिवसोत्सवों का जितना प्रचलन होना चाहिए था उतना नहीं हो सका। किन्तु इन स्थूल कारणों से इस महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया को उपेक्षित नहीं होने दिया जा सकता।

जहाँ यज्ञ करने की सुविधा न हो और समय भी कम हो वहाँ संक्षिप्त पूजन तथा दीपयज्ञ का क्रम अपनाया जाय। एक टेबिल या चौकी पर देव स्थापना की जाय। उस पर एक ओर कलश स्थापित करें। एक थाली या ट्रे में रंगों से आलता-चित्रकारी काढ़कर उसे सजाया जाय। उस पर पाँच आटे के धातु या मिट्टी के ५ दीपक सजाये जायें। प्रत्येक दीपक के साथ पाँच-पाँच अगरबत्तियाँ लगाने के लिए अगरबत्ती दान या कोई अन्य उपकरण रखें। उनमें अगरबत्तियाँ लगायें।

यजमान से षट्कर्म कराकर कलश को सभी देवशक्तियों का प्रतीक मानकर, उसका पूजन करायें। इसे ही देव पूजन मान लेना पर्याप्त है। सर्व देव नमस्कार करवाकर सबके हाथों में अक्षत पुष्प देकर स्वस्तिवाचन मन्त्र बोले जावें। अक्षत पुष्प अभ्यागतों के हाथ में अन्त तक रहने दें। उन सबके मस्तक पर कपूर मिले चन्दन या रोली का तिलक किया जाय। इसे यज्ञ की भागीदारी का प्रतीक माना जाय।

दीपक अगरबत्तियों के पाँच-पाँच के युग्म को पंच तत्वों का पाँच प्राणों का प्रतीक मानकर उनकी पूजा करें। पंच तत्वों के माध्यम से संयमशीलता सुव्यवस्था की प्रेरणा उभारें। पंच प्राणों से तेजस्वी जीवन की उमंग जगायें। पूजन के बाद गायत्री मन्त्र सस्वर सामूहिक उच्चारण करते हुए दीपक एवं अगरबत्तियाँ प्रज्ज्वलित करें। २४ बार सस्वर मन्त्र बोलें। अगरबत्ती एवं दीपक प्रज्ज्वलन के साथ गायत्री मन्त्रोच्चार—व्रत धारण कराया जाय। यह संक्षिप्त यज्ञ प्रक्रिया बन जाती है।

दीप यज्ञ के बाद दुष्प्रवृत्तियाँ छोड़ने सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने का इस प्रकार जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने की संक्षिप्त सारगर्भित प्रेरणा दी जाय। व्रत घोषित किये जाने पर सभी अभ्यागत पुष्प वृष्टि करते हुए यजमान को अपनी शुभ कामनाएँ—आशीर्वाद प्रदान करे।

इस सारे क्रम में उपयोग में आने वाले मन्त्र अधिकांश परिजनों को कंठस्थ ही होते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई मन्त्र याद न भी हो तो उनके स्थान पर गायत्री मन्त्र बोलकर ही काम चलाया जा सकता है। पूजन क्रम में भावना का महत्व अधिक होता है। मन्त्रादि भावना प्रवाह को आगे बढ़ाने में सहायक मात्र है, उनके अभाव में भावना प्रवाह को केवल गायत्री मन्त्र के ही सहारे तरंगित किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर भजन कीर्तन की व्यवस्था बन पड़े, उपदेश प्रवचन का सुयोग बन पड़े तो और भी अच्छा हो। समापन होने पर जिसका जन्मदिन है, वह सभी उपस्थित जनों का अभिवादन करे। आतिथ्य प्रसाद, सौंफ, धनिया, गोला-मिश्री, चूर्ण जैसी वस्तुओं का ही उपयोग किया जाय। पार्टी, महँगे जल पान जैसी परिपाटी न पड़ने दी जाय। महँगे सत्कार जन साधारण के बूते के बाहर होते हैं। इसलिए अमीर-गरीब, सबके लिए सत्कार की यज्ञीय, सुगम कम खर्चीली परिपाटी ही बनायी जाय।

उपरोक्त दीप यज्ञ वाली व्यवस्था ऐसी है, जिसमें जन्म दिवसोत्सव की कर्मकाण्डपरक प्रक्रिया सहज पूरी हो जाती है और उसे स्वजन सम्बन्धी ही मिल-जुलकर पूरी कर सकते हैं। इसमें न आर्थिक भार पड़ता है और न कोई ऐसी सरंजाम जुटाना पड़ता है, जिसके लिए असमंजस में पड़ना पड़े और अड़चन के कारण उपेक्षा अपनाने की आवश्यकता पड़े।

जन्म-दिवसोत्सव—कार्य एक उद्देश्य अनेक

मिशन का स्वरूप क्रमशः बढ़ रहा है तो उसकी आवश्यकताओं में वृद्धि होना स्वाभाविक है। अब श्रम अनुदान से ही साधनों की अपेक्षा अधिक बढ़ रहा है। सभी ज्ञान रथ प्रज्ञा संस्थानों को स्थाई व्यक्ति चाहिए। प्रज्ञा पीठ का काम तो दो की नियुक्ति से ही चलता है। एक स्थानीय व्यवस्था सँभाले दूसरा जन सम्पर्क के लिए परिभ्रमण करे। इन नियुक्तियों के लिए धन चाहिए। अवैतनिक लोग मन मर्जी से जब तब कुछ-कुछ करते रहते हैं जबकि गतिविधियाँ निरन्तर चलती रहनी चाहिए। इसलिए नया निर्धारण-हर प्रज्ञा संस्थान में ब्राह्मणोचित निर्वाह देकर, कार्यकर्त्ता नियुक्त करने का हुआ। समयदानी अथवा अवैतनिक योगदान भी साथ-साथ सम्मिलित रखें तभी नये नियुक्त व्यक्ति को आवश्यक योग्यता और प्रवीणता प्राप्त होगी। दोनों प्रकार के कार्यकर्त्ता मिल-जुलकर ही आवश्यक सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यकर्त्ता नियुक्ति के लिए निर्वाह व्यय कैसे जुटाया जाय ? इसके लिए साहित्य विक्रय का कमीशन, मुफ्त पढ़ने वाले से कुछ समय उपरान्त प्राप्त होने वाला पुस्तकालय शुल्क के अतिरिक्त प्रधान आजीविका स्रोत ज्ञान घट ही हो सकते हैं। अब दैनिक अंशदान दस पैसे से बढ़ाकर बीस पैसा कर दिया गया है। पुरुषों की जेब में पैसा रहता है इसलिए वे अंशदान प्रसन्नतापूर्वक देते रहते हैं। महिलाओं के हाथ प्रायः खाली रहते हैं। इसलिए उन्हें एक मुट्ठी अन्न संग्रह करने वाले धर्म घट स्थापित करने के लिए कहा गया है। आजीविका का मुख्य स्रोत यही माध्यम बन सकता है। अधिकाधिक लोगों का जनसहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से यह बूँद-बूँद का संकलन ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

अन्न-घट धर्म की स्थापना में अब गति लानी पड़ेगी और वसूली की सुव्यवस्था बनानी पड़ेगी। दाताओं को सही हिसाब समझाते रहकर उससे प्रामाणिकता भी बनी रहती है। यह कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से चलते रह सकते हैं। इन अनुदान घटों का विस्तार कैसे हो ? उन्हें प्रामाणिक और व्रतशील लोगों के यहाँ कैसे रखा जाय ? इस प्रश्न के उत्तर में अब जन्म दिवसोत्सवों के अवसर पर प्रतिज्ञापूर्वक, ज्ञान घट स्थापित कराने की सूझ-बूझ अपनाने के लिए कहा गया है। इस स्थिति में उनकी उपेक्षा न होगी और कुछ दिनों में ही उत्साह ठण्डा हो जाने, कृपणता अपनाई जाने जैसी शिकायत न रहेगी।

जन्म दिवसोत्सव मनाने में अन्यान्य लाभों के अतिरिक्त यह प्रयोजन भी साधना चाहिए कि उपयुक्त व्यक्तियों द्वारा उपयुक्त अवसर पर उनकी स्थापना हो और वह बिना अवरोध के अनवरत् रूप से चलती रहे। नियुक्त व्यक्ति वसूली भी करता रहेगा। रसीद देता और हिसाब समझाता रहेगा। इस प्रकार उस नियुक्ति पर जो खर्च आता था, उसकी पूर्ति इन ज्ञान घटों-धर्मघटों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहज ही सम्पन्न होती रहेगी। अस्तु जन्मदिवसोत्सव के साथ जुड़ी हुई व्यक्ति परिवार और समाज निर्माण की प्रगति के साथ-साथ प्रज्ञा पीठों प्रज्ञा संस्थानों की सघन आवश्यकता को पूरा करने के निमित्त भी इस प्रक्रिया को नये उत्साह के साथ उजागर किया जाना चाहिए।

इस हेतु आवश्यक है कि जन्म दिवसोत्सव मनाने के लिए जिन्हें उपयुक्त समझा और सहमत किया जाय उन्हें इस सम्बन्ध में भी निश्चित कर दिया जाय कि इसके लिए समस्त साधन जुटाने और आवश्यक खर्च करने की जिम्मेदारी प्रज्ञा संस्थानों द्वारा उठाई जायेगी। उन्हें इसके लिए दौड़-धूप करने या आर्थिक भार उठाने की आवश्यकता न पड़ेगी। यदि पहले से ही इस प्रयोजन के लिए आवश्यक साधन जुटाकर रखे गये हों तो फिर उसका खर्च भी नाम मात्र का रह जायेगा। यज्ञशाला चलती-फिरती रखी जा सकती है। बाँस, कपड़े तथा पात्र उपकरण आदि का खर्च प्रायः सौ रुपया आता है। इसमें एक बार पूँजी के रुपये लगा देने पर सभी जगह उसका उपयोग होता रहेगा। इसी प्रकार हवन सामिग्री, धूपबत्ती, सौंफ, सुपाड़ी आदि की लागत एक आयोजन के पीछे तीन-चार रुपये से अधिक नहीं आनी चाहिए। इतना खर्च कर देने से उस व्यक्ति की सद्भावना अर्जित कर सकना सम्भव होगा, जिसका जन्म दिवसोत्सव मनाया गया, इस सद्भावना का उपयोग ज्ञान घट स्थापना के लिए किया जा सकता है। मिशन की आजीविका बढ़ाने का यह एक अत्यन्त प्रभावी एवं सरल तरीका है। इस आधार पर परिजनों की संख्या और श्रद्धा तो बढ़ेगी ही युग चेतना का विस्तार भी होगा साथ ही यह प्रयोजन भी सधेगा कि नियुक्त कार्यकर्त्ता के वेतन का एक सुनिश्चित मार्ग निकल आये और कहीं भी यह शिकायत न रहे कि आर्थिक कठिनाई के कारण कार्यकर्त्ता नियुक्ति की बात नहीं सोची गयी। गतिरोध बना रहने से ही प्रज्ञा पीठों और प्रज्ञा संस्थाओं के क्षेत्र में निष्क्रियता छाई रहेगी। समय आ गया है कि सूझ-बूझ से काम लिया जाय और उस 'गोरस बेचन हरि मिलन' जैसे एक पथ दो काज वाली प्रक्रिया पर पूरी तरह ध्यान केन्द्रित किया जाय।

प्रज्ञा साहित्य पढ़ाने—वापिस लाने के लिए घर-घर जाने के उपक्रम से कुछ न कुछ ऐसे व्यक्तियों से भी सम्पर्क बनता और बढ़ता रहेगा जो विचारशील एवं भावनाशील भी होंगे। जिनमें उदारता की मनःस्थिति पाई जाय ऐसे लोगों की घनिष्ठता बढ़ने देने के उपरान्त जब मनःस्थिति में परिपक्वता उत्पन्न होने लगे तब जन्म दिवसोत्सव मनाने का महत्व समझाना चाहिए और उसके लिए उन्हें सहमत करना चाहिए।

जन्म–दिवसोत्सवों की महिमा और गरिमा इस प्रकार समझी और समझाई जानी चाहिए कि सुरदुर्लभ मनुष्य जन्म सृष्टा का सबसे बड़ा अनुदान और व्यक्ति का सबसे बड़ा सौभाग्य है। ऐसा बड़ा सौभाग्य और ऐसा सुयोग अन्य किसी प्राणी को नहीं मिला। अद्भुत शरीर विलक्षण मस्तिष्क और देवोपम अन्तःकरण, प्रदान करके भगवान ने अपना सारा अनुग्रह उड़ेल दिया है। अब मनुष्य का कर्त्तव्य है कि इस सुयोग का समुचित लाभ उठाये, अपूर्णता से पूर्णता तक पहुँचने के आत्मकल्याण का लक्ष्य प्राप्त करे। सृष्टा की इच्छा के अनुरूप विश्व उद्यान को सींचने-सँभालने में इस अनुदान को सार्थक करे। इस तथ्य से प्रतिध्यान देने और उपेक्षा बरतने का ही परिणाम है कि यह सौभाग्य पेट प्रजनन जैसी पशु-प्रवृत्तियों में निरत रहकर गँवा दिया जाता है और खाली हाथ लौटकर फिर चौरासी के चक्र में कोल्हू के बैल की तरह पिलना पड़ता है।

इस विपन्नता और विडम्बना से बचने का एक ही उपाय है आत्मबोध। आत्मज्ञान को ही अध्यात्म का सार बताया गया है। बुद्ध का सामान्य राजकुमार से भगवान बनने का अवसर इस आत्म-ज्ञान के सहारे ही उपलब्ध हुआ था। अन्य सभी महामानवों के सम्बन्ध में भी यही बात है। जीवनोद्देश्य को समझने और तदनुरूप गतिविधियाँ अपनाने पर भी वह स्वयं कृत्य हुए और असंख्यों को अपनी नाव में बिठाकर पार लगा सके। समस्त धर्म शास्त्रों में मनुष्य जन्म के साथ जुड़ी हुई सबसे बड़ी दूरदर्शिता यही है कि अपने आप को समझा जाय। इस सुयोग को सार्थक बनाने में प्रमाद न बरता जाय। यह आत्म जागरण जिन उपाय उपचारों द्वारा हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सकता है उनमें जन्म दिवसोत्सव सबसे सरल, सबसे आकर्षक एवं उत्साहबर्धक है।

उस दिन जब व्यक्ति 'हीरो' बनता है। प्रसव का दिन, विवाह का दिन, स्मरण रखने योग्य सौभाग्य का दिन है। यह सुयोग हर 'वर्ष' आता रहे इसके लिए उस दिन उत्सव मनाने की परम्परा डाली जाय। व्यक्ति अपने अवतरण पर गर्व करे जो किसी अन्य प्राणी को नहीं मिला। उस उपलब्धि पर भरपूर हर्ष मनाये और साथ ही गहरे आत्म-चिन्तन में निरत होकर यह भी सोचे कि बचे हुये जीवन का श्रेष्ठतम सदुपयोग क्या हो सकता है ? हर जन्म दिन पर अभ्यस्त बुराइयों में से एक छोड़ने और उपेक्षित अच्छाइयों में से एक बढ़ाने के लिए इस अवसर पर संकल्प लेने होते हैं। यही है समग्र प्रगति का राजमार्ग इस पर चलते हुए कोई भी भौतिक और आत्मिक क्षेत्र को उभय पक्षीय सफलतायें प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार आत्म निर्माण की दृष्टि से जन्म दिवसोत्सव का प्रतिफल अतीव श्रेयस्कर होता है। व्यक्तित्व के विकास में इस आधार पर प्रगति होती है। फलतः ऊँचा उठने आगे-बढ़ने का एक नया आधार बनता है।

जन्म-दिवसोत्सव को पारिवारिक ज्ञान गोष्ठी भी कहा जा सकता है। उस अवसर पर होने वाले हवन कृत्य, देवपूजन आशीर्वाद अभिवादन, भजन, प्रवचन, आदि का संयुक्त प्रभाव ऐसा पड़ता है, जिससे उस कुटुम्ब के सभी सदस्यों को सुसंस्कारिता अपनाने की प्रेरणा मिले। जिन दुर्गुणों के कारण मनोमालिन्य एवं असहयोग बढ़ रहा था, अनुशासन बिगड़ने और बिखराव बढ़ने का खतरा बन रहा था, उसमें इस अवसर पर बनने वाले वातावरण से निश्चित रूप से सुधार होता है। जिन घरों में यह उत्सव मने हैं, वहाँ सत्परम्पराओं की अभिवृद्धि में उत्साह वर्धक सफलता मिली है।

उपस्थित लोगों को भी इस माहौल से अनेकानेक प्रेरणायें प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार लोक मानस के परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन की समाज निर्माण प्रक्रिया भी साथ-साथ चलती है। आयोजन छोटा होने पर भी उससे मिशन के लक्ष्य व्यक्ति, परिवार और समाज निर्माण के प्रयोजन में ठोस सफलता मिलती है। इसलिए भी उसे मनाने पर सभी प्रज्ञा परिजनों का ध्यान केन्द्रित होना चाहिए।

यह आयोजन सभी गरीब अमीरों के लिए सरल पड़े इसलिए उन्हें मनाने के लिए कुछ ऐसे निर्धारण किये गये हैं, जिनके सहारे इन्हें सर्वसुलभ बनाया जा सके। कर्मकाण्ड में गायत्री यज्ञ प्रधान है। पाँच तत्वों से बने शरीर के कर्णधार पाँच देवताओं की पूजा इसके अतिरिक्त होती है। यज्ञ कार्य के लिए किसी पुरोहित को बुलाने की आवश्यकता नहीं। सभी शिक्षित व्यक्ति गायत्री यज्ञ विधि पुस्तक के सहारे उसे मिल-जुलकर सम्पन्न कर लेते हैं। इससे अधिक लोगों को उस धर्मकृत्य को करा सकने का अभ्यास भी बढ़ता है। घर-घर में गायत्री या की परम्परा प्रचलित कराने में यह अधिक लोगों का अभ्यास बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। अतिथि सत्कार के लिए जल और सौंफ, सुपारी के अतिरिक्त और कुछ परसने का निषेध है। इस आधार पर गरीब अमीर सभी का सम्मान बना रहता है और किसी को भी आर्थिक कठिनाई के कारण इसे टालने की आवश्यकता नहीं पड़ती। संगीत के लिए मिशन के कार्यकर्त्ता जगह-जगह ढपली मजीरे की कक्षायें चला रहे हैं और सर्वत्र युग गायक प्रशिक्षित हो रहे हैं, उन्हें बुलाने में भी कोई कठिनाई नहीं पड़ती। प्रवचन की अब एक नयी शैली अपनाई गयी है। प्रज्ञा साहित्य में से कोई भी अंश इस उपयुक्त अवसर के लिए पढ़कर सुना देना। इस आधार पर किसी महत्वपूर्ण प्रवचनकर्त्ता की भी आवश्यकता नहीं पड़ती और संगीत कथा प्रवचन की आवश्यकता सहज ही पूरी होती रहती है। जन्म दिवसोत्सव अब सर्वत्र रात्रि के समय ही मनाये जाने लगे हैं। यदि गोधूलि बेला में उसे सम्पन्न किया जा सके तो प्रवचन संगीत की आवश्यकता स्लाइड प्रोजेक्टर और टेपरिकार्डर के एक-डेढ़ घण्टे के कार्यक्रम में अच्छी तरह सम्पन्न हो सकती है। इस आधार पर उस उत्सव को और भी अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है। संगीत और प्रवचनों के टेप शान्तिकुञ्ज से मिलते हैं।

बड़े लोगों के घरों में जहाँ हवन के धुँये से कमरा काला होने का असमंजस है। कुर्सियों पर बैठने वालों को जमीन पर बिठाने में संकोच

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, वहाँ हवन का संक्षिप्त स्वरूप भी काम में लाया जा सकता है। सुसज्जित चौकी पर पाँच घृत दीप और पाँच धूपबत्तियों के प्रज्ज्वलन और दस-बीस गायत्री मन्त्र के सामूहिक पाठ से भी संक्षिप्त यज्ञ सम्पन्न हो जाता है। इस प्रकार जन्म दिवसोत्सव मनाने में वहाँ भी कठिनाई नहीं होती। जहाँ सजे-सजाये कमरे में धुआँ होने, कालीन को आँच आने, स्थान खुला न होने जैसी कठिनाई आड़े आती है।

प्रबुद्ध परिजनों का संगठन और जन्म-दिवसोत्सव प्रक्रिया

प्रति सप्ताह किसी समझदार सुशिक्षित व्यक्ति से निःस्वार्थ भाव से मिला जाय और उसे एक उपहार—चाहे विज्ञप्ति मात्र का ही क्यों न हो—भेंट करते रहा जाय और समय-समय पर निजी स्वार्थों को नहीं वरन् आदर्शों के सन्दर्भ में थोड़ी बात-चीत करते रहा जाय, तो कुछ ही समय में सद्भाव पूर्ण सम्पर्क बन जायेगा। आरम्भ में आशंका होती है कि किसी मतलब के लिये तो यह सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा रहा है ? क्योंकि आमतौर से लोग पहले निःस्वार्थ बनकर पीछे अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। ऐसी स्थिति में 'अजनवी के प्रति आशंका' वाली बात दिखाई दे तो उसे स्वाभाविक ही समझना चाहिए। किन्तु यह स्थिति देर तक रहेगी नहीं। वास्तविकता प्रकट होकर रहती है। कुछ ही दिन में लोग अपने अन्तःकरण और उद्देश्य को समझ जायेंगे तब सहज ही सम्बन्धों में मधुरता, निकटता और सद्भावना के तत्व स्वभावतः बढ़ते चले जायेंगे। जिन १०० व्यक्तियों की लिस्ट बनाकर उनके साथ सम्बन्ध जोड़ना, उत्कृष्ट विचारधारा का प्रवाह पहुँचाना आरम्भ किया था, उनमें से अधिकांश के साथ अपना मधुर सम्पर्क जमता चला जायेगा।

जन-जागरण का प्रयोजन जन-सम्पर्क के बिना पूरा नहीं हो सकता। यह विज्ञप्ति वितरण का माध्यम धीरे-धीरे सज्जनों के सम्पर्क की एक लम्बी शृंखला तैयार कर देगा। विकृत मनोभूमि के लोग इसमें रस न लेंगे। पढ़ने को भी तैयार न होंगे। पढ़ेंगे तो अपनी मूढ़ मान्यताओं का प्रतिपादन करते हुए अपने से लड़ते-झगड़ते रहेंगे। मूढ़ मान्यताओं और विवेक युक्त विचारणा में चूहे-बिल्ली का-सा बैर है। जहाँ एक जायेगी वहाँ दूसरे के पैर उखड़ेंगे। इसलिये कुछ दिन ही यह विज्ञप्ति-वितरण का क्रम लगातार चलने के बाद छाँट शुरू हो जायेगी। उन्हें विवेकशीलता का पथ उपयुक्त रुचे नहीं, वे शायद पढ़ने वाली बात तक के लिये तैयार न हों। दुराग्रही और अन्धविश्वासी हो तो अपने देश में भरे पड़े हैं। विवेक, तर्क, न्याय, औचित्य, और सच्चाई को ढूँढ़ने समझने वाले लोग यदि अभीष्ट संख्या में रहे होते तो यह दुर्गति ही क्यों होती। हमारी बौद्धिक विकृतियाँ तो इतनी बढ़ी-चढ़ी हैं कि मस्तिष्क का हर कोना उसी से ठुसा पड़ा है। स्वतन्त्र चिन्तन, तत्व दर्शन की विवेकशीलता के लिये उस कूड़ा खाने में गुञ्जायश भी नहीं बच रही है। ऐसी दशा में यह विज्ञप्ति वितरण का काम भी आगे चलकर किन्हीं-किन्हीं को नाराज कर देने का निमित्त बन सकता है।

किन्तु जो इस विचारधारा को पसन्द करने लगेंगे उनके भीतर का विवेक दिन-दिन जगेगा और वे व्यक्ति तथा समाज की उन्नति में वास्तविक आधार की सावधानी से समझने लगेंगे और इस दिशा में उनकी दिलचस्पी दिन-दिन गहरी होती जायेगी। हमारे नव सृजन के आधार ऐसे ही लोग होंगे। इन पौधों को सावधानी से सींचा-सँभाला जाना चाहिए। सम्पर्क, चर्चा, प्रेम भाव, सहयोग, सहानुभूति का शिलसिला जारी रह सके तो उनकी सुधारवादी अभिरुचि को और भी क्रमशः परिष्कृत करते हुए, इस पर पहुँचाया जा सकता है कि वे आगे चलकर नव निर्माण आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकें और अभियान के अग्रिम मोर्चे पर खड़े हुए अज्ञान असुर से जम कर जूझने का शौर्य प्रदर्शित कर सकें।

विज्ञप्ति वितरण का क्रम चालू करने के लगभग तीन महीने के बाद उस प्रचार क्षेत्र की सफलता-असफलता का पता चलने लगेगा। कुछ लोग इन विचारों से असहमति और नाराजी प्रकट करते हुए कट जायेंगे। उनके स्थान पर नये तलाश करने पड़ेंगे। कुछ की दिलचस्पी दिन-दिन बढ़ती जायेगी और वे फिर उन मूल पुस्तकों को पढ़ने की माँग करेंगे, जिनसे कि इन विज्ञप्तियों को लिया गया है। धीरे-धीरे वे अपने झोला पुस्तकालय को आद्योपान्त पढ़ डालेंगे। यह निश्चित है कि अपना युग-निर्माण ट्रेक्ट साहित्य इतना प्रखर और प्रभावशाली है कि जो एक बार उसे पढ़ लेगा विवेकशीलता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का अनुयायी बने बिना न रहेगा। जन-जागरण की दृष्टि से एक व्यक्ति के द्वारा अपना पूरा ट्रेक्ट साहित्य पढ़ लिया जाना बहुत बड़ी बात है। ऐसे व्यक्ति से सहज ही हम बड़ी-बड़ी आशाएँ कर सकते हैं। अखण्ड-ज्योति और युग-निर्माण पत्रिकाएँ रुचिपूर्वक पढ़ने का सिलसिला जिनने भी अपना लिया वे आत्मनिर्माण और समाज निर्माण के महान् प्रयोजन की पूर्ति के लिए दिन-दिन साहस पूर्वक कदम उठाते चलने में संलग्न देख गये हैं। हम बहुत जोर देकर सदा से कहते रहते हैं कि बाहर प्रचार करने से पहले अपने घर में सब लोगों को इस साहित्य को पढ़ाने-सुनाने की व्यवस्था बनाई जाय। स्कूल जाने वाले बच्चों के बारे में यह नहीं सोचना चाहिए कि वे आधा घण्टा इसे पढ़ने-सुनने लगेंगे तो उनकी पढ़ाई में हर्जा होगा। वरन् यह सोचना चाहिए कि आचार्य जी के पास आधा घण्टा बैठने की—उनके भावनात्मक निर्माण विषय का ट्यूशन पढ़ने की सुविधा दे रहे हैं। प्रचार घर से आरम्भ होना चाहिए और विश्वास रखना चाहिए कि इससे किसी के समय की बर्बादी नहीं होने वाली है। वरन् स्कूल में ६ घण्टे पढ़ने की तुलना में घर पर आधा घण्टा युग निर्माण साहित्य पढ़ना सुनना उनके जीवन को सुखी समुन्नत बनाने की दिशा में कहीं अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। स्कूली अक्षर ज्ञान ही सब कुछ नहीं है। शिक्षा के साथ विद्या का भी समन्वय होना चाहिए। शिक्षा, शिक्षक पढ़ाते होंगे। विद्या हम पढ़ाते हैं और यह विद्या ऐसी है जिसका परिणाम भौतिक एवं आत्मिक जीवन में सुख, शान्ति, शक्ति, समृद्धि, कीर्ति और प्रगति ही हो सकता है। अपने घरेलू परिवार के साथ सबसे अधिक प्रेम परिचय का आधार यही हो सकता है कि उन्हें प्रोत्साहित ही नहीं मजबूर भी करें कि वे आधा घण्टा नियमित रूप से निकालकर इस विचारधारा को पढ़ें या सुना करें। यह प्रक्रिया हर दृष्टि से—हर एक के लिये कितनी उपयोगी सिद्ध होती है इसका प्रमाण इससे अपने घर के लोगों की बदलती हुई मनोभूमि और सुधरती हुई गति-विधियों को देखकर कोई भी पा सकता है।

घर और बाहर जहाँ भी सुसंस्कारी तत्व होंगे इस विज्ञप्ति वितरण—और उसकी पूँछ में बँधे हुए झोला पुस्तकालय की प्रगति के फलस्वरूप सत्प्रवृत्ति सम्पन्न व्यक्तियों का एक समूह अपने सम्पर्क क्षेत्र में इकट्ठा हो जायेगा। यह उपलब्धि अति महत्वपूर्ण है। इसे परिपुष्ट करने के लिये पूरी तत्परता और दिलचस्पी के साथ प्रयत्न करना चाहिए ताकि यह पौधे सुदृढ़ और समृद्ध होते हुए किसी दिन अपने पल्लव और फल-फूलों से उद्यान की शोभा सुषमा में अभिवृद्धि कर सकें।

इसके लिए एक कार्यक्रम बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ है, वह है प्रकाशवान व्यक्तियों के जन्मोत्सव मनाना। यह आन्दोलन युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत मनाये जाते रहे हैं और उनका आशाजनक परिणाम भी हुआ है। आत्म-चिन्तन का और आत्म-विकास की प्रवृत्ति को जगाने भड़काने का वह दिन सबसे उपयुक्त अवसर है। उस दिन जिसका जन्म दिन है वह प्रसन्नता, उल्लास और आत्मानुभूति के एक खास 'मूड' में होता है। उस दिन का बोया बीज निश्चित रूप से फलता है। अपने उत्सव, आयोजन, मनोरंजन या क्रीड़ा-कौतुक के लिए नहीं, आत्मबोध और आत्म-कल्याण के प्रयोजन से मनाये जाते हैं। वैसा ही वातावरण उत्पन्न किया जाता है, वैसा ही उद्बोधन, प्रवचन, गीत संगीतों का वातावरण बनाया जाता है और उस व्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है कि अपने स्वरूप, लक्ष्य, कर्त्तव्य के सम्बन्ध में उस दिन अधिक गम्भीरता से विचार करे और आगे के लिए कुछ ऐसे नये कदम उठाये जिनसे उसके निज के अन्तःकरण एवं समाज के वातावरण में उत्कृष्टता के तत्वों का अभिवर्धन हो सके। इस स्तर पर मनाये गये जन्मोत्सव जहाँ प्रसन्नता, हँसी-खुशी, सन्तोष, उल्लास का वातावरण उत्पन्न करते हैं, वहाँ उनसे व्यक्ति को आत्म-गौरव एवं महत्वपूर्ण अस्तित्व का अनुभव भी होता है। यह सभी प्रवृत्तियाँ जीवन विकास में बड़ी सहायक होती हैं। इसलिए संसार भर में अपने ढंग से लोग जन्मोत्सव मनाते और मोद-प्रमोद मनाते देखे जाते हैं। अपने देश की यह चिर प्राचीन प्रथा है। यह बीच में लुप्त हो गई और अब इसे पुनः जाग्रत करके इस स्तर पर विकसित करना है कि यह व्यक्ति निर्माण का एक महत्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध कर सकने में समर्थ हो सके। इस व्यवस्था के जमाने और बढ़ाने में विज्ञप्ति वितरण करने वाले अपने प्रचारक को ही अग्रणी बनना पड़ेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना यह चाहिये कि तीन चार महीने में उपयुक्त अभिरुचि के जो सज्जन घनिष्ट सम्पर्क में बँधने लगे उनकी एक युग-निर्माण मित्र-मण्डली गठित कर लेनी चाहिए, और उसका पहला काम मण्डली के सदस्यों के जन्म दिवसोत्सवों में सम्मिलित होते रहना होना चाहिए। अनुरोध करके, उन्हें जितने अधिक उत्सवों में सम्मिलित हो सकना सम्भव हो पधारते रहने के लिये तैयार करना चाहिए। फिलहाल एक मात्र रही तो सम्भावनात्मक और प्रदर्शनात्मक रचनात्मक कार्य है। उसे सफल एवं अग्रगामी बनाने को मण्डली के हर सदस्य में अभिरुचि पैदा करनी चाहिए। गैर हाजिर तमी हो जब कोई आम मजबूरी सामने आये। उत्सव के लिये समय प्रातः ६ बजे से पहले या रात के प्रथम चरण में रखा जाना चाहिये ताकि नौकरी पेशा और दुकानदार भी अपना काम बिना हर्ज किये उसमें सम्मिलित हो सकें।

मित्र मण्डली के सदस्यों के जन्म-दिनों की लिस्ट बना लेनी चाहिये। तारीखों से यह क्रम बनाया जाय ताकि पंचांगों में तिथियाँ घटते-बढ़ते रहने की अनिश्चितता के झंझट में न पड़ना पड़े। फिर यदि तिथियों से ही काम चले तो वैसा ही किया जा सकता है। इस लिस्ट की एक-एक प्रति मण्डली के सदस्यों को दे देनी चाहिये ताकि उन्हें पहले से ही स्मरण रहे और हर उत्सव के समय अगले उत्सव की तारीख समय तथा स्थान बता दिया जाय ताकि सम्मिलित होने की बात फिर सबके मस्तिष्क में स्पष्ट हो जाया करे।

जन्मदिन मनाने की शास्त्रीय क्रिया कुछ लम्बी है, अपरिचित लोगों की उसे ठीक तरह मनाने में असुविधा होती है। कई बार तो अनजान लोग हवन आदि कर्मकाण्डों में ही सारा समय खर्च कर देते हैं और प्रेरणा, प्रकाश, चर्चा, उद्बोधन की प्राणभूत प्रक्रिया के लिये समय ही नहीं बचता, फिर हवन में जाति भेद और पंडितों के अडंगे भी यदा-कदा आ खड़े होते हैं। इसलिये जन्मदिन मनाने का एक अति सरल और सर्वोपयोगी विधान यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

(१) जिस प्रकार धर्मतत्वों का स्वरूप होता है—चौक पूरने, यजमान को आसन या चौकी पर बिठाने—स्थान को झण्डी, पुष्प, पल्लव, चित्र आदि से सजाने, का कलात्मक प्रयत्न किया जाय ताकि यहाँ का वातावरण आकर्षक, नयनाभिराम, उत्साहवर्धक एवं नवीनता लिये हुए बन जाय। इसमें उपलब्ध सज्जा-सामग्री और कलात्मक अभिरुचि एवं सूझ-बूझ ही प्रमुख है। इस रुचि के अभ्यस्तों से उस सुसज्जा में विशेष सहयोग लिया जाय और जो चीजें अपने यहाँ उपलब्ध न हों, उन्हें दूसरों से उधार या किराये पर मँगा लिया जाय।

(२) एक पूजा की चौकी सुसज्जित की जाय। जिस पर एक ओर पत्र पुष्पों से सजा जल भरा कलश—दूसरी ओर एक सुन्दर सुसज्जित दीपक स्थापित हो। बीच में दो थाली रहें, जिनमें एक में वस्त्र के प्रतीक रखने के लिए और दूसरे में धूप बत्तियाँ खड़ी करने के लिये गीली मिट्टी के रंग बिरंगे किये हुए गोले रखे जा सकें।

(३) जिसका जन्मदिन है (यजमान) को आसन पर बिठाकर पंञ्चपात्र से पवित्रीकरण, आचमन, शिखा बन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन के षटकर्म कराये जायें।

(अ) **पवित्रीकरण**—अर्थात् बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से ढकना और गायत्री मन्त्र उच्चारण करने के उपरान्त इस जल को सिर पर छिड़क देना।

(आ) **आचमन**—अर्थात् चम्मच से तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए तीन आचमन करना।

(इ) **शिखा बन्धन**—अर्थात् गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए चोटी में गाँठ लगाना। अथवा सिर पर हाथ रखना।

(ई) **प्राणायाम**—अर्थात् मन ही मन में गायत्री मन्त्र जपते हुए दाहिना नकुआ बन्द करके बायें से साँस लेना, कुछ देर भीतर रोके रहना और अन्त में दाहिने नकुए से साँस बाहर निकाल देना।

(उ) **न्यास**—बाँये हाथ की हथेली पर जल रखकर दाहिने हाथ की पाँचों उँगली मिलाकर उन्हें बार-बार जल में डुबाना और क्रमशः मुख, नाक, आँख, कान, भुजा और जंघाओं—(पहले बाईं और फिर दाहिनी ओर) पर लगाना।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(ऊ) **पृथ्वी पूजन**—एक चम्मच जल पृथ्वी पर मातृ भूमि की पूजा के लिये गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुए डालना।

इन ६ कर्मों के लिये अलग-अलग मन्त्र भी हैं पर उनका अभ्यास सबको न होने से सामूहिक उच्चारण नहीं बन पाता। सामूहिक उच्चारण ही अच्छा लगता है। इसलिये गायत्री मन्त्र का सब कृत्यों में प्रचलन अधिक व्यापक एवं उपयोगी रहेगा।

इसके बाद यज्ञोपवीत धारण करे, दाहिने हाथ में कलावा बाँधा जाय तथा तिलक करें।

(४) षट् कर्म के बाद कलश एवं दीपक का पूजन पुष्प, धूप, चन्दन, अक्षत आदि से यजमान द्वारा किया जाय। इन दोनों पूजाओं में भी सामूहिक गायत्री मन्त्र उच्चारण हो। इसके बाद उपस्थित लोगों के मस्तक पर लगावे।

(५) जितने वर्ष जीवन के बीत चुके उतने छोटे दीपक और एक अगले वर्ष का प्रतीक बड़ा दीपक जलाया जाता है। एक थाली में उसको सुन्दर क्रम से सजाने की व्यवस्था पहले से ही रखी जाय। बीच में ऊपर मुख वाली बनी हुई रुई की बत्ती पूजा कार्यों में प्रयुक्त होती है। ये दीपक उसी ढंग के बनाये जायें। दीपक घी के जलाने चाहिए। 'घी के दीपक जलाना' खुशी का भी प्रतीक माना जाता है। सामूहिक रूप से एक-एक गायत्री मन्त्र उच्चारण करते हुए एक-एक दीपक स्थापित किया जाय। उसी समय दूसरी थाली में एक अगरबत्ती या धूप बत्ती जलाकर खड़ी की जाय।

जितने वर्ष हैं, उतने ही दीपक चारों ओर जलाये जायें। बीच में अगले वर्ष का प्रतीक बड़ा दीपक हो। यही बात धूपबत्तियों के बारे में है। हर स्थापन के समय एक-एक गायत्री मन्त्र सामूहिक रूप से बोला जाता रहे।

(६) इन दीपकों और बत्तियों का पूजन, अक्षत, रोली, चन्दन, पुष्प आदि सम्मिलित पदार्थों से किया जाय। पीछे इस चौकी की खड़े आरती उतारी जाय। आरती में भी गायत्री मन्त्र बोला जाय।

यदि सभी उच्चारणों में वाद्य यन्त्रों के साथ एक स्वर और एक ताल के साथ मधुरता पूर्वक सामूहिक गायत्रीगान होता रहे तो मधुरता और भी अधिक बढ़ सकती है। इतना न हो सके तो भी एक कण्ठ, एक ध्वनि, एक लय के साथ मन्त्रोच्चारण क्रियाबद्ध रूप से किया जाय। भद्दे, भौड़े और विकृत स्वर वाले जो साथ-साथ उच्चारण की व्यवस्था बिगाड़कर ऊँचा-नीचा स्वर बनायें अथवा आगे-पीछे दौड़ें उनसे मन ही मन गायत्री मन्त्र कहने को कह देना चाहिये। उच्चारण में सरसता, स्तर और समस्वरता का ध्यान रखे बिना कर्णकटु कर्कशता पैदा हो जाती है, इसलिये उच्चारण की ट्रेनिंग एवं परीक्षा की व्यवस्था बनाकर यह पहले ही निर्णय कर लेना चाहिए कि सामूहिक गान कौन-कौन करेंगे ?

(७) लोटे में जल लेकर सूर्य नारायण को अर्घ दिया जाय, गायत्री मन्त्र से।

(८) सब लोग पुष्प लेकर खड़े हों और गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुए जीवन की प्रतीक इस पूजा वेदी पर पुष्पाञ्जलि अर्पित करें। उसमें गायत्री मन्त्र ही बोला जाय।

(९) इसके बाद एवं उपस्थिति लोगों के हाथ में पीले अक्षत और पुष्प दिये जायें। गायत्री मन्त्र बोला जाय और आशीर्वाद स्वरूप उन्हें यजमान पर बरसाया जाय। जो मालायें पहनाना चाहे वे वैसा करें।

(१०) यजमान अपने से बड़ों के चरण छूकर प्रणाम करें, बराबर वालों और छोटों का अभिवादन करें।

इन विधानों में से अन्तिम पाँच क्रियाओं में सबको खड़ा हो जाना चाहिए। आरती, सूर्य अर्घ, पुष्पाञ्जलि आशीर्वाद और अभिवादन खड़े होकर करने होते हैं। शान्ति पाठ के बाद यह धर्म-कृत्य पूरा किया जाय और तदुपरान्त संगीत प्रवचनों का क्रम चले और अन्त में इलायची, सुपाड़ी से सबका सत्कार करके उत्सव समाप्त किया जाय।

यों, उपर्युक्त दस विधानों के अलग-अलग मन्त्र भी हैं। यदि वे छपे हुए सबके हाथों में हों तो अलग-अलग उच्चारण भी हो सकता है। यदि ऐसी सुविधा न हो तो गायत्री मन्त्र से भी काम चलाया जा सकता है। उपर्युक्त क्रियाओं के अलग-अलग मन्त्र जहाँ सुविधा हो उनका अभ्यास या प्रयोग किया जा सकता है, अन्यथा सर्व सुलभ मन्त्रराज गायत्री महामन्त्र तो ऐसा है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही जो सर्वत्र सब कार्यों में निस्संकोच प्रयोग हो सके। जहाँ संस्कृत का शुद्ध उच्चारण न बन पड़े अथवा अशिक्षित अधिक हों हाँ गायत्री मन्त्र का हर कार्य में प्रयोग ही सरल पड़ता है।

नव-निर्माण के लिये संघ शक्ति की सबसे बड़ी आवश्यकता पड़ेगी। इसी माध्यम से सत्प्रवृत्तियों का प्रचलन होगा जिसके अनुकरण की प्रेरणा पाकर साधारण मनोभूमि के लोग प्रवाह में बहने को तैयार हो सकें। इसी संघ शक्ति से मूढ़ता, दुराग्रह, अन्ध-परम्परा एवं अनैतिकता की अगणित शाखा-प्रशाखाओं से जूझना और संघर्षात्मक मोर्चा खड़ा करना सम्भव होगा। सड़े-गले खण्डहरों को तोड़ने और नवयुग का नवीन भवन बनाने के लिये ध्वंसात्मक और निर्माणात्मक दोनों ही प्रवृत्तियों की प्रौढ़ता और प्रखरता के साथ सक्रिय करना होगा। इस सन्दर्भ में अनेकों कार्यक्रम बनाने पड़ेंगे और एक से एक बड़े दुस्साहस पूर्ण कदम उठाने पड़ेंगे। पर यह सब सम्भव तभी होगा जब एक सुसंगठित-विचारवान् प्रबुद्ध लोगों की उत्साह भरी जन-सेना साथ हो। इस आवश्यकता की पूर्ति इन जन्म दिवसोत्सवों में की जा सकती है। यजमान को लोक-मंगल की दिशा में प्रकाश एवं प्रोत्साहन देने के लिये इस अवसर पर अच्छे प्रवचन, उद्‌बोधन, संगीत एवं परामर्शों की प्रभावशाली व्यवस्था रहेगी। उसका प्रभाव उपस्थित लोगों पर भी पड़ता ही है। यह उत्सव, आयोजन छोटे-बड़े चाहे जैसे ही पर उनका गहरा प्रभाव पड़ना है, क्योंकि उनका उद्देश्य जीवन की दिशा को मोड़ना और वैसा ही वातावरण पैदा करना है, मनोरंजन मात्र नहीं। विश्वास है कि यह पद्धति एक से दूसरे तक पहुँचते-पहुँचते असंख्य व्यक्तियों को युग-निर्माण योजना के साथ जोड़ देगी और उनमें से जो सजीव व्यक्ति होंगे एक संगठन के रूप में बँधकर अगले दिनों नव-निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करेंगे। हमारा जन्म दिवसोत्सव आन्दोलन धीरे-धीरे एक ऐसे सुदृढ़ संगठन की आवश्यकता पूरी करेगा जिसके आधार पर सड़े मस्तिष्कों को सुधारकर उनमें मंगलम् प्रबुद्धता भर देने की मनुष्य को देवता बनाने की महान् प्रक्रिया सम्भव होती देखी जा सके। युग बदलने की यही तो आधारभूत आवश्यकता है।

इन जन्मोत्सव, आयोजनों में कुछ बातें विशेष रूप से ध्यान रखने की हैं—

(१) जिसका जन्मदिन है वह प्रयत्नपूर्वक, आग्रहपूर्वक अपने सभी स्वजन सम्बन्धियों को आमन्त्रित करने का प्रयत्न करे ताकि उत्सव प्रभावशाली भी रहे और इसका प्रकाश अधिक लोगों तक पहुँचे।

(२) गमियों में नीबू का शरबत, जाड़ों में औषधियों की चाय जैसे सस्ते पेय पदार्थों के अतिरिक्त खाने की कोई चीज न रहे। अच्छा तो यह है कि सौंफ, इलायची, सुपारी मात्र पर्याप्त मानी जायें। स्थिति के अनुरूप इस प्रकार का निर्णय मित्र मण्डली को स्वयं कर लेना चाहिए।

(३) छोटे बच्चों के या मिशन के अपरिचित लोगों उत्सव मित्र-मण्डली की ओर से न मनाये जायें क्योंकि ऐसे आयोजन को मनोरंजन मात्र कह सकते हैं।

(४) उत्सव की पूजा प्रक्रिया समाप्त होते ही संगीत या प्रवचनों के माध्यम से जीवन के सदुपयोग की—नव-निर्माण की प्रेरणा देने का प्रयास किया जाय और इसके लिए प्रवचन या भजन पहले से ही तैयार किये होने चाहिए। गलेबाज गवैयों के निरर्थक गाने और मिशन की न समझने वाले किसी बड़े आदमी को यों ही कुछ बोलने के लिए बिठा देना समय की बर्बादी मात्र है। ऐसी बर्बादी से आरम्भ से ही सतर्क रहना चाहिए और आयोजन को हर प्रक्रिया निर्धारित उद्देश्य को पूर्ण करने वाली हो इसकी सावधानी के साथ पहले ही योजना बना लेनी चाहिए।

जन्म-दिवसोत्सव पर उद्‌बोधन संदेश

आदर्शवादी प्रेरणाओं को प्रभावपूर्ण ढंग से उभार

आत्म निर्माण और आत्म परिष्कार के साथ अपने आपको समाज के प्रति किस प्रकार उपयोगी बनाया जाय ? लोक सेवा के लिए क्या प्रयत्न किये जायें ? इन विषयों में सशक्त प्रेरणाएँ देने तथा प्रस्तुत दिशा में अग्रसर करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिए जन्मदिन आयोजन अत्यन्त उपयोगी प्रक्रिया है। इस अवसर पर मनुष्य जीवन का उद्देश्य समझने, उसे पूरा करने के लिए प्रयत्नशील होने तथा प्रस्तुत प्रयोजन के लिए अपना कर्तृत्व निर्धारित करने की प्रेरणा देने वाला कार्यक्रम रखे जाने चाहिए। आत्म निर्माण पूर्वक समाज निर्माण में सघन सहयोग देने के लिए जन्मदिन आयोजनों का व्यापक प्रचलन होना चाहिए।

इन आयोजनों की सार्थकता इस बात पर निर्भर है कि उनके माध्यम से आदर्शवादी प्रेरणाओं को चेतना में उतारा जा सका अथवा नहीं। जीवनोद्देश्य को समझाने और उसे प्राप्त करने तथा मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने वाले गुणों के प्रति आस्थाएँ जगाई जा सकीं अथवा नहीं ? यदि इन प्रश्नों का उत्तर हाँ में मिलता हो तो समझा जाना चाहिए कि जन्मदिन सार्थक रहा और इसका उत्तर हाँ में प्राप्त करने के लिए आयोजन के प्रत्येक चरण के साथ उपयुक्त प्रेरणाओं को जुड़ा रखना चाहिए। इसी के लिए जन्मदिन के साथ दिये जाने वाले उद्‌बोधन को महत्व दिया गया है।

इस सन्दर्भ में एक बात ध्यान रखी जानी चाहिए कि प्रेरणा प्रदान करने का अर्थ शुष्क जानकारी भर देना नहीं है। यदि ऐसा होता, तब तो प्रेरणा देना, हर किसी के लिए आसान होता। जानकारियाँ कदम-कदम पर मिलती हैं। वस्तुतः प्रेरणा देने का अर्थ आदर्शवादी आस्थाओं को उभारने से है। जन्मदिन-आयोजन में धार्मिक वातावरण में कर्म काण्डों के माध्यम से इसी प्रयोजन की पूर्ति की जाती है। अतएव इस अवसर पर ऐसी आदर्शवादी प्रेरणाएँ प्रभावशाली ढंग से उभारी जानी चाहिए जो यजमान को ही नहीं उपस्थित लोगों को भी अपने जीवन के सम्बन्ध में सोचने की नई दिशा दे सके।

यह कार्य कर्मकाण्डों की व्याख्याओं एवं स्वतन्त्र प्रवचनों के माध्यम से भलीभाँति पूरा किया जा सकता है जन्मदिन के अवसर पर क्या उद्‌बोधन किया जाना चाहिए ? इसके मोटे-मोटे सिद्धान्त थोड़े से हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें जब भी कहा या विवेचित किया जाये तो पुनरावृत्ति जैसा अभाव न हो अर्थात् भिन्न-भिन्न ढंग से इस प्रकार उद्‌बोधन किया जाये कि सुनने वालों को उनमें नवीनता का अभास मिलता रहे।

इन सिद्धान्तों को भिन्न-भिन्न ढंग से कहा जाना कठिन लग सकता है। लेकिन कुछ सूक्ष्म बातों का ध्यान रखा जाये तो यह कठिनाई दूर हो सकती है और नये-नये ढंग से कहने की शैली विकसित की जा सकती है। पहली सावधानी तो परिवेश के सम्बन्ध में अध्ययन करते हुए बरती जानी चाहिए। सभी परिवारों का वातावरण एक-सा नहीं होता और किसी परिवार का वातावरण भी सदैव एक-सा नहीं रहता। अलग-अलग परिवारों का भावनात्मक और चिन्तनगत स्तर भिन्न-भिन्न होता है। यदि उसे ध्यान से रखकर तदनुकूल शैली अपनाई जाए तो सरलता से उद्‌बोधन में नवीनता और रोचकता का समावेश किया जा सकता है।

कर्मकाण्डों की टिप्पणियाँ और व्याख्यायें करते समय भी यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि वे बुद्धि प्रधान कम और भाव प्रधान अधिक हों। उसमें नवीनता बनाये रखने के लिए पर्याप्त संभावनाएँ रहती हैं। आत्म शोधन के षट्‌कर्म से लेकर देव-पूजन, यज्ञ एवं जन्मदिन के कर्मकाण्डों तक में प्रेरणाएँ उभारे जाने योग्य अनेकों प्रसंग हैं। उनमें प्रत्येक के साथ व्याख्याएँ जोड़ी जायें तो कर्मकाण्ड ही घण्टों समय ले लेगा। यह न उचित है और न आवश्यक अधिकांश कर्मकाण्ड संक्षिप्त दिशा निर्देश देते हुए सम्पन्न करा दिये जायें और कुछ की व्याख्या कर दी जाये तो निर्धारित समय में कर्मकाण्ड पूरे हो सकते हैं। किसी कार्य का संचालन विचारपूर्वक करें तो अपनी टिप्पणियों और व्याख्याओं के माध्यम से प्रत्येक में नया आकर्षण उत्पन्न किया जा सकता है। अर्थात् कभी किसी कर्मकाण्ड पर विशेष जोर दे दिया तो कभी किसी पर प्रत्येक आयोजन में नवीनता बनाये रखने के लिए यह शैली बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

उपस्थित व्यक्तियों को देखकर उनकी मनः स्थिति और प्रकृति का अनुमान लगाकर पहले से ही यह निर्धारित कर लेना चाहिए कि इस अवसर पर कौन-सी दिशाएँ देना उपयुक्त होगा ? उसी के अनुसार थोड़े से प्रसंग चुनकर उनकी व्याख्या थोड़े विस्तार से की जाये। इस प्रकार हर आयोजन में व्याख्या का उद्‌बोधन के लिए नये-नये विषयों को चुना जा सकता है। इससे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आयोजन में पहुँचने वालों को तो नई-नई प्रेरणाएँ मिलेंगी ही वे सब प्रेरणाएँ मिलकर समग्र जीवन दर्शन पर उनका ध्यान आकर्षित करेंगी।

कर्मकाण्ड की व्याख्याओं के अतिरिक्त स्वतन्त्र उद्‌बोधन भाषणों को भी प्रेरणाएँ उभारने का माध्यम बनाया जाना चाहिए इसके लिए लगभग आधा घण्टा समय बचाकर रखना चाहिए। यह समय व्रत घोषणा के पूर्व या पश्चात् हो सकता है। यदि पहले रखा जाय तो यजमान क्या व्रत लेना चाहता है, इस पर पूर्व चर्चा आवश्यक है। उसी विषय को उभारते हुए, उसके महत्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए उद्‌बोधन दिया जाए। यदि घोषणा के बाद प्रवचन किया जाय तो किये गये संकल्प की सराहना एवं उसके निर्वाह को विभिन्न बारीकियों पर ध्यान दिलाना चाहिए। उपस्थित व्यक्तियों एवं देव शक्तियों से संकल्प कर्त्ता को सहयोग करने एवं शक्ति देने की भाव-भरी अपील प्रार्थना भी उसी के साथ जुड़ी रहनी चाहिए।

प्रत्येक आयोजन में उद्‌बोधन भाषण नवीनता लिये हुए हों, उसके लिए व्यापक विषय है। विषयों की कमी नहीं है उदाहरण के लिए जीवनोद्देश्य की महत्ता, मनुष्य जीवन की सार्थकता से लेकर अपनाए जाने योग्य सद्‌गुण सत्प्रवृत्तियों की बहुत लम्बी सूची है। उनमें से किसी को भी आधार बनाया जा सकता है। आत्म निर्माण एवं आत्म विकास के सूत्रों की व्याख्या की जा सकती है जीवन में साधना स्वाध्याय संयम एवं सेवा के समावेश का कल्याणकारी प्रभाव विवेचित किया जा सकता है। जीवन की सफलता में सहायक व्यावहारिक गुणों को आधार बनाया जाना भी उपयुक्त है। इनमें से किसी भी विषय पर एक ही धारा पर आधा घण्टे का पूरा उद्‌बोधन दिया जा सकता है।

किसे ? किसके जन्मदिन पर ? किस प्रसंग पर बोलना है ? इसका निर्धारण पहले से ही कर लेना चाहिए और जिसे उद्‌बोधन का दायित्व सौंपा जाये उसे अपने वक्तव्य की पूर्व तैयार करने के लिए कहा जाये। इससे बोलने वाले की वकृत्व शैली तो परिमार्जित होगी ही निखरा हुआ भाषण श्रोताओं पर भी अनूठा प्रभाव छोड़ सकेगा।

जिसका जन्मदिन मनाया जा रहा है उद्‌बोधन उसके उपयुक्त हो तो रखा जाय पर यह नहीं मान लेना चाहिए कि उसकी सीमा यहीं तक सीमित है। प्रस्तुत आयोजन का उद्देश्य एक मुख्य व्यक्ति के साथ-साथ अन्य लोगों का शिक्षण करना भी है। सामूहिक स्तर पर कही जाने वाली बात का एक ढंग यह भी है कि किसी एक व्यक्ति को सम्बोधित कर जो कहना हो, वह कहा जाता रहे बाकी लोग उसे सुनते रहें। यह कहने की एक शैली मात्र है अन्यथा कहा तो सभी उपस्थित व्यक्तियों से जाता है। वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में निर्यायक या अध्यक्ष को सम्बोधित कर ही अपना पक्ष रखा जाता है किन्तु कहा सभी लोगों से जा रहा होता है। सत्य नारायण कथा में एक व्यक्ति को यजमान बनाकर बिठा लेते हैं और कथा पढ़ी जाती है और उसे सम्बोधित कर कथा कही जाती है, जबकि कथा सुनने के लिए अनेकों व्यक्ति वहाँ उपस्थित होते हैं। संस्कार आयोजनों में भी यही शैली अपनाई जाती है और जन्मदिन कार्यक्रमों में भी यही पद्धति अपनाई जानी चाहिए।

जन्मदिन व्यक्ति विशेष का होता है, जिसका जन्मदिन मनाया जाता है, वह आयोजन का नायक होता है। इसलिए प्रेरणा उद्‌बोधन एवं संदेश को मुख्यतः उसके लिए होता है पर उस माध्यम से शिक्षण समूचे परिवार का, उपस्थित सभी व्यक्तियों का होता है। यद्यपि अन्य संस्कारों की अपेक्षा इसमें सम्बन्धित व्यक्ति शिक्षण का मुख्य केन्द्र रहता है, उसके व्यक्तित्व को लक्ष्य कर प्रेरणाएँ दी जाती हैं, किन्तु शिक्षण सभी का होता है और होना चाहिए।

इस प्रकार उद्‌बोधन के लिए विविध विषय चुने और निर्धारित किये जा सकते हैं। नवीनता और रोचकता बनी रहे, विभिन्न आयोजनों में एक रसता न आने पाये इसका समुचित ध्यान रखा जाय तो जन्मदिन आयोजन के माध्यम से शिक्षण की महत्वपूर्ण आवश्यकता पूरी हो सकती है और इन आयोजनों का प्रचलन उद्देश्यपूर्ण सार्थक तथा सत्परिणाम प्रस्तुत करने वाला हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्मदिवसोत्सव—उद्देश्य और शिक्षा

मानुष्यं प्राप्यते लोके देव दुर्लभमुत्तमम्।
जन्मजन्मान्तरीयाणां प्रसादात्पुण्य कर्मणाम्।। १।।

इस संसार में मनुष्य का शरीर देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। यह मानव शरीर अनेक जन्मों के पुण्य कर्मों का प्रसाद है।

मृत्यूद्गम श्रृंखलासु जीवानान्तु महत्तमः।
स्वर्णिमावसरो लोके ईश्वरीयानुकम्पया।। २।।

जन्म और मरण की अनन्त श्रृंखलाओं के उस प्रभु की अनुकम्पा से संसार में यह महान् स्वर्णिम अवसर प्राप्त होता है।

दिनस्यास्य शुभारम्भो भावी कल्याणकारकः।
तस्मिन्नहनि दुष्प्राप्यं मत्वा मानव जीवनम्।। ३।।
सद्भाव सुविचाराणां सत् प्रेरणा सुकर्मणाम्।
वातावरण विस्तारं कृत्वा हर्षान्वितो भवेत्।। ४।।

इस दिन का शुभारम्भ ही भावी जीवन का कल्याणकारी निर्माण करता है। उस दिन मनुष्य जीवन की दुर्लभता को समझकर शुभ चिन्तन, शुभ कर्म, शुभ प्रेरणाओं का वातावरण विस्तृत कर हर्षान्वित होवे।

कर्मणः स्वानुभूतस्य जीवनस्य सुशिक्षणम्।
गृहीत्वा प्रगतिं कुर्याद् गन्तव्यमुत्तमं प्रति।। ५।।

अपने गत अनुभूत जीवन और कर्म की सत् शिक्षा को ग्रहण कर उत्तम लक्ष्य की ओर प्रगति करे।

प्रायश्चित्त विधानैः स्वमुपनयन कर्मणा।
संशोध्य मंगलारम्भं कुर्यात् प्रसन्न चेतसा।। ६।।

उपनयन कर्म एवं प्रायश्चित विधान से स्वयं को शुद्ध कर प्रसन्नचित्त से मंगलारम्भ करे।

भवेद् दिव्य गुणयुतः श्रेयसे स्वात्म विश्वयो।
निस्सार्याऽऽसुर तत्वानि काम क्रोध भयानि च।।७।।
लोभा ऽहं भाव मोहांश्च मदादीन्यऽपराणि तु।
परिपूर्य गुणैर्दिव्यैः सत्यज्ञानाऽऽदिभिः स्वयग्।। ८।।

अपने और विश्व के कल्याण के लिए देवी गुणों को ग्रहण करे, तथा काम क्रोध, भय, लोभ, अहंकार तथा मद आदि अन्य आसुरी वृत्तियों को दूर कर और देवी सत्यज्ञान आदि सत्प्रवृत्तियों से युक्त होकर, सदाचार के लिए दृढ़ सकल्प करें।

कुर्यात्सु दृढ संकल्पं सदाऽऽचरण हेतवे।
अन्यैः कृताऽपराधं यदपकारं तथैव च।। ६।।
विस्मृत्य मूलतश्चित्तात् कृतज्ञभावसंयुतः।
उपकारान्स्मृतिं धृत्वा सर्वदा शुभमाचरेत्।। १०।।

अन्य कृत अपराध एवं अपकार मूलतः चित्त से भूलकर कृतज्ञता भाव से मुक्त होकर दूसरों के उपकारों का स्मरण कर सर्वदा शुभ आचरण करें।

यथा विश्राम निद्रान्ते प्रभाकराऽरुणोये।
नवचैतन्यमुत्साहं नव शक्तिञ्च साहसम्।। ११।।
प्राप्य करोति कार्याणि ह्यस्मिञ्जगति मानवः।
शुद्धां वृत्तिं तथैवेमां समाश्रित्य सुविस्तृताम्।। १२।।
कृत्योत्थानं चरेन्मर्त्यः नव सम्बल संयुतः।
मानवजन्मना शिक्षा ग्रहणीया सुधैरियम्।। १३।।

जैसे विश्राम और निद्रा के उपरान्त उषा की अरुणिमा के उदय काल में नवीन चेतना, उत्साह, शक्ति एवं साहस को प्राप्त कर मनुष्य इस संसार में कार्य करता है, उसी प्रकार इस वृत्ति को दीर्घ विशाल और विस्तृत, बनाकर नव सम्बल लेकर मनुष्य उत्थान की ओर गति करे। बुद्धिमानों को मानव जन्म से यही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

जन्म-दिवसोत्सव—व्यवस्था एवं विधि संस्कार प्रयोजन

यों प्रचलित अनेक पर्व-त्यौहार आते और मनाये जाते हैं पर व्यक्तिगत दृष्टि से मनुष्य का अपना जन्मदिन ही उसके लिए सबसे बड़े हर्ष, गौरव एवं सौभाग्य का दिन हो सकता है। राम के जन्मदिन की तिथि रामनवमी और कृष्ण का जन्मदिन-जन्माष्टमी जितनी महत्वपूर्ण है उतना ही किसी सामान्य व्यक्ति के जीवन में उसका जन्मदिन किसी भी प्रकार कम आनन्द एवं उल्लास का नहीं होता। उसे ठीक तरह मनाया जाय तो अपना प्रसुप्त आनन्द और उल्लास जगेगा। इसी अवसर पर यदि थोड़ा अधिक गम्भीर आत्म-निरीक्षण कर लिया जाय और आगे के लिए कुछ ठोस सदुपयोग की बात सोच ली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाय तो वह दिन एक नये सूर्योदय जैसा प्रकाशवान् हो सकता है। बुद्ध, वाल्मीकि, सूरदास, तुलसी, अंगुलिमाल आदि के पूर्व जीवन बहुत अच्छे न थे पर एक दिन उनकी अन्तःस्फुरणा जग पड़ी तो उनने अपनी दिशा ही बदल दी। यह बदलना इतना महत्वपूर्ण हुआ कि वे नर से नारायण बन गये। जन्म-दिन की उल्लास भरी घड़ी में यदि मनुष्य यत्किंचित् भी आत्मनिर्माण की बात सोचने लगे तो वह उसी अनुपात में उसके सौभाग्य की घड़ी सिद्ध हो सकती है।

जन्मदिन दिखने में सामान्य किन्तु प्रभाव में असामान्य संस्कार है। किसी वर्ग किसी भी स्तर के व्यक्तियों के बीच इसे लोकप्रिय बनाया जा सकता है। एक इसी संस्कार के माध्यम से जन चेतना को झकझोर कर सदाशयता से जोड़ देने का काम बड़ी कुशलता से सम्पन्न किया जा सकता है। सभी सृजन शिल्पियों को कटिबद्ध होकर इसे लोकप्रिय बनाना चाहिए।

विशेष व्यवस्था

जन्मदिन संस्कार यज्ञ के साथ ही मनाया जाना चाहिए। अन्तःकरण को प्रभावित करने की अपनी क्षमता विशेष है। परन्तु चूँकि इसे जन-जन का आन्दोलन बनाना है इसलिए यदि परिस्थितियाँ अनुकूल न हों तो केवल दीपयज्ञ करके भी जन्मदिन संस्कार कराये जा सकते हैं। नीचे लिखी व्यवस्थायें पहले से बनाकर रखी जायें।

❑ पंच तत्व पूजन के लिए चावल की पाँच छोटी ढेरियाँ पूजन वेदी पर बना देनी चाहिए। पाँच तत्वों के लिए पाँच रंग के चावल भी रंग कर अलग-अलग छोटी डिब्बियों या पुड़ियों में रखे जा सकते हैं। उनकी रंगीन ढेरियाँ लगा देने से शोभा और भी अच्छी बन जाती है। तत्वों के क्रम और रंग इस प्रकार हैं—(१) पृथ्वी-हरा, (२) वरुण-काला, (३) अग्नि लाल, (४) वायु-पीला, (५) आकाश-सफेद। इसी क्रम में ढेरियाँ लगाकर रखनी चाहिए।

❑ **दीपदान**—जन्मोत्सव के लिए दीपक बनाकर रखे जायें। जितने वर्ष पूरे किये हों उतने छोटे दीपक तथा नये वर्ष को थोड़ा बड़ा दीपक बनाया जाय। दीपक आटे के भी बनाये जा सकते हैं और मिट्टी के भी रखे जा सकते हैं। अभाव में मोमबत्तियों के टुकड़े भी प्रयुक्त किए जा सकते हैं। उन्हें थाली या ट्रे में सुन्दर आकारों में सजाकर रखना चाहिए।

❑ व्रत धारण में क्या व्रत लिया जाना है इसकी चर्चा पहले से ही कर लेनी चाहिए।

विशेष कर्मकाण्ड

अन्य संस्कारों की तरह मंगलाचारण से रक्षा विधान तक के उपचार पूरे किये जावें। इसके बाद क्रमशः यह कर्मकाण्ड कराये जावें।

पंचतत्व पूजन

शिक्षण एवं प्रेरणा—शरीर पंच तत्वों से बना है। इस संसार का प्रत्येक पदार्थ मिट्टी, जल, गर्मी, वायु, आकाश इन पाँच पदार्थों से बना है। इसलिए इस सृष्टि से आधारभूत-यह पाँच ही दिव्य तत्व देवता है। उपकारी के प्रति कृतज्ञता की भावनाओं से अन्तःकरण ओत-प्रोत रखना भारतीय संस्कृति का अविछिन्न अंग है। हम जड़ और चेतन सभी उपकारियों के प्रति कृतज्ञता भावना की अभिव्यक्ति के लिए पूजा-प्रक्रिया का अवलम्बन लेते हैं। पूजा से इन जड़ पदार्थों, अदृश्य शक्तियों, स्वर्गीय आत्माओं का भले ही कोई लाभ न होता हो, पर हमारी कृतज्ञता का प्रसुप्त भाव जाग्रत होने से हमारी आन्तरिक उत्कृष्टता बढ़ती ही है। पंच तत्वों का पूजन इनके विश्व के आधार स्तम्भ होने की महत्ता के निमित्त किया है।

इस पूजन का दूसरा उद्देश्य यह है कि इन पाँचों के सदुपयोग का ध्यान रखा जाय। शरीर जिन तत्वों से बना है, उनका यदि सही रीति-नीति से उपयोग करते रहा जाय तो कभी भी अस्वस्थ होने का अवसर न आवे। पृथ्वी से उत्पन्न अन्न का कितना, कब और कैसे उपयोग किया जाय, इसका ध्यान रखें तो पेट शराब न हो, पेट की खराबी हो तो समस्त रोगों की जड़ है। यदि आहार की सात्विकता, मात्रा एवं व्यवस्था का ध्यान रखा जाय तो न अपच हो और न किसी रोग की सम्भावना बने। जल की स्वच्छता एवं उचित मात्रा में सेवन करने का, विधिवत् स्थान का, वस्त्र, बर्तन, घर आदि की सफाई, जल के उचित प्रयोग का ध्यान रखा जाय तो समग्र स्वच्छता बनी रहे, शरीर, मन तथा वातावरण सभी कुछ स्वच्छ रहे। अग्नि की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपयोगिता सूर्य ताप को शरीर, वस्त्र, घर आदि में पूरी तरह प्रयोग करने में है। भोजन में अग्नि का सदुपयोग भाप द्वारा पकाये जाने में शरीर के भीतर अग्नि ब्रह्मचर्य द्वारा सुरक्षित रहती एवं बढ़ती है। स्वच्छ वायु का सेवन, खुली जगहों में निवास, प्रातः टहलने जाना, प्राणायाम, गन्दगी से वायु का दूषित न होने देना आदि वायु की प्रतिष्ठा है। आकाश की पोल में ईथर, विचार, शब्द आदि अनेक तत्व भरे पड़े हैं, उनका मानसिक एवं भावना क्षेत्र में इस प्रकार उपयोग किया जाय कि हमारी अन्तःचेतना उत्कृष्ट स्तर की ओर चले, यह जानना, समझना आकाश तत्व का उपयोग है। इसी सदुपयोग के द्वारा हम अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को दिन-दिन बढ़ा सकते हैं, सुख-शान्ति और समृद्धि का पथ-प्रशस्त कर सकते हैं। पंचतत्वों का पूजन हमारा ध्यान इनके सदुपयोग की ओर आकर्षित करता है।

तीसरी प्रेरणा यह है कि शरीर पंच तत्वों का बना होने के कारण जरा, मृत्यु से बँधा हुआ है। यह एक वाहन और माध्यम है। जड़ होने के कारण इसका महत्व कम है। इसे एक उपकरण, औजार मात्र माना जाय। शरीर ,की सुख-सुविधा, तृष्णा-वासना को इतना महत्व न दिया जाय कि आत्मा के स्वार्थ पिछड़ जायें। आत्मा की उन्नति के लिए पंच तत्वों से बना यह शरीर मिलता है, इसलिए उसका सदुपयोग निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति के लिए ही किया जाय।

क्रिया और भावना—प्रत्येक तत्व के पूजन के पूर्व उसकी प्रेरणायें उभारी जावें। हाथ में अक्षत पुष्प देकर मन्त्रोच्चार के साथ सम्बन्धित प्रतीक पर अर्पित करायें। भावना की जाय सृष्टि रचना के इन घटकों के अन्दर ईश्वरीय योजना को सफल बनाने वाले जो सूक्ष्म संस्कार हैं वह पूजन के द्वारा स्थापित सम्पर्क के सहारे साधक को प्राप्त हो रहे हैं।

अग्नि

ॐ त्वं नो ऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाँ सि प्रमुमुग्ध्यस्यमत्।। ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

—यजु. २१/३

पृथ्वी

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः।। ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

—यजु. ८/३२

वायु

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ वायवेनमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

—यजु. २७/२८

वरुण

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा नऽ आयुः प्र प्रमोषीः।। ॐवरुणाय नमः।। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

—यजु. ९८/४६

आकाश

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा।। ॐ आकाशाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

—यजु. ७/११

दीपदान

शिक्षण और प्रेरणा—जन्मोत्सव का दूसरा कर्मकाण्ड दीपदान है। जितने वर्ष की आयु हो उतने दीपक एक सुसज्जित चौकी पर बनाकर सजाये जाते हैं। आटे के ऊपर बत्ती वाले घृत दीप एक थाली में इस तरह सजाकर रखे जा सकते हैं कि उनका स्वस्तिक अथवा कोई और सुन्दर रूप बन जाय। इन दीपकों के आस-पास पुष्प, फल, धूप, बत्तियाँ, गुलदस्ते या कोई दूसरी चीजें सुन्दरता बढ़ाने के लिए रखी जा सकती हैं। कलात्मक सुरुचि भीतर हो तो सुसज्जा के अनेक प्रकार बन सकते हैं। इन दीपकों का पूजन किया जाता है।

जीवन का प्रत्येक वर्ष दीपक के समान प्रकाशवान रहे तभी उसकी सार्थकता है। दीपक स्वयं तिल-तिल करके जलता है और अन्धकार में प्रकाश उत्पन्न करता है, इस रीति-नीति का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतीक होने के कारण ही दीपक की प्रत्येक मांगलिक कार्य में पूजा एवं प्रधानता मिलती है। हमारे जीवन की रीति-नीति ऐसी ही होनी चाहिए।

दीपक को ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। अज्ञान को अन्धकार व ज्ञान को प्रकाश की उपमा दी जाती है। जिस सीमा तक हमारा मस्तिष्क या हृदय अज्ञानग्रस्त है उतना ही हम अन्धेरे में भटक रहे हैं। मस्तिष्क का अन्धकार दूर करने के लिए हमें शिक्षा और हृदय का अन्धकार दूर करने के लिए विद्या ऋतम्भरा ज्ञान को अधिकाधिक मात्रा में संग्रह करना चाहिए। आत्मज्ञान का वैसा दीपक हमें अन्तःकरण में जलाना चाहिए जैसा रामायण के उत्तरकाण्ड में विस्तारपूर्वक बताया गया है। दीपदान में ऐसी ही अनेक प्रेरणायें सन्निहित हैं।

क्रिया और भावना—थाली में सजाये दीपकों को क्रमशः प्रज्जवलित किया जाय। उसके साथ सस्वर गायत्री मन्त्र का पाठ चलायें। यदि यज्ञ न करके केवल दीपयज्ञ ही करना हो तो गायत्री मन्त्र के साथ स्वाहा लगाकर दीपक जलने की क्रिया को आहुति मानते हुए यज्ञीय वातावरण बनाया जाय।

भावना की जाय कि मनुष्य कितने भी कम साधनों में जी रहा हो, छोटे से नाचीज दीपक की तरह सबका प्रिय प्रकाशदाता बन सकता है। छोटी-सी पात्रता, थोड़ा-सा स्नेह और जरा-सी वर्तिका (लगन) को ठीक क्रम से सजाकर ज्योतिदान प्राप्त कर सकता है। ज्योति जीवन की कामना, प्रार्थना करते हुए दिव्य शक्तियों द्वारा उसकी पूर्ति की भावना की जानी चाहिए।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

—यजु. ३६/२४

व्रतधारण

अगला क्रम जन्मोत्सव का व्रत धारण है। व्रतों के बन्धनों में बँधा हुआ व्यक्ति ही किसी उच्च लक्ष्य की ओर दूर तक अग्रसर हो सकने में समर्थ होता है मनुष्य को शुभ अवसरों पर भावनात्मक वातावरण में देवताओं की उपस्थिति में अग्नि की साक्षी में कम से कम एक बुराई छोड़ने और एक अच्छाई ग्रहण करने का व्रतधारण करना चाहिए और उनका पालन करने के लिये साहस एकत्रित करना चाहिए।

क्रिया और भावना—लिये गये व्रतों का उल्लेख किया जाय। उनका स्मरण रखते हुए व्रतपति देवशक्तियों से उनकी वृत्ति एवं शक्ति सहित मार्गदर्शन निरीक्षण की याचना की जाय। दोनों हाथ ऊपर उठाकर व्रतधारण के मन्त्र बोले जावें।

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। १।।

ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। २।।

ॐ सूर्यो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। ३।।

ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। ४।।

ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। ५।। —मन्त्र ब्राह्मण ७/६/६-१३

विशेष आहुति

व्रतधारण के बाद यज्ञादि क्रम पूरे किये जावें। गायत्री मन्त्र की आहुति के बाद मृत्युञ्जय मन्त्र की आहुतियाँ दी जावें। यदि केवल दीप यज्ञ किया गया हो तो सभी लोग ५ बार मृत्युञ्जय मन्त्र का सस्वर पाठ करें।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा। इदं महामृत्युञ्जयाय इदन्न मम।

—यजु ३/६०

इसके बाद यज्ञ के शेष उपचार पूरे करके आशीर्वाद आदि के साथ समापन किया जाय।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विवाह-दिवसोत्सव-संस्कार

विवाह-दिवसोत्सव कैसे मनावें ?

एकाकी मनुष्य अपूर्ण है। पति-पत्नी दोनों के सम्बन्ध से एक पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है। स्त्री और पुरुष की अपनी-अपनी कुछ ऐसी विशेषतायें हैं, जो दूसरे में नहीं। इन दोनों के समन्वय से वे अभाव दूर होते हैं, जिनके कारण मानसिक शान्ति और सांसारिक सुख-सुविधाओं का द्वार रुका पड़ा रहता है। गाड़ी के दो पहियों की तरह मानव-जीवन पति-पत्नी के दो आधारों पर चलता है। दो आँख, दो कान, दो हाथ, दो पैर की तरह मनुष्य जीवन भी दो अंगों में विभक्त है। दोनों से मिलकर शरीर शोभा पाता है अन्यथा एकाकीपन काने, लँगड़े, लूले, बूचे व्यक्ति की तरह कुरूप एवं अव्यवस्थित बनकर रह जाता है। उसमें एक अभाव का, एक कसक का निरन्तर अनुभव होता रहता है।

योगी, ज्ञानी, परमार्थी महामानव अपनी सांसारिक आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को समाप्त कर ज्ञान, परमार्थ एवं ब्रह्म चिन्तन के उस उच्चस्तर पर जा पहुँचते हैं, जहाँ जीवन की लौकिक सुव्यवस्था की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती। उनके लिये अविवाहित रहना उपयुक्त हो सकता है। किन्तु जिन्हें स्वाभाविक एवं सरल जीवन जीना है, उनके लिये जोड़े से रहने में जो सुविधा है वह और किसी प्रकार नहीं। अपवाद सब में होते हैं, जो एकाकी जीवन बिना किसी क्षोभ या अभाव का अनुभव किये जी सकते हैं, वे सराहनीय हैं। पर उन्हें कहा अपवाद ही जायगा। साधारणतया हर मनुष्य को अपने समय पर गृहस्थ बनकर रहने की ही आवश्यकता पड़ती है। उसी में सुविधा भी हैं।

विवाह प्रगति में सहायक

कई व्यक्ति आध्यात्मिक प्रगति में दाम्पत्य-जीवन को बाधक मानते हैं और सोचते हैं कि एकाकी रहेंगे तो उन्हें वैरागी माना जायेगा, भजन अच्छा बनेगा या स्वर्ग मुक्ति का लाभ जल्दी भी मिल जायेगा। ऐसे लोगों को प्राचीनकाल में ऋषियों के जीवन पर दृष्टिपात करना चाहिये, पुराण पढ़ने चाहिये। एक-दो को छोड़कर प्रायः सभी ऋषि गृहस्थ थे और सबके सन्तानें थीं। सिख धर्म के प्रायः सभी गुरु गृहस्थ हुए हैं। भगवान राम, कृष्ण, शंकर एवं समस्त देवता गृहस्थ थे। यदि दाम्पत्य-व्यवस्था आध्यात्मिक प्रगति में बाधक रही होती, तो हमारा सारा इतिहास ही दूसरे ढंग का होता, गृह-त्याग की व्यवस्था तो बुद्ध सम्प्रदाय की देन है। भारतीय धर्म का अंग वह कभी नहीं रही। चार आश्रमों की व्यवस्था में हर व्यक्ति को गृहस्थ होना चाहिये। तीसरेपन में वानप्रस्थ लेकर पत्नी समेत समाज सेवा में लगना चाहिये और अन्त में सन्यास लेना हो तो भी ऋषियों की तरह उस व्यवस्था में भी पत्नी को साथ रखा जा सकता है।

कहने का तात्पर्य इतना भर है कि दाम्पत्य जीवन की श्रेष्ठता, उपयोगिता एवं आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता है। उससे दो अभावग्रस्त पक्ष एकत्रित होकर अपनी विशेषता से दूसरे का अभाव पूरा करते और एक पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण की व्यवस्था बनाते हैं। मानव-जन्म पाने के बाद दूसरा सबसे बड़ा सौभाग्य विवाह ही माना गया है। इसी से तो 'या बेटा जाये या बेटा विवाहे' की उक्ति के अनुसार जन्म और विवाह की खुशी को समान माना गया है। वरन् सच तो यह है कि जन्म से विवाह का आनन्द हमारे समाज में अधिक माना जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्म के अवसर पर जितने गीत, मंगल, उत्सव, गाजे-बाजे आदि के खर्च की व्यवस्था होती है, उससे कई गुनी अधिक विवाह के अवसर पर होती है। जन्म की अपूर्णता को विवाह पूर्ण करता है, इसलिये आनन्द, उल्लास एवं लाभ किसी भी प्रकार कम नहीं। एक बैल से खेती करना मुश्किल पड़ता है। इसी प्रकार एकाकी जीवन में असुविधायें ही भरी रहती हैं। असुविधा को सुविधा में, अवरोध को प्रगति में, अवसाद को उल्लास में परिणत कर देने वाला विवाह सचमुच मानव प्राणी का असाधारण सौभाग्य ही है।

नये समाज का नया निर्माण

हर व्यक्ति एक निर्माता ब्रह्मा है, वह एक नये समाज का सृजन, निर्माण एवं विकास करता है। कहते हैं कि यह सृष्टि आदम और हब्बा, मनु-शतरूपा ने मिलकर बनाई। हर गृहस्थ अपने आप में एक आदम-हब्बा, मनु-शतरूपा बनता है और एक नई सृष्टि का सृजन, पालन एवं विकास करता है। यदि यह उत्तरदायित्व ठीक तरह निबाहा जा सके, तो उससे नये समाज का, नये संसार का निर्माण होगा। हर गृहस्थ अपना दाम्पत्य कर्त्तव्य, गृहस्थ संचालन ठीक तरह करने लगे तो बीस वर्ष उपरान्त नये युग, नये समाज, नये संसार का वातावरण आँखों के सामने उपस्थित हो सकता है। हर गृहस्थ एक गुरुकुल है, जिसमें जन्मे, पले, बढ़े बालक वैसे ही बनते हैं, जैसे कि उस गुरुकुल के संचालक माता-पिता होते हैं। हर गृहस्थ, विशाल मानव समाज की एक सुगठित इकाई है। समाज परिवारों के रूप में ही तो विभक्त है। शासन को जैसे छोटे-छोटे थानों में बाँट दिया जाता है, उसी तरह यह विश्व या समाज गृहस्थों के रूप में विभक्त है। इन घटनाओं की जैसी भली-बुरी स्थिति होती है, उसी के अनुरूप समाज बन जाता है। समाज का जैसा भी स्वरूप अभीष्ट हो हमें उसका ढाँचा गृहस्थ जीवन में खड़ा करना होगा। राष्ट्र का नया निर्माण गृहस्थ जीवन से ही सम्भव है। पूरे खेत में एक साथ पानी नहीं भरा जा सकता, सिंचाई क्यारियों द्वारा ही होती है। युग का निर्माण, गृहस्थ के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

विकृतियों का समाधान

आज हमारा सारा समाज अगणित उलझनों और समस्याओं से घिरा, व्यथा, वेदनाओं से, क्लेश-कलह से, दुःख-दारिद्र से संत्रस्त हो रहा है। इसका कारण हमारे गृहस्थ जीवनों में दाम्पत्य सम्बन्धों में फैल रही विकृतियाँ ही हैं। ऐसे सौभाग्यशाली गृहस्थ बहुत कम ही मिलेंगे, जिनमें पति-पत्नी दूध, पानी की तरह एक होकर रहे हों, अपना आपा दूसरे में घुला चुके हों, दो मिलकर एक हो चुके हों, जिनमें तनिक भी दुःख, अविश्वास या सन्देह न हो, जिनमें दोनों की इच्छायें-आकांक्षायें मिलकर एक हो गई हों, जिनने जीवन के कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वों का भार समान रूप से उसी तरह अपने कंधों पर लाद लिया हो जैसे दो बैल एक जुए को कन्धों पर रखकर वहन करते हैं।

आज तो इससे सर्वथा विपरीत स्थिति है। लोक-लज्जा, बच्चों का मोह, गृह व्यवस्था, वासना आदि के कच्चे धागों से परस्पर किसी प्रकार बँधे तो हुये हैं, पर मन जिनके सर्वथा विपरीत हैं। एक-दूसरे के प्रति असीम घृणा और अविश्वास भरे हुये हैं। मजबूरियों ने उन्हें जोड़ तो रखा है, पर मन एक-दूसरे से फटे दूध की तरह बिलग-बिलग बने हुये हैं। सांसारिक व्यवस्था तो एक को दूसरे की रखनी पड़ती है, पर मन में वह भावना नहीं, जिससे एक को देख दूसरा जिये-जैसी स्थिति का अनुभव हो। मनों में भरा हुआ यह दुर्भाव सन्तान के मनःक्षेत्र का विकृत सृजन करता है। पति-पत्नी के शरीरों से मिलकर बच्चे का शरीर बनता है और मनों से मिलकर मन। माता-पिता का जैसा रंग-रूप, कद कलेवर, ढाँचा तथा स्वास्थ्य होगा, उसी से मिलता-जुलता बच्चों का भी होता है। ठीक इसी प्रकार पति-पत्नी के बीच जैसे सम्बन्ध, जैसे मनोभाव चल रहे होंगे, उसी भली या बुरी स्थिति के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुरूप बालक का मनःक्षेत्र विनिर्मित होगा। परस्पर द्वेष, दुर्भाव रखने वाले पति-पत्नी केवल क्रोधी, उच्छृंखल, ईर्ष्यालु, द्वेषी, स्वार्थी एवं निकृष्ट धरातल के मनःक्षेत्र वाले बालकों को ही जन्म दे सकते हैं।

छोटे बच्चे अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। गर्भ से लेकर पाँच वर्ष की आयु तक वे अपनी मनोभूमि का ढाँचा खड़ा कर लेते हैं। इसके बाद तो स्कूली और कामकाजी पढ़ाई ही शेष रह जाती है। माता-पिता द्वारा घर का सूक्ष्म वातावरण जैसा भी कुछ बना रखा गया है, उसी के अनुरूप भाव तरंगें बालकों के कोमल अन्तःकरण पर स्वयमेव जमती चली जाती हैं। उनके व्यक्तित्व का तीन-चौथाई निर्माण इसी स्थिति में हो जाता है। बड़े होकर वे वैसे ही बनते हैं। आज नई पीढ़ी में हमें जो दोष-दुर्गुण दिखाई पड़ते हैं, इसका अधिकांश दोष उनके माता-पिता का है। यदि वे ठीक तरह अपने दाम्पत्य-प्रेम को सुरक्षित रख सके होते और दैनिक जीवन में सद्भावनाओं का उल्लास भरा वातावरण बनाये रख सके होते तो निश्चय ही उन घरों में महापुरुष, नर-रत्नों की फसल उपजी होती।

क्षोभ को उल्लास में बदलें

व्यक्तिगत जीवन के आनन्द-उल्लास एवं सामाजिक जीवन की सुख-शान्ति का आधार यदि सफल दाम्पत्य जीवन को कहा जाय तो उसमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं। यह क्षेत्र जितना उपेक्षित एवं विकृत पड़ा रहेगा उसी अनुपात से हर व्यक्ति अतिरिक्त क्षोभ में जलता-कुढ़ता प्रगति की ओर अग्रसर होने से वंचित बना रहेगा और उसी अनुपात से समाज में अशान्ति, विपत्ति एवं अव्यवस्था बनी रहेगी। इस स्थिति को यदि बदलना हो तो हमें नींव को सींचना होगा। दाम्पत्य सम्बन्धों में स्नेह सद्भावना, कर्त्तव्य उत्तरदायित्वों का परिपूर्ण समावेश ही एकमात्र वह उपाय है जिससे व्यक्ति, परिवार एवं समाज की प्रगति एवं समृद्धि सम्भव हो सकती है। इस तथ्य की उपेक्षा करके हम सुख-शान्ति की अभिवृद्धि के जो भी उपाय करेंगे वे अधूरे एवं अवास्तविक होने के कारण असफल ही रहेंगे। उपवन को हरा-भरा फला-फूला देखना हो तो धोने से नहीं, जड़ सींचने से काम चलेगा, हमें वस्तुस्थिति समझनी चाहिये और समस्याओं का उद्भव जहाँ से होता है, उसी स्थान पर उनके सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिये।

दाम्पत्य जीवन की सफलता रूप, सौन्दर्य, शिक्षा, आजीविका सुविधा आदि पर ठहरी हुई नहीं है। यह बातें जहाँ परिपूर्ण मात्रा में मौजूद हैं वहाँ भी परस्पर घोर दुर्भाव रहना पाया जाता है। इसके विपरीत कुरूप, दरिद्र, अशिक्षित एवं नासमझ पति-पत्नी के बीच भी गहरी निष्ठा एवं आत्मीयता पाई जाती है। कारण भावना की उत्कृष्टता-निकृष्टता है। जहाँ भावना और कर्त्तव्य निबाहने की समुचित मात्रा होगी वहाँ सारी कमियाँ एक ओर रखी रह जायेंगी और ममता, आत्मीयता एवं जिम्मेदारी का तनिक-सा उभार सारे अभावों और कठिनाइयों को सहन कर लेगा। इसके विपरीत यदि उस आत्मीय उत्कृष्टता में कमी रही तो छोटे-छोटे अभाव एवं दोष पहाड़ जैसे दिखाई देंगे और तिल का ताड़ बनता रहेगा। सारे अभाव या सारे अप्रिय प्रसंग दूर नहीं हो सकते, अपूर्ण मानव-जीवन में कुछ तो अपूर्णतायें बनी ही रहेंगी। उनका समाधान पारस्परिक विश्वास, प्रेम, उत्सर्ग की भावनाओं द्वारा ही हो सकता है। यह भावना जिन पति-पत्नियों के बीच जितनी मात्रा में भी बढ़ सकी उनका वैवाहिक जीवन उतना ही सफल माना जायेगा। हमारे प्रयत्न यह होने चाहिये कि हम दाम्पत्य जीवन में कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व, प्रेम, सद्भावना, आत्मीयता और सहिष्णुता की भावना अधिकाधिक मात्रा में बढ़ावें। इस रचनात्मक कार्य में जितनी सफलता मिल सकेगी उतना ही सुख-शान्ति भरा वातावरण, वैयक्तिक पारिपारिक एवं सामाजिक जीवन विनिर्मित होगा। नव निर्माण का केन्द्र बिन्दु यही कार्यस्थल है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवाह संस्कार की महत्ता

भारतीय तत्व-वेत्ताओं ने विवाह संस्कार का महान् विधि-विधान इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये विनिर्मित किया था। उस समय बोले जाने वाले मन्त्र, देवाह्वान, यज्ञ एवं अन्यान्य कर्मकाण्डों का एक वैज्ञानिक महत्त्व है। उनके कारण वर-वधू के अन्तःकरणों में एक विशेष प्रकार की आर्द्रता आती है और वे अनायास ही एक-दूसरे में घुलने लगते हैं। प्राचीनकाल के सुयोग्य कर्मकाण्डी पण्डित जिन विवाहों को पूर्ण-विधि व्यवस्था के साथ कराते थे उनमें आजीवन मधुरता बनी रहती थी और दुर्भाव के दोष नहीं आने पाते थे। अब जल्दी से बेगार भुगताने की तरह विवाह संस्कार निपटा दिये जाते हैं। उस समय जो प्रशिक्षण वर-वधू को होता था, उसका तो अब नामोनिशान भी नहीं रह गया। दोनों पक्ष के पण्डित अडंग-पडंग करते रहते हैं। उस समय की बर्बादी में उस उत्सव आयोजन में आये हुये लोगों में से बहुत कम सम्मिलित होते हैं। वर-वधू भी यह चाहते हैं कि यह जंजाल जितनी जल्दी सिमट जाय उतना अच्छा। ऐसे औंधे ढंग से कराये गये विवाह संस्कार का वास्तविक प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सकते। इसके लिये तो हर दृष्टि से प्रभावोत्पादक वातावरण बनाना होगा और वर-वधू को उनके कर्त्तव्य, उत्तरदायित्वों के प्रशिक्षण की भावनापूर्ण व्यवस्था करनी पड़ेगी। तभी ऋषि परम्परा का लाभ मिल सकने की सम्भावना रहेगी।

मंगल पर्व की जयन्ती

जिनके विवाह नहीं हुये हैं, उनके संस्कार को सुयोग्य व्यवस्थापकों एवं पुरोहितों द्वारा अत्यन्त प्रभावोत्पादक बनाया जाना चाहिये। पर जिनके विवाह हो चुके हैं, उनके सम्बन्ध में हो गया सो हो गया कहकर छुटकारा नहीं पाया जा सकता। उनको वह लाभ पुनः मिलना चाहिये जो औंधे-सीधे ढंग से बेगार भुगताने की भगदड़ में उन्हें नहीं मिल पाया है। इसके लिये सबसे उत्तम, सरल और उपयोगी तरीका विवाह दिवसोत्सव मनाया जाना ही हो सकता है। जिस दिन विवाह हुआ था, हर वर्ष उस दिन एक छोटा-सा उत्सव समारोह मनाया जाय। मित्र-परिजन एकत्रित हों, विवाह का पूरा कर्मकाण्ड तो नहीं पर उनमें प्रयुक्त होने वाली कुछ क्रियायें फिर की जायें और जो मोटे-मोटे संकल्प हैं वे पति-पत्नी द्वारा हर वर्ष किये जायें तथा विवाह के कर्त्तव्य उत्तरदायित्वों को नये सिरे से पुनः समझा, समझाया जाये।

हर वर्ष इस प्रकार का व्रत धारण, प्रशिक्षण, संकल्प एवं धर्मानुष्ठान किया जाता रहे तो उससे दोनों को अपने कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्वों को पालने, निबाहने की निश्चय ही अधिक प्रेरणा मिलेगी। उसी दिन दोनों परस्पर विचार विनिमय करके अपनी-अपनी भूलों को सुधारने तथा एक-दूसरे के अधिक समीप आने के उपाय सुझाने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। विवाह दिन की पुरानी आनन्दमयी-स्मृति का स्मरण कर पुनः अन्तःकरण को प्रफुल्लित कर सकते हैं। इस प्रकार वह सुनहरा दिन एक दिन के लिये हर साल नस नाड़ियों में उल्लास भरने के लिये आ सकता है और विवाह कर्त्तव्य को नये सिरे से निबाहने की प्रेरणा दे सकता है।

परम्परा-प्रचलन

जन्मदिवसोत्सव की तरह विवाह दिवसोत्सव मनाने की परम्परा भी हमें प्रचलित करनी चाहिये। यदि यह प्रचलन हो सका तो लोगों को अपने वैवाहिक उत्तरदायित्वों और कर्त्तव्यों को निबाहने की प्रेरणा का हर वर्ष एक भावनात्मक अवसर मिलता रहेगा। उपस्थित इष्ट-मित्रों के सामने जो हर वर्ष उन पुण्य प्रतिज्ञाओं को दुहराते हैं यदि वे उन्हें तोड़ेंगे तो लोग-हँसाई होगी। इस लोक-लाज से भी उन्हें अपने को सँभाले रहना पड़ेगा। अपने भीतर जो हलचल इस धर्मानुष्ठान के द्वारा उत्पन्न होगी, उससे भी लोगों को अपने रवैयों को सुधारने सम्भालने की कम प्रेरणा न मिलेगी। फिर उस उत्सव में जो लोग उपस्थित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हैं, उन्हें भी तो यह सब देखने-सुनने का अवसर मिलेगा, जिससे उनमें भी आत्म-निरीक्षण करने और अपने को सुधारने की भावना उठेगी। विवाह दिवसोत्सवों का यदि प्रचलन हो सके तो उससे दाम्पत्य कर्त्तव्यों के पालन में आशातीत प्रगति होगी और फलस्वरूप नये समाज का निर्माण सरल हो जायेगा।

बन्दूकों के लाइसेन्स हर साल बदलने पड़ते हैं, मोटरों के लाइसेंस का भी हर साल नवीनीकरण कराना पड़ता है। 'युग निर्माण पत्रिका' का हर साल रजिस्टर नम्बर नया कराना पड़ता है। अखबारी कागज का परमिट प्राप्त करने के लिये हमें हर वर्ष अर्जी देनी पड़ती है। विवाह के कर्त्तव्यों को ठीक तरह पालने का लेखा-जोखा उपस्थित करने, भूल-चूक को सुधारने और अगले वर्ष अधिक सावधानी बरतने को विवाह-लाइसेन्स का यदि हर वर्ष नवीनीकरण कराया जाय तो इसमें कुछ हानि नहीं, हर दृष्टि से लाभ ही लाभ है। संसार के अन्य देशों में यह उत्सव सर्वत्र मनाये जाते हैं। अन्तर इतना ही है कि वे केवल खुशी बढ़ाने के मनोरंजन तक ही उसे सीमित रखते हैं, हमें उसे धर्म-कर्त्तव्यों की प्रेरणा से ओत-प्रोत करने वाले धर्मानुष्ठानों की तरह नियोजित करना है।

संकोच अनावश्यक

इस प्रथा के प्रचलन में एक बड़ी कठिनाई यह है कि हमारे देश में विवाह को, दाम्पत्य जीवन को एक झिझक, संकोच एवं लज्जा का विषय माना जाने लगा है। उसे लोग छिपाते हैं। दूसरों को देखकर स्त्रियाँ अपने पतियों से घूँघट काढ़ लेती हैं और पति अपनी पत्नी की तरफ से आँखें नीची कर लेता है। विवाह के अवसर पर वधू बड़े संकोच के साथ डरती-झिझकती कदम उठाकर आती है। कहीं-कहीं तो उसे गोदी में उठाकर ले जाते हैं। यह अनावश्यक संकोचशीलता निरर्थक है। भाई-भाईयों की तरह पति-पत्नी भी दो साथी हैं। विवाह न तो चोरी है, न पाप। दो व्यक्तियों का धर्मपूर्वक द्वैत को अद्वैत में परिणत करने का व्रत-बन्ध ही विवाह अथवा दाम्पत्य सम्बन्ध है। अवश्य ही अश्लील चेष्टायें अथवा भाव-भंगिमायें खुले रूप से निषिद्ध मानी जानी चाहिये पर साथ-साथ बैठने-उठने, बात करने की मानवोचित रीति-नीति में अनावश्यक संकोच बरता जाये, इसमें न तो कोई समझदारी है, न कोई तुक। इस बेतुकी को यदि हटा दिया जाये तो इससे मर्यादा का तनिक भी उल्लंघन नहीं होता। जब अनेक अवसरों पर पति-पत्नी पास-पास बैठ सकते हैं, कोई हवन आदि धर्म कृत्य कर सकते हैं, साथ-साथ तीर्थयात्रा आदि कर सकते हैं तो विवाह दिवसोत्सव पर किये जाने वाले साधारण से हवन में किसी को क्यों संकोच होना चाहिये ? गायत्री हवन के साथ-साथ चार-पाँच छोटे-छोटे अन्य विधि-विधान जुड़े हुये हैं और प्रवचनों का विषय दाम्पत्य जीवन होता है, इसके अतिरिक्त और कुछ भी बात तो ऐसी नहीं है, जिसके लिये झिझक एवं संकोच किया जाये। विवाह की चर्चा करने पर जैसे वर-वधू सकुचाते हैं, वैसी ही कुछ झिझक विवाह दिवसोत्सव के अवसर पर दिखाई देती है। इसमें औचित्य तनिक भी नहीं, विचारशील लोगों के लिये यह अकारण की संकोचशीलता छोड़ने में कुछ अधिक कठिनाई न होनी चाहिये।

संगठित प्रयास की आवश्यकता

जन्मदिन मनाने के लिये, युग निर्माण शाखायें अपनी जो तीन या पाँच सदस्यों की समितियाँ बनावें, उन्हीं को जन्म दिवसोत्सव की तरह विवाह दिवसोत्सव मनाने का काम हाथ में लेना चाहिये। जो अधिक झेंपू हों, उन्हें छोड़कर, कुछ उत्साही एवं प्रगतिशील लोगों को इसके लिये तैयार करना चाहिये। हर महीने एक उत्सव भी इस प्रकार का मनाया जाने लगे और एक वर्ष तक यह क्रम चलता रहे तो झेंपू लोग भी अपनी झिझक एवं संकोच की निरर्थकता समझ जायेंगे और वे भी इस उत्सव के आधार पर मिल सकने वाले लाभों से लाभान्वित होने के लिये प्रस्तुत दिखाई देंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्म दिवसोत्सव की तरह ही सारी तैयारी करनी होती हैं। उसी तरह तारीखें नोट करना, नियत तिथि पर हवन आदि की तैयारी, मण्डप वेदी आदि को सुसज्जित, मित्र परिचितों एवं शाखा सदस्यों को आमन्त्रण, अतिथियों का सस्ता आतिथ्य आदि सब कुछ उसी ढंग से होगा। पूजा स्थान पर, पति-पत्नी दोनों जन्मदिन की भाँति ही बैठेंगे। पीत वस्त्र धारण करना, जन्मदिन पर उतना आवश्यक नहीं था, पर विवाह के दिन पर तो यदि बहुत अड़चन न हो तो दोनों को पीतवस्त्र धारण करने चाहिये। विवाह पर भी वर-वधू के वस्त्रों में कुछ विशेषता-नवीनता रहती है। इस अवसर पर भी रहे तो अच्छा है। मन्त्रोच्चार के लिये अधिकाधिक लोगों के हाथों में पुस्तकें रहें और जो भी ठीक तरह उन्हें पढ़ या बोल सकें उन्हें एक लय, एक स्वर एवं कण्ठ में साथ-साथ उच्चारण करना चाहिये। इन उच्चारण-कर्त्ताओं को दूसरों का संस्कार कर सकने की ट्रेनिंग इस प्रकार होती चलेगी।

पाँच विशेष कृत्य

साधारणतया हर संस्कार में सामान्य गायत्री यज्ञ का विधान ही प्रमुख होता है। उसकी विधि सब के अभ्यास में रहनी चाहिये। उस विधान में, रक्षा विधान के पश्चात् और अग्नि स्थापना से पूर्व (१) ग्रन्थि बन्धन, (२) अश्मारोहण, (३) पाणिग्रहण, (४) सप्तपदी, (५) सुमंगली यह पाँच कृत्य विशेष रूप से करने पड़ते हैं। विवाह दिवसोत्सव का विशेष कृत्य इतना ही है। शेष सारी क्रिया गायत्री यज्ञ की ही रहती है।

(१) पति-पत्नी दोनों के कन्धों पर रहने वाले दुपट्टों के छोरों को लेकर उनके बीच में चावल, पुष्प, दूर्वा, हल्दी, सुपाड़ी रखकर कोई सम्भ्रान्त माननीय व्यक्ति गाँठ बाँधते हैं। इस क्रिया को ग्रन्थि बन्धन कहते हैं। ॐ समंजन्तु विश्वे देवाः .....' इसका मन्त्र है।

(२) एक पत्थर के टुकड़े पर पति-पत्नी दोनों अपना दाहिना पैर रखते हैं। इस क्रिया का नाम अश्मारोहण' है। 'ॐ आरोहे मश्मान ..... इसका मन्त्र है।

(३) पत्नी का दाहिना हाथ पति और पति का बाँया हाथ पत्नी पकड़ती है। यह पाणिग्रहण क्रिया है। 'ॐ यदैषि मनसा दूरे,..... यह इसका मन्त्र है।

(४) पति-पत्नी कदम मिलाकर सात बार पैर उठाते हैं। सात कदम-साथ-साथ चलते हैं। 'ॐ इषे एक पदीयव .....' इसका मन्त्र है।

(५) पति द्वारा पत्नी की माँग में सिन्दूर भरने अथवा मस्तक पर तिलक करने की क्रिया को सुमंगली कहते हैं। इसका मन्त्र 'ॐ सुमंगलीर्रियं वधू ..... है।

ग्रन्थि बन्धन

ग्रन्थि बन्धन क्रिया कराते समय उपस्थित लोगों को तथा पति-पत्नी को समझाना चाहिये कि इस कृत्य का तात्पर्य दो आत्माओं के अलग अस्तित्वों का अब एक में घुल जाना है। दोनों ने परस्पर बँधकर अपने अस्तित्व को एक-दूसरे के लिये समर्पित कर दिया और एक नया साझे का, सामूहिक समग्र व्यक्तित्व विनिर्मित किया। इसे दम्पत्ति व्यक्तित्व कहा जायेगा। इसमें दोनों की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं को समान रूप से स्थान मिलेगा। दो तालाबों के पानी का स्तर नीचा-ऊँचा होने पर भी यदि एक नाली द्वारा उन्हें आपस में जोड़ दिया जाय तो ऊँचे स्तर वाले तालाब का पानी नीचे में चलने लगता है और दोनों की सतह एक समान ऊँची हो जाती है। उसी तरह इस ग्रन्थि बन्धन को एक नाली माना जाय, जो दो तालाबों को एक करती है। इसका प्रभाव यह होना चाहिये कि दोनों में से जिसका व्यक्तित्व छोटा हो उसे ऊँचे व्यक्तित्व वाला निरन्तर प्रयत्न करके अपने समान ही ऊँचा उठाने का प्रयत्न करे। अपनी शक्ति सामर्थ्य उसे समर्पित करे, जिससे कोई नीचा-ऊँचा, अविकसित न रह जाये। जिस तरह एक सूत्र से गुँथे हुये पुष्प, एक साथ ही माला बनकर रहते हैं और जीते हैं। उसी प्रकार पति-पत्नी को एक-दूसरे का सहचर बनकर रहना चाहिये। जीवन की रीति-नीति अब एक को ही निर्धारित नहीं करनी चाहिये, वरन्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दोनों के सम्मिलित निर्णय से ही सारी विधि-व्यवस्था बना करेगी, कोई किसी पर अपनी इच्छा थोपेगा नहीं, वरन् एक-दूसरे की स्थिति, आवश्यकता और भावना का ध्यान रखते हुये समझौते की नीति पर चलेंगे। ग्रन्थि बन्धन ऐसा अटूट है, जिसे जीवन भर निबाहने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। एक-दूसरे की कमियों को सहन करते हुये, सुधारते-सम्भालते हुये इस विश्वास के साथ रहें कि अब हर हालत में परस्पर एक-दूसरे को निबाहना ही है, यदि साथी में असंख्य त्रुटियाँ होंगी तो भी सुधारने के प्रयत्न करते हुये अन्ततः सहन करने को भी तत्पर रहा जायेगा। छोटा बच्चा निपट अनाड़ी होता है फिर भी माता उसे अपार प्रेम के साथ छाती से लगाये रहती है और उसकी त्रुटियों पर उद्विग्न न होकर उसे दुलारते-पुचकारते हुये सुयोग्य बनाने का प्रयत्न करती है। वैसी ही भावना, वैसी ही चेष्टा एक-दूसरे के लिये आजीवन करते रहें, यह ग्रन्थि बन्धन का उद्देश्य है।

शिलारोहण

पत्थर की शिला पर पति-पत्नी अपने पैर इस विश्वास के साथ रखते हैं कि यह शिलाखण्ड जैसे अपने आप में सुदृढ़ है वैसे ही हम भी विवाह के साथ जुड़े हुये कर्त्तव्य एवं विश्वास के ऊपर सुदृढ़ रहेंगे। अंगद ने रावण की सभा में जिस तरह पैर गाढ़ दिया था और वह फिर किसी से भी नहीं हटा-उठा था, उसी प्रकार अश्मारोहण के संकल्प द्वारा भी पति-पत्नी को वैसी ही दृढ़ता प्रकट करनी होती है। प्रतिज्ञाओं को जवानी जमा खर्च का विषय नहीं बनाया जा सकता। एक-दूसरे से अपना स्वार्थ सिद्ध करने की तो आशा रखें, पर साथी के साथ स्नेह का उत्तरदायित्व निबाहने में जो कष्ट सहना पड़ता है, त्याग करना पड़ता है उससे कतरायें तो फिर ग्रन्थि बन्धन कहाँ हुआ ? यह तो स्वार्थ बन्धन कहलाया। ऐसी दशा में तो जिसका स्वार्थ जिससे सिद्ध न होगा, अथवा कहीं अन्यत्र अधिक सुविधा दिखाई देगी तो वह उधर मुड़ जायेगा। ऐसी दशा में विवाह-विवाह न रहकर वासना एवं सुविधा के लिये किया गया अस्थायी समझौता मात्र कहलायेगा। भारतीय धर्म में ऐसे ओछे समझौते घृणित, गर्हित, निन्दनीय एवं पाप माने गये हैं। विवाह पाप के लिये नहीं, धर्म के लिये किया जाता है। इसी से पत्नी को धर्मपत्नी कहते हैं। पति तो धर्म का देवता है ही। विवाह का प्रयोजन है एक-दूसरे को अपना पूरा-पूरा प्रेम प्रदान करना। प्रेम की कसौटी लाभ नहीं त्याग है। जो अपने प्रेमी के लिये जितना अधिक त्याग कर सकता है, उससे जितनी कम अपेक्षायें करता है, उसका प्रेम उतना ही सच्चा माना जायेगा। अश्मारोहण करते हुये, शिला पर पैर जमाते हुये दोनों को यह सोच लेना चाहिये कि वे ग्रन्थि बन्धन के साथ कन्धों पर आये हुये उत्तरदायित्वों को भली प्रकार निबाहेंगे। दाम्पत्य जीवन को आदर्श बनाने के लिये बड़े से बड़ा कष्ट सहेंगे और त्याग करेंगे। अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहेंगे। देवताओं की, अग्नि की साक्षी में, उपस्थित सम्भ्रान्त लोगों के सामने पत्थर पर पैर अड़ा देने का दृश्य उपस्थित करते हुये दोनों यह घोषणा करते हैं कि हमने उत्तरदायित्वों को समझा है और पूरी दृढ़ता के साथ आजीवन निबाहने का निश्चय किया है। अश्मारोहण की भावना यही है।

पाणिग्रहण

एक-दूसरे को सहारा देकर ऊपर उठाना, संसार की हर विभीषिका एवं विषम परिस्थिति में एक-दूसरे का हाथ पकड़े रहना पाणिग्रहण क्रिया है। जीवन में ऐसे अवसर आ सकते हैं, जब दूसरा साथी रुग्ण, विक्षिप्त, निर्धन, कुरूप, असमर्थ हो जाये और उसका साथ निबाहना अपने को घाटे का सौदा प्रतीत होने लगे। ऐसी स्थिति में भी उसी दृढ़ता से साथी का हाथ पकड़े रहना चाहिये, जैसा कि वह स्वस्थ, सानन्द, चतुर, सम्पन्न एवं सर्व समर्थ होने पर अपनाया जाता। विवाह के माध्यम से एक-दूसरे पर अवलम्बित होते हैं, एक-दूसरे की नाव पर सवार होते हैं। एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन क्षेत्र में उतरते हैं। कुसमय में किसी को किसी का साथ नहीं छोड़ना है। ऐसा करना विश्वासघात होगा। दोनों में से कोई भी दूसरे के प्रति कभी भी विश्वासघाती न बने यह प्रेरणा पाणिग्रहण की है।

ऊँचे स्थान पर खड़ा साथी, अपने जिस साथी का हाथ पकड़ेगा, उसे यदि वह नीचा खड़ा होगा तो नीचे ही नहीं रहने देगा वरन् हाथ का सहारा देकर ऊपर उठा लेगा और अपनी बराबर कर लेगा। पति-पत्नी में से जो कम शिक्षित, कम चतुर, कम अनुभवी, कम योग्य हो, उसकी कमियों को दूर करना उसका कर्त्तव्य है जो ऊँचा है। रास्ते में दो मित्र हाथ पकड़ कर चलें तो उन्हें एक सीध में रहकर ही कदम-कदम मिलाकर चलना पड़ता है। ऐसा नहीं हो सकता कि हाथ में हाथ मिलाकर चलें पर एक पीछे और एक आगे रहे। जीवन क्षेत्र में भी यही होना चाहिये। यदि साथी अपने से कम पढ़ा या कम कुशल है तो उसकी इन कमियों को पूरा करने के लिये तुरन्त व्यवस्था बनानी चाहिये। केवल भोजन, वस्त्र, निवास, वासना जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति कर देने से ही साथी का कर्त्तव्य पूरा नहीं होता वरन् उसे उसका व्यक्तित्व भी संभालना-उठाना पड़ता है। अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार दोनों एक-दूसरे को इस प्रकार ऊँचा उठाने के लिये प्रयत्नशील रहें और पाणिग्रहण का उद्देश्य पूरा करें।

सप्तपदी

सात बार कदम मिलाकर आगे बढ़ने का प्रयोजन यह है कि गृहस्थ जीवन के साथ उद्देश्यों की पूर्ति दोनों कन्धे से कन्धा, पैर से पैर, हाथ से हाथ, मन से मन मिलाकर विचार और कर्म करते रहें। गाड़ी के दो पहिये जब साथ-साथ चलते हैं तभी गतिशीलता उत्पन्न होती है। जीवन में प्रगति के लिये पति-पत्नी का हर क्षेत्र में कदम से कदम से कदम मिलाकर फौजी सैनिकों की तरह आगे बढ़ चलना आवश्यक है।

(१) आहार व्यवस्था, (२) शारीरिक बल-बुद्धि, (३) अर्थ-व्यवस्था, (४) विनोद-मनोरंजन, (५) पारिवारिक उत्तरदायित्व, (६) गृह व्यवस्था, (७) पारस्परिक स्नेह-सद्भाव, यह सात उद्देश्य गृहस्थ निर्माण के होते हैं। पति-पत्नी इन सातों की सुव्यवस्था में ध्यान लगाये रहते हैं। गृहस्थ की सुख, शान्ति और प्रगति इन सात तथ्यों पर अवलम्बित रहती है।

(१) भोजन सात्विक, पौष्टिक, उपयोगी, सुरुचिपूर्ण हो, उसमें तामसिक, फूहड़पन एवं चटोरेपन का समावेश न रहे। आहार के अनुरूप ही विचार बनते हैं। विचारों पर ही जीवन का स्वरूप अवलम्बित है। इसलिये गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि आहार की सात्विकता एवं पवित्रता नष्ट न होने दें। तामसी योजना दुर्भाव ही पैदा करेगी, उससे पति-पत्नी के सम्बन्ध ही नहीं बिगड़ेंगे वरन् परिवार में अशान्ति फैलेगी और बच्चों का स्वभाव बिगड़ेगा। गृहस्थ के स्वस्थ विकास में आहार की सात्विकता का असाधारण योग होता है, इसे भुलाया नहीं जाना चाहिये।

(२) शारीरिक स्वास्थ्य को बनाये रहने के लिये उचित परिश्रम, उचित विश्राम, उचित ब्रह्मचर्य, उचित दिनचर्या, सफाई, परिचर्या, चिकित्सा आदि का आवश्यक ध्यान अपना ही नहीं साथी का भी रखना चाहिये। परिवार का एक भी सदस्य रुग्ण न रहने पावे, तभी गृहस्थ की सफलता है। इस दिशा में तनिक भी उपेक्षा न बरती जाय और बिगड़ती स्थिति सँभाल ली जाये तो घर में निरोगता का वातावरण रखा जा सकता है।

(३) अधिक उपार्जन के लिये अधिक श्रम और अधिक प्रयास करना होता है। फिजूलखर्ची एक पैसे की भी न होने दी जाये। पारिवारिक उत्कर्ष के दूरदर्शिता पूर्ण कार्यों में मुक्तहस्त से खर्च किया जाय, कुसमय के लिये कुछ बचत हर गृहस्थ को रखनी चाहिये। बजट बनाकर खर्च करना चाहिये। ठग और धूर्तों से बचना चाहिये। सामाजिक उत्कर्ष के लिये अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कमाई का एक अंश नियमित रूप से देना चाहिये। फैशन, शेखीखोरी, निरर्थक श्रृंगार, नशेबाजी, व्यसन एवं सामाजिक कुरीतियों में होने वाले निरर्थक खर्च को कड़ाई के साथ रोकना चाहिये। घर में जिनके पास जो समय बचता है, उसे वे उपार्जन में लगायें। कोई ठाली न बैठे, ऐसा प्रबन्ध करें। गृह उद्योगों व टूट-फूट ठीक करने का अभ्यास करें। इस प्रकार वे उपाय करने चाहिये जिससे घर की अर्थव्यवस्था सुसन्तुलित बनी रहे।

(४) घर की मनहूसी, खिन्नता, कुढ़न, रूठना, मटकना, मनमुटाव, ताने कसना, लड़ना-झगड़ना, आवेश-उत्तेजना का वातावरण नहीं रहना चाहिये। कुढ़न से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य नहीं टिकता है, प्रगति रुक जाती है और समृद्धि चली जाती है। ऐसे घरों में दुःख और दारिद्र डेरा डाले पड़े रहते हैं। ऐसा दुःस्वभाव जिस किसी का भी हो, उसे एक बुरी किस्म का बीमार समझकर प्रेम और सौजन्य से सुधारने का प्रयत्न करना चाहिये। हँसी-खुशी का स्वभाव बनायें और जो समस्यायें हों उन्हें सौम्यता, सज्जनता, नम्रता एवं शिष्टता के वातावरण में सुलझायें तो वे अपेक्षाकृत आसानी से सुलझ जाती हैं। घर में खेल-कूद, गायन-वाद्य, कथा-कहानी, सुसज्जा, स्वच्छता का मनोरंजक वातावरण रहे, कभी-कभी घूमने-देखने भी जाया करें, उत्सव आयोजनों में भी सम्मिलित होते रहें। प्रसन्नता की स्थिति परिवार में बनाये रहना मानसिक स्वस्थता के विनोद मनोरंजन का वातावरण रखने के लिये आवश्यक समझा जाना चाहिये।

(५) परिवार में जितने सदस्य हों उन सभी की आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाये। ऐसा न हो कि पुरुष जो कमाये उस पर पत्नी ही पूरा अधिकार कर ले और अपने बच्चों के अतिरिक्त और किसी को उसका लाभ न लेने दे। माता-पिता, भाई, बहिन सभी तो एक भले कुटुम्ब के सदस्य होते हैं। उनके भरण-पोषण, शिक्षण, विवाह, चिकित्सा आदि में होने वाला खर्च निरर्थक न समझा जाये। कमाने के कारण अहंकार और न कमाने के कारण तिरस्कार नहीं होना चाहिये। घर के हर सदस्य को उचित सम्पत्ति, उचित प्रोत्साहन और उचित विकास साधन मिलते रहें, इसका पूरा ध्यान रखना भी विवाह का उद्देश्य है। सप्तपदी का पाँचवा कदम इसी उत्तरदायित्व को निबाहने के लिये उठाया जाता है।

(६) गृह प्रबन्ध में उपयोगी हर वस्तु की, हर कार्य की सुव्यवस्था रखनी चाहिये। कपड़े, बर्तन, खाद्य पदार्थ, जूते, पुस्तकें, बिस्तर, फर्नीचर आदि हर चीज यथास्थान, ठीक क्रम से, सँभालकर रखी जानी चाहिये। चीजों का फटे-टूटे, बिखरे, अव्यवस्थित रीति से पटके रहना घर को कुरुचिपूर्ण बनाना तो है ही, दरिद्रता का आवाहन करना भी है। घर की हर चीज को यथास्थान सुव्यवस्थित और सुन्दर रीति से सँभालकर रखा जाना सद्गृहस्थ का लक्षण है। छतों पर जाले, कोने में कूड़ा, टूटी और निरर्थक चीजों का झंझट नहीं लगा रहना चाहिये। नाली, टट्टी, पाखाने गन्दे नहीं रहने चाहिये। हर चीज का स्थान नियत रहे और वह वहीं रखी जाये। टूटी-फूटी चीजों की मरम्मत करने की कला आनी चाहिये, यदि स्वयं वैसा न कर सकें तो बाहर मरम्मत करा लें। इस प्रकार गृह-व्यवस्था का उचित ध्यान रखा जाना पत्नी का ही नहीं, पति का भी काम है। दोनों इस प्रक्रिया में सहयोग करें और घर के सब लोगों को ऐसा शिक्षण दें कि वे भी सफाई और व्यवस्था के लिये सावधानी बरतें और श्रम करें। गन्दगी एवं अव्यवस्था घर में न फैलने पावे, सप्तपदी का छठा कदम इसी कर्त्तव्य के पालन करने के लिये है।

(७) पारस्परिक सद्भाव एवं विश्वास गृहस्थ के सफल होने का मूल आधार है। एक-दूसरे को अविश्वास और सन्देह की दृष्टि से देखें तो उसकी छोटी-छोटी आकस्मिक भूलें भी जानबूझ कर की गई दुष्टता जैसी प्रतीत

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती हैं। सन्देह से सन्देह और अविश्वास से अविश्वास बढ़ता है। इसलिये परस्पर छिद्रान्वेषण करने और अपने प्रति दुर्भाव रखने की बात को गृहस्थ जीवन में आग लगाने वाली चिनगारी की तरह सदा दूर ही रखना चाहिये। गलतियों को भूल विवशता या उपेक्षा या नादानी ही माना जाय और कभी सहन करने तथा कभी मीठी चुटकी लेते हुये उसे सुधारने के लिये सौहार्द्रपूर्वक अनुरोध करना चाहिये। यदि सुधार न भी हो सके तो भी सुधार न होने के साथ-साथ दुर्भाव बढ़ने की दूनी हानि क्यों उठायी जाये ? सुधार नहीं होता है तो उससे एक ही हानि है, दुर्भाव बढ़ने से तो दूनी हानि होगी। इसलिये सुधार का कोई मार्ग न दीखे तो भी सद्भाव एवं विश्वास तो बनाये ही रखना चाहिये। मित्रता पर आँच किसी भी कारण नहीं आने देनी चाहिये। सप्तपदी का सातवाँ कदम इसी तथ्य की पूर्ति के लिये उठाया जाता है।

यह व्याख्या सप्तपदी के सात कदम पति-पत्नी द्वारा साथ-साथ उठाये जाने की क्रिया का उद्देश्य समझते हुए करनी चाहिये। ऊपर कुछ संकेत मात्र ही दिये गये हैं। कुशल वक्ता जिन्होंने गृहस्थ जीवन की समस्याओं का विस्तृत अध्ययन किया है, वे घटनाओं, उदाहरणों, प्रसंगों और समाचारों का पुट देकर उसे बहुत ही आकर्षक बना सकते हैं। इसके लिये दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी अनेक पुस्तकों का पढ़ना तथा उनसे उत्पन्न होती रहने वाली समस्याओं का स्वरूप तथा हल जानना आवश्यक है। वक्ताओं का इस क्षेत्र में विशाल अध्ययन तथा चिन्तन-मनन होना चाहिये।

सुमंगली

पाँचवी क्रिया विवाह-दिवसोत्सव की 'सुमंगली' है। पति पत्नी को और पत्नी पति को तिलक लगाती है। पति द्वारा पत्नी की माँग में सिन्दूर भरना उसके सुहाग को सफल एवं सार्थक बनाने के आश्वासन के रूप में होता है। पति इस क्रिया द्वारा यह आश्वासन देता है कि उसका सौभाग्य सिन्दूर निरर्थक सिद्ध न होगा। पत्नी को यह पश्चात्ताप न करना पड़ेगा कि ऐसे निखट्टू पति की अपेक्षा तो अविवाहित रहना ही अच्छा था। वह भार नहीं सहारा बनेगा। दबाने या सताने में नहीं वरन् हँसाने और उठाने में विवाह की सार्थकता है।

इस प्रथा का दूसरा रूप एक-दूसरे के मस्तक पर तिलक करने का भी है। पति केवल पत्नी के तिलक करे इतना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् यह भी उचित है कि पत्नी भी पति के मस्तक पर तिलक करे। तिलक नीचे से ऊपर की ओर लकीर खींचकर किया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि मानसिक स्तर को ऊपर की ओर उठाने का प्रयास होना चाहिये। किसी का वास्तविक उत्थान-पतन उसकी भावना एवं आकांक्षा का ऊँचा या नीचा होने में ही है। पति-पत्नी में से हर एक का यह प्रयत्न होना चाहिये कि वह अपने साथी को किसी प्रलोभन या भय के कारण निकृष्ट मार्ग पर चल पड़ने की दुर्बलता में पड़ने से बचाये। कठिनाइयाँ रहकर भी धर्म-कर्त्तव्य और औचित्य को अपनाये रहने की हिम्मत बढ़ाता रहे।

मस्तिष्कीय ज्ञान, शिक्षा, विवेक, अनुभव एवं जानकारी की बढ़ोत्तरी भी मानसिक शक्ति के विकास का एक प्रकार है। दोनों में से जो भी अधिक ज्ञानवान् है उसे चाहिये कि साथी को वह अवसर दे जिससे उसे अपना मानसिक स्तर कम से कम उतना ही अन्यथा और भी अधिक विकसित करने की सुविधा प्राप्त कर सकना सम्भव हो जाये। सुमंगली क्रिया के अवसर पर किया गया तिलक इसी प्रेरणा का प्रतीक माना गया है।

उपरोक्त पाँचों क्रियाओं को करते हुये उपरोक्त आधार पर विस्तृत व्याख्या विवेचनायें की जानी चाहिये। जिनका विवाह-दिवसोत्सव मनाया जा सकता है, उनके दात्पत्य-जीवन में क्या कमियाँ हैं, उनका पता लगाने का प्रयत्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

करना चाहिये और उन अभावों की पूर्ति के सम्बन्ध में रचनात्मक उपाय प्रस्तुत करने चाहिये। यह सब कहने में रचनात्मक दृष्टि से एवं सामान्य विवेचना के ढंग से कहा जाना चाहिये, अन्यथा जिसकी त्रुटि बताई जा रही होगी वह अपनी उस बात को प्रकट होने और सबके सामने हेय बात ठहराये जाने की बात सोचकर वक्ता पर कुपित होगा और सुधारने की अपेक्षा और अधिक चिढ़ जायेगा। यह भूल किसी प्रवक्ता को नहीं करनी चाहिये। कहना इस ढंग से चाहिये कि न तो किसी का भेद खुले और न भर्त्सना प्रतीत हो। सुधारने का कार्य बड़ा कठिन है, समझाने के ढंग में समुचित प्रेम, आत्मीयता, प्रतीक्षा, प्रोत्साहन की मात्रा है तभी उससे किसी के सुधरने की आशा की जा सकती है। इस उत्सव का उद्देश्य जीवन में अधिक मधुरता उत्पन्न करना तथा विकृतियों का समाधान करना है, इसलिये प्रशिक्षण इस ढंग से होना चाहिये कि किसी को कटु, मर्मभेदी प्रतीत न हो। अपनी भूल बताने पर आमतौर से लोग रुष्ट होते, चिढ़ते तथा अपमान अनुभव करते हैं। इस मानवीय मनोवैज्ञानिक दुर्बलता का ध्यान रखते हुये जब जो कहा समझा जायेगा वह अवश्य प्रभावशाली सिद्ध होगा।

व्रत धारण की आवश्यकता

जिस प्रकार जन्मदिवस के अवसर पर कोई बुराई छोड़ने और कोई अच्छाई अपनाने के सम्बन्ध में प्रतिज्ञायें की जाती हैं। इसी तरह विवाह के दिवस, उपलक्ष्य में भी पतिव्रत और पत्नीव्रत को परिपुष्ट करने वाले छोटे-छोटे नियमों का पालन करने की कम से कम एक-एक प्रतिज्ञा इस अवसर पर लेनी चाहिये। परस्पर "आप या तुम शब्द का प्रयोग करना', 'तू' का अशिष्ट एवं लघुता प्रकट करने वाला सम्बोधन न करना जैसी प्रतिज्ञायें तो आसानी से ली जा सकती हैं।

पति द्वारा इस प्रकार की प्रतिज्ञायें ली जा सकती हैं— (१) कटु वचन या गाली आदि का प्रयोग न करना। (२) कोई दोष या भूल हो तो उसे एकान्त में ही बताना समझना, बाहर के लोगों के सामने उसकी तनिक भी चर्चा न करना। (३) युवा स्त्रियों के साथ अकेले में बातें न करना (४) पत्नी पर सन्तानोत्पादन का कम से कम भार लादना (५) उसे पढ़ाने के लिये कुछ नियमित व्यवस्था बनाना (६) खर्च का बजट पत्नी की सलाह से बनाना और पैसे पर उसी का प्रभुत्व रखना (७) गृह व्यवस्था में पत्नी का हाथ बँटाना। (८) उसके सद्गुणों की समय-समय पर प्रशंसा करना (९) बच्चों की देखभाल, साज-संभाल तथा शिक्षा-दीक्षा पर समुचित ध्यान देकर पत्नी का काम सरल करना (१०) पर्दा का प्रतिबन्ध न लगाकर उसे अनुभवी स्वावलम्बी होने की दिशा में बढ़ने देना (११) पत्नी की आवश्यकताओं तथा सुविधाओं पर समुचित ध्यान देना, आदि-आदि।

पत्नी द्वारा भी इसी प्रकार की प्रतिज्ञायें की जा सकती हैं। जैसे—(१) छोटी-छोटी बातों पर कुढ़ने, झल्लाने या रूठने की आदत छोड़ना, (२) बच्चों से कटु शब्द कहना, गाली देना या मारना-पीटना बन्द करना, (३) सास, ननद, जिठानी, बड़ों आदि को अपशब्द या कटु शब्दों में उत्तर न देना, (४) हँसते-मुस्कराते रहने और सहन कर लेने की आदत डालना, (५) साबुन, सुई, बुहारी इन तीनों को दूर न जाने देना, सफाई और मरम्मत की ओर पूरा ध्यान रखना, (६) उच्छृंखल फैशन बनाने में पैसा या समय तनिक भी खर्च न करना, (७) पति से छिपा कर कोई काम न करना, (८) अपनी शिक्षा, योग्यता बढ़ाने के लिये नित्य कुछ समय निकालना (९) पति को समाज सेवा एवं लोकहित के कार्यों में भाग लेने से रोकना नहीं वरन् प्रोत्साहित करना, (१०) स्वास्थ्य के नियमों के पालन कराने में उपेक्षा न बरतना, (११) घर में पूजा का वातावरण बनाये रखना, भगवान का पूजन, आरती और भोग का नित्य क्रम रखना, (१२) पर्दा के बेकार बन्धन की उपेक्षा करना, (१३) पति, सास आदि के नित्य चरण-स्पर्श करना आदि-आदि।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हर दात्पत्य जीवन की अपनी-अपनी समस्यायें होती हैं। अपनी कमजोरियाँ, भूलों, दुर्बलताओं और आवश्यकताओं को वे स्वयं अच्छी तरह समझते हैं, इसलिये उन्हें स्वयं ही यह सोचना चाहिये कि किन बुराइयों-कमियों को उन्हें दूर करना है और किन अच्छाइयों को अभ्यास में लाना है, जो उन्हें उपयुक्त एवं सामयिक प्रतीत हो उसकी प्रतिज्ञा लेनी चाहिये और उपस्थित लोगों के सामने घोषणा भी करनी चाहिये ताकि उन्हें उसके पालने में लोक-लाज का ध्यान रहे, साथ ही जो उपस्थित हैं, उन्हें भी वैसी ही प्रतिज्ञायें करने और उन पर आरूढ़ रहने के लिये प्रोत्साहन मिले।

यह तथ्य ध्यान में रखें

गृहस्थ एक प्रकार का प्रजातन्त्र है, जिसमें डिक्टेटरशाही की गुञ्जायश नहीं। दोनों को एक-दूसरे को समझना, सहना और निबाहना होगा। दोनों में से जो हुक्म चलाना भर जानता है, अपना पूर्ण आज्ञानुवर्ती बनाना चाहता है, वह गृह-शान्ति में आग लगाता है। दो मनुष्य अलग प्रकृति के ही होते और रहते हैं। उनका पूर्णतया एक में घुल-मिल जाना सम्भव नहीं। जिनमें अधिक सामंजस्य और कम मतभेद दिखाई पड़ता हो, समझना चाहिये कि वे गृहस्थ हैं। मतभेद और प्रकृति भेद को पूर्णतया मिटा सकना कठिन है। कोई आत्मसमर्पण करने वाले महात्मा या खरीदे हुये गुलाम ही पूर्ण आज्ञानुवर्ती हो सकते हैं। सामान्य स्थिति में कुछ न कुछ विभेद बना ही रहता है इसे जो लोग शान्ति और सहिष्णुता के साथ सहन कर लेते हैं, वे समन्वयवादी व्यक्ति ही गृहस्थ का आनन्द ले पाते हैं।

यह आशा करना कि पत्नी वैसी ही मिलेगी जैसी कि कल्पना या आशा की गई थी-निरर्थक है। साथी को पकाया हुआ पकवान नहीं, कच्चा राशन समझना चाहिये जिसे अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, सहनशीलता, उदारता एवं आत्मीयता के आधार पर अपने ढंग का, अपनी रुचि का बनाया जाता है। इसके लिये काफी धैर्य रखने की आवश्यकता पड़ती है। उतावली में काम बिगड़ जाता है। अधीर व्यक्ति कटुता, भर्त्सना, तिरस्कार, निन्दा, लांछनों का सहारा लेकर साथी का आन्तरिक सौमनस्य खो बैठते हैं। आत्मीयता के सम्बन्ध गहरे रहें तो दैनिक जीवन में जो मतभेद रहते हैं वे क्रोध या द्वेष का कारण नहीं बनते। एक-दूसरे को समझकर किसी प्रकार झंझट निपटा लेते हैं।

भूलना न चाहिये कि हर व्यक्ति अपना मान चाहता है। दूसरे को तिरस्कृत कर उसे सुधारने की आशा नहीं की जा सकती। अपमान में चिढ़ा हुआ व्यक्ति भीतर ही भीतर क्षुब्ध रहता है, उसकी शक्तियाँ रचनात्मक दिशा में नहीं विघटनात्मक दिशा में लगती हैं। पति या पत्नी में से कोई भी गृह व्यवस्था के बारे में उपेक्षा दिखाने लगें तो उसका परिणाम आर्थिक एवं भावनात्मक क्षेत्रों में विघटनात्मक ही होते हैं इसलिये यों तो क्रोध से सभी जगह सदा ही बचना चाहिये पर दाम्पत्य जीवन में तो इसका विशेष सतर्कतापूर्वक ध्यान रखना चाहिये। दोनों के बीच यह समझौता रहना चाहिये कि यदि किसी कारणवश एक को क्रोध आ गया तो दूसरा तब तक चुप रहेगा जब तक कि दूसरे का क्रोधपूर्ण उत्तर-प्रत्युत्तर अनिष्टकर परिणाम ही प्रस्तुत करता है। इन तथ्यों को दोनों ही ध्यान में रखें।

हवन का शेष कृत्य समाप्त होने पर युग निर्माण का सत्संकल्प दुहराया जाये। यह कार्य प्रत्येक संस्कार में अनिवार्य रूप से आवश्यक है। हर उत्सव आयोजन में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को युग निर्माण की व सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भावना और प्रेरणा को भी हृदयंगम करते हुये जाना चाहिये।

सभी संस्कारों में उपस्थित सभी लोग शुभ कामना के रूप में आशीर्वाद मन्त्र का उच्चारण करते हुये अक्षत वर्षा करते हैं। इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्सव में पुष्प वर्षा का विशेष प्रबन्ध करना चाहिये। पूरे फूल या गुलाब, गेंदा आदि बिखेरने वाले फूलों की पंखुड़ियाँ पहले से ही टोकरी में रखी जायें जो उत्सव के अन्त में सभी को वितरित कर दी जायें। आयोजन समाप्त होने पर ग्रन्थि-बन्धन खोल दिया जाय और वे दोनों सभी उपस्थित लोगों का अभिवादन करें। इसके प्रत्युत्तर में उपस्थित लोग शुभकामना के प्रतीक रूप पुष्प अक्षत बरसायें, तिलक करें और मंगल वचन बोलें।

नया उल्लास, नया आरम्भ

पति-पत्नी को नये वर्ष का नये उल्लास एवं नये आनन्द से परिपूर्ण जीवन बनाने-बिताने की नई प्रेरणा के साथ अपना नया कार्यक्रम बनाना चाहिये। अब तक का वैवाहिक जीवन अस्त-व्यस्त रहा हो तो रहा हो, पर अब अगले वर्ष के लिये यह प्रेरणा लेनी चाहिये, ऐसी योजना बनानी चाहिये कि वह अधिकाधिक उत्कृष्ट, आदर्श एवं आनन्ददायक हो। उस दिन को अधिक मनोरंजक बनाने के लिये छुट्टी के दिन के रूप में मनोरंजक कार्यक्रम के साथ बिताने की व्यवस्था बन सके तो वैसा भी करना चाहिये। विवाह का दिन केवल कर्मकाण्ड की दृष्टि से ही नहीं भावना, उल्लास एवं उत्साह की दृष्टि से भी विवाह दिन की अभिव्यक्तियों के पुनःसंस्करण के रूप में मनाया जा सके ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये। इस प्रेरणाप्रद दिन में एक कार्यक्रम यह भी होना चाहिये कि दोनों एकान्त में बैठकर अब तक के जीवन की समीक्षा करें। जो भूलें हुई हों, उसके लिये एक-दूसरे से क्षमा माँगें। जो प्रसन्नतावर्धक काम हुये हों उसके लिये एक-दूसरे के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें और भावी जीवन की ऐसी सुव्यवस्थित योजना बनावें जिस पर चलते हुये गृहस्थ में स्वर्ग के अवतरण का आनन्द लिया जा सके।

विवाहदिवसोत्सव के उद्देश्य और शिक्षा

विवाहो गद्यते लोके शक्तिशक्तिमतोरिव।
एकीकरणमुभयोरात्मनोरिति च श्रुतिः।। १।।

दो आत्माओं का एकीकरण विवाह है यह श्रुति का वचन है। इन दो पति-पत्नी की आत्माओं की एकता शक्ति और शक्तिमान् के एकीकरण की भाँति है।

द्विकस्य धीन्द्रियहृदां द्वयोः प्राणशरीरयोः।
उभयोरात्मनोश्चैव प्रेमव्रतसमन्वयः।। २।।
कृतपतिपत्नीत्वेन लोके गौरीशयोरिव।
प्रेमादर्शो विवाहः स्याजीवने सुखदः स्मृतः।। ३।।

दो शरीर, द्वो मन और बुद्धि, दो हृदय, दो प्राण व दो आत्माओं के समन्वय को, अगाध प्रेम के व्रत को करने वाले दम्पत्ति, उमा महेश्वर के प्रेमादर्श को धारण करते हैं, यही विवाह का स्वरूप है।

वासनामोहसंवेगे रूपसौन्दर्यवैकृतः।
उपयोगस्तु वैशद्यं प्रेम्णः करोति धूमिलम्।। ४ ।।
वासना येन चात्मानं मत्वा विषयसेवनम्।
पुण्यपरिणयस्यास्य प्रयोगस्तसपसावृतः।। ५।।

वासना के मोहावेग में रूप सौन्दर्य का विकृत उपयोग करने से प्रेम की विशदता धूमिल हो जाती है और वासनात्मा को आत्मा मानकर विषय का सेवन यह परिणय के पुण्य संस्कार का तामसिक उपयोग है।

आत्मसंयमसन्मार्गे नारीपुरुषयोः शुभा।
एषा सफलतैवास्य सार्थकता च पूर्णता।। ६।।
दूषित वासनाजन्यप्रेम्णा ह्युपभोगं सदा।
विजेतुं तत्परौ स्यातामाश्रित्येमात्मगुणान्वै।। ७।।
सम्बलं साधनं शक्तिः साहाय्यं दृढसाहसः।
शुभोत्साहः चलेते हि तयोः सन्ति सहायकाः।। ८।।

आत्म-संयम के पुनीत पथ में नारी-पुरुष की यही शुभ सफलता सार्थकता एवं पूर्णता है कि प्राणिक वासना प्रेम और भोग के ऊपर विजय पाने के लिये दोनों (पति-पत्नी) संबल,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधन शक्ति, सहायता दृढ़ साहस, शुभ उत्साह इन छः सहायक-साधनों के साथ संलग्न हों।

समुत्कर्ष विकासार्थमन्योन्यस्य च द्वावपि।
कल्याणानन्दयोः स्यातां स्पर्धाशीलौ प्रसारणे।। ९।।

दोनों एक दूसरे की सेवा करते हुये विकास उत्कर्ष, हित कल्याण आनन्द के विस्तार के लिये स्पर्द्धाशील हों।

अन्योन्यं सेवितुं प्रेम्णा द्वयोर्धर्मः क्रमागतः।
समानो ह्यधिकारस्तु दाम्पत्योर्निश्चितः सदा।। १०।।
पितुर्गृहं परित्यज्य प्रविश्य पतिवेश्म च।
तदेव सा स्वकं मत्वा महात्यागं करोति वै।। ११।।
इति स्मृत्वा सुकर्त्तव्यं पुरुषस्य विशेषतः।
पत्न्याः सुखाय स्वास्थाय रक्षायै कुशलाय च। १२।।

पिता के घर को त्यागकर पति के घर में आकर उसे अपना ही समझती हुई पत्नी जो यह बहुत बड़ा त्याग करती है इसको स्मरण कर पति-वर्ग का विशिष्ट कर्म इस प्रकार कहा गया है कि उसके सुख, स्वास्थ्य, रक्षा, कुशलता एवं प्रसन्नता के लिये पति निश्चय ही आजीवन यत्नशील रहे।

प्रसिदाय सयत्नोऽसा भवेदाजीवनं खलु।
नम्राज्ञापालिका नारी श्रमशीला च सेविका।। १३।।
उदारोत्सर्गयुक्ता सा प्रेममूर्तिः स्वभावतः।
भवत्यतो विकासाय तस्या यच्छदावसरम्।। १४।।

नारी जाति स्वभाव से ही नम्रा, विनीता, श्रमशीला, सेवाभाव युक्ता, उदारा, उत्सर्गमयी होती है, अतः उसके विकास के लिये सदैव अवसर प्रदान करे।

विवाह दिवसोत्सव संस्कार-विधि

संस्कार क्रम—विवाह दिवसोत्सव, विवाह संस्कार के संक्षिप्त संस्करण के रूप में मनाया जाता है। उसी कर्मकाण्ड प्रक्रिया का सहारा लेकर उसे नीचे लिखे क्रम से कराया जाना चाहिये।

मंगलाचरण-षट्कर्म

संकल्प-देवशक्तियों और सत्पुरुषों की साक्षी में संकल्प बोला जाय—

.....नामाऽहं दाम्पत्यजीवनस्य पवित्रतामर्यादयोः रक्षणाय त्रुटीनाञ्च प्रायश्चित्तकरणाय भविष्योज्ज्वलोत्सवे स्वोत्तरदायित्वपालनाय संकल्पमहं करिष्ये।

संकल्प के बाद समय की सीमा का ध्यान रखते हुये देव पूजन, स्वस्ति वाचन आदि क्रम विस्तृत या संक्षिप्त रूप में कराया जाना चाहिये। सामान्य क्रम पूरा हो जाने पर विवाह पद्धति के मन्त्रों का प्रयोग करत हुये नीचे लिखे क्रम से निर्धारित विशेष उपचार कराये जायें। (१) ग्रन्थि बन्धन, (२) पाणिग्रहण (३) वर-वधू की प्रतिज्ञायें, (४) सप्तपदी, (५) आश्वात्सना।

विवाह दिवसोत्सव के कर्मकाण्ड से सम्बन्धित मन्त्र नीचे दिये गये हैं—

ग्रन्थि बन्धन

ॐ समंजन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
संमातरिश्वा स धातां समुदेष्ट्री दधातु नौ।।

—पार. गृ. सू. १।४।१४

पाणिग्रहण

ॐ यदैवि मनसा दूरं दिशोऽनुपवमानो वा।
हिरण्यपर्णो वैकर्णः संत्वा मन्मनषा करोतु असौ।।

—पार. गृ. सू. १।४।१५

शिलारोहण

ॐ आरोहेममश्मानमश्मेवऽ ॐ स्थिरा भव।। अभितिष्ठ पृतन्यातोऽववाधस्व पृतनायतः।।

—पार. गृ. सू. १।७।१

सप्तपदी

ॐ इष एकपदी भवसा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः।।१।।

अन्न की वृद्धि के लिये।

ॐ ऊर्जे द्विपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टयः।।२।।

बल की वृद्धि के लिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ रायस्पोषाय त्रिपदी भव सा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।।३।।

धन की वृद्धि के लिये।

ॐ मायो भवाय चतुष्पदी भव सा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै। बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।।४।।

सुख की वृद्धि के लिये।

ॐ प्रजाभ्यः पंचपदी भव सा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वनयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ५।।

पशुओं की वृद्धि के लिये।

ॐ ऋतुभ्यः षट्पदी भव सा मामनुव्रता भव। विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ६।।

ऋतुओं के अनुसार व्यवहार करने के लिये—

ॐ सखे सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भवा विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ७।।

(६) **आहुति**—यज्ञ करें तो अग्नि स्थापन, गायत्री मन्त्राहुति, प्रायश्चित्याहुति करके पूर्णाहुति करें। यदि यज्ञ करने की स्थिति न हो तो दीप यज्ञ करें। पाँच दीप सजाकर रखें, गायत्री मन्त्र बोलते हुये उन्हें प्रकाशित करें। प्रायश्चित्य आहुति के प्रथम मन्त्र के साथ पति-पत्नी दीपों की ओर अपनी हथेलियाँ करें, जैसे घृत अवघ्राण के समय करते हैं।

(७) **मित्रता के लिये आश्वासन एकीकरण**—पति-पत्नी एक-एक दीपक उठायें। नीचे लिखे मन्त्र पाठ के साथ ज्योतियों को मिलाकर एक ज्योति करें। भावना करें कि हम अपने व्यक्तित्वों को एक दूसरे के साथ इसी प्रकार एकाकार करने का प्रयास करेंगे। दैवी अनुग्रह और स्वजनों के सद्भाव उसमें सहायक होंगे।

ॐ समानी वऽआकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।
—अथर्व ६।६४।३

(८) अन्त में दम्पत्ति पुष्पोहार मन्त्र से एक दूसरे को माल्यार्पण करें। फिर सभी लोग मंगल मन्त्र बोलते हुये पुष्पवृष्टि करें, शुभ कामना आशीर्वाद दें।

माल्यार्पण एवं तिलक के मन्त्र इस प्रकार हैं—

माला

ॐ यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्कि बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।।
यजु. ३१।१०

तिलक

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये।।
यजु. ३१।९

(९) विसर्जन एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया जाय।

वैवाहिक वर्ष गाँठ की उपयोगिता

भारतीय संस्कृति के आधार पर मनुष्य जीवन में सोलह संस्कार आवश्यक गिने गये हैं। इनमें एक विवाह भी अपना व्यापक महत्त्व रखता है। यह संस्कार इतना विस्तृत और अनिवार्य है कि संसार के अन्य देश भले ही सभी संस्कारों का अनुमोदन न करते हों परन्तु विवाह की आवश्यकता और उपयोगिता को सब ने स्वीकार किया है। अन्तर अवश्य है कि भिन्न-भिन्न जातियाँ भिन्न-भिन्न रूपों में विवाह के अवसर पर प्रदर्शन करतीं और आनन्द मनाती हैं। परन्तु क्या आपने कभी सोचा है कि इतने हर्ष और उल्लास से सम्पादित किया गया धर्मकृत्य आजकल धूमिल-सा पड़ता जा रहा है और जिस मनोकामना, हर्ष, उल्लास एवं ऊँचे आदर्शों को सामने रखकर वर-वधू दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करते हैं उनकी पूर्ति बहुत न्यून मात्रा में पूर्ण होती दिखाई देती है और उनका मनोमालिन्य धीरे-धीरे बढ़ने लगता है तथा अन्त में बहुतों को तलाक की भी शरण लेनी पड़ती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि गहरा चिन्तन किया जाय तो वह तथ्य स्पष्ट होगा कि जो काम जितना ही महान उद्देश्य पूर्ति की भावना लेकर और उसके ही अनुरूप जितनी उत्कृष्ट तैयारियों से प्रारम्भ किया जायेगा उसके लिये भविष्य में उसकी प्रतिष्ठा-रक्षा के लिये उतने ही अनुपात में बड़ा संरक्षण भी आवश्यक है।

विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। उसे सुन्दर मनोभूमि देने के लिये यह आवश्यक है कि प्रतिवर्ष हम उसकी वर्षगाँठ का आयोजन करते रहें। इसका यह औचित्य है कि दैनिक जीवन में पति-पत्नी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे आजकल मँहगाई के समय में यदि पति की आमदनी पर्याप्त नहीं हुई और पत्नी बचपन से बहुमूल्य वस्त्र एवं आभूषण तथा अन्य सामानों की टेब लगाये बैठी है तो उसका मन दुःखी और उदास हो सकता है। यदि घर के प्रतिदिन के छोटे-मोटे कार्य करने के लिये कोई नौकर अथवा घर में दूसरा व्यक्ति नहीं हुआ और पत्नी पर अधिक कार्य का बोझ आ पड़ा जिसका अभ्यास उसे पिता के घर नहीं था। ऐसी परिस्थिति में उसका मनोमालिन्य बढ़ सकता है। यदि पति महोदय अपने दफ्तर, स्कूल अथवा खेती के या व्यवसाय वर्ग के कार्यों में ही उलझे रहते हैं और पत्नी के साथ मौखिक सहानुभूति भी नहीं दिखाने का कष्ट करते तो यह खाई और भी बढ़ती चली जायेगी, इसी तरह यदि पत्नी घर की सब स्थितियों से सन्तुष्ट है, अपने को किसी भी परिस्थिति में ढाल लेने का पाठ अपने माता-पिता के घर सीख चुकी है और परिश्रम करने की आदत में पारंगत है तो वह प्रसन्न मुद्रा में बनी रहेगी। पति महोदय को पत्नी की तरफ से यदि कुछ शिकायत है और इसका निराकरण न हो सका और अगले दिन उनकी कुछ और शिकायत हुई जो मन-मुटाव को और आगे बढ़ाने में सहायक बनती चली गई तो अन्त में परिणाम यह होगा कि दोनों में दरार पड़ जायेगी और धीरे-धीरे उनके सुनहरे सपने जो थोड़े ही दिन पहले विवाह के दिन उन्होंने देखे थे, निराशा की स्थिति में संकट और विपत्ति के पहाड़ उपस्थित कर देंगे। इससे ही त्राण पाने के लिये प्रति वर्ष विवाह की वर्षगाँठ मनाने का पुनीत क्रम चलाया गया है। विवाह की वर्षगाँठ का आधार वैसा ही समझा जाना चाहिये जो आधार और उद्देश्य जन्म दिवस अथवा जयन्तियों के मनाने का है।

कहावत है कि जब दो घड़े एक साथ रक्खे जाते हैं तो उनमें टक्कर लगना स्वाभाविक है, परन्तु इसका हल यह नहीं कि एक घड़ा कमरे के एक किनारे और दूसरा घड़ा कमरे के दूसरे किनारे किया जाये। यह कुशलता का परिचायक नहीं बल्कि मूर्खता का लक्षण बन जायेगा। हमें करना यह होगा कि घड़ों को एक ही साथ व्यवस्था और सावधानीपूर्वक रक्खें। ऐसे ही पति-पत्नियों में मनमुटाव होने की समस्या अगर किसी कारणवश उत्पन्न हुई तो शीघ्र ही उसे सुलझाने का आयोजन किया जाय और उसे समाप्त किया जाय। यही आयोजन विवाह की वर्षगाँठ के रूप में मनाया जाना चाहिये। इस पुनीत तिथि को एक आयोजन छोटा ही सही परन्तु ऐसी प्रसन्नतापूर्ण स्थिति में संगठित किया जाये तथा अपने इष्ट मित्रों को भी आमन्त्रित किया जाये कि विवाह की सी स्मृति झलकने लगे। भले ही दम्पत्ति के एक वर्ष के जीवन में कुछ नीरसता न आई हो फिर भी उनके सही प्रेम सूत्र को और सुदृढ़ बनाने के लिये यह आयोजन विशेष रूप से सहायक होगा और ऐसा प्रति वर्ष किया जाय। वर्षगाँठ के सुअवसर पर पति-पत्नी दोनों ही अच्छी तरह पहले जैसे विवाह की सी सजावट करें और धूमधाम से इष्ट मित्रों को निमन्त्रित करके धार्मिक क्रियाओं को विधिवत् सम्पन्न करें। हवन और यज्ञ भी संक्षिप्त रूप में करें तथा यज्ञशाला में ही मित्रों एवं परिजनों तथा बड़े-बूढ़े सम्मानित व्यक्तियों के सामने अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पिछले मनमुटाव को भूल जाने का संकल्प लें। पति महोदय स्पष्ट शब्दों में यह व्रत करें कि यदि वर्ष भर के आचरण एवं व्यवहार में यदि हम कारण विशेष अथवा परिस्थिति विशेष में अपनी पत्नी को उचित आदर न दे सके हों, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति न की हो तो मैं समाज के सामने पश्चात्ताप करता हूँ और भविष्य में अपनी त्रुटियों को सुधारने का प्रयास करूँगा। भले ही कोई मनमुटाव या अभाव की दशा न आई हो फिर भी इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह होगा कि पत्नी को यदि कुछ मन में असन्तोष भी होगा तो वह भूल जायेगी और पति के इस कोमल स्वभाव और सहृदयता पर आत्म विभोर हो जायेगी और मन में संकल्प करेगी कि भविष्य में हम दोनों के केवल शरीर दो होंगे मन एक रहेगा।

इसी तरह स्त्री भी समाज के सामने यह क्षमा याचना करेगी कि वर्ष में यदि हमने कुछ भूल की हो तो पतिदेव से क्षमा माँगती हूँ और प्रतिज्ञा करती हूँ कि भविष्य में मैं और सफल पत्नी बनूँगी और जिन व्यवहारों से कुछ मनमुटाव की स्थिति का अनुभव मैंने गतवर्ष दिया है उन्हें अगले वर्ष आचरण में नहीं लाऊँगी। जहाँ यह आयोजन पति-पत्नी में सद्भावना स्थापित करेगा वहीं समाज को एक अपूर्व आदर्श की दिशा देगा और समाज में बढ़ती हुई बुराई का उन्मूलन हो सकेगा।

इस बात का ध्यान रक्खा जाना चाहिये कि आयोजन का रूप दम्पत्ति की स्थिति एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप हो। आयोजन की महत्ता उसमें आदर्श स्थापित करने में है न कि अनावश्यक तड़क-भड़क बनाकर खर्च साध्य बनाने में।

वर्षगाँठ मनाने के अनेकों ढंग हैं इनमें से समय और परिस्थितियाँ ध्यान में रखकर किसी भी ढंग को अपनाया जा सकता है। यदि पति-पत्नी ही हों तथा उनके बच्चे साथ हों और किसी अन्य स्थान पर जैसे नौकरी की दशा में हों तो वहाँ कुछ रूप बदला भी जा सकता है जैसे दो एक रोज का अवकाश लेकर किसी निकट के पवित्र स्थान अथवा अपने इष्टदेव के स्थान का दर्शन करने चले जायें और वहाँ किसी लोकमंगल सम्बन्धित संस्था को कुछ स्वेच्छापूर्वक दान भी दें।

यदि इससे भी संक्षिप्त रूप में वर्षगाँठ मनाने की अवस्था में हों तो उस दिन अपने इष्ट मित्रों के लिये अपनी शक्ति एवं इच्छानुकूल उपहार भेजने का आयोजन करें। यदि विवाह की वर्षगाँठ के उद्देश्य को और अधिक व्यापक ओर लोकमंगल भावना से ओत-प्रोत देखना चाहते हैं तो उस दिन दम्पत्ति उपवास व्रत का पालन करते हुये सार्वजनिक कल्याण की भावना को प्रसारित करने एवं अपने मित्रों को नई दिशा देने के लिये कम से कम एक पौधा लगा दें, जिससे साधारण जनता को लाभ हो एवं समाज के सामने एक उच्च आदर्श भी उपस्थित हो सके।

विवाह की वर्षगाँठ के उत्सव को सफल बनाने के लिये पति-पत्नी दोनों यह लक्ष्य प्रति क्षण अपने सम्मुख रक्खें कि भले ही इसके पहले दोनों के मन में कोई जटिल ग्रन्थि पड़ी हो जिससे प्रभावित होकर पिछले दिनों आपस में वार्तालाप में सारहीनता दिखाई देती हो, परन्तु इस दिन ऐसा कदापि न किया जावे और सफलतापूर्वक वह दिन समाप्त हो फिर तो यह उत्सव अपना प्रभाव सम्पन्नता के साथ ही दिखायेगा और तब दोनों इस कथन की गहराई को समझने लगेंगे कि "सोना और सज्जन टूटें और जुड़ें सौ बार।"

विवाह की वर्षगाँठ मनाने में विशेष योगदान पत्नी का ही हो सकता है। हो सकता है पति बाहरी कामों के बोझ में फँसा रहे उसे स्मरण न हो सके परन्तु स्त्रियाँ जैसा कि उन्हें लक्ष्मी की उपाधि मिली है परिवार को स्वर्ग बना सकती हैं यदि उनकी आस्था जमी हो कि विवाह की वर्षगाँठ मनाना अपने परिवार और अपने बाल-बच्चों में प्रेम-व्यवहार बढ़ाने और अपना सौभाग्य बुलाना

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है तो यह कार्य बड़ी सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है। गृह लक्ष्मी में उनकी सरसता और कोमलता एवं सहनशीलता के प्रभाव का ऐसा शक्ति प्रवाह निकलता है कि जिसके सामने पुरुष क्या महापुरुषों को भी हार माननी ही पड़ती है। क्या सीताजी को जंगल में साथ ले जाने का और कोई पहले विचार था परन्तु सीताजी के अनुनय और विनय भरे शब्दों पर पुरुषोत्तम भगवान को अपना विचार बदलना नहीं पड़ा ?

विवाह की वर्षगाँठ मनाने का सूक्ष्म दर्शन यह भी है कि विवाह के समय जो वर-वधू एक दूसरे के साथ सप्त प्रश्नों द्वारा अपने-अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान प्राप्त करते और एक दूसरे के प्रति अपना अपना कर्त्तव्य निभाने का संकल्प अग्नि, गुरु एवं परिजन के सामने करते हैं उसका चित्र एक बार फिर से उनके हृदय में चित्रित हो जाता है और वे अपनी भूलों पर मन ही मन क्षमा याचना चाहते हैं और सही सुधार का यही ढंग है। वर्ष भर के झंझटों और कार्य की परिधि में बँधा व्यक्ति अवश्य कुछ न कुछ अपने कर्त्तव्य पथ से विचल सकता है, परन्तु यह भूल क्षम्य भी है यदि उसका अनुभव कर उसका प्रायश्चित कर लिया जाये।

जब वर्षगाँठ का आयोजन समाप्त हो जाये तो सब कार्यों से निवृत्त होकर पति एवं पत्नी एकत्रित हों, परस्पर दिल खोलकर वार्तालाप करें और एक दूसरे की भूलों की समालोचना न करें बल्कि एक दूसरे से क्षमा याचना करें और उन विशेष परिस्थितियों को यथाशक्ति स्पष्ट करने का प्रयास करें जिनमें पड़कर उन लोगों ने भूलें की थीं।

यदि परिवार बड़ा है गृह का प्रबन्ध अपने ऊपर न हो तो ऐसी परिस्थिति में विवाह की वर्षगाँठ मनाने में प्रमुख भूमिका स्वयं पति-पत्नी न बनायें बल्कि यह गृहस्वामी के नियन्त्रण और आदेशानुसार ही मनाया जाये। ऐसा करने से परिवार की व्यवस्था सुसज्जित और सुव्यवस्थित बनी रहेगी और यह सुअवसर अन्य परिवारों में भी सद्भावना का प्रेरक बनेगा।

संयोग से किसी वर्ष ऐसी परिस्थितियाँ आ जायें कि पत्नी अपने पिता के घर हो या स्वयं पति किसी कारण विशेष से घर पर या एक स्थान पर उपस्थित न हो सके तो उस समय दोनों अपने-अपने स्थान पर ही वर्षगाँठ मनाने का आयोजन किसी न किसी रूप में कर लें। जिससे इस कार्य की श्रृंखला टूटने न पावे।

सारांश यह कि विवाह की वर्षगाँठ मनाने का उद्देश्य यह है कि वर-वधू पाणिग्रहण के पूर्व एवं पाणिग्रहण के दिन जिस मीठे और सुनहरे भावों में ओत-प्रोत होकर प्रणय सूत्र में बँधे थे, उसी सम्बन्ध को चिरस्थायी एवं फलों से परिपूर्ण रखने में विवाह की वर्षगांठ विशेष रूप से सहायक है। अब हम लोगों को किसी भी परिस्थिति में अपनी अपनी शक्ति के अनुसार विवाहों की वर्षगाँठ मनानी चाहिये और इसके लाभों से पूर्ण रूप से अपने परिवार को आगे बढ़ाना चाहिये।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

युग-संस्कार-पद्धति

धर्म-तन्त्र से लोक-शिक्षण के क्रम में संस्कारों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति में मानव जीवन को सही स्वरूप और दिशा देकर उसे उल्लेखनीय सफलता तथा सार्थकता प्रदान करने के लिये संस्कारों की सबल, सफल और सरल परिपाटी चिरकाल से चली आ रही है।

इस माध्यम से नव सृजन अभियान को गति देने के लिए, उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए, सुसंस्कारी व्यक्तित्वों के निर्माण एवं विकास की अनिवार्य आवश्यकता बार-बार बतलायी गयी है और कहा गया है कि "अगले ही चरण में समाज में संस्कार अभियान तीव्रतर होगा। समाज की माँग को पूरी करने के लिए बड़ी संख्या में संस्कार सम्पन्न कराने वाले पुरोहितों की आवश्यकता पड़ेगी। दैवी चेतना के प्रभाव से बड़ी संख्या में प्रतिभा-सम्पन्नों, भावनाशीलों में ऐसी उमंगें जागेंगी, जो उन्हें थोड़े या बहुत समय के लिए पुरोहितों के गरिमामय कार्य में प्रवृत्त होने के लिए बाध्य करेंगी। वे सांसारिक व्यस्तता, लोभ-मोह से ऊपर उठकर इस कार्य के लिए समय और श्रम लगायेंगे, किन्तु संस्कृत भाषा का पूर्वाभ्यास न होने से उन्हें प्रचलित पद्धति से कर्मकाण्ड कराने में बाधा पड़ेगी। इस बाधा को दूर करके, उत्पन्न होने वाली माँग के अनुरूप, बड़ी संख्या में सेवाभावी पुरोहितों को तैयार किया जा सकेगा।"

उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए, कर्मकाण्ड के लिए श्लोक परक मन्त्रों के स्थान पर सूत्र मन्त्रों के प्रयोग की विधा पुनः विकसित की गयी है। प्राचीन काल में सूत्र पद्धति बहुत लोकप्रिय रह चुकी है। कालान्तर में समय के प्रभाव से श्लोक पद्धति प्रचलन में आ गयी। अब युग की माँग के अनुरूप सूत्र पद्धति को पुनः स्थापित करना आवश्यक हो गया है। इसीलिए अगले चरण के रूप में दीपयज्ञ तथा संस्कारों के लिए सूत्र पद्धति विकसित की गयी।

प्रथम प्रयोग के रूप में सामूहिक दीप यज्ञों के लिए युग यज्ञ पद्धति असामान्य लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है। अब विवाह, अन्त्येष्टि एवं मरणोत्तर (श्राद्ध) संस्कारों के अतिरिक्त अन्य सभी संस्कारों को, सूत्र मन्त्रों को प्रधानता देते हुए संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। आवश्यकता के अनुसार विवकपूर्वक सुगम श्लोकों का प्रयोग भी उचित स्थानों पर किया गया है। प्रयुक्त श्लोक भी बहुत प्रचलित तथा सुगम हैं, इसलिए संस्कृत न जानने वाले सुशिक्षित परिजन भी उन्हें थोड़े से अभ्यास से ही प्रयुक्त करने में सफल होंगे।

इसमें सामान्य प्रकरण तथा संस्कारों से सम्बन्धित प्रेरणाओं-टिप्पणियों को नहीं जोड़ा गया है। वे सम्बन्धित कर्मकाण्डों में अपनी पूर्व प्रचलित पद्धति में पिछले पृष्ठों पर वर्णित हैं ही। परिजन उनका उपयोग करेंगे ही इसलिए इन पृष्ठों में केवल विशेष कर्मकाण्ड, आवश्यक क्रिया निर्देशों एवं सूत्र मन्त्रों सहित ही संक्षेप में दिये जा रहे हैं।

क्रम व्यवस्था

कोई भी संस्कार कराने के लिए समय और परिस्थितियों के अनुरूप यज्ञ अथवा दीपयज्ञ के साथ संस्कार कराये जा सकते हैं। प्रारम्भ में क्रमशः मंगलाचरण, षट्कर्म, तिलक, एवं रक्षा सूत्र (कलावा बंधन) के बाद कलश पूजन, देवपूजन, स्वस्तिवाचन आदि कर्मकाण्ड कराये जायें। इसके बाद संस्कार के विशेष कर्मकाण्ड सम्पन्न करायें। प्रत्येक क्रिया से जुड़े सूत्र हिन्दी में समझाकर संस्कृत में दुहरवाये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जायें, क्रिया के समय निर्धारित मन्त्र बोले जायें। तदुपरान्त अग्निस्थापन करवाकर यज्ञ अथवा दीपयज्ञ की आहुतियाँ दी जायें। गायत्री मन्त्र की आहुतियों के बाद ५ आहुतियाँ महामृत्युञ्जय मन्त्र की प्रदान की जायें।

पूर्णाहुति के पूर्व संस्कार विशेष का संकल्प कराया जाय। प्रत्येक संस्कार के साथ जुड़े दायित्वों को पूरा करने का व्रत यजमान परिवार के परिजनों को दिलाये जाने की व्यवस्था संकल्प क्रम में रखी गयी है। संकल्प बुलवाकर पूर्णाहुति सम्पन्न करायी जाय। संकल्पों को धारण किये बिना, संस्कार की प्रेरणाओं को जीवन में अपनाये बिना संस्कार पूर्ण नहीं होता, इसलिए पूर्णाहुति संकल्पमय ही होनी चाहिए।

यदि दीप यज्ञ है, तो संकल्प के अक्षत-पुष्प दीप पूजास्थली पर अर्पित कराये जायें। यज्ञ हो, तो संकल्प करवाकर उस दायित्व बोध के साथ पूर्णाहुति करायें। सभी संस्कारों में इसी प्रकार का क्रम रहेगा।

पुंसवन संस्कार

(१) **ओषधि अवघ्राण**—गर्भिणी दोनों हाथों से ओषधि की कटोरी लेकर निम्नांकित सूत्रों का भाव समझते हुए, उन्हें दुहरायें और इष्ट का ध्यान करें—

सूत्र—(क) ॐ दिव्य चेतनां स्वात्मीयां करोमि। (हम दिव्य चेतना को आत्मसात् कर रहे हैं।)

(ख) ॐ भूयो भूयो विधास्यामि। (यह क्रम आगे भी बनाये रखेंगे।) गर्भिणी ओषधि को सूँघे, उस समय मन्त्र बोला जाय—

मन्त्र—ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रम् तन्नऽआसुव।।

(२) **गर्भ पूजन**—घर की वयोवृद्ध महिला अथवा गर्भिणी का पति अक्षत, पुष्प लेकर सूत्र दुहराये—

सूत्र—ॐ सुसंस्काराय यत्नम् करिष्ये। (नवागन्तुक को समुन्नत और सुसंस्कृत बनायेंगे।)

सूत्र पूरा होने पर गायत्री मन्त्र बोलते हुए यह पुष्प-अक्षत गर्भिणी के हाथ में दिया जाये, वह उसे अपने उदर से स्पर्श कराकर पूजा वेदी पर अर्पित करे।

(३) **आश्वास्तना**—पति, पत्नी के कन्धे पर दाहिना हाथ रखे। सभी परिजन उस ओर हाथ उठाएँ, उनसे नीचे लिखे सूत्र दुहरवाएँ—

सूत्र—(क) ॐ स्वस्थाम् प्रसन्नाम् कर्तुम् यतिष्ये (गर्भिणी को स्वस्थ और प्रसन्न रखने के लिए प्रयत्न करेंगे।)

(ख) ॐ मनोमालिन्यम् नो जनयिष्यामि। (परिवार में कलह और मनोमालिन्य न उभरने देंगे।)

(ग) ॐ स्वाचरणम् अनुकरणीयम् विधास्यामि। (अपना आचरण-व्यवहार अनुकरणीय बनायेंगे।)

सूत्र पूरे होने पर आचार्य उन सब पर अक्षत, पुष्प छिड़कें और यह मन्त्र बोलें—

मन्त्रः—ॐ स्वस्ति ! ॐ स्वस्ति ! ! ॐ स्वस्ति ! ! !

यहाँ यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(४) **चरु प्रदानः**—गर्भिणी दोनों हाथों में खीर की कटोरी पकड़े, मन्त्र बोलने के बाद मस्तक से लगाये और उसे रख ले। बाद में उसे प्रसाद रूप में खाले।

मन्त्रः—ॐ पयः पृथिव्याम् पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

(५) **संकल्प एवं पूर्णाहुति**—परिवार के प्रमुख परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प-जल लेकर संकल्प सूत्र दुहराते हुए पूर्णाहुति का क्रम सम्पन्न करें।

संकल्प मन्त्रः—अद्य ..... गोत्रोत्पनः ..... नामाहम् पुंसवन संस्कार सिद्ध्यर्थम् देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणा अन्तर्गते।

१. ॐ दिव्यचेतनाम् स्वात्मीयाम् करिष्ये।

२. ॐ सुसंस्काराय यत्नम् करिष्ये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

३. ॐ स्वस्थाम् प्रसन्नाम् कर्तुं यतिष्ये।

४. ॐ मनोमालिन्यम् नो जनयिष्यामि।

५. ॐ स्वाचरणम् अनुकरणीयम् विधास्यामि।

इत्येतान् व्रतान् धारणार्थम्, संकल्पम् अहम् करिष्ये।

हाथ के अक्षत—पुष्प को पूर्णाहुति मन्त्र बोलते हुए दीपक की थाली में एक स्थान पर चढ़ाया जाये। (शेष आरती आदि का .क्रम समय के अनुसार संक्षिप्त या विस्तृत रूप में सम्पन्न कर लिया जाय।)

नामकरण संस्कार

(१) **मेखला बन्धन**—माता या पिता अपने हाथ में मेखला (बनी हुई करधनी या कलावा) लें और सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ स्फूर्तं तत्परम् करिष्यामि। (शिशु में स्फूर्ति और तत्परता बढ़ायेंगे।)

शिशु के कमर में सूत्र बाँधते हुए यह मन्त्र बोला जाये—

मन्त्र—ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।

(२) **मधुप्राशन**:—माता चम्मच में शहद लेकर सूत्र दुहराये **सूत्र—ॐ शिष्टताम् शालीनताम् वर्धयिष्यामि।** (शिशु में शिष्टता-शालीनता की वृद्धि करेंगे।)

शिशु को शहद चटाते हुए यह मन्त्र बोला जाये—

मंत्र—ॐ मंगलम् भगवान् विष्णुः मंगलम् गरुडध्वजः।

मंगलम् पुण्डरीकाक्ष मंगलायतनो हरिः।।

(३) **सूर्य नमस्कार**—पिता बच्चे को गोदी में लेकर सूत्र दुहरवाएँ—**सूत्रः—ॐ तेजस्विताम् वर्धयिष्यामि।** (शिशु की तेजस्विता में वृद्धि करेंगे।)

इसके बाद उसे सूर्य के प्रकाश में ले जायें। इस बीच गायत्री मन्त्र का सस्वर पाठ चलायें।

(४) **भूमि पूजन-स्पर्श**:—माता हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर, सूत्र दुहरायें—**सूत्र —ॐ सहिष्णुम् कर्त्तव्यनिष्ठम् विधास्यामि।** (शिशु को सहनशील तथा कर्त्तव्यनिष्ठ बनायेंगे।)

सूत्र पूरा होने पर अक्षत, पुष्प पृथ्वी पर अर्पित करें और मन्त्रोच्चारण के साथ शिशु का स्पर्श पृथ्वी से करें—

मंत्रः—ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पृपितां नो भरीमभिः।। ॐ पृथिव्यै नमः।

(५) **नाम घोषणा**—नाम लिखी थाली पर से आवरण हटाकर प्रतिनिधि शिशु के नाम की घोषणा करे, फिर उसका नाम लेते हुए उद्घोष कराएँ—

(१) प्रतिनिधि शिशु का नाम ले— (सब कहें) चिरंजीवी हो।

(२) प्रतिनिधि शिशु का नाम ले— (सब कहें) धर्मशील हो।।

(३) प्रतिनिधि शिशु का नाम ले— (सब कहें) प्रगतिशील हो।।

(६) **परस्पर परिवर्तन-लोकदर्शन**—सभी उपस्थित जन सूत्र दुहरायें—**सूत्र—ॐ उपलालनम् करिष्यामि अनुशिष्टम् विधास्यामि।** (शिशु को दुलार देंगे—अनुशासन में रखेंगे।)

तदुपरान्त गायत्री मन्त्र बोलते हुए पहले माँ बच्चे को पिता के हाथ में दे, पिता घर के गुरुजनों को दे और वे उपस्थित पड़ौसी आदि परिजनों को दें।

(७) **बाल प्रबोधन**—आचार्य बालक को अपनी गोद में लेकर उसके कान के पास बोलें—

(क) भो तात ! त्वम् ईश्वरांशोऽसि। (हे तात ! तुम ईश्वर के अंश हो।) **(ख) मनुष्यता तव महती विशिष्टता।** (तुम्हारी सबसे बड़ी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विशेषता मनुष्यता है।) **(ग) ऋष्यनुशासनं पालयेत्।** (जीवन भर ऋषि अनुशासन का पालन करना।)

यहाँ यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(८) **आशीर्वचन**—सभी लोग अक्षत-पुष्प की वर्षा करते हुए आशीर्वाद प्रदान करें। आचार्य निम्नांकित मन्त्र वाक्य बोलें—

भो शिशो ! त्वम् आयुष्मान् वर्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः।

(९) **संकल्प एवं पूर्णाहुति**—घर के प्रमुख सदस्य हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लेकर संकल्प सूत्र दुहराएँ और पूर्णाहुति मन्त्र के साथ दीपक की थाली में चढ़ा दें—

संकल्प मन्त्र— अद्य ..... गोत्रोत्पन्नः ..... नामाहम् नामकरण संस्कार सिद्ध्यर्थं देवानाम् तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणा-अन्तर्गते—

१. ॐ स्फूर्तम् तत्परम् करिष्यामि।

२. ॐ शिष्टताम् शालीनताम् वर्धयिष्यामि।

३. ॐ तेजस्विताम् वर्धयिष्यामि।

४. ॐ सहिष्णुम् कर्तव्यनिष्ठम् विधास्यामि।

५. ॐ उपलालनम् करिष्यामि, अनुशिष्टम् विधास्यामि।

इत्येतान् व्रतान् धारणार्थं संकल्पम् अहम् करिष्ये।।

अन्नप्राशन संस्कार

(१) **पात्र पूजन**—माता-पिता हाथ में रोली या चन्दन लेकर सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ सुपात्रताम् प्रदास्यामि। (शिशु में सुपात्रता का विकास करेंगे।) अब मन्त्रोच्चारण करते हुए अन्नप्राशन के लिए रखी खीर के पात्र पर स्वस्तिक अंकित करें-

मन्त्र—ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

(२) **अन्न संस्कार**—आचार्य खीर के पात्र को हाथ में लें और सूत्र सबसे दुहरवाएँ।

सूत्र—ॐ कुसंस्काराः दूरीभूयासुः। (अन्न के पूर्व कुसंस्कारों का निवारण करते हैं।) इसके बाद खीर पर कलश के जल के छींटे लगाते हुए निम्नस्थ मन्त्र बोलें—

मन्त्र—ॐ मंगलम् भगवान् विष्णुः मंगलम् गरुडध्वजः।

मंगलम् पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः।।

आचार्य पुनः खीर में तुलसीदल डालते हुए निम्नांकित सूत्र वाक्य बोलें—**सूत्रः—ॐ सुसंस्काराः स्थिरीभूयासुः।** (इसमें सात्विक सुसंस्कारों की स्थापना करते हैं।)

यहाँ यज्ञ या दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(३) **अन्नप्राशन**—आचार्य गायत्री मन्त्र बोलते हुए बच्चे को चम्मच से खीर चटाएँ। सभी लोग समवेत स्वर में गायत्री मन्त्र बोलें।

(४) **संकल्प एवं पूर्णाहुति**—घर के प्रमुख जन हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लेकर संकल्प सूत्र दुहराकर पूर्णाहुति का क्रम सम्पन्न करें।

संकल्प—अद्य ..... गोत्रोत्पन्न ..... नामाहम् अन्नप्राशन संस्कार सिद्धयर्थं देवानाम् तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणा-अन्तर्गते।

१. ॐ सुपात्रताम् प्रदास्यामि।

२. ॐ कुसंस्कारान् दूरीकरिष्यामि।

३. ॐ सुसंस्कारान् स्थिरीकरिष्यामि।

इत्येतान् व्रतान् धारणार्थं संकल्पम् अहम् करिष्ये।

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार

(१) **मस्तक लेपन**—माता-पिता दूध-दही-जल मिश्रित पदार्थ की कटोरी हाथ में लेकर सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ हीनसंस्कारान् निवारयिष्यामि। (बच्चे के हीन संस्कारों का निवारण करेंगे।)

तदुपरान्त मन्त्र बोलते हुए बच्चे के बालों को गीला करें—

मन्त्र—ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(२) **त्रिशिखा बन्धन**—माता-पिता हाथ में कलावा लेकर सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ बहुमुखम् विकासम् करिष्ये। (शरीर के साथ मस्तिष्क के बहुमुखी विकास की व्यवस्था बनायेंगे।)

तत्पश्चात् निम्नांकित मन्त्रों से क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश का ध्यान करते हुए बालों में तीन जगह कलावा बाँधें।

मन्त्र—(क) ॐ ब्रह्मजज्ञानम् प्रथमम् पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्या उपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।

(ख) ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।।

(ग) ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव S उतो त S इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।

(३) **छुरा (उस्तरा) पूजन**—हाथ में अक्षत, पुष्प, जल, रोली, चन्दन लेकर छुरे का पूजन करें—

ॐ जलम् गन्धाक्षतम् पुष्पाणि धूपम् दीपम् नैवेद्यम् समर्पयामि।

(४) **त्रिशिखा कर्त्तन**—आचार्य कैंची हाथ में लेकर सूत्र दुहरवायें—**सूत्र—ॐ दुष्प्रवृत्तीः उच्छेत्स्यामि।** (स्वभावजन्य दुष्प्रवृत्तियों का उच्छेदन करते रहेंगे।) तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र बोलते हुए कलावा बँधे बालों के तीनों अंश काटें।

(५) **नवीन वस्त्र पूजन**—माता-पिता हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ संस्कृतिनिष्ठं विधास्यामि। (बच्चे को संस्कृति के प्रति निष्ठावान बनायेंगे।)

तदुपरान्त यह मन्त्र बोलते हुए वस्त्रों पर छिड़कें—

मन्त्र—ॐ मंगलम् भगवान् विष्णुः मंगलम् गरुडध्वजः।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः।।

(६) **मुण्डन कृत्य**—गायत्री मन्त्र समवेत स्वर में बोलते हुए मुण्डन कृत्य किया जाये। यहाँ यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(७) **स्वस्तिक लेखन**—आचार्य रोली या चन्दन अनामिका अंगुली में लेकर सूत्र दुहरवाते समय उस पर दृष्टि गड़ाये रखें—

सूत्रः—ॐ विचारान् संयन्तुम् प्रेरयिष्यामि। (बच्चे को विचार संयम के लिए प्रेरित करते रहेंगे।)

तदुपरान्त यह मन्त्र बोलते हुए बच्चे के सिर पर केन्द्र में स्वस्तिक अंकित कर दें—

मन्त्र—ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

संकल्प एवं पूर्णाहुति—घर के प्रमुख परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प, जल लेकर संकल्प सूत्र दुहरायें, पूर्णाहुति सम्पन्न करें—

संकल्पः—अद्य ..... गोत्रोत्पन्नः ..... नामाहम् चूड़ाकरणसंस्कार सिद्ध्यर्थं देवानाम् तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणान्तर्गते—

१-ॐ हीनसंस्कारान् निवारयिष्यामि।

२-ॐ बहुमुखम् विकासम् करिष्ये।

३-ॐ दुष्प्रवृत्तीः उत्छेत्स्यामि।

४-ॐ संस्कृतिनिष्ठं विधास्यामि।

५-ॐ विचारान् संयन्तुम् प्रेरयिष्यामि।

इत्येतान् व्रतान् धारणार्थं संकल्पम् अहम् करिष्ये।

शिखा स्थापन संस्कार

शिखा सिंचन—हाथ में दूध मिश्रित जल लेकर सूत्र दुहराकर उसे अभिमंत्रित करें।

सूत्रः—ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। (परमात्मा हमें तेजस्विता प्रदान करें।) तत्पश्चात् निम्नांकित मंत्रोच्चारण के साथ शिखा स्थान का सिंचन करें।

मन्त्र—ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।

शिखा स्थापन—आचार्य अथवा उनके प्रतिनिधि कलावा हाथ में लेकर सूत्र दुहरवाएँ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूत्र—ॐ वर्चोऽसि वर्चो मयि धेहि। (परमात्मा हमें वर्चस्वी-शक्ति सम्पन्न बनायें।) तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र बोलते हुए आचार्य या उनके प्रतिनिधि शिखा स्थान के बालों को बाँध दें।

३-शिखा पूजन—हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर मन्त्रोच्चारण के बाद शिखा स्थान का पूजन करें।

मन्त्र—ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

संकल्प एवं पूर्णाहुति—शिखा स्थापन संस्कार कराने वाले सभी लोगों के हाथ में अक्षत-पुष्प-जल देकर संकल्प दुहरवाकर पूर्णाहुति का क्रम सम्पन्न करें—

संकल्प—अद्य ..... गोत्रोत्पन्नः ..... नामाहम् शिखास्थापनसंस्कारसिद्ध्यर्थं देवानाम् तुष्ट्यर्थं देवसंस्कृति-अनुरूपम् स्वचिन्तन-चरित्र-अभ्यासान् विनिर्मितुम् साधना-उपासना स्वाध्याय सेवानाम् व्रतानाम् संकल्पम् अहम् करिष्ये।

विद्यारम्भ संस्कार

१-गणेश पूजन—बच्चे के हाथ में अक्षत, पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें—

सूत्र—ॐ विद्यां संवर्धयिष्यामि। (बच्चे में शिक्षा के साथ-साथ विद्या का भी विकास करेंगे।) तदुपरान्त मन्त्रोच्चारण के साथ पूजा वेदी पर उसे चढ़वा दें।

मन्त्र—ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम।। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।

सरस्वतीपूजन—पुनः अक्षत-पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें।

२-सूत्र—ॐ कलाम् संवेदनशीलताम् वर्धयिष्यामि। (बच्चे में कलात्मकता और संवेदनशीलता का विकास करेंगे।) तदुपरान्त मन्त्र बोलते हुए उसे पूजा वेदी पर चढ़वा दें।

मन्त्र—ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धिया वसुः।।

३-उपकरण पूजन—बच्चे एवं अभिभावकों के हाथ में अक्षत-पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें—

सूत्र—ॐ विद्यासंसाधनमहत्त्वम् स्वीकरिष्ये। (विद्या विकास के साधनों की गरिमा का अनुभव करते रहेंगे।) इसके बाद स्लेट, बत्ती, कलम-कापी पर मंत्रोच्चारणपूर्वक चढ़वा दें।

मन्त्र—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ-मिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोऽ३म्प्रतिष्ठ।।

४-गुरुपूजन—हाथ में अक्षत-पुष्प देकर बच्चे एवं अभिभावकों से सूत्र दुहरवायें—

सूत्र—ॐ आचार्यनिष्ठां वर्धयिष्यामि। (शिक्षकों-गुरुजनों के प्रति निष्ठा को सतत बढ़ाते रहेंगे।) मन्त्र बोलने के साथ उसे पूजावेदी पर चढ़वा दें।

मन्त्र—ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

५-अक्षर लेखन-पूजन—माता-पिता हाथ में बत्ती या कलम लिये हुए बच्चे का हाथ पकड़कर पहले सूत्र दुहरवायें—

सूत्र—ॐ नीतिनिष्ठाम् वर्धयिष्यामि। (बच्चे में नीति के प्रति निष्ठा की वृद्धि करते रहेंगे।) तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र बोलते हुए **'ॐ भूर्भुवः स्वः'** लिखायें और उस पर अक्षत-पुष्प चढ़वा दें।

यहाँ यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

६-संकल्प एवं पूर्णाहुति—घर के प्रमुख परिजन तथा बच्चे (जिसका संस्कार हो रहा है) के हाथ में अक्षत-पुष्प-जल देकर संकल्प सूत्र दुहरवायें, तत्पश्चात् पूर्णाहुति का क्रम सम्पन्न करें।

संकल्प—अद्य . . . . . गोत्रोत्पन्नः . . . . नामाहम् विद्यारम्भ संस्कार सिद्ध्यर्थं देवानाम् तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणान्तर्गते—

१-ॐ विद्यां संवर्धयिष्यामि।

२-ॐ कलात्मकताम् संवेदनशीलताम् वर्धयिष्यामि।

३-ॐ विद्यासंसाधनमहत्त्वं स्वीकरिष्ये।

४-ॐ आचार्यनिष्ठां वर्धयिष्यामि।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

५-ॐ नीतिनिष्ठां वर्धयिष्यामि। इत्येतान् व्रतान् धारणार्थं संकल्पम् अहम् करिष्ये।

यज्ञोपवीत संस्कार

१-मेखला-कोपीनधारण—कलावा या कोपीन दोनों हाथों के सम्पुट में रखकर निम्नांकित सूत्र दुहराकर अभिमंत्रित करें—

सूत्र—ॐ संयमशीलः तत्परश्च भविष्यामि। (संयमशील और तत्पर रहेंगे।) अब गायत्री मन्त्र बोलते हुए उसे कमर में बाँधें।

२-दण्डधारण—सूत्र दुहराकर दण्ड को मस्तक से लगाकर अपने दाहिनी ओर रख लें।

सूत्र—ॐ अनुशासनानि पालयिष्यामि। (गुरु द्वारा निर्धारित अनुशासनों का पालन करेंगे।)

३-यज्ञोपवीत पूजन—दोनों हाथों के सम्पुट में यज्ञोपवीत को लेकर पाँच बार गायत्री मन्त्र बोलते हुए, उसमें गायत्री की प्राणप्रतिष्ठा की जाय।

४-पंचदेवावाहन—निम्नांकित सूत्र दुहराकर क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यज्ञ और सूर्य देवता का यज्ञोपवीत में आवाहन करें। हर बार 'नमः' के साथ यज्ञोपवीत को हाथ के सम्पुट सहित मस्तक से लगा लिया करें।

सूत्रः—(क) ब्रह्मा हमें सृजनशीलता प्रदान करें। **ॐ ब्रह्मा सृजनशीलताम् ददातु। ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।**

(ख) विष्णु हमें पोषण-क्षमता से युक्त बनावें। **ॐ विष्णुः पोषणक्षमताम् ददातु। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।**

(ग) शिव हमें अमरत्व प्रदान करें। **ॐ शिवः अमरताम् ददातु। ॐ शिवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।**

(घ) यज्ञ हमें सत्कर्म सिखाये। **ॐ यज्ञदेवः सत्पथे नियोजयेत्। ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।**

(ङ) सविता हमें तेजस्वी बनाये। **ॐ सवितादेवता तेजस्वितां वर्धयेत। ॐ सवित्रे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।**

५ यज्ञोपवीत धारण—यज्ञोपवीत धारण करने के पूर्व सूत्र दुहरायें।

सूत्र—(क) ॐ गायत्रीरूपां धारयामि (हम इस यज्ञोपवीत को गायत्री की प्रतिमा के रूप में धारण कर रहे हैं।)

(ख) ॐ यज्ञप्रतीकरूपं धारयामि। (हम इसे यज्ञ के प्रतीक रूप में धारण कर रहे हैं।)

(ग) ॐ गुरु-अनुशासनरूपं धारयामि। (हम इसे गुरु के अनुशासन के रूप में धारण कर रहे हैं)। मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञोपवीत धारण करें।

मन्त्र—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

६-गुरु पूजनम्—हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराते हुए गुरु चेतना का आवाहन करें—

सूत्र—ॐ परमात्मचेतनाम् गुरुरूपेण वृणे। (परमात्म चेतना को हम गुरु रूप में वरण करते हैं।)

हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर, गुरुसत्ता को नमन करें, मन्त्र साथ-साथ बोलें—

मन्त्र—ॐ अखण्डमण्डलाकारम् व्याप्तम् येन चराचरम्।
तत्पदम् दर्शितम् येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।१।।
नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा।
यस्य वागमृतम् हन्ति विषं संसारसंज्ञकम्।।२।।
मातृवत् लालयित्री पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धाप्रज्ञायुता च या।।३।।

७-मन्त्र दीक्षा—हाथ जोड़कर सूत्र दुहराते हुये उसके अनुरूप भावनाएँ बनाएँ—(क) हम गायत्री महाविद्या में दीक्षित हो रहे हैं। (ख) गुरु का प्राण, तप और पुण्य हमें प्राप्त हो रहा है। (ग) हम उसे अपने अन्दर धारण कर रहे हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसके बाद गायत्री मन्त्र का एक-एक अक्षर तीन बार दुहरवायें—

८-सिंचन-अभिषेक—मन्त्रोच्चारण के साथ कलश का जल दीक्षित होने वालों पर छिड़का जाए—

मन्त्र—ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। १।।

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।। २।।

ॐ तस्माऽ अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जन यथा च नः।। ३।।

९-व्रतधारण—सूर्य उपस्थान की तरह हाथ उठाकर पाँच देवताओं की साक्षी में व्रत धारण का संकल्प लिया जाय। 'नमः' के साथ दोनों हाथ मस्तक से लगा लें।

(क) ॐ अग्ने व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।
(ख) ॐ सूर्यो व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।
(ग) ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।
(घ) ॐ वायो व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।
(ङ) ॐ व्रतानाम् व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ इन्द्राय नमः।।

यहाँ यज्ञ/दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

१०-हाथ में पुनः अक्षत-पुष्प-जल देकर सूत्रानुसार भाव भूमिका बनायें, तत्पश्चात् संस्कृत शब्दावली का संकल्प दुहरायें—

(क) हम गुरु अनुशासन में नियमित उपासना करेंगे।

(ख) हम गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए नियमित स्वाध्याय करेंगे।

(ग) हम गुरु ऋण एवं देव ऋण से उऋण होने के लिए नियमित आराधना के निमित्त समय और साधन लगायेंगे।

गुरुदक्षिणा संकल्प

अद्य ..... नामाहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तम् फलप्राप्त्यर्थं, मम कायिकवाचिकमानसिकज्ञाता-ज्ञातसकलदोषनिवारणार्थं आत्मकल्याणलोक-कल्याणार्थं, गायत्रीमहाविद्यायाम् श्रद्धापूर्वकम् दीक्षितो भवामि। तन्निमित्तकं युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्येण, वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मणा निर्धारितानिअनुशासनानि स्वीकृत्य, तयोः प्राण-तपपुण्यांशं स्वान्तःकरणेषु दधामि, तत्साधयितुं समय- त्रतिभासाधनानां एकांशं ..... नवनिर्माणकार्येषु प्रयोक्तुम् गुरुदक्षिणासंकल्पमहम् करिष्ये।।

संकल्प के बाद हाथ के अक्षत, पुष्प को गुरुदेव के चित्र के समक्ष चढ़ा दें।

नमस्कार—हाथ जोड़कर देव मंच तथा समस्त उपस्थित-जन समुदाय को नमस्कार करें।

वानप्रस्थ (प्रव्रज्या) संस्कार

१-यज्ञोपवीत पूजन—

२-पंचदेवावाहन—

सूत्र—१, २, ३, ४, ५, पूजन, आवाहन एवं सूत्र विधि, व्यवस्था पूर्व पृष्ठ पर देखें।

(३) **यज्ञोपवीत धारण**—इसके बाद मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञोपवीत धारण करें—

मन्त्र—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रम् प्रजापतेर्यत्सहजम् पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यम प्रतिमुञ्चं शुभ्रम यज्ञोपवीतम् बलमस्तु तेजः।।

(४) **मेखला-कोपीन धारण**—मेखला एवं दंड धारण विधि पूर्व पृष्ठ पर देखें।

(६) **पीतवस्त्र धारण**—हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ अहन्ताम् उत्सृज्य विनम्रताम् धारयिष्ये। (अहन्ता को त्यागकर विनम्रता अपनाऊँगा।) इसके बाद गायत्री मन्त्र बोलते हुए पीले वस्त्र के प्रतीक रूप में पीला दुपट्टा धारण कर लें।

(७) **त्रिदेव पूजन**—हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें और त्रिदेव-देव, ऋषि एवं वेद का आवाहन करें—

सूत्र—(क) देव—ॐ साधना-उपासना-आराधनैः देवत्वम् वर्धयिष्ये।

(उपासना, साधना और आराधना के सहारे देवत्व की ओर बढ़ूँगा।)

(ख) ऋषि—ॐ सामान्यजनमिव निर्वाहं करिष्यामि।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(औसत नागरिक के स्तर के निर्वाह का अभ्यास बनाये रखूँगा।)

(ग) वेदः—ॐ ज्ञानक्रान्तेः अनुगमनं करिष्यामि। (विचार क्रान्ति का अनुगमन करूँगा।) इसके बाद निम्नांकित मन्त्रोच्चारण के बाद हाथ के अक्षत-पुष्प को पूजावेदी पर चढ़ा दें।

मन्त्र—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति-र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तोमोऽ३म्प्रतिष्ठ।।

८- **व्रतधारण**—हाथ में क्रमशः अक्षत-पुष्प लेकर व्रत धारण का सूत्र दुहराकर देवों की साक्षी में उन्हें नमन करते हुए हर बार पूजा वेदी पर चढ़ा दिया जाय—

सूत्र—(क) ॐ आयुष्यार्धं परमार्थे नियोजयिष्ये। (आधा जीवन परमार्थ में लगाऊँगा।)

मन्त्र—ॐ अग्ने व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।

सूत्र—(ख) ॐ संयमादर्श सुसंस्कृतं व्यक्तित्वं रचयिष्ये। संयमी, आदर्शयुक्त एवं सुसंस्कृत व्यक्तित्व बनाऊँगा।

मन्त्र—ॐ वायो व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।।

सूत्र—(ग) ॐ युगधर्मणे सततं चरिष्यामि। (युगधर्म के परिपालन के लिए सतत गतिशील रहूँगा।)

मन्त्र—ॐ सूर्यो व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।

सूत्र—(घ) ॐ विश्वपरिवारसदस्यः भविष्यामि। (विशाल विश्वपरिवार का सदस्य बनूँगा।)

मन्त्र—ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।

सूत्र—(ङ) ॐ सत्प्रवृत्तिसंवर्धनाय दुष्प्रवृत्त्युन्मूलनाय पुरुषार्थं नियोजयिष्ये। (सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन में अपना पुरुषार्थ नियोजित रहेगा।)

मन्त्र—ॐ व्रतानाम् व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ व्रतपतये इन्द्राय नमः। इसके बाद यहाँ यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

९-**प्रव्रज्या**—निरन्तर चलते रहने का व्रत ग्रहण करके, खड़े होकर हाथ जोड़े हुए अपने स्थान से देवमंच की ओर तथा अन्य गुरुजनों के समक्ष चलते हुए प्रणाम किया जाय। गुरुजन अक्षत-पुष्प की वर्षा करें। आचार्य, चरैवेति-चरैवेति का सिद्धान्त और मन्त्र बोलते जायें।

मन्त्र—ॐ कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठँस्त्रेता भवति कृतम् सम्पद्यते चरन्। चरैवेति-चरैवेति।।
चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं, यो न तन्द्रयते चरन्।। चरैवेति चरैवेति।

जन्मदिवसोत्सव

(१) **पंचतत्व पूजन**—हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें—**सूत्र—ॐ श्रेयस् पथे चरिष्यामि।** (जीवन को कल्याणकारी मार्ग पर चलायेंगे।) इसके बाद निम्नांकित भाव-भूमिका बनाकर मंत्रोच्चारण के साथ अक्षत-पुष्प पंचतत्त्वों के प्रतीक पाँच चावल की ढेरियों पर चढ़ा दें।

भावसूत्र—(क) पृथ्वी हमें उर्वरता और सहनशीलता दे।

(ख) जल हमें शीतलता और सरसता दे।

(ग) वायु हमें गतिशीलता और जीवनी शक्ति प्रदान करे।

(घ) अग्नि हमें तेजस् और वर्चस् प्रदान करे।

(ङ) आकाश हमें उदात्त और महान् बनाये।

मन्त्र—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति-र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोऽ३म्प्रतिष्ठ।

(२) **दीप पूजन**—हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ परमार्थमिव स्वार्थं मनिष्ये। (परमार्थ को ही स्वार्थ मानेंगे।) इसके बाद निम्नांकित सूत्र के अनुसार भावभूमिका बनाते हुए गायत्री मन्त्र बोलते हुए दीप प्रज्ज्वलित करें—

भावसूत्र—(क) दीपक की तरह हमें अखण्ड पात्रता प्राप्त हो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(ख) हमें अक्षय स्नेह की प्राप्ति हो।

(ग) हमारी निष्ठा ऊर्ध्वमुखी हो।

(३) **ज्योतिवन्दन**—हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर कहलवायें—हम भावना करते हैं कि—

(क) अग्नि ही ज्योति है, ज्योति ही अग्नि है। (ख) सूर्य ही ज्योति है, ज्योति ही सूर्य है। (ग) अग्नि ही वर्चस् है, ज्योति ही वर्चस् है, (घ) सूर्य ही वर्चस है, ज्योति ही वर्चस् है। (ङ) ज्योति ही सूर्य है, सूर्य ही ज्योति है।

इसके बाद मन्त्र बोलकर हाथ के अक्षत-पुष्प को दीपक की थाली में चढ़ा दें।

मन्त्र—ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्यवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

(४) **व्रतधारण**—हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ महत्वाकांक्षाम् सीमितम् विधास्यामि। (हम महत्वाकांक्षाओं को संयमित रखेंगे।)

इसके बाद जन्मदिन के शुभ अवसर पर एक बुराई छोड़ने व एक अच्छाई ग्रहण करने के क्रम में संकल्प का उद्घोष करते हुए उसकी सफलता हेतु देव शक्तियों को नमन करते चलें—

(क) ॐ अग्ने व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।
(ख) ॐ वायो व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।
(ग) ॐ सूर्यो व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।
(घ) ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।
(ङ) ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि। ॐ इन्द्राय नमः।

यहाँ यज्ञ—दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(५) **संकल्प एवं पूर्णाहुतिः**—जिनका जन्मदिन है, उन्हें हाथ में अक्षत, पुष्प, जल देकर निम्नांकित सूत्रों का भाव समझाकर दुहरवायें और पूर्णाहुति की प्रक्रिया पूर्ववत् सम्पन्न करें।

संकल्प मंत्र—अद्य . . . . . गोत्रोत्पन्नः . . . . . नामाहम् जन्मदिवसोत्सवसंस्कार सिद्ध्यर्थं देवानाम् तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणान्तर्गते—

१. ॐ श्रेयस् पथे चरिष्यामि। २. ॐ परमार्थमिव स्वार्थं मनिस्ये। ३. ॐ महत्वाकांक्षाम् सीमितं विधास्यामि-इत्येतान् व्रतान् धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

आशीर्वचन—सभी उपस्थित जन अक्षत, पुष्प की वर्षा करके संकल्पकर्त्ता को आशीर्वाद प्रदान करें। आचार्य मन्त्र बोलें—

ॐ मङ्गलं भगवान् विष्णुः . . . . . ।

विवाह दिवसोत्सव

१-ग्रन्थिबन्धन—पति-पत्नी हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें—

सूत्र—ॐ द्विशरीरं एकप्राणं भविष्यामि। (हम दो शरीर एक प्राण होकर रहेंगे।)

इसके बाद फूल-अक्षत-दूर्वा-हल्दी व द्रव्य इन ५ वस्तुओं को पति-पत्नी के दुपट्टे में बाँधकर कोई बुजुर्ग महिला अथवा पुरुष ग्रन्थि बन्धन करें। सब लोग मन्त्र बोलें।

२-पाणिग्रहण—पति-पत्नी दोनों अपने हाथ में अक्षत पुष्प लेकर सूत्र दुहराते हुए वैसे ही भाव बनायें—

सूत्र—ॐ परस्परं सम्भावयिष्यामि। (एक दूसरे को सम्मान देंगे और सुयोग्य बनावेंगे। इसके बाद दोनों मित्र की तरह मन्त्रोच्चारण के साथ-साथ हाथ मिलायें।

मन्त्र—ॐ मंगलम् भगवान् विष्णुः मंगलम् गरुडध्वजः।

मंगलम् पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः।।

३-प्रतिज्ञा—पति-पत्नी वर-वधू के लिए निर्धारित प्रतिज्ञाएँ क्रमशः दुहरायें।

४-सप्तपदी—पति-पत्नी हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें। **सूत्र—ॐ कुटुम्बम् आदर्शं विधास्यामि।** (परिवार के वातावरण को आदर्श बनायेंगे)

इसके बाद सात चावलों की ढेरियों पर क्रमशः दोनों एक साथ कदम बढ़ायें, मन्त्र प्रतिनिधि (आचार्य) बोलते रहें।

प्रथम चरण—(दायाँ) **अन्न वृद्धि के लिए**—परिवार के लिए सुसंस्कारी अन्न की व्यवस्था करेंगे।

ॐ परमात्मने नमः।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरा चरण (बायाँ) **बलवृद्धि के लिए**—कमजोर नहीं, सशक्त बनकर रहेंगे, एक-दूसरे को सशक्त बनायेंगे।

ॐ जीवब्रह्मणाभ्यां नमः।

तीसरा चरण (दायाँ) **धन वृद्धि के लिए**—धन के उत्पादन के साथ उसके सदुपयोग की व्यवस्था बनायेंगे।

ॐ त्रिगुणेभ्यो नमः।

चौथा चरण (बायाँ) **सुख वृद्धि के लिए**—ऐसे आचरण बनायेंगे, जिससे परिवार को सुख प्राप्त हो।

ॐ चतुर्वेदेभ्यो नमः।

पाँचवा चरण (दायाँ) **प्रजापालन के लिए**—आश्रितों को स्वस्थ, समुन्नत और सुसंस्कारी बनायेंगे।

ॐ पंचप्राणेभ्यो नमः।

छठवाँ चरण (बायाँ) **ऋतु अनुसार व्यवहार के लिए**—परिस्थितियों के अनुकूल एक-दूसरे के मानस (मूड) के अनुरूप व्यवहार करेंगे।

ॐ षड्रसेभ्यो नमः।

सातवाँ चरण (दायाँ) मित्रता वृद्धि के लिए—परस्पर मित्र भाव बढ़ायेंगे तथा सुसंस्कारी-हितैषी मित्र बनायेंगे।

ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः।

५-आश्वात्सना—पति-पत्नी एक दूसरे के कन्धे पर हाथ रखकर सूत्र दुहरायें। **सूत्र—ॐ अधिकारापेक्षया कर्त्तव्यम् प्रधानम् मनिस्ये।**

(कर्त्तव्यों को महत्व देंगे-अधिकारों की उपेक्षा करेंगे।)

६-तिलक—पति-पत्नी एक-दूसरे के माथे पर तिलक लगायें। भावना करें—एक-दूसरे के सम्मान और गौरव के कारण बनेंगे।

ॐ स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया यहाँ जोड़ें।

७-संकल्प एवं पूर्णाहुति—पति-पत्नी हाथ में अक्षत-पुष्प- जल लेकर संकल्प के सूत्र दुहरायें और पूर्णाहुति की प्रक्रिया पूर्ववत् सम्पन्न करें।

संकल्प—अद्य ..... गोत्रोत्पन्नः ..... नामाहम् विवाहदिवसोत्सव संस्कार सिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणान्तर्गते—

(१) ॐ द्विशरीरं एक प्राणंभविष्यामि। (२) ॐ परस्परं सम्भावयिष्यामि। (३) ॐ कुटुम्बम् आदर्शम् विधास्यामि। (४) ॐ अधिकारापेक्षया कर्त्तव्यम् प्रधानं मनिस्ये। इत्येतान् व्रतान् धारणार्थं संकल्पम् अहम् करिष्ये।।

(८) **आशीर्वचन**—इसके बाद सभी समुपस्थित जन पति-पत्नी के ऊपर अक्षत-पुष्प डालते हुए आशीर्वाद प्रदान करें। आचार्य मन्त्र बोलते रहें—

ॐ मंगलं भगवान् विष्णु .....

नीचे पौरोहित्य पद्धति के कुछ सर्व सामान्य मन्त्र दिये जा रहे हैं, जिन्हें प्रायः हर शुभ कार्य करने से पहले प्रयुक्त किया जाता है। प्रत्येक संस्कार में उन्हें आवश्यकतानुसार प्रयुक्त किया जा सकता है।

आचार्य वरण

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य-माप्यते।।

आचार्य तिलक

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

यजमान वरण

ॐ यदा बध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानी काय सुमनस्य मानाः। तन्मऽआबध्नामि शत शारदायायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्।।

यजमान तिलक

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

सूर्य अर्घ्य

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेश-यन्नमृतम्मर्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आशीर्वाद

ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवामानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः।।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रति मुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

यज्ञोपवीत निकालने

ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।।

आर्तिक्यं

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।

मन्त्र पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।। तेह नाकंमहिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्यवीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

अभिषिंचन

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। ॐ योवः शिव तमो रसतस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरङ्गमामव यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जन यथाचनः।।

चरण स्पर्श

ॐ विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथ स्तस्मिन्मत्स्वा। श्रदेंस्मै नरो वचसे दधातन यदा शीर्दादम्पती वाममश्नुतः।। पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधाविश्वाहारपऽएधते गृहे।।

उपहार देने का मन्त्र

अथ सुमङ्गल नामानऽ ह्यति बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेति।। यऽएवन्नामाभवति कल्याणमेवै तन्मानुष्यै वाचो वदति।।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सूक्त-संहिता

वेद को विश्व के समस्त ज्ञान और विज्ञान का भण्डार कह सकते हैं। जो कुछ जानने लायक है, वह सभी वेद मन्त्रों की ऋचाओं में मौजूद हैं। परम प्रभु परमात्मा ने अपने अनन्त ऐश्वर्ययुक्त रत्न भण्डारों को अपने प्राणप्रिय पुत्रों के उपयोग के लिए श्रुतियों की तिजोरियों में सुरक्षित रख दिया है, जो अधिकारी हैं, जो श्रद्धालु हैं, जो उसे प्राप्त करने के इच्छुक हैं उनके लिए पितामह ब्रह्मा द्वारा सुरक्षित यह रत्नभण्डार प्राप्त हो सकता है।

वेद मन्त्रों के तीन स्तर हैं—आधि भौतिक, आदि दैविक, आध्यात्मिक। आधि-भौतिक स्तर पर प्रत्येक मन्त्र में कुछ शिक्षा भरी हुई है। ईश्वर प्रार्थना के रूप में, किसी वर्णन के रूप में उसका प्रकार भिन्न भी हो सकता है पर कोई न कोई जीवनोपयोगी शिक्षा उसमें सन्निहित होगी, जिसे अपनाकर मनुष्य अपने जीवन को सुख शान्तिमय बना सकता है। आधि दैविक स्तर में प्रत्येक वेद मन्त्र एक वैज्ञानिक शक्ति अपने गर्भ में छिपाये बैठा है। मन्त्रों की पद रचना 'शब्द विज्ञान' के अत्यन्त रहस्यमय और महत्त्वपूर्ण तथ्यों के आधार पर हुई है, उनके विधिवत् उच्चारण से शरीर के भीतरी अवयवों में कुछ अद्भुत कम्पन्न उत्पन्न होते हैं, जिनके कारण उस उच्चारणकर्त्ता में विशिष्ट अवयवों में एक विद्युत प्रवाह उत्पन्न हो जाता है। मन्त्रों के उच्चारण से बाह्य जगत में ईथर में जो 'ध्वनि कम्पन' उत्पन्न होते हैं, उनका शक्ति प्रवाह तथा शरीर के भीतरी अवयवों का 'तड़ित उद्विङ्न' दोनों ही मिलकर उस सूक्ष्म जगत के अदृश्य क्षेत्र में हुए शक्तिशाली 'प्रक्रिया भ्रमरों' का निर्माण करते हैं। ये प्रक्रिया भ्रमर दक्षिण मार्गी और वाम मार्गी विज्ञान विधान के अनुसार अनेकों प्रकार की 'चण्ड ऊर्मियाँ' बनाते हैं जिनके आधार पर अदृश्य जगत में अभीष्ट वस्तुओं तथा परिस्थितियों को प्राप्त करने के लायक वातावरण बनने लगता है। इस प्रकार उन वस्तुओं तथा परिस्थितियों को प्राप्त करना, जो साधारणतः बहुत कठिन या असम्भव दीखती थी इस मान्त्रिक प्रक्रिया द्वारा सरल हो जाता है। मन्त्रों द्वारा विधिवत् उत्पन्न की हुई शक्ति सांसारिक क्षेत्र में बड़े अद्भुत कार्य इस ढंग से उपस्थित करती देखी गई हैं कि उन्हें देवी चमत्कार ही समझा जा सकता है।

मन्त्र की शब्द रचना को पढ़ लेना और उसका शुद्ध उच्चारण कर लेना इतना ही पर्याप्त नहीं है, इतने से ही समुचित लाभ प्राप्त नहीं हो सकता, मन्त्रों में प्रामाण्य शक्ति, फलिनी शक्ति, बहुली शक्ति, 'अन्तर्ग्राही' शक्ति यह चार शक्तियाँ सन्निहित रहती हैं।

प्रामाण्य शक्ति के अनुसार मन्त्र के अक्षर की शिक्षा देते हैं। फलिनी शक्ति के आधार पर कुशा, हवि, चरु, आज्य, कुण्ड, समिधा, पात्र, पीठ आदि को अभिमन्त्रित करके उनके सूक्ष्म प्राण को प्राणवान करने का विधान, मन्त्रोच्चार, ऋत्वजों के न्यासादि में मन्त्रावधारित करना एवं अमुक क्रिया पद्धतियों द्वारा अमुक आयोजन का विधि विधान मन्त्र की फलदायनी शक्ति से सम्बन्धित है। यज्ञों में यही प्रक्रिया प्रधान रहती है। विष, परिहार, रोग निवारण, शत्रुनाश, श्रीलाभ, युद्धजय, दिव्य अस्त्रास्त्र, सन्तानलाभ आदि नाना प्रकार के काम्य उद्देश्य मन्त्रों की इसी शक्ति द्वारा प्राप्त होते हैं।

मन्त्रों की "बहुली शक्ति" के आधार पर थोड़ी और छोटी वस्तुओं को अत्यन्त विशद् और व्यापक बनाकर उस अकिञ्चन द्रव्य से भारी काम ले लिये जाते हैं। देव पूजन में जरा सा चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य आदि चढ़ाये जाते हैं और आहुतियों में जरा-जरा सी सामग्री होमी जाती है पर मन्त्र की बहुली शक्ति के द्वारा वह पदार्थ परिमाण में अत्यन्त विस्तृत एवं प्रचुर परिमाण के बन जाते हैं, जिस प्रकार छोटे से परिमाणु का विस्फोट अमुक प्रक्रिया के साथ करने पर वहाँ प्रचण्ड विद्युत शक्ति का परिस्तरण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है, उसी प्रकार अमुक मन्त्रों को अमुक विधान के साथ दी हुई थोड़ी सी वस्तु भी सूक्ष्म जगत में इतनी मधुर सुस्वादु और विपुल हो जाती है कि उसे देवता अमृत के समान उपभोग करते हुए तृप्ति लाभ करते हैं।

चौथी अन्तर्ग्राही शक्ति वह है जो किसी विशेष व्यक्ति द्वारा, विशेष स्थान पर, विशेष उपकरणों से पैदा होती है, विश्वामित्र ऋषि ने गायत्री तत्व की असाधारण तन्मयता के साथ असाधारण उपासना की, फलस्वरूप वे गायत्री के मन्त्रद्रष्टा बने। कोई विशेष साधन जिस भूमि पर रह कर किया जाता है वह भूमि उस मन्त्र की शक्ति से असाधारण रूप से प्रभावित हो जाती है, ऐसे स्थान सिद्ध पीठ, शक्ति पीठ, तीर्थ आदि नामों से पुकारे जाते हैं। जिस माला में, जिन पूजा पात्रों से जो मन्त्र सिद्ध किया जाता है, वह पदार्थ उस तत्व से परिपूर्ण हो जाने के कारण निहित प्रयोजन की सिद्धि में विशेष काम में सहायक होते हैं। कल्प सूत्रों की मर्यादा यह है कि जो पदार्थ जिस कर्मकाण्ड के लिए संकल्पित है, उसका उपयोग उस कार्य को छोड़कर और किसी कार्य में न किया जाय। कारण यह है कि वह पदार्थ संकल्प द्वारा जिस प्रकार की अन्तर्ग्राही शक्ति से ओत-प्रोत हो जाते हैं, उससे भिन्न कार्यों में ये यातयाम निर्वीर्य-निष्फल ही सिद्ध नहीं होते वरन् कई बार हानिकारक भी हो जाते हैं, पूर्णाहुति के समय बचे हुए घृत को बचाकर पीछे के लिए सुरक्षित नहीं रखते वरन् वसोर्धारा द्वारा उसे उसी कुण्ड में उसी समय होम देते हैं।

अन्तर्ग्राही शक्ति का यह सिद्धान्त वस्तुओं पर ही लागू नहीं होता वरन् आचार्यों, पुरोहितों, ऋत्वजों, अध्वर्यों, उद्गाताओं आदि व्यक्तियों पर भी लागू होता है। प्राचीनकाल में जो व्यक्ति जिन विधानों, जिन मन्त्रों, जिन शक्तियों की उपासना करते थे, वे अपने को उसी क्षेत्र के लिए सीमित रखते थे। प्रेत कर्म करने वाले, श्राद्धविशेषज्ञ कर्मकाण्डी विद्वान् अपने हाथ में अन्य कर्मकाण्डों को नहीं लेते। इसी प्रकार अमुक प्रयोजन के लिए अमुक मन्त्रों में, अमुक यज्ञों में जिन्हें विशेषता प्राप्त हो, उन आचार्यों का उपयोग उसी कार्य के लिए प्रधानतया होना चाहिए दशरथजी के गुरू वशिष्ठजी उच्चकोटि के वेदज्ञ थे, कोई भी कर्मकाण्ड उनसे छिपा न था पर दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ उन्होंने नहीं कराया, उसके लिए श्रृङ्गी ऋषि ही बुलाये क्योंकि उस विषय की अन्तर्ग्राही शक्ति श्रृङ्गी ऋषि में ही थी। प्राचीन काल में आचार्य लोग यों सभी वेदों को पढ़ते थे पर विशेष श्रम एवं साधन किन्हीं विशेष मन्त्र भाग पर ही करते थे। यह परम्परा एवं विशेषता वंश परम्परा से पीढ़ी दर पीढ़ी कायम रखी जाती थी क्योंकि अन्तर्ग्राही शक्ति जहाँ जितनी अधिक होगी, वहाँ उतनी अधिक सफलता की सम्भावना रहेगी। अब तो एक ही पण्डित सम्पूर्ण प्रकार के कृत्य करा देने का साहस करता है जिन यज्ञ पात्रों से विवाह का हवन करते हैं उन्हीं से अन्त्येष्टि भी होती है, परस्पर विरोधी प्रक्रियाओं के कारण विरोधी तत्वों का आविर्भाव होता है और उनके प्रयोग से लाभ होना तो दूर उलटे निष्फलता एवं प्रत्यवाय की ही आशंका रहती है।

मन्त्र विद्या से लाभ उठाने की वास्तविक इच्छा रखने वालों को तपश्चर्या द्वारा अपनी प्राण शक्ति को बढ़ाना और इन्द्रिय निग्रह द्वारा उसे सुरक्षित रखना आवश्यक है। केवल उच्चारण करने और विधान जानने से ही कोई व्यक्ति सच्चा मांत्रिक नहीं बन सकता। विलासी, असंयमी, चटोरे, अश्रद्धालु, तप विहीन व्यक्तियों के लिए मन्त्रशक्ति का समुचित लाभ स्वयं उठा सकना तथा दूसरों को दे सकना सम्भव नहीं। महाभारत की कथा है कि जब अश्वत्थामा पाण्डवों को नष्ट करने के लिए मन्त्र चालित ब्रह्म अस्त्र का प्रयोग करने लगा तो अर्जुन ने उसके प्रतिरोध के लिए भी ब्रह्म अस्त्र छोड़ा। उन दोनों के अस्त्रों के प्रज्ज्वलित होने पर सम्पूर्ण विश्व के नष्ट होने की स्थिति उपस्थित हो गई। तब व्यास जी बीच-विचाव के लिए आये और उन्होंने दोनों को अपने-अपने अस्त्र-शमन करने के लिए आदेश किया। अर्जुन सदाचारी था इसलिए उसने अपने अस्त्र को शान्त कर दिया, पर अश्वत्थामा असफल रहा, क्योंकि वह दुर्योधन की पत्नी के प्रति अचिन्त्य चिंतन कर चुका था।

यजुर्वेद में एक उपाख्यान है कि नृमेध और यरुच्छेय नामक दो याज्ञिकों में विवाद हुआ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि देखें हम में से कौन सच्चा द्रष्टा है। दोनों ने निश्चय किया कि जो गीले काठ में मन्त्र शक्ति से अग्नि उत्पन्न कर दे, वही निष्णात माना जाय। नृमेघ ने मंत्र प्रयोग किया तो गीले काठ में से धुँआ मात्र निकला, पर यरुच्छेय के मन्त्रों से गीली लकड़ी प्रज्ज्वलित हो गई, अस्तु वही निष्णात माना गया। अपनी सफलता का कारण बताते हुए यरुच्छेय ने कहा—हे नृमेध तू केवल मंत्र के उच्चारण, अर्थ और विधान को ही जानता है, पर मैंने तो उसके सारे रहस्य को ही आत्म-सात् किया यही मेरी सफलता का कारण है। अन्तर्ग्राही शक्ति का समुचित लाभ उठाने के लिए साधनों को दीर्घकाल तक, श्रद्धापूर्वक, एकनिष्ठ चित्त में उस तत्व के साथ आत्म-सात् होना होता है।

श्रौत सूत्रों और गृह्य सूत्रों के द्रष्टाओं के जिन मन्त्रों में जिस आधिदैविक शक्ति का दर्शन किया है, उसे उस प्रयोजन के लिए निर्धारित एवं निर्देशित किया है। अब कुछ विद्वान् ऐसा करने लगे हैं कि जिस कार्य से जिस मन्त्र का अर्थ कुछ संगति खाता हो, उसी का उस कार्य में उपयोग कर डाला जाय। यह मनमानी उचित नहीं। शास्त्र मर्यादाओं का उल्लंघन करके मन्त्रों के साथ मनमानी घर जानी रीति से खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिए। अर्थ में शिक्षा अवश्य है पर अर्थ के आधार पर शब्द का शक्ति विज्ञान भी सन्निहित हो यह कोई आवश्यक नहीं, कई बार अर्थ और शक्ति का तालमेल मिल भी जाता है, कई बार अनेक मन्त्रों में अर्थ और विषय में कोई संगति नहीं होती। अर्थ किसी अन्य विषय को प्रकट करता है और उस मन्त्र को प्रयुक्त करना उसके विषय से सर्वथा भिन्न किसी और ही काम में प्रयोग होता है। मशीनों के क्षेत्र में लोहे का उपयोग पुर्जे तथा औजार बनाने के लिए होता है, किन्तु चिकित्सा क्षेत्र में उसका उपयोग तिल्ली, पाण्डु, रक्ताल्पता आदि की निवृत्ति के लिए किया जाता है। मन्त्र की आधिभौतिक प्रक्रिया अलग है, उसमें अर्थ, सन्देश और शिक्षाएँ हैं, पर आधिदैविक क्षेत्र में शब्द विज्ञान के अनुसार वह शक्ति उत्पादन के लिए सर्वथा भिन्न प्रकार से हो सकता है। शिक्षा के लिए अनेक धर्मशास्त्र मौजूद हैं, अमुक प्रयोजन में जो मन्त्र प्रयुक्त हुए हैं, उनमें वैसे ही अर्थ की ध्वनि निकलती है या नहीं, यह ढूँढ़ खोज करना मन्त्र महाविज्ञान के तत्व-ज्ञान से अपरिचित होने का ही चिन्ह है।

मन्त्रों की आधिदैविक शक्ति का बहुत कुछ संकेत विनियोगों में मिल जाता है। छन्द, देवता, ऋषि के साथ प्रयोजन का बहुत कुछ सम्बन्ध है। गृह्य सूत्रों और श्रौत सूत्रों में मन्त्रों की इस शक्ति के आधार पर विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न मन्त्रों का उपयोग निर्देशित हुआ है। प्राचीन काल में इस मन्त्र शक्ति के विज्ञान को हमारे तत्वदर्शी पूर्वज भली प्रकार समझते थे और उस मन्त्र का उपयोग करके अपने और दूसरों के जीवनों को अनेक प्रकार स्थूल और सूक्ष्म सम्पदाओं से सुसम्पन्न बनाते थे। अनेक आपत्तियों के निवारण और अनेक सुविधाओं के बढ़ाने में श्रुति माता से कामधेनु गौ के समान किस प्रकार लाभ उठाया जाय, इसे वे जानते थे। एक-एक वेद मन्त्र कल्पवृक्ष की महत्ता को अपने में छिपाये बैठा है। कुछेक मन्त्रों का साक्षात्कार कर लेने से ही मनुष्य का जीवन धन्य बन सकता है। फिर जिनने श्रुति भगवती की जीवन भर अनन्य उपासना की हो उनके भण्डार में कुछ कमी रहने का प्रश्न ही नहीं उठता।

मन्त्र विद्या के सम्बन्ध में हमारी जिज्ञासा जीवन के आरम्भ काल से ही रही है। अब तक की आयु का अधिकांश भाग प्राचीन तत्व ज्ञान की शोध में में ही लगा है। इन विद्याओं के मर्मज्ञों की तलाश में सम्पूर्ण भारत की एक सिरे से दूसरे सिरे तक कई बार परिक्रमा की है। दुर्गम से दुर्गम स्थानों में जहाँ कहीं भी इन विषय के विशेषज्ञों का पता चला है, वहाँ जान की बाजी लगाकर भी पहुँचे हैं। इस प्रकार के प्रयत्नों में जहाँ अनेकों बार निराशा और असफलता हाथ लगी, वहाँ ऐसे प्रसंग भी आते रहे, जिनने हमारी इस मान्यता को हस्तामलकवत् यह प्रत्यक्ष कर दिया कि मन्त्र विद्या कोई अन्धविश्वास या धोखा-धड़ी नहीं, वरन् एक जीवित जागृत विज्ञान है और उसका लाभ भी विज्ञान की वास्तविकता के अन्य प्रमाणों की तरह प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। स्वयं व्यक्तिगत रूप से अनेकों ऐसी घटनायें देख लेने और उस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय के तत्वज्ञों से अपना समाधान कर लेने के बाद हमारे लिए यह महान् तत्वज्ञान एक अटूट श्रद्धा का विषय बन गया है और यह प्रयत्न कर रहे हैं कि यह लुप्त प्रायः शास्त्र किसी प्रकार पुनः इस स्थिति तक पहुँच जाये जिससे सर्व साधारण के लिए इसका लाभ उठाना सम्भव हो सके।

तांत्रिक वाममार्गी साधनाओं का सावरि विधान ऐसा है कि उसे अत्यन्त आत्म-संयमी और अत्यन्त साहसी व्यक्तियों तक ही सीमित रखा जाना चाहिए। इसी दृष्टि से उसे गुप्त रखने की परम्परा भी है। उस मार्ग की साधना खतरे से भरी हुई है। चमत्कारी परिणामों और तुरन्त लाभ की आशा से बहुधा लोग इस मार्ग का अपनाते हैं, पर अनेक बार बीच मार्ग में ही ऐसे विघ्न आते देखे जाते हैं, जिनके कारण साधक को भारी शारीरिक या मानसिक क्षति सहन करनी पड़ती है। कई व्यक्ति पागल होते तथा प्राण संकट में फँसते देखे गये हैं। जो अपरिपक्व मनोभूमि के व्यक्ति इस मार्ग में कुछ सफलता प्राप्त कर लेते हैं तो उसके द्वारा अपनी प्रभुता दूसरों पर प्रकट करने के लिए या भक्तों की सेवा-प्रशंसा से प्रभावित होकर करने और न करने योग्य उचित-अनुचित कार्य करने लगते हैं। इससे उनको वाहवाही भी मिलती है, लोगों की भीड़ तो पीछे लगती है, पर साथ ही उस शक्ति का क्षय हो जाता है, जो दुस्साहस पूर्ण कठिन तांत्रिक साधना से उपलब्ध की थी। साथ ही ईश्वरीय नियत व्यवस्था क्रम में गड़बड़ी फैलाने के कारण उन अव्यवस्थाओं का उत्तरदायी एवं दूसरों के कर्म भोगों का अपने को उपभोक्ता और बनना पड़ता है। तांत्रिक क्षेत्र की उत्कृष्ट साधनाएँ ही आत्म-कल्याण में सहायक बन सकती हैं। साधारण निम्न कोटि की साधनाएँ उनकी सिद्धियाँ निश्चित रूप से अनैतिक कार्यों और उनके अशुभ परिणामों की श्रृंखला को ही जन्म देती हैं। इन सब बातों पर विचार करके ऋषियों ने तांत्रिक उपासना मार्ग को सर्व साधारण के लिए अनुपयोगी और अवांछनीय समझकर उसे गोपनीय केवल विशिष्ट अधिकारी व्यक्तियों तक सीमित रखे जाने योग्य विज्ञान माना है। गायत्री महाविज्ञान के द्वितीय खण्ड में हमने ऐसी कुछ साधनाओं का संकेत किया है, पर चूँकि परम्परागत मर्यादाओं के कारण उनको स्पष्ट रूप से विस्तृत विधान के साथ लिख सकना सम्भव न था इसलिए उनका केवल सूत्र रूप से ही उल्लेख किया गया है।

दक्षिण मार्गी अन्य मन्त्र भी योग विद्या तथा साधना शास्त्र के अन्तर्गत आते हैं। इनके विधान जहाँ-तहाँ ग्रन्थों में मिलते हैं, कुछ गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार एक से दूसरे को हस्तान्तरित होते हैं। वेद मन्त्रों का विषय इस सबसे प्राचीन और सुलभ हैं। उनकी प्रक्रियायें सर्वाधिक प्रामाणिक, प्राचीन, विज्ञान सम्मत एवं परीक्षित हैं। लाखों वर्षों तक ऋषियों ने प्रयोग और परीक्षण करके उनकी शक्ति एवं स्थिति का निर्धारण किया है। जिस प्रकार अन्य मन्त्र केवल स्थूल परिणामों तक ही सीमित हैं, ऐसी बात वेद मन्त्रों के सम्बन्ध में नहीं है, वे सकाम प्रक्रियाओं की पूर्ति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति के द्वार भी खोलते हैं। वेद पाठ स्वयं एक साधना है, जिसे बिना किसी विधि पद्धति के करने पर भी जीवन के वाह्य और आन्तरिक क्षेत्र में सुख-शान्ति से परिपूर्ण परिणाम उत्पन्न होते हैं। फिर निर्धारित नियम विधान आदि के द्वारा विधिवत् उनका उपयोग हो सके, तब तो कहना ही क्या है ?

इस अध्याय में ४० ऐसे सूक्तों का संग्रह है, जो मानव-जीवन में अनेक प्रकार का आनन्दवर्धक परिस्थितियाँ उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। इनका संग्रह किन्हीं पुस्तकों के आधार पर नहीं, वरन् वैदिक मन्त्र शक्ति के ज्ञाता साधकों के परम्परागत एवं व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर किया गया है। प्राचीनकाल में ऐसे ग्रंथ रहे अवश्य होंगे, जिनमें ऋचाओं की मन्त्र शक्ति को प्रत्यक्ष करने का विधान बताया गया हो, पर ऐसे ग्रन्थों का अभाव ही है। अब तो जहाँ-तहाँ उनके संकेत मात्र ही उपलब्ध होते हैं। इन संकेतों के आधार पर तथा इन विषयों के मर्मज्ञों के अनुभवों के आधार पर इस महान् विज्ञान का कुछ व्यवस्थित विधि-विधान बन सकना सम्भव है वह प्रयत्न आगे का है, जिसे किया जाना चाहिए। इस ओर अधिकारी व्यक्ति कदम उठा भी रहे हैं। भविष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में पूर्वकाल की परम्पराओं की खोज निकालना सम्भव हो सकेगा ऐसा विश्वास होता है।

इस अध्याय में जिन सूक्तों का संग्रह किया गया है, वे किस-किस कार्यों में प्रयुक्त होंगे, उसका पूरा विवरण इस प्रकार है—

१—पुरुष सूक्त

विराट रूप प्रभु की आराधना, देव पूजा में षोडशोपचार, प्रभु भक्ति की वृद्धि, कुविचारों का शमन।

२—श्री सूक्त

लक्ष्मी प्राप्ति, स्त्री वाचक देव पूजा में षोडशोपचार पूजा, दारिद्र्य का निवारण।

३—गणपति सूक्त

गणेश देव की प्रसन्नता, ऋद्धि-सिद्धि, सफलता, शुभारम्भ, अशुभ का निवारण।

४—सरस्वती सूक्त

बुद्धि वृद्धि, मानसिक शक्तियों का विकास, कलात्मक प्रवृत्ति, मस्तिष्कीय स्वास्थ्य, तरंगित भावना।

५—भद्र सूक्त

कल्याणकारक, अशुभ का नाश, आशीर्वाद स्वरूप, परम मांगलिक।

६—ब्रह्म सूक्त

ब्रह्म परायणता, ब्राह्मणत्व, ब्रह्मचर्य, ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म तत्व का साक्षात्कार, ब्रह्म लोक-पति।

७—विष्णु सूक्त

लक्ष्मी पति विष्णु भगवान की प्रसन्नता, भगवद् प्राप्ति, रक्षा, पोषण में सुविधा।

८—रुद्र सूक्त

शिव शक्ति का सान्निध्य, सौभाग्य वृद्धि वैराग्य, इन्द्रिय दमन, काल संयम, त्रास निवारण।

९—दुर्गा सूक्त

चण्डी तत्व का अनुग्रह, शत्रु नाश, आपत्ति निवारण, शारीरिक बल वृद्धि।

१०—सूर्य सूक्त

आरोग्य, तेज, स्फूर्ति, साहस, उत्साह, बलिष्ठता का केन्द्र।

११—वरुण सूक्त

उत्तम वर्षा, जल में प्राण शक्ति की प्रचुरता, स्वभाव में शीतलता।

१२—पवमान सूक्त

पवित्रता, पापवृत्ति की निवृत्ति, प्रयश्चित्त, दुरितों से निवृत्ति।

१३—भू सूक्त

पृथ्वी तत्व की शुद्धि तथा पुष्टि, उर्वरा शक्ति की वृद्धि, भू गर्भ से अधिक सम्पदायें विकसित होना।

१४—नवग्रह सूक्त

ग्रहों के अशुभ फलों की शान्ति, शुभ परिणामों में तीव्र गति।

१५—पितृ सूक्त

पितृगणों की प्रसन्नता, परलोक में शान्ति, सद्गति, पितृ भक्ति।

१६—अग्नि सूक्त

अशक्ति, मंदता, जड़ता, अनुत्साह, अवसाद, अकर्मण्यता, भीरुता आदि की स्थिति तथा प्रवृत्ति का निवारण।

१७—वैश्वानर सूक्त

पाचन एवं परिपाक सहायता, यज्ञीय अग्नि की अन्तरात्माओं में जागृति।

१८—अन्तरिक्ष सूक्त

आकाश तत्व की शुद्धि, विचारों एवं भावनाओं में से तमोगुण का संशोधन एवं सतोगुण का अभिवर्द्धन।

१९—सविता सूक्त

उत्पादन शक्ति की वृद्धि, चेतना, ज्ञान, मेधा एवं ऋतम्भरा प्रज्ञा।

२०—सोम सूक्त

चन्द्रमा जैसी शान्ति, शीतलता, सिंचन, उत्तेजना द्वेष और क्रोध की शान्ति।

२१—यम सूक्त

यम वन्दना, काल त्रास से परित्राण, नियम-बद्धता, आत्म-संयम।

२२—संरक्षण सूक्त

अरक्षा की स्थिति में सुरक्षा के वातावरण का सृजन।

२३—अश्म सूक्त

दृढ़ता, धैर्य, दुर्बलता का निवारण, कच्चेपन की परिपक्वता।

२४—गर्भ सूक्त

गर्भ स्थापना, गर्भ रक्षा, गर्भ का समुचित विकास।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२५—प्रजा सूक्त

सुसंतति, सन्तान की त्रुटियों की पूर्ति, गुणों में वृद्धि, सन्तान की सुरक्षा और सत्प्रवृत्ति।

२६—अश्विन सूक्त

अश्विनीकुमार देवता की प्रसन्नता, रोगों की निवृत्ति, आरोग्य।

२७—वास्तु शान्ति सूक्त

व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक या सार्वभौम अशान्ति की शान्ति, उपद्रवों की शान्ति के लिए।

२८—विजय सूक्त

पराजय के स्थान पर विजय का उद्भव।

२९—मित्र सूक्त

मित्रों का मंगल, शत्रुता का मैत्री में परिणित होना, प्रेमभाव का संचार।

३०—इन्द्र सूक्त

उत्तम वर्षा, राजकीय सुव्यवस्था, शासकीय क्षमता।

३१—आयुष्य सूक्त

दीर्घ जीवन, आयु वृद्धि, अल्पायु एवं जीवन-अनिष्टों की शान्ति।

३२—संप्रज्ञान सूक्त

दार्शनिकता, तन्त्र दृष्टि, सद्ज्ञान, विज्ञान के मानसिक कोषों का विकास।

३३—वायु सूक्त

वायु देवता की प्रसन्नता, वायु शुद्धि, वायु रोगों की शान्ति।

३४—प्राण सूक्त

प्राण तत्व का पोषण और विकास।

३५—अन्तः शान्ति सूक्त

आन्तरिक अशान्ति जो चिन्ता, शोक, भय, क्रोध, काम आदि कुविचारों कुसंस्कारों के कारण उत्पन्न हुई हों, उनको शान्त करके चित्त को शान्ति, सन्तोष और प्रफुल्लता की उपलब्धि।

३६—नमः सूक्त

अदृश्य शक्तियों की प्रसन्नता, नम्रता, आशीर्वाद याचना, उद्दंडता की शान्ति।

३७—ऋषि सूक्त

ऋषि तत्व या अभिसिंचन, दुर्गुणों और दुःस्वभावों का शास्त्र, संयम, सदाचार, सात्विकता।

३८—गौ सूक्त

गौओं तथा अन्य उपयोगी पशुओं का आरोग्य, बल, उत्साह, उपयोग तथा कल्याण।

३९—यज्ञ सूक्त

त्याग, प्रेम, सेवा, सत्य, परमार्थ की भावनाओं का विकास।

४०—अन्न सूक्त

अन्नों तथा वनस्पतियों में अधिक प्राण गुण तथा परिमाण का होना।

सूक्तों में सन्निहित शक्तियों का व्यक्तिगत तथा व्यापक क्षेत्र में लाभ उत्पन्न करने के लिए उनका पाठ तथा हवन किया जाता है। स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए शरीर में घटे हुए तत्वों को देखकर उनकी पूर्ति करने वाले मन्त्रों से, उस रोग का शमन करने वाली औषधियों के साथ हवन करना चाहिए। पाठ एवं हवन की संख्या निर्धारित नहीं सुविधा और परिस्थिति के अनुसार जितनी अधिक संख्या में तथा जितने अधिक समय तक प्रयोग हो सके उतना अच्छा है। यह साधारण विधि है। इनका साधारण फल भी, अन्य मन्त्रों की अपेक्षा अधिक होने की सम्भावना है। यों इनकी विशेष साधनायें जिनके आधार पर विशेष और सुनिश्चित परिणाम प्राप्त करना सम्भव होता है, अभी अविज्ञात हैं, फिर भी यह साहसपूर्वक कहा जा सकता है कि जिन बातों से इन सूक्तों का सम्बन्ध है, उनके लिए यह निश्चित रूप से उपयोगी, फलदायक एवं सत्परिणाम उत्पन्न करने वाले सिद्ध होते हैं। अन्य मन्त्रों की साधना में जहाँ अनेक प्रकार के नियम विधान हैं, वहाँ इनके विधान भी हैं, पर इनके अविगत होने की दशा में केवल साधारण शुद्धतापूर्वक एकाग्र चित्त से इनका पाठ और हवन भी बड़ा महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। इनका उपयोग हमने किया और कराया है, इसी अनुभव के आधार पर सर्वसाधारण के सम्मुख इनका उपयोग करने के लिए यह संग्रह उपस्थित किया गया है। इससे प्रयोक्ताओं को भौतिक और आध्यात्मिक सुख-शान्ति की दिशा में अग्रसर होने का अवसर मिलेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्त संहिता

१.अथ पुरुष सूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमिꣳ सर्वत स्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।१।।
पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।२।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्चपूरुषः।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।३।।
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।४।।
ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुषः।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः।।५।।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूं स्तांश्चाके वायव्यानारण्या ग्राम्याश्चये।।६।।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।७।।
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।८।।
तं यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमतग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये।।९।।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।।१०।।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रोअजायत।।११।।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।।
नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौःसमवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकांऽ२ अकल्पयन्।।१३।।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।।
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवायद्यज्ञन्तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्।।१५।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
तेह नांक महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। १६

—यजु. ३१। १-१६

२.अथ श्री सूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह।।१।।
ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।।
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्।।३।।
ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४।।
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये
ऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।५।।
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो
वनस्पतिस्तववृक्षोऽथ बिल्वः।।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु
याअन्तरायाश्च बाह्य अलक्ष्मीः।।६।।
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।।
प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेऽस्मिकीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।८।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भवकर्दमः।।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।।
ॐ आपः सृहजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।।
नि चदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।।
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।१३।।
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममलिनीम्
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१४।।
ताम्मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्यो
ऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

—श्रीसूक्त १।१-१६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

३. अथ गणपति सूक्तम्

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे कविंकवीना मुपमश्रवस्तमम्।। ज्येष्ठ राजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिःसीद सादनम्।। १।।

आतून इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं संगृभाय।। महाहस्ती दक्षिणेन।। २।।

विद्माहि त्वा तूविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम्।। तुविमात्रमवोभिः।। ३।।

नहि त्वा शूर देवा न मर्तासोदित्सन्तम्।। भीमं नगां वारयन्ते।। ४।।

एतोन्विन्द्रं स्तवा मेशानं वस्वः स्वराजम्।। न राधसा मर्धिपन्नः।। ५।।

प्रस्तोषदुप गासिषच्छ वत्साम गीयमानम्।। अभिराधमा जुगुरत्।। ६।।

आनो भर दक्षिणेनाभिसव्येन प्रमृश। इन्द्र मानो वानीर्निभीक्।। ७।।

अपक्रमस्वा भर घृषता घृष्णो जनानाम्।। अदाशूष्टस्यवेदः।। ८।।

इन्द्रय उनुते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः। अस्माभिः सु तं स नुहि।। ९।।

सद्यो जुवस्ते वाजा अस्मभ्यं विश्वश्चन्द्राः।। वशैश्च भक्षू जरन्ते।। १०।।

।। इति गणपति सूक्तम्।।

४. अथ सरस्वतीसूक्तम्

ॐ अविर्न मेषो नसि वीर्याय प्राणस्य पन्थाऽअमृतोग्रहाभ्याम्। सरस्वत्युपवाकैर्व्यानं नस्यानि बर्हिर्बदरैर्जजान।। १।।

अङ्गान्यात्मन् भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती। इन्द्रस्यरूप ँ शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः।। २।।

सरस्वती योन्या गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपा ँ रसेन वरुणो न साम्नेन्द ँ श्रियै जनयन्नप्सु राजा।। ३।।

तेजः पशूना ँ हविरिन्द्रियावत् परिस्रुता पयसा सारघं मधु।। अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतःसोमऽइन्दुः।। ४।।

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।। यज्ञं वष्टु धियावसुः।। ५।।

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।। यज्ञं दधे सरस्वती।। ६।।

महोअर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना।। धियो विश्वा विराजति।। ७।।

प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।। धीनामवित्र्यवतु।। ८।।

त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि।। रदा पूषेव नः सनिम्।। ९।।

आपप्रुषी पार्थिवान्युरूरजो अन्तरिक्षम्।। सरस्वतीनिदस्पातु।। १०।।

अम्बितमे नदी तमे देवीतमे सरस्वती।। अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्ति मम्ब न स्कृधि।। ११।।

।। इति सरस्वती सूक्तम्।।

५. अथ भद्र सूक्तम्

ॐ आनोभद्राःक्रतवो यन्तु विश्रतोऽदब्धा सोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवा नोयथासदमिदवृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। १।।

देवानाम्भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ँ रातिरभि नो निवर्त्तताम्।। देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवानऽआयुःप्रतिरन्तु जीवसे।। २।।

तान्पूर्वया निविदावयं भगं महेमित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्।। अर्यमणंवरुण ँ सोममश्वि ना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। ३।।

तन्नो वातोमयोभु वातु भेषजंतन्माता पृथिवीतत्पिताद्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्यासुवम्।। ४।।

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।। पूषानो यथावेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ५।।

स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।। ६।।

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरःशुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह।। ७।।

भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। ८।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शतमिन्नु शरदोअन्ति देवाऽयत्रा नश्चक्राजरसन्तनूनाम्।। पुत्रासो यत्र पितरो भवर्तिमानोमदध्यारीरि षतायुर्गतोः।। ६।।

अदितिद्यौरेदितिरंतरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। १०।।

द्यौः शांतिरंतरिक्ष ँ शांतिः पृथिवीशांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शांति र्विश्वेदेवाः शांतिब्रह्मशांतिः सर्व ँ शांतिः शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि।। ११।।

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।। शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः।। १२।।

६. अथ ब्रह्म सूक्तम्

आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। १।।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। २।।

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमा क्रयायाऽअयोगूँ कामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्।। ३।।

ब्रह्माणि मेमतयःश ँ सुतासः शुष्मऽइयर्ति प्रभृतोमेऽअद्रिः। आशासते प्रति हर्य्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्तानोऽअच्छ।। ४।।

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः। अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये।। ५।।

ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व। विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः।। ६।।

ब्रह्मादेवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रभेन्।। ७।।

ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीर्भिः सखायमृग्मियमनां न दोहसे हुवे।। ८।।

ब्रह्म गामश्वं जनयन्त ओषधीर्वनस्पतीन्पृथिवीं पर्वतां अपः। सूर्यं दिविरोहयन्तः सुदानव आर्या व्रता विसृजन्तो आधि क्षामि।। ९।।

ब्रह्म क्षत्रं पवते तेजऽइन्द्रिय ँ सुरया सोमः सुतऽआसुतो मदाय शुक्रेण देव देवताःपिपृन्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि।। १०।।

७. अथ विष्णु सूक्तम्

ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाँ सि। यो अस्कभा यदुत्तर ँ सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवेत्वा।। १।।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। २।।

तदस्य प्रियमयि पाथो अश्यां नरो यत्र देव यवो मदन्ति।। उरुक्रमस्य सहि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः।। ३।।

प्रतद्विष्णु स्तवते वीर्येय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। ४।।

परो मात्रया तन्वा वृधान नते महित्व मन्वश्नुवन्ति।। उभेते विदा रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से।। ५।।

विचक्रमे पृथिवी मेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्।। ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार।। ६।।

त्रिर्देवः पृथिवी मेष एतां विचक्रमे शतर्चसं महित्वा। प्रविष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् त्वेष ँ ह्यस्य स्थविरस्य नाम।। ७।।

अतो देवा अवन्तु नो, यतो विष्णु—र्विचक्रमे, पृथिव्याः सप्तधामभिः।। ८।।

इदं विष्णु र्विचक्रमे, त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा।। ९।।

त्रीणि पदा विचक्रमे, विष्णु र्गोपाऽअदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।। १०।।

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा।। ११।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तद्विष्णोः परमं पदꣳ, सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।। १२।।

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवासः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्।। १३।।

८. रुद्र सूक्तम्

ॐ यज्जाग्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्य तथैवैति।। दुरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु।। १।।

येन कर्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्ति विदथेषु धीराः।। यदपूर्वंयक्षमन्तःप्रजानान्तन्मेमनः शिव सङ्कल्पमस्तु।। २।।

ॐ वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्ण्णन्तमसः परस्तात्।। तमेव विदित्वातिमृत्युमेतिनान्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय।। ३।।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः।। बाहुभ्यां उत ते नमः।। ४।।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः।। मानोवीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे।। ५।।

ॐ नमोहिरण्यबाहवे। सेनान्येदिशाञ्चपतये नमो-नमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतयेनमोनमः शष्पिञ्जरायत्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशा-योपवीतिनेपुष्टानाम्पतयेनमः।। ६।।

ॐ नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेब्योव्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्चवोनमः।। ७।।

ॐ नमः शङ्गवे चपशुपतयेचनमऽउग्रायचभीमायचनमोऽग्रेवधायचदूरेवधायचनमोहन्त्रेचहनीयसेच नमो वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यो नमस्ताराय।। ८।।

ॐ नमः शम्भवाय। चमयोभवायचनमः शङ्करायचमयस्कराय नमः शिवायचशिवतरायच।। ९।।

ॐ नमोस्तु। रुद्रेभ्योयेदिवियेषांवर्षमिषवः।। तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः।। तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनो मृडयन्तु तेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेतमेषाञ्जम्भेदध्मः।। १०।।

ॐ नमोस्तुरुद्रेभ्योयेन्तरिक्षेयेषांवातइषवः। तेभ्योदशप्राचीनद्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः।। तेचभ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुते नोमृडयन्तु तेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टिमेषाञ्जभेदध्मः।। ११।।

ॐ नमोस्तु। रुद्रेभ्योयेपृथिध्यांय्येषामन्नमिषवः। तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्योनमोऽअस्तुतेना वन्तुतेनोमृडयन्तुरीयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितममेषाञ्जम्तेदध्मः।।१२।।

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहे। सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् उर्वारुकमिवबन्धनान्नमृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। १३।।

त्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम्।। उर्वारुकमिव बन्धनादितोमुक्षीय मामुतः।। १४।।

ॐ शिवोनामस्विधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तु मामाहिसीः।। निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्स्याय।। १५।।

ॐ प्राणश्च मेघानश्चमव्यानश्चमेसुस्श्चमे चित्तञ्चमऽआधीतञ्चमेवाक्चमेमनश्चमेचक्षुश्च मेश्रोत्रमेदक्षश्चमेबलञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्।।१६।।

ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पताम्प्राणोयज्ञेनकल्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनकल्पताꣳ श्श्रोत्रंयज्ञेनकल्पतांव्वाग्ग्यज्ञेन कल्पताम्मनोयज्ञेन कल्पतामात्मायज्ञेनकल्पताम्ब्रह्मा मयज्ञेनकल्पताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वर्य्यज्ञेन कल्पताम्पृष्ठंय्यज्ञेन कल्पतांयज्ञोयज्ञेनकल्पताम्।। स्तोमश्चयजुश्चऽऋक्चसामचबृहच्चरथन्तरञ्च।। स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूमप्रजापतेः प्रजाऽअभून्वेट्स्वाहा।। १७।।

९. अथ दुर्गासूक्तम्

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।। १।।

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्फलेषु जुष्टाम्। दुर्गा देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः।। २।।

अग्नेत्वं पारया नव्यो अस्मान्स्वस्तिभिरतिदुगाणि विश्वा।। पूश्चपृथ्वी बहुला न उर्वी भवा होकाय तनयाय शंयो।। ३।।

विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावादुरितातिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्।। ४।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पृतनाजितं सहमानमुग्रमग्निं हुवेम परमात्सधात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामदेवोऽतिदुरितात्यग्निः।। ५।।

प्रत्नोहि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्चसत्सि।। स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व।। ६।।

गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णो रनु संचरेम।। नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्।। ७।।

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेष मूर्जं दुहाना धेनु र्वागस्मानुपसुष्टुतैतु।। ८।।

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।। सरस्वती मदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।। ९।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।। नमः प्रकृतिभद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।। १०।।

१०. अथ सूर्य सूक्तम्

ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतुसोम्यं मध्वायु र्दधद्यज्ञपतावविहुतम्। वातजूतीं यो अभिरक्षति त्मनाप्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति।। १।।

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्तिकेतवः। दृशे विश्वायसूर्यम् येनापावकचक्षसा भुरव्यन्तं जनां अनुत्वंवरुणपश्यसि।। २।।

दैव्यावध्वर्यू आगतꣳ रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञꣳ समञ्जाथे। तं प्रत्नथायं वेनश्चित्रं देवानाम्।। ३।।

आ न इडाभि र्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु।। अपि यथा युवानो मत्सथानो विश्वंजगदभिपित्वे मनीषा।। ४।।

यदद्य कच्चवृत्रहन्नुदगा अभिसूर्यः सर्वतदिन्द्र ते वशे।। ५।।

तरणिर्विश्वदर्शितो ज्योतिष्कृदसिसूर्यो विश्वमा भासिरोचनम्। तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततꣳ संजभार।। ६।।

यदेदयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै।। ७।।

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्योरूपं कृणुते द्योरुपस्थे।। अनन्त मन्यदुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति।। ८।।

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत।। वसूनि जाते जनमानऽओजसा प्रतिभागं न दीधिम्।। ९।।

अद्यादेवा उदिता सूर्यस्य निरꣳ हसः पिपृता निरवद्यात्।। तन्नोमित्रोवरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीउत द्यौः।। १०।।

आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।। हिरण्ययेन सविता रथेन देवोयाति भुवनानि पश्यन्।। ११।।

११. अथ वरुण सूक्तम्

हिरण्यवर्णाः शुचयः
पावको यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः।।
अग्नि या गर्भं दधिरे विरूपा
स्तान आपः शꣳ स्योना भवन्तु।। १।।
यासां राजा वरुणो याति मध्ये
सत्यानृते अवपश्य ञ्जनानाम्।।
मधुश्च्युतः शुचयो याः पावका
स्ताङ्क आपो देवोरिह मा भवन्तु।। २।।
यासां देवा दि विकृण्वन्ति भक्षं
या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।।
या पृथिवीं पयसो न्दन्ति शुक्रा
स्तान आपः शꣳ स्योना भवन्तु।। ३।।
आपोहिष्ठा मयो भुव, स्तान ऊर्जे दधातन।।
महेरणाय चक्षसे, योवः शिवतमोरसः।। ४।।
तस्य भाजयते ह नः, उशतीरिव मातरः।।
तस्मा अरङ्क मामवो, यस्य क्षयाय जिन्वथ
आपोजन यथा च नः।। ५।।
सुमित्रिया नऽआप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रिया
स्तस्मैसन्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि य ञ्च वयं द्विष्मः।।६।।
हिरण्यश्रृंग वरुणं प्रपद्ये तीर्थं मे देहि याचितः।।
यन्मया भुक्तमसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः।। ७।।
यन्मे मनसा वाचा कर्मणा व दुष्कृतं कृतम्।।
तन्नइन्द्रोवरुणोबृहस्पतिः सविता च पुनन्तुपुनः पुनः।।८।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अत्याशना दतीपाना द्यच्च उग्रा त्प्रतिग्रहात्।
तन्नो वरुणो राजा पाणिना ह्यवमर्शतु।। ६।।
सोह मपापो विरजो निर्मुक्तो मुक्तकिल्बिषः।।
नाकस्य पृष्टमारुह्य गच्छे ब्रह्मसलोकताम्।। १०।।
इम्मं मे गंगे यमुने सरस्वति तद्रु स्तोमं सचता परुष्णिया।।
असिक्निया मरुद्वृधे वितस्तिया
जींकिये श्रृणुह्या सुषोमया।। ११।।
नमोऽग्नयेऽप्सुमते नम इन्द्राय नमो
वरुणाय नमो वारुण्यै नमोऽद्भ्यः।। १२।।

१२. अथ पवमान सूक्तम्

पवमानः सुबर्जनः पवित्रेण विच
मिर्ण, यः पोता स पुनातु माम्।। १।।
पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा
धियः, पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा।।
२।।
जातवेदः पवित्रव त्पवित्रेण पुनाहि मा।।
शुक्रेण देव दीद्यदग्ने कृत्वा क्रतुꣳ रनु।। ३।।
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने वितत मन्तरा।
ब्रह्म तेनपु नातु माः।। ४।।
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण
सवे न द्य। मां पुनीहि विश्वतः।।
वैश्वदेवी पुनती देव्यागा द्यस्यामिमा
वह्यस्तनूवो वीतपृष्ठाः।।
तया मदन्तः सधमाद्येषु
वय ꣳ स्यामषतृयी रयीणाम्।। ६।।
वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु
वातः प्राणेने विरो नभोमोभिः।
द्यावापृथिवी पयसा पयस्वती
ऋतावरी यज्ञिये नः पुनीताम्।। ७।।
बृहद्भिः सवितास्तृभिर्वर्षिष्ठै र्देव।।
मन्मभिः, अग्नेदक्षैः पुनीहि मा।। ८।।
येनदेवा अपुनन्त येनाषो दिव्यङ्घषः।।
तेन दिव्येन ब्रह्मणा इदं ब्रह्मपुनीमहे।। ९।।
यः पावमानी रध्येति ऋषिभिः सम्भृतंरसम्।
सर्वꣳ स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।। १०।।
पावमानीर्योऽध्येति ऋषिभिः सम्मृतंरसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरꣳ सर्पिर्मधूदकम्।। ११।
पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघाहि घृतश्चुतः।।
ऋषिभिः सम्भृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम्।। १२।।
पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम्।।
कामान्त्समर्द्ध यन्तु नो, देवीर्देवैः समाहृताः।। १३।।
पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघाहि घृतश्चुतः।।
ऋषिभिः सम्भृतो रसो, ब्राह्मणेष्वसृतंहितम्।। १४।।
येन देवाः पवित्रेण, आत्मानं पुनते सदा।।
तेन सहस्त्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः।। १५।।
प्राजापत्यं पवित्रं शतोद्या मꣳ हिरण्मयम्।।
तेन ब्रह्मविदोवयं पूतं ब्रह्मपुनीमहे।। १६।।
इन्द्रः सुनीतिः सह मा पुनातु
सोम स्वस्त्या वरुणः समीच्या।।
यमो राजा प्रमृणाभिः पुनातु
जातवेदो मोर्जयन्त्या पुनातु।। १७।।
ॐभूर्भुवःस्वः, तच्छंयो रावृणीमहे
गातुं यज्ञाय, गातुं यज्ञपतये।।
दैवी स्वस्तिरस्तु नः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः
ऊर्ध्व जिघातु भेषजं शन्नोअस्तुद्विपदं शं चतुष्पदे।। १८।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

१३. अथ भू सूक्तम्।

भूमिर्भूम्ना द्यौर्वरिणान्तरिक्षं महित्वा।
उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमन्नादमनन्नाद्याया दधे।।१।।
आयंगौः पृश्निरक्रमी दसन्मातरं पुनः।
पितरञ्च प्रयन्तस्वः।। २।।
त्रिंशद्धामविराजति वाक्पतङ्गो अशिश्रियत्।
प्रतिवस्तोरहर्द्युभिः।
अस्य प्राणादपानन्त्यन्तश्चरति रोचना।
व्यख्यन्महिषः सुवः।। ४।।
यत्त्वाक्रुद्धाः प्रचक्रु र्मन्युना पुरुषे मृते।
सुकल्पमग्नेतत्तवया पुनस्त्वो छीपयामसि।। ५।।
यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवी मनुदध्वसे।
आदित्या विश्वे तदेवा वसवश्चसमाभरन्।। ६।।
मेदिनी देवी वसुन्धरा स्याद्वसुधा देवी वासवी।
ब्रह्मवर्चसः पितृणां श्रोत्रं चक्षुर्मनः।। ७।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवीहिरण्यगर्भेणी, देवी प्रसूवरी, रसनेसत्यायनेसीद।।८।।
समुद्रवती सावित्रीहलो देवी मत्यवी मही।
धरणिमहोव्यधिष्ठाश्रृङ्गेश्रृङ्गेयज्ञेयज्ञेविभीषिणी।। ६।।
इन्द्रपत्नी व्यापिनी सुरसरीरिह वायुमती जलशयनी
श्रियंधाराजासंत्यन्धोपरिमेदिनीश्वोपरिधत्तगायत्री।।१०।।
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवी माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीप्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।। ११।।
ॐधनुर्धरायै विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि।
तन्नोधरा प्रचोदयात्।। १२।।

१४ अथनवग्रहसूक्तम्

अथ सूर्य मन्त्रः—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्य च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भवनानि पश्यन्।। १।।

चन्द्र मन्त्र—

ॐ इमं देवाऽ असपत्न ᳪ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जान राज्यायेंद्रस्येंद्रियाय इमम-मुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳪ राजा।। २।।

अथ भौम मन्त्रः—

ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपा ᳪ रेता ᳪ सि जिन्वति।। ३।।

बुध मन्त्रः—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ᳪ सृजेथा मयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। ४।।

गुरु मन्त्रः—

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु।। यद्दीदयच्छ वसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। ५।।

भृगु मन्त्रः—

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा। व्यपि बत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिंद्रियं।। विपान ᳪ शुक्रमंधसऽ एन्द्रस्येंद्रियमिदंपयोमृतं मधुः।। ६।।

शनि मन्त्रः—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।। ७।।

राहु मन्त्रः—

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्टया वृत।। ८।।

केतु मन्त्रः—

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्याऽ अपेशसे समुषद्भिरजायथाः।। ६।।

१५. अथ पितृ सूक्तम्

ॐ उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंयऽ ईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।। १।।

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वाऽअथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषांव्वय ᳪ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।। २।।

आयन्तु न पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। ३।।

ऊर्जं व्वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्।। ४।।

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोदमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धृध्वम्।। ५।।

ये चेह पितरो ये च नेह याꣳश्च विदा याँ २ उच्च न प्रविददात्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभियज्ञः ᳪ सुकृतं जुषस्व।। ६।।

मधु व्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। ७।।

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ᳪ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। ८।।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माद्ध्वीर्गावो भवन्तु नः।। ६।।

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासऽआधत्त।। १०।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१६. अथ अग्निसूक्तम्

ॐ अग्नि मीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। १।।

ॐ अग्नि रात्रि भरद्वाजं गविष्ठर प्रावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहवे। अग्निं वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृलीकाय पुरोहितः।। २।।

ॐ अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीनः सहुरेहूत एधि। हत्वाय शत्रून्वि भजस्व वेद ओजो मिमानो वि मृधो नुदस्व।। ३।।

ॐ अग्निरीशे वृहतो अध्वरस्याग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य। क्रतुं ह्यस्य वसवो जुषन्ताथा देवा दधिरे हव्यवाहम्।। ४।।

ॐ अग्निऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः तमीमहे महागयम्।। ५।।

ॐ अग्निर्जाता देवानामग्निर्वेद मर्तानामपीच्यम्। अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते स्वाहुतो नवीयसा नभन्तामन्यके समे।। ६।।

ॐ अग्निर्दाद्द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिंयः सहस्रा सनोति। अग्निर्दिवि हव्यमा ततानाग्नेर्धामानि विभ्रता पुरुत्रा।। ७।।

ॐ अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद्विश्वं न्य त्रिणम्। अग्निर्नो वनते रयिम्।। ८।।

ॐ अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरुतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते।। ६।।

ॐ अग्निवृत्राणि जङ्घनद् द्रविणा स्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः।। १०।।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपां रेतांसि जिन्वति।। ११।।

ॐ अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमीधे विवस्वभिः।। १२।।

ॐ अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् अर्कस्त्रिधातु रजसो विमानोऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम।। १३।।

ॐ अग्निः प्रत्नेन मन्मना शुम्भानस्तन्वं स्वाम्। कविर्विप्रेण वावृधे।। १४।।

ॐ अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुनादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा। सजोषसा उपसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना।। १५।।

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ आ सादयादिह।। १६।।

ॐ अग्निं सं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः। अस्तमर्वन्त आश्वोऽस्तं नित्यासो वाजिन इधं स्तोतृभ्य आ भर।। १७।।

१७. अथ वैश्वानर सूक्तम्

वैश्वानरो न ऊतय आप्रचातु परावतः। अग्निर्नः सुष्टुतीरूप।। १।।

वैश्वानरो न आगमदिमं यज्ञं सजूरूप। अग्निरुक्थेष्वंहसु।। २।।

वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं चचाक्लृपत्। ऐषु द्युम्नं स्वर्यमत्।। ३।।

वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु वातः प्राणेनेषिरो नभोभिः। द्यावा पृथिवी पयसा पयस्वती ऋतावरी यज्ञिये नः पुनीताम्।। ४।।

वैश्वानरीं सूनृतामारभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः। तया गृणन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। ५।।

वैश्वानरीं वर्चस आरभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः। इहेडया सधमादं मदन्तो ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम्।। ६।।

वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु। स एतान् पाशान् विचृतं वेद सर्वानथ पक्वेन सह संभवेम।। ७।।

वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् संगरमभिधावाम्याशाम्। अना जानन् मनसा याचमानो यत् तत्रैना अपतत् सुवामि।। ८।।

वैश्वानरस्य प्रतिमोपरिद्यौ र्यावद् रोदसी विबबाधे अग्निः। ततः षष्ठादामुतो यन्ति स्तोमा उदितो यन्त्यभिषष्ठमहः।। ६।।

वैश्वानरस्य दंष्ट्राभ्यांहेतिस्तं समधादधि। इयं तं प्सात्वाहुतिः समिद् देवी सहीयसी।। १०।।

वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्रं शतधारमुत्सम्। स बिभर्ति पितरं पितामहान् प्रपितामहान्विभर्ति पिन्वमानः।। ११।।

१८. अथ अन्तरिक्ष सूक्तम्

अन्तरिक्ष आसां स्थाम श्रान्तसदामिव। आस्थानमस्य भूतस्य विदुष्टद् वेधसो न वा।। १।।

अन्तरिक्षेण पतति विश्वा भूतावचाकशत्। शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम।। २।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन् कर्की वत्सामिह रक्ष वाजिन्। अयं घासो अयं व्रज इह वत्सां नि बध्नीमः। यथानाम व ईश्महे स्वाहा।। ३।।

अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन् कर्की वत्सामिह रक्ष वाजिन्। इमे ते स्तोका बहुला एह्यर्वाङ्यं ते कर्कीह ते मनोऽस्तु।। ४।।

अन्तरिक्षे वायवे समनमन्त्स आघ्नोत्। यथान्तरिक्षे वायवे समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु।। ५।।

अन्तरिक्षे जालमासीज्जालदण्डा दिशो महीः। तेनाभिधाय दस्यूनां शक्रः सेना मपानपत्।। ६।।

अन्तरिक्षं दिवं भूमिमादित्यान् मरुतो दिशः। लोकान्त्स सर्वानाप्नोति यो ददाति शतौदनाम्।। ७।।

अन्तरिक्षं धेनुस्तस्या वायुर्वत्सः। सा मे वायुना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा।। ८।।

१६. अथ सविता सूक्तम्

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमह ँ रक्षसां ग्रीवाऽअपिकृन्तामि। बृहन्नसि बृहद्वदा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद।। १।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णे हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमह ँ रक्षसां ग्रीवाऽअपिकृन्तामि। यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्तॉंल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि।। २।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमह ँ रक्षसां ग्रीवाऽअपि कृन्तामि। यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयाराती र्दिवेत्वाऽन्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्तॉंल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि।। ३।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्। अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनज्मि। अद्भ्यष्ट्वौषधीभ्योऽनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्रातासगर्भ्योऽनु सखा सयूतथ्यः। अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।। ४।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे रावासि गभीरमिममध्वरं कृधीन्द्राय सुषूतमम्। उत्तमेन पविनोर्ज्जस्वन्तं मधुमन्तं पयस्वन्तं निग्राभ्या स्थ देवश्रुतस्तप्पर्यत मा।। ५।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्। आददेऽध्वरकृतं देवेभ्यऽइन्द्रस्य बाहुरसिदक्षिणः सहस्त्रभुष्टिः शततेजा वायुरसि तिग्मतेजा द्विषतो वधः।। ६।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् आददेऽदित्यैरास्नासि।। ७।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वत्पृथिव्या सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभर त्रैष्टुभेन छन्द साङ्गिरस्वत्।। ८।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्याम्। पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत् खनामि। ज्योतिष्मन्तं त्वाग्ने सुप्रतीकमजस्रेण भानुना दीद्यतम्। शिवं प्रजाभ्योऽहि ँ सन्तं पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत् खनामः।। ९।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्याभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।। १०।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ।। ११।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।। १२।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्तभ्याम्उपा ँ शोर्वीर्येण जुहोमि हत ँ रक्षः स्वाहा रक्षसां त्वा वधायावधिष्म रक्षोऽवधिष्यामुमसौ हतः।। १३।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनौर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताम्याम्। सं वपामि समापऽओषधीभिः समोषधयो रसेन। स ँ रेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ता ँ सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्।। १४।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम्। धिया भगं मनामहे।। १५।।

२०. अथ सोम सूक्तम्

सोमं गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः। सुमृणीको न आविश।। १।।

सोमयास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति दाशुषे। ताभिर्नोऽविता भव।। २।।

सोमरारन्धि नोहृदि गावो न यवसेष्वा। मर्य इवस्व ओक्ये।। ३।।

सोमस्य मा तवसं वक्ष्यग्ने वह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै। देवौं अच्छादीद्यद्युञ्जे अद्रिं शमाये अग्ने तन्वं जुषस्व।। ४।।

सोममिन्द्रा बृहस्पति पिबतं दाशुषो गृहे। मादयेथां तदोकसा।। ५।।

सोममन्यउपासदत्पातवे चम्वोः सुतम्। करम्भमन्य इच्छति।। ६।।

सोम राजन् मृलया नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्या ३ स्तस्यविद्धि। अलर्ति दक्ष उतमन्युरिन्दो मानो अर्यो अनुकामं परादाः।। ७।।

सोम इद्रः सुतो अस्तु कलयो मा बिभीतन, अपेदेष ध्वस्मायति स्वयं धैषो अपायति।। ८।।

सोमस्य मित्रा वरुणोदिता सूर आददे। तदातुरस्य भेषजम्।। ९।।

सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान्हवते-दिवस्परि। बृहस्पते रक्थेना विदिद्युते समुद्रासो न सवनानिविव्यचुः।। १०।।

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः। जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः।। ११।।

सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्र मतित्तभिः पृच्छमानाः। सोमः सुतः पूयते अज्यमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नयन्ते।। १२।।

सोम उषुवाणः सोतृभि रधिष्णुभिरवीनाम्। अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया।। १३।।

सोमंमन्यते पपिवान्यत्संपिंषन्त्योषधिम्। सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन।। १४।।

सोमं राजानमवसेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे। आदित्यान्विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्।। १५।।

सोमएकेभ्यः पवते घृतमेक उपासते। येभ्यो मधु प्रधावति ताँश्चिदेवापि गच्छतात्।। १६।।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्माणि बृहस्पतेरनु मत्या उ शर्मणि।। तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातर्विधातः कलशौं अभक्षयम्।। १७।।

२१. अथ यम सूक्तम्

यम बध्नाद् बृहस्पितिर्मणि फालं घृतश्चुतमुग्र खादिरमोजसे। तमग्निः प्रत्यमुञ्चत सोअस्मै दुह आज्यं भूयोभूयः श्वः श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। १।।

यम बध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्चुतमग्रं खदिर मोजसे। तमिन्द्रः प्रत्यमुंचतौ वीर्यायकम्। सो अस्मै बलमिद् दूहे भूयोभूयः श्वः श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। २।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्चुतमुग्रं खदिर मोजसे। तं सूर्यः प्रत्यमुञ्चत तेनेमा अजयद् दिशः। सो अस्मै भूतिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वः श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। ३।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मिणिं फालं घृतश्चुतमुग्रं खादिर मोजसे। तं सोमः प्रत्यमुञ्चत महे श्रोत्राय चक्षसे। सो अस्मै वर्च इद् दुहे भूयोभूयः श्वः श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। ४।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिंफालं घृतश्चुतमुग्रं खादिर मोजसे। तं विभ्रच्चन्द्रमामणिम-सुराणांपुरोऽजयद्दानवानांहिरण्ययीः। सो अस्मै श्रियमिद् दुहे भूयोभूयः श्वः श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। ५।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वातायमणिमाशवे। सो अस्मै वाजिनं दुहे भूयोभूयः श्वः श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। ६।।

यमबध्नाद् बृहस्पति र्वातायमणिमाशवे। तेनेमां मणिना कृषिमश्विनावभि रक्षतः। सभिषग्भ्यां महो दुहे भूयोभूयः श्वश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। ७।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वातायमणिमाशवे। तंबिभत् सविता मणिं तेनेमदमजपत् स्वः। सो अस्मै सूनृतां दुहे भूयोभूयः श्वः श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। ८।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे। तमापो बिभ्रतीर्मणिं सदाधावन्त्यक्षिताः। स

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आभ्योऽमृतमिद दुहे भूयोभूयः स्वः स्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। ६।।

यमबध्नाद बृहस्पतिर्वातायमणिमाशवे । तं राजा वरुणोमणिं प्रत्यमुञ्चत शंभुवम्। सो अस्मै सत्यमिद् दुहे भूयोभूयः स्वः स्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। १०।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वातायमणिमाशवे। तंदेवा विभ्रतोमणिं सर्वाल्लोकान् युधाजयन् सएभ्यो जितिमिद् दुहे भूयोभूयः स्वः स्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। ११।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वार्तायमणिमाशवे। तमिमं देवता मणिं प्रत्युमुञ्चत शंभुवम्। स आभ्यो विश्वमिद् दुहे भूयोभूयः स्वः स्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि।। १२।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्।। समायं मणिरागमद् रसेन सह वर्चसा।। १३।।

यमबध्नाद् बृहस्पति र्देवेभ्यो असुरक्षित्तिम्। समायं मणिरागमत् सह गोभिरजाविभिरन्नेन प्रजया सह।। १४।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्। समायं मणिरागमत् सह व्रीहियवाभ्यां महसाभूत्या सह।। १५।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यों असुरक्षितिम्। समायं मणिरागमन्मधोघृतस्य धारया कीलालेन मणिः सह।। १६।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्। समायं मणिरागमदूर्जया पयसा सह द्रविणेन श्रिया सह।। १७।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्। समायं मणिरागमत् तेजसा त्विष्या सह यशसा कीर्त्या सह।। १८।।

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्। समायं मणिरागमत् सर्वाभिर्भूतिभिः सह।। १९।।

२२ अथ संरक्षण सूक्तम्

रक्षसां भागोऽसि निरस्त ँ रक्षऽइदमह ँ रक्षोऽभितिष्ठामीदमह ँ रक्षोऽयवाधऽइदमह ँ रक्षोऽधमं तमो नियामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्।।१।।

रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्टयो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निदखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि।। २।।

रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनोऽस्तृणामि वैष्णावान्रक्षोहणौ वां वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमस्ति वैष्णवाः स्थ।। ३।।

आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्। यत्रासते सुकृतो यत्र त ईयुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु।। ४।।

आयुश्च रूपं च नाम च कीर्तिश्च प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोतं च।। ५।।

आयुषायुः कृतां जीवायुष्मान् जीव मामृथाः। प्राणेनात्मन्वतां जीव मृत्योरुदगा वशम्।। ६।।

आयुषे त्वा वर्चसे त्वौजसे च बलाय च यथा हिरण्यतेजसा विभासासि जनां अनु।। ७।।

आयुषोऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यसे तदाञ्जन त्वं शंताते शमापो अभयं कृतम्।। ८।।

आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृथाः। व्यऽहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा।। ९।।

प्राण मामत् पर्यावृतो न मदन्ये। भविष्यसि। अपां गर्भमिव जीवसे प्राण बध्नामि त्वा मयि।। १०।।

प्राण माहुर्मातरिश्वानं वातो ह प्राण उच्यते। प्राणे ह भूतं भव्यं च प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्।। ११।।

प्राणापानौ व्रीहियवावनड्वान् प्राण उच्यते यवे ह प्राण आहितोऽपानो व्रीहरुच्यते।। १२।।

प्राणपानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षिति च क्षितिश्च या। उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्व दिवि देवा दिविश्रितः।। १३।।

इदं पितृभ्यो नमोऽअस्त्वद्य ये पूर्वासो यऽउपरासऽईयुः। ये पार्थिवे रजस्या निषत्त ये वा नून ँ सुवृजनासु विक्षु।। १४।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२३. अथ अश्म सूक्तम्

अश्मवर्म मेऽसि यो मा धुवाया दिशोऽघायुरभिदासात्। एतत् स ऋच्छात्।। १।।

अश्मवर्म मेऽसि यो मोर्ध्वाया दिशोऽघायुरभिदासात्। एतत् स ऋच्छात्।। २।।

अश्मवर्म मेऽसि यो मा दिशामन्तर्देशेभ्यो-ऽघायुरभिदासात्। एतत् स ऋच्छात्।। ३।।

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः। अत्रा जहीत ये असन् दुरेवा अनमीवानुत्तरेमाभि वाजान्।। ४।।

अश्मवर्म मेऽसि यो मा प्राच्या दिशोऽघायुरभिदासात्। एतत् स ऋच्छात।। ५।।

अश्मवर्ममेऽसि यो मा दक्षिणाया दिशोऽघायुरभिदासात्। एतत् स ऋच्छात्।। ६।।

अश्मवर्ममेऽसि यो मा प्रतीच्या दिशोऽघायुरभिदासात्। एतत् स ऋच्छात्।। ७।।

अश्मवर्म मेऽसि यो मा मोदीच्या दिशोऽघायुभिदासात्। एतत् स ऋच्छात्।। ८।।

इडऽएह्यदितऽएहि सरस्वत्येहि असावेह्यसा वेह्यसावेहि।। ६।।

इडाभिरग्निरीड्यः सोमो देवोऽअमर्त्यः।

अनुष्टुप्छन्दऽइन्द्रियं पञ्चाविर्गौर्यो दधुः।। १०।।

इडाभिर्भक्षानाप्नोति सूक्तवाकेनाशिषः। शंयुना पत्नीसंयाजान्त्समिष्टयजुषासꣳ स्थाम्।। ११।।

इडामग्ने पुरुदं सꣳ सुनिंगोः शश्वत्तम हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनय। विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।। १२।।

इडायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्याऽअधि। जातवेदो निधीमह्यग्ने हव्याय वोढवे।। १३।।

इडेरन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतिऽदिते सरस्वति महि विश्रुति। एता ते ऽ अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्।। १४।।

इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत्। यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपेऽअभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु।। १५।।

इदमुत्तरात् स्वस्तस्य श्रोत्रꣳ सोव शरच्छौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद् वैराजं विश्वामित्र ऽ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रंगृह्णामि प्रजाभ्यः।। १६।।

२४. अथ गर्भ सूक्तम्

गर्भोऽअस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भोऽअपामसि।। १।।

गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम्। सं देवो देवेन सवित्रा गत सꣳ सूर्य्येण रोचते।। २।।

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती।। ३।।

ते हि पुत्रासोऽअदितेः प्रजीवसे मर्त्याय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्।। ४।।

याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः।। ५।।

ॐ गर्भे नु नौ जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः। नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नाक्स्य पृथिवी उत द्यौः।। ६।।

ॐ गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वा। शतं मा पुर आयसीरक्षन्नधश्येनो जवसा निरदीयम्।। ७।।

ॐ गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे। सीदन्नृतस्य योनिमा।। ८।।

ॐ गर्भे योषामदधर्वत्समासन्यपीच्येन मनसोत जिह्वया। स विश्वाहा सुमना योग्या अभि सिषासनिर्वनते कार इज्जितिम्।। ६।।

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्ने गर्भमेहधाः।। ११।।

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो हिमवतामुत। गर्भोविश्वस्य भूतस्येमं मे अगदं कृधि।। १२।।

गर्भते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः। गर्भं त इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भं धाता दधातु ते।। १३।।

गर्भ धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा।। १४।।

२५. अथ प्रजा सूक्तम्

ॐ परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गमानि। त्वष्टुर्गृहे अपिबत्सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्वोः सुतस्य।। १।।

ॐ पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम्। आ विवेश रोदसी भूरिवर्पसा पुरुप्रियो भन्दते धामभिः कविः।। २।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ पिता यत्स्वां दुहिरमधिष्कन्क्मया रेतः सञ्चग्मानो निषिञ्चत्। स्वाध्योऽजनयन्ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन्।। ३।।

ॐ पितुर्न पुत्रः सुभृतो दुरोण आ देवाँ एतु प्रणो हविः।। ४।।

ॐ पितुर्न पुत्रा क्रतुं जुषन्त श्रोषन्ये अस्य शासं तुरासः। विरायऔर्णोदुरः पुरुक्षुः पिपेश नाकं स्तृभिर्दमूनाः।। ५।।

ॐ पितुश्च गर्भं जनितुश्च बभ्रे पूर्वीरेको अधयत्पीप्यानाः। वृष्णे सपत्नी शुचये सबन्धू उभे अस्मै मनुष्येऽनिपाहि।। ६।।

ॐ पितुश्चिदूधर्जनुषा विवेद व्यस्य धारा असृजद्वि धेनाः। गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिर्दिवो यह्वीभिर्न गुहा बभूव।। ७।।

ॐ पितेव पुत्रमभिरूपस्थे त्वामग्ने वध्यश्वः सपर्यन्। जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठोत पूर्वा अवनोर्व्याधतश्चित्।। ८।।

ॐ गर्भो यज्ञस्य देवयुः क्रतुं पुनीत आनुषक्। स्तोमैरिन्द्रस्य वावृधे मिमीत इत्।। ९।।

ॐ सहि क्षपावाँ अग्नी रयीणां दाशद्यो अस्मा अरं सूक्तैः। एता चिकित्वो भूमा नि पाहि देवानां जन्म मर्तां च विद्वान्।। १०।।

ॐ अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम्। दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम्।। ११।।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्वेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।। १२।।

ॐ त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे। कुशिकासो अवस्यवः।। १३।।

ॐ पतिर्भव वृत्रहन्त्सुनृतानां गिरां विश्वायुर्वृषभो वयोधाः। आनो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान्महीभिरूतिभिः सरण्यन्।। १४।।

ॐ पतिर्ह्यध्वराणामग्ने दूतो विशामसि। उषर्बुध आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दृशः।। १५।।

ॐ पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये। अपां जग्मिर्निचुम्पुणः।। १६।।

ॐ पत्नीव पूर्वहूतिं वावृधध्या उषासानक्ता पुरुधा विदाने। स्तरीर्नोत्कं व्युतं वसाना सूर्यस्य श्रिया सुदृशी हिरण्यैः।। १७।।

२६. अथ अश्विन सूक्तम्

ॐ अश्विना सु विचाक शद्वृक्ष परशुमाँ इव। अन्ति षदभूतु वामवः।। १।।

ॐ अश्विना स्वृषे स्तुहि कुवित्ते श्रवतो हवम्। नेदियसः कुकयातः पणीरुत।। २।।

ॐ अश्वावतेगोमती र्विश्ववारा यतमःना रश्मिभिः सूर्यस्य। परा च यन्ति पुनरा यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः।। ३।।

ॐ अश्विना परिवामिषः पुरूचीरीयुर्गीर्भिर्यतमाना आगृधाः रथो हवामृतजा अदि जूतः परिद्यावा पृथिवी याति सद्यः।। ४।।

ॐ अश्विना पिबतं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता। ऋतुना यज्ञवाहसा।। ५।।

ॐ अश्विना पुरुदंससा नरा शवीरया धिया। धिष्ण्या वनतं गिरः।। ६।।

ॐ अश्विना मधुषुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पतिमा गतं दुरोणे। रथो ह वां भूरि वर्पः करिक्रत्सुतावतोनिस्कृतमागमिष्ठः।। ७।।

ॐ अश्विना यध्द कर्हि चिच्छुश्रुयातमिमं हवम्। वस्वीरू षु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृच।। ८।।

ॐ अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद्दस्रा हिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम्।। ९।।

ॐ अश्विना वाजिनीवसू जुषेथां यज्ञमिष्टये। हंसाविव पततमा सुताँ उप।। १०।।

अश्विना गोभिरिन्द्रियमश्वेभिर्वीर्यं बलम्। हविषेद्ँ सरस्वती यजमानमवर्द्धयन्।। ११।।

अश्विना घर्मं पातद्ँ हार्द्वानमहर्दिवाभिरूतिभिः। तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम्।। १२।।

अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। १३।।

अश्विना नमुचेः सुतद्ँ सोमद्ँ शुक्रं परिस्रुता सरस्वती तमा भरद् बर्हिषेन्द्राय पातवे।। १४।।

अश्विना पिबतां मधु सरस्वत्य सजोषसा। इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ताद्ँ सोम्यं मधु।। १५।।

अश्विना हविरिन्द्रियं नमुचेर्धिया सरस्वती। आ शुक्रमासुराद्वसुमघमिन्द्राय जभ्रिरे।। १६।।

अश्विना भेषजं मधु भेषजं नः सरस्वती। इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियद्ँ रूपद्ँ रूपमधुः सुते।। १७।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२७. अथ शान्ति सूक्तम्

नमो वः पितरो यच्छिवं तस्मै नमो वः पितरो यतृस्योनं तस्मै। नमो वः पितरः स्वधा वः पितरः।। १।।

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् विधृता बन्धपाशान्। यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे।। २।।

नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये। स्वजाय वभ्रवे नमो नमो देवजनेभ्यः।। ३।।

नमः शीताय तक्मने नमो रूरायशोचिषे कृणोमि। यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने।। ४।।

नमस्तेअधिवाकाय परावाकाय ते नमः।

सुमत्यै मृत्यो ते नमो दुर्मत्यै त इदं नमः।। ५।।

नमस्ते यातुधानेभ्यो नमस्ते भेषजेभ्यः।

नमस्ते मृयो मूलेभ्यो ब्राह्मोणेभ्य इदं मम: ।। ६।।

नमोदेववधेभ्यो नमो राजवधेभ्यः।। अथो

ये विश्वानां वधास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तुते।।७।।

नमस्ते अस्तु नारदानुष्टु विदुषे वशा

कतमासां भीमतमा यामदत्त्वा पराभवेत्।। ८।।

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते अस्त्वश्मने येना दूडाशे अस्यसि।। ९।।

नमस्ते अस्त्वायते नमो अस्तु परायते। नमस्ते प्राण तिष्ठत आसीनायोत ते नमः।। १०।।

नमस्तेऽस्त्वायते नमो अस्तु परायते।

नमस्ते रुद्र तिष्ठत आसीनायोत ते नमः।। ११।।

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः।

बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नमः।। १२।।

नमस्ते प्राण क्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे।

नमस्ते प्राण विद्युते नमस्ते प्राण वर्षते।। १३।।

नमस्ते प्राण प्राणते नमो अस्त्वपानते।

पराचीनाय ते नमः प्रतीचीनाय ते नमः सर्वस्मै न इदं नमः।। १४।।

नमस्ते राजन् वरुणास्तु मन्यवे विश्वं ह्युग्र निचिकेषि दुग्धम्। सहस्रमन्यान् प्रसुवोमि साकं शतं जीवाति शरदस्तवायम्।। १५।।

नमस्ते रुद्रास्यते नमः प्रतिहितायै। नमो विसृज्यमानायै नमो निपतितायै।। १६।।

नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नम ईषायुगेभ्यः। वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु।। १७।।

नमो गन्धर्वस्य नमस्ते नमो भामाय चक्षुषे च कृण्मः। विश्वावसो ब्रह्मणा ते नमोऽभि जाया अप्सरसः परेहि।। १८।।

नमो यमाय नमो अस्तु मृत्यवे नमः पितृभ्य उत ये नयन्ति। उत्पारणस्य यो वेद तमग्निं पुरो दधेऽस्मा अरिष्टतातये।। १९।।

नमो रुद्राय नमो अस्तु तक्मने नमो राज्ञे वरुणाय त्विषीमते। नमो दिवे नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः।। २०।।

नमो रूराय ष्यवनाय नोदनाय धृष्णवे। नमः शीताय पूर्वकामकृत्वाने।। २१।।

नमो वः पितर ऊर्जे नमो वः पितरो रसाय।। २२।।

नमो वः पितरो भामाय नमो वः पितरो मन्यवे।। २३।।

नमो वः पितरो यद् घोरं तस्मै नमी वः पितरो यत् क्रूरं तस्मै।। २४।।

२८. अथ विजय सूक्तम्

जितमस्माक मुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकं तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः सप्राह्यः पाशान्मोचि तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। १।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजाअस्माकं वीरा अस्माकम्।। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणमनुष्याः पुत्रमसौयः। स निर्ऋत्याः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। २।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रम्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सौ यः। सोऽभूत्याः पाशान्मामोचि। तस्ये दंवर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। ३।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। सोऽनिर्भूत्याः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। ४।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। सपराभूत्याः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। ५।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौतः। सदेवजातीनां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणामयुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। ६।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामतोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स बृहस्पतेः पाशान्मा मोची। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयानीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। ७।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्मकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स प्रजापतेः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेन धराञ्चं पादयामि।। ८।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स ऋषीणां पाशान्मा मोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। ९।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स आर्षेयाणां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेन धराञ्चं पादयामि।। १०।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। सोऽङ्गिरसां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। ११।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स अङ्गिरसानां पाशान्मामोचि तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। १२।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। सोऽथर्वणां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। १३।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स अथर्वणां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। १४।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स वनपस्तीनां पाशान्नामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। १५।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स वानस्पत्यानां पाशान्नामोचि। तस्ये दंवर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेन धराञ्चं पादयामि।। १६।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स ऋतूनां पाशान्नामोचि तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। १७।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स आर्तवानां पाशान्नामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। १८।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स मासानां पाशान्मा मोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। १९।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। सोऽर्धमासानां पाशान्मा मोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। २०।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। २१।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। सोऽहोःसंयतोः पाशान्नामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। २२।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजाअस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। सद्यावापृथिव्योः पाशान्नामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेन धराञ्चं पादयामि।। २३।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स इन्द्राग्न्योः पाशान्नामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। २४।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादतुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स मित्रावरूण्योः पाशान्नामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। २५।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स राज्ञोवरूणस्य पाशान्नामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। २६।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं

तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ऽस्माकं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः। स मृत्योःपद्वीशात् पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।। २७।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यष्ठां विश्वाःपृतना अरातीः। तदग्निराह तदु सोम आ हपूषामाधात् सुकृतस्य लोके अगन्म स्वः स्वरगन्म संसूर्यस्य ज्योतिषागन्म। वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसुमयि धेहि।। २८।।

२६. मित्र सूक्तम्

मित्रश्च तुभ्यं वरुणः सहस्वोऽग्ने विश्वे मरुतः सुम्नमर्चन्। यच्छोचिषा सहसस्पुत्रतिष्ठा अभिक्षितीः प्रथयन्त्सूर्यो नृसून्।। १।।

मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो मित्रो होता वरुणो जातवेदाः। मित्रो अध्वर्यु रिषिरो दमूना मित्रः सिन्धूनामुत पर्वतानाम्।। २।।

मित्रो जनान्या तयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम। मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत।। ३।।

मित्रस्य चर्षणी धृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्।। ४।।

मित्राय पंचयेमिरे जना अभिष्टिशवसे। स देवान्विश्वान्बिभर्ति।। ५।।

मित्रो देवेष्वायुषु जनाय वृक्त बर्हिषे। इष इष्ट व्रता अकः।। ६।।

मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेतां यज्ञमिष्टये। नि बर्हिर्षिसदतां सोमपीतये।। ७।।

मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्दोअर्यमा ददातु। दिदेष्टु देव्यदिती रेवणो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च।। ८।।

मित्रस्तन्नो वरुणो महन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः। मा वो भुजे मान्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे।। ९।।

मित्रस्तन्नो वरुणो देवो अर्यः प्रसाधिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु। ब्रवद्यथा न आदरिः सुदास इषामदेम सह देव गोपाः।। १०।।

मित्रा तनान रथ्या३ वरुणो यश्च सुक्रतुः। सनात्सुजाता तनया धृत व्रता।। ११।।

मित्रावरुणवन्ता उत धर्मवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम्। सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना।। १२।।

मित्रो नो अत्यंहतिं वरुणः पर्षदर्यमा।। आदित्यासो यथा विदुः।। १३।।

मित्रं कृणुध्वं खलु मृणता नो मा नो द्यौरेण चरताभि धृष्णु। निवो नुमन्युर्विशतामराति रन्योबभ्रूणां प्रसितौ न्वस्तु।। १४।।

मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे या सम्राजा मनसा, न प्रयुच्छतः। ययोर्धाम धर्मणारोचते वृहद्ययो रुभे रोदसी नाधसी वृतौ।। १५।।

३०. अथ इन्द्र सूक्तम्

इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम्। ऋषिणां च स्तुतीरुपयज्ञं च मानुषाणाम्

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा षोडशिनऽएष ते। योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने।। १।।

इन्द्रवायूऽइमे सुताऽउप प्रयोभिरागतम्। इन्दवो वामुशन्तिहि।।

उपयामगृहीतोऽसि वायवऽइन्द्रवायुभ्यां त्वैष ते योन्निः सजाषोभ्यां त्वा।। २।।

इन्द्रवायूऽइमे सुताऽउप प्रयोभिरा गतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि।। ३।।

इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम्। आदित्यान्मारुतं गणम्।। ४।।

इन्द्रवायू सुसन्दृशा सुहवेह हवामहे। यथा नः सर्वऽइज्जनोऽनमीवः सङ्गमे सुमनाऽअसत्।। ५।।

त्वमिन्द्र शर्मरिणा हव्यं पारावतेभ्यः। विप्राय स्तुवते वसुवनिं दुरश्रवसे वह।। ६।।

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः। तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं जुह्वति जुह्वतस्तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि। त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्।। ७।।

त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्युस्त्वं भूरभिभूति-र्जनानाम्। त्वं दैवीर्विश इमा वि राजायुष्मत् क्षत्रमजरंते अस्तु।। ८।।

त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः। विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि।। ९।।

त्वमिन्द्र ब्रत्मणा वर्धयन्तः सत्रं निपेदुर्ऋषयो नाधमानास्तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि। त्वं नः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन्।। १०।।

त्वमिन्द्र कपोताय च्छिन्नपक्षाय वञ्चते। श्यामाकं पक्वं पीलु च वारस्मा अकृणोर्बहुः।। ११।।

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः। अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः।। १२।।

त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं वृषन् वृषेदसि।। १३।।

त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः। वज्रं शिशान ओजसा।। १४।।

त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा। स विश्वा भुव आभवः।। १५।।

त्वमिन्द्रासिवृत्रहाव्यऽन्तरिक्षमतिरः। उद्द्यामस्तम्ना ओजसा।। १६।।

३१ अथ आयुष्य सूक्तम्

आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृत प्रतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्स्वाहा।। १।।

आयुष्यं वर्च्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम्। इद ꣳ हिरण्यं वर्च्चस्वज्जैत्रयाविशतादुमाम्।। २।।

आयुरस्मैधेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनि धेह्यस्मै। रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम्।। ३।।

आयुर्ददं विपश्चितं श्रुतां कण्वस्य वीरुधम्। आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान् नि शमयत्।। ४।।

आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने। घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम्।। ५।।

आयुर्यत्ते अतिहितं पराचैरपानः प्राणः पुनरा तावितम्। अग्निष्टदाहार्निर्ऋतेरुपस्थान त्तदात्म-निपुनरा वेशयामि ते।। ६।।

ॐ आयुर्विश्वायुः परि पासति त्वापूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्। यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु।। ७।।

ॐ युवानः कवयो यज्ञियासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम्। अचित्रंचिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत्।। ८।।

ॐ आयूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद्देवानां यज्जनिमान्त्युग्र। मर्तास विदुर्वशीरकृप्रन्वृधे चिदर्य उपरस्यायोः।। ९।।

दीर्घायस्तुऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वाशतवल्शा वि रोहतात्।। १०।।

आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहिव्यानं मे पाहि चक्षुर्मे पाहि श्रोत्रं मे पाहि वाचम्मे पिन्व मनो मे जिन्वात्मानम्मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ।। ११।।

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ꣳ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् प्रजापतेः प्रजाऽअभूम स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम।। १२।।

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ꣳ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्चऽऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च। स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम प्रजापतेः प्रजाऽअभूमवेट् स्वाहा।। १८।।

३२. अथ संप्रज्ञान सूक्तम्

शिशुं नत्वा जेन्यं वर्धयन्ती माता बिभर्ति सचनस्यमाना। धनोरधि प्रवता यासि हर्यञ्जि गीषसे पशुरिवावसृष्टः।। १।।

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्राक्थुः काव्यैर्द ꣳ सनाभिः। यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मधवन्नभिष्णक।। २।।

पिता नोऽसि पिता नोबोधिं नमस्ते मा मा हि ꣳ सिः त्वष्टमन्तस्वा समेप पुत्रान्। पशून् मयि धेहि प्रजामस्मासु धेह्यरिष्टाꣳ सह पत्या भूयासम्।। ३।।

ॐ पुत्रिणा ता कुमारिणा विश्वमायुर्व्य श्नुतः उभा हिरण्यपेशसा।। ५।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति।। ६।।

ॐ प्रसवे त उदीरते तिस्त्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि।। ७।।

ॐ मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेनां यज्ञमिष्टये। नि बर्हिषि सदतां सोमपीतये।। ८।।

ॐ शिशुर्न जातोऽव चक्रदद्वने स्वर्यद्वाज्यरुष सिषासति। दिवो रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः।। ९।।

ॐ शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम्।। १०।।

ॐ शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन। कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।। ११।।

३३. अथ वायु सूक्तम्

ॐ वायो येते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि नियुत्वान् त्सोम पीतये।। १।।

ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः सार्कं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः।। २।।

ॐ वायो शुक्रोऽअयामि ते मध्वोऽअग्रं दिविष्टिषु। आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता।। ३।।

ॐ वायोःपूतः पवित्रेण प्रत्यङ्सोमोऽअतिद्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा।। ४।।

ॐ वायोः पूतः पवित्रेणप्राङ्सोमोऽअतिद्रुतः। इन्द्रस्थ युज्यः सखा।। ५।।

ॐ वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा। विमुच्यन्तामुस्रियाः।। ६।।

ॐ वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरंकृता। तेषां पाहि श्रुधी हवम्।। ७।।

ॐ वाय उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छा जरितारः। सुत सोमाअहर्विदः।। ८।।

ॐ वायो तव प्रपृञ्चतीधेना जिगातिदाशुषे। उरूची सोम पीतये।। ९।।

ॐ वाय विन्दश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू। तावा यातमुप द्रवत्।। १०।।

ॐ वायविन्दश्च सुन्वत आ गातमुप निष्कृतम्। मक्षित्था धिया नरा।। ११।।

ॐ वायो यत् ते तपस्तेन तं पति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।। १२।।

ॐ वायो यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।। १३।।

ॐ वायोयत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।। १४।।

ॐ वायो यत् ते शोचिस्तेन तं प्रतिशोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।। १५।।

ॐ वायो यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।। १६।।

३४. अथ प्राण सूक्तम्

प्राणो विराट् प्राणो देष्ट्री प्राणं सर्व उपासते। प्राणोह सूर्यश्चन्द्रमाः प्राणमाहुः प्रजापतिम्।। १।।

प्राणायान्त रिक्षाय वयोभ्यो वायवेऽधिपतये स्वाहा।। २।।

प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभिसंधमामि। नमस्ते मृत्यो चक्षुषे नमः प्राणाय तेऽकरम्।। ३।।

प्राणेनविश्वतो वीर्यं देवाः सूर्यं समैरयन्। व्यहं सर्वेण पाप्मना वियक्ष्मेण समायुषा।। ४।।

प्राणेन प्राणतां प्राणेहैव भव मा मृथाः। व्य हं सर्वेण पाप्मनावि यक्ष्मेण समायुषा। ५ प्राणेनाग्निं ससृजति वातः प्राणेन संहितः। प्राणेन विश्वतोमुखं सूर्यं देवा अजनयन्।। ६।।

प्राणेनाग्ने चक्षुषा संसृजेमं समीरय तन्वाऽ सं बलेन। वेत्थामृतस्य मानु गान्मा नुभूमिगृहो भुवत्।। ७।।

प्राणो अपानो व्यान आयुश्चक्षुर्दृशये सूर्याय। अपरि परेण यथा यमराज्ञः पितृन्गच्छ।। ८।।

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या। व्यानोदानौ वाङ् मनस्ते वा आकूतिमावहन्।। ९।।

प्राण पानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या। व्यानौ दानौ वाङ्मनः शरीरेण तईयन्ते।। १०।।

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे। यो भूतः सर्वस्येश्वरो यास्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्।। ११।। प्राणः प्रजा अनुवस्ते पिता पुत्र मिवप्रियम्। प्राणोह सर्वस्येश्वरोयच्च प्राणति यच्चन।। १२।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणोमृत्युः प्राणस्तक्मा प्राणं देवा उपासते। प्राणोह सत्यवादिनमुत्तमे लोक आदधत्।। १३।।

प्रणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व श्रोत्राय में वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुभ्यां मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्।। १४।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइन्द्राजा जगती वभूव। यः ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषाविधेम्।। १५।।

प्राणम्मे पाह्यपानंमे पाहि व्यानम्मे पाहि चक्षुर्मऽउर्व्या विभाहि श्रोत्रम्मे श्लोकय अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात् पाहि दिवो वृष्टिमेरय।। १६।।

प्राणदाऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्यस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवोभव।। १७।।

प्राणपा मेऽअपानपाश्चक्षुष्पाः श्रोत्रपाश्चमे। वाचो मे विश्वभेषजो मनसोऽसि विलायकः।। १८।।

प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं चमऽआधीतं चमे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १९।।

३५. अथ शांति सूक्तम्

हरिः ॐ। ऋचंवाचम्प्रपद्ये मनोयजुः प्रपद्येसामप्राणम्प्रपद्येचक्षुँ श्रोत्रम्प्रपद्ये।। व्यागोजः सहौजोमयिप्राणापानौ।। १।। यन्मेऽद्रिञ्च चक्षुपो हृदयस्य मनसोव्यातितृणम्बृहस्पतिर्मेतद्दधातु।। शन्नोभवतुभुवनस्य यस्पतिः।। २।। भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि।। धियो योनः प्रचोदयात्।। ३।। कस्त्वा सत्यो मदानान्म ँ हिष्ठोमत्सदन्धसः।। दृढाचिदारुजेव्वसु।। ४।। अभीषुणः सखीनामविताजरितॄणाम्।। शतम्भवास्यूतिभिः।। ५।। कयात्वन्नऽऊत्याभिप्रमन्दसेवृषन्।। कयास्तोतृभ्यऽआभर।। ६।। इन्द्रोविश्वस्य राजति।। शन्नोऽअस्तुद्विपदे शञ्चतुष्पदे।। ७।। शन्नोमित्रश्शंवरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा।। शन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिः शन्नोविष्णुरुरुक्रमः।। ८।। शन्नोवातः। पवताँ शन्नस्तपतुसूर्यः।। शन्नःकनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु।। ९।। अहानि शम्भवन्तुनःशँ रात्रीः प्रतिधीयताम्।। शन्न इन्द्राग्नीभवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या।। शन्नऽइन्द्रापूषणावाजसातौ शमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः।। १०।। द्यौःशान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।। व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि।। ११।। दृतहँ हमामित्रस्य-माचक्षुषा सर्वाणिभूतानि समीक्षन्ताम्।। मित्रस्या हञ्चक्षुषा सर्वाणिभूतानि समीक्षे।। मित्रस्यचक्षुषा समीक्षामहे।। १२।। हतेहँ रमा। ज्योक्तेसन्दृशिजीव्यासंज्योक्तेसन्दृशि जीव्यासम्।। १३।। नमस्तेहरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे।। अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवोभव।। १४।। नमस्ते। अस्तुव्विद्युते नमस्तेस्तनयित्नवे।। नमस्तेभगवन्नस्तुयतः स्वः समीहसे।। १५।। यतोयतः समीहसे ततोनोऽअभयङ्कुरु।। शन्नः कुरुप्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।। १६।। सुमित्रियान-ऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्ठियञ्चवयन्द्विष्मः।। १७।। तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ता-च्छुक्रमुच्चरत्।। पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतँ श्रृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरद शतम्भूयश्चशरदः शतात्।। १८।। इति शान्त्यिध्यायः।। ६।।

३६. अथ नमः सुक्तम्

नमोहिरण्यबाहवे। सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो- नमो वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यःपशूनाम्पतये नमोनमः शष्पिञ्जञ्जरायत्विषीमतेपथीनाम्पतये नमोनमोहरि केशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतये नमोनमः।। १।। नमोबभ्लुशाय व्याधिन्नानाम्पतयेनमोनमो भवस्यहेत्यैजगताम्पतयेनमोनमोरुद्रायाततायिने क्षेत्राणम्पतयेनमोनमः सूतायाह न्त्यैवनानाम्पतयेनमोनमो रोहिताय।। २।। नमोरोहिताय स्थपतयेवृक्षाणाम्पतयेनमोनमोभुवन्तुये वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतयेनमोनमोमन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयतेपत्तीनाम्पतयेनमोनमः।। ३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नमः कृत्स्नायुतया धावतेसत्वनाम्पतयेनमोनमः सहमानायनिव्याधिनऽआव्या-धिनीनाम्पतये नमोन-मोनिषङ्गिणेककुभाय स्तेनानाम्पतये नमोनमो-निश्चेरवेपरिचरायरिण यानाम्पतये नमः।। ४।। नमोवञ्चतेपरिवञ्चतेस्ता यूनाम्पतये नमोनमो-निषङ्गि इषुधिमतेतस्कराणाम्पतयेनमोनमः-सृकायिभ्योजिघा ँ सद्भ्योमुष्णताम्पतये नमोनमो-सिमद्भयोनक्तञ्चद्भयोविकृन्तानाम्पतयेनमः।। ५।। नम-ऽउष्णीषिणे गिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतये नमो-नमऽइषु-मद्भ्यो धन्नवायिभ्य श्चवोनमोनमऽआ-तन्वानेभ्यः प्रति दधानेभ्यश्चवोनमोनमऽआ-यच्छद्भयोस्यद्भ श्चवोनमोनमः विसृजद्भयः।। ६।। नमोविसृजद्भयंविद्धयद्भश्चवोनमोनमः स्वप-द्भयोजाग्रद्भयश्चोवोनमोनमः शयानेभ्यऽआसीनेभ्य श्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भयोधावद्भयश्चवोनमोनमः।।७।।

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्य श्च वोनमोनमोऽश्वभ्यो श्वपतिभ्यश्चवोनमोनमऽआव्याधिनीभ्योविविद्धय-न्तीभ्यश्चवो नमोनमऽउगणाभ्यस्तृ हतीभ्यश्ववो-नमोनमः।। ८।। नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यऽश्चवो-नमोनमोव्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमो गृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्य-श्चवोनमोनमो विरुपेभ्योवि-श्वरूपेभ्यश्चवो नमोनमः।। ६।। नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्चवोनमोनमो रथिभ्योऽरथेभ्य-श्चवोनमोनमः क्षत्तृभ्यः सङ्गहीतृभ्यश्च- वोनमोनमो महद्भयोऽर्भकेभ्य श्चवोनमः।। १०।। नम स्तक्षभ्यो। रथकारेभ्यश्चवोनमोनमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्चवोनमोनमोनिषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्य श्चवोनमोनमः श्वनिभ्योभृगयु- भ्यश्चवोनमोनमः श्वभ्यः।। ११।। नमः श्वभ्यः। श्वपतिभ्यश्च वोनमोनमोभवाय-चरुद्रायचनमः शर्व्वायचपशु पतयेचनमोनीलग्रीवायच- शितिकण्ठायचनमः कप-र्छिने।। १२।। नमः कपर्छिने। चव्युप्तकेशा यच-नमः सहस्राक्षायचशतधन्वनेचनमो-गिरिशया यच-शिपिविष्टायचनमो मीढुष्टमायचेषुमतेच।। १३।। नमोह्रस्वाय चवामनायचनमाबृहतेचवर्षीयसे च नमोवृद्धायचसवृधेच नमोग्रयायचप्रथमाय चम।। १४।। नमऽआशव। चाजिरायचनमः शीग्घायच शीभ्यायचनमऽऊर्म्यायचा-वस्वन्यायच नमोनादे यायचद्वीप्यायच।। १५।। नमोज्येष्ट्राय। च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजायचापरजायचनमो-मध्यमायचा पगल्भाय च नमोजघन्यायचबघ्न्या ।। १६।। नमः सोभ्याय च प्रतिसर्य्यायचनमो-याम्यायक्षेम्यायचनमः श्लोक्यायचावसान्याय चनमऽउर्वर्यायचखल्यायच।। १७।। नमोवन्याय चकक्ष्या यचनमः श्रवायचप्रतिश्रवाय च नमऽआशु-षेणा यचाशुरथायचनमः शूरायचावभेदिने ।।१८।। नमोबिल्मिने। चकवचिने चनमोवर्म्मिणेचवरूथि-नेचनमः श्रुतायचश्रुतसे नाय चनमोदुन्दुभ्यायचाह-नन्याय ।। १९।। नमोघृष्णवे। चप्रमृशायचनमो निषङ्गिणेचेषुधिमते चनमस्ती- क्ष्णेषवेचायुधि नेचनमः स्वायुधायचसुधन्वनेच।। २०।। नमः स्रुत्याय चपथ्यायचनमःकाट्याय-चनीप्यायचनमः कूल्याय चसरस्यायचनमोनादेयायच-वैशन्ताय।। २१।। नमः कूप्याय। चावट्याय च नमो वीद्घ्याय चातप्याय च नमोमेघ्यायच-विद्युत्यायचनमो वर्ष्यायचनमोवात्याय।। २२।। नमोवात्याय चरेष्यायचनमोवास्त व्यायच-वास्तुपायचनमः सोमायचरुद्रायचनमस्ता म्रायचा-रुणायच।। २३।। नमः शङ्ग वे चपशुपतयेचनमऽउग्रायचभी- मायचनमोग्रे वधायचदूरेवधाय च नमोहन्त्रेचहनीयसे च नमो वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यो नमस्ताराय।। २४।। नमः शम्भवाय चमयोभवाय च नमः शङ्करायचमयस्कराय च नमः शिवाय च शिवत-रायच।। २५।। नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्त्थ्यायचकूल्याय च नमः शष्टयायचफेन्याय च ।। २६।। नमः सिकत्याय चप्रवाह्याय च नमः कि ँ शिलायचक्षणाय च नमः कपिर्दिनेत्रचपुलस्तये च नमऽइरिण्यायचप्रपत्थ्याय च।। २७।। नमोव्रज्याय चगोष्ठ्याय च नमस्त ल्प्यायच गह्यायचनमोह्रदयायचनिवेष्याय्यचनमः काट्यायचग-ह्वरेष्ठ्याय च नमः शुष्क्याय।। २८।। नमः शुष्क्याय चहरित्यायच नमः पा ँ स व्यायचरजस्यायचनमो लोप्यायचोलप्यायचनमऽ ऊर्व्यायचसूर्व्यायच।। २९।। नमः पर्ण्याय चपर्ण्यशदाय च नमऽउद्गुरमाणा यचाभिघ्नते च नम ऽआखिदतेचप्रखिदते च नमऽइषु-कृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्चवोनमनमोवः कि रिकेभ्योदेवाना ँ हृदयेभ्योनमोविचिन्वत्केभ्यो नमोविक्षिणत्केभ्योनमऽआनिर्हतेभ्यः।। ३०।।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

।। इति।।

३७. अथ ऋषिः सूक्तम्

ॐ ऋषिं नरावंहसः पांचजन्यमृबीसाद-त्रिंमुञ्चथोगणेन। मिन्नता दस्यो रशिवस्य माया अनुपूर्ववृषण चोदयन्ता।। १।।

ऋषिर्विप्रः पुर एता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन। सचिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम्।। २।।

ऋषि मनो य ऋषि कृत्स्वर्षाः सहस्त्रणीथः पदवीः कवीनाम्। तृतीयं धाम महिषः सिषा सन्त्सोमोविराजमनु राजतिष्टुप्।। ३।।

ऋषे मंत्र कृतांस्तोमैःकश्यपोद्वर्धयन्गिरः। सोमं नमस्य राजानं यो यज्ञे वीरुधां पतिरिन्द्रायेन्दोपरि स्रव।। ४।।

ऋषी वोधप्रतीवोधावस्वप्नो यश्च जागृविः। तौते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च जागृताम्।।५।।

ऋषीणां प्रस्तरोऽसि नमोस्तुदैवाय प्रस्तराय।। ६।।

ऋष वातेपादा प्रयज्जिगास्यवर्धन्वाजाउत ये चिद त्र। त्वमिन्द्र साला वृका न्त्सहस्त्र मासन् दधिषे अश्विना ववृत्याः।। ७।।

ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर जातो दासीर्विशः सूर्येण सत्त्याः। गुहा हितंगुह्यं गूढ़हमप्सु बिभृमसि प्रस्रावणे न सोमम्।। ८।।

ऋषिभ्यः स्वाहा।। ६।।

।। इति ऋषि सूक्तम्।।

३८. अथ गौः सूक्तम्

ॐ गोमदूषणा सत्याश्वावद्यात मश्विना। वर्ती रुद्रा नृपायम्।। १।।

गोभिर्न सोममश्विना मासरेण परिस्रुता। कीलालभश्विभ्यां मधु दुहे धेनुः सरस्वती।। २।।

गावो भगो गाव इन्द्रोमे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्यभक्षः।। इमा या गावः जनास इन्द्र इच्छामी दधृदा मनसा चिदिन्द्रम्।। ३।।

गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो अस्तु तनूबलम्। तत् सर्व मनु मन्यन्तां देवा ऋषभ दायिने।।४।।

गोभिष्ट रेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधंपुरुहूत विश्वो। वयं राजसु प्रथमाधनान्य रिष्टासो वृजनाभि र्जयेम।। ५।।

गोभिष्ट रेमामतिं दुरेवांयवेन क्षुधंपुरुहूव विश्वास। वयं राजभिः प्रथमाधनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम।। ६।।

गोभिष्टवा पात्वृषभो वृषा त्वा पातु वा जिभिः। वायुष्टवा ब्रह्मणा पात्विन्द्रस्त्वापात्विन्द्रियैः।।७।।

गोभ्यो अश्वेभ्यो नमो यच्छालायां विजायते। विजावति प्रजावति विते पाशांश्चृतामसि।। ८।।

गोसनिं वाचुमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि आरुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषंदधातुमे।। ६।।

गोषु प्रशस्ति वनेषु धिषे भरन्त विश्वे बलिं स्वर्णः।। वित्वा नरः पुरुत्रासपर्यन्पितुर्नजिग्रेर्वि वेदो भरन्त।। १०।।

गो मातरो यच्छुभयन्ते अंजिभिस्तनूषु शुभ्रादधिरे विरुक्मतः। वाधन्ते विश्वमभिमाति नमप वर्त्मान्येषामनु रीयते धृतम्।। ११।।

गोमन्नः सोम वीरवदश्वावद्वाजवत्सुतः। पवस्ववृहतीरिषः।। १२।।

गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्य विदेतोधा इन्दोभुवनेष्वर्पितः। त्वं सुवीरो असि सोम विश्व वित्तं त्वा विप्रा उप गिरेम आसते।। १३।।

गावोयवं प्रयुता अर्यो अक्षन्ता अपश्चं सहगोपाश्चरन्तीः। हवा इदर्यो अभितः समायन्कियदासु स्वंपतिश्छन्दयाते।। १४।।

गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे सुपारमिन्द्र ज्यैष्ठयाय धाय से गृणानाः। मन्दानः सोमं पपिवाँ ऋजीषिन्त्समस्मभ्यं पुरुधागा इषण्य।। १५।।

३९. अथ यज्ञ सूक्तम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। १।।

यज्ञो बभूव स आ बभूव स प्रजज्ञे स उ वावृधेपुनः। स देवानामधिपति र्बभूव सो अस्मांसु द्रविणमादधातु।। २।।

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनस्मजुहोमि। इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्य मानाः।। ३।।

यज्ञपतिमृषय एनसाहुर्निर्भक्तं प्रजा अनुतप्यमानम्। मथम्यान्त्स्तोकानम यान्रराध सं नष्टेभिः सृजतु विश्वकर्मा।। ४।।

यज्ञे रथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि। आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्म जातममृतं यजा महे।। ५।।

यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि।। ६।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ एति विततः कल्पमानईजानमभिलोकं स्वर्गम्। तमग्नयः सर्वहुतं जुषन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः। शृतं कृण्वन्त इहमाव चिक्षिपन्।। ७।।

यज्ञपदीराक्षीरा स्वधाप्राणा महीलुका। वशा पर्जन्यपत्नी देवाँ अप्येति ब्रह्मणा।। ८।।

यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ। स्वां योनिंगच्छ स्वाहा।। ९।।

यज्ञायज्ञियाय च वै स वाम देव्याय च यज्ञाय च यजमानाय च। पशूभ्यश्चावृश्चते य एवं विद्वांस व्रात्य मुपवदति।। १०।।

यज्ञायज्ञियस्य च वै सवामदेव्यस्य च यज्ञस्य च यजमानस्य च। पशूनां च प्रियं धामभवति तस्य दक्षिणायांदिशि।। ११।।

यज्ञै रिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्याँ अशनिभिर्दिहानः। ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान् प्रतीचो वाहून् प्रतिभङ्ग्धेषाम्।। १२।।

यज्ञो दक्षिणाभिरूद क्रामत् तां पुरं प्रणःयामिवः तामा विशम तां प्रविशम सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।। १३।।

यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं पुमांसु धेनुं सदनं रयीणाम्। प्रजामृतत्वमुत दीर्घमायु रायश्च पोषै रूपत्वा सदेम।। १४।।

यज्ञ ब्रूमो यजमानमृचः सामानिभेषजा। यजूंषि होत्रा ब्रमस्ते नोमुञ्चन्त्वं हसः।। १५।।

यज्ञं यन्तं मनसावृहन्तमन्वारोहामितपसा सयोनिः। उपहूता अग्ने जरसः परस्तात् तृतीये नाके सधमादं मदेम्।। १६।।

यज्ञर्तो दक्षिणीयो वासतेयोभवति य एवं वेदः।। १७।।

यज्ञस्य वो रथ्यं विश्वपति होतारमत्कोरतिथिं विभावसुम्। शोचञ्छुष्कासु हरिणीषु जुर्भु रद्वषा केतुर्यजतो द्यामशायत।। १८।।

यज्ञा यज्ञा वः समना ततुर्वणिर्धियन्धियं वो देवा उदधिध्वे। आ वोऽर्वाचः सुवितायरोदस्योर्महे ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः।। १९।।

यज्ञेन वर्धत जातवेद समग्निंयजध्वं हविषा तना गिरा। समिधानं सुप्रयसं स्वर्णर द्युक्षं होतारं वृजनेषु धूर्षदम्।। २०।।

यज्ञेन गातुमप्तुरो विवद्रिरेधियो हिन्वाना उशिजो मनीषिणः। अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रेहिन्वानाद्रविणान्यासत।। २१।।

यज्ञोभिर्यज्ञ वाहसं सोमेभिः सोम पातमम्। होत्राभिरिन्द्रं वावृधुर्व्यानशु।। २२।।

यज्ञस्य हिस्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्।। २३।।

यज्ञानां रथ्ये वयं तिग्म जम्भाया वीडवे। स्तोमैरिषे माग्नये।। २४।।

यज्ञे यज्ञे स मर्त्यो देवान्त्सपर्यति। यः सुम्नैदीर्घश्रुत्तम आवि वासात्येनान्।। २५।।

४०. अथ अन्न सूक्तम्

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नोदेह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्र दातारं तारिषऽऊर्जं नोधेहिद्विपदे चतुष्पदे।। १।।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। २।।

ॐ अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन।। ३।।

ॐ अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आवहन्तु। अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम्।। ४।।

ॐ धान्यमसिधिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वामहीनां पयोऽसि।। ५।।

ॐ धानाः करम्भः सक्तवः परीवापः पयो दधि। सोमस्यरूप ँ हविषऽआभिक्षा वाजिनं मधु।। ६।।

ॐ धानाना ँ रूपं कुवलं परीवापस्य गोधूमाः। सक्तूना ँ रूपं बदरमुपवाकाः करम्भस्य।। ७।।

ॐ धाना वन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः।। ८।।

ॐ धाना धेनु रभवद्वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत्। तां वै यमस्य राज्ये अक्षिता मुप जीवति।। ९।।

।। इति।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगदृष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवनकाल में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती। करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण, उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युग निर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी, जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है। उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है तब ईंट-गारे-चूने-सीमेंट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नानकर उनके अपने हो गये लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिनने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कभी ऐसा ही वातावरण भारत के कोने-कोने में दिखाई देता था, जब हर घर से सत्याग्रही निकलकर आ रहे थे। भावनाओं का आवेग चिरस्थायी नहीं रहता। वे ही लोग जो कभी राष्ट्र निर्माण के लिए अपना सब कुछ छोड़, पढ़ना-लिखना छोड़ देश को आजाद बनाने के लिए कूद पड़े थे, कभी गड़बड़ाने न पाएँ, उसी के लिए बापू ने आजादी के बाद काँग्रेस भंग कर देने व सभी को एक आदर्श स्वयं-सेवक की तरह दरिद्र नारायण का उत्थान कर राष्ट्र निर्माण में लग जाने की सलाह दी थी।

सभी इस तथ्य को जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ, राष्ट्र का कीर्ति-स्तम्भ रूपी वह महापुरुष भी एक वर्ष के अंदर ही शहादत को प्राप्त हो चला गया। गिने-चुने उनके आदर्शों पर चलने वाले रह गये, अवसरवादियों को राजनेतृत्व भाने लगा एवं राष्ट्र आजाद होकर भी उनके हाथ में आ गया जो ब्रिटिश तो नहीं थे किन्तु, उसी रंग में रँगे सत्ता के उन्माद में काम करने वाले शासक थे- सृजेता नहीं। जिंदा रहा तो मात्र बापू का दर्शन बुनियादी आधार पर टिका- मानव को बनाने का तंत्र-आश्रम तंत्र जो सेवाग्राम-साबरमती आश्रम के रूप में कार्य करता रहा और वह भी शीर्ष-पुरुष के न रहने, बिनोवाजी के चले जाने के बाद अस्तित्व व महत्व की दृष्टि से गौण हो गया। परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण, आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक, भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। १९११ में आज से ८४ वर्ष पूर्व वि.संवत् २०८६ में जन्मे, राष्ट्र की आजादी में उन्मत्त बने श्रीराममत्त कहलाने वाले, आचार्यश्री ने पहले स्वयं को तपाया, वैचारिक क्रान्ति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीया माताजी के रूप में खड़ा किया, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका अपनी लेखनी से लिखी, ममत्व भरी चिट्ठियों व छोटी-छोटी एक आने की किताबों से जन-जन के मन को छुआ, तब जाकर अपने एक लक्ष के २४ गायत्री महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर उन्होंने गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना की बात १९५२-५३ में सोची। सबसे पहली मंत्र दीक्षा वहीं पर १९५३ में दी व यह मानते हुए कि बिना आध्यात्मिक आधार बनाये, मनोभूमि में, भावनाओं के स्तर पर बदलाव लाये कोई क्रान्ति सफल नहीं हो सकती, धीमी खुराक देते हुए हर व्यक्ति को गायत्री व यज्ञ के तत्त्वदर्शन से जोड़ते हुए चले गये। गायत्री परिवार रूपी विराट वृक्ष का मूल आधार वह स्थापना है जो जन-जन के मनों में पहले हुई- उनकी भाव संवेदनाओं के उदात्तीकरण के रूप में सम्पन्न हुई व उनके अंदर अपनी गुरुसत्ता को त्याग करने की, यज्ञीय जीवन अपनाने की प्रेरणा बलवती होने लगी। उन्होंने सर्वमेध के रूप में अपना सर्वस्व बलिदान एवं नरमेध के रूप में अपने आप को समाज के हित न्यौछावर करने की भावना से दो यज्ञ किये। अपनी जमींदारी के बाण्ड बेचकर एवं परमवंदनीया माताजी के कीमती सोने के जेवर (ढाई सौ तोले) बेचकर जो स्वेच्छा से सम्पन्न हुआ, एक स्थापना भवन के रूप में जो हुई- वह थी **गायत्री तपोभूमि, मथुरा** जो वृन्दावन रोड पर ऋषि दुर्वासा की जन्मस्थली पर बनी आज से ४२ वर्ष पूर्व १९५३ में। प्रारंभिक स्थापना यों अखण्ड ज्योति संस्थान को माना जा सकता है जहाँ अखण्ड दीपक अपनी जन्मभूमि आँवलखेड़ा से जो वहाँ से मात्र ४० मील दूर थी, स्थापित किया गया था एवं प्रारंभिक तप-तितिक्षा वहीं पर १९४१ से, तपोभूमि की स्थापना से भी १२ वर्ष पूर्व आरम्भ हो गयी थी। इस प्रकार जन-जन के मनों का निर्माण उनके अंत:स्थल में प्रवेश कर उनके अंदर देवत्व के जागरण की ललक पैदा करने वाली पृष्ठभूमि पर स्थापनाओं का क्रम बना। किराये की ऐसी हवेली जिसे भुतहा हवेली कहा

जाता था, में अखण्ड दीपक की स्थापना, उसके समक्ष तप, **अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा** के रूप में विकसित हुआ एवं एक और दूसरा निर्माण मथुरा में ही गायत्री तपोभूमि के रूप में हुआ जो कि ३ मील दूर वृन्दावन रोड पर १९५३ में बनाई गई। १९५३ में क्रमशः सुसंगठित गायत्री परिवार के बनने की प्रक्रिया चल पड़ी।

इस प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की पाँच मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों, प्रज्ञा संस्थानों, भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित स्वाध्याय मण्डलों व गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों, चरणपीठों का महत्त्व समझा जा सकता है। नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं, ऐसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था व यह कहा जा सकता था कि यह वैभवपूर्ण स्थापनाएँ पूज्यवर ने कीं। उनमें यदि प्राण फूँके गये हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों व उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत् उसी दिशा में चल रहे हों तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्यपूर्ण था।

परमपूज्य गुरुदेव की महत्त्वपूर्ण पाँच स्थापनाएँ इस प्रकार हैं–

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (४) शान्तिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्तसरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार ।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा का नाम सबसे पहले इसलिए लिखा कि यहीं पर वह युगपुरुष संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन, ब्राह्ममुहूर्त में, जो अँग्रेजी तारीख से २० सितम्बर, १९११ के दिन आती थी, में जन्मा। एक श्रीमंत ब्राह्मण परिवार में, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित, पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित, बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलालेखों की स्थापना हुई है- वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गयी थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गयी हैं- जैसी उनके समय में थीं। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुँआ जिसे पूरे गाँव का एकमात्र मीठे जल वाला कुँआ माना गया- वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीरधारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशाधारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क-पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इण्टर कालेज है जो उनके द्वारा दान दी गयी जमीन में प्रदत्त धनराशि द्वारा विनिर्मित है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कालेज से कई मेधावी छात्र निकल कर आत्म-निर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ एवं कन्या इंटर कॉलेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा जो एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित, संस्कारवान, आत्मावलम्बी बनाने वाले कन्या महाविद्यालय का अब रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नव-निर्माण की सांस्कृतिक व भावनात्मक क्रान्ति की पृष्ठभूमि रख सके। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गये, जहाँ दो-तीन मकान बदलने के बाद वर्तमान मकान किराये पर लिया जिसे आज अखण्ड-ज्योति संस्थान कहते हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा में स्थित है। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रान्तिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरम्भ कर दी गयी थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ व अन्यान्य लेखों की पंक्तियों के माध्यम से सम्पन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतःस्थल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुःखी, तनावग्रसित

व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नये प्राण पाये तथा उनके व परमवंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये। हाथ से बने कागज पर छोटी ट्रेडिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी-छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खर्च निकलता था। बगल की एक छोटी-सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज पूजाघर विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीद कर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है किन्तु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गयी है जैसी पूज्यवर के समय में १९४२-४३ में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ में सहस्र कुण्डी यज्ञ की आधारशिला यहीं रखी गयी, यहीं सारी योजना बनी एवं विधिवत-गायत्री परिवार बनता चला गया। रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परमवंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका-समाधान होता चला जाता एवं देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष-ग्रन्थों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं सम्पन्न हुआ। जनसम्मेलनों, छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुण्डी पाँच विराट् यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गये एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर चले गये। इस संस्थान के कण-कण में जहाँ आज १० लाख से अधिक संख्या में हिन्दी सहित सभी भाषाओं में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन, विस्तार, डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है, परमपूज्य गुरुदेव की चेतना संव्याप्त अनुभव की जा सकती है। भले ही बहिरंग का कलेवर बदल गया हो, अंदर प्रवेश करते ही परमपूज्य गुरुदेव व परमवंदनीया माताजी की सतत विद्यमान प्राणचेतना के स्पन्दन वहाँ विद्यमान हैं, यह प्रत्यक्षत: देखा जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गयी स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गयी तथा एक गायत्री महाशक्ति का मन्दिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पू. गुरुदेव की साधनास्थली व प्रात:काल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्म-भूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुण्डी यज्ञायोजन सम्पन्न हुए। श्रेष्ठ नररत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा सम्पन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शत-सूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युग निर्माण विद्यालय के एक स्वावलम्बन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरम्भ होने की घोषणा की। यह विधिवत् १९६४ से आरम्भ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अभी भी यहाँ देखा जा सकता है। भव्य निर्माण परमपूज्य गुरुदेव की १९७१ की विदाई के बाद यहाँ हो गया है किन्तु, कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी-बड़ी ऑफसेट मशीनें तथा युग निर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण-विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शान्तिकुंज, हरिद्वार ऋषि परम्परा के बीजारोपण केन्द्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड ज्योति दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गये। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुन: एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को उनने एक बड़ा विराट रूप देने, सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया। इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने २४ कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़

गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आरंभ कर दिया था। पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्तन सत्र, जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े। यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का ताँता लगा रहता है। पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं।

शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ का रूप देकर सप्तऋषियों की मूर्तियों की स्थापना १९७८-७९ में की गयी, एक देवात्मा हिमालय विनिर्मित किया गया एवं यहाँ सभी संस्कारों को सम्पन्न करते रहने का क्रम बन गया जो सतत् चल रहा है। नित्य यहाँ दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार सम्पन्न होते हैं। इस बीच परमवंदनीया माताजी ने जागरण सत्र शृंखलाएँ सम्पन्न करना आरम्भ रखा। देव कन्याओं को प्रशिक्षित कर पूरे भारत में जीप टोलियों में भेजा गया। इनके माध्यम से तीन वर्ष तक भारत के कोने-कोने में तुमुलनाद होता रहा।

शांतिकुंज का गायत्री नगर जो आज एक विराट स्थापना के रूप में, एक एकेडमी के रूप में नजर आता है व जिसमें एक बार में एक साथ दस हजार व्यक्ति एक साथ ठहर सकते हैं, १९८१-८२ में बनना आरम्भ हुआ । विलक्षण, दुर्लभ जड़ी-बूटियों के पौधे यहाँ लगाये गये तथा प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा रूपी तीर्थस्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया। यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित की जानी थी। स्वावलम्बन विद्यालय से लेकर एक विशाल चौके का निर्माण एवं गायत्री विद्यापीठ से लेकर भारत के सभी सरकारी विभागों के प्रशिक्षण के तंत्र की स्थापना यहाँ पर की गयी है एवं यह एक जीता-जागता तीर्थ अब बन गया है, जहाँ पर उज्ज्वल भविष्य की पूर्व झलक देखी जा सकती है। कम्प्यूटरों से सज्जित विशाल कार्यालय से लेकर पत्राचार विद्यालय जहाँ नित्य हजारों पत्रों के द्वारा पूरे तंत्र का मार्गदर्शन किया जाता है, यहाँ की विशेषता है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवीं स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७१ की गायत्री जयंती पर आरम्भ किया गया था। वर्तमान शांतिकुंज- गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थित यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है। इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फलश्रुतियों सहित स्थापित हैं। द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं जो यह जाँच-पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात्, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात् क्या-क्या परिवर्तन शरीर-मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आये। इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है। यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा-मंत्र शक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों, जैव विद्युत आदि पर पड़ा, यह देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किये जाते हैं। तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित है, जहाँ विश्वभर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किये गये हैं। यहाँ प्राय: ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पाण्डुलिपियाँ हैं। यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता।

परमपूज्य गुरुदेव की उपरोक्त पाँच स्थापनाएँ किसी को भी यह परिचय दे सकती हैं कि किस विलक्षण दृष्टास्तर की वह महासत्ता थी जो हम सबके बीच अपना लीली संदोह रचकर चली गयी। प्रत्यक्ष तो यह केन्द्रीय पाँच स्थापनाएँ नजर आती हैं किन्तु ४८०० से अधिक अपने भवनों वाले प्रज्ञा संस्थान ४०००० से अधिक प्रज्ञामण्डल व स्वाध्याय मण्डल तथा अगणित गायत्री परिवार की शाखाएँ यदि इनमें मिलाई जाएँ तो इनका मूल्य राशि में आँका नहीं जा सकता। यही वह सब है जो उस महापुरुष को एक अवतारी स्तर की सत्ता के रूप में प्रतिष्ठापित करता है व जिसके कर्तृत्व पर श्रद्धावनत होने का मन करता है। ❑❑❑

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२ (सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६. ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे—

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

❑❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org